रिसाले-ए-नूर संग्रह:

भाग 8

अल-मथनावी अल-नूरी

प्रकाश का बीजारोपण

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूरः
भाग 8

अल-मथनावी अल-नूरी

प्रकाश का बीजारोपण

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

The Light

न्यु जर्सी 2007

10 09 08 07 1 2 3 4

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1877-1960।
[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]
रिसाले-ए-नूर संग्रह से: अल-मथनावी अल-नूरी: प्रकाश का बीजारोपण / सईद
नर्सि ; [हुसैन अकारसू द्वारा अनुवादित]।
पी. सेमी.
आईएसबीएन 1-932099-18-2
1. नूरकुलुक - सिद्धांत। 2. इस्लाम - सार, प्रतिभा, प्रकृति। 3. इस्लाम - सार्वभौमिकता। I.
शीर्षक। द्वितीय. शीर्षक: मथनवी अल-नूरिया।
BP252.N85213 2002
297.8'3--डीसी21
2002012566

आईएसबीएन-13: 978-1-932099-18-8

कवर डिजाइन
इंजन Çiftçi

कवर की रोशनी
हैटिस अक्सू

सैंपल प्रिंटिंग
लिमिटेड द्वारा मुद्रित। स्टि., इस्तांबुल - तुर्की जनवरी 2007

विषयसूची

पहला ग्रंथ

दूसरा ग्रंथ

तीसरा ग्रंथ

चौथा ग्रंथ

पांचवां ग्रंथ

छठा ग्रंथ

सातवां ग्रंथ

आठवां ग्रंथ

नौवां ग्रंथ

दसवां ग्रंथ

ग्यारहवाँ ग्रंथ

बारहवां ग्रंथ

परिचय

सईद नूरसी और उनका काम

Sएड नूरसी (1877-1960) का जन्म नूर्स, पूर्वी अनातोलिया में हुआ था । [1]
और जिले के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। वह जल्द ही आगे निकल गया
उन्होंने वाद-विवाद में भाग लिया और उनका नाम बेदिउज्जमां (अद्भुत विद्वान) पड़ा।
आधुनिक विज्ञान और तर्क ही सही रास्ता है, ऐसा विश्वास करते हुए
भविष्य के बारे में उन्होंने धर्मनिरपेक्ष स्कूलों में धार्मिक विज्ञान पढ़ाने की वकालत की
धार्मिक स्कूलों में आधुनिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती है।

31 मार्च 1909 की अशांति के दौरान, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हंगामा भड़काने के आरोप में कोर्ट मार्शल किया गया। हालाँकि, जैसे-जैसे वे कुछ हद तक बहाल करने में कामयाब रहे
शांत रहने के कारण उन्हें बरी कर दिया गया। पूर्वी अनातोलिया लौटकर उन्होंने सिखाया कि इस्लाम
सरकार में स्वतंत्रता की अनुमति दी और तानाशाही को अस्वीकार कर दिया। बाद में उन्होंने एकत्र किया-
ये भाषण उन्होंने चर्चाओं में दिए। [2]

1911 में दमिश्क की उमय्यद मस्जिद में उपदेश देते हुए उन्होंने कहा था
मुसलमान बढ़ती निराशा, बढ़ती हुई हानि के कारण पराजित हो रहे थे।
सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सच्चाई का पालन, जुझारूपन का प्रेम, बंधनों की अनदेखी
विश्वासियों के बीच, व्यापक निरंकुशता, और अहंकारिता। फिर उन्होंने अपनी पेशकश की
इलाज: उम्मीद, सच्चाई, भरोसेमंदी, आपसी प्यार, सलाह-मशविरा, एकजुटता और इस्लाम के मुताबिक आज़ादी। इन बातों पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि
इस्लाम में निहित सच्ची सभ्यता आधुनिक विश्व पर हावी होगी।3

---

1 इस समय यह क्षेत्र ओटोमन राज्य का हिस्सा था। तुर्की 1923 में ही एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा। (संपादक)

2 नर्सी ने कहा, मुनाज़ारत (चर्चाएँ), नया संस्करण। (इस्तांबुल: 1977)।

3 सईद नूरसी, हुतबे-ए-सामिये (दमिश्क धर्मोपदेश), नया संस्करण (इस्तांबुल: एनडी)। एक सौ-
श्रोताओं में अनेक प्रसिद्ध विद्वान शामिल थे।

विश्वविद्यालय के लिए नए सुल्तान का समर्थन प्राप्त करने के लिए इस्तांबुल लौटना पूर्वी अनातोलिया के वान में, उन्होंने अंततः पर्याप्त धनराशि जुटा ली - 19,000 स्वर्ण दुर्भाग्यवश, प्रथम विश्व युद्ध पूरा होने से पहले ही छिड़ गया।

ओटोमन काल के दौरान सईद नूरसी

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, सईद नूरसी ने एक स्वयंसेवक रेजिमेंट की कमान संभाली थी। कोकेशियान मोर्चे और पूर्वी अनातोलिया में उनकी वीरता की प्रशंसा की गई। ओटोमन जनरलों, जिनमें रक्षा मंत्री और उप मंत्री एनवर पाशा भी शामिल थे कमांडर-इन-चीफ। अपने स्वयंसेवकों के साथ, जिन्हें "द फेल्ट" के नाम से जाना जाता है कैप्स" उन्होंने रूसी और अर्मेनियाई सेनाओं के खिलाफ़ वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी। (अपने छात्रों को) अपनी प्रसिद्ध कुरानिक टिप्पणी, इशारत अल-इजाज़ सुनाई (चमत्कार के संकेत), युद्ध के दौरान।

अंततः उन्हें पकड़ लिया गया और उन्होंने दो साल से अधिक समय तक कैदियों के शिविर में बिताया। कोस्ट्रोमा, उत्तर-पश्चिमी रूस। जब जनरल निकोलाविच, कोकेशियान मोर्चे के कमांडर-इन-चीफ और ज़ार के चाचा, वहाँ से गुज़रे, तो सईद नूरसी बैठे रहे। जब उन पर जनरल का अपमान करने का आरोप लगाया गया, तो उन्होंने कहा: "मैं एक मुस्लिम विद्वान जिसके दिल में ईमान है। जिसके दिल में ईमान है जो ऐसा नहीं करता, उससे श्रेष्ठ है। मैं अपने विश्वास के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता।" उसे फायरिंग स्क्वाड द्वारा मौत की सजा सुनाई गई। उसे फांसी से पहले प्रार्थना करते हुए देखना, जनरल समझ गया कि उसका रवैया उसके विश्वास के कारण था, और उसने वाक्य।

रूसी क्रांति के दौरान, सईद नूरसी भाग निकले और वापस लौट आए। इस्तांबुल में एक पदक प्राप्त करने और सभी सरकारी नियुक्तियों को अस्वीकार करने के बाद, वह दार अल-हिकमत अल-इस्लामिया (धार्मिक अकादमी) में शामिल हो गए। सेना की सिफारिश। जब साम्राज्यवादी यूरोप ने आक्रमण किया तो ध्वस्त हो गया ओटोमन राज्य को जो कुछ भी मिल सकता था, उसे हड़पने के लिए मजबूर करने के लिए, सईद नूरसी ने इस्तांबुल में ब्रिटिश उपस्थिति का विरोध किया और उनके खिलाफ जमकर लिखा और बोला। चुप करा दिया गया या पकड़ लिया गया।

1922 में, 18 आधिकारिक निमंत्रण प्राप्त करने के बाद, सईद नूरसी वहां गए अंकारा में आयोजित एक कार्यक्रम में ग्रैंड नेशनल असेंबली में उनका स्वागत किया गया। धीरे-धीरे यह देखते हुए कि अधिकांश प्रतिनिधि अपने धार्मिक दायित्वों की अनदेखी कर रहे थे, उन्होंने कहा कि वे अपने धार्मिक दायित्वों की अनदेखी कर रहे थे। 19 जनवरी 1923 को उन्हें संबोधित किया।[4] इसके बाद, उनमें से 50 या 60 ने प्रार्थना करें। आठ महीने बाद वह वैन चले गए और खुद को ध्यान में समर्पित कर दिया और प्रार्थना। जब "पूर्वी विद्रोह" छिड़ा, तो उन्होंने विद्रोहियों की नीतियों को अस्वीकार कर दिया

---

4 तुर्की संसद को दिया गया उनका संबोधन पृष्ठ 155-58 पर प्रस्तुत है। (संपादक)

उनका समर्थन करने का आह्वान करते हुए कहा कि मुसलमानों को एक दूसरे से नहीं लड़ना चाहिए और कुछ अपराधियों के लाभ के लिए कई निर्दोष लोग मारे जाएंगे।5

फिर भी सरकार ने उन्हें पश्चिमी अनातोलिया के बुरदुर में निर्वासित कर दिया। जहां उसे कड़ी निगरानी में रखा गया। जब अंकारा को पता चला कि वह इस्लाम के बारे में अपने विचार को फैलाने के लिए उन्हें बरला में निर्वासित कर दिया गया, जो कि अनातोलिया के मध्य में पहाड़ों से घिरा एक दूर-दराज का स्थान है। इसके बजाय, उन्होंने अपने सबसे महान कार्य का मुख्य भाग तैयार किया: रिसाले-ए नूर, 6,000-पृष्ठ कुरानिक टिप्पणी.

तुर्की गणराज्य

बहुजातीय, धर्म-आधारित ओटोमन राज्य के पतन के बाद तुर्की राष्ट्रीय युद्ध के बाद, तुर्की एक सघन, धर्मनिरपेक्ष और बड़े पैमाने पर तुर्की राष्ट्र-राज्य बन गया। गणतंत्रवाद, राष्ट्रवाद, लोकलुभावनवाद, राज्यवाद, धर्मनिरपेक्षता और क्रांति (अर्थात् निरंतर परिवर्तन) के सिद्धांत

राज्य और समाज) को "आधिकारिक तौर पर" आवश्यक सिद्धांतों के रूप में स्वीकार किया गया नये टर्की का मार्गदर्शन करने के लिए।

गणतंत्र के संस्थापकों ने दावा किया कि इस्लाम और सूफीवाद ने ओटोमन राज्य को स्थिर और पिछड़ा हुआ बनाया। उन्होंने अपनी खुद की शैली लागू की सल्तनत और खिलाफत को समाप्त करके, धार्मिक स्कूलों और धार्मिक न्यायालयों को बंद करके और पारंपरिक पुरुष टोपी को गैरकानूनी घोषित करके यूरोपीयकरण का और सूफी भाईचारे। उन्होंने इस्लामी कानूनी संहिता को एक मिश्रण से बदल दिया स्विस नागरिक, इतालवी दंड और जर्मन वाणिज्यिक संहिताओं में बदलाव; महिलाओं की संख्या में वृद्धि मुक्ति; बहुविवाह पर रोक; विवाह और तलाक को नागरिक मामला बनाया गया; और अरबी-आधारित ओटोमन वर्णमाला को लैटिन-आधारित वर्णमाला से प्रतिस्थापित किया। उन्होंने यह भी शर्त रखी कि तुर्कों को पारिवारिक उपनाम अपनाना चाहिए, जिससे पारंपरिक प्रणाली को त्याग दिया गया, और महिलाओं को संसद सदस्यों के लिए वोट देने और संसदीय सीटें रखने की अनुमति दी गई।

इस्लाम की पकड़ को और कमजोर करने के लिए, नए गणराज्य ने कार्यालय को भी समाप्त कर दिया शेख अल-इस्लाम ने कई मस्जिदों को धर्मनिरपेक्ष उपयोग में बदल दिया, लोगों को अरबी भाषा में प्रार्थना करने के लिए कहा गया तथा धर्म के सभी सार्वजनिक प्रदर्शनों को हतोत्साहित किया गया।

---

5 यह कुर्द विद्रोह 7 अगस्त 1924 को इस बात पर छिड़ा कि तुर्की या इराक में से कौन सा देश कुर्दों के कब्जे में रहेगा। मोसुल और उसके तेल क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया। फरवरी 1925 में एक और विद्रोह हुआ। सईद नूरसी, एक कुर्द पर इसका नेता होने का झूठा आरोप लगाया गया। (संपादक)

रिसाले-ए नूर

गणतंत्र से पहले ही सैद नूरसी “पुराने सैद” से बदलकर “पुराने सैद” हो चुके थे
"नया कहा।" सार्वजनिक जीवन से हटकर, उन्होंने खुद को समर्पित कर दिया था
लेखन के माध्यम से इस्लाम के मुख्य सिद्धांतों, विचार, विश्वास, उपासना, नैतिकता और जीवन शैली का बचाव और व्याख्या करना।
उनके शब्द लाखों लोगों तक पहुँचे
उन्होंने और उनके छात्रों द्वारा हस्तलिखित 600,000 प्रतियों के माध्यम से लोगों को आकर्षित किया।
और यह उस समय था जब कोई भी धार्मिक कार्य करना अत्यंत कठिन था।

उनकी कृति रिसाले-ए-नूर, जिसे तुर्की धार्मिक साहित्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है,
उन्होंने मुस्लिम दुनिया के पतन का कारण पहचाना: मुस्लिम राष्ट्र का कमजोर होना
विश्वास की नींव। जब भौतिकवाद, नास्तिकता, विज्ञान और प्रगति के निरंतर हमलों के साथ जुड़ गए, तो उन्होंने इनकार और अस्वीकृति का एक बड़ा बादल देखा
मुस्लिम दुनिया पर संदेह मंडरा रहा था। इसे बेअसर करने के लिए, उन्होंने एक कदम उठाया
"इस्लाम के हीरे सिद्धांतों के साथ शब्द का जिहाद"
इस्लाम को उसके विश्वास के आधार से पुनः निर्मित करके विश्वास को मजबूत करना - यहां तक कि बचाना भी।

रिसाले -ए-नूर आधुनिक लोगों को इस्लाम और विश्वास के बारे में बताता है।
अपनी शर्तों और अपने स्वयं के विश्वदृष्टिकोण के अनुसार। दोनों विश्वासों का विश्लेषण
और अविश्वास के बावजूद, उन्होंने यह साबित करने के लिए स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण तर्क दिए कि कुरान
ईश्वर और उसकी एकता की अवधारणा, पैगम्बरत्व और शारीरिक पुनरुत्थान,
और बाकी सभी अस्तित्व, मानवता के लिए एकमात्र तर्कसंगत स्पष्टीकरण हैं,
और ब्रह्मांड.

आसानी से समझ में आने वाली कहानियों, तुलनाओं और स्पष्टीकरणों का उपयोग करते हुए, सैद ने कहा
नूरसी ने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए कि आधुनिक वैज्ञानिक खोजें वास्तव में धर्म की सच्चाई का समर्थन करती हैं और उसे मजबूत बनाती हैं।
प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि और सभी आंतरिक पहलुओं को संबोधित करने की कुरानिक पद्धति
और बाहरी सुविधाओं का उपयोग करके लोगों को ब्रह्मांड और उसके कामकाज का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे सृष्टि की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्यों को समझ सकें।
बदले में, एक निर्माता के गुणों और अपने स्वयं के कर्तव्यों को सीखने की ओर ले जाता है
परमेश्वर के सेवक.

सईद नूरसी ने ब्रह्माण्ड की वास्तविक प्रकृति को उसके रचयिता के व्यापक संकेत के रूप में समझाया, तथा स्पष्ट तर्कों के माध्यम से दिखाया कि जब ब्रह्माण्ड को इस प्रकार पढ़ा जाए तो विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया जा सकता है।
चूंकि विश्वास आधुनिक विज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह दृढ़ और प्रतिरक्षित रहता है
भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और नास्तिकतावाद।

ऐसे विश्वासी सभी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली को उजागर करने के रूप में देखते हैं। ब्रह्मांड को एक विशाल और अनंत के रूप में देखना

एक जटिल और अर्थपूर्ण एकीकृत पुस्तक जो अपने एकल लेखक का वर्णन करती है, सभी खोजें और प्रगति विश्वास को मजबूत, गहरा और विस्तारित करती हैं। इस प्रकार उनकी सबसे बुनियादी ज़रूरतें—परमेश्वर के सबसे सुंदर नामों और गुणों को पहचानकर उसकी आराधना करना और उसके नियमों का पालन करना—पूरी हो जाती हैं।

सैद नूरसी की विज्ञान की अवधारणा

सईद नूरसी ने धार्मिक और वैज्ञानिक शब्दावली का एक साथ इस्तेमाल किया, जैसा कि उनके द्वारा उलूम-उ मुस्बेते (सकारात्मक विज्ञान) के उपयोग से संकेत मिलता है। इसे देखते हुए, और समकालीन वैज्ञानिक उपलब्धियों पर उनके जोर को देखते हुए, हम कह सकते हैं कि उन्होंने सकारात्मक और आध्यात्मिक विज्ञान के अस्तित्व को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि "रिसाले-ए नूर प्रदर्शनकारी प्रमाण का उपयोग करता है", जो उनके लिए वैज्ञानिक पद्धति है, और इस प्रकार मानव मन को आश्वस्त रूप से संबोधित करता है। उनका तर्क है कि ब्रह्मांड में सभी घटनाएँ विश्वास की सच्चाई के लिए उतनी ही निश्चितता देती हैं जितनी विज्ञान किसी भी स्थापित तथ्य के लिए देता है। उन्होंने धार्मिक और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को जोड़कर विज्ञान की प्रचलित अवधारणा को स्वीकार किया और फिर उसे संशोधित करने का प्रयास किया, और फिर इसे सैद्धांतिक रूप से उचित ठहराया:

> विवेक का प्रकाश धार्मिक विज्ञान (उलूम-उ दीनिये) है। मन का प्रकाश आधुनिक विज्ञान (फुनुन-उ मेदेनिये) है। दोनों को मिलाने से सत्य प्रकट होता है। इन दोनों (विज्ञानों) से विद्यार्थी के कौशल का और अधिक विकास होता है। जब इन्हें अलग किया जाता है, तो पहला अंधविश्वास को जन्म देता है और दूसरा भ्रष्टाचार और संदेह को जन्म देता है।

इस्लामी दुनिया के स्वर्ण युग (नौवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक) के दौरान शास्त्रीय मुस्लिम विद्वान वैज्ञानिक और धार्मिक ज्ञान में शामिल हो गए।

हालाँकि सैद नूरसी ने कहा कि इस्लामी तत्वमीमांसा को इस्लामी ही रहना चाहिए, लेकिन उन्होंने कुछ धार्मिक मुद्दों से संबंधित ऐसे प्रयासों को मंजूरी दी , जिसके परिणामस्वरूप वैज्ञानिक सिद्धांत को धर्म का हिस्सा माना जाता है । उन्होंने जोर देकर कहा कि इन दोनों क्षेत्रों के ज्ञान को आपस में नहीं मिलाया जाना चाहिए, और धार्मिक मुद्दों की व्याख्या करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।

ज्ञान की भूमिका

सईद नूरसी ने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञान से इस दुनिया और आने वाले संसार में खुशी मिलती है, और मानवता इस दुनिया में ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से परिपूर्ण होने के लिए आई है। इस प्रकार "हृदय की अंतर्दृष्टि के बिना ज्ञान

---

6 "मुनाज़ारत," उक्ति, 2:1956 में।

अज्ञानता है,"7 क्योंकि हमारे मन को प्रकाशितवाक्य के साथ धार्मिक सत्य को आत्मसात करने की आवश्यकता है
मदद, जिसके लिए हमारा दिल - हमारा दिमाग या तर्क नहीं - एक दर्पण है। इसके अलावा,
"प्रकट सत्य तर्कसंगत है, लेकिन तर्क अपने आप उसे प्राप्त नहीं कर सकता।"8

दिल की अंतर्दृष्टि कुरान से आती है; दिमाग की अंतर्दृष्टि कुरान से आती है।
अन्य विज्ञानों से। वह लिखते हैं:

> ब्रह्माण्ड और सभी प्राणियों की वास्तविकता ईश्वर पर आधारित है
> नाम: प्रत्येक प्राणी की वास्तविकता एक या अनेक नामों पर आधारित है।
> सभी विज्ञान और कलाएँ एक नाम पर आधारित हैं और उसी पर निर्भर हैं।
> दर्शनशास्त्र का विज्ञान सर्वज्ञ (अल-हकीम) नाम पर आधारित है,
> नाम पर सच्ची दवा मरहम लगाने वाला (अल-शफी), नाम पर ज्यामिति
> निर्धारक (अल-मुकद्दिर), इत्यादि। जिस प्रकार प्रत्येक विज्ञान पर आधारित है
> और अंततः एक नाम में समाप्त होता है, सभी कलाओं, विज्ञानों और की वास्तविकताएं
> मानवीय पूर्णताएँ ईश्वरीय नामों पर आधारित हैं।९

सैद नूरसी ने निष्कर्ष निकाला कि ब्रह्मांड के अध्ययन से ज्ञान प्राप्त होता है
ईश्वर के नाम पर प्राप्त ज्ञान सच्चा ज्ञान है, जबकि अन्य तरीकों से प्राप्त ज्ञान असत्य है।
अज्ञान। विज्ञान ब्रह्मांड की व्याख्या करता है, जो एक प्रतीकात्मक रचना है
ईश्वर स्वयं से परे एक सत्य की ओर संकेत कर रहा है।

वैज्ञानिक सत्य व्यक्त करना

सईद नूरसी का निष्कर्ष हमें इस ओर ले जाता है कि विज्ञान को अपनी खोजों और सैद्धांतिक सूत्रों को कैसे व्यक्त करना चाहिए। वह कुरान की भाषा को इस प्रकार सुझाते हैं:
एक आदर्श, इस आधार पर कि चूँकि ईश्वरीय भाषा सभी पहलुओं का मार्गदर्शन करती है
हमारे सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग होने के नाते, इसे इस मामले में भी हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए।

उनके अनुसार, अधिकांश मामलों में कुरान कुछ वैज्ञानिक पहलुओं की बात करता है।
रूपकात्मक शैली में घटनाओं को प्रस्तुत करना, क्योंकि यह हर समय सभी स्तरों को संबोधित करता है और
इसका उद्देश्य केवल यह है कि हम अपने सृष्टिकर्ता को उसकी सृष्टि के माध्यम से जान सकें तथा मन और हृदय में विश्वास
और अच्छे आचरण के आधार स्थापित कर सकें।10 इस प्रकार यह
सृष्टिकर्ता के साथ हमारे रिश्ते के बारे में बात करता है, जबकि पश्चिमी दर्शन और विज्ञान भाषा का उपयोग लोगों को चीजों
को केवल वास्तविक दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए करते हैं।
चीज़ों के साथ संबंध। इसके अलावा, पश्चिमी भाषा निर्देशित है
विशेषज्ञों के प्रति, जबकि कुरान की भाषा सभी को संबोधित करती है और इसलिए
समझ सुनिश्चित करने के लिए सामान्य होना चाहिए।

---

7 सईद नर्सी, द लेटर्स, 2 खंड, कायनाक, इज़मिर: 1998।

8 नर्सी, द वर्ड्स, द लाइट, इंक., न्यू जर्सी: 2005.

9 वही। थर्टी-सेकेंड वर्ड का तीसरा स्टेशन देखें।

10 वही.

उदाहरण के लिए, कुरान ब्रह्मांड को एक विशाल साम्राज्य के रूप में प्रस्तुत करता है, पृथ्वी एक महल है, सूर्य एक दीपक है, चंद्रमा एक रात का दीपक है, और तारे एक प्रकाश हैं। सजावट के रूप में। लोगों को इन सभी पर विचार करना चाहिए ताकि वे समझ सकें कि वे क्या कर सकते हैं उनके निर्माता के। पश्चिमी विज्ञान और दर्शन सूर्य और अन्य प्राणियों को अपनी अलग और बिना किसी मालिक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह अद्भुत प्रेरणा देता है भय और भयानक आश्चर्य, और आत्मा को ज्ञान की पूर्णता नहीं देता या नैतिक पाठ। सईद नूरसी इस तरह के दर्शन को नैतिकता से अलग मानते हैं धर्म।

सईद नूरसी और तुर्की गणराज्य

सईद नूरसी का जीवन, रिसाले-ए नूर (1925-48) लिखते समय और उनके निधन तक 1960 में उनकी मृत्यु के बाद उन्हें गिरफ़्तारी और कारावास, निगरानी और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। लेकिन वे डटे रहे। सईद नूरसी विरोधी ऐसी गतिविधियों से परिचित एक व्यक्ति के शब्दों में: "पिछले 25 सालों में हमने जो कुछ भी किया है, उसके बावजूद हम सईद नूरसी को उसकी गतिविधियों से रोकने में सक्षम नहीं हो सका।”

उनके जीवन के इस चरण का संक्षिप्त घटनाक्रम इस प्रकार है:

- 1925-35: बारला नामक एक बहुत छोटे से पहाड़ी क्षेत्र में इसे सख्त नियंत्रण में रखा गया। वे एक तंगहाल जिले में हैं और अकेले रहने को मजबूर हैं।
- 1935: 125 छात्रों के साथ गिरफ्तार कर 11 महीने के लिए जेल में डाला गया एस्कीसेहिर आपराधिक न्यायालय में उनके मुकदमे के दौरान।
- 1936-43: रिहाई के बाद, कस्तमोनू में 7 साल का निर्वासन शुरू हुआ, जहाँ उन्होंने पहले तीन महीने पुलिस स्टेशन में बिताए। उसके बाद, उन्होंने पुलिस स्टेशन के सामने वाले घर में स्थानांतरित कर दिया गया। • 1943: डेनिज़ली क्रिमिनल कोर्ट में 126 छात्रों के साथ गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया ईश्वर के अस्तित्व पर एक ग्रंथ को गुप्त रूप से छपवाने के लिए न्यायालय में चुनौती इस्तांबुल। उन्होंने अन्य कैदियों को सिखाया और अपने फलों का उत्पादन किया प्रकाश का वृक्ष और अन्य कार्य कागज के छोटे टुकड़ों पर कागज़ के बैग, जिन्हें बाद में तस्करी करके बाहर ले जाया गया। उन्हें बरी कर दिया गया और एमिरदाग में निर्वासित। •
- 1948: एमिरदाग में 53 छात्रों के साथ गिरफ्तार, और 20 साल के लिए जेल अफ्योन जेल में कई महीने तक रहे। अब 72 वर्षीय सैद नूरसी को एक कोठरी में एकांत कारावास में रखा गया, जिसकी खिड़कियाँ टूटी हुई थीं और जिन्हें जेल के दौरान ठीक नहीं किया गया था। दो कठोर सर्दियाँ वह वहाँ रहा। बीमार और अंततः ज़हर खाए जाने के कारण, उन्हें अपना पूरा कार्यकाल पूरा करना पड़ा, भले ही सुप्रीम कोर्ट ने उनकी सज़ा रद्द कर दी गई। 1956 में उन्हें निर्दोष घोषित कर दिया गया।

- 1950 में बहुदलीय व्यवस्था लागू की गई और धर्म पर प्रतिबंधों में ढील दी गई। इसके बाद सैद नूरसी को सिर्फ़ एक बार गिरफ़्तार किया गया और सर्वसम्मति से उन्हें बरी कर दिया गया। 23 मार्च, 1960 को मरते हुए, उन्होंने पूरे सम्मान, गरिमा और जीत के साथ इस दुनिया को छोड़ दिया और मुस्लिम दुनिया को अपने काम सौंपे, जो आज भी बहुत प्रभावशाली हैं और हमें ईश्वर की ओर वापस जाने के लिए मार्गदर्शन करने वाले प्रकाश स्तंभ हैं।

अल-मथनावी अल-नूरी

Sएआईडी नूरसी ने मुख्य भाग से पहले अल-मथनावी अल-नूरी लिखा रिसाले-ए-नूर संग्रह की यह पुस्तक एक अंकुर, एक बूंद, एक कली के रूप में प्रकट होती है जो एक बुदबुदाती हुई नदी, एक सुगंधित गुलाब का बगीचा, एक भव्यता से सराबोर जंगल बन जाएगी।

उन्होंने विश्वास और ध्यान के आधार पर मुसलमानों की भावनाओं को उत्तेजित और उत्साहित किया, तथा कई अविश्वासियों को अपने विचारों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया।

उनका कहना है कि सबसे बड़ा सत्य विश्वास और ईश्वर की पूर्ण एकता है। उनके लिए, सारा अस्तित्व एक शटल की तरह है जो एकता के सत्य को बुनती है, एक सुई और रेशम का धागा फीता बुनता है, जो हर जगह ईश्वर से संबंधित अर्थों के साथ कढ़ाई करता है। लेकिन हर कोई एकता को एक ही हद तक समझ, समझ और महसूस नहीं कर सकता:

> ईश्वर की एकता में विश्वास के दो स्तर हैं। पहला यह सतही विश्वास है कि ईश्वर का कोई साझीदार नहीं है और ब्रह्मांड केवल उसका है। ऐसे विश्वासियों में भटकाव और भ्रम की स्थिति पैदा हो सकती है।
> दूसरा दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर एक है, सब कुछ केवल उसका है, और केवल वही सृष्टि करता है। ऐसे विश्वासी उसकी मुहर देखते हैं और सभी चीज़ों पर उसकी मुहर देखते हैं। सभी संदेहों से मुक्त होकर, वे हमेशा और हर जगह खुद को उसकी उपस्थिति में महसूस करते हैं।
>
> उनके विश्वास को विचलन या संदेह से कमजोर नहीं किया जा सकता।

यह लिखते हुए कि विश्वास अस्तित्व और मानवता की प्रकृति के सच्चे आयामों को प्रकट करने वाले प्रिज्म की तरह है, वे ग्यारहवीं किरण के नौवें बिंदु में कहते हैं कि विश्वास ब्रह्मांड को एक पठनीय पुस्तक और एक मनोरंजक शो बनाता है, और मानवता को एक सूचकांक और उद्घोषणा बनाता है। हालाँकि विश्वास की सच्चाई के सभी पहलू अलग-अलग दिखाई दे सकते हैं यदि उन्हें अलग-अलग तरीके से महसूस किया जाए, माना जाए और महसूस किया जाए, वास्तव में वे पूरी तरह से जुड़े हुए हैं और पूरे के अलग-अलग चेहरे हैं:

ईश्वर, पैगम्बर, पुनरुत्थान और ब्रह्माण्ड की सत्यता की पुष्टि में विश्वास
अस्तित्व के लिए आपसी विश्वास की आवश्यकता होती है। यानी एक आदर्श संबंध है
विश्वास के इन स्तंभों के बीच: एक पर विश्वास करने के लिए दूसरे पर विश्वास करना आवश्यक है
दिव्यता के लिए संदेशवाहक की आवश्यकता होती है; यह संसार इसकी गवाही देता है
दूसरी दुनिया.

सईद नूरसी ने रिसाले-ए-नूर के तीसवें वचन और झलक में लिखा है कि जिन लोगों के आध्यात्मिक और भावनात्मक जीवन में कोई गहराई नहीं है, जो मानसिक और दार्शनिक मामलों में बहुत अधिक रुचि, एक "बीमारी" है उनके हृदय (विश्वास और भावनाओं का केंद्र) पर आघात होता है, जिससे वे बीमार हो जाते हैं।

मैंने देखा है कि लोग जितना अधिक दर्शनशास्त्र में व्यस्त रहते हैं, उतना ही अधिक उनका हृदय आध्यात्मिक
रोग से ग्रस्त होता है।
मैंने देखा कि हृदय का यह आध्यात्मिक रोग जितना अधिक बड़ा होता जाता है,
जितना अधिक लोग तर्कसंगत विज्ञान में व्यस्त होंगे। आध्यात्मिक
रोग तर्कसंगत विज्ञान के प्रति आसक्त होने की ओर ले जाते हैं, और तर्कसंगत विज्ञान के प्रति आसक्त होने से
आध्यात्मिक रोग उत्पन्न होते हैं।

एक और मौलिक अवलोकन यह है कि यद्यपि कारणों का सम्मान किया जाना चाहिए, उन्हें वास्तविक प्रभाव का श्रेय देना एक विचलन और विचलन है। सबसे अच्छा तरीका है उनका आदर करना और परिणाम का श्रेय ईश्वर को देना, जैसा कि चौबीसवें वचन की पहली शाखा में कहा गया है।

हे मित्र, जान लो कि भौतिक कारणों से लगाव अपमान और अस्वीकृति को जन्म देता है। इस पर विचार करें:
कुत्ते, जिन्हें दूसरों से दूर रखना चाहिए, क्यों हैं?
उनके कई अच्छे गुणों (विशेष रूप से उनके) के कारण उन्हें धन्य माना जाता है
कहावत के अनुसार वफ़ादारी), जिसे धार्मिक रूप से अशुद्ध माना जाता है? मुर्गी, गाय और बिल्ली जैसे अन्य
पालतू जानवर, जो कृतज्ञता महसूस नहीं करते हैं और
उनके प्रति जो वफादारी हम करते हैं, उसके बदले में क्या उसे धन्य माना जाता है?
क्योंकि—बशर्ते इसका उद्देश्य कुत्तों की चुगली करना या उनका दिल तोड़ना न हो—
कुत्ते लालची होते हैं और स्पष्ट कारणों से इतने जुड़े होते हैं कि वे नहीं कर सकते
सच्चे वरदानदाता को देखो। इस प्रकार, वे मानते हैं कि साधन
[अपना भोजन प्राप्त करने में] वास्तव में प्रभावी हो, और इसलिए कलंक का सामना करना पड़ता है
उनके अंधेपन और उदासीनता के लिए सजा के रूप में अनुष्ठान अशुद्धता
सच्चा स्वामी और वरदानों का दाता।

धन्य पशु साधन और कारण को नहीं पहचानते या उन्हें नहीं देते
कोई मूल्य या महत्व नहीं। बिल्लियाँ भोजन मांगती हैं और जब उन्हें वह मिल जाता है जो उन्हें चाहिए
वे ऐसा व्यवहार करना चाहते हैं जैसे वे आपको जानते ही नहीं या आप उन्हें नहीं जानते
वे आपके प्रति कोई कृतज्ञता महसूस नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे सच्चे ईश्वर का धन्यवाद करते हैं
वरदान देने वाले को यह कहते हुए: “हे दयालु, हे दयालु
एक।"

सईद नूरसी सुन्ना के दायरे में रहने पर भी जोर देते हैं, मुसलमानों को याद दिलाते हैं, जैसा कि सभी अहल अल-सुन्ना वा अल-जमा'आ विद्वान करते हैं,11 कि पैगंबर एक आदर्श मार्गदर्शक हैं और केवल उनकी सुन्ना ही दोनों दुनिया में खुशी की ओर ले जाती है। वह हमें सुन्ना में एकजुट होने के लिए भी कहते हैं। सुन्ना पर आधारित नहीं एक जीवन घूमने जैसा है-

भँवर के किनारे पर घूमना। भले ही यह तैरने और आगे बढ़ने जैसा प्रतीत हो, लेकिन वास्तव में यह मौत की ओर फिसलने के अलावा और कुछ नहीं है:

> हे मित्र, जान लो कि मैंने "अंधकार की परतों" में अपनी यात्रा के दौरान देखा है कि पैगंबर के कथन और व्यवहार, साथ ही इस्लामी कानून के सिद्धांत, सितारों की तरह हैं जो हमें अनगिनत अंधेरे और भ्रामक रास्तों के बीच मार्गदर्शन करते हैं। उनके मार्ग या परंपरा [सुन्नत] से भटकना व्यक्ति को शैतानों का खिलौना, भ्रम और संदेह की वस्तु, भय का लक्ष्य और असहनीय बोझ का पहाड़ बना देता है। ऐसी चीज़ों से मुक्ति केवल सुन्नत का पालन करने से ही मिलती है।

> मैंने यह भी देखा है कि सुन्नत के उसूल आसमान से लटकी हुई रस्सियों के समान हैं। जो कोई उनके एक हिस्से को भी मज़बूती से थामे रखता है, वह तरक्की पा सकता है। जो कोई उनका विरोध करता है और अपने या सार्वजनिक तर्क पर भरोसा करता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो सांसारिक वाहनों में आकाश के क्षेत्रों में यात्रा करने का साधन प्राप्त करना चाहता है और फिरौन की तरह उसका उपहास किया जाता है, जिसने कहा: ऐ हामान! मेरे लिए एक मीनार बनाओ ताकि मैं आकाश में [यात्रा] करने का साधन प्राप्त कर सकूँ (40:36)।

इस विषय का उल्लेख रिसाले-ए-नूर संग्रह में अक्सर किया गया है। विशेष रूप से, ग्यारहवीं झलक के तीसरे बिंदु में इस पर चर्चा की गई है और इस बात पर जोर दिया गया है कि सुन्नत का पालन करना ईश्वर का मार्ग है।

सैद नूरसी ने दुनिया के साथ हमारे संबंधों और दृष्टिकोण के बारे में एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया है: दुनिया ऐसी चीज़ नहीं है जिसे नापसंद किया जाए, बल्कि उससे प्यार किया जाए। वह हमें इस प्यार के मूल सिद्धांतों को शामिल करने वाले तीन तत्वों की याद दिलाते हैं:

> दुनिया के तीन पहलू हैं। पहला पहलू ईश्वर के नाम से संबंधित है। दूसरे पहलू के संबंध में, दुनिया परलोक का कृषि योग्य क्षेत्र है।
> ये दोनों पहलू खूबसूरत हैं। तीसरा पहलू सीधे और विशेष रूप से दुनिया से संबंधित है, और यह वह जगह है जहाँ लोग अपनी शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं और इस क्षणभंगुर सांसारिक जीवन की ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करते हैं।

संबंधित दृष्टिकोण में, ये शब्द बाद में हमारा स्वागत करते हैं:

11 जो लोग नबी की मिसाल और सहाबा की जमात का अनुसरण करते हैं।

> जीवन के फलों और उद्देश्यों में से किसी के हिस्से में जो आता है, वह उसके जीवन के स्वामित्व और निपटान में उसके हिस्से की डिग्री के अनुपात में होता है। अन्य उद्देश्य और फल जीवनदाता से संबंधित हैं, महामहिम की महिमा हो। मानवता केवल उनके नामों के मानवीकरण की वस्तु है। ईश्वर अपनी दया के रंग और विकिरण प्रदर्शित करेगा, जिसमें इस सांसारिक जीवन के बीजों से उगने वाले फल शामिल होंगे, स्वर्ग में।
>
> मनुष्य का अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ संबंध नाविक और उसके द्वारा संचालित शाही जहाज के बीच के संबंध जैसा है। नाविक अपनी उंगलियाँ उन उपकरणों पर रखता है जो जहाज को चलाते और चलाते हैं।
>
> जहाज के उपयोग और आय से उसे जो मिलता है वह जहाज के साथ उसके संबंध और उसकी सेवा के अनुपात में होता है। दूसरे शब्दों में, यह काफी छोटा है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा किसी भी जीवित प्राणी और उसके अस्तित्व और जीवन के जहाज के साथ होता है। एक जीवित प्राणी अपने जीवन के उपयोग और उद्देश्यों से जो प्राप्त करता है वह काफी छोटा है; इसके अलावा, जो प्राप्त होता है वह अर्जित नहीं किया गया है [बल्कि जीवनदाता द्वारा दिया गया है]।

सईद नूरसी ने आगे कहा कि मनुष्य को उसकी वास्तविकता से बड़ा मानना और स्वीकार करना उत्पीड़न का कार्य है और मूर्तिपूजा की ओर एक कदम है।
जो व्यक्ति यह पहला कदम उठाता है, वह किसी परिस्थिति में पीछे नहीं मुड़ सकता।
रुख:

> हे मित्र, जान लो कि लोग अन्यायपूर्ण तरीके से समूह के श्रम के फल को एक ही व्यक्ति को देते हैं और मान लेते हैं कि उस व्यक्ति ने उन फलों को पैदा किया है। इस अन्याय से भगवान के साथ भागीदारों का एक प्रकार का गुप्त संबंध पैदा होता है, क्योंकि यह मान लेना कि समुदाय के श्रम का परिणाम और उनकी स्वतंत्र इच्छा का उत्पाद एक ही व्यक्ति से उत्पन्न हुआ है, इसका मतलब है कि यह स्वीकार करना कि उस व्यक्ति के पास असाधारण शक्ति है जो रचनात्मकता की डिग्री तक पहुँच गई है। प्राचीन ग्रीस और अन्य बुतपरस्त लोगों के देवताओं को ऐसी शैतानी धारणाओं से तैयार किया गया था।

बाद में, उन्होंने कहा कि विश्वास शक्ति का एक गुप्त स्रोत है। जो लोग इस स्रोत के अधिकारी हैं, वे संसारों पर अधिकार कर सकते हैं, और विश्वास के साथ ईश्वर पर निर्भरता के माध्यम से, व्यक्ति हर चीज़ को अपनी सेवा में लगा सकते हैं:

> जो लोग ईश्वर की इच्छा के आगे झुकते हैं और उसकी प्रसन्नता का पीछा करते हैं, उन्हें हर चीज़ से सेवा मिलती है; जो लोग ईश्वर की अवज्ञा करते हैं, उन्हें लगता है कि हर चीज़ उनके विरुद्ध हो जाती है। जो लोग इस बात पर दृढ़ विश्वास करते हैं कि जो कुछ भी मौजूद है, वह केवल ईश्वर का है और उसकी संपत्ति है, उन्हें लगता है कि हर चीज़ उनकी सेवा करती है।

कुरान की यह आयत: कहो: “अगर तुम्हारी नमाज़ न होती, तो तुम्हारा क्या महत्व होता?” इस सत्य को प्रमाणित करती है। जिस तरह एक बच्चा जो किसी चीज़ तक नहीं पहुँच पाता, वह पूछता है

सहायता के लिए सेवक को विवशता और आवश्यकता के साथ प्रभु की शरण लेनी चाहिए और उनसे सब कुछ मांगना चाहिए। इस विषय का वर्णन तेईसवें वचन के चौथे और पांचवें अंक में बहुत विस्तार से किया गया है।

पैगम्बर मुहम्मद ब्रह्मांड के आधार, सार और जड़ की प्रकृति के हैं। ब्रह्मांड के हर बिंदु में उनके प्रकाश की सच्चाई समाहित है। जिस तरह एक बीज में आत्मा और अर्थ एक पेड़ और अंकुर के शरीर में पाए जाते हैं, उसी तरह वह अपने प्रकाश के संबंध में प्रथम और अंतिम के लिए एक दर्पण हैं, जिसमें अस्तित्व का सार शामिल है। इकतीसवें वचन का तीसरा सिद्धांत और दसवें वचन के परिशिष्ट का दूसरा भाग हमारे दिलों की आंखों के सामने इस अद्भुत विषय पर एक विशेष गहराई और समृद्धि फैलाता है:

> अगर आप ब्रह्मांड को एक महान पुस्तक के रूप में देखते हैं, तो आप मुहम्मद के प्रकाश को उस कलम की स्याही के रूप में देखेंगे जिससे वह पुस्तक लिखी गई थी। अगर आप ब्रह्मांड को एक पेड़ के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को मूल रूप से उसके बीज और फलस्वरूप उसके फल के रूप में देखेंगे। अगर आप ब्रह्मांड को एक चेतन प्राणी के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी आत्मा के रूप में देखेंगे। अगर आप ब्रह्मांड को एक वृहद मानव के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी बुद्धि के रूप में देखेंगे। अगर आप ब्रह्मांड को एक फूलों के बगीचे के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी बुलबुल के रूप में देखेंगे।
>
> यदि आप ब्रह्माण्ड को एक ऊंचे, समृद्ध रूप से सुसज्जित महल के रूप में देखते हैं, जिसमें अनेक कमरे और कक्ष हैं, जो शाश्वत प्रभु की प्रभुता और उसकी महिमा के चमत्कारों की महिमा को दर्शाते हैं, साथ ही उसकी कृपा के प्रकटीकरण की सुंदरता और उसकी कला की अद्भुत डिजाइन को दर्शाते हैं, तो आप एक दर्शक के रूप में पैगम्बर मुहम्मद के प्रकाश को देखेंगे।

सैद नूरसी के अनुसार, प्रकृति और मानवता का मूल चरित्र दोहरा है: एक धोखा देने वाली मूर्ति और एक गुप्त प्रिज्म जो शाश्वत कलाकार और शाश्वत सत्य को दर्शाता है। आध्यात्मिक रूप से तैयार और जागरूक लोगों के लिए, एक समृद्ध कढ़ाई वाली कलाकृति के रूप में प्रकृति और एक क्रिस्टल प्रिज्म के रूप में मानवता दोनों ही अचूक पुस्तकें, वाक्पटु वक्ता, दृश्यमान दुनिया के पीछे के क्षेत्र को रोशन करने वाले प्रकाश के स्रोत हैं। तीसवें वचन का पहला उद्देश्य इस विषय को एक अनूठी चौड़ाई और समृद्धि के साथ प्रस्तुत करता है, जबकि तेईसवीं झलक, "प्रकृति पर ग्रंथ", प्रकृति को मूर्तिमान करना असंभव बनाता है। वह इस अवलोकन को एक विजय गीत के रूप में प्रस्तुत करता है:

> 30 वर्षों से मैं दो "विद्रोहियों" से लड़ रहा हूँ: बाहरी दुनिया में अहंकार और प्रकृति। मैंने पहले वाले को एक छायादार दर्पण के रूप में देखा है जो खुद के अलावा किसी और को दर्शाता है। लेकिन लोग इसे एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में देखते हैं, जो खुद को दिखाता है और इस तरह अपने निर्माता के खिलाफ विद्रोह में एक अडिग तानाशाह बन जाता है।
>
> मैंने प्रकृति को ईश्वरीय कला के एक काम के रूप में देखा है, जो दयालु ईश्वर की एक पेंटिंग है। हालाँकि, इसे लापरवाही से देखने (यानी, अनदेखा करने) के परिणामस्वरूप

भौतिकवादियों ने इसे एक देवता के रूप में देखा है, जो स्वयं उत्पन्न हुआ है और अपने आप में
विद्यमान है, और इसे एक बहाने के रूप में इस्तेमाल किया गया है।
कृतघ्नता का परिणाम अविश्वास है।
परमेश्वर का धन्यवाद हो और उसकी स्तुति हो, क्योंकि उसकी सहायता से
वह एक, सभी द्वारा सदा-प्रार्थित, तथा परमेश्वर का ज्ञान
शानदार कुरान, मेरा संघर्ष इन दो की मौत में समाप्त हो गया है
विद्रोहियों द्वारा इन दो मूर्तियों को तोड़ दिया जाना।

सेकंड ग्लेम के पहले बिंदु में, सैद नूरसी ने पापों को अविश्वास के टोही हाथों, अविश्वास के मार्ग पर जाल के रूप में चित्रित किया है। उन जगहों पर जहाँ
वे अक्सर देखे जाते हैं, विचार अनैतिकता के लिए "प्रस्थान" करता है और विश्वास खतरे का सामना करता है:

अविश्वास का बीज पापों के सार में मौजूद है, विशेष रूप से उन पापों में जो
जो बार-बार किये जाते हैं, क्योंकि ऐसे पाप उदासीनता की ओर ले जाते हैं।
यह रवैया लत की ओर ले जाता है, जिसका उपचार केवल
पाप का परित्याग करना। जो लोग पाप में लिप्त होते हैं, वे दंड से बचना चाहते हैं और इसलिए,
अनजाने में, पाप पर विश्वास करने का बहाना ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं।
अनन्त पीड़ा का अस्तित्व नहीं है। यह तब तक जारी रहता है जब तक वे इनकार नहीं करते
अनन्त पीड़ा और दण्ड का निवास। साथ ही, बिना किसी पश्चाताप या खोज की भावना के इस पाप
में लिप्त होने से उत्पन्न शर्म
परमेश्वर की क्षमा उन्हें इस बात से इन्कार करने पर मजबूर करती है कि पाप वास्तव में पाप है।
उन प्राणियों के अस्तित्व को नकारने की ओर ले जाता है - जैसे संरक्षक
स्वर्गदूत - जो लोगों की देखरेख करते हैं और उनके पापों से अवगत हैं।
परिणामस्वरूप शर्म की तीव्रता के कारण, पापी चाहते हैं कि दूसरी दुनिया में कोई हिसाब न हो।
जब उन्हें इसके अस्तित्व के लिए कोई झूठा तर्क भी मिलता है, तो वे इसे एक मजबूत सबूत के रूप
में लेते हैं और इनकार करते हैं
अंतिम हिसाब। इस प्रकार उनके दिल धीरे-धीरे काले होते जाते हैं और
भगवान हमें ऐसे परिणाम से बचाए। आमीन।

सईद नूरसी ने कुरान की गहरी समझ की कोशिश की। इशारत अल-इजाज़ (कुरान की चमत्कारिकता के संकेत) से मथनावी तक फैली एक पंक्ति में
और शब्दों (विशेष रूप से पच्चीसवें शब्द) के लिए, उन्होंने सांस ली
कुरान। नई और मूल व्याख्याओं के साथ, उन्होंने अक्सर इसकी व्याख्या की
ईश्वरीय सत्यों को आसानी से समझने योग्य बनाकर गहराई तक पहुँचाया और प्यासे हृदयों को उत्साहित किया।

पच्चीसवें वचन में विश्लेषण एक अद्भुत स्थिति प्राप्त करता है।
मथनवी में जो संक्षेप में कहा गया है उसका विस्तार एक महासागर की तरह है
एक बूंद, एक अंकुर के लिए एक जंगल। इस संक्षिप्त अनुस्मारक के तुरंत बाद, कुरान से संबंधित एक नया विषय हमारे पास फुसफुसाता है जैसे कि एक दरवाज़ा थोड़ा खुला हो और
फिर आगे बढ़ जाता है.

कुरान को सुनते समय, इसकी प्रत्येक धुन एक नया रूप धारण कर लेती है।
यह दर्शकों के मार्गदर्शन के स्तर के अनुसार उनके दृष्टिकोण और मनोदशा पर आधारित होता है।
गैब्रियल से लेकर मध्यस्थों के मूड का अनुमान लगाने की कोशिश करें, जो
इसे पैगम्बर के पास ले आओ, जिससे तुम इसे सीधे सुनते हो। वाचक को सुनते समय इसे ऐसे
सुनने की कोशिश करो जैसे कि तुम ईश्वर को सुन रहे हो।
पैगम्बर मुहम्मद ने मानवता के लिए पैगम्बरत्व के शिखर पर इसे पढ़ा था।
दुनिया भर में अन्य प्राणियों। फिर, इस तरह से मान लें
गेब्रियल ने इसे “सबसे ऊंचे क्षितिज” पर पैगंबर को सुनाया।
अंत में, यदि संभव हो तो इसे ऐसे सुनने का प्रयास करें जैसे आप इसे पीछे से सुन रहे हों।
70,000 परदे उस सदा बोलने वाले से, जो परमेश्वर से बात करता है
पैगम्बर को “दो धनुष की दूरी” पर रखा गया है।

अल-मथनावी अल-नूरी कई विषयों की एक सूची जैसा दिखता है, जिनमें से प्रत्येक की आवश्यकता होती है एक अलग किताब, और जिनमें से प्रत्येक पर रिसाले-आई में विस्तार से चर्चा की जाएगी नूर. "फूल" के अंतर्गत, उन नोटों में जिनकी चर्चा बाद में रिसाले-आई में की जाएगी नूर, कई महत्वपूर्ण सत्य संक्षेप में बताए गए हैं। “स्पार्क” एक छोटी सी चिंगारी की तरह है धर्मपरायणता और अच्छे कार्यों का बीजारोपण जो हमारी सांसारिक भावनाओं पर सवाल उठाता है, निर्देशित करता है हमारे विचारों को ईश्वरीय एकता की ओर ले जाता है, और विश्वास की विशालता को दर्शाता है। "बुझाव" हमारे दिलों को छूता है और कुरान की आयतों की गहराई और समृद्धि को इंगित करता है।
इसमें इस बात पर चर्चा की गई है कि मानव अंगों का निर्माण क्यों किया गया, और इस प्रकार आदतों को दूर किया गया है जिसे “हमारी विवेकशीलता की आँख पर परत” माना जा सकता है।

"व्हिफ़" का तीसरा भाग ईश्वरीय नियति और आदेश का विश्लेषण करता है और यह पुस्तक बख्शने के कानून पर प्रकाश डालती है, तथा यह भी बताती है कि कुरान की आयतें इस प्रकार क्यों समाप्त होती हैं।
इसके तुरंत बाद हमें सत्य तक पहुंचने का एक मार्ग सुझाया जाता है, जो अन्य सभी मार्गों से भिन्न है।
पहले के रास्तों से। प्रस्ताव रखा जाता है, और हमारा ध्यान हमारी अनिवार्य कमजोरी और गरीबी की ओर जाता है। थोड़ा आगे, हमारी अनूठी रचना की ओर इशारा किया जाता है, और हमें याद दिलाया जाता है कि मानवता अस्तित्व का एक सूचकांक है।
उसके बाद,
हमारा ध्यान प्रार्थना की ओर जाता है, जिसका रिसाले-ए-नूर के कई भागों में बहुत विस्तार से विश्लेषण किया गया है। ईश्वर द्वारा प्रार्थनाओं का उत्तर देने का अर्थ है
समझाया गया है, और प्रार्थना करने की हमारी इच्छा उत्तेजित होती है। साथ ही आत्म-गर्व और हमारे द्वारा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के संकेत के रूप में अपने ऊपर ईश्वर के आशीर्वाद की घोषणा करने के बीच के अंतर को भी समझाया गया है।

"चौदहवीं बूंद" कुरान के बुनियादी मुद्दों और आवश्यक उद्देश्यों पर चर्चा करती है, जिसे रिसाले-ए-नूर महत्वपूर्ण विषय मानता है।
"चमक", हमें दिव्य अस्तित्व की विशालता में ले जाया जाता है, जिसका "उचित" नाम अल्लाह है, और उसके बारे में एक अद्वितीय ज्ञान दिया गया है।
पाठक को अनुग्रह और मध्यस्थता से परिचित कराया जाता है, जिसे सक्रिय प्रार्थना। एक तत्व के रूप में मिट्टी के महत्व को दिखाने के बाद

जो भगवान अपने नाम, विनम्रता की अवधारणा, या जैसा होने को प्रकट करता है
वह मिट्टी जिस पर कोई ईश्वर के सामने सजदा करता है, ऊपर उठाई जाती है। यहाँ इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि
“एक बन्दा अपने रब के सबसे करीब तब होता है जब वह सजदा करता है।”

"बिंदु" के अंतर्गत, दिव्य सार के नाम पर, जिस पर सैद नूरसी अक्सर चर्चा करते हैं, मौजूदा तीन में एक चौथा महत्वपूर्ण सार्वभौमिक प्रमाण जोड़ा गया है।12 यह प्रमाण मानव विवेक से संबंधित है, जिसे ईश्वरीय सार माना जाता है।

अदृश्य और दृश्यमान भौतिक दुनिया के मिलन बिंदु के रूप में।
विकास, उत्परिवर्तन और एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति में छलांग लगाने की असंभवता पर जोर दिया गया है। अपने तर्कों को ठोस विचारों पर आधारित करते हुए, सैद नूरसी ने विकास को खारिज कर दिया।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि इन कार्यों की सदस्यों द्वारा गहराई से जांच की जाए।
एक संस्थान की स्थापना की गई जिसे रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करने का कार्य सौंपा गया ।

- एम. फेतुल्लाह गुलेन

12 ब्रह्माण्ड, कुरान और पैगम्बर मुहम्मद।

पहला ग्रंथ

पहला ग्रंथ

ईश्वर की एकता से निकली किरणें सूर्य के समान उज्ज्वल हैं

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही हर चीज़ का रक्षक और निगरानी करने वाला है। आसमान और ज़मीन की कुंजियाँ उसी की हैं। (39:62-63)

पवित्र है वह जिसके हाथ में राज्य और हर चीज़ की सीमाएँ हैं। (36:83)

जो कुछ है, उसका सारा भण्डार हमारे ही पास है। (15:21)

कोई भी चलता-फिरता प्राणी ऐसा नहीं है जिसे वह माथे से न पकड़ ले। (11:56)

K अब, हे असावधान, जो इस संसार की सभी वस्तुओं और घटनाओं को कार्य-कारण के नियम के अधीन मानता है। जिन कारणों को तुम सृजनात्मकता का आधार मानते हो, वे केवल दिव्य शक्ति के संचालन को ढकने वाले आवरण हैं, क्योंकि ईश्वर की गरिमा और महानता को ऐसे आवरणों की आवश्यकता होती है। लेकिन शाश्वत दिव्य शक्ति, जो हर चीज से पूर्णतः स्वतंत्र है, सदैव सक्रिय रहती है और सृजन करती है, क्योंकि दिव्य एकता और महिमा के लिए ऐसा होना आवश्यक है।

शाश्वत सम्राट के अधिकारियों को स्वतंत्र रूप से उनके आदेशों को निष्पादित करने का कोई अधिकार नहीं है। वे उनकी संप्रभुता में भागीदार नहीं हैं; बल्कि, उनका एकमात्र कार्य माध्यम के रूप में कार्य करना है जिसके माध्यम से उनके प्रभुत्व के कार्य और निष्पादन होते हैं।

मनुष्य को देखा और जाना जाता है, तथा वे पर्यवेक्षक और गवाह के रूप में कार्य करते हैं। ऐसा करके, वे सृष्टि के नियमों और आदेशों का पालन करते हैं और इस प्रकार अपनी पूजा का कर्तव्य निभाते हैं, जो उनके स्वभाव और स्वभाव के अनुसार आवश्यक है। वे इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि उन्हें ईश्वरीय शक्ति की गरिमा और ईश्वरीय प्रभुता और संप्रभुता की महिमा को प्रकट करना चाहिए। दूसरी ओर, मानव राजाओं को अपने शासन को लागू करने में मदद करने के लिए अधिकारियों और अन्य साधनों की आवश्यकता होती है। इन दो प्रकार के अधिकारियों के बीच कोई समानता या संबंध नहीं है।

चूँकि अधिकांश लोग घटनाओं के पीछे छिपी सुंदरता और बुद्धिमत्ता को नहीं समझ पाते, इसलिए वे शिकायत करते हैं और आपत्ति करते हैं। ईश्वर से ऐसी शिकायतों को हटाने के लिए, कारणों को एक हस्तक्षेप करने वाले पर्दे (लोगों और ईश्वर के कार्यों के बीच) के रूप में रखा जाता है। हालाँकि, जो लोग घटनाओं में वास्तविक सुंदरता और बुद्धिमत्ता देखते हैं, वे जानते हैं कि क्या हो रहा है। एक दृष्टांत इस बिंदु को स्पष्ट करता है: मृत्यु के दूत ने ईश्वर से शिकायत की कि उसके सेवक आत्माओं को लेने वाले के रूप में उसकी भूमिका के बारे में शिकायत करेंगे। ईश्वर ने उसे उत्तर दिया: "मैं तुम्हारे और उनके बीच बीमारी और दुर्भाग्य डालूँगा ताकि वे उनके बारे में शिकायत करें, न कि तुम्हारे बारे में।"

संक्षेप में, ईश्वर की गरिमा और महानता के लिए शिकायतों को रोकने और सतही रूप से तर्क करने वालों से, कुछ तुच्छ या घृणित चीजों और मामलों में शक्ति की भागीदारी को छिपाने के लिए स्पष्ट कारणों की आवश्यकता होती है। साथ ही, ईश्वर की एकता और महिमा के लिए यह आवश्यक है कि इन स्पष्ट कारणों का चीजों के निर्माण या स्वभाव में कोई हिस्सा न हो।

एक टिप्पणी

ईश्वर की एकता में विश्वास के दो स्तर हैं: सतही तौर पर यह विश्वास करना कि ईश्वर का कोई साझीदार नहीं है, और यह कि ब्रह्मांड केवल उसका है (ऐसे विश्वासी भटकाव और भ्रम के शिकार हो सकते हैं) और दृढ़ विश्वास कि ईश्वर एक है, कि सब कुछ केवल उसका है, और केवल वही सृजन करता है। ऐसे विश्वासी उसकी मुहर देखते हैं और सभी चीज़ों पर उसकी मुहर देखते हैं। संदेह से मुक्त होकर, वे हमेशा और हर जगह खुद को उसकी उपस्थिति में महसूस करते हैं।

उनका विश्वास विचलन या संदेह से कम नहीं हो सकता। ईश्वर की एकता में ऐसा विश्वास प्राप्त करने के लिए, मैं उसकी कुछ किरणें बताऊँगा जो मैंने कुरान से प्राप्त की हैं।

पहली किरण

सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी बनाई हर चीज़ पर एक ख़ास मुहर लगाता है, जिससे पता चलता है कि वह सभी चीज़ों का रचयिता है। वह हर प्राणी पर एक ख़ास मुहर लगाता है,

यह दर्शाता है कि वह सभी चीज़ों का निर्माता है। प्रत्येक “अक्षर” जो शक्ति है
"लिखता है" में शाश्वत सम्राट के लिए विशिष्ट एक अद्वितीय हस्ताक्षर है।

उदाहरण के लिए, उस मुहर को देखिए जो उसने जीवन पर लगाई है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति जीवन पर विजय प्राप्त करता है।
वह अनेक चीजों को एक में बदल देता है और अनेक चीजों को एक में बदल देता है।
हम जो पानी पीते हैं वह असंख्य जानवरों के अंगों के निर्माण का साधन बन जाता है और
व्यवस्थाएँ। उसकी आज्ञा से, एक इकाई “अनेक” बन जाती है। इसके विपरीत,
वह विभिन्न खाद्य पदार्थों को एक विशेष शरीर या त्वचा, एक संपूर्ण प्रणाली में बदल देता है
या उपतंत्र। इस प्रकार "कई" चीजें, भगवान के आदेश से, एक इकाई बन जाती हैं। जिसके पास बुद्धि,
चेतना और हृदय है, उसे यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि
अनेक चीजों से एकल, सरल इकाई बनाना और एकल इकाई का उपयोग करना
बहुत सी चीज़ें बनाना सभी चीज़ों के रचयिता के लिए एक विशेष मुहर है।

दूसरी किरण

उसकी अनगिनत मोहरों में से, उस एक को देखो जिसे उसने जीवित रखा है
चीजें। जटिल और समावेशी चरित्र होने के कारण, एक जीवित चीज़ एक लघु ब्रह्मांड है, सृष्टि के वृक्ष का एक
चमकता हुआ फल, सृष्टि का एक केंद्रक
सृष्टिकर्ता द्वारा अधिकांश प्रजातियों के लिए एक नमूना या पैटर्न के रूप में बनाया गया है। ऐसा लगता है कि
जीवित वस्तुएँ सृजन से बुद्धि के माध्यम से बिल्कुल सटीक माप के साथ फ़िल्टर की गई एक बूंद थीं, जो
ज्ञान के माध्यम से अस्तित्व से बिल्कुल सटीक गणनाओं के साथ निकाली गई एक सर्व-समावेशी बिंदु थी।
जैसा कि सृजन के सर्वोच्च अव्यवस्था के बिना कोई कुछ भी नहीं बना सकता है, जिसने मधुमक्खी को
अधिकांश चीजों का सूचकांक बनाया, और जिसने पुस्तक के अधिकांश हिस्सों को सम्मिलित किया

मानव स्वभाव में सृजन, सृष्टिकर्ता ही होना चाहिए। उसने अंजीर के पेड़ की रचना की
अपने छोटे से बीज में भावी जीवन की कल्पना की और मानव हृदय को उसकी एक छोटी सी प्रतिलिपि बना दिया।
हज़ारों दुनियाएँ और साथ ही उन पर खुलने वाली एक खिड़की। उन्होंने रिकॉर्ड किया
हमारा पिछला जीवन और उससे जुड़ी हर चीज़ मानव स्मृति में मौजूद है।
इन और इसी तरह की कई चीजों को केवल सभी का निर्माता ही कर सकता है
और ऐसा करना संसार के पालनहार के लिए एक विशेष छाप है।

तीसरी किरण

जीवन लाने और पुनर्जीवित करने के कृत्यों पर किए गए हस्ताक्षर को देखें।
असंख्य संभावित उदाहरणों में से, हम केवल एक का उल्लेख करते हैं: प्रत्येक पारदर्शी (दर्पण) या स्पष्टतः
पारदर्शी (कांच) चीज़ में, ग्रहों से लेकर बूंदों तक
और कांच पर, सूर्य से संबंधित एक मोहर - एक छवि या प्रतिबिंब - होती है।
अद्वितीय, शाश्वत सूर्य प्रत्येक जीवित चीज़ पर एक मुहर, एक मोहर भी लगाता है,
पुनर्जीवित करना और जीवन में लाना, जो उसके सभी गुणों को दिखाकर खुद को प्रकट करता है

13 यदि सभी भौतिक कारण - मान लीजिए कि उनमें शक्ति और इच्छाशक्ति होती - उस मोहर के समान वस्तु का निर्माण करने के लिए एक साथ आते, तो वे ऐसा नहीं कर सकते थे, भले ही वे एक-दूसरे की सहायता करते (17:88)।

मान लीजिए कि बूंद, कांच या किसी पारदर्शी चीज में सूर्य की छवियाँ सूर्य से संबंधित नहीं हैं। इसे देखते हुए, किसी को यह स्वीकार करना होगा कि सूर्य के सामने की प्रत्येक बूंद में, सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने वाले कांच के प्रत्येक टुकड़े में एक वास्तविक, छोटा सूर्य है, और हर पारदर्शी चीज सूर्य बन गई है।

मान लीजिए कि हर जीवित चीज़ और जीवन, जीवन को लाने का हर कार्य, ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्तियों के लिए जिम्मेदार नहीं है। मान लीजिए कि यह विश्वास कि जीवन ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्तियों का केंद्र है, जिसे शाश्वत सूर्य की किरणों के रूप में माना जा सकता है, स्वीकार्य नहीं है। अगर ऐसा होता, तो प्रत्येक जीवित चीज़ में सृजन की अनंत शक्ति, सर्वव्यापी शक्ति होनी चाहिए-

13 सर्वशक्तिमान ईश्वर को पाँच दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए। एक ईश्वरीय सत्ता के रूप में उनका सार (इस्लामी शब्दावली में ज़ात)। केवल वही अपने सार को जान सकते हैं। एक पैगंबरी परंपरा कहती है: "ईश्वर के सार पर चिंतन न करें; इसके बजाय, उनके कार्यों और कृत्यों पर चिंतन करें।" ईश्वर का कोई साझीदार, पसंद और समानता नहीं है, जैसा कि आयत में बताया गया है: उनके जैसा या उनकी तुलना में कुछ भी नहीं है। दूसरा दृष्टिकोण ईश्वर होने के नाते उनके आवश्यक, "जन्मजात" गुण हैं, जो गुणों का स्रोत हैं। तीसरा दृष्टिकोण उनके गुण हैं, जो तीन प्रकार के हैं: आवश्यक गुण (जैसे, अस्तित्व, कोई शुरुआत नहीं, शाश्वत स्थायित्व, निर्मित से अलग होना, स्वयं-निर्वाह); सकारात्मक गुण (जैसे, जीवन, ज्ञान, शक्ति, भाषण, इच्छा, सुनना, देखना, बनाना); और असंख्य "नकारात्मक" गुण, जिन्हें संक्षेप में इस प्रकार कहा जाता है "ईश्वर किसी भी दोष और कमी से पूरी तरह मुक्त है।"

गुण नामों के स्रोत हैं: जीवन सर्व-जीवित को जन्म देता है, ज्ञान सर्वज्ञ को जन्म देता है, और शक्ति सर्व-शक्तिशाली को जन्म देती है। ईश्वर के अनेक नामों में से लगभग 1,000 हमें ज्ञात हैं। नाम कर्मों के स्रोत हैं: जीवन देने का स्रोत सर्व-जीवित में है, और छोटी से छोटी हर चीज़ को जानना सर्वज्ञ में उत्पन्न होता है।

ईश्वर को उसके कर्मों, नामों और गुणों से "जाना" जाता है। ब्रह्मांड में, भौतिक और अभौतिक दुनिया में जो कुछ भी मौजूद है, वह नाम और गुणों की अभिव्यक्ति का परिणाम है: सार्वभौमिक और व्यक्तिगत प्रावधान उसके नाम की ओर इशारा करते हैं जो सर्व-प्रदाता है, और सर्व-उपचार उपचार और रोगी की रिकवरी का स्रोत है। दर्शन का स्रोत बुद्धि है, इत्यादि। कर्म, नाम और गुण ईश्वर और सृजित के बीच "लिंक" हैं, या "प्रतिबिंबित करने वाले" हैं जिनके साथ ईश्वर का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यद्यपि हम ईश्वर को उसके कार्यों, नामों और गुणों से जानने या पहचानने का प्रयास करते हैं, लेकिन हमें उसके बारे में समानता या तुलना के संदर्भ में नहीं सोचना चाहिए, क्योंकि उसके जैसा कुछ भी नहीं है। वह पूरी तरह से एक है, एकल है, और जो कुछ भी मौजूद है या जिसके अस्तित्व में होने की संभावना है, उससे पूरी तरह अलग है। इस अर्थ में, उसकी एकता संख्या के संदर्भ में नहीं है। उसके पास सृजित चीज़ों के साथ एकता और संबंध भी हैं। उसके कार्यों, नामों और गुणों के माध्यम से उसके बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए, कुछ तुलनाएँ स्वीकार्य हैं। इस बात की ओर इस श्लोक में संकेत किया गया है: क्योंकि ईश्वर सर्वोच्च तुलना है। लेखक द्वारा ईश्वर के कार्यों, नामों और गुणों को समझने के लिए तुलना की इकाई के रूप में सूर्य का उपयोग करना इस दृष्टिकोण से विचार किया जाना चाहिए। (अनुवाद)

ज्ञान, पूर्ण इच्छा, और गुण जो केवल आवश्यक रूप से पाए जाते हैं
अस्तित्ववान सत्ता। साथ ही, प्रत्येक परमाणु में दिव्यता होनी चाहिए, क्योंकि हर चीज का अस्तित्व उसके लिए ही जिम्मेदार माना जाएगा। इसी तरह, अगर हर चीज का अस्तित्व कारणों के लिए जिम्मेदार माना जाता, तो पूर्ण दिव्यता होती
प्रत्येक कारण को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। इस प्रकार इसमें अनगिनत भागीदार होंगे
दिव्यता, जिसके लिए अनिवार्यतः पूर्ण स्वतंत्रता और अस्वीकृति की आवश्यकता होती है
किसी भी साझेदारी का।

एक अणु या बीज पर विचार करें। देखें कि इसकी सुव्यवस्थित संरचना कितनी आश्चर्यजनक है।
रचना और संबंध। इसका उस जीवित चीज़ के सभी भागों के साथ संबंध है जिसका यह हिस्सा है, साथ ही साथ सभी सदस्यों के साथ भी संबंध है
इसकी प्रजातियाँ और अन्य सभी जीव। इसके रिश्ते और कर्तव्य उनसे मिलते जुलते हैं
सैन्य अधिकारियों के संबंध में एक निजी का। यदि परमाणु या बीज का परम शक्ति से संबंध विच्छेद हो जाए, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह
उसके पास सब कुछ देखने के लिए आंखें हैं और एक सर्वव्यापी चेतना है।

संक्षेप में: यदि किसी बूंद में सूर्य के प्रतिबिंब को वास्तविक कारण माना जाए तो
सूरज, छोटी-छोटी चीज़ों में भी कई सूरज होने चाहिए। यह वही बात है
उस परम शक्तिशाली के साथ, जिसकी शक्ति के संबंध में जो कुछ भी
बिना किसी अपवाद के, एक ही है। उपरोक्त कथन को स्वीकार करने का अर्थ है
अनगिनत देवताओं को स्वीकार करना।

चौथी किरण

किताब लिखने के लिए सिर्फ़ लेखक और कलम की ज़रूरत होती है। हालाँकि, अगर यह छपी हुई है
एक प्रिंटिंग प्रेस पर, पुस्तक में वास्तविक अक्षरों के बराबर ही लोहे के अक्षर होने चाहिए, और उन्हें बनाने और छापने के लिए कई लोगों की आवश्यकता होगी।
उन्हें व्यवस्थित करें। सूरा या सीन दो अरबी अक्षरों के अंदर बहुत छोटे अक्षरों में लिखा गया है
अक्षर या और सिन। अगर कोई किताब एक शब्द में छोटे, बढ़िया अक्षरों में लिखी जाए,
पुस्तक को छापने के लिए उतने ही लौह अक्षरों की आवश्यकता होगी जितने वास्तविक अक्षरों की आवश्यकता होगी
वह एक शब्द.

यदि आप कहते हैं कि ब्रह्माण्ड एक एकल व्यक्ति की कलम से लिखी गई पुस्तक है,
एक, तो आप सबसे आसान और सबसे उचित रास्ता अपना रहे हैं।
ब्रह्मांड के अस्तित्व को प्रकृति या भौतिक कारणों से जोड़कर देखें तो आप सबसे अनुचित और कठिन रास्ता अपना रहे हैं। ऐसे में, "प्रिंटिंग"
एक जीवित प्राणी के लिए उतने ही उपकरणों की आवश्यकता होगी जितनी कि ब्रह्मांड के अधिकांश भाग को छापने के लिए आवश्यक है। यह एक असंभव अनुमान प्रतीत होता है।

मान लीजिए कि किसी फूल या फल का अस्तित्व प्रकृति या भौतिक कारणों से है। यह देखते हुए, प्रत्येक
मिट्टी, पानी और हवा के कण में कुछ न कुछ अवश्य होना चाहिए।

जितने सारे "प्रोग्राम" और छिपे हुए कारखाने [इसे बनाने के लिए] हैं, उतने ही सारे फूल और फल उनके सभी रंगों, स्वादों और आकारों में हैं। या, प्रत्येक कण में सभी पौधों को बनाने के लिए पर्याप्त शक्ति होनी चाहिए, और सभी फूलों (फूलों) और फल देने वाले पौधों और पेड़ों के बारे में जानने के लिए सटीक विवरण में पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। फिर, प्रत्येक हवा, पानी और मिट्टी के कण या परमाणु का उपयोग सभी (या अधिकांश) पौधों को बनाने के लिए किया जा सकता है।

मान लीजिए कि मिट्टी से भरे बर्तन में अलग-अलग बीज डाले गए हैं। बर्तन को खाली करके उसमें धरती की सतह से ली गई मिट्टी भर दें। दोनों ही मामलों में, परिणाम लगभग एक जैसा ही होगा, जैसा कि दुनिया भर में देखा जा सकता है। आकार, रंग, स्वाद और दिखावट में विविधता के बावजूद, किसी भी मिट्टी का इस्तेमाल सभी फूल और फल देने वाले पेड़ों को उगाने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक बीज, अपनी भौतिक सादगी और समानता के बावजूद, पूरे पौधे या पेड़ को बनाने के लिए विशेष मशीनों या कार्यशालाओं की आवश्यकता होगी।

पांचवी किरण

देखो, हे मित्र! जबकि एक पुस्तक में प्रत्येक अक्षर खुद को एक अक्षर के रूप में इंगित करता है और केवल एक मामले में, यह कई मामलों में अपने लेखक की ओर इशारा करता है। इसी तरह, ब्रह्मांड की पुस्तक का प्रत्येक "निर्मित" अक्षर खुद को केवल एक अक्षर के रूप में इंगित करता है, जबकि कई मामलों में अपने निर्माता की ओर इशारा करता है। यह व्यक्तिगत रूप से और उन शब्दों और वाक्यों में ऐसा करता है जिनमें यह शामिल है, और अपने निर्माता के शीर्षकों को प्रकट करता है, उनका वर्णन इस तरह करता है जैसे कि यह एक बढ़िया कविता हो।

छठी किरण

हे मित्र, देखो कि कैसे महिमावान निर्माता प्रत्येक विशेष वस्तु पर अपनी विशेष मुहर लगाता है, और एक पूरे के प्रत्येक भाग पर अपनी विशिष्ट मुहर लगाता है। इसी तरह, वह प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक पूरे पर अपनी विशेष मुहर लगाता है। वह ब्रह्मांड पर अपनी एकता की मुहर लगाता है, साथ ही इसके किसी भी भाग पर, जिससे उसकी एकता प्रदर्शित होती है। अपने सभी या कुछ नामों की अभिव्यक्तियों को एक इकाई पर केंद्रित करके, वह अपनी एकता प्रदर्शित करता है।[14] यहाँ बताए गए मुहर को देखें: ईश्वर की दया के निशानों को देखें, कैसे वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है। वह उसी तरह मृतकों का पुनर्जीवनकर्ता है, और वह सभी चीजों पर

शक्तिशाली है (30:50)। पृथ्वी का पुनरुद्धार एक आश्चर्यजनक घटना है।

---

[14] एकता और एकरूपता दो अलग-अलग अर्थों को दर्शाते हैं। एकता का अर्थ है ईश्वर द्वारा अपने सभी नामों को पूरे ब्रह्मांड में या उसके किसी भी भाग पर प्रकट करना। एकता का अर्थ है ईश्वर द्वारा अपने सभी या कुछ नामों को एक ही इकाई पर केन्द्रित करना, जिससे प्रजातियों और व्यक्तियों के बीच भिन्नता उत्पन्न होती है।

“पुनरुत्थान” या फिर से जीवन में आना। अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियाँ जीवन में वापस लाया गया। कई गैर-मानव प्रजातियों के सदस्य इससे कहीं ज़्यादा हैं मानवता के हैं। फिर भी, कुछ सूक्ष्म उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, अधिकांश पौधों को उनकी सटीक पूर्व पहचान में नहीं उगाया जाता है, बल्कि ऐसे रूपों में उगाया जाता है जो पर्याप्त और करीबी समानता। हालांकि उन्हें पुनर्जीवित किया जाता है, उनका पुनरुद्धार पुनरुत्थान की सहजता को इंगित करता है [जो समय के अंत में घटित होगा ब्रह्मांड के विनाश के बाद].

एक दूसरे के साथ असीम रूप से मिश्रित होने के बावजूद, इन्हें पुनर्जीवित करना असंख्य प्रजातियों को बिना किसी भ्रम के और सटीक भेदभाव के साथ अनंत शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान के स्वामी की विशेष मुहर। प्रजातियाँ असीम रूप से मिश्रित और परस्पर मिली हुई हैं, और उनमें बहुत अधिक समानता है उनमें से। पृथ्वी के "पृष्ठ" पर, अनगिनत "पुस्तकें" बिना किसी भ्रम या गलती के, अनंत क्रम के साथ, और पूर्ण सटीकता के साथ लिखी गई हैं उनमें भेद करना। यह भी उस एक की विशेष मुहर है जिसके उसके हाथ में सभी चीज़ों का राज्य और कुंजियाँ हैं। वह एक काम करते हुए साथ ही दूसरा काम भी कर सकता है।

जो लोग पुनरुत्थान को नकारते हैं, उन्हें पृथ्वी के पुनरुत्थान में इसके अनगिनत उदाहरण देखने चाहिए। आपका इससे इनकार करना इस तरह है: एक आदमी ने दूसरे आदमी को असंख्य खोई हुई किताबों को याद से फिर से लिखते हुए या नई रचनाएँ करते हुए देखा। खोए हुए लोगों की तरह, सभी एक साथ। उसे बताया जाता है कि चमत्कार करने वाला लेखक वह अपनी लिखी हुई पुस्तक को पानी में घोलने के बाद, एक पल में ही पुनः लिख सकता है। आदमी जवाब देता है: "असंभव! एक नष्ट हो चुकी किताब को कैसे दोबारा लिखा जा सकता है?" वह अपने अज्ञानी और शक्तिहीन व्यक्तित्व की तुलना उस चमत्कारी लेखक से करता है जो कभी कुछ नहीं भूलता और सबकुछ कर सकता है।15 यदि कोई उस आदमी से कहता है, जो पहाड़ उठाकर अपनी ताकत दिखाता है, कि वह वह उस बगीचे में मेहमानों के रास्ते में बाधा डालने वाली चट्टान को नहीं हटा सकता जिसमें वह जाएगा उन्हें सबसे स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थ प्रदान करें, क्या आप उसे नहीं बुलाएंगे अक्ल का अंधा?

---

15 क़ुरआन कहता है: मैं तुममें से किसी भी व्यक्ति के कर्म को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा, चाहे वह चाहे तुम पुरुष हो या स्त्री: तुम एक दूसरे से भिन्न हो (3:195)। यह स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक जिम्मेदारी में पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करता है। प्रत्येक लिंग अधिकांश साझा करता है जिम्मेदारियों की तो बहुत सी बातें हैं, लेकिन हर एक की कुछ विशेष जिम्मेदारियां होती हैं। कुरान में आमतौर पर संबोधन के लिए पुल्लिंग का इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह अरबी की विशेषताओं में से एक है। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग का इस्तेमाल ऐसे समूह के लिए किया जाता है जिसमें दोनों शामिल होते हैं पुरुष और महिला, जैसे अंग्रेजी शब्द 'मानव जाति', जिसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं। इसलिए भाईचारे में बहनचारा भी शामिल है, और चूंकि विश्वासियों में पुरुष और महिलाएं दोनों शामिल हैं और महिला विश्वासियों, विश्वासियों भाई और बहन हैं। हालांकि, मूल पाठ को बनाए रखने और दोहराव से बचने के लिए, आमतौर पर हम स्त्री रूपों का उल्लेख नहीं करते हैं अनुवाद में. (ट्र.)

वसंत के दौरान एक उत्कृष्ट, सूक्ष्म रूप से कढ़ाई की गई मुहर होती है प्रभु, जो पूर्ण सटीकता और व्यवस्थितता, प्रचुरता में खुद को प्रदर्शित करता है और व्यापकता, और पूर्ण गति और सहजता के साथ। आप देखते हैं कि पूरी तरह से मिश्रित चीजें पूरी तरह से अलग और अलग हो जाती हैं। यह मुहर उस व्यक्ति के लिए विशेष है जो एक साथ कई काम कर सकता है, जिससे कुछ भी नहीं हो सकता

छिपा हुआ है, और जिसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

इसी मौसम में, हम पृथ्वी पर असाधारण कला और गतिविधि देखते हैं उद्देश्यपूर्णता, अंतर्दृष्टि, ज्ञान और उदारता पर। यह हर जगह होता है, ठीक उसी तरह, व्यवस्थितता और प्रचुरता। यह कला और गतिविधि उस एक की मुहरें, जो कहीं नहीं होते हुए भी, हर जगह मौजूद है उसकी शक्ति और ज्ञान, जिसे कुछ भी थका नहीं सकता, और जिसे कभी मदद की आवश्यकता नहीं होती।

सातवीं किरण

हे मित्र , देखो ! जो सनातन है, उसकी एकता की मुहर जैसे बेसोत-ऑफ-ऑल को पृथ्वी के "पृष्ठ" पर और पूरे विश्व में देखा जाता है स्वर्ग और पृथ्वी पर उसकी एकता की छाप दिखाई देती है, इसलिए ब्रह्मांड पर भी उसकी एकता की छाप दिखाई देती है संपूर्ण ब्रह्मांड एक भव्य महल, एक सुव्यवस्थित फैक्ट्री की तरह है, एक सुनियोजित शहर, जिसके सभी तत्व या भाग मिलकर एक महान कार्य करते हैं उद्देश्य। तत्व एक दूसरे की मदद करने के लिए जल्दी करते हैं, यहां तक कि लंबी दूरी पर भी, जब वे ज़रूरी हैं और खो नहीं जाते। जो लोग इस सच्चाई को समझते हैं, वे देखते हैं कि कुछ लोग कैसे भाग दूसरे भागों की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे एक-दूसरे की मदद के अनुरोधों का जवाब देते हैं और एक ही चीज़ के प्रति घनिष्ठ सहयोग और आज्ञाकारिता में काम करते हैं। प्रबंधक बनें, सुव्यवस्थित ढंग से काम करें और विशिष्ट उद्देश्यों के लिए जीवों की सेवा करें।

पारस्परिक सहायता और सहयोग के इस सिद्धांत को देखिए। सूर्य और चंद्रमा, दिन और रात, तथा गर्मी और सर्दी पौधों के साथ मिलकर काम करते हैं जानवरों की मदद करना और उन्हें उनका भोजन पहुँचाना, जिसे वे दया के खजाने से लेते हैं। जानवर इंसानों की मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं। उदाहरण के लिए, मधुमक्खियाँ और रेशम के कीड़े दयालु और दयालु अल्लाह के खजाने से शहद और रेशम लेते हैं उन्हें मानवता तक ले जाएं। मिट्टी, हवा और पानी के कण फलों और सब्जियों की मदद करते हैं, जिनमें से प्रत्येक का स्वाद और पोषण की गुणवत्ता अलग-अलग होती है। बदले में, वे शरीर की कोशिकाओं को पूर्णतः सुव्यवस्थित रखने और महान उद्देश्यों के लिए सहायता करते हैं।

यह परिपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण और सुव्यवस्थित पारस्परिक सहायता इन सभी चीज़ों, विशेषकर निर्जीव वस्तुओं द्वारा प्रकट होती है। यह एक स्पष्ट प्रमाण है और स्पष्ट तर्क है कि वे एक बुद्धिमान पालनहार के सेवक हैं, एक उदार प्रबंधक के कार्यकर्ता हैं जो उसके आदेश और अनुमति से काम करते हैं, और उसकी शक्ति और बुद्धि.

आठवीं किरण

हे मित्र , देखो ! जीवों को आवश्यक भोजन समय पर वितरित किया जाता है और उनकी ज़रूरत के हिसाब से। यह सुव्यवस्थित सार्वभौमिक प्रावधान, जो एक सर्वव्यापी दया में निहित है, उन लोगों के लिए प्यार और ज्ञान को दर्शाता है आपूर्ति की जा रही है। ऐसी सर्वव्यापी दया पूर्ण अनुग्रह के साथ मिलकर अनुग्रह और संतुष्टि का संकेत देती है। ऐसी अनुग्रह के साथ मिलकर सार्वभौमिक ज्ञान का तात्पर्य एक निश्चित उद्देश्य और चेतना से है। इस तरह के सार्वभौमिक ज्ञान को एक परिपूर्ण व्यवस्था के साथ मिलाकर सभी चीजें एक दूसरे पर निर्भर हो जाती हैं। इस तरह की निर्भरता के लिए आपसी मदद और एकजुटता की आवश्यकता होती है अस्तित्व के सभी भाग.

यह सब उस एक की विशेष मुहर है जो प्रभु है, पालनहार है, सभी चीजों का प्रदाता और निर्देशक; एक मुहर जो उसके लिए अद्वितीय है जिसका सूर्य को आज्ञा दो, चन्द्रमा और तारे वश में हो जाएँगे। वही एक है जिसने जो कुछ पैदा किया है उसे अच्छा बनाया (32:7) और जब चाहेगा वह तो बस इतना ही कहता है कि "हो जाओ" और वह हो जाती है (36:82)।

नौवीं किरण

पृथ्वी पर सभी व्यक्तिगत चीजों और प्रजातियों पर एकता की छाप देखी जाती है और ब्रह्मांड, और इस तरह के सार्वभौमिक पर दुनिया भर में वितरित किया जाता है वायु, जल और मिट्टी जैसे तत्व।

कृषि योग्य भूमि में बीज बोना यह दर्शाता है कि भूमि किसके नियंत्रण में है? बीज का स्वामी, और बीज उसका है जो उसे नियंत्रित करता है भूमि। सभी सार्वभौमिक तत्व [जैसे पानी, हवा और मिट्टी, जो एक सर्वव्यापी ज्ञान और बुद्धि का संकेत देते हैं] एक ही निर्माता के अधीन हैं। उनकी सादगी, एकरूपता और व्यापकता, और सभी चीजें उनमें "रोपे गए" (यानी, दया के फल, शक्ति के चमत्कार, और शब्द बुद्धि), साथ ही कुछ उद्देश्यों के लिए उनका विश्वव्यापी वितरण, साक्ष्य कि व्यापक और समझ में आया, साथ ही साथ “भूमि” और इसमें लगाए गए "बीज" ईश्वर द्वारा नियंत्रित होते हैं। प्रत्येक प्रजाति और तत्व इस बात की गवाही देते हैं कि यह सब उसी का है जो सबका मालिक है। प्रत्येक फूल या फल, पशु या सूक्ष्म जीव, एक मुहर की घोषणा है, एक स्टाम्प उच्चारण, एक हस्ताक्षर है जो पूर्ण सामंजस्य, सुव्यवस्था की भाषा में घोषणा करता है, और उद्देश्य: "जो मेरा मालिक है, वही इस जगह का मालिक है। जिसने मुझे बनाया है इसे बनाया। जिसने मुझे एक पत्र के रूप में इस्तेमाल किया, उसने इसे लिखा। जिसने मुझे एक सिलाई बना दिया इसे बुना।”

जो सबसे छोटे जीवों को नियंत्रित करता है और सबसे कमज़ोर प्राणियों के जीवन का प्रबंधन करता है, उसके पास सभी तत्वों पर सर्वोच्च शक्ति है। जो सभी तत्वों का उपयोग करता है, वह सभी जानवरों और पौधों के जीवन का प्रबंधन करता है, और उन्हें अपने प्रभुत्व के हाथ में रखता है। एकता की यह मुहर उन लोगों के लिए स्पष्ट है जिनकी आँखें और दिल खुले और साफ हैं।

क्या आप किसी भी चीज़ पर पूर्ण स्वामित्व और नियंत्रण का दावा कर सकते हैं? किसी व्यक्ति से पूछें, और वह उत्तर देगा: "केवल मेरी प्रजाति का पूर्ण स्वामी ही मुझ पर स्वामित्व का दावा कर सकता है।" प्रजाति से पूछें, और वे उत्तर देंगे: "केवल पृथ्वी का पूर्ण स्वामी, इसके बाह्य और आंतरिक दोनों, ही मुझ पर स्वामित्व का दावा कर सकते हैं।" पृथ्वी से पूछें, और वह उत्तर देगी: "केवल पूरे ब्रह्मांड का पूर्ण स्वामी ही मुझ पर स्वामित्व का दावा कर सकता है।"

दसवीं किरण

हमने भागों, व्यक्तिगत प्राणियों और समग्रता पर, ब्रह्माण्ड पर, जीवन, जीवित प्राणियों और जीवन लाने पर एकता की कुछ छापों की ओर ध्यान दिलाया है।

आइये प्रजातियों और समग्रता पर एकता की इन असंख्य मुहरों में से एक और पर नजर डालें।

एक पेड़ और एक फल बनाने की कठिनाई या आसानी एक जैसी है, क्योंकि दोनों एक ही केंद्र से विकास और निर्गमन के एक ही नियम पर निर्भर करते हैं। पालन-पोषण और देखभाल के एक ही नियम पर निर्भर रहने से कठिनाई और खर्च इस हद तक कम हो जाता है कि एक व्यक्ति द्वारा प्रचुर मात्रा में फल वाले पेड़ को उगाने और कई लोगों द्वारा एक फलदार पेड़ को उगाने में कोई अंतर नहीं होता है। कई लोगों द्वारा उगाए गए एक फल को उगाने के लिए उतने ही औजारों की आवश्यकता होती है जितने कि प्रचुर मात्रा में फल वाले पेड़ को उगाने के लिए। इसी तरह, एक सेना को सुसज्जित करने के लिए आवश्यक उपकरण, मशीनें और कारखाने एक जैसे ही होंगे यदि केवल एक सैनिक को सुसज्जित किया जाए। अंतर केवल गुणात्मक है। साथ ही, किसी पुस्तक की हज़ारों प्रतियाँ छापना एक प्रति छापने से ज़्यादा महंगा नहीं है। यदि प्रत्येक प्रति को एक अलग प्रिंटिंग प्रेस पर छापा जाता, तो भुगतान की गई राशि उसी प्रेस से हज़ारों प्रतियों के लिए भुगतान की गई राशि से हज़ारों गुना अधिक होती।

संक्षेप में: यदि असंख्य चीजों को एक स्रोत से नहीं जोड़ा जाता है, तो असंख्य चीजों को एक चीज से जोड़ने के अलावा, उन चीजों जितनी ही कठिनाइयाँ होंगी। इसलिए, दुनिया भर में फैली इतनी सारी प्रजातियों को बनाने की असाधारण-असाधारण आसानी उनके निर्माता की एकता से आती है।

ग्यारहवीं किरण

एक प्रजाति के सदस्यों और एक वर्ग की प्रजातियों के बीच आवश्यक समानताएं स्टाम्प की एकता और "कलम" की एकता को दर्शाती हैं, और यह प्रमाणित करती हैं कि ऐसी समानताएं एक ही व्यक्ति का काम हैं। साथ ही, [इतनी बहुतायत में उनके निर्माण की] पूर्ण सहजता और उन पर किया गया कम खर्च यह दर्शाता है कि वे एक ही व्यक्ति का काम हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो उनका निर्माण असंभव रूप से कठिन होता। यह देखी गई सहजता और साधनों की मितव्ययिता यह भी दर्शाती है कि ईश्वर का अपने सार और कार्यों में कोई भागीदार नहीं है, क्योंकि ऐसी स्थिति व्यवस्था को नष्ट कर देगी, जो बदले में ब्रह्मांड को बर्बाद कर देगी।

बारहवीं किरण

हे मित्र , देखो ! जीवन ईश्वरीय एकता तथा उसके अस्तित्व की अनिवार्यता को प्रमाणित करता है, तथा मृत्यु उसकी स्थायित्व तथा शाश्वतता को प्रमाणित करती है।

नदी और समुद्र पर तैरते बुलबुलों में और साथ ही धरती पर पारदर्शी चीज़ों में प्रतिबिंबित सूर्य की छवियाँ सूर्य की गवाही देती हैं। जब सूर्य अस्त होता है या नदी सुरंग में प्रवेश करती है तो ये छवियाँ गायब हो जाती हैं और जब सूर्य उदय होता है या नदी सुरंग से बाहर निकलती है तो नई छवियाँ दिखाई देती हैं। यह सूर्य के प्रकाश की स्थायित्व की गवाही देता है और दर्शाता है कि ये छवियाँ एक ही सूर्य का काम हैं। उनका अस्तित्व सूर्य के अस्तित्व को दर्शाता है; उनका गायब होना दर्शाता है कि केवल एक "शाश्वत" सूर्य है।

इसी तरह, प्राणियों का अस्तित्व अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के आवश्यक अस्तित्व को दर्शाता है। उनके अस्तित्व के कारणों के साथ-साथ उनका गायब होना और नए प्राणियों के साथ उनका प्रतिस्थापन, उनकी स्थायित्व, शाश्वतता और एकता की गवाही देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दिन और रात, ऋतुओं और वर्षों के परिवर्तन के साथ-साथ, सुंदर प्राणियों का नवीनीकरण होता है, और अच्छे प्राणियों को प्रतिस्थापित किया जाता है क्योंकि वे "अस्त" होते हैं जबकि उनके जैसे "उदय" होते हैं। यह सब एक शाश्वत सुंदर व्यक्ति के अस्तित्व की गवाही देता है जो निरंतर खुद को प्रकट करता है, और उसकी स्थायित्व और एकता की।

कारणों और उनके प्रभावों का लुप्त होना, साथ ही वर्षों और शताब्दियों का क्रम और उनके बाद उनके जैसे लोगों का आना, इस बात की गवाही देता है कि कारण और उनके प्रभाव सूक्ष्म उद्देश्यों के लिए बनाए गए हैं। क्रमिक रूप से आने वाले सभी अच्छे प्राणी सर्वशक्तिमान, दयालु और सुंदर एक के प्राणी हैं, जिनके सभी नाम सुंदर और पवित्र हैं। ऐसी सक्रियता इस बात की गवाही देती है कि वे उसके बदलते कार्य, चलते हुए दर्पण और क्रमिक मुहरें और मुहरें हैं।

तेरहवीं किरण

हे मित्र , देखो ! बिना किसी अपवाद के, हर चीज़ अपनी जीभ से इशारा करती है
अपने निर्माता के आवश्यक अस्तित्व के लिए आवश्यक असहायता। सामान्य तौर पर
सृष्टि के क्रम में, प्रत्येक तत्व के पास अपने कार्यों को व्यक्त करने के लिए एक जीभ है और
कार्य। ये भाषाएँ, प्रत्येक तत्व की लाचारी के बावजूद, उनके कार्य को इंगित करती हैं
सृष्टिकर्ता की एकता। हर चीज़ दो तरह से सृष्टिकर्ता के ज़रूरी अस्तित्व और एकता की गवाही देती है। हर
जीवित प्राणी में, उसकी दो निशानियाँ हैं
सृष्टि की एकता और पूर्ण स्वतंत्रता। कुरान के माध्यम से
आत्मज्ञान, मैंने देखा है कि सृष्टि का प्रत्येक भाग अनिवार्य रूप से ईश्वर की गवाही देता है
अस्तित्वमान सत्ता, एक और सभी का शाश्वत-प्रार्थना, लगभग ५५ में
भाषाएँ, जिनका मैंने क़तरा (द ड्रॉप) में संक्षेप में वर्णन किया है।16

चौदहवीं किरण

हे मित्र, यह जान लो कि जिस प्रकार सभी प्राणी सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और एकत्व की गवाही
देते हैं, उसी प्रकार वे उसकी महिमा के गुणों की भी गवाही देते हैं।
सौंदर्य और पूर्णता; उसके सार की पूर्णता; और यह तथ्य कि उसका
अस्तित्व, आवश्यक "गुण", विशेषताएं, नाम और कार्यों में कोई दोष या दोष नहीं है
कमी।

किसी कार्य की पूर्णता उस कार्य की पूर्णता की ओर संकेत करती है।
शीर्षक की पूर्णता की ओर इशारा करता है। शीर्षक की पूर्णता विशेषता की ओर इशारा करती है
पूर्णता। विशेषता की पूर्णता अस्तित्व की आवश्यक क्षमता या अपरिहार्य गुणवत्ता की ओर इशारा करती है।
आवश्यक या अपरिहार्य गुणवत्ता की पूर्णता अस्तित्व की पूर्णता की ओर इशारा करती है। एक महल की उत्तम
संरचना और सजावट इंजीनियर के काम की पूर्णता को प्रकट करती है।

कार्य की पूर्णता शीर्षक की पूर्णता को दर्शाती है, जिसका अर्थ है कि इंजीनियर है
कुशल, विशेषज्ञ और सक्षम। शीर्षक की पूर्णता पूर्णता को प्रदर्शित करती है
इंजीनियर के गुण (इंजीनियर ज्ञानवान, बुद्धिमान, सक्षम,
गुणों की पूर्णता इन आवश्यक क्षमताओं को प्रदर्शित करती है (इंजीनियर ने अपनी श्रेष्ठ क्षमताओं और विशिष्ट
संभावनाओं को पूरी तरह से महसूस किया है)। क्षमताओं की पूर्णता व्यक्ति की पूर्णता को प्रकट करती है

एक इंजीनियर।

इसी प्रकार, ब्रह्माण्ड में हम जो कार्य पूर्णता देखते हैं, वह भी पूर्णता को दर्शाती है।
उनके पीछे की गतिविधि की पूर्णता का साक्ष्य, जो बदले में, लाता है
काम करने वाले की उपाधियों की पूर्णता का साक्ष्य।

---

[16] क़तरा को इस पुस्तक के चौथे ग्रंथ के रूप में यहाँ शामिल किया गया है।

पूर्णता गुणों या विशेषताओं की पूर्णता की गवाही देती है, नाम या उपाधियों के लिए गुणों से उत्पन्न होता है। गुणों की पूर्णता से पूर्णता का पता चलता है आवश्यक क्षमताएँ, जो गुणों के स्रोत हैं। आवश्यक क्षमताओं की पूर्णता सर्व-महिमावान सत्ता की पूर्णता की गवाही देती है। वास्तव में, उनकी महिमामय पूर्णता और राजसी सौंदर्य की तुलना में, सभी पूर्णता या ब्रह्माण्ड में सुन्दरता केवल एक धुंधली या अस्पष्ट छाया है।

निष्कर्ष के तौर पर:

• कारण या कारणता ईश्वरीय शक्ति के संचालन को छिपाते हैं। • ईश्वर की एकता में विश्वास के दो स्तर हैं: सतही विश्वास और दृढ़ विश्वास।
tion.

• जीवन ईश्वर की एकता के लिए एक तर्क है। • यदि एक ईश्वर ने सब कुछ बनाया है, तो सब कुछ आसान हो जाता है। यदि प्रकृति या भौतिक कारणों ने सब कुछ बनाया है, इसलिए सब कुछ अत्यंत कठिन हो जाता है।

• प्रत्येक वस्तु केवल एक "अक्षर" के रूप में स्वयं की ओर संकेत करती है, जबकि अपने निर्माता की ओर संकेत करती है अनेक सम्मान और अपने निर्माता की उपाधियों को प्रकट करना। • वसंत पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरण प्रदर्शित करता है। • महान उद्देश्यों के लिए हर चीज का सार्वभौमिक अंतर्संबंध इंगित करता है एक निर्माता और निर्देशक के लिए.

• प्रदाता का हर चीज़ के प्रति प्रेम और ज्ञान इस बात से पता चलता है कि वह किस तरह से सब कुछ करता है। उनकी देखभाल करता है.

• प्रत्येक प्रजाति और तत्व इस बात की गवाही देते हैं कि वे उसी के हैं जो उनका स्वामी है सब कुछ।

• अनेक स्रोतों से असंख्य चीजों का श्रेय लेने पर समान परिणाम मिलता है कठिनाइयों की संख्या.

• प्राणी अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं उनके अस्तित्व के माध्यम से। वे उसकी स्थायित्व, शाश्वतता और उनके अस्तित्व के कारणों के साथ-साथ उनके लुप्त होने के माध्यम से एकता, और उनके बाद नए लोगों का आना।

• प्रत्येक वस्तु अपनी अनिवार्य असहायता की भाषा में अपने निर्माता की ओर संकेत करती है आवश्यक अस्तित्व। • ब्रह्मांड में हम जो कुछ देखते हैं उसकी पूर्णता सर्व-महिमावान की गवाही देती है अस्तित्व की पूर्णता.

दूसरा ग्रंथ

दूसरा ग्रंथ

पैगम्बर के ज्ञान के सागर से निकली बूंदें

नोट : हमारे भगवान के बारे में हमें कई बातें पता हैं। इनमें से तीन सबसे महान और सबसे सार्वभौमिक हैं:

- ब्रह्माण्ड, जिसके कुछ संकेत [हमारे प्रभु के अस्तित्व के विषय में] और एकता] पर पहले ही चर्चा हो चुकी है।
- भविष्यद्वक्ताओं की मुहर, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, हमारे प्रभु का सबसे बड़ा संकेत और उनके छिपे हुए खजानों की कुंजी।
- कुरान, जो ब्रह्मांड की पुस्तक की व्याख्या करता है और प्राणियों के विरुद्ध ईश्वर का तर्क.

हमें दूसरे संकेत, पैगम्बर मुहम्मद को, एक स्पष्ट, निर्विवाद "तर्क" [हमारे प्रभु के लिए] के रूप में पहचानना चाहिए, और फिर वह जो कहते हैं उसे सुनना चाहिए।[17] इस संकेत के ज्ञान के सागर से, हम कुछ बूंदों का उल्लेख करेंगे।

पहली बूंद

हे मित्र, जान लो कि पैगम्बर मुहम्मद, हमारे प्रभु के लिए यह निर्विवाद, स्पष्ट तर्क, एक सार्वभौमिक व्यक्तित्व है। उन्हें निम्नलिखित शब्दों में वर्णित किया जा सकता है:

[17] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में उनके नाम या उपाधि के बाद “उन पर शांति और आशीर्वाद हो” वाक्यांश लिखा जाता है, ताकि उनके प्रति हमारा सम्मान प्रदर्शित हो और ऐसा करना धार्मिक आवश्यकता भी है। उनके साथियों और अन्य प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए भी इसी तरह का वाक्यांश इस्तेमाल किया जाता है: “ईश्वर उनसे प्रसन्न हो।” हालाँकि, चूँकि यह प्रथा गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित कर सकती है, इसलिए ये वाक्यांश इस पुस्तक में नहीं हैं, क्योंकि उन्हें मान लिया गया है और उनका कोई अनादर करने का इरादा नहीं है। (संपादक)

चूँकि उनका व्यक्तित्व प्रकृति में सार्वभौमिक है, पृथ्वी उनकी मस्जिद है, मक्का उनकी वह इबादत की जगह है और मदीना उसका पुलपिट है। वह सभी विश्वासियों का नेतृत्व करता है, जो खड़े होते हैं उनके पीछे पंक्तियों में खड़े हों और खुशी के सिद्धांतों पर उनके शब्दों का पालन करें [दोनों दुनिया]। सभी नबियों के प्रमुख, वह अपने ही लोगों द्वारा उनके खिलाफ लगाए गए झूठ और गालियों को दूर करते हैं और उन्हें और आवश्यक बातों की पुष्टि करते हैं इस्लाम के भीतर उनके धर्मों का एक हिस्सा है। सभी संतों के गुरु, वह अपने संदेशवाहक के प्रकाश के माध्यम से उनका मार्गदर्शन और शिक्षा करते हैं। वह वह "धुरी" है जिसके चारों ओर लोग रहते हैं यह एक ऐसा चक्र है जो अच्छे, सच्चे और धर्मी पैगम्बरों से बना है, जो ईश्वर के नामों का उच्चारण करते हैं और उसके संदेश पर सहमत होते हैं।

मुहम्मद एक प्रकाशमान वृक्ष है जो पूर्ववर्ती पैगम्बरों और उनके द्वारा प्रचारित स्वर्गीय सिद्धांतों की दृढ़, स्वस्थ और जीवंत जड़ों पर उग रहा है। यह पेड़ हरी, ताज़ा शाखाएँ निकालता है जो संतों के उत्तम "फल" प्रदान करती हैं ईश्वर के ज्ञान से प्रतिष्ठित। उसने जो भी दावा किया, उसकी पुष्टि हुई सभी पैगम्बरों ने अपने चमत्कारों के आधार पर, और सभी संतों ने अपने अच्छे कार्यों के आधार पर या अद्भुत काम करता है। उसकी सभी पुष्टियों पर सभी सिद्ध लोगों की मुहरें लगी हुई हैं। अगर कोई उसे यह कहते हुए सुनता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, तो वह पुष्टि करता है दिव्य एकता, अतीत और भविष्य से एक ही घोषणा सुनने को मिलेगी, मानवता के शानदार चमकते "सूर्य" और सितारों से भगवान के नामों का जाप करते हुए उनके सर्कल में। उनके अलग-अलग दृष्टिकोण और स्वभाव के बावजूद, वे सहमत हैं अपनी सभी पुष्टियों के साथ, मानो एक स्वर में कह रहे हों: "आप घोषणा करें और बोलें सच्चाई।"

कोई उस बात पर कैसे आपत्ति कर सकता है जिसकी पुष्टि असंख्य गवाहों ने की है, जिनके चमत्कार और अद्भुत अच्छे कार्य उनके शुद्ध चरित्र को प्रदर्शित करते हैं और सत्यनिष्ठा?

दूसरी बूंद

हे मित्र, जान लो कि यह महान व्यक्ति, जो ईश्वरीय एकता और मानवता को इसकी ओर मार्गदर्शन करता है, इसकी पुष्टि पैगम्बरत्व और संतत्व से होती है। 14 शताब्दियों से लोग इस बात पर सहमत हैं। (टोरा, सुसमाचार, भजन, आदि) ने उनके आगमन की भविष्यवाणी की और पुष्टि की उनकी नबूवत से पहले, उनके बारे में यह बात आश्चर्यजनक रूप से पुष्ट होती है कि, या तो उसने काम किया या फिर उसके संबंध में कुछ हुआ। विश्वसनीय चैनलों के माध्यम से यह भी बताया गया है कि उसके आने की भविष्यवाणी की गई थी।

उनके द्वारा किये गए सैकड़ों चमत्कारों से उनकी पुष्टि होती है: चंद्रमा को विभाजित करना; उसकी उंगलियों से प्रचुर मात्रा में जल बहता है; उसके आह्वान पर पेड़ हिलते हैं; उसकी प्रार्थना पर वर्षा का आना; अनेक भूखे लोगों को तृप्त करना

उनके आशीर्वाद से बहुत कम भोजन; चट्टानों की भाषा समझना,
पेड़, छिपकलियाँ, हिरन, ऊँट और भेड़िये, इत्यादि। इन सभी का वर्णन सच्चे परंपरावादियों और इतिहासकारों ने किया है। उनकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि
इस्लामी कानून, जो लोगों को दोनों दुनिया में खुशी पाने में सक्षम बनाता है।
पहले ही देख चुके हैं उसके "सूर्य" की किरणें खुशियाँ बिखेरती हुई। अगर आपकी आँखें
और दिल खुला है, यह आपके लिए पर्याप्त होगा।

तीसरी बूंद

ऐ दोस्त, जान लो कि उसका व्यक्तित्व या चरित्र ही उसकी पैगम्बरी होने का प्रमाण है।
सूर्य की तरह [अपने प्रकाश, गर्मी और अन्य अभिव्यक्तियों के माध्यम से खुद को प्रकट करते हुए], सभी प्रशंसनीय गुण उनके व्यक्तित्व में केंद्रित थे, साथ ही साथ
अपने मिशन को पूरा करते समय उन्होंने जो गुण और उत्कृष्टताएं प्रदर्शित कीं, वे इस बात की पुष्टि करती हैं
उनकी पैगम्बरी। आगे के सबूत उनका दृढ़ विश्वास (उनके द्वारा प्रदर्शित) हैं
कठोर जीवन), ईश्वर के प्रति महान श्रद्धा, धार्मिकता, और ईश्वर के प्रति अतुलनीय सेवाभाव
अपने प्रभु के प्रति पैगम्बर का पूर्ण समर्पण, जिसका प्रमाण उनका जीवन है; उनकी ईमानदारी, दृढ़ता और साहस की पूर्णता; और उनका अत्यंत समर्पण।
उनके आंदोलनों में निश्चितता उनके कारण उनके पूर्ण विश्वास से पता चलती है
उसे पुष्ट करें। जिस तरह हरे पत्ते, चमकीले फूल और ताजे फल एक पेड़ की शक्ति के साक्षी होते हैं, उसी तरह पैगम्बर का अपने उद्देश्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और पूरी निश्चितता और दृढ़ता के साथ उसका पालन करना उनके दावे को पुष्ट करता है।

चौथी बूंद

हे मित्र, जान लो कि समय और स्थान मानव तर्क और बुद्धि को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।
तो, आइए हम इन बंधनों से मुक्त होकर समय में पीछे की ओर यात्रा करें
खुशी के युग के दौरान अरब प्रायद्वीप में कपड़े पहनना
उस समय, हम "दिव्य संदेशवाहक क्षेत्र की धुरी" का दौरा करेंगे
काम पर।

अपनी आँखें खोलो और ध्यान से देखो। सबसे पहले हमारी नज़र किसी चीज़ पर पड़ती है।
वह असाधारण व्यक्ति थे जो अच्छे दिखने और अच्छे आचरण में सभी से आगे थे।
एक प्रकाशित पुस्तक है, और एक असाधारण संक्षिप्त और बुद्धिमान तरीके से बोलता है
सृष्टि, मानवता, जिन्न और अन्य सभी प्राणियों को संबोधित करते हुए।

वह कितनी अजीब बातें बोलता है: एक बहुत ही महत्वपूर्ण मामला, एक बहुत ही
भयानक समाचार। वह ब्रह्मांड की रचना से पर्दा हटाता है, समझाता है
यह क्यों बनाया गया था, और हर किसी के मन में उठने वाले सवालों का जवाब देता है
सचेतन प्राणी: मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मेरा उद्देश्य या उद्देश्य क्या है?
अंतिम गंतव्य?

पांचवी बूंद

इस आदमी को देखो। देखो कि वह किस तरह से सच्चाई को इतनी रोशनी से फैलाता है कि
हमारी रात दिन में बदल गई है, हमारी सर्दी वसंत में बदल गई है। ऐसा लगता है जैसे ब्रह्मांड ने अपना रूप बदल लिया है, जिससे उसका परेशान, व्यथित चेहरा खुश हो गया है और
मुस्कुराते हुए.

यदि हम ब्रह्माण्ड को उस सत्य के प्रकाश के अनुसार नहीं देखेंगे जो
वह जो लाया, वह दुख से भरा हुआ लगता है, इसके जीवित प्राणी अजनबी और परस्पर शत्रु जैसे हैं, और इसकी निर्जीव वस्तुएँ डरावनी लाशों जैसी हैं। हम जानवरों और मनुष्यों को अनाथों के रूप में देखते हैं जो मृत्यु और वियोग के दर्द से रोते हैं। दुनिया की हलचलें, परिवर्तन, फेरबदल, सजावट और श्रृंगार संयोग के अर्थहीन खिलौने लगते हैं। हमारी लाचारी एक है

हमारी गरीबी हमें लगातार परेशानी का स्रोत बनाती है और हमारी गरीबी हमें शक्तिहीन बना देती है।
तर्क या बुद्धि हमें लगातार अतीत के दुखों और भविष्य की चिंताओं से परेशान करती है, जिससे हम सबसे निम्न और सबसे दयनीय बन जाते हैं।
जानवरों.

अब उसकी रोशनी से कायनात को देखो और इस्लाम की दूरबीन से देखो। देखो इसका स्वरूप कितना बदल गया है। अब यह घर नहीं रहा
शोक की नहीं, बल्कि एक मस्जिद है जिसमें सभी प्राणी सृष्टिकर्ता की स्तुति और धन्यवाद करते हैं
और [उसके कामों पर] विचार करें। वे प्राणी जो पहले अजनबी लगते थे
और आपसी दुश्मन दोस्त, भाई और बहन बन गए हैं।
जो वस्तुएं डरावनी लाशें लगती थीं, वे अब मिलनसार जीवित प्राणियों जैसी हो गई हैं
कुछ महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करना। उन कार्यों की भाषा में या
अपने कार्यों के माध्यम से वे अपने सृष्टिकर्ता के संकेतों को स्पष्ट करते हैं।

जो जीव पहले अनाथों की तरह पीड़ा और शिकायतों से रोते थे, वे अब जीवन भर सृष्टिकर्ता का नाम जपते दिखाई देते हैं
और उन्हें उनके कर्तव्यों (मृत्यु) से मुक्त करने के लिए धन्यवाद देते हैं। ब्रह्मांड की हलचलें, परिवर्तन और बदलाव अब संयोग के अधीन नहीं हैं,
लेकिन सृष्टिकर्ता के शासन या स्वामित्व से संदेश, "पृष्ठ" जिन पर
वह सृष्टि के अपने संकेतों और ब्रह्माण्ड के नियमों को लिखता है, और उसमें प्रतिबिम्बित करता है
उनके नाम प्रतिबिंबित हैं। संक्षेप में, ब्रह्मांड दिव्य ज्ञान की एक पुस्तक है।

अब अतीत को देखो, अंधकार की उस महान कब्र को। देखो कि यह कैसे हुआ है
भविष्यवक्ताओं के सूर्य और संतों के सितारों से प्रकाशित। भविष्य की ओर देखो,
सबसे अंधेरी रात। देखिए कैसे इसे कुरान की आयतों से रोशन किया गया है
प्रकाश और स्वर्ग के उद्यान के रूप में प्रकट होता है।

अब लोगों को देखिए और देखिए कि वे असहाय से कैसे आगे बढ़े हैं,
निराश्रित और अपमानित जानवरों को पृथ्वी पर ईश्वरीय खिलाफत का दर्जा दिया गया।

वे अपनी कमजोरी के बल पर, अपनी शक्ति के बल पर आगे बढ़े हैं।
उनकी लाचारी, उनकी गरीबी का कारण, उनकी विपन्नता की प्रेरणा, उनकी दासता की शक्ति, उनके हृदय का प्रकाश और
उनकी बुद्धि का तेज। फिर देखो कि उनके पतन के कारण (असहायता, दरिद्रता और दुर्बलता) ही उनके उत्थान के कारण बन गए हैं।
क्योंकि वे उस प्रकाशमान व्यक्ति, पैगम्बर मुहम्मद, द्वारा लाई गई रोशनी से प्रबुद्ध थे।

उनकी उपस्थिति के बिना, ब्रह्मांड और उसमें मौजूद हर चीज़ (सृष्टि सहित)
मानवता) बेकार और अर्थहीन हो गई होती।
उस अद्भुत, श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए जो ब्रह्मांड को ज्ञात करता है
और इसके निर्माता, यह सुंदर ब्रह्मांड अस्तित्व में नहीं होता, क्योंकि हम कर सकते थे
इसका मतलब नहीं समझा है। वह कितना सच्चा है जिसके शब्द सच्चे हैं,
और जिसके लिए सृष्टि का राज्य है, उसकी घोषणा में: लेकिन तुम्हारे लिए, मैं
संसारों का निर्माण नहीं किया होता।

छठी बूंद

उसे देखो और सुनो। वह अनंत खुशी की बात करता है और अच्छाई लाता है
वह असीम दया प्रकट करता है और सभी को अपनी ओर बुलाता है। वह घोषणा करता है
ईश्वरीय शासन और पालन-पोषण की सुंदरता, और रहस्यों का खुलासा
दिव्य नामों के खजाने.

उनके मिशन के दृष्टिकोण से उन्हें देखें: वे प्रमाण हैं और
सत्य का दीपक, मार्गदर्शन का सूर्य और सुख का साधन। देखो
उसके व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से: वह सर्व-दयालु के प्रेम [अपने प्राणियों के प्रति] का प्रतीक है, प्रभु की दया का मूर्त रूप है
उन्हें, मानवता का सम्मान, और सबसे उज्ज्वल और शानदार फल
सृष्टि का वृक्ष। अब उसे देखो और देखो कि इस्लाम का प्रकाश कैसे फैल गया है
बिजली की गति से पूर्व और पश्चिम तक पहुँच गया, कैसे एक-चौथाई
मानवता ने उनके मार्गदर्शन के उपहार को पूरे दिल से स्वीकार किया है।

इसे देखते हुए, क्या शारीरिक आत्मा और शैतान, बिना किसी कुतर्क के, तर्क के साथ, इन कथनों के विरुद्ध, विशेष रूप से मूल सिद्धांत के विरुद्ध तर्क कर सकते हैं?
उनके कथनों में से एक: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है?

सातवीं बूंद

उसे क्या प्रेरित करता है? पवित्र शक्ति। उसमें उसकी उपलब्धियों पर विचार करें
रेगिस्तान जंगली लोगों से भरा हुआ था जो अपने रीति-रिवाजों, जनजातीयता और शत्रुता का कट्टरता से पालन करते थे। वे इतने कठोर दिल वाले थे कि उन्होंने अपनी बेटियों को दफना दिया-

वे बिना किसी पश्चाताप या दु:ख के जीवित रहते हैं। उसने इतनी जल्दी उनमें से ऐसी चीज़ों को कैसे हटा दिया और उन्हें उच्च, प्रशंसनीय गुणों से सुसज्जित कर दिया? उसने उन्हें मानवता का शिक्षक और सभ्य लोगों का स्वामी कैसे बनाया? शक्ति और आतंक से नहीं, जैसा कि अधिकांश शासक करते हैं, बल्कि दिलों और दिमागों पर विजय प्राप्त करके; आत्माओं और अहंकारों को वश में करके; और दिलों का प्रिय, तर्क का शिक्षक, आत्म-शिक्षा का शिक्षक और आत्माओं का शासक बनकर।

आठवीं बूंद

एक शक्तिशाली, दृढ़ निश्चयी शासक या सरकार के लिए भी एक छोटे समुदाय से एक स्थापित बुरी आदत को हटाना बहुत मुश्किल है। पैगंबर ने बहुत कम बल, थोड़े प्रयास और बहुत जल्दी से अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का कट्टरता से पालन करने वाले लोगों के विशाल समुदायों से कई स्थापित बुरी आदतों को हटा दिया। इसके अलावा, उन्होंने उनकी जगह प्रशंसनीय सद्गुणों और श्रेष्ठ गुणों को स्थापित किया। इस्लाम में धर्मांतरण से पहले और बाद में उमर इब्न अल-खत्ताब [इस्लाम-पूर्व मक्का के एक प्रमुख व्यक्ति] को देखें - उनके धर्मांतरण के बाद, उनके चरित्र में सद्गुणों का बीज एक "लंबा, उत्कृष्ट वृक्ष" [सबसे प्रशंसनीय गुणों का] बन गया।

पैगम्बर की लगभग सभी उपलब्धियाँ असाधारण हैं। जो लोग इस बात से इनकार करते हैं, उन्हें आज अरब प्रायद्वीप जाना चाहिए और देखना चाहिए कि वे वहाँ क्या कर सकते हैं। उन्हें सौ दार्शनिकों [मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों] को ले जाना चाहिए, और देखना चाहिए कि क्या वे 100 वर्षों में पैगम्बर द्वारा एक वर्ष में किए गए कार्यों का सौवाँ हिस्सा भी कर सकते हैं।

नौवीं बूंद

मानव स्वभाव की बुनियादी समझ से पता चलता है कि लोग किसी ऐसी चीज़ के बारे में आसानी से झूठ नहीं बोल सकते जो पकड़े जाने पर उन्हें शर्मिंदा कर सकती है। भले ही यह किसी महत्वहीन मामले से संबंधित हो और एक छोटे समूह को बताया गया हो, फिर भी यह कठिन है।

अगर वे बिना शर्मिंदगी या शर्म के आराम से झूठ बोल सकते हैं, तो वे बाध्यकारी झूठे हैं, एक ऐसा गुण जो उनके दुश्मनों द्वारा प्रचारित किया जाएगा। इसे देखते हुए, कोई व्यक्ति, विशेष रूप से अपनी विश्वसनीयता और सच्चाई के लिए प्रसिद्ध और सबसे बड़ी जिम्मेदारी वहन करने वाला व्यक्ति, अंतिम दिन तक मानवता के सामने सबसे महत्वपूर्ण और महान मिशन के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है? वह उन लोगों के सामने कैसे झूठ बोल सकता है जो उससे नफरत करते हैं और बस उसे बेनकाब करने का इंतजार कर रहे हैं?

जब पैगम्बर बोलते हैं तो उन्हें अपने विरोधियों का कोई डर नहीं होता, न ही वे हिचकिचाते हैं और न ही चिंतित होते हैं। बल्कि वे पूरी ईमानदारी और उत्साह के साथ बोलते हैं, और इस तरह से बोलते हैं कि उनके दुश्मनों के तर्क, तर्क और रवैये में उलझन पैदा हो जाती है।

वह अपने मिशन के बारे में लोगों से झूठ कैसे बोल सकता था और उन्हें धोखा कैसे दे सकता था?
नहीं! [जो कुछ वह कहता है] वह तो केवल इलहाम है (53:4)।

सत्य स्वतंत्र है और धोखे से मुक्त है, और जो आँख सत्य को देखती है वह धोखा नहीं खाती। इसलिए पैगम्बर का मार्ग सत्य है, और उन्होंने दूसरों को धोखा नहीं दिया, जैसे कि उनकी सत्य को देखने वाली आँखें भ्रम से धोखा नहीं खा सकती थीं।

दसवीं बूंद

उनके शब्दों को सुनिए जो लोगों को भयानक घटनाओं के बारे में सूचित और चेतावनी देते हैं। वह उन विषयों के बारे में बात करते हैं जो दिलों को मोहित करते हैं और दिमाग को चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं, और मानवता को अच्छी ख़बरें देते हैं [इस दुनिया और आख़िरत में एक सुखद भविष्य की]।

बहुत से लोग चीज़ों और घटनाओं की सच्चाई जानने के लिए लगभग कुछ भी देने को तैयार रहते हैं। अगर कोई आपसे कहे कि कोई व्यक्ति चाँद या बृहस्पति से आया है और बहुत ही रोचक बातें कह रहा है और भविष्य की भविष्यवाणी कर रहा है, तो क्या आप यह जानने के लिए लगभग कुछ भी नहीं देंगे कि वह क्या कह रहा है? यह बहुत ही अजीब बात है कि जब आप शायद इस मामले में ऐसा करेंगे, तो आप इस बात की परवाह नहीं करते कि पैगंबर क्या कहते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि सत्य और विशेषज्ञ ज्ञान वाले लोग (अर्थात, पैगंबर, सत्यनिष्ठ और सत्य की खोज करने वाले विद्वान और संत) उनकी पुष्टि करते हैं और उनकी कही गई बातों और भविष्यवाणी से सहमत हैं। वह एक सम्राट के कार्यों के बारे में बात करते हैं, जिसके राज्य में चाँद एक मक्खी से अधिक कुछ नहीं है जो एक पतंगे के चारों ओर चक्कर लगाती है, जो बदले में एक दीपक के चारों ओर चक्कर लगाती है जिसे उसने अपने मेहमानों के लिए तैयार किए गए हजारों महलों में से एक में जलाया है। वह अजूबों और चमत्कारों से भरी दुनिया की बात करते हैं, एक ऐसी क्रांति के बारे में जो इतनी असामान्य और असाधारण है कि अगर धरती फट जाए और उसके पहाड़ बादलों की तरह उड़ जाएं, तो यह उस क्रांति के एक-हज़ारवें हिस्से के बराबर भी विचित्र नहीं होगी।

> जब सूर्य को मोड़ दिया जाएगा, और जब तारे अपनी चमक खोकर गिर पड़ेंगे, और जब पहाड़ हटा दिए जाएंगे, और जब 10 महीने की गर्भवती ऊँटों को छोड़ दिया जाएगा, और जब जंगली जानवरों को एक साथ इकट्ठा किया जाएगा, और जब समुद्र उबलने लगेंगे, और जब आत्माएँ फिर से मिल जाएँगी, और जब जीवित दफना दी गई लड़की से पूछा जाएगा कि उसे किस पाप के लिए मारा गया था, और सभी लोगों के कर्मों का लेखा-जोखा खोल दिया जाएगा, और जब स्वर्ग को फाड़ दिया जाएगा, और जब नरक को आग में जला दिया जाएगा, और जब स्वर्ग को निकट लाया जाएगा - तब प्रत्येक आत्मा जान लेगी कि उसने क्या तैयार किया है। (81:1-14)

> जब आकाश फट जाएगा, और जब ग्रह बिखर जाएंगे, और जब महासागर उंडेल दिए जाएंगे, और जब क़ब्रें खत्म हो जाएंगी-

हर एक प्राणी जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा है और क्या पीछे रखा है। (82:1-5)

जब धरती भूकम्प से हिल जाएगी और धरती अपना बोझ उठा लेगी और लोग पूछेंगे कि "क्या बात है उसे?" उस दिन वह अपनी ख़बर सुनाएगी, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे वहाँ भेजा है। उस दिन सभी लोग अलग-अलग समूहों में निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ।

जो कोई अच्छा काम करेगा, वह कण भर भी अच्छा देखेगा और जो कोई बुरा काम करेगा, वह कण भर भी अच्छा देखेगा (99:1-8)

खड़खड़ाने वाला! खड़खड़ाने वाला कौन है? काश तुम जान पाते कि खड़खड़ाने वाला क्या है! एक दिन जब इंसान बिखरे हुए पतंगों की तरह हो जाएगा और पहाड़ कटे हुए ऊन की तरह हो जाएँगे। फिर, जिनके पलड़े भारी होंगे (नेकियों से) वे सुखी जीवन जीएँगे। लेकिन जिनके पलड़े हल्के होंगे, उनके लिए अथाह गड्ढा ही ठिकाना होगा। तुम्हें कौन बताएगा कि वह कैसा है! वह तो भड़कती हुई आग है। (101:1-11)

वह भविष्य की खबर देता है, जिसकी तुलना में इस संसार का भविष्य एक असीम सागर की तुलना में पानी की मृगतृष्णा से एक बूंद की तरह है। वह संतोष की अच्छी खबर लाता है, जिसकी तुलना में सांसारिक संतोष एक सदा चमकते सूर्य की तुलना में बिजली की चमक के समान है।

इस अजूबों के ब्रह्मांड के पर्दे के नीचे असाधारण घटनाएँ हैं जो हमारी आदत से बिलकुल परे हैं। हम ऐसी घटनाओं के बारे में तभी जान सकते हैं जब कोई असाधारण व्यक्ति उन्हें देखे और हमें उनके बारे में बताए। हम देखते हैं कि वह क्या करता है और कैसे रहता है, और निष्कर्ष निकालते हैं कि वह उन्हें देखता है और इस तरह या तो हमें चेतावनी देता है या हमें अच्छी ख़बरें देता है [उनके परे हमारे लिए इंतज़ार कर रहे सुखद भविष्य की]। वह हमें बताता है कि दुनिया के भगवान को क्या पसंद है, वह हमसे क्या करवाना चाहता है, कुछ ऐसे भयानक मामलों के बारे में जिनसे हम बच नहीं सकते, और कुछ अजीब वास्तविकताओं के बारे में जिनका हम सामना करेंगे और जिनके बिना खुशी असंभव है।

क्या वे वास्तव में ऐसी सच्चाई और वास्तविकताओं के प्रति अंधे और बहरे हो सकते हैं? लोग ऐसे असाधारण व्यक्ति की परवाह क्यों नहीं करते?

ग्यारहवीं बूंद

हे मित्र, जान लो कि यह व्यक्ति, जो अपने सबसे उत्कृष्ट चरित्र के लिए हमें जाना जाता है और अपनी अतुलनीय उपलब्धियों के लिए दुनिया द्वारा पहचाना जाता है, जो ईश्वर की एकता के लिए एक स्पष्ट और सच्चा तर्क है और उसकी एकता का सबसे सच्चा सबूत है, शाश्वत सुख का एक निर्णायक तर्क और निश्चित प्रमाण है। अपने आह्वान और मार्गदर्शन के माध्यम से, वह हमें दिखाता है कि शाश्वत सुख कैसे प्राप्त किया जाए, जिसका निर्माण उसने अपनी प्रार्थना और सेवा के माध्यम से किया।

देखिए कैसे वह प्रभु के सामने सबसे व्यापक प्रार्थना का नेतृत्व कर रहे हैं। प्रायद्वीप के निवासियों को, दुनिया के निवासियों के सामने। फिर से देखो। सभी आदम के पुण्य वंशज, आदि से लेकर समय के अंत तक, उसके पीछे पंक्तियों में खड़े हो जाओ और उसका अनुसरण करो। सदियों से वे उसकी पूजा करते हुए उसका अनुसरण करते हैं और उसकी प्रार्थनाओं पर “आमेन” कहते हैं। जो कुछ हो रहा है, उस पर ध्यान दें वह ऐसा करता और कहता है, क्योंकि वह एक गहरी, व्यापक और प्रबल आवश्यकता से प्रेरित होकर प्रार्थना करता है। संसार, आकाश और सभी प्राणी उसके साथ हैं और कहते हैं उनके व्यवहार और स्वभाव की भाषाएँ: “हाँ, हे प्रभु, उसकी प्रार्थना स्वीकार करो। हम वही माँगते हैं जो वह आपसे माँगता है, साथ ही हमारे पास जो कुछ भी है - हमारी आँखें, कान, जीभ, हाथ, पैर, दिल, दिमाग, इत्यादि। तेरे नाम, जो कुछ वह मांगे, हम तुझसे मांगते हैं।

उसके आचरण पर ध्यान दें और देखें कि वह किस प्रकार अपनी दरिद्रता के बारे में अत्यन्त सचेत होकर, अत्यन्त उत्कट इच्छा और गहरे दुःख के साथ अपने प्रभु के समक्ष प्रार्थना करता है। वह ब्रह्माण्ड को आँसू बहाने के लिए प्रेरित करता है, और ब्रह्माण्ड उसकी प्रार्थना में भाग लेता है। वह क्या माँगता है? एक उद्देश्य की प्राप्ति, जो अगर साकार न हो, तो हमें कमज़ोर कर देगी और सभी प्राणियों को बिना किसी मूल्य या अर्थ के एक अवस्था में पहुंचा दिया जाएगा। हालांकि, अगर यह उद्देश्य साकार हो जाता है, तो सभी प्राणी पूर्णता के अपने स्तर को प्राप्त कर लेंगे उनकी क्षमता.

देखिये वह किस तरह मदद के लिए इतनी गहरी लालसा और इतनी गहरी प्रार्थना करता है। दया के लिए मार्मिक अनुरोध कि सार्वभौमिक शासन का दिव्य सिंहासन और स्वर्ग दया और प्रेम से द्रवित हो जाता है और कहता है: “आमीन, हे परमेश्वर, आमीन।” अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह किससे अनुरोध करता है? सर्वशक्तिमान, सर्वश्रुत, सर्वदयावान, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, और वह दयालु है, जो हर किसी की गुप्ततम प्रार्थना को सुनता है और फिर उसे संतुष्ट करता है। वह अपने प्राणियों में से जो कुछ भी चाहता है, उसे देखता है, और उन्हें अपनी इच्छा को उस तरह से साकार करने में सक्षम बनाता है जिस तरह से उन्होंने सोचा भी नहीं था। उदारतापूर्वक, व्यवस्थित और नियमित तरीके से देता है और करुणा दिखाता है इस बात पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता कि इस तरह का प्रशिक्षण, पालन-पोषण और भरण-पोषण ही सबसे अच्छा है। एक सर्व-श्रवणशील, सर्व-ज्ञानी, सर्व-देखने वाला और सर्व-बुद्धिमान का कार्य।

बारहवीं बूंद

कितना असाधारण! यह आदमी जो सबके साथ खड़ा है, वह क्या माँगता है? उसके पीछे पैगम्बर हैं और वह अपना हाथ ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन की ओर उठाता है, एक ऐसी प्रार्थना प्रस्तुत करता है जिस पर मानवता और जिन्न "आमीन" कहते हैं? हम जानते हैं उनके कार्य मानवता का सम्मान, सभी प्राणियों का गौरव और सृष्टि में अद्वितीय। वह ईश्वर से [सभी प्राणियों के लिए] विनती करता है

सभी दिव्य नामों में से जो प्राणियों के "दर्पण" में प्रकट होते हैं। वह शाश्वत अस्तित्व, ईश्वर से मिलना, स्वर्ग और ईश्वर की प्रसन्नता की कामना करता है। शाश्वत सुख (अन्य कारणों के अलावा) ईश्वरीय दया, कृपा, बुद्धि द्वारा आवश्यक है,
और न्याय, साथ ही भगवान के सुंदर नाम, जिनमें से लगभग सभी की मांग है
दूसरी दुनिया का अस्तित्व। लेकिन अगर ऐसा नहीं भी होता, तो भी एक प्रार्थना
पैगंबर के लिए यह कहना ही काफी होगा कि उनके रब ने उनके और उनके परिवार के लिए जन्नत बना दी।
अनुयायियों, जैसे प्रत्येक वसंत के साथ वह हमारे लिए स्वर्ग जैसे बगीचे बनाता है
उनकी कला के चमत्कारों से सुशोभित। ठीक वैसे ही जैसे उनके संदेशवाहक होने का मिशन
इस संसार का निर्माण परीक्षण और पूजा के लिए किया गया था, इसलिए उसने जो प्रार्थना की
अपनी दासता की आवश्यकता और आयाम के रूप में बनाता है कारण होगा
पुरस्कार और दण्ड के लिए दूसरी दुनिया का निर्माण।

ब्रह्माण्ड की अतुलनीय सुन्दरता इतनी परिपूर्ण है कि इसने प्रसिद्ध
धर्मशास्त्री इमाम अल-ग़ज़ाली18 ने कहा: "इससे अधिक सृष्टि संभव नहीं है
वर्तमान से अधिक सुन्दर कोई वस्तु अस्तित्व में नहीं आ सकती।" क्या ऐसी असाधारण व्यवस्था और सामंजस्य, सर्वव्यापी दया और दोषरहित कलात्मकता, और अद्वितीय सुन्दरता को कुरूपता, अन्याय और भ्रम के साथ मिलाकर बिगाड़ा जा सकता है?

सबसे तुच्छ याचिका को भी बहुत ध्यान से सुना जाता है और उसका उत्तर दिया जाता है। क्या यह परम कुरूपता (अन्याय) का कार्य नहीं होगा कि हम उसकी बात को अनसुना कर दें?
सबसे ऊँची आवाज़ में सबसे बड़ी ज़रूरत के लिए प्रार्थना करना, और स्वीकार न करना
सबसे सुंदर इच्छा और लालसा के साथ किया गया सबसे अच्छा अनुरोध? भगवान है
ऐसी कुरूपता से पूर्णतया मुक्त है, और ब्रह्माण्ड की दोषरहित सुन्दरता
इसे स्वीकृति दें।

तेरहवीं बूंद

हे साथी यात्री, क्या तुम्हें और देखने की ज़रूरत है? क्या तुम पैगम्बर के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहते हो? अगर हम अरब प्रायद्वीप में 100 साल भी रहें तो भी हम पैगम्बर के एक भी आयाम को पूरी तरह से नहीं समझ पाएँगे।
उनके मिशन और उपलब्धियों पर वापस जाएँ। आइए हम समय में आगे की यात्रा करते हुए देखें कि कैसे प्रत्येक शताब्दी [उनके संदेश के साथ] "फलती-फूलती" रही और
उस खुशी के युग से उसे किस हद तक लाभ हुआ।

ऐसा करते समय हम देखते हैं कि "सूर्य" में असंख्य "फूल" खिल गए हैं
उस खुशी के युग की, और जिसे उन्होंने मार्गदर्शन के प्रकाश के माध्यम से फैलाया,

---

[18] इमाम अबू हामिद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (मृत्यु 1111): एक प्रमुख धर्मशास्त्री, न्यायविद् और ऋषि जिन्हें अपने समय में (इस्लाम की पवित्रता और जीवन शक्ति का) पुनरुद्धारक माना जाता था। यूरोप में अल्गाज़ेल के नाम से मशहूर, वे इस्लाम के बाद के विकास के वास्तुकार थे। उन्होंने कई किताबें लिखीं, इनमें सबसे प्रसिद्ध है इह्या अल-उलुम अल-दीन (सं.)

प्रत्येक शताब्दी में हज़ारों शानदार फल पैदा हुए, जैसे अबू हनीफ़ा,19
अल-शैफ़ीई, 20 अबू यज़ीद अल-बिस्तामी, 21 जुनैद अल-बगदादी, 22 शेख 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी, 23 इमाम अल-ग़ज़ाली, मुहिय अल-दीन इब्न अल-अरबी, 24 अबू अल- हसन अल-शादिली, 25 शाह नक्शबंद, 26 और इमाम रब्बानी.27

आइए हम अपने अवलोकन को स्थगित कर दें ताकि हम परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद को अपने ऊपर बुला सकें।
वह महान् चमत्कार करने वाला प्राणी, अर्थात् हमारे गुरु मुहम्मद:

हे ईश्वर, उस महान व्यक्ति पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें,
जिस पर ज्ञानपूर्ण कुरान सर्वोच्च सिंहासन से उतारा गया था
हे ईश्वर, वह दयालु और दयावान है। वह हमारा स्वामी है।
मुहम्मद (उन पर शांति हो और अनगिनत आशीर्वाद हों)
उनकी उम्मत के अच्छे कामों की गिनती की गई है।
सलामती हो उस पर जिसकी नबी होने की भविष्यवाणी अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में की गयी है।
टोरा, सुसमाचार, भजन, और अन्य दिव्य शास्त्र।
पैगम्बर बनने से पहले जिन्न, मानवता और संतों में से द्रष्टाओं ने चमत्कारिक घटनाओं के द्वारा
पैगम्बर बनने की भविष्यवाणी की थी।
चाँद आधा हो गया। वह हमारे स्वामी और प्रभु मुहम्मद हैं,

---

[19] नुमान इब्न साबित अबू हनीफा (मृत्यु 768): हनफ़ी स्कूल ऑफ़ लॉ के संस्थापक और न्यायशास्त्र के महानतम मुस्लिम विद्वानों और नए कानूनों के निष्कर्षकों में से एक कुरान और सुन्ना। वह धर्मशास्त्र में भी पारंगत थे। (संपादक)

20 मुहम्मद इदरीस अल-शफीई (मृत्यु 820): शफीई स्कूल ऑफ लॉ के संस्थापक। वे इस्लामी न्यायशास्त्र, हदीस (पैगंबर की बातें और कार्य), भाषा,

और कविता। उन्होंने अल-उम्म और अहकाम अल-कुरान लिखा। (संपादक)

21 अबू यजीद अल-बिस्तामी (मृत्यु 873): सबसे प्रसिद्ध सूफी (मुस्लिम आध्यात्मिक गुरु) में से एक संत (सं.)

22 जुनैद अल-बगदादी (मृत्यु 910): सबसे प्रसिद्ध आरंभिक सूफियों में से एक। उन्होंने बहुत आनंद लिया। आदर किया जाता था और उन्हें “परमेश्वर के जानने वालों का राजकुमार” कहा जाता था। (सं.)

23 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी (मृत्यु 1166): सबसे प्रसिद्ध सूफी गुरुओं में से एक। न्यायशास्त्र और हदीस के क्षेत्र में उनके योगदान के कारण, उन्हें अपने युग की "आध्यात्मिक धुरी" और "सबसे महान न्यायशास्त्री" के रूप में जाना जाने लगा। सबसे बड़ी सफलता।” उन्होंने किताब अल-घुन्याह, फ़ुतुह अल-ग़ायब और अल-फ़त अल-रब्बानी लिखीं । (सं.)

24 मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी (1165-1240): "सबसे महान सूफी गुरु।" उनका सिद्धांत अस्तित्व की पारलौकिक एकता, जिसे अधिकांश लोग अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के रूप में समझते हैं, ने उन्हें अंतहीन विवादों का लक्ष्य बना दिया। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध है जिनमें से फुसस अल-हिकम और अल-फुतुहात अल-मकिया हैं। (सं.)

[25] हसन अल-शादिली (मृत्यु 1258): शादिलीया की स्थापना की, जो सबसे महत्वपूर्ण सूफी संप्रदायों में से एक है। भाईचारा. (सं.)

26 मुहम्मद बहा अल-दीन शाह अल-नक्शबंद (मृत्यु 1389): सबसे प्रमुख इस्लामी में से एक आध्यात्मिक गुरु और सूफी नक्शबंदिया संप्रदाय के संस्थापक। उनकी पुस्तकों में शामिल हैं रिसालत अल-वारिदा, अल-अव्रद अल-बहाइया, हयातनामा, और तनबीह अल-ग़ाफिलिन। (सं.)

[27] इमाम रब्बानी, अहमद फ़ारूक़ अल-सरहंदी (मृत्यु 1624): "दूसरी सहस्राब्दी के पुनरुत्थानकर्ता।" सरहंद (भारत) में जन्मे और इस्लामी विज्ञान में पारंगत, उन्होंने कई बुराइयों को दूर किया सूफीवाद के भ्रष्ट तत्वों को उन्होंने अपने अधीन कर लिया। उन्होंने शाह आलमगीर या अवरंगजेब (मृत्यु १७०७) को शिक्षा दी, जिन्होंने विद्वानों की एक समिति ने हनफ़ी कानून का सबसे व्यापक संग्रह तैयार किया। (संपादक)

उसे शांति और अनगिनत आशीर्वाद मिले
उसकी उम्माह की।

शांति और आशीर्वाद उस पर हो जिसकी पुकार पेड़ों ने स्वीकार की,
जिसकी प्रार्थना से वर्षा शीघ्र हुई, और जिसे बादल ने छाया दिया
गर्मी। सैकड़ों लोग उसके भोजन के एक गैलन से संतुष्ट थे, और
उसकी उंगलियों से भरपूर पानी बह निकला। भगवान ने छिपकली बनाई,
हिरन, भेड़िया, ऊँट, पहाड़, चट्टान और पेड़
उससे बात करो [और वह उन्हें समझ गया]। वह ऊपर तक गया
सातवें स्वर्ग और परमेश्वर के सर्वोच्च सिंहासन, और उसकी आँखें
विचलित न हों। वह हमारे स्वामी और सिफ़ारिश करने वाले मुहम्मद हैं, उन पर कृपा करें
के अक्षरों की संख्या पर शांति और अनगिनत आशीर्वाद हो
क़ुरान के शब्द जो दयालु की अनुमति से आकार लिए गए हैं
हवा के अणुओं के "दर्पण" में, जबकि पाठकों द्वारा इसका पाठ किया जा रहा है
इसके प्रकटीकरण के प्रथम दिन से लेकर समय के अंत तक।

हे परमेश्वर, हर आशीर्वाद और शांति के लिए जिसे उस पर बुलाया गया है,
हमें क्षमा कर और हम पर दया कर। आमीन, आमीन, आमीन।

उनके पैगम्बर होने के पक्ष में अनगिनत तर्क दिए गए हैं। हमने उन्नीसवें वचन और उन्नीसवें पत्र में कई तर्क दिए हैं। उनके द्वारा किए गए चमत्कारों की संख्या एक हज़ार है। इसके अलावा कुरान, जिसका

लगभग 40 चमत्कारी पहलुओं के बारे में हमने पच्चीसवें वचन में बताया है,
और ब्रह्मांड और उसकी सभी निशानियाँ भी उसकी नबी होने की गवाही देती हैं ।
ब्रह्मांड में फैले जीवों के असंख्य चिन्ह हैं
ईश्वरीय सत्ता की एकता और उसके संदेशवाहक होने के अनगिनत प्रमाण।

उदाहरण के लिए, सृजन में उत्कृष्ट कलात्मकता पर विचार करें। ऐसी पूर्णता
मुहम्मद के संदेशवाहक होने का एक निर्णायक प्रमाण, इनकी सुंदरता के लिए
अलंकृत प्राणी अपनी रचना में एक उत्कृष्ट कलात्मकता प्रदर्शित करते हैं। उनके समृद्ध अलंकृत रूप और संरचना से पता चलता है कि निर्माता के पास असीम
सारी सृष्टि को सुन्दर और अलंकृत बनाने की इच्छा। ऐसी इच्छा स्पष्ट रूप से निर्माता के अपनी सृष्टि के प्रति उच्च प्रेम, अपनी कला की पूर्णता को मानव-रूप में प्रस्तुत करने की उसकी पवित्र इच्छा को दर्शाती है। यह प्रेम और इच्छा दर्शाती है कि मानवता-

सबसे उत्तम और बेहतरीन प्राणी, सबसे व्यापक प्राणी - है
इस प्रेम और इच्छा का व्यापक और उत्कृष्ट उद्देश्य और केंद्र। इस प्रकार
हम सृष्टि के वृक्ष के चेतन फल हैं, और उससे भी अधिक सूक्ष्म और अधिक
सृष्टि के अन्य सभी भागों से अधिक व्यापक।

ये सभी विशेषताएँ हमारी सर्वव्यापी दृष्टि और सार्वभौमिक चेतना, सृष्टि के वृक्ष का पूर्ण दृष्टिकोण और पूर्ण जागरूकता को दर्शाती हैं।

---

[28] इस पुस्तक में उल्लिखित सभी शब्दों और अक्षरों के लिए, सैद नूरसी, द वर्ड्स, द देखें
लाइट, इंक., न्यू जर्सी: 2005, और द लेटर्स, 2 खंड, कायनाक, इज़मिर: 1998।

हम निर्माता के उद्देश्यों के प्रत्यक्ष, विशेष अभिभाषक हैं, क्योंकि हमारे पास यह सर्वव्यापी दृष्टिकोण और सार्वभौमिक चेतना है।

लेकिन एक व्यक्ति अपने सर्वव्यापी दृष्टिकोण और सार्वभौमिक चेतना को केवल निर्माता की सेवा, उसके प्रति प्रेम और उसकी कला के इस प्रदर्शन की सराहना करने पर केंद्रित करता है। वह अपनी सारी चेतना, ध्यान और शक्ति का उपयोग उस निर्माता को धन्यवाद देने के लिए करता है, जो अपनी उदारता के बदले में धन्यवाद मांगता है, और मानवता को उसकी सेवा करने और उसे धन्यवाद देने के लिए बुलाता है। निश्चित रूप से यह व्यक्ति निर्माता का पहला और सबसे महत्वपूर्ण संबोधनकर्ता होगा, उसके सबसे करीब होगा, और उसका सबसे प्रिय होगा।

यह कैसे कहा जा सकता है कि यह अद्वितीय व्यक्ति पैगम्बर मुहम्मद नहीं है?
क्या इस पद के लिए कोई और व्यक्ति अधिक योग्य है? इस दुनिया को देखो, और तुम एक दूसरे के सामने दो क्षेत्र और दृश्य देखोगे। पहला क्षेत्र असीम रूप से भव्य और सुव्यवस्थित दिव्य आधिपत्य है, जो निर्माता की असीम रूप से परिपूर्ण और शानदार कला के दृश्य के रूप में प्रकट होता है। दूसरा क्षेत्र सेवकाई का है, जो अत्यंत समर्पण, निष्ठा और धार्मिकता से चमकता है। यह अत्यंत चिंतन और प्रशंसा, और सबसे दृढ़ विश्वास और पूर्ण धन्यवाद का दृश्य है।

इन दो क्षेत्रों और दृश्यों को समझने के बाद, उनके बीच के संबंध को देखें। ध्यान दें कि कैसे दूसरा क्षेत्र पहले वाले के नाम पर पूरी तरह से आगे बढ़ता है, और उसके लिए अपनी पूरी ताकत से काम करता है। फिर, ध्यान दें कि कैसे चिंतन, धन्यवाद, प्रशंसा और विश्वास का दृश्य, अपनी सभी सामग्री और अर्थों के साथ, पूरी तरह से कला और अनुग्रह के दृश्य में बदल जाता है।

जब आप इस वास्तविकता को देखते हैं, तो आप दासत्व के क्षेत्र के प्रमुख और प्रभुता के क्षेत्र के स्वामी के बीच सबसे बड़े संबंध को कैसे नकार सकते हैं? उसकी कला की पूरी तरह से सराहना और प्रदर्शन करके, वह प्रमुख निर्माता के उद्देश्यों को सबसे ईमानदारी से पूरा करता है। आप इस बात से कैसे असंतुष्ट रह सकते हैं कि उसका निर्माता के साथ सबसे बड़ा रिश्ता और जुड़ाव है, कि वह सीधे निर्माता से बात करता है, और निर्माता उसे अपने संदेशवाहक के रूप में सम्मानित करता है? वास्तव में, वह पूरे क्षेत्र [आकाश और पृथ्वी] के स्वामी द्वारा स्वीकार और प्रिय है; वह उसका सबसे प्रिय और उसका सबसे निकट है।

यह देखते हुए, क्या इन असीम सुंदर प्राणियों के निर्माता,
इन सभी नेमतों के दाता जो सभी प्राणियों के मुँह में स्वाद के व्यंजनों पर विचार करते हैं, उस सबसे उत्तम और सुंदर प्राणी को अनदेखा करते हैं? मुहम्मद पूर्ण तड़प, दासता और प्रेम के साथ उसकी ओर मुड़ते हैं। वह तालियों और प्रशंसा के अपने ऊंचे गीतों से आकाश और पृथ्वी को मंत्रमुग्ध कर देता है

निर्माता की कला। वह अपने मंत्रों से भूमि और समुद्र को परमानंद में डुबो देता है
सृष्टिकर्ता के उपकारों के प्रति कृतज्ञता, और उसकी महिमा के वैभव के साथ
और सृष्टिकर्ता और वरदानों के दाता की महानता का आवर्धन।

क्या ऐसा दयालु और सर्वशक्तिमान निर्माता ऐसे सराहना करने वाले और कृतज्ञ व्यक्ति की उपेक्षा कर सकता है? क्या वह उसके प्रति स्नेह और कृतज्ञता से नहीं मुड़ेगा?
उससे बात करो, उससे प्रेम करो और उसे अपने निकट लाओ, उसके अच्छे आचरण की कामना करो और क्या हम उसे सभी लोगों द्वारा स्वीकृत और अनुकरणीय बना सकते हैं, उसे सभी के लिए अनुकरणीय उदाहरण बना सकते हैं, तथा उसे मानवता के लिए एक संदेशवाहक के रूप में भेज सकते हैं?
क्या इन पूर्णतया सुगठित प्राणियों, स्वादिष्ट व्यंजनों के निर्माता
जिनकी कलात्मक डिजाइन अनंत ज्ञान और असीम बुद्धिमता की ओर इशारा करती है,
क्या वह अपनी सृष्टि के सबसे उत्तम और सबसे सुन्दर सदस्य के प्रति इतना अनभिज्ञ और अचेतन है कि वह उसे जानता नहीं, देखता नहीं, या उससे बात नहीं करता?

क्या वह जो अपने आप को अपनी सृष्टि के आभूषणों के माध्यम से जाना और प्यार किया जाता है, उसे नहीं जान सकता और उससे उतना ही प्यार नहीं कर सकता जो उससे प्यार करता है?

वह इसका हकदार है और उसे वैसे ही ज्ञात कराता है जैसे उसे ज्ञात कराया जाना चाहिए, कौन अपनी वफादारी के माध्यम से स्वयं को उससे प्रेम कराता है, और उसकी सच्ची आराधना करता है?

चौदहवीं बूंद

इसमें सबसे बड़े चमत्कार [कुरान] के सागर से “बूंद-बूंद” शामिल हैं।

पहले ड्रिबल किया

ऐ दोस्त, जान लो कि मुहम्मद के पैगम्बर होने के पक्ष में तर्क ये हैं:
अनगिनत। विद्वानों ने इस विषय पर कई खंड समर्पित किए हैं। एक बार मैंने
मैंने विनम्रतापूर्वक अपने ग्रंथ द रेज़ में इस "सूर्य" से कुछ "किरणें" पेश की हैं । मैंने संक्षेप में
उन्होंने एक अन्य ग्रंथ, द फ्लैशेस में कुरान की चमत्कारिक प्रकृति के कुछ पहलुओं की व्याख्या की है, तथा इसकी वाक्पटुता पर प्रकाश डाला है, जो कि एकमात्र ऐसा ग्रंथ है।
पहलू, चमत्कार के संकेत में, की व्याख्या के लिए एक परिचय
कुरान.

दूसरा ड्रिबल हो गया

क़ुरआन हर चीज़ के रचयिता की ओर से आया है। उपरोक्त व्याख्याओं से यह स्पष्ट है कि क़ुरआन, जो सारे संसार का पालनहार है,
हमें ज्ञात है कि यह विभिन्न प्राथमिकता वाले कई मुद्दों से संबंधित है।
उन्होंने अपनी पुस्तक पच्चीसवीं आयत में बताया है कि कुरान क्या है।

यह ब्रह्माण्ड का शाश्वत अनुवाद है, शाश्वत अनुवादक है
दिव्य सत्ता के प्राकृतिक संकेतों को व्यक्त करने वाली "भाषाओं" का दुभाषिया

ब्रह्मांड की पुस्तक का यह अंश दिव्य नामों के रहस्यों को उजागर करता है।

स्वर्ग और पृथ्वी के “पृष्ठों” पर छिपे खजाने, और उनकी कुंजी
घटनाओं के पीछे की सच्चाई.

यह अदृश्य जगत और दृश्य जगत की भाषा है,
शाश्वत ईश्वरीय वाणी का भण्डार, तथा दयालु ईश्वर की शाश्वत कृपाएँ। कुरान इस्लाम की नींव और योजना है, उसका सूर्य है।

आध्यात्मिक और बौद्धिक दुनिया और परलोक का नक्शा। यह
व्याख्याता, सुस्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण, तथा ईश्वरीय सत्ता का स्पष्ट अनुवादक
सार, गुण, नाम और कार्य; हमारे शिक्षक और प्रशिक्षक, और पानी
और इस्लाम का प्रकाश, जो सच्ची और महानतम मानवता है। यह मानवता की सच्ची बुद्धि है, वह सच्चा मार्गदर्शक है जो हमें हमारी रचना के उद्देश्य की ओर ले जाता है।

कुरान कानून और ज्ञान, पूजा और दासता की एक किताब है
ईश्वर, आदेश और आमंत्रण, आह्वान और चिंतन, एक पुस्तक
हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहुत सी किताबें हैं। यह किताबों की एक पवित्र लाइब्रेरी की तरह है
और ऐसे ग्रंथ जिनसे संत, अत्यंत सत्यनिष्ठ लोग, शुद्ध और विवेकशील विद्वान और ईश्वर के ज्ञान में प्रतिष्ठित लोग प्रेरणा लेते हैं

यह उनके विशिष्ट तरीकों को उजागर करता है और उनके अनुयायियों की ज़रूरतों का जवाब देता है।

तीसरा ड्रिब्लेट

यह खंड कुरान में बार-बार दोहराए गए चमत्कारों की झलक को समझाता है।
सस्वर पाठ।

पहला बिन्दु: हे मित्र, जान लो कि चूंकि कुरान प्रार्थना, आह्वान और आमंत्रण की पुस्तक है, इसलिए इसका पाठ करना आवश्यक है, क्योंकि पाठ करने से ईश्वर के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।
और इन विशेषताओं को मजबूत करता है। बार-बार आह्वान आध्यात्मिक लाता है
आत्मज्ञान, बार-बार की गई प्रार्थना संतुष्टि और शांति लाती है, और बार-बार की गई प्रार्थना
आमंत्रण को पुनरावृत्ति के माध्यम से मजबूत किया जाता है।

दूसरा बिन्दु: ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन एक [ईश्वरीय] संबोधन है
और सभी लोगों की [बीमारियों] का इलाज, चाहे उनकी बुद्धि या
हालत। हर कोई कुरान नहीं पढ़ सकता, यह हर किसी के लिए एक इलाज है
क़ुरआन को शुरू से आखिर तक कई बार पढ़ा गया है। इसे आसान बनाने के लिए, सर्वशक्तिमान और दयालु अल्लाह ने क़ुरआन के ज़्यादातर उद्देश्यों को इसके ज़्यादातर अध्यायों में शामिल किया है। यह लोगों को प्रोत्साहित करते हुए कहता है: वास्तव में हमने क़ुरआन को आसान बना दिया है
स्मरण और चेतावनी के लिए। क्या कोई है जो स्मरण करे और चेतावनी ग्रहण करे? (54:17)

तीसरा बिंदु: शारीरिक ज़रूरतें बदलती रहती हैं। हवा की हमेशा ज़रूरत होती है, पानी की ज़रूरत सिर्फ़ तब पड़ती है जब किसी को प्यास लगती है या गर्मी लगती है। भोजन की जरूरत प्रतिदिन होती है; दूसरों को केवल मासिक या वार्षिक रूप से।

और कुछ, जैसे दवा, कभी-कभी ही। इसी तरह, किसी की आध्यात्मिक ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं। जबकि कुछ कुरानिक शब्द और आयतें, जैसे वह और ईश्वर , अलग-अलग हैं ।
हमेशा आवश्यक; अन्य, जैसे कि ईश्वर के नाम पर नियमित रूप से आवश्यक; तथा
फिर भी अन्य, जैसे कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, की बहुत बार आवश्यकता पड़ती है।

इस प्रकार कुछ श्लोकों और शब्दों की पुनरावृत्ति हमारी आवश्यकता पर आधारित है
उनके लिए। इस तरह की पुनरावृत्ति हमें इस ज़रूरत की याद दिलाती है और हमें महसूस करने का आग्रह करती है
एक निश्चित "आध्यात्मिक पोषण" की आवश्यकता, अर्थात्, कुछ छंद और
कुरान में दोहराए गए शब्द।

चौथा बिन्दु: ऐ दोस्त, जान लो कि कुरान ने इस्लाम को स्थापित किया है।
इसने अपनी और मुस्लिम दुनिया की नींव मजबूती से रखी है।
मानव समुदायों को उनके निवासियों को एकजुट करके बदल दिया है
साझा संस्कृति और सभ्यता। किसी चीज़ को इतनी दृढ़ता और व्यापक रूप से स्थापित करने के लिए सुदृढ़ीकरण और इस प्रकार पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है। कुरान भी इसका उत्तर देता है
ये प्रश्न सभी लोगों द्वारा पूछे जाते हैं, चाहे उनकी स्थिति या बुद्धि कुछ भी हो।

पाँचवाँ बिन्दु: ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन महत्वपूर्ण बातों का ज़िक्र करता है और दिलों को उन पर ईमान लाने के लिए कहता है। यह सूक्ष्म सत्यों की बात करता है और लोगों को उन पर ईमान लाने के लिए आमंत्रित करता है।
उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए तर्क या बुद्धि की आवश्यकता होती है। जाहिर है, विश्वास और
समझने के लिए विभिन्न शैलियों और संदर्भों में पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है।

छठा बिन्दु: कुरान की आयतों के आंतरिक और बाह्य अर्थ हैं और
आयाम, जो हमारे आंतरिक और बाहरी सुधार के लिए एक अंतिम उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। उदाहरण के लिए,
इसका उद्देश्य था कि कई कानूनी निषेधाज्ञाएँ और मानदंड
आचरण के सिद्धांत विभिन्न आयतों से लिए गए होंगे, और विभिन्न संदर्भों में उनके सापेक्ष महत्व और प्रयोज्यता के लिए कुरान की आवश्यकता होगी।
छंदों को अलग-अलग तरीकों और संदर्भों में दोहराया जाना चाहिए। इसी तरह, आंतरिक
अर्थ के आयाम बुद्धि के समझने के प्रयास को चुनौती देते हैं, और
विभिन्न संदर्भों में छंदों की पुनरावृत्ति अनंत विविधता को सक्षम बनाती है और
सूक्ष्म अर्थ की गहराई.

चौथा ड्रिब्लेट

यह खंड बताता है कि कुरान में कुछ मुद्दों का उल्लेख क्यों नहीं किया गया है?
विज्ञान के लिए इसकी प्रासंगिकता क्या है, तथा यह क्यों अन्यों को अंतर्निहित एवं संक्षिप्त रूप से संदर्भित करता है।

पहला बिंदु: कुरान ब्रह्मांड के बारे में इस तरह से चर्चा करता है कि
आधुनिक दर्शन और विज्ञान से भिन्न हैं, क्योंकि ये विषय
ब्रह्मांड के पास खुद के संदर्भ में और अपने ही हित के लिए आते हैं। लेकिन
कुरान, जो सत्य में अवतरित हुआ और सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है, चर्चा करता है
ब्रह्मांड के निर्माता के संदर्भ में और उसे जानने और समझने के लिए।

आधुनिक दर्शन और विज्ञान के विपरीत, जो आकाशीय पिंडों और पृथ्वी के साथ-साथ उनके आकार और गति के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करते हैं, कुरान ब्रह्मांड के बारे में संक्षिप्त और अस्पष्ट तरीके से बताता है। ऐसा क्यों है?

पहला: कुरान ब्रह्मांड का उल्लेख केवल कोष्ठक में करता है, क्योंकि इसका उद्देश्य सृष्टिकर्ता के सार और गुणों को मानवता के लिए समझने योग्य बनाना है। एक तर्क स्पष्ट और समझने योग्य होना चाहिए ताकि हर कोई इसके अंतर्निहित उद्देश्य तक इसका अनुसरण कर सके, जो कि कुरान के अनुसार, हमें ईश्वर के सार, गुणों और नामों के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्रदान करना है। यदि यह घोषित किया होता, जैसा कि वैज्ञानिक चाहते हैं: "सूर्य को उसकी गतिहीनता में और पृथ्वी को उसकी गति में देखें, और देखें कि उनका सृष्टिकर्ता कितना शक्तिशाली है," परिणामी तर्क और उद्देश्य अधिकांश लोगों की समझ से परे होते, चाहे वे जिस भी समय में रह रहे हों। पूर्ण बहुमत, जिसमें किसी भी समाज के वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और बुद्धिजीवियों का छोटा अल्पसंख्यक शामिल है, को उनके ज्ञान और समझ के स्तर पर विचार करके मार्गदर्शन में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अल्पसंख्यक को प्राथमिकता देने से बहुसंख्यक [कुरान के मार्गदर्शन से लाभ उठाने से] वंचित हो जाएँगे।

दूसरा: मार्गदर्शन के ग्रंथों में अच्छे भाषण के नियमों के अनुसार, इच्छित श्रोताओं को इस्तेमाल किए गए शब्दों को समझना चाहिए। इसलिए उनके विचारों, भावनाओं और समझ के स्तर पर विचार किया जाना चाहिए, और उन्हें सरल, सामान्य शब्दों में संबोधित किया जाना चाहिए ताकि वे विषय के साथ सहज महसूस करें और इसे आसानी से समझ सकें। [चूंकि कुरान हमें हर समय मार्गदर्शन करने के लिए बनाया गया है, इसलिए इसकी अभिव्यक्ति का रूप सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से सुलभ होना चाहिए।]

तीसरा: कुरान ब्रह्मांड और उसमें होने वाली घटनाओं का जिक्र उसके रचयिता के संदर्भ में करता है, क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ब्रह्मांड में मौजूद और होने वाली हर चीज अपने रचयिता की ओर इशारा करती है। विज्ञान और आधुनिक दर्शन ब्रह्मांड को उसके अपने हित के लिए देखता है, क्योंकि उनका मानना है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ब्रह्मांड में मौजूद और होने वाली हर चीज खुद की ओर इशारा करती है। इन दोनों दृष्टिकोणों का कोई संबंध नहीं है।

सामान्य।

इसके अलावा, कुरान ईश्वर का वचन है जिसे सबसे आम लोगों के लिए भी समझना आसान है। यह बहुसंख्य लोगों को ध्यान में रखता है, ताकि वे ईश्वर के बारे में सटीक ज्ञान और विश्वास तक सीधी पहुँच प्राप्त कर सकें। हालाँकि, विज्ञान वैज्ञानिकों की ओर से बोलता है ताकि आम जनता को उनके विचारों का अनुकरण करने और उन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा सके। और इसलिए यह विस्तार से बताता है - हालाँकि इसके परिणाम

"सत्य" अत्यधिक संदिग्ध है - जहाँ कुरान संक्षिप्त, अस्पष्ट रूप से बोलता है, या कुछ भी नहीं कहता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या और कैसे उस ज्ञान से लाभ होगा
इंसानियत।

चौथा: चूँकि कुरान मानवता के सभी वर्गों के लिए मार्गदर्शक है, इसलिए इसकी वाणी
कुतर्क और होड़ के माध्यम से उन्हें कुछ स्वीकार करने के लिए राजी नहीं करना चाहिए
श्रेष्ठता के लिए। जब तक बिल्कुल आवश्यक न हो, तब तक बदलाव करना भी व्यर्थ है
ऐसे तथ्यों के बारे में उनके विचार [जब उन्हीं तथ्यों पर सवाल उठाया जाता है]
इसके बजाय, उन मामलों पर चुप रहना या संक्षिप्त रहना बेहतर है जो सीधे तौर पर परमेश्वर या एक-दूसरे के प्रति उनके आवश्यक कर्तव्यों से संबंधित नहीं हैं।

उदाहरण के लिए, कुरान में सूर्य का उल्लेख केवल इसलिए किया गया है क्योंकि
जिसने इसे प्रकाश देने वाला दीपक बनाया है। इसमें कहा गया है कि सूर्य एक दीपक की तरह कार्य करता है।
सार्वभौमिक व्यवस्था की "धुरी", सृष्टि की व्यवस्था का केंद्र, और
करघे का शटल जिस पर शाश्वत डिजाइनर के काम बुने जाते हैं
धरती और आकाश का चेहरा दिन और रात और बदलते मौसमों के धागों से बना है। कुरान हमें शानदार व्यवस्था और व्यवस्था दिखाता है
बुनाई में, बुनी हुई चीज़ों का असाधारण क्रम और डिज़ाइन, हमें दिखाने के लिए
उनके सर्वज्ञ निर्माता, उनके सर्वज्ञ निर्माता की पूर्णता। यह नहीं है
सूर्य की गति हो या न हो, यह उसके उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण है। चीजों की दिव्य बुनाई स्पष्ट रूप से शानदार है; इसलिए यदि सूर्य गति नहीं करता है, तो भी
आधुनिक विज्ञान का दावा है कि इससे कुरान के उद्देश्यों या उनकी अभिव्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। [वैसे भी, जैसा कि वैज्ञानिक हमें बताते हैं, सूर्य की गतिहीनता केवल पृथ्वी और अन्य ग्रहों की गति के सापेक्ष है; यह निरपेक्ष नहीं है।][29]

दूसरा बिन्दु: क़ुरआन कहता है: [उसने] सूर्य को दीपक बनाया, (71:16)
और: सूर्य अपने विश्राम-स्थल की ओर दौड़ता है (36:38)। क़ुरआन ऐसा क्यों कहता है?
यह तब कहते हैं, जब वैज्ञानिक कहते हैं कि सूर्य एक विशाल प्रणाली का केंद्र है
पृथ्वी केवल एक भाग है? ये दोनों विचार एक दूसरे के विरोधाभासी प्रतीत होते हैं।
हालाँकि, इन तर्कों पर विचार करें।

---

[29] हाल के दशकों में, सौर खगोलविदों ने पता लगाया है कि सूर्य कांपता है, हिलता है, और
लगातार एक अच्छी तरह से मारा गया घंटा की तरह बजता है। ये कंपन इसकी गहराई के बारे में महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करते हैं
आंतरिक और छिपी हुई परतें, डेटा जो ब्रह्मांड की आयु की गणना को प्रभावित करता है। [देखें एम.
बार्टूसिएक, "साउंड्स ऑफ द सन," अमेरिकन साइंटिस्ट (जनवरी-फरवरी 1994): 61-68]। सटीक
सूर्य के आंतरिक घूर्णन का ज्ञान आइंस्टीन के सिद्धांत के परीक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।
सापेक्षता। खगोल विज्ञान में कई महत्वपूर्ण खोजों की तरह, यह खोज भी अप्रत्याशित थी। कुछ खगोलविदों का कहना है कि सूर्य एक
सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा की तरह है जिसमें सभी यंत्र हैं
एक साथ बजाया जा रहा है। विभिन्न समयों पर, सभी कंपन मिलकर एक जाल बनाते हैं
सौर सतह पर होने वाला कंपन किसी भी व्यक्तिगत कंपन से हज़ारों गुना ज़्यादा शक्तिशाली होता है
कंपन. (ट्र.)

सूर्य को दीपक कहकर कुरान का तात्पर्य है कि ब्रह्माण्ड सूर्य से मिलता जुलता है। एक महल जिसमें फर्नीचर और अन्य आवश्यक वस्तुएँ हों, जैसे भोजन, सर्वशक्तिमान और दयालु ईश्वर ने अपने मेहमानों के लिए भोजन तैयार किया है और सूर्य महल का दीपक है, और महल के मालिक की आज्ञा का पालन करता है। यह एक दीपक के रूप में सृष्टिकर्ता की प्रभुता की महानता में उसकी दया को दर्शाता है, उसकी व्यापक दया में उसके अनुग्रह को दर्शाता है, और उसकी महिमा में उसकी उदारता को दर्शाता है। उसकी संप्रभुता का। यह प्रदर्शित करके कि सूर्य, जिसे अक्सर देवता माना जाता है और पूजा जाता है, केवल एक दीपक है जो ईश्वर की आज्ञा के अधीन है, यह घोषणा करता है दिव्य एकता.

शब्द ' दौड़ना' परमेश्वर के सर्वोच्च, उद्देश्यपूर्ण स्वभाव और कार्यों को दर्शाता है दिन और रात के निरंतर परिवर्तन और ग्रीष्म और शीत ऋतु के क्रम में। यह लोगों को निर्माता की विशाल शक्ति और उस की याद दिलाता है वह ब्रह्मांड का अद्वितीय स्वामी है। जब सूर्य और चंद्रमा का एक साथ उल्लेख किया जाता है, तो मन स्वतः ही दिन और रात, गर्मी और सर्दी, और फिर उन घटनाओं की ओर चला जाता है जो उनके दौरान घटित होती हैं। इस प्रकार रन का तात्पर्य सभी से है ये अर्थ महत्वपूर्ण हैं, न कि यह कि सूर्य वास्तव में गति करता है या नहीं।

कुरान के शब्दों और अभिव्यक्तियों को देखिए। देखिए कि वे कैसे काम करते हैं, अपनी स्पष्ट सादगी के बावजूद, सूक्ष्म खजाने के दरवाजे या चाबियाँ के रूप में अर्थ। फिर विज्ञान द्वारा इस्तेमाल किए गए अर्थों को देखें और देखें कि उनकी स्पष्ट चमक के बावजूद, वे आध्यात्मिक, बौद्धिक या सामाजिक रूप से बहुत कम उपयोगी हैं। जीवन में किसी के मुख्य उद्देश्य। वे मनुष्य को प्रकाशमान एकता के स्वर्ग से बहुलता की अंधेरी घाटियों में गिरा देते हैं।

सूर्य के विषय में आधुनिक दर्शन और विज्ञान क्या कहता है:

> यह तीव्र अग्नि का एक विशाल पिंड है जो पृथ्वी से 1,300,000 गुना बड़ा है, तथा अपनी धुरी पर घूमता है। हमारे समेत सभी ग्रह इससे अलग हो गए थे और, अलग-अलग दूरियों पर, इसके चारों ओर उड़ते हैं, इसके द्वारा आकर्षित होते हैं सामान्य गुरुत्वाकर्षण। यदि आकाश में कुछ अप्रत्याशित घटना के बाद (उदाहरण के लिए, किसी धूमकेतु से टक्कर), एक ग्रह अपनी कक्षा से बाहर निकलता है, तो वह इसका परिणाम सौरमंडल का पतन और हमारी दुनिया का विनाश होगा।

ऐसी घटना की संभावना से लोग कई बार भयभीत हो जाते हैं। क्या यह जानकारी हमारे सामान्य, साधारण जीवन में उपयोगी है?

परमेश्वर की महिमा हो! देखो, कैसे गुमराही सच्चाई का रूप ले लेती है। सूर्य और ग्रहों को सर्वज्ञ निर्माता द्वारा बनाया गया था, जिसे यह कार्य सौंपा गया था कुछ कार्य करें, और सृष्टिकर्ता की आज्ञा और शक्ति का पालन करें। इसके बावजूद विशाल आकार, सूर्य पृथ्वी के चेहरे पर एक चमकती हुई बूंद से अधिक कुछ नहीं है स्वर्ग का "महासागर", जिस पर दिव्य नाम "प्रकाश" की एक किरण प्रकट होता है.

यदि वैज्ञानिकों और दार्शनिकों ने कहा होता: "ईश्वर इन विशाल निर्जीव वस्तुओं का उपयोग करता है ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण कार्यों में वस्तुओं को शामिल किया जाता है, और वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं," उनके ज्ञान का कुछ अर्थ होता। लेकिन चूंकि वे [इन खगोलीय पिंडों की रचना, गति और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य] वस्तुओं या प्रकृति और भौतिक कारणों के लिए, वे कुरान की आयत के अर्थ में शामिल हैं: वह जो अपने ईश्वर के अलावा अन्य देवताओं की सेवा करता है। ईश्वर उस व्यक्ति के समान है जो आकाश से गिरा और पक्षियों ने उसे छीन लिया, या हवा उसे दूर स्थान पर उड़ा ले गयी थी (22:31)।

तीसरा बिन्दु: हे मित्र, जान लो कि कुरान के चार मुख्य उद्देश्य हैं: ईश्वरीय एकता, संदेशवाहक, पुनरुत्थान और न्याय के साथ-साथ उपासना। अन्य मुद्दे जिन पर यह चर्चा करता है, वे इन उद्देश्यों को साकार करने के साधन हैं। अच्छे भाषण के लिए ज़रूरी है कि साधनों की विस्तृत व्याख्या और अनावश्यक जोड़-घटाव या तर्क मुख्य उद्देश्य को विफल न करें। इस प्रकार कुरान इस बात की ओर प्रवृत्त होता है कुछ बिंदुओं को छोड़ देना, या उनके प्रति अस्पष्ट या संक्षिप्त रवैया अपनाना स्पष्टतः वैज्ञानिक आयात.

अधिकांश लोग गहन ईश्वरीय सत्य को बिना रूपक, तुलना और दृष्टांत। चूँकि अधिकांश वैज्ञानिक और दार्शनिक मुद्दों को समझने में लंबा समय लगता है, और चूँकि कई वैज्ञानिक सत्य कुरान के अवतरण के सदियों बाद इसका खुलासा हुआ है, कुरान में इसका उल्लेख है रूपकों, उपमाओं और दृष्टांतों के माध्यम से ऐसे अधिकांश मुद्दों का समाधान किया गया है, जबकि समय बीतने के साथ समझने योग्य बिंदुओं पर संक्षिप्तता बनी हुई है (अर्थात, समय के साथ समझने योग्य बिंदुओं पर संक्षिप्तता बनी हुई है)। वैज्ञानिक जांच में प्रगति)।

चौथा बिन्दु: हे मित्र, यह जान लो कि जिस प्रकार घड़ी अपने भागों के अनवरत संचालन के कारण निरन्तर चलती रहती है, उसी प्रकार यह संसार भी निरन्तर चलता रहता है। एक विशाल, निरंतर सक्रिय घड़ी मानी जाती है। जब समय को शामिल किया जाता है, तो शताब्दियाँ घंटे की सुई की तरह होती हैं, वर्ष मिनट की सुई की तरह होते हैं, और दिन और रात दूसरा हाथ। जब अंतरिक्ष को शामिल किया जाता है, तो पृथ्वी और पृथ्वी की गति पर्वतों का निर्माण घंटे की सुई जैसा होता है; पृथ्वी, परिवर्तनों के माध्यम से पौधों और जानवरों में तथा जीवन और मृत्यु के संबंध में जो परिवर्तन होता है, वह मिनट की सुई के समान है; तथा वायुमंडल अपने परिवर्तनों की गति के कारण मिनट की सुई के समान है। दूसरे हाथ जैसा दिखता है। आकाश, में होने वाले परिवर्तनों के माध्यम से उनमें, उनकी वस्तुओं की गति, नए सितारों का जन्म और मृत्यु पुराने लोगों के हाथ, “दिन” हाथ के समान हैं।

दुनिया कुछ बुनियादी तत्वों (जैसे, परिवर्तन, परिवर्तन, आदि) पर आधारित है। दिन, रात, वर्ष, शताब्दी, मिट्टी, वातावरण और आकाश) जो कृत्यों को प्रकट करते हैं दिव्य नामों और दिव्य शक्ति की कलम के शिलालेखों का

नियति। यद्यपि यह संसार गतिशील, नाशवान और क्षणभंगुर है, जल की तरह यात्रा करता और बहता रहता है, फिर भी असावधानी और प्रकृतिवाद के कारण यह परलोक को ढकने वाले आवरण में परिवर्तित हो जाता है। प्रकृति और दर्शन के अत्यधिक अध्ययन को प्रोत्साहित करके, मानव-केंद्रित दर्शन और सभ्यता इस संसार की सघनता और अस्पष्टता को बढ़ाती है।

कुरान की आयतें दुनिया को ऊन की तरह दिखाती हैं और इसकी अभिव्यक्तियाँ दुनिया को पारदर्शी बनाती हैं। 30 कुरान अपनी किरणों के ज़रिए दुनिया को पिघला देता है, मौत और अनंत दंड की याद दिलाकर इसकी भ्रामक अनंतता को तोड़ देता है और अपनी नसीहतों से प्रकृतिवाद की वजह से होने वाली असावधानी को दूर करता है। अपने मूल चरित्र के साथ, परिवर्तन में उलझी दुनिया कहती है: जब कुरान पढ़ा जाए, तो उस पर कान लगाओ और ध्यान दो, ताकि तुम पर दया की जाए (7:204)।

यही कारण है कि कुरान संक्षिप्त है, जबकि आधुनिक दर्शन और विज्ञान विस्तृत है। इसके विपरीत, जहां दर्शन और विज्ञान सृष्टि और जीवन के आदेशों के प्रति आज्ञाकारी [ईश्वर के सेवक] के रूप में चीजों के कार्यों का वर्णन करने में संक्षिप्त या लापरवाह हैं, और उनके निर्माता के नामों और कार्यों की ओर इशारा करते हैं, कुरान विस्तृत है।

संक्षेप में, कुरान ब्रह्मांड की पुस्तक के अर्थ और यह किससे संबंधित है, इसकी व्याख्या करता है, जबकि विज्ञान इसके "अक्षरों" की भौतिक संरचना और उनकी स्थिति और पारस्परिक संबंधों का वर्णन करता है। विज्ञान हमें यह नहीं बताता कि सभी चीजें या प्राणी सार्थक शब्द हैं। दर्शन और विज्ञान के दृष्टिकोण और कुरान की बुद्धि के बीच अंतर को देखने के लिए, बारहवें शब्द को देखें, जहाँ इस अंतर को कुरान की आयत के परिप्रेक्ष्य से समझाया गया है: जिसे बुद्धि दी गई है, उसे वास्तव में बहुत अच्छा दिया गया है (2:269)।

पाँचवाँ बिन्दु: इस बिन्दु को इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय (“कुरान की आयतों की रोशनी से एक रोशनी”) में समझाया गया है।

छठा बिन्दु: हे मित्र, जान लो कि कुरान सर्वशक्तिमान के कार्यों की ओर संकेत करने वाली चीजों के पहलुओं पर बल देता है तथा यह भी कि वे किस प्रकार उसके नामों को प्रकट करते हैं।
यह बताता है कि कैसे ईश्वरीय कार्य ईश्वरीय नामों से उत्पन्न होते हैं, और कैसे ये नाम, ईश्वरीय गुणों की किरणें होने के कारण, चीज़ों को शामिल करते हैं। संक्षेप में, कुरान इस बात से निपटता है कि कैसे हर चीज़ के पहलू अपने निर्माता की ओर इशारा करते हैं, जबकि विज्ञान अध्ययन करता है कि कैसे ये वही पहलू खुद को और उनके कारणों को इंगित करते हैं, और क्या

---

30 सईद नूरसी ने ऊनी कपड़ों का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया है कि कुरान ईश्वरीय सत्य और परलोक को ढकने वाले भौतिकवाद और वैज्ञानिक विश्वदृष्टि के पर्दे को हटाता है और फाड़ देता है।
(सं.)

वे जो वैज्ञानिक या तकनीकी लाभ प्रदान करते हैं, वे न्याय नहीं कर सकते। ऐसा विज्ञान और दर्शन, जो लंबे समय से भौतिकवाद से जुड़ा हुआ है, पवित्र कुरान की अभिव्यक्तियों का न्याय नहीं कर सकता।

पाँचवाँ ड्रिबल हुआ

हे मित्र, जान लो कि कुरान की एक खूबी, जो शब्दार्थ और शास्त्र द्वारा पुष्ट होती है,
बयानबाजी, शैली की एक उत्कृष्ट प्रवाह और एक दृढ़ संकल्प का संयोजन है
इसके वाक्यों के बीच पारस्परिक समर्थन और सुसंगति, सद्भाव और सहायता
और तत्वों। इसके छंदों के बीच एक असाधारण संगति है
और उनके अर्थ। हालाँकि 20 वर्षों में विभिन्न अवसरों पर इनका खुलासा हुआ है
और कभी-कभी विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर में, यह इतना सामंजस्यपूर्ण और सुसंगत है कि इसे एक बार में या एक ही प्रश्न के उत्तर में प्रकट किया जा सकता था। यह कुछ नियमों को स्थापित करने, कुछ आज्ञाओं को समझाने के लिए आया था
अलग-अलग मामलों में, और अलग-अलग लोगों की समझ में आता है। लेकिन इसका
अद्भुत व्यवस्था और सहज शैली से ऐसा प्रतीत होता है मानो यह इसके लिए ही आया हो
एक मामले में, और एक स्वाद और समझ के स्तर को संतुष्ट करने के लिए। इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति, सुंदर शब्दावली और शुद्ध शैली हर किसी को यह सोचने पर मजबूर करती है कि यह सीधे तौर पर
यद्यपि वास्तविकता में यह समझ और ज्ञान के हर स्तर पर विचार करता है।

यद्यपि यह सभी लोगों को, प्रत्येक को उसकी उपलब्धि के स्तर तक मार्गदर्शन करने के लिए आया था, यह संतुलन को इतनी पूर्णता से बनाए रखता है कि ऐसा लगता है कि इसके मार्गदर्शन में इसे केवल एक ही उपलब्धि के बिंदु पर निर्देशित किया गया है। इसका दृष्टिकोण इसमें निहित है
संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके आंतरिक और बाहरी आयामों को, मानो वह एक ही पृष्ठ को देख रहा हो। यह उसके सभी अर्थों को उजागर करता है और उन्हें समझने की चाह रखने वालों को सिखाता है।

छठा ड्रिब्लेट

कुरान की तुलना किसी अन्य पुस्तक या भाषण से नहीं की जा सकती।

हे मित्र, जान लो कि वाणी से ही शक्ति, सौंदर्य और उत्कृष्टता प्राप्त होती है।
समय, स्थान और अवसर से बोलने का तरीका निर्धारित होता है और
विषय-वस्तु, वक्ता, श्रोता और उद्देश्य से भी। ये सभी
इस पर विचार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, यदि भाषण में कोई आदेश या निषेध शामिल है, तो वक्ता के पास एक निश्चित अधिकार और शक्ति होनी चाहिए।
यह अधिकार और शक्ति जितनी अधिक होगी, उसकी वाणी उतनी ही अधिक प्रभावशाली और उत्कृष्ट होगी।

ईश्वरीय आदेशों के अधिकार पर विचार करें: हे पृथ्वी, निगल जा
हे आकाश, अपना जल रोक ले; (11:44); तथा: उसने उससे [आसमान से] कहा
और धरती से कहा: “तुम दोनों आओ, चाहे स्वेच्छा से या अनिच्छा से।” उन्होंने उत्तर दिया: “हम स्वेच्छा से आते हैं (४१:११)।” देखिए वे किसी भी मानवीय समुदाय से कितने अलग हैं।

मनुष्य, जिसका आकाश और पृथ्वी पर कोई अधिकार नहीं है। यह अंतर एक सेनापति के आदेश के समान है जिसका एक शक्तिशाली, आज्ञाकारी सेना द्वारा पूरी तरह से पालन किया जाता है, और किसी ऐसे व्यक्ति के आदेश के बीच है जिस पर कोई ध्यान नहीं देता है। इनके बीच अंतर देखें: जब वह किसी चीज़ की इच्छा करता है, तो वह केवल उससे कहता है: "हो जाओ!" और वह हो जाती है (36:82), और मानवीय शब्द। सुनिए:

> क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने उसे कैसे बनाया और उसे किस तरह से सजाया और उसमें कोई दरार नहीं है? और धरती को भी हमने फैलाया और उस पर मज़बूत पहाड़ बनाए और उसमें हर तरह की मनभावन वनस्पतियाँ उगाईं। यह हर तौबा करनेवाले बन्दे के लिए एक नसीहत और नसीहत है। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा जिससे हमने बाग़ और फ़सल की फ़सल उगाई। और ऊँचे खजूर के पेड़ जिनके गुच्छे लगे हुए हैं। बन्दों के लिए रोज़ी है। इस तरह से मुर्दा ज़मीन में नई जान आ जाती है। इसी तरह से क़यामत भी होगी। (50:6-11)

इन दिव्य शब्दों को सुनो। सच्चे स्वामी के वर्णनों के बीच अंतर देखो, जिनके आदेश पूर्ण रूप से प्रभावशाली हैं और जो अपने उपकारों को गिनाते हुए अपने कार्यों का वर्णन करते हैं, तथा उन उथले, मानवीय वर्णनों के बीच अंतर देखो जो ईश्वरीय कार्यों और उपकारों से संबंधित नहीं हैं।

सूर्य और चंद्रमा के रचयिता के शब्दों के "फ़रिश्ते" जो मार्गदर्शन की रोशनी फैलाते हैं, और मनुष्य के "व्यर्थ महत्वाकांक्षाओं की गांठों पर फूंक मारने" के बीच कितना बड़ा अंतर है। मार्गदर्शन के "मोतियों" और विश्वास की सच्चाइयों और इस्लाम के मूल तत्वों के स्रोत कुरान के शब्द कितने अलग हैं जो दयालु के सर्वोच्च सिंहासन से निकले हैं। वे ईश्वरीय ज्ञान, शक्ति और इच्छा में निहित शाश्वत संबोधन का निर्माण करते हैं। वे कल्पना और इच्छा के खोखले मानवीय शब्दों से कितने अलग हैं।

कुरान एक ऐसे वृक्ष की तरह है जिसने अपनी शाखाएँ फैला दी हैं, पत्ते उग आए हैं, फूल खिले हैं और इस्लामी दुनिया के फल दिए हैं: इसके आध्यात्मिक मूल्य, सिद्धांत, सिद्धियाँ और शुद्ध विद्वान और संत। आचरण के सिद्धांतों के रूप में इस शानदार वृक्ष द्वारा उत्पादित कई बीज फल देने वाले वृक्ष बन गए हैं।

इस बारे में कुरान में घोषणा की गई है: कहो: "यदि सभी मनुष्य और जिन्न इस कुरान के समान बनाने के लिए एकत्र हो जाएं, तो वे इसके समान एक भी नहीं बना सकते, हालांकि वे एक दूसरे के सहायक होंगे" (17:88)।

कुरान अद्वितीय है। इसके क्रम और रचना की सुंदरता; इसकी शैलियों की मौलिकता और विशिष्टता; इसकी व्याख्याओं की श्रेष्ठता, उत्कृष्टता और स्पष्टता; इसके अर्थों की शक्ति और सच्चाई; और इसकी भाषा की शुद्धता और प्रवाह अतुलनीय हैं। इसका अर्थ इतना व्यापक है

कि कठोर न्यायविदों के सभी सिद्धांत, ईश्वर के ज्ञान के लिए प्रसिद्ध लोगों के स्वाद और ईश्वर तक पहुंचने वाले सभी शुद्ध, सिद्ध विद्वानों के मार्ग सभी समान हैं।

इसकी उत्पत्ति यहीं से हुई है। यह युगों-युगों से मौलिक और ताजा बना हुआ है,

समय के साथ-साथ यह और भी अधिक ताज़ा होता जा रहा है। इसने ज्ञान के सभी स्तरों को संतुष्ट किया है और

हर युग में समझ को नष्ट कर दिया, और वाक्पटुता और वाक्पटुता में सबसे श्रेष्ठ लोगों को चुप करा दिया। मानवता एक भी कविता ऐसी नहीं बना पाई है

इसलिए, इसके और मानव शब्दों के बीच का अंतर उतना ही बड़ा है जितना कि इसके और मानव शब्दों के बीच का अंतर सर्वोच्च स्वर्ग और पृथ्वी; वास्तव में, किसी भी मानव शब्द की तुलना नहीं की जा सकती इसके साथ.

> ऐ ख़ुदा! क़ुरआन के लिए और उस व्यक्ति के लिए जिस पर वह अवतरित हुआ है।
> अपने प्रकाश से हमारे दिलों को रोशन कर। कुरान को हमारी बीमारियों का इलाज बनाओ, और इस
> जीवन के दौरान और मृत्यु के बाद हमारा साथी बनाओ।
> यह संसार में एक विश्वासपात्र, कब्र में एक मित्र, पापों की क्षमा करने वाला है।
> क़यामत के दिन उसे पुल पर नूर बनाओ, आग से पर्दा और जन्नत का साथी और मार्गदर्शक बनाओ।
>
> सभी अच्छे कामों के लिए नेतृत्व करें। (ऐसा करें) अपनी कृपा, दया, उदारता के माध्यम से,
> और कृपा कर, हे दानशीलों में सर्वाधिक दानशील, दयावान
> दयालु हो। जिस पर तू कृपा करता है, उस पर आशीर्वाद और शांति प्रदान कर।
> उसे भेजा और तूने उसे सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा, और उस पर
> परिवार और साथियों,31 जैसा कि आपको और उसे प्रसन्न करेगा, और जैसा कि
> हे सारे संसार के पालनहार, हे कुरान के अवतरणकर्ता,
> कुरान की खातिर, इस किताब से कहो कि मेरी तरफ से यह दुआ कहो जब
> मौत ने मुझे चुप करा दिया है। आमीन! हज़ार बार आमीन!

निष्कर्ष के तौर पर:

- तीन महानतम और सर्वाधिक सार्वभौमिक बातें जो हमारे प्रभु को ज्ञात कराती हैं
  हम ब्रह्माण्ड, पैगम्बरों की मुहर और कुरान हैं।
- पैगम्बर मुहम्मद का व्यक्तित्व सार्वभौमिक है। • उनके पैगम्बर होने और
संत होने की पुष्टि पहले से ही प्रकट शास्त्रों में की गई भविष्यवाणियों, उनके द्वारा स्वयं किए गए चमत्कारों
  या उनसे जुड़े लोगों द्वारा किए गए चमत्कारों से होती है।
  उनके पैगम्बर बनने से पहले, उनके पैगम्बर बनने के दौरान किए गए लगभग 1,000 चमत्कार, और उनका
  व्यक्तित्व या चरित्र। • ऐसे प्रश्न जैसे: ब्रह्मांड क्यों बनाया गया? आप कौन हैं? आप
कहाँ हैं?
  आप कहाँ से आये हैं? आपका उद्देश्य या अंतिम गंतव्य क्या है?
  कुरान.

31 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। ये लोग हैं अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है । पैगम्बर की पत्नियाँ इस पदनाम में शामिल हैं। साथी: वे लोग जो पैगंबर के आसपास इकट्ठा हुए थे शिक्षा प्राप्त करना और यथासंभव उनके उदाहरण का अनुसरण करना। उन्हें सबसे अच्छा माना जाता है मुस्लिम राष्ट्र के कुलीन और अग्रिम पंक्ति के लोग हैं और उन्हें सर्वोच्च सम्मान और प्रशंसा दी जाती है। (ट्र.)

• यदि पैगम्बर जीवित न होते तो मानवता का कोई मूल्य और अर्थ न होता।
और यह नहीं जान पाएंगे कि ब्रह्मांड क्यों अस्तित्व में है।

• पैगम्बर दयालु ईश्वर के प्रेम [अपने प्राणियों के प्रति] का प्रतीक हैं
और उनके लिए प्रभु की दया का मूर्त रूप।

• पैगम्बर ने अपने कठोर हृदय वाले लोगों के दिलों और दिमागों पर विजय प्राप्त करके उन्हें मानवता के शिक्षक और सभ्य लोगों के स्वामी में बदल दिया।
आत्माओं और अहंकारों को वश में कर लिया और दिलों के प्रिय, गुरु बन गए
तर्क का, आत्म-शिक्षा का शिक्षक, और आत्माओं का शासक।

• पैगम्बर को अपने विरोधियों से डर नहीं था, क्योंकि वे उनके रास्ते में कोई भेद नहीं ढूंढ सकते थे।
पूर्ण ईमानदारी और उत्साह। • वह लोगों को
भयानक घटनाओं, दिलों को लुभाने वाली बातों और दिमाग को सोचने के लिए प्रेरित करने वाली बातों के बारे में बताता है और चेतावनी देता है। वह अच्छी ख़बरें लाता है [इस दुनिया और परलोक दोनों में एक सुखद भविष्य की]। • वह एक निर्णायक तर्क और शाश्वत खुशी का निश्चित
सबूत है।
उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करने से शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है।

• वह शाश्वत अस्तित्व, ईश्वर से मुलाकात, स्वर्ग और ईश्वर की भलाई चाहता है
आनंद।

• उस सुख के युग के बाद से, पैगम्बर के मार्गदर्शन से हजारों लोगों को लाभ हुआ है
धार्मिक और "प्राकृतिक" विज्ञान के साथ-साथ प्रसिद्ध विद्वानों की
धर्म का आंतरिक आयाम (सूफीवाद)।

• उनके पैगम्बर होने के पक्ष में अनगिनत तर्क हैं। • कुरान, जो हमें सारे संसार के
पालनहार से परिचित कराता है, निम्नलिखित से संबंधित है:
विभिन्न प्राथमिकता वाले कई मुद्दे।

• ऐसे सवालों के जवाब जैसे: कुरान क्या है? इसकी आयतें क्यों हैं?
क्या इसमें वैज्ञानिक तथ्यों का उल्लेख है और यदि है तो उनका उल्लेख किस प्रकार किया गया है? कुरान और विज्ञान ब्रह्मांड के बारे में किस प्रकार सोचते हैं?
कुरान के मुख्य उद्देश्य क्या हैं? तथा कुरान इतना प्रभावशाली क्यों है? • कुरान अद्वितीय है,
तुलना से परे है, शाश्वत रूप से मौलिक और ताज़ा है।

तीसरा ग्रंथ

तीसरा ग्रंथ

पुनरुत्थान के पक्ष में तर्क

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

A स्तुति उस ईश्वर की है, जिसके अस्तित्व और एकता के लिए ब्रह्मांड के सभी परमाणु और यौगिक अपनी लाचारी और गरीबी की गवाही [ईश्वर के समक्ष] जीभ से देते हैं। शांति और आशीर्वाद हो उसके पैगम्बर पर, जो सृष्टि के रहस्यों का खोजकर्ता और उसकी निशानियों [ईश्वर के अस्तित्व और एकता] की कुंजी है, उसके साथी पैगम्बरों और रसूलों पर, ईश्वर के सबसे नजदीकी फ़रिश्तों पर, और ईश्वर के नेक बंदों पर जो आकाश और पृथ्वी पर रहते हैं।

विश्वास के छह स्तंभों के बीच एक मौलिक, घनिष्ठ संबंध है, इतना कि एक को दूसरों के बिना नहीं माना जा सकता। एक पर विश्वास करने के लिए दूसरों पर विश्वास करना आवश्यक है। इसे देखते हुए, पुनरुत्थान के तर्कों की व्याख्या किए बिना, ईश्वर के अस्तित्व और एकता और पैगंबर के संदेशवाहक होने के कुछ तर्कों को संक्षेप में समझाना उचित है।[32]

---

[32] चूँकि आस्था के छह स्तंभों (ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, पैगम्बरत्व, ईश्वरीय शास्त्र, फ़रिश्ते, पुनरुत्थान और नियति) के बीच एक दूसरे की आवश्यकता के अनुसार एक दूसरे से परस्पर संबंध है, और चूँकि मथनावी अल-नूरिया में अलग-अलग समय पर लिखी गई पुस्तिकाएँ हैं, और चूँकि लेखक का उद्देश्य लोगों को आस्था की ओर ले जाना है, इसलिए दोहराव अपरिहार्य है। कुरान में भी इसी तरह की पुनरावृत्तियाँ हैं। आप आने वाले पन्नों में इसके कारणों को देखेंगे। (अनुवाद)

ईश्वर के अस्तित्व और एकता के पक्ष में कुछ तर्क

हे मित्र, जान लो कि जो लोग प्रकृतिवाद का अनुसरण करते हैं और कार्य-कारण के प्रति हठधर्मिता से चिपके रहते हैं, वे [सृष्टिकर्ता के प्रति] धन्यवाद का द्वार बंद पाते हैं और
उसके साथ साझीदार जोड़ने का द्वार खुल गया।
ईश्वर में अविश्वास और उसके प्रति कृतघ्नता असंभवता की नींव पर आधारित है, क्योंकि:

• जो फल को उसकी समस्त कला और अर्थ के साथ बनाता है, वह बना सकता है
और पृथ्वी पर शासन करें

यदि लोग अपनी अज्ञानता से जागें और सच्चे वैज्ञानिक ज्ञान के अनुसार अपने अविश्वास का विश्लेषण करें, तो उन्हें स्वीकार करना होगा कि उन्होंने एक छोटे कण को ऐसे कार्य और मिशन सौंपे हैं जिन्हें वह पूरा नहीं कर सकता।

उदाहरण के लिए, उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक परमाणु में लाखों मशीनें होती हैं
और सभी प्राणियों में पाई जाने वाली कला की सभी सूक्ष्मताओं का निर्माण कर सकता है। प्रत्येक वायु कण
सभी पौधों और फूलों, पेड़ों और फलों में प्रवेश कर सकता है, और उनमें कार्य कर सकता है।
कहा कि ये कण उस एक के नाम पर काम नहीं करते जिसके हाथ में यह है
सभी चीज़ों के साम्राज्य का, तो प्रत्येक कण को पूर्ण ज्ञान होना चाहिए
जो भी इसमें प्रवेश करता है।

एक फल पर विचार करें। यह पूरे पेड़ का एक छोटा सा रूप है, और इसका बीज उस पेड़ के समान है।
वह पृष्ठ जिस पर पेड़ का जीवन-इतिहास अंकित है। साथ ही, यह किससे जुड़ा है
इसकी प्रजाति के सभी सदस्यों के साथ-साथ पूरी पृथ्वी भी। इसलिए, गुण के कारण
इसकी कला और अर्थ की महानता में, एक फल की कला उतनी ही महान है
पृथ्वी का। इस प्रकार वह जो अपनी सारी कला और अर्थ के साथ एक फल बनाता है, वह
पृथ्वी का निर्माण और शासन करें.

• नियति अपने निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार रूपरेखा या योजना बनाती है
बुद्धि से, और शक्ति उसे तदनुसार बनाती है

हे मित्र, यह जान लो कि प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं: उसका दृश्य रूप,
जो विशेष रूप से इसे सौंपे गए कार्यों और उद्देश्यों के लिए बनाए गए परिधान जैसा दिखता है, और इसका अमूर्त पहलू, जिसमें इसके सभी रूप शामिल हैं
अपने जीवन के दौरान मान लें। यह प्रकाश के साथ किसी चीज़ द्वारा बनाए गए एक चक्र की तरह है
एक छोर से जुड़ा हुआ है और अपने चारों ओर तेज़ गति से घूम रहा है। किसी वस्तु का अमूर्त पहलू, एक तरह से, उसका जीवन-इतिहास है जो भाग्य द्वारा निर्धारित होता है, जो कि
हम इसे "भाग्य" या "चीजों की नियति" कहते हैं। दोनों पहलुओं में वस्तु के अस्तित्व और जीवन के लिए बुद्धिमानी भरे उद्देश्य निहित हैं। भौतिक पहलू के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है, जबकि
भाग्य उसका आकार और विकास निर्धारित करता है। दूसरे शब्दों में, भाग्य उसे बाहर खींचता है-

बुद्धि और शक्ति द्वारा सौंपे गए उद्देश्यों के अनुसार रेखाएँ या योजनाएँ
तदनुसार इसे बनाता है.

- ईश्वर के अस्तित्व और एकता को नकारने का अर्थ है प्रत्येक अणु और प्रत्येक अणु को ईश्वर का एकत्व मानना।
  प्राकृतिक कारण में इतना ज्ञान और शक्ति है कि वह सम्पूर्ण विश्व का निर्माण कर सके।
  कविता

जो लोग सच्चे वैज्ञानिक ज्ञान और सत्य का उल्लेख करते हैं, उन्हें स्वीकार करना होगा,
उनकी कृतघ्नता और अविश्वास के कारण, कि प्रत्येक सूक्ष्म कण और "प्राकृतिक" कारण में हर उस चीज़ के लिए
वस्त्र बनाने के लिए पर्याप्त ज्ञान है जो अस्तित्व में है।
मौजूद है, साथ ही साथ उनके विकास के दौरान वे जो रूप धारण करेंगे उसके लिए भी।
सभी फटे हुए कपड़ों को लगातार नया करने के लिए उतनी ही शक्ति होनी चाहिए जितनी आवश्यक हो
समय के साथ घटनाओं के "कांटों" से ऊपर उठना। यहाँ तक कि मनुष्य भी, घटनाओं के फल का फल है
सृष्टि का वृक्ष माना जाता है कि यह सबसे शक्तिशाली कारण है, सबसे अधिक ज्ञानवान है, तथा इसमें सबसे व्यापक
इच्छाशक्ति है, सूक्ष्म की तो बात ही छोड़िए।
कण, कांटेदार पेड़ के लिए उपयुक्त वस्त्र नहीं बना सकते। हालाँकि,
सर्वज्ञ निर्माता इसे बढ़ते समय नित्य नये वस्त्र पहनाता है, और बनाता है
इसके हरे, समृद्ध रूप से सजाए गए और पूरी तरह से फिट होने वाले कपड़ों को तेजी से और आसानी से पहनना।
सारी महिमा उसी को हो, जो जिसे चाहता है उसे यह कहकर अस्तित्व में लाता है कि “हो जा!”
और यह सच है। उसकी महिमा हो जिसके हाथ में सभी चीज़ों का प्रभुत्व है, और
उसी की ओर तुम लौट रहे हो (36:82-83)।

हे मित्र, जान लो कि हर चीज पर एक विशेष मोहर और मुहर लगी होती है।
वह अकेला है, जिसकी सब लोग कामना करते हैं, तथा उसके पास निशानियाँ हैं जो गवाही देती हैं कि वही उसका रचयिता है और
स्वामी। उसकी एकता की असंख्य मोहरों और उसके अस्तित्व की मुहरों में से
सदा-से-प्रार्थित, वसंत के दौरान देखी गई “मोहर” को देखें।

- प्रचुरता के बावजूद उत्तम कलात्मकता; पूर्ण सहजता के बावजूद उत्तम व्यवस्था;
  अविश्वसनीय गति के बावजूद सही माप, अनुपात और दृढ़ता; विश्वव्यापी वितरण के बावजूद सही
  वैयक्तिकरण; उच्चतम मूल्य और
  सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के बावजूद मूल्य; और पूर्ण विशिष्टता के बावजूद
  पूर्ण मिश्रितता और समानता एक, एकल निर्माता की ओर इशारा करती है

पृथ्वी की सतह पर, हम हमेशा मौलिक और उद्देश्यपूर्ण सृजन के कार्य देखते हैं। ये अनंत प्रचुरता में, सुंदर और परिपूर्ण कलात्मकता के साथ, पूर्ण सहजता और परिपूर्ण क्रम और व्यवस्था के साथ घटित होते हैं;

अनुपात, दृढ़ता या सारभूतता में किसी प्रकार की हानि के बिना अविश्वसनीय गति; तथा
प्रजातियों के अनंत वितरण में प्रत्येक व्यक्ति की अनंतता के साथ
सुंदरता। ये कार्य सबसे अधिक किफ़ायती या सबसे कम लागत में होते हैं, फिर भी हर व्यक्ति अमूल्य है, और अद्वितीय है जबकि उसके पास सबसे अधिक है

प्रजातियों के बीच और उनके बीच पत्राचार और समानता विशाल होने के बावजूद
समय और स्थान की दूरियाँ। वे एक पूर्ण विविधता के साथ संतुलन में हैं,
पात्रों और विशेषताओं का एक आदर्श वैयक्तिकरण हालांकि उत्पन्न हुआ
समान या यहां तक कि एक ही सामग्री, संरचनात्मक सिद्धांत और संगठन।

प्रत्येक वस्तु चर्चित मोहर को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है, क्योंकि अनंत
सुन्दर, व्यवस्थित कलात्मकता के साथ प्रचुरता उनके लिए विशेष है
जिसके पास अनंत शक्ति है और जो कार्य करने से विचलित या रोका नहीं जाता है
एक साथ कई चीजें। सही क्रम और व्यवस्था में पूर्ण सहजता है
उसके लिए विशेष जिसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है और जिसके पास अनंत ज्ञान है। वह असाधारण गति जो
दृढ़ता और अनुपात को प्रभावित नहीं करती है, वह है
वह जिसकी शक्ति और आदेश के अधीन सब कुछ है।

प्रजातियों का विशाल वितरण जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की अनंत सुंदरता कायम है, वह उसके लिए विशिष्ट है
जो स्थान से असीमित है, बल्कि हमारे निकट है
सब कुछ उसकी शक्ति और ज्ञान के माध्यम से। प्रत्येक व्यक्ति का अद्भुत
मितव्ययिता और प्रचुरता, जिसका मूल्य अथाह है, विशेष रूप से
वह जो असीम रूप से धनवान है और जिसके पास अक्षय खजाने हैं।

- विशाल दूरियों के बावजूद दृढ़ सुसंगति, पूर्ण पत्राचार, और
  एक ही चीज़ से बने होने के बावजूद पात्रों का पूर्ण वैयक्तिकरण
  सामग्री, सृष्टिकर्ता के पास पूर्ण इच्छा, शक्ति और ज्ञान है, यह दिखाती है

विभिन्न प्रजातियों के सदस्यों की एकरूपता, प्रत्येक व्यक्ति की अद्वितीयता के बावजूद और उसमें किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या दोष के बिना, उसके लिए विशेष है जो सब कुछ देखता है और उनका साक्षी है। वह बहुत कुछ कर सकता है।
सभी चीजों को एक साथ सुनता है, और सभी चीजों की याचिका को एक साथ सुनता है
भ्रमित होना.

संरचना और रूप में पूर्ण अनुरूपता और समानता
समय और स्थान में विशाल दूरी के बावजूद प्रजातियाँ, और एक निरपेक्ष के साथ संतुलन में
विविधता जैसे कि प्रत्येक सदस्य यह अपेक्षा करता है कि उसे आदेश एक ही व्यक्ति द्वारा दिया जाएगा
निर्देशक, उसके लिए विशेष है। अपने ज्ञान, शक्ति और बुद्धि के माध्यम से, वह
वह पृथ्वी को अपनी इच्छानुसार निपटाता है।

प्रत्येक प्राणी, यद्यपि समान या एक ही पदार्थ से उत्पन्न होता है, फिर भी उसके चरित्र और विशेषताएं अद्वितीय होती हैं, तथा उसके संरचनात्मक सिद्धांत और विशेषताएं भी अद्वितीय होती हैं।
संगठन उसके लिए विशेष है जिसके पास पूर्ण इच्छा और स्वतंत्रता है
प्रत्येक प्राणी की उत्तम संरचना और सुंदरता, प्रजातियों की विशाल बहुतायत के बावजूद, एक के लिए विशेष है,
जिसकी शक्ति इतनी निरपेक्ष और समावेशी है कि परमाणु और आकाशगंगाएँ उसके लिए समान हैं।

जबकि इनमें से प्रत्येक बिंदु ईश्वरीय एकता की मुहर को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है, वे ईश्वरीय एकता की मुहर का एक सशक्त प्रदर्शन प्रस्तुत करते हैं जब एक साथ एक दूसरे के भीतर गठित एक एकल कार्य के रूप में विचार किया जाता है। इसके आधार पर, हम इसका अर्थ समझ सकते हैं: निश्चित रूप से, यदि आप उनसे पूछें कि आकाश और पृथ्वी को किसने बनाया, तो वे निश्चित रूप से कहेंगे, "ईश्वर" (39:38)। अर्थात्, जब बौद्धिक और तार्किक रूप से इस वास्तविकता के प्रति जागरूक होते हैं, तो अविश्वासी ईश्वर के अस्तित्व और रचनात्मक शक्ति को स्वीकार करने से खुद को रोक नहीं पाते हैं।

ईश्वर में विश्वास के लिए संदेशवाहक में विश्वास करना आवश्यक है

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर, पैगम्बर, पुनरुत्थान और ब्रह्मांड के अस्तित्व की पुष्टि में विश्वास के लिए परस्पर विश्वास की आवश्यकता होती है। विश्वास के इन स्तंभों के बीच एक पूर्ण संबंध है, क्योंकि एक पर विश्वास करने के लिए दूसरों पर विश्वास करना आवश्यक है। ब्रह्मांड ईश्वर के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता को स्पष्ट करता है, और ईश्वर के अस्तित्व के लिए संदेशवाहक और दूसरी दुनिया की आवश्यकता होती है।

ऐसी किताब, खास तौर पर जिसमें हर शब्द एक अलग किताब की तरह अर्थपूर्ण हो और जिसका हर अक्षर एक स्तुति की तरह हो, के लिए कोई लेखक न होना असंभव है। ब्रह्मांड की इस किताब के अस्तित्व को तब तक समझाया नहीं जा सकता जब तक इसका कोई शाश्वत डिज़ाइनर न हो। जिस तरह से कला के चमत्कार, बेहतरीन डिज़ाइन और अद्भुत सजावट वाली इमारत बिना किसी वास्तुकार और निर्माता के अस्तित्व में नहीं आ सकती, उसी तरह यह दुनिया अपने निर्माता के बिना अस्तित्व में नहीं आ सकती।

पारदर्शी चीजों में, नदियों और समुद्रों पर बुलबुले में, और पानी की बूंदों और बर्फ के टुकड़ों में प्रतिबिंबित सूर्य की छवियों को केवल सूर्य के लिए जिम्मेदार ठहराकर ही समझाया जा सकता है। अन्यथा, हमें उतने ही सूर्यों के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा जितनी पानी की बूंदें, बुलबुले और बर्फ के टुकड़े हैं। इस निरंतर बदलते और हमेशा नवीनीकृत ब्रह्मांड के अस्तित्व को केवल इसके निर्माता और निर्माता के आवश्यक अस्तित्व से ही समझाया जा सकता है।

उन्होंने इस अद्भुत वृक्ष को अपनी इच्छा और बुद्धि के सिद्धांतों के अनुसार रोपा, अपनी नियति और आदेश के अनुसार इसका विस्तार किया, अपनी रीति और कार्यशैली की मांग के अनुसार इसका क्रम निर्धारित किया, अपनी कृपा और दया के उपहारों के अनुसार इसका श्रृंगार किया, तथा अपने नामों और गुणों को प्रकट करके इसे प्रकाशित किया।

सृष्टि का प्रत्येक जीवित भाग संपूर्ण का एक लघु रूप है, और इसलिए उस भाग का निर्माता संपूर्ण का निर्माण कर सकता है। एक निर्माता के अस्तित्व को नकारने का अर्थ है कि ब्रह्मांड में जितने परमाणु और यौगिक हैं, उतने ही देवता भी हैं।

- ईश्वर स्वयं को दूतों के माध्यम से प्रकट करता है

जिस प्रकार सूर्य प्रकाश को फैलाता है, उसी प्रकार ईश्वर भी अपने दूतों के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है। असीम रूप से परिपूर्ण सौंदर्य स्वयं को एक शिक्षाप्रद संदेशवाहक के माध्यम से ज्ञात करने में विफल नहीं हो सकता; असीम रूप से सुंदर कला स्वयं पर ध्यान आकर्षित करने में विफल नहीं हो सकती एक संदेशवाहक के माध्यम से जो इसका वर्णन करता है; और एक सर्वव्यापी प्रभुत्व की संप्रभुता को, दोनों दुनियाओं में खुशी के सिद्धांतों के साथ उठाए गए व्यक्ति के माध्यम से, इसकी एकता और इसकी सभी के लिए शाश्वत-प्रार्थना की घोषणा करनी चाहिए।

अनंत सौंदर्य सार्वभौमिक सेवकत्व की मांग करता है - सुंदर लोगों को इसकी सूक्ष्मताओं को देखें और इससे प्रेम करें; सराहना के साथ इसे देखने की आँखें; और एक प्यारे सेवक (एक संदेशवाहक) का अस्तित्व जो इसे प्यार करेगा, इसे बनाएगा इसे अन्य लोग प्यार करते हैं, और इसके माध्यम से यह स्वयं को ज्ञात कर सकता है। इस प्रकार दूत, अपनी सेवकाई के माध्यम से, एक दर्पण के रूप में कार्य करता है जो वह एक सुन्दर व्यक्ति है और अपने संदेशवाहक के माध्यम से दूसरों को उसका अनुसरण करने के लिए बुलाता है। चमत्कारों और सबसे कीमती रत्नों से भरा खजाना प्रदर्शित किया जाएगा एक सुनार द्वारा, जो इसकी सभी छिपी हुई सूक्ष्मताओं के साथ इसका वर्णन करेगा।

हमारे स्वामी मुहम्मद के अलावा और किसके पास ये सब है? गुण [सभी चेतन प्राणियों द्वारा संसार के स्वामी को ज्ञात कराने के लिए]? हमारे गुरु मुहम्मद सबसे उत्तम, महान और गुणी व्यक्ति हैं। वह पैगम्बरों का राजा है, जो ईश्वरीय सत्ता को ज्ञात कराते हैं, उसकी सुन्दरता को प्रकट करते हैं, तथा उसके आदेशों को लोगों तक पहुंचाते हैं। वे ही उसके चमत्कारों को देखते हैं तथा दूसरों को भी उन्हें देखने के लिए प्रेरित करते हैं, उसकी पूजा करते हैं तथा दूसरों को उसके मार्ग पर ले जाते हैं। उसकी पूजा करें, उससे प्रेम करें और दूसरों को भी उससे प्रेम करने के लिए प्रेरित करें। जब तक पृथ्वी और आकाश विद्यमान हैं, तब तक सबसे अधिक आशीर्वाद और शांति बनी रहे उसे, उन्हें, और उनके परिवारों को

पुनरुत्थान के पक्ष में तर्क

पुनरुत्थान और परलोक के लिए अकाट्य तर्कों पर विचार करें। न्यायप्रिय शासक को आज्ञाकारी प्रजा को पुरस्कृत करना चाहिए और विद्रोही प्रजा को दण्डित करना चाहिए। यह बात तब और भी सत्य हो जाती है जब शासक:

- वह असीम रूप से दानशील है, असीम खजानों पर नियंत्रण रखता है, तथा उसकी विस्मयकारी शक्ति असीम सम्मान और गरिमा का स्रोत है।
- असीम दया है जिसके लिए असीम अनुग्रह की आवश्यकता है, और महिमा जो लोग इसका अपमान करते हैं, उनके लिए दण्ड की मांग की गई।
- अपनी प्रभुता की रक्षा के लिए बुद्धि का उत्थान किया है जो लोग इसमें शरण लेते हैं उनके साथ दयालुता से पेश आना, तथा पूर्ण न्याय की मांग करना - अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा करके अपनी महिमा को बनाए रखना।

- असीम रूप से विशाल खजाने और पूर्ण उदारता के कारण दावतों का स्थायी निवास और जरूरतमंदों का स्थायी अस्तित्व आवश्यक है
उसके खजाने का.
- इसमें गुप्त परिपूर्णताएं हैं जो उन लोगों के सामने प्रकट होने की मांग करती हैं जो पूरी तरह से उनकी सराहना करें.
- इसमें अद्वितीय सौंदर्य और परोपकार की अतुलनीय सूक्ष्मता है
दूसरों द्वारा "दर्पण" में देखे जाने की आवश्यकता होती है, जिसके बदले में, इसकी आवश्यकता होती है
उन लोगों का स्थायी अस्तित्व जो उन्हें लालसा, आश्चर्य और प्रशंसा के साथ देखेंगे (स्थायी सौंदर्य और अनुग्रह अस्थायी प्रेमियों से संतुष्ट नहीं हैं)।

- उनमें इतनी दया है कि वे सभी जरूरतमंदों की मदद करते हैं, उनकी सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं तथा अपनी प्रजा की जरूरतों को पूरा करते हैं, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों।
इसे देखते हुए, वह अपने पसंदीदा की ज़रूरत को पूरा करेगा, खासकर अगर यह ज़रूरत है
सभी का और मिलना आसान है।
- एक छोटा सा धर्मशाला (एक हमेशा बदलता रहने वाला परीक्षण-स्थल) है जो उसकी संप्रभुता के असीम वैभव के बावजूद, उसके विषयों से प्रतिदिन भरता और खाली होता रहता है। वे उस स्थान पर केवल थोड़े समय के लिए ही रहते हैं, जो शासक की कला और अनुग्रह के चमत्कारों को प्रदर्शित करता है और निरंतर रूपांतरित होता रहता है।
तात्पर्य यह है कि इस धर्मशाला, परीक्षण-स्थल और प्रदर्शन स्थल के पीछे स्थायी महल, शाश्वत निवास और खुले खजाने भरे हुए हैं
मूल वस्तुओं के साथ.
- वह अपने संप्रभु कर्तव्यों में असीम रूप से सावधान है। वह रिकॉर्ड करता है और चाहता है
उसके राज्य में होने वाली हर घटना को रिकॉर्ड किया गया है। इसका मतलब है
कि एक दिन वह अपने प्रजाजनों को, विशेषकर प्रमुख लोगों को बुलाएगा
वह अपनी दया, करुणा, क्षमा,
शक्ति, न्याय और गरिमा।
- बार-बार ऐसे वादे करता है जिन्हें वह आसानी से पूरा कर सकता है और जिन्हें पूरा करना ज़रूरी है
उनकी प्रजा के लिए इसका बहुत महत्व है। वह इनमें से एक भी नहीं तोड़ सकते, क्योंकि
जो उसके शासन की महिमा और गरिमा के विपरीत होगा।
- ऐसे संदेशवाहक हैं जो सर्वसम्मति से सहमत हैं कि उनके शक्तिशाली का केंद्र
संप्रभुता हमसे बहुत दूर है, और इस दुनिया की क्षणभंगुर इमारतें
(अगली दुनिया में) अनन्त महलों के लिए विनिमय किया जा सकता है। ऐसी शानदार, स्थायी संप्रभुता नाशवान चीज़ों पर आधारित नहीं हो सकती,
परिवर्तनशील एवं क्षणभंगुर।
- इस क्षणभंगुर दुनिया में कई स्थायी दुनिया के नमूने उपलब्ध कराता है।
इस प्रकार ये एकत्रीकरण और अलगाव अपने आप में अंत नहीं हैं, बल्कि

ये रिहर्सल हैं जिन्हें कॉपी करके उनके परिणामों के साथ सुरक्षित रखा जाना है। उस विशाल सभा स्थल में कार्यवाही इन रिहर्सलों द्वारा उत्पन्न परिणामों के अनुसार होगी। • इन क्षयकारी भवनों, नाशवान मैदानों और प्रदर्शन के अस्थायी स्थानों में उनकी बुद्धि,

कृपा, न्याय और दया के कार्य और निशान प्रकट होते हैं। विवेक रखने वाला कोई भी व्यक्ति यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि उससे अधिक परिपूर्ण बुद्धि, अधिक उदार कृपा, अधिक व्यापक दया और अधिक गौरवशाली न्याय कहीं नहीं मिल सकता।

उनकी बुद्धि, कृपा, दया और न्याय को प्रकट करने के लिए, प्रत्येक को अपने आवश्यक या मूल सत्य के साथ, उनकी संप्रभुता के केंद्र में स्थायी ऊंचे निवास, चिरस्थायी ऊंचे भवन और उनमें अनंत काल तक रहने वाले निवासी होने चाहिए। अन्यथा, किसी को इस बुद्धि, कृपा, दया और न्याय को नकारना होगा। इसके अलावा, इन कार्यों के कर्ता, ज्ञान और उदारता के इन उदाहरणों के मालिक को एक चंचल, मनमौजी और अन्यायी तानाशाह माना जाना चाहिए। इसके लिए, बदले में, सत्य को उनके विपरीत में बदलने की आवश्यकता होगी, जो कि उन लोगों के लिए अकल्पनीय है जिनके पास सही निर्णय और तर्क है, लेकिन उन लोगों के लिए नहीं जो सोफिस्टों की तरह, खुद सहित हर चीज के अस्तित्व को नकारते हैं।

• अपनी प्रजा को इन अस्थायी भवनों से हटाकर अपनी स्थायी संप्रभुता की सीट पर स्थानांतरित कर सकता है, और अनगिनत संकेत प्रदर्शित करता है कि इस अस्थायी भूमि को एक स्थायी भूमि से बदला जाएगा। • उसने इस दुनिया को बनाया है, लेकिन अगली दुनिया (परलोक) को नहीं, जबकि

उसके प्रभु की संप्रभुता पुरस्कार और दंड की मांग करती है। • उसके पास एक विशाल उदारता है जो अनुग्रह और पुरस्कार के अनुरूप देने की मांग करती है, और एक अपार शक्ति और गरिमा है जिसके लिए

असीम संवेदनशीलता और उत्साह की आवश्यकता होती है [उस गरिमा को बनाए रखने के लिए]। (यह दुनिया उस उदारता और गरिमा की एक छोटी सी मात्रा को भी पूरा नहीं कर सकती है जो इस हद तक की आवश्यकता है।)

• ऐसी दया है जो सभी चीज़ों को समाहित करती है। प्रत्येक माँ की करुणा, साथ ही सभी पौधों और कमज़ोर और युवा जानवरों को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना, इस दया का एक ही विकिरण है। ऐसी दया के लिए अनुग्रह और परोपकार की आवश्यकता होती है। इस दुनिया में जिन लोगों पर यह अनुग्रह करता है और उन्हें भोजन उपलब्ध कराता है, उनकी क्षणभंगुरता पर विचार करें, जो उस दया के अनंत सागर की एक बूंद मात्र है। यदि वह दया किसी अन्य दुनिया में पूरी तरह से प्रकट नहीं होती, तो अनुग्रह और परोपकार अवरुद्ध हो जाते हैं।

इस संसार में और बिना अवरोध के मुक्त होने की आशा के, यह संकट और पीड़ा का कारण बन जाएगा।

करुणा (अनंत विलुप्त होने वाली चीज़ों के लिए) वास्तव में एक पीड़ा है, और उनके लिए प्रेम एक हताश चिंता है। बुद्धि (जो अतीत के दर्द और भविष्य की चिंताओं को ध्यान में लाती है) अपने छोटे जीवन में एक पीड़ा और क्षणिक सुख है, क्योंकि अनंत काल की कोई आशा न होने के कारण यह दर्द में बदल जाती है।

अनंत जीवन को नकारने का अर्थ है इस दया को नकारना, और यह सूर्य को नकारने के समान है जो हर दिन दुनिया को अपनी रोशनी से भर देता है। • उसके पास एक महिमा और गौरव है जिसके लिए उसे उन लोगों को दंडित करने की आवश्यकता है जो उसका अनादर करते हैं और उनका अपमान करने वालों को नष्ट कर देते हैं। उसके द्वारा पहले विद्रोही लोगों का विनाश यह दर्शाता है कि वह उन्हें राहत देता है लेकिन उनकी उपेक्षा नहीं करता। उसके कार्य दर्शाते हैं कि वह अपने आदेशों और निषेधों को सबसे अधिक महत्व देता है। • वह खुद को परिपूर्ण, सुसंतुलित और सुंदर चीजों, जैसे कि प्यारे फूलों के माध्यम से जाना और प्यार करता है। वह उनमें मौजूद आकर्षक फलों के माध्यम से अपनी दया दिखाता है। जो लोग उसे अपने विश्वास, पूजा और सम्मान से वंचित करते हैं, उनके लिए उसने अपने अनंत प्रभुत्व के आसन पर दंड का निवास तैयार किया है।

हर चीज़ से जुड़े उद्देश्यों और लाभों से, साथ ही सभी प्राणियों में प्रदर्शित कला के क्रम और सौंदर्य से, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसके कार्यों के पीछे की बुद्धि उन लोगों को पुरस्कृत करने की आवश्यकता है जो उसकी आज्ञा मानते हैं और उसकी शरण लेते हैं। वह हर चीज़ को उसके उचित स्थान पर रखता है, हर चीज़ को उसका हक़ देता है, और अपनी रचना के किसी भी सदस्य द्वारा की गई हर प्रार्थना का उत्तर देता है। और इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह एक पूर्ण, सच्चा न्याय प्रदान करता है जिसके लिए उसके राज्य और आधिपत्य की महिमा को बनाए रखना और एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण में अपने विषयों के अधिकारों की रक्षा करना आवश्यक है। चूँकि यह क्षणभंगुर निवास, सचेत प्राणियों के लिए परीक्षण का क्षेत्र जहाँ वे स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं, उसके न्याय के लिए खुद को पूरी तरह से प्रकट करने के लिए बहुत छोटा है, इसलिए परम सौंदर्य, अनुग्रह और महिमा वाले सर्व-न्यायप्रिय, सर्व-बुद्धिमान व्यक्ति के पास एक शाश्वत स्वर्ग और स्थायी नर्क होना चाहिए।

• उसके पास असीम उदारता और उदारता है, तथा आशीर्वाद और कृपा के भण्डार हैं। इनमें प्रकाश से भरपूर सूर्य और फलों से लदे वृक्ष हैं।

यह असीम उदारता और धन, दावतों के एक शाश्वत क्षेत्र और जरूरतमंदों के स्थायी अस्तित्व की मांग करता है। एक असीम उदारता के लिए अनुग्रह के एक असीम दान की आवश्यकता होती है, जो बदले में, मांग करता है

उन लोगों का शाश्वत अस्तित्व जिन पर उपकार किया जाएगा और वे धन्यवाद देकर उसका बदला चुकाएँगे। अन्यथा, उस शाश्वत उपकार का बदला चुकाना प्रत्येक व्यक्ति के सीमित जीवनकाल तक ही सीमित रहेगा।

• गुप्त पूर्णताएँ हैं। उनकी पूर्णता के चमत्कारी कार्यों को सराहना करने वाले दर्शकों के लिए प्रदर्शित किया जाना चाहिए। शाश्वत पूर्णता के लिए निरंतर अभिव्यक्ति और सराहना करने वाले दर्शकों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है। पूर्णता उन दर्शकों की दृष्टि में अपना मूल्य खो देती है जो अनंत विलुप्ति की निंदा करते हैं।

• एक अद्वितीय, पारलौकिक सौंदर्य है। प्रत्येक नाम इस सौंदर्य की किरणों के कारण पूरी तरह से सुंदर है। हम इस सौंदर्य को कैसे समझ सकते हैं? पृथ्वी, जो हर साल और हर मौसम में, साथ ही हर पल प्रदर्शित होने वाले हमेशा बदलते दृश्यों के उनके "ठोस" दर्पणों में से एक है, उस सौंदर्य की कुछ किरणों की एक छाया मात्र है, और वसंत उसके फूलों में से केवल एक है।

एक पूर्ण रूप से सुंदर व्यक्ति को यह इच्छा करनी चाहिए कि उसकी सुंदरता स्वयं और अन्य लोगों द्वारा देखी जाए। वह अपनी सुंदरता को प्रतिबिंबित करने के लिए "दर्पण" के अस्तित्व की इच्छा रखता है, और उसके प्रशंसित अनुग्रह का हिस्सा दिखाने के लिए प्रेमियों की। शाश्वत अनुग्रह और सुंदरता के लिए शाश्वत प्रेमियों और प्रशंसकों की आवश्यकता होती है। चूँकि व्यक्ति उस चीज़ के प्रति शत्रुता महसूस करता है जिसे प्राप्त या समझा नहीं जा सकता है, इसलिए एक क्षणभंगुर प्रेमी का शाश्वत सौंदर्य के लिए प्रेम शत्रुता में बदल जाता है। इसलिए, जिस तरह इस दुनिया को एक निर्माता के अस्तित्व की आवश्यकता है, उसी तरह निर्माता एक शाश्वत क्षेत्र के अस्तित्व की मांग करता है।

आगे के विचार

इस जगत के स्वामी में इतनी दया और इतनी ममता है कि वह मांगने वालों की सहायता करता है और जो प्रार्थना करके शरण लेते हैं, उनकी प्रार्थना का उत्तर देता है। वह छोटी से छोटी आवश्यकता को समय पर पूरा करता है, अपने गुप्त प्राणियों की मधुर आवाज को सुनता है और उनकी प्रार्थना पूरी करता है।

जब कोई यह विचार करता है कि शिशुओं और दुर्बलों की किस प्रकार देखभाल की जाती है और उन्हें किस प्रकार सहायता प्रदान की जाती है, तो उसे ईश्वरीय दया और स्नेह स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। इस प्रकार उदारता के साथ संयुक्त यह दया यह अपेक्षा करती है कि उसके महानतम और सर्वाधिक प्रिय सेवक की सबसे बड़ी आवश्यकता पूरी की जाए, विशेष रूप से यदि यह आवश्यकता सभी सचेतन प्राणियों द्वारा शब्दों या कार्यों में व्यक्त की गई हो। यह विशेष रूप से सत्य है यदि उस आवश्यकता को पूरा करने से वे अपनी सर्वोच्च क्षमता तक पहुंचने में सक्षम होंगे, और इसे पूरा करने से इनकार करने से वे इतने नीचे गिर सकते हैं कि वे फिर से नहीं उठ सकते; यदि वह आवश्यकता ब्रह्मांड में प्रकट सभी दिव्य नामों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है, ताकि ये नाम उस व्यक्ति से उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक क्षण में हस्तक्षेप कर सकें; और यदि उसका सबसे प्रिय सेवक अत्यंत विनम्रतापूर्वक मांगे-

जो लोग उसे स्वीकार करते हैं, उन्हें स्वीकार्य तरीके से और इस तरह से व्यवहार करना चाहिए कि वे उससे प्यार करें। उनके नेतृत्व को स्वीकार करें, जिनमें पैगंबर, संत और शुद्ध, सटीक विद्वान शामिल हैं, उनकी प्रार्थना पर "आमीन" कहें और अपने उदार भगवान से उनके लिए प्रार्थना करें।
स्वर्ग, अनंत काल, शाश्वत खुशी और स्वीकृति।

ऐसे मामले में, सर्वव्यापी ईश्वरीय दया अनुरोध को पूरा करती है, ऐसा न करना अन्याय होगा। यह प्रिय व्यक्ति, केंद्र या धुरी साक्षी होना और दूसरों को साक्षी बनाना (अस्तित्व, एकता और कार्य) शाश्वत साक्षी, एक संदेशवाहक है जो मानवता को रहस्य का खुलासा करता है सृष्टि, बहुलता के बीच दिव्य एकता, तथा स्वर्ग में शाश्वत सुख कैसे प्राप्त करें, यह सब सिखाया जाता है। अपनी दासता के माध्यम से, वह दया के भण्डार खोलता है,
दिव्य प्रभुत्व की सुंदरता को प्रतिबिंबित करता है, और शाश्वत खुशी और स्वर्ग के अस्तित्व के साधन के रूप में कार्य करता है।

यदि स्वर्ग के अस्तित्व का कोई अन्य कारण न होता, तो इस प्रियजन का सर्व-उदार की उदारता के लिए यह अनुरोध पर्याप्त होगा, जो हर वसंत स्वर्ग के बगीचों जैसा समृद्ध अलंकृत उद्यान बनाता है, बनाने के लिए उसके लिए, स्वर्ग बनाना उतना ही आसान है जितना कि स्वर्ग के बगीचे बनाना पृथ्वी। जिसके बारे में कहा गया था: "लेकिन तुम्हारे लिए, मैं नहीं होता दुनियाओं का निर्माण किया," को इस प्रकार संबोधित किया जाना चाहिए: "अगर कुछ भी नहीं होता लेकिन आपकी प्रार्थना के बिना, मैं आपके लिए स्वर्ग बना देता।

> हे ईश्वर! उस प्रियतम पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जो जगत के स्वामी हैं।
> दो दुनियाएँ, सृष्टि का गौरव, दो लोकों का जीवन,
> दोनों दुनियाओं में खुशी का साधन, जिसके पास दोनों दुनियाओं में एक खुशहाल जीवन के
> सिद्धांत हैं, मानवता और जिन्न दोनों के लिए दूत, और
> अपने परिवार, साथियों, साथी पैगम्बरों और पैगम्बरों पर।
> आमीन.

- यहां स्थायी महल, शाश्वत भवन और खुले खजाने होने चाहिए जो यहां देखे गए नमूनों के मूल से भरे हों, जहां शाश्वत संप्रभुता की पूर्ण भव्यता दिखाई गई है

इस बात पर विचार करें कि इस जगत का स्वामी, जैसा कि उसके इस जगत पर नियंत्रण से तथा सूर्य, चन्द्रमा, वृक्ष, नदियाँ, आदि को अपने अधीन करने से निष्कर्ष निकाला जा सकता है, इत्यादि, अपने अद्भुत प्रभुत्व में एक शानदार संप्रभुता का आनंद लेते हैं। हालाँकि, चूंकि यह निवास लगातार रूपांतरित हो रहा है और विनाश की ओर अग्रसर है, यह एक अतिथिगृह जैसा है जो प्रतिदिन भरता और खाली होता रहता है, एक निरंतर बदलता क्षेत्र परीक्षण का स्थान, अपने मालिक के चमत्कारों के मॉडल और उनके गुणों के नमूने प्रदर्शित करने का स्थान इसके अस्थायी निवासी निरंतर यात्रा पर रहते हैं, और इस प्रकार वे तब तक ही रुक सकते हैं जब तक उन्हें अपने सवालों के जवाब नहीं मिल जाते।

यदि किसी को किसी भी समय चले जाने के लिए कहा जाए, तो वहां स्थायी महल, चिरस्थायी भवन और मूल वस्तुओं से भरे खुले खजाने होने चाहिए, जहां शाश्वत संप्रभुता की पूर्ण भव्यता प्रदर्शित हो।

मान लीजिए कि आप एक शानदार गेस्ट हाउस देखते हैं जिसे एक दयालु शासक ने बनवाया है और यात्रियों के लिए सिर्फ़ एक रात ठहरने के लिए बहुत ही शानदार ढंग से सजाया है। आप देखते हैं कि ज़्यादातर सजावट नमूने हैं, आगंतुक सिर्फ़ परोसे जाने वाले खाने का स्वाद ले सकते हैं, अंदर होने वाली हर चीज़ रिकॉर्ड की जाती है और सजावट रोज़ाना बदली जाती है। आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि इसके मालिक के पास असीम धन और असीम उदारता है और इसे एक निश्चित अवधि के लिए बनाया गया था ताकि उसके स्थायी महलों में सभी यात्रियों के लिए तैयार किए जाने वाले असीम और अटूट भोज की लालसा को जगाया जा सके।

एक सच्चा इंसान समझता है कि यह दुनिया अपने लिए नहीं बनाई गई है और यह अपने आप में एक अंत नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जो जन्म से भर जाता है और मृत्यु से खाली हो जाता है। उदार भगवान इसके निवासियों को खुशी के क्षेत्र में आमंत्रित करते हैं। इसकी सजावट केवल अस्थायी आनंद प्रदान करती है, और उनके गायब होने पर दर्द से बदल जाती है, जिससे व्यक्ति की भूख [मूल के लिए] बढ़ जाती है। वे इस भूख को संतुष्ट नहीं कर सकते, क्योंकि वे और उनका आनंद लेने वाले दोनों ही थोड़े समय के लिए ही मौजूद रहते हैं। उन्हें इसलिए पेश किया जाता है ताकि यात्री चिंतन करें, धन्यवाद दें और शाश्वत मूल के लिए तरसें।

ये सजावटें सिर्फ़ उन नेमतों के नमूने हैं जो रहमदिल अल्लाह ने ईमानवालों के लिए जन्नत के बागों में जमा की हैं। ये क्षणभंगुर चीज़ें हमेशा के लिए खत्म होने के लिए नहीं बनाई गई हैं, बल्कि इन्हें उनके स्वरूप, अर्थ और उनके अस्तित्व के परिणामों के साथ कॉपी करने के लिए यहाँ इकट्ठा किया गया है। इनसे अनंत काल के लोगों के लिए अनंत दृश्य बुने जाएँगे, या जो उन्हें निरंतर परिवर्तनों के अधीन करता है, वह उनसे अनंत दुनिया में जो चाहेगा बना देगा।

• चेतन प्राणियों की स्मृतियाँ और पौधों के बीज इस ओर संकेत करते हैं
पुनरुत्थान और परलोक

यहाँ एक और प्रमाण है कि वे शाश्वत अस्तित्व के पक्षधर हैं, न कि शाश्वत विलुप्ति के, कि उनके स्पष्ट क्षय या विलुप्ति का अर्थ है यहाँ उनके कार्यों का अंत या उनके सांसारिक कर्तव्यों से उनका विमोचन। एक फूल पर विचार करें, दिव्य शक्ति का एक "शब्द" जो हमें बहुत कम समय के लिए देखता है और फिर चला जाता है। इसे एक बोला हुआ शब्द समझें जो ईश्वर की अनुमति से हज़ारों कानों तक जाता है और जिसका अर्थ असंख्य बुद्धिजीवियों द्वारा समझा जाता है। जब फूल मर जाता है, तो वह खुद को उन लोगों की यादों को सौंप देता है जिन्होंने इसे देखा है, और इसके रूप और अर्थ इसके बीजों को सौंप देते हैं। इस प्रकार फूल की स्मृति

जिन्होंने इसे देखा और प्रत्येक बीज एक अभिलेख की तरह बन जाता है जो अपने रूपों की सजावट को संरक्षित करता है और इसके स्थायित्व के लिए एक स्थान है। ऐसा तब तक किया जा सकता है जब तक कि शाश्वत आत्मा वाले प्राणियों तक नहीं पहुँच जाते।

• इस संसार का स्वामी सर्वरक्षक है

लोगों को अपनी मर्जी से कुछ भी करने के लिए नहीं छोड़ा गया है। बल्कि, उनके शब्दों और कामों को रिकॉर्ड किया जाता है, और उनके परिणामों को अंतिम गणना के लिए सुरक्षित रखा जाता है। निर्माता द्वारा वसंत की खूबसूरत चीजों को शरद ऋतु में नष्ट करने का मतलब है कि वे अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाते हैं और नई चीजों को अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए जगह देते हैं। यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी भी है जो इस दुनिया को बनाने वाले हैं, जो सर्वज्ञ और शाश्वत हैं, जो अपने बंदों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उनके लिए ऐसी चीजें तैयार करते हैं जो उनकी कल्पना से परे हैं।

इस वास्तविकता पर विचार करें कि इस संसार का स्वामी सर्वरक्षक है।
वह कुछ भी नहीं छोड़ता, तथा सब कुछ एक स्पष्ट पुस्तक में दर्ज और संरक्षित करता है।
दुनिया में जो संतुलन, व्यवस्था, सामंजस्य और माप दिखाई देता है, वह इस पुस्तक की कुछ पंक्तियाँ हैं। जो लोग अपना जीवन (और इसलिए अपने कर्तव्यों) को पूरा करते हैं और दृश्यमान, भौतिक दुनिया से विदा लेते हैं, वे अपना पूरा जीवन संरक्षित पट्टियों पर और अपने कर्मों को अपने परिणामों में सुरक्षित रखते हैं। सृष्टिकर्ता उन्हें दृश्यमान और अदृश्य दुनिया में विभिन्न "दर्पणों" में रखता है। ऐसा लगता है जैसे कि हम जो कुछ भी करते हैं, हम उन सजीव और निर्जीव संस्थाओं के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, जिनके साथ हमारा कुछ संबंध है, उसे रिकॉर्ड करने के लिए कई चीज़ों को ज़िम्मेदार ठहराया गया है।

हमारी यादों, पेड़ों के फलों और फलों और फूलों के बीजों को देखें, ताकि आप रिकॉर्ड करने और संरक्षित करने के नियम की व्यापकता को समझ सकें। इन प्राणियों का स्वामी अपनी संप्रभुता की गतिविधियों के बारे में असीम रूप से सावधान रहता है, और अपने राज्य में जो कुछ भी होता है उसे रिकॉर्ड करता है।

उनके आधिपत्य में सब कुछ इतना व्यवस्थित और मापा हुआ है कि वे सबसे तुच्छ घटना और [अपने सेवकों की] सबसे छोटी सेवा को भी रिकॉर्ड करते हैं (या रिकॉर्ड कर चुके हैं)। इस तरह के रिकॉर्ड और संरक्षण के लिए अंतिम गणना की आवश्यकता होती है। यह मानवता द्वारा किए गए व्यापक कार्यों के लिए विशेष रूप से सच है, जो प्राणियों में सबसे महान और सबसे सम्माननीय है, जो दिव्य आधिपत्य के सभी कार्यों का गवाह है, बहुलता के क्षेत्र में दिव्य एकता का अग्रदूत है, और प्राणियों के गौरव का अवलोकन करता है। इस और असंख्य अन्य गुणों के कारण, हमें दिव्य ट्रस्ट से सम्मानित किया गया है - स्वतंत्र इच्छा, ज्ञान, भाषण और दिव्य धर्म से प्रतिष्ठित मानव स्व - और पृथ्वी पर ईश्वर की प्रतिनियुक्ति।

• मनुष्य को जो सम्मान और विशिष्टता प्रदान की जाती है, उसके लिए यह आवश्यक है कि उसके कार्यों को दर्ज किया जाए और संरक्षित किया जाए

यह सम्मान और विशिष्टता हमें बुलाए जाने से मुक्त नहीं करती है
क्या मानवता सोचती है कि उसे अपनी मर्जी से घूमने के लिए छोड़ दिया जाएगा, कि उसे
(75:36) हर एक व्यक्ति को उसके पापों का भी हिसाब देना होगा ।
सर्वोच्च समागम स्थल और शाश्वत संसार में सबसे छोटा कार्य।
संसार का नाश करना, मरे हुओं को जीवित करना, और न्याय के लिये उन्हें इकट्ठा करना
दिव्य शक्ति के लिए सभा स्थल पर जाना उतना ही आसान है जितना वसंत और
शरद ऋतु। सभी पिछली घटनाएं, जो उसकी शक्ति के चमत्कार हैं, इस बात की गवाही देती हैं कि
वह जो चाहे कर सकता है और भविष्य में जो करने का वादा करता है, कर सकता है।

इस संसार के स्वामी और शासक ने अपने प्राणियों और सेवकों के लिए अनंत महत्व की कोई चीज़
बनाने का बार-बार वादा किया है। वादा तोड़ना उसकी शक्ति की गरिमा और महिमा और उसके आधिपत्य
की दया के विरुद्ध होगा,
क्योंकि ऐसा कृत्य अज्ञानता, अक्षमता या नपुंसकता से उत्पन्न होता है, जो सभी
पूर्ण ज्ञान और शक्ति के साथ एक में मौजूद नहीं हो सकता। कई क्रांतियों के माध्यम से और उसके सभी
उद्यानों के साथ दूसरी दुनिया का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना कि
उसे वसंत ऋतु के साथ-साथ उसके सभी बगीचों और परिवर्तनों का सृजन करने वाला माना जाता है। उसके
वादे पर सभी पैगम्बरों और आम सहमति से सहमति जताई गई है और इसकी पुष्टि की गई है
सभी शुद्ध, सटीक विद्वान। उनके वादे की ताकत सुनो: भगवान - वहाँ
उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह तुम्हें क़ियामत के दिन तक इकट्ठा करेगा, जिसके विषय में कोई बात नहीं
इसमें कोई संदेह नहीं है। अल्लाह से बढ़कर सच्चा समाचार कौन दे सकता है? (4:87) किन्तु जो लोग ऐसा नहीं करते,
उसके वचन की पुष्टि करो जिसकी सच्चाई सभी प्राणियों द्वारा प्रमाणित है,
और ब्रह्मांड द्वारा अपने स्पष्ट संकेतों के माध्यम से इसकी पुष्टि की जाती है, इस पर भरोसा किया जाना चाहिए
भ्रम, झूठ और शैतान के भ्रामक शब्दों और झूठ पर हम शरण चाहते हैं
परमेश्वर पर भरोसा रखें, ताकि वे बिना किसी सच्चे सहायक के रह जाएं, तथा शारीरिक स्वार्थ और शैतान की बुराइयों से बच सकें।

- इस क्षणभंगुर संसार में देखी जाने वाली प्रभुता और संप्रभुता,
  अनन्त संसार

यहाँ, हम एक शानदार, शाश्वत प्रभुत्व की अभिव्यक्तियाँ देखते हैं
और एक स्थायी और शानदार संप्रभुता के कार्य। भव्यता पर विचार करें
इस प्रभुता के स्वामी का। वह हमेशा बदलती रहने वाली पृथ्वी को, जो उसके अधीन है, मरवाता है और फिर
उसे वापस जीवन देता है, उसका प्रबंधन करता है और उसका निर्देशन करता है। वह
सूर्य और उसके उपग्रहों का प्रबंधन करता है, जो सभी उसकी शक्ति के अधीन हैं,
और सम्पूर्ण सूर्य-केन्द्रित प्रणाली को गतिमान करता है।

यह भव्य शाश्वत प्रभुत्व और व्यापक शाश्वत
संप्रभुता, जो अपने भयानक कार्यों से बुद्धिजीवियों को आश्चर्यचकित कर देती है, कभी भी नष्ट नहीं हो सकती।
इस परिवर्तनशीलता से संबंधित सदैव बदलते क्षणिक मामलों तक सीमित,
क्षणभंगुर दुनिया। इस प्रभुता के मंडपों में, यह दुनिया एक क्षणभंगुर दुनिया है।

परीक्षण का क्षेत्र, प्रदर्शन का स्थान। इसे एक नियत समय पर नष्ट कर दिया जाएगा, और फिर इसे अनन्त महलों की नींव में बदल दिया जाएगा, जहाँ इसके निवासियों को स्थानांतरित कर दिया जाएगा।

इस परिवर्तनशील, अस्थाई संसार के स्वामी ने एक और शाश्वत संसार तैयार किया है। प्रबुद्ध बुद्धि, प्रकाशित हृदय और प्रकाशित आत्मा वाले, जिन्होंने सृष्टि और वस्तुओं की आंतरिक वास्तविकता को खोज लिया है और इस प्रकार महिमावान ईश्वर से निकटता प्राप्त कर ली है, उन्होंने हमें बताया है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आज्ञाकारियों के लिए पुरस्कार का निवास और विद्रोहियों के लिए दंड का निवास तैयार किया है। उसने इन निवासों का वादा किया है और चेतावनी दी है, और वह अपना वादा नहीं तोड़ता या अपनी चेतावनी को रद्द नहीं करता। नबियों, संतों और शुद्ध, सटीक विद्वानों के अलावा जिन्होंने इस जानकारी को हमारे साथ साझा किया है, इन मामलों के विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि यह जानकारी, जो ब्रह्मांड के संकेतों से पुष्ट होती है, सत्य है। क्या इससे अधिक सत्य कोई और जानकारी हो सकती है?

दुनिया भर में पुनरुत्थान के नमूने प्रदर्शित

इस दुनिया का मालिक लगातार इस संकीर्ण, क्षणभंगुर पृथ्वी में सर्वोच्च सभा के स्थान के कई नमूने प्रदर्शित करता है। वसंत के हर "पुनरुत्थान" में पृथ्वी के तेज होने पर विचार करें, जिसके दौरान पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरण एक छोटी अवधि, लगभग 6 दिनों के भीतर पूर्ण क्रम के साथ होते हैं।

देखिए कि कैसे असंख्य पौधे और जानवर, मृत या लगभग मृत अवस्था में, या तो मिट्टी पर या मिट्टी के नीचे और एक दूसरे के साथ मिश्रित होकर, पूर्ण विशिष्टता के साथ पुनर्जीवित हो जाते हैं। ऐसा करने वाले को कोई भी चीज़ कैसे थका सकती है? वह “6 दिनों” में आकाश और पृथ्वी का निर्माण करने में असमर्थ क्यों है? मृतकों का पुनरुत्थान पलक झपकते ही क्यों नहीं हो सकता?

• दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, वह अपने आप में अंत नहीं है

वह जो एक ही पृष्ठ पर अनगिनत पुस्तकें लिखता है - पृथ्वी का चेहरा, बिना किसी भ्रम या गलती के, स्पष्ट रूप से एक पुस्तक को फिर से लिख सकता है जिसे उसने पहले लिखा था और नष्ट कर दिया था। इच्छित अर्थ को समझने के लिए, इस पर विचार करें: ईश्वर की दया के छापों को देखें, कैसे वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद जीवन देता है; वह मृतकों को पुनर्जीवित करता है, और वह हर चीज पर शक्तिशाली है (30:50)।

सृष्टि के सर्व-दयालु और सर्वशक्तिमान भगवान होने के नाते उनके द्वारा अपेक्षित सभी ऐसे कार्य दर्शाते हैं कि ये घटनाएँ (मिलना और अलग होना) अपने आप में अंत नहीं हैं। इन महत्वपूर्ण "त्योहारों" और समारोहों और उनके विशेष, अस्थायी के बीच कोई स्वीकार्य, उचित संबंध नहीं है

इतने कम, सीमित समय में परिणाम। इसलिए वे केवल अपने परिणामों के साथ संरक्षित किए जाने वाली प्रतियां हैं, ताकि वे सर्वोच्च सभा के स्थान पर होने वाली घटनाओं के लिए आधार के रूप में काम कर सकें, और ताकि ये क्षणभंगुर चीजें शाश्वत रूप, शाश्वत फल और शाश्वत अर्थ उत्पन्न कर सकें। इसलिए, यह दुनिया पुनरुत्थान के दिन कटाई के लिए बोने के लिए एक कृषि योग्य क्षेत्र से अधिक कुछ नहीं है, एक भंडार जो स्वर्ग और नरक में खाली हो जाएगा।

• बुद्धि, अनुग्रह, दया और न्याय के लिए परलोक की आवश्यकता होती है

विचार करें कि शाश्वत प्रभु और शाश्वत सम्राट इस क्षणभंगुर दुनिया में अपनी बुद्धि, कृपा, न्याय और दया के कार्यों और निशानों को कैसे प्रदर्शित करते हैं। वह ऐसा इस हद तक करता है कि खुली आँखों और बिना मुहर वाले दिल वाला कोई भी व्यक्ति यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि उससे अधिक परिपूर्ण कोई बुद्धि नहीं हो सकती, उससे अधिक अनुग्रहपूर्ण कोई कृपा नहीं हो सकती, उससे अधिक व्यापक कोई दया नहीं हो सकती और उससे अधिक महिमामंडित कोई न्याय नहीं हो सकता। ये सभी कार्य और निशान इस बुद्धि, कृपा, दया और न्याय के सत्य को प्रकट करने के साधन हो सकते हैं।

यदि उसके राज्य में हमेशा के लिए रहने वाले लोगों के साथ कोई स्थायी ऊंची इमारतें नहीं होतीं, तो उसकी बुद्धि, कृपा, दया और न्याय को नकारना पड़ता। इसके लिए हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि जो अपनी बुद्धि, दया, कृपा और न्याय से उत्पन्न इन सभी चीजों को करता है, वह - भगवान ऐसा विचार न करे! - एक सनकी चालबाज और एक निर्दयी तानाशाह है। हमें सत्य को उनके विपरीत में बदलना होगा, एक ऐसा कार्य जिसे ठोस तर्क वाले लोग (सोफिस्टों को छोड़कर, जो खुद सहित हर चीज के अस्तित्व को नकारते हैं) असंभव कहते हैं।

* * *

पुनरुत्थान के पक्ष में तर्क केवल ऊपर दिए गए तर्कों तक सीमित नहीं हैं।
कुरान इसके असंख्य संकेतों की ओर इशारा करता है; कहता है कि हमारा निर्माता हमें इस क्षणभंगुर प्रदर्शनी स्थान से अपने शाश्वत प्रभुत्व के आसन पर स्थानांतरित करेगा; और अनगिनत संकेत देता है कि वह इस क्षणभंगुर, क्षणभंगुर क्षेत्र को शाश्वत क्षेत्र में बदल देगा। साथ ही, पुनरुत्थान और अगले जीवन की मांग करने वाले दिव्य नाम केवल सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-संरक्षणकर्ता तक ही सीमित नहीं हैं, क्योंकि ब्रह्मांड के प्रशासन में प्रकट सभी नाम इसकी मांग करते हैं।

संक्षेप में: पुनरुत्थान के तथ्य पर सर्व-महिमावान परमेश्वर सहमत है।
एक उसकी कृपा, सौंदर्य, महिमा और अन्य सभी नामों के माध्यम से; कुरान द्वारा, जिसमें पैगंबरों की सभी पुस्तकें हैं; पैगंबर मुहम्मद द्वारा, सबसे अधिक

सृष्टि का पूर्ण सदस्य और वह जो पैगम्बरों, भविष्यद्वक्ताओं, सृष्टि के पीछे छिपी वास्तविकताओं के खोजकर्ताओं की सहमति का अर्थ रखता है
चीजों और घटनाओं; संतों और शुद्ध, सटीक विद्वानों और सत्यवादियों द्वारा, जिनके पास शुद्ध, उन्नत और प्रकाशमान आत्माएं हैं; और
ब्रह्माण्ड और उसके सभी चिन्ह।

ब्रह्मांड में सभी चीजों के, बिना किसी अपवाद के, दो पहलू हैं। पहला अपने सृष्टिकर्ता से संबंधित है और उसकी अनेक “भाषाएँ” हैं, जिनमें से सभी दिव्य एकता की गवाही दें। दूसरा प्रत्येक आइटम के साथ जुड़ा हुआ है अंतिम उद्देश्य और परलोक, और इसमें कई ईश्वर प्रदत्त "भाषाएँ" हैं दूसरी दुनिया और अंतिम दिन की गवाही दें। उदाहरण के लिए, जैसे आपका सृष्टि के सर्वोत्तम प्रतिरूप के रूप में अस्तित्व आवश्यक अस्तित्व और आपके निर्माता की एकता, बहुत व्यापक होने के बावजूद आपकी तीव्र गिरावट क्षमता, महान प्रतिभा, और एक खुश अनंत जीवन के लिए अतृप्त इच्छाओं अंक परलोक के लिए।

दिव्य बुद्धि, दिव्य अनुग्रह की सर्व समावेशी सजावट और प्रावधान, उनकी दया की सर्वव्यापी उदारता, उनका समग्र न्याय और व्यापक तथा सावधानीपूर्वक संरक्षण सार्वभौमिक व्यवस्था स्थापित करते हैं।
सर्वज्ञ, सर्वदयाशील, सर्वकरुणामय, सर्वन्यायी और सर्वरक्षक रचयिता की ओर संकेत करें, तथा परलोक की सच्चाई, क़यामत के निकट आने की सच्चाई को प्रदर्शित करें।
और आसन्न आगमन, और शाश्वत खुशी की प्राप्ति।

हे ईश्वर, हमें भी अनंत सुख के लोगों में शामिल कर। पुनर्जीवित कर।
और हमें सदा सुखी, समृद्ध लोगों के समूह में एकत्रित करें
अपने चुने हुए पैगंबर की मध्यस्थता के माध्यम से, हमें स्वीकार करें
पवित्र और पुण्यवान लोगों की संगति में स्वर्ग। अपने चुने हुए पैगम्बर और उनके परिवार पर अपनी इच्छानुसार आशीर्वाद और शांति प्रदान करें।
वह एक पवित्र, आदरणीय व्यक्ति होने के कारण दया और सम्मान का पात्र है, और
हमें और हमारे धर्म को शांति और सुरक्षा में रखें। आमीन। सभी की प्रशंसा हो
हे परमेश्वर, जगत के स्वामी!

समाप्त करने के लिए:

• प्रकृतिवाद और कार्य-कारण के प्रति हठधर्मिता, सृष्टिकर्ता के प्रति आभार प्रकट करने के द्वार को बंद कर देती है और उसके साथ भागीदार बनाने की ओर ले जाती है। • हर चीज के दो पहलू होते हैं: उसका संवेदी, भौतिक रूप या शरीर जो निर्धारित होता है इसके निर्धारित कार्यों और उद्देश्यों, तथा इसके अमूर्त पहलू से,
• केवल ईश्वर ही सभी प्राणियों को उनके उचित वस्त्र पहना सकता है। • किसी प्रजाति के सदस्य का उसकी विशेष प्रजाति के साथ संबंध, अर्थात, किसी भी प्रजाति के सदस्य का उसके जीवन काल में धारण किए जाने वाले सभी रूपों का संबंध।
सभी प्रजातियों का अन्य सभी प्रजातियों के साथ संबंध, तथा सभी प्रजातियों का अन्य सभी प्रजातियों के साथ संबंध

अन्य प्रजातियाँ, समय और दूरी के बावजूद, अस्तित्व और एकता को प्रकट करती हैं
एक सर्वज्ञ, सर्व-इच्छुक, सर्वशक्तिमान और सर्व-बुद्धिमान सृष्टिकर्ता का। • जिस प्रकार सूर्य को प्रकाश फैलाना पड़ता है, उसी प्रकार ईश्वर भी स्वयं को भेजकर प्रकट होता है
संदेशवाहक.

• सर्वशक्तिमान का असीम न्याय, उदारता, दया, कृपा, उदारता,
गरिमा, महिमा, अभिलेखन और संरक्षण के लिए एक नए संगठन की स्थापना की आवश्यकता होती है।
अनंत दुनिया जहाँ हर कोई अपने किए का परिणाम देखेगा
इस दुनिया में.

• संक्षेप में: पुनरुत्थान की सच्चाई पर ईश्वर और उनके अनुयायियों द्वारा सहमति व्यक्त की गई है।
नाम, कुरान, संत और शुद्ध एवं सटीक विद्वान, और
पैगम्बर द्वारा।

चौथा ग्रंथ

चौथा ग्रंथ

ईश्वरीय एकता के [प्रमाणों] सागर से एक बूंद

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है और आशीर्वाद उसके पैगम्बर पर हो।

परिचय

K अब, हे मित्र, मेरे जीवन के 40 वर्षों और मेरे अध्ययन के 30 वर्षों के दौरान , मैंने चार शब्द या वाक्यांश और चार वाक्य सीखे हैं [जिनमें से प्रत्येक एक सामान्य नियम है]: एक अक्षर की तरह होना, संपूर्ण का संकेत या खुद की बजाय दूसरों की ओर इशारा करना; एक शब्द की तरह होना, खुद की ओर इशारा करना या उसका प्रतिनिधित्व करना; इरादा; और दृष्टिकोण।33 दूसरे शब्दों में, सब कुछ (भगवान को छोड़कर) केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर के संदर्भ में माना जाना चाहिए, न कि अपने स्वयं के संदर्भ में।

ब्रह्मांड को अपने या भौतिक कारणों के संदर्भ में देखना गलत है। हर चीज के दो पहलू होते हैं: एक सृष्टिकर्ता की ओर इशारा करता है, दूसरा सृष्टि की ओर इशारा करता है। कोई भी सृजित प्राणी

---

[33] किसी शब्द या वाक्य में, एक अक्षर अपने आप को नहीं, बल्कि अन्य चीज़ों के अर्थों को इंगित करता है। एक शब्द अर्थ में खुद को इंगित करता है। किसी चीज़ को इस दृष्टिकोण से देखना कि कोई अक्षर क्या दर्शाता है, या सृष्टिकर्ता के कारण, इसका अर्थ है इसे एक "दर्पण" मानना जो उस पर प्रकट ईश्वर के नाम और गुणों को दर्शाता है। किसी चीज़ को इस दृष्टिकोण से देखना कि कोई शब्द क्या दर्शाता है, इसका अर्थ है इसे अपने कारण या उसके कारण से देखना। (ट्र.)

इसके पहले पहलू के संबंध में विचार किया जाना चाहिए, जो कि सर्वशक्तिमान निर्माता का संकेत है। उदाहरण के लिए, किसी भी इनाम या आशीर्वाद को ईश्वरीय उपहार या इनाम देने के ईश्वरीय कार्य से जोड़ा जाना चाहिए। संबंधित साधनों और कारणों को ईश्वरीय शक्ति के प्रबंधन या प्रशासन को दर्शाने वाले "दर्पण" के रूप में देखा जाना चाहिए।

इसी तरह, इरादा और दृष्टिकोण चीज़ों की प्रकृति को बदल देते हैं और जैसे अमृत मिट्टी को सोने में बदल देता है, वैसे ही अच्छे इरादे और सही दृष्टिकोण बुरे कामों को अच्छे कामों में बदल देते हैं। इरादा हमारे रोज़मर्रा के, साधारण कामों को पूजा के कामों में बदल देता है और दृष्टिकोण विज्ञान को ईश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने का साधन बनने देता है। अगर वैज्ञानिक निष्कर्षों को भौतिक कारणों और साधनों के संदर्भ में माना जाता है, तो वे अज्ञानता का साधन बन जाते हैं; अगर उन्हें ईश्वर के संदर्भ में या उसके कारण माना जाता है, तो वे ईश्वर का ज्ञान उत्पन्न करते हैं।

चार वाक्य इस प्रकार हैं:

पहला वाक्य: मैं न तो खुद का मालिक हूँ और न ही खुद का स्वामी। जो मेरा मालिक है, वह सृष्टि का मालिक है, जो महान और उदार है। मैं अपने मालिक के गुणों को तुलना करके समझने के लिए कल्पना करता हूँ कि मैं खुद का मालिक हूँ। मैं अपनी सीमाओं [शक्ति, गुण, क्षमता, आदि] के माध्यम से अनंत को समझता हूँ। "जब सूरज उगता है और सुबह होती है, तो तारे अस्त हो जाते हैं।"

दूसरा वाक्य: मृत्यु अवश्यंभावी है। यह जीवन और शरीर संसार की नींव नहीं हो सकते। चूंकि शरीर मांस, रक्त और हड्डियों से बना है, जो अंततः विघटित हो जाएगा, इसलिए किसी का जीवन और शरीर शाश्वत नहीं हो सकता। ऐसी ढीली नींव और सड़ते हुए सहारे पर इच्छाओं और कल्पनाओं के साथ दुनिया जितना बड़ा "महल" कैसे बनाया जा सकता है?

तीसरा वाक्य: मेरा भगवान एक है। एक भगवान के प्रति समर्पण से ही सुख की प्राप्ति होती है। अगर ऐसा न होता, तो सभी को उतने ही परस्पर विरोधी भगवानों की आवश्यकता होती, जितनी कि ब्रह्मांड में मौजूद इकाईयाँ हैं। चूँकि मानव स्वभाव व्यापक है, इसलिए मनुष्य को लगभग हर चीज़ की ज़रूरत होती है और वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। चाहे सचेत रूप से हो या अनजाने में, वे उन सभी से प्रभावित होते हैं और उनके कारण पीड़ित होते हैं। यह एक नारकीय स्थिति है। दूसरी ओर, उस एक भगवान का ज्ञान और पहचान, जिसकी शक्ति के सामने वे सभी कल्पित या कथित भगवान एक पतले पर्दे के समान हैं, एक स्वर्गीय स्थिति है।

चौथा वाक्य: अहंकार एक काला बिन्दु है, एक तुलना बिन्दु है [ईश्वर को जानने और पहचानने के लिए] जो एक सचेतन कलात्मकता के "धागों" से गुँथा हुआ है। यह दर्शाता है कि इसका स्वामी स्वयं से भी अधिक इसके निकट है।

इन वाक्यों की व्याख्या प्रथम अध्याय के निष्कर्ष में की गई है।

पहला अध्याय

यह [विश्वास के पेशे] के बारे में है: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारे संसार के पालनहार की स्तुति हो, और शांति और आशीर्वाद हो
रसूलों के स्वामी, उनके परिवार और उनके साथियों पर।

मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, जिसकी अनिवार्यता
अस्तित्व और पूर्ण गुण, और जिनकी एकता, एकता,
एकता, और सभी का शाश्वत-प्रार्थना-होना निर्णायक हैं
निम्नलिखित तर्कों द्वारा स्थापित:

पैगम्बर ईश्वर की महिमा का प्रथम प्रमाण हैं।
अस्तित्व और एकता

प्रथम, सर्वोपरि, तथा सर्वसम्मति से पुष्टि किया गया सत्य गवाह, तथा
स्पष्ट, सत्यापित प्रमाण पैगंबर और रसूलों का स्वामी, नेता है
सभी संतों और ईश्वर-चेतना विद्वानों का। वह ईश्वर के अस्तित्व और एकता की पुष्टि और उस पर सभी की आम सहमति का अर्थ रखता है
नबियों, रसूलों, संतों और विद्वानों। उसके पास स्पष्ट निशानियाँ हैं [जो गवाही देती हैं कि
उनकी नबी होने की मान्यता] तथा अनेक चमत्कारों की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई तथा उन्हें साथियों, बाद की पीढ़ियों तथा विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा प्रसारित किया गया।

उसके पास उच्च, प्रशंसनीय गुण और उत्तम, सराहनीय नैतिकता है। वह है
वह केंद्र जिस पर दिव्य रहस्योद्घाटन केंद्रित है, अदृश्य में यात्री
वह आत्माओं को देखता था और फ़रिश्तों से बात करता था, और मानवता और जिन्न का मार्गदर्शक था। अपने व्यक्तित्व के माध्यम से, वह प्रदर्शित करता है कि वह सबसे प्रिय है
ब्रह्मांड के निर्माता, सृष्टि द्वारा साझा की गई सभी पूर्णता का अवतार। उनके द्वारा लाया गया कानून खुशी के सभी सिद्धांतों को समाहित करता है, जो साबित करता है
यह ब्रह्मांड के व्यवस्थाकर्ता द्वारा स्थापित व्यवस्था है। वह हमारा गुरु है जो हमें विश्वास की ओर मार्गदर्शन करता है:
मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला इब्न अब्दुल मुत्तलिब,
उस पर सबसे अच्छा आशीर्वाद और सबसे पूर्ण शांति हो।

सभी गवाहों के मुखिया के रूप में, वह हमें इस दृश्यमान, भौतिक दुनिया में सूचित करता है
वह अदृश्य दुनिया में जो कुछ देखता है, उसका वर्णन करता है। शुभ समाचार देने वाले और चेतावनी देने वाले के रूप में, वह अपनी पूरी आवाज़ और पूरी आवाज़ के साथ सभी को सूचित करता है।
उसकी शक्ति, पूर्ण ईमानदारी और अत्यंत विश्वसनीयता, और असीम विश्वास और पूर्ण विश्वास, और समय या स्थान की परवाह किए बिना, कि कोई ईश्वर नहीं है
परन्तु परमेश्वर.

कुरान ईश्वर की महिमा का दूसरा प्रमाण है। अस्तित्व और एकता

कुरान ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकत्व का एक और गवाह है, उसकी महिमा, सुंदरता, अनुग्रह और पूर्णता का व्याख्याकार है। इसमें सभी पैगम्बरों को भेजे गए सभी स्वर्गीय शास्त्रों की सर्वसम्मति का अर्थ है, साथ ही सभी संतों और प्रामाणिक एकेश्वरवादी विद्वानों की पुस्तकों की सर्वसम्मति का अर्थ भी है।34 जिन लोगों के पास ठोस तर्क और विवेक है, और जो वास्तव में प्रबुद्ध बुद्धि हैं, उन्होंने कुरान की आज्ञाओं की पुष्टि की है, जो सभी पहलुओं में ज्ञानवर्धक है।

कुरान ईश्वर का वचन है। ईश्वरीय रहस्योद्घाटन, प्रेरणा और छिपे हुए सत्यों को उजागर करने की क्षमता से सम्मानित लोग पुष्टि करते हैं कि यह शुद्ध रहस्योद्घाटन, शुद्ध मार्गदर्शन और सभी सत्यों को समाहित करने वाला विश्वास का स्रोत है। यह खुशी की ओर ले जाता है और लगातार उत्तम फल देता है। फ़रिश्ते, अनगिनत लोग और जिन्न ने इसे स्वीकार किया और अपनाया है। तर्क, बुद्धि, सही निर्णय और विवेक वाले लोग इस बात से सहमत हैं कि कुरान तर्कसंगत प्रमाणों और अच्छे चरित्र और स्वभाव की गवाही के साथ पुष्टि की गई है। यह एक शाश्वत चमत्कार है, अदृश्य की जीभ है, और दृश्यमान, भौतिक दुनिया में इस तथ्य की गवाही देती है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

यह महान पुस्तक (ब्रह्मांड की), अपने सभी अध्यायों, खंडों, पृष्ठों, पंक्तियों, वाक्यों और अक्षरों के साथ ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता, और उनकी महिमा, सौंदर्य, अनुग्रह और पूर्णता के गुणों की गवाही देती है। यह इस वृहद मानव प्राणी (ब्रह्मांड) के लिए भी सत्य है, जिसमें इसकी सभी प्रणालियाँ, अंग, कोशिकाएँ, परमाणु, विशेषताएँ और अवस्थाएँ हैं।

अपने संसारों और क्षेत्रों के माध्यम से यह कहता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और उन संसारों के मुख्य घटकों के माध्यम से यह कहता है कि उसके अलावा कोई रचयिता नहीं है। उन घटकों के भागों के माध्यम से यह कहता है कि उसके अलावा कोई निर्माता नहीं है, और उन भागों के घटकों के माध्यम से यह कहता है कि उसके अलावा कोई निर्देशक नहीं है।
उन घटकों के तत्वों के माध्यम से यह कहता है कि उसके अलावा कोई निश्चित रूप और स्वभाव देने वाला नहीं है, और उन तत्वों की कोशिकाओं के माध्यम से यह कहता है कि उन्हें व्यवस्थित करने और निपटाने की आवश्यक शक्ति के साथ उसके अलावा कोई नहीं है। उन कोशिकाओं के परमाणुओं या सूक्ष्मतम कणों के माध्यम से यह कहता है कि उसके अलावा कोई निर्माता नहीं है,

---

34 सर्वसम्मति का अर्थ: प्रभाव, समर्थन, पुष्टि कि पिछले शास्त्रों में निहित सभी दिव्य सत्य कुरान में पाए जाते हैं और इसकी सत्यता की पुष्टि करते हैं। सर्वसम्मति से सहमति का अर्थ: संतों और विद्वानों की पुस्तकों में निहित सभी सत्य कुरान से प्राप्त हुए हैं, और इसलिए इसके दिव्य लेखकत्व या उत्पत्ति को साबित करते हैं। (ट्र.)

और ईथर के महासागर के माध्यम से जिसमें सभी परमाणु या कण “बोए” जाते हैं
इसमें कहा गया है कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

संक्षेप में: ब्रह्मांड, अपनी सभी प्रजातियों, दुनियाओं, क्षेत्रों, घटकों के साथ,
भागों, घटकों, परमाणुओं और ईथर, 55 भाषाओं में शाश्वत की गवाही देते हैं
डिज़ाइनर का आवश्यक अस्तित्व और एकता.

ब्रह्माण्ड ईश्वर की सत्ता का तीसरा प्रमाण है। अस्तित्व और एकता

नीचे उन 55 भाषाओं के बारे में बताया गया है। हालाँकि, पहले हम बताएँगे
उन्हें संक्षेप में: अपने

अलग-अलग भागों और सुव्यवस्थित यौगिकों की भाषाओं और अपने जीवित प्राणियों की गरीबी और दरिद्रता के माध्यम से, ब्रह्मांड
अपने सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता का साक्ष्य देता है।
आदि अनादि सृष्टिकर्ता। सुव्यवस्थित परिस्थितियों या अवस्थाओं के माध्यम से, इसके अद्भुत और परिपूर्ण रूपों और इसके विशिष्ट और अलंकृत डिजाइनों के माध्यम से,
ब्रह्मांड उसकी पूर्णता के गुणों की ओर संकेत करता है। इसके द्वारा किए जाने वाले महान उद्देश्य, इसके द्वारा उत्पन्न महान लाभ, इसके द्वारा उत्पन्न असाधारण विविधता के माध्यम से
प्रदर्शित करता है, और यह जो सुव्यवस्थित समानताएँ प्रदर्शित करता है, ब्रह्मांड उनके सर्व-सुंदर नामों का उल्लेख और पाठ करता है। आदेश की भाषाओं के माध्यम से
और उसके सम्पूर्ण और भागों में देखी गई उत्तम मात्रा, उसमें प्रकट की गई उत्तम व्यवस्था और नियमितता, तथा प्रत्येक वस्तु में देखी गई दृढ़ और दोषरहित कलात्मकता, ब्रह्माण्ड उसकी स्तुति करता है।

विभिन्न निर्जीव वस्तुओं के बीच पारस्परिक सहायता, असमान और भिन्न वस्तुओं के बीच एकजुटता, सार्वभौमिक ज्ञान की भाषाएँ
और पूर्ण अनुग्रह, व्यापक दया, सर्वव्यापी प्रावधान,
और सर्वव्यापी जीवन, ब्रह्मांड कुरान की आयतों की व्याख्या करता है।
सुंदरता और सुंदर बनाने की भाषा, हर जगह प्रकट होने वाली कृपा, सच्चा प्यार, आकर्षण और आकर्षित होना, और प्रकृति का दिव्य गुण
सत्य की छाया, ब्रह्मांड इस्लाम के प्रकाश की चमक में योगदान देता है।

कुछ उद्देश्यों के लिए कार्य करने की भाषाओं के माध्यम से,
इकाई या प्राणी अपने जीवनकाल के दौरान कुछ लाभों के लिए परिवर्तित होता है, और कुछ लाभों के लिए परिवर्तित होता है
ज्ञान के कुछ उदाहरण, कुछ उद्देश्यों के लिए बारी-बारी से, और आदेश और
पूर्णता की व्यवस्था करते हुए, ब्रह्मांड कुरान की आयतों की व्याख्या करता है।
इसकी आकस्मिकता और शुरुआत की भाषाएँ; इसकी ज़रूरतें,
गरीबी और अभाव; उसकी लाचारी, मृत्यु, अज्ञानता और क्षणभंगुरता

यह एक ऐसी चीज है जो हमेशा बदलती रहती है और जिसका अंतिम विनाश होता रहता है।
फिर से, ब्रह्माण्ड परमेश्वर की शक्ति की घोषणा करता है।

इसकी पूजा, महिमा, प्रार्थना और शरण मांगने के कार्यों और रूपों की भाषाओं के माध्यम से, और इसके सभी व्यक्तिगत भागों के साथ
और यौगिक, ब्रह्मांड शिखर सम्मेलन के लिए समर्पण को मजबूत करता है
पैगंबरी, तथा अनिवार्यतः विद्यमान एक और एकल सत्ता में विश्वास।
ऐसी सभी भाषाओं में और शाश्वत शब्द के आदेश के तहत और सभी प्राणियों के स्वामी की अध्यक्षता में, मुख्य रूप से संदेशवाहकों सहित,
ब्रह्माण्ड घोषणा करता है: ईश्वर, उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, वह सर्वव्यापी, स्वयंभू और पालनकर्ता है।

ब्रह्मांड निम्नलिखित ५५ भाषाओं में इस सत्य को प्रकट करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है :
१. समग्र रूप से और

अपने सभी भागों के साथ, ब्रह्मांड एक स्पष्ट अस्तित्व प्रदर्शित करता है।
इसके अलग-अलग हिस्सों के बीच व्यवस्था और असाधारण सामंजस्य। यह इस ओर इशारा करता है
उसका आवश्यक अस्तित्व जिसके शक्तिशाली हाथ ने ब्रह्मांड को थाम रखा है,
और इस सार्वभौमिक व्यवस्था की भाषा में गवाही देता है कि कोई ईश्वर नहीं है
परन्तु परमेश्वर.

2. सब कुछ इतना सटीक और आनुपातिक है कि यह घोषणा करता है
कि परमेश्वर के सिवा कोई ईश्वर नहीं, जिस ने यह नाप ठहराया और सब वस्तुएं बनाईं
अनुपात और एक दूसरे के साथ बिल्कुल अनुरूप।

3. प्रदर्शित सामंजस्य, व्यवस्था और नियमितता यह दर्शाती है कि अलग-अलग हाथ इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं, और इस भाषा में घोषणा करते हैं
सामंजस्य, व्यवस्था और नियमितता कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

4. प्रदर्शित कला और डिजाइन इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि
डिजाइन और सजाया गया यह भी इसका मालिक है, और भाषा में गवाही देता है
यह कला और डिजाइन कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

5. भाग्य की कलम द्वारा प्रत्येक वस्तु में, प्रत्येक की क्षमता के अनुसार प्रदर्शित कला की पूर्णता यह दर्शाती है कि कलम एक है और
घोषणा करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

6. सभी चीजों के बीच आपसी संबंध और प्रत्येक में प्रदर्शित दोषरहित कलात्मकता यह प्रदर्शित करती है कि जिसने आकाश के पृष्ठ को लिखा है
सितारों और सूरज के साथ वह है जो मधुमक्खी और चींटी के पन्नों को लिखता है
अपनी कोशिकाओं के साथ। अपने सभी प्राणियों की भाषा में, ब्रह्मांड इस बात की गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

7. हम देखते हैं कि निर्जीव वस्तुएँ भी, चाहे एक दूसरे से कितनी ही दूर क्यों न हों
एक दूसरे की सहायता करें, बुद्धिमानीपूर्ण उद्देश्यों के लिए। उदाहरण के लिए, [वाष्पीकृत पानी गिरता है

पृथ्वी पर इसे "पुनर्जीवित" करने के लिए, और] मक्का और फल मानव कोशिकाओं के लिए पोषण बन जाते हैं। इस पारस्परिक सहायता की भाषा में, ब्रह्मांड गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

8. सूर्य और ग्रहों के बीच, जो इसके "फल" हैं, अलग-अलग, दूर की वस्तुओं के बीच एकजुटता है। यह एकजुटता दर्शाती है कि जो कुछ भी मौजूद है वह केवल एक ही सत्ता के आदेश और नियंत्रण में है। इस एकजुटता की भाषा में, ब्रह्मांड यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

9. कुछ चीज़ों के बीच समानता, जैसे कि सितारों के बीच, एक और भाषा है जिसमें ब्रह्मांड घोषणा करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

10. कुछ चीज़ों, जैसे कि फूलों, के बीच का अनुपात यह दर्शाता है कि जो कुछ भी मौजूद है वह एक ही मालिक का है और एक ही शक्ति द्वारा नियंत्रित है। इस अनुपात की भाषा में, ब्रह्मांड यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

11. प्रत्येक जीवित वस्तु अनेक नामों से अभिव्यक्त होती है। सूर्य के प्रकाश में सात रंगों की तरह, प्रत्येक नाम का अपना सौंदर्य और छाप होती है।

और फिर भी वे प्रत्येक व्यक्तिगत वस्तु, यहां तक कि कोशिकाओं में भी समान प्रभाव डालते हैं।

इससे पता चलता है कि जिसके पास ये नाम हैं, वह एक ही है: किसी चीज़ का सर्व-जीवित निर्माता उसका निर्माता, प्रदाता और पालनहार भी है; जो कुछ प्रदान करता है वह प्रावधान के स्रोतों का निर्माता है; और उसका निर्माता वह है जिसका हर चीज़ पर प्रभुत्व है। यह वास्तविकता उल्लेखित नामों से पुकारे जाने वाले एक के आवश्यक अस्तित्व और एकता पर एक खिड़की खोलती है, और हर जीवित चीज़ की भाषा में ब्रह्मांड यह गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

12. सभी चीज़ों के बीच और उनके बीच का संबंध, जैसे कि मधुमक्खी और चींटी की आँखें, सूर्य और सौर मंडल, यह दर्शाता है कि दोनों को एक ही डिज़ाइनर ने डिज़ाइन किया है। इस संबंध की भाषा में, ब्रह्मांड इस बात की गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

13. प्रत्येक वस्तु के भागों और स्वयं वस्तुओं के बीच अपरिहार्य संबंध यह दर्शाता है कि सब कुछ एक ही निर्माता का कार्य है।

इस सम्बन्ध की भाषा में ब्रह्माण्ड यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।

14. किसी एक वस्तु के सूक्ष्मतम कणों और परमाणुओं को प्रभावित करने वाले गुरुत्वाकर्षण और तारों और सूर्यों के बीच सामान्य गुरुत्वाकर्षण के बीच “भाईचारा”

[35] उदाहरण के लिए, सृष्टिकर्ता, आकार देने वाला, सब कुछ देखने वाला, सब कुछ सुनने वाला, व्यवस्था करने वाला, प्रदाता, पोषण करने वाला, सर्व-उपचार करने वाला और कई अन्य नाम उसी सत्ता पर प्रकट होते हैं।

संकेत करता है कि दोनों एक ही कलम के “शिलालेख” हैं, एक ही बुनकर की बनावट है, एक "सूर्य" की किरणें। यह दिव्य अस्तित्व की आवश्यकता को दर्शाता है और एकता। इस भाषा में, ब्रह्मांड गवाही देता है कि कोई ईश्वर नहीं है, सिवाय इसके कि ईश्वर।

15. एक यौगिक के सूक्ष्मतम कण या परमाणु, साथ ही यौगिक एक दूसरे के भीतर, ऐसी नाजुक गणना के अनुसार रखा जाता है कि, उदाहरण के लिए, आँख में कोई भी परमाणु या कण आँख के अन्य परमाणुओं और सभी शारीरिक प्रणालियों और कोशिकाओं के साथ परस्पर संबंधित होता है। यह दर्शाता है कि आँख और उसके सभी परमाणुओं, शरीर और संसार की आँख (परमात्मा) का निर्माता। सूर्य) और उनका स्थान निर्धारक सभी यौगिकों का निर्माता है। भाषा में इन सभी सूक्ष्मतम कणों और उनकी स्थिति और कार्यों के कारण, ब्रह्माण्ड में गवाही दो कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

16. एक प्रजाति का व्यापक स्वभाव और कुछ प्रजातियों का व्यापक वितरण, जैसे कि देवदूत और मछली, यह संकेत देते हैं कि एक जीवित प्राणी का निर्माता वह प्रजाति का निर्माता है। कलम, जो किसी व्यक्ति के चेहरे की रेखाएँ खींचती है और इस प्रकार उस व्यक्ति की पहचान या व्यक्तित्व बनाती है, उसे सभी चीज़ों को देखना पड़ता है हर एक चेहरे को एक ही समय पर अद्वितीय बनाने के लिए। अन्यथा, वैयक्तिकरण असंभव होगा। इसके लिए आवश्यक है कि किसी व्यक्ति का निर्माता स्वयं उसका निर्माता हो। परिवार और प्रजाति का निर्माता। ब्रह्मांड इस भाषा में गवाही देता है कि कोई भगवान नहीं है भगवान के सिवा।

17. कुछ लोग कह सकते हैं कि एक प्राणी सब कुछ नहीं बना सकता, और इस तरह सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता को नकारते हैं। चीज़ों को प्रकृति का हिस्सा बताते हुए, स्वयं, भौतिक कारणों, या संयोग और आवश्यकता जैसी धारणाओं के प्रति चीजों का अस्तित्व असंभव बना देता है.

एक निर्माता के लिए सब कुछ बनाना कई लोगों की तुलना में बहुत आसान है रचनाकारों को एक चीज़ बनाने के लिए प्रेरित करना। किसी चीज़ को बनाने में कई अंधे हाथों का हस्तक्षेप सिर्फ़ अंधेपन को बढ़ाता है। उदाहरण के लिए, अगर मधुमक्खी बनाना हो किसी अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की शक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया गया था, सब कुछ जो मौजूद है उसे अपने अस्तित्व में भाग लेना चाहिए था। यदि एक मिनट बना रहे हैं कण या बाल को भौतिक कारणों से जोड़ा जाए, तो यह उतना ही कठिन होगा जितना कि पहाड़ बनाना। एक कमांडर एक सैन्य कंपनी को उसके सैनिकों या कई कमांडरों की तुलना में बहुत आसानी से संगठित और निर्देशित कर सकता है। हर कोई जजों ने फूलों पर पानी छिड़कने के लिए स्प्रिंकलर का इस्तेमाल किया। सभी लाइनें एक वृत्त की परिधि पर समाप्त होने वाले परिणाम एक केंद्र से निकलते हैं। ऐसे परिणाम हैं एक ही प्राणी द्वारा कुछ ही कार्यों से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

मान लीजिए कि स्प्रिंकलर से निकले पानी को पानी की बूंदों के रूप में माना गया, या एक फूल का अस्तित्व मिट्टी के कणों, पानी के अणुओं, सूरज की रोशनी की किरणों,

फूल के घटक कणों, या संयोग और इसी तरह की चीजों के लिए। इसके लिए आवश्यकता होगी
इसमें शामिल प्रत्येक कण में अनिवार्यतः विद्यमान तत्व के गुण होते हैं
अस्तित्व, साथ ही परिपूर्ण कलात्मकता, व्यापक चेतना, सर्वव्यापी ज्ञान, तथा पूर्ण इच्छा और शक्ति। इन सभी को रचनात्मकता का श्रेय देना
कारणों का अर्थ है अनिवार्य रूप से विद्यमान के साथ असंख्य साझेदारों को स्वीकार करना
अस्तित्व, जो साझेदारी को स्वीकार नहीं करता। ऐसी व्यवस्था और परिपूर्ण व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक कण एक साथ दूसरों पर हावी हो
और उनके द्वारा प्रभुत्व प्राप्त किया जा सकता है। संक्षेप में, चीजों के अस्तित्व को जिम्मेदार ठहराना
प्रकृति, संयोग, भौतिक कारणों, या स्वयं के लिए निलंबन की आवश्यकता होती है
मानवीय तर्क.

दूसरी ओर, मान लीजिए कि हर चीज़ को उसके वास्तविक स्वरूप के अनुसार ही माना जाता है।
स्वामी, जिसका अस्तित्व परम आवश्यक है और जो एक और अद्वितीय है।
फिर पानी की बूंदों की तरह, जिनमें से प्रत्येक में सूर्य का प्रकाश समाहित है और वह सूर्य की छवि से चमकता है, प्रत्येक सूक्ष्म कण सूर्य की किरणों को ग्रहण करता है और परावर्तित करता है।
अनंत और शाश्वत शक्ति की अभिव्यक्ति, जिसमें अनंत और
शाश्वत ज्ञान और इच्छा। एक छोटा कण जो ऐसी किरण प्राप्त करता है वह अधिक है
भौतिक कारणों के "सूर्य" से भी अधिक प्रभावशाली। उस शक्ति से जुड़ाव, यहाँ तक कि
एक सूक्ष्म कण के माध्यम से, एक बहुत बड़ा प्रभाव उत्पन्न करता है, क्योंकि एक पारदर्शी कण जो उस शक्ति की अभिव्यक्ति को ग्रहण करता है और प्रतिबिंबित करता है, उसके गुणों को धारण करता है और इस प्रकार सार्वभौमिकता प्राप्त करता है या एक सार्वभौमिक चीज की तरह कार्य करता है।

इसके अलावा, शक्ति ईश्वरीय सत्ता का एक आवश्यक गुण है और इस प्रकार
अनंत है और इसमें कोई विपरीतता, विभाजन या कमी नहीं है। अस्तित्व में आवश्यक गुणों (अर्थात, पारदर्शिता और पारस्परिकता, संतुलन और माप, सुव्यवस्था, अमूर्तता और आज्ञाकारिता) के कारण, वह शक्ति सूर्य का निर्माण करती है
उतनी ही आसानी से जैसे वह छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी चीज का निर्माण करता है, क्योंकि वे सबसे बड़ी चीज हैं।
आईटी से एक एकल किरण के संबंध में समान।36 शक्ति के संचालन की भी तुलना की जा सकती है
प्रकाश एक छोटे से छिद्र से प्रवेश कर एक बड़े क्षेत्र को प्रकाशित करता है।

जीवन, अस्तित्व और प्रकाश पारदर्शी और पारगम्य हैं, और कार्य करते हैं
अस्तित्व का आंतरिक, अमूर्त आयाम। इस प्रकार कोई शक्ति की पहचान कर सकता है
ठोस, भौतिक कारणों के तहत संचालन। कांच में सूर्य की रोशनी को प्रतिबिंबित करने के लिए, इसकी रोशनी
बस एक छोटे से छेद से चमकना है। अंगूर एक पतली,
पतला तना। एक जलती हुई मोमबत्ती या दीपक कमरे को रोशन करता है। जैसा कि इन उदाहरणों में है,
ऐसे सरल और नाजुक कारणों के पीछे शक्ति काम करती है। अगर ऐसे प्रभावों में शक्ति नहीं देखी जाती है, तो उन्हें कांच के कारण ही माना जाना चाहिए,
पतले तने से, या माचिस जलाकर।

---

36 इन गुणों को उनतीसवें वचन के दूसरे उद्देश्य में समझाया गया है। (ट्र.)

जो लोग किसी एक सृष्टिकर्ता को नकारते हैं या सृष्टि में उसका कोई साझीदार नहीं मानते, वे सब कुछ अनिवार्यतः उसी को मानने से ही शांति पा सकते हैं।
वह सत्ता जिसकी शक्ति से सभी कठिनाइयां हल हो सकती हैं,
इच्छाशक्ति ही सभी समस्याओं और रहस्यों की कुंजी है, और जिसके स्मरण से हृदय को शांति और स्थिरता मिलती है। कोई आश्रय या मोक्ष नहीं है
सिवाय उसके शरण में जाने और उस पर भरोसा करने के। सर्वशक्तिमान घोषित करता है: भाग जाओ
अल्लाह (50:3) और: निश्चय ही अल्लाह के स्मरण से दिलों को शांति और सुकून मिलता है
शांति (13:28)। यह सत्य इस्लाम की रोशनी, पैगम्बरियत के प्रति आज्ञाकारिता और एकत्व की अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता में विश्वास की खिड़की खोलता है
और एकता। अपने सभी भागों की भाषा में, ब्रह्मांड इस बात की गवाही देता है कि वहाँ है
ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं.

18. भूख मिटाने के लिए रोटी और दूध जैसे स्पष्ट भौतिक कारण हैं
सरल; समय, स्थान और मात्रा में सीमित; तथा लुप्त होने के अधीन,
मृत्यु और परिवर्तन। उनमें कोई चेतना और इच्छा नहीं होती, और अधिकांश नाममात्र (भौतिक नहीं) "नियमों" के अधीन होते हैं, जिन्हें केवल प्रभावों के बाद ही माना जाता है
उनके कारणों की तुलना में, प्रभाव असाधारण हैं और शानदार कलात्मकता प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक कोशिका का निर्माण और अन्य सभी और शरीर के साथ संबंध इतने जटिल हैं कि इसके लिए बहुत अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है
ज्ञान, कौशल, व्यापक इच्छाशक्ति और शक्ति जो सृष्टि के सभी सदस्यों में पाई जाती है, उससे कहीं अधिक है। इसलिए, उन्हें दिए गए भोजन या दिए गए भोजन से नहीं समझाया जा सकता है
एक अचेतन और अज्ञानी शरीर का कार्य।

मानव स्मृति को देखिए। इसे कैसे समझाया जा सकता है? यह किसी चीज़ की नकल की तरह है। आपका जीवन जिसे शक्ति का हाथ पुन: उत्पन्न करता है और आपके हाथ में देता है ताकि
हिसाब के दिन यह बता सकता है कि तुमने अपने जीवन में क्या किया और तुम्हें परलोक के बारे में भी बता सकता है। सर्वज्ञ परमेश्वर चीज़ों और घटनाओं को व्यवस्थित करता है
जीवन में पूर्णता के साथ कार्य करना, चाहे वे कितने भी जटिल क्यों न हों। मानवीय चिंतन, तर्क-वितर्क, सोच और भाषण को कुछ प्रणालियों और अंगों और उनकी गतिविधियों के कारण नहीं माना जा सकता या उनके द्वारा समझाया नहीं जा सकता।37 इसलिए, ये क्षमताएँ या शक्तियाँ, प्रणालियाँ और अंग, अनंत शक्ति वाले एक का कार्य होना चाहिए,
ज्ञान और इच्छाशक्ति। केवल असीम शक्ति वाला एक निर्माता ही वास्तविक हो सकता है
भौतिक कारण और साधन केवल बहाने हैं [कुछ जगह देने के लिए
मानवीय एजेन्सी] और आवरण [शक्ति के संचालन को छिपाना]। इंद्रियाँ, क्षमताएँ और
गुण "कांच के टुकड़ों" को दी गई उपाधियाँ हैं जो अपनी क्षमता के अनुसार शक्ति की अभिव्यक्तियों को प्राप्त करते हैं और प्रतिबिंबित करते हैं, जिनमें शाश्वत और अनंत शामिल हैं।

---

37 सभी मनुष्य अद्वितीय हैं, यद्यपि वे प्रकृति से निर्मित और पोषित हैं।
समान तत्वों और समान घटकों से निर्मित।

ज्ञान और इच्छा का अंत। "कानून" ज्ञान, आदेश और इच्छा की प्रजातियों पर अभिव्यक्तियाँ हैं, जो आदेशों और इच्छा के "क्षेत्र" से निकलती हैं। यह सत्य दिव्य सत्ता के आवश्यक अस्तित्व पर एक और खिड़की खोलता है। सभी प्रभावों की भाषा में, ब्रह्मांड इस बात की गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

19. एक सार्वभौमिक, परिपूर्ण कला के अद्भुत कार्य और उनमें दिखाई गई अत्यंत सावधानी के लिए असीम शक्ति की आवश्यकता होती है। इन कृतियों का प्रत्येक भाग भी इसी शक्ति की मांग करता है।

यह असीमित शक्ति वाले सर्वशक्तिमान निर्माता की ओर इशारा करता है। चूँकि यह अनंत है, इसलिए यह स्वतंत्र है और इसे भागीदारों की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से यह सीमित हो जाएगा। दिव्यता सीमाओं को स्वीकार नहीं करती, क्योंकि ऐसा करने से यह समय और स्थान में सीमित हो जाएगा, और एक दिव्य प्राणी द्वारा अपेक्षित क्षमताओं और गुणों में दोषपूर्ण हो जाएगा। दिव्यता के लिए पूर्ण स्वतंत्रता और स्वतंत्रता आवश्यक है। इस प्रकार इसका कोई भागीदार नहीं है, क्योंकि ब्रह्मांड (अपने भागों, घटनाओं और समग्र रूप से) एकता की छाप प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि इसका शासक एजेंट एक है।

मानवता सृष्टि का सबसे सक्षम अंग है, चेतना और स्वतंत्र इच्छा से सुसज्जित कारणों में सबसे प्रमुख है। हालाँकि, हमारे कार्यों में हमारी भूमिका बहुत छोटी है। इस मामले में, ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन में निर्जीव वस्तुओं की क्या भूमिका हो सकती है? जिस लिफाफे में राजा का उपहार रखा गया है, वह उसका साथी या सहायक कैसे हो सकता है? यह सत्य ईश्वरीय सत्ता के आवश्यक अस्तित्व और एकता पर एक और खिड़की खोलता है। इस सत्य की भाषा में, ब्रह्मांड गवाही देता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

20. यद्यपि कुछ दिव्य नाम (जैसे सर्वज्ञ) सभी चीजों को समाहित करते हैं, लेकिन ब्रह्माण्ड में प्रकट दिव्य नाम इसके सभी भागों के निर्माण, जीवन और कार्य को सूक्ष्मतम कणों तक समन्वित करते हैं। सूर्य के प्रकाश के सात रंगों की तरह, वे एक ही प्रभाव के लिए कार्य करते हैं।38 यह दर्शाता है कि उन नामों से पुकारा जाने वाला अस्तित्व एक है। इसमें प्रकट नामों के बीच समन्वय और एकजुटता की भाषा में, ब्रह्माण्ड यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

21. सार्वभौमिक ज्ञान ब्रह्मांड में स्पष्ट है, पूरे और उसके भागों में। इस ज्ञान में उद्देश्य, चेतना, इच्छा और शामिल हैं

---

[38] उदाहरण के लिए, सर्वदर्शी, सर्वश्रवण, सर्वरूपक, सर्वप्रथम प्रदान करने वाले नाम, तथा ज्ञान, इच्छा और शक्ति जैसे गुण एक व्यक्ति में प्रकट होते हैं।
यद्यपि प्रत्येक की अपनी अभिव्यक्ति होती है और वे अपने प्रभाव उत्पन्न करते हैं, फिर भी वे अंततः एक अभिन्न इकाई का निर्माण करते हैं।

वरीयता, एक सर्व-बुद्धिमान व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व की ओर इशारा करती है, क्योंकि एक कार्य अवश्य होना चाहिए
एक कर्ता होता है और कोई कार्य या उसका कोई भाग कर्ता नहीं हो सकता।

22. उद्देश्यपूर्ण और अनुग्रहपूर्ण, सर्वव्यापी अनुग्रह स्पष्ट है
पूरे ब्रह्मांड में एक सर्व-उदार निर्माता की आवश्यकता की गवाही देता है
अस्तित्व, क्योंकि कोई उपकार करने वाले के बिना स्वयं को प्रदान नहीं कर सकता।

२३. ब्रह्माण्ड में व्याप्त व्यापक दया, जिसमें समाहित है
बुद्धि, अनुग्रह, परोपकार, उदारता, दयालुता, संतुष्टि, प्रेम, और
मान्यता, एक दयालु, सर्व-करुणामय व्यक्ति की आवश्यकता को इंगित करती है
अस्तित्व। कोई गुण उसके द्वारा योग्य नहीं हो सकता, और पृथ्वी और स्वर्ग केवल उस सर्व-दयालु द्वारा ही
"आवरण" किए जा सकते हैं।

24. जीवित प्राणियों की असीम विविध आवश्यकताओं को सार्वभौमिक प्रावधान से संतुष्ट करना, जिसमें ज्ञान, अनुग्रह, दया, संरक्षण, जुड़ाव शामिल हैं
[उन्हें प्रदान करने के लिए], इरादा, प्यार और मान्यता, एक दयालुता की ओर इशारा करती है
प्रदाता का आवश्यक अस्तित्व.

25. सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो जीवन और शक्ति दिखाई देती है, उसमें बुद्धि निहित है,
अनुग्रह, दया, प्रावधान, नाजुक कलात्मकता, सुरुचिपूर्ण डिजाइन, दृढ़ता और देखभाल।
वे एक उद्देश्य, चेतना, और इच्छा की अभिव्यक्ति द्वारा लाए जाते हैं।
ज्ञान और इच्छाशक्ति। यह एक सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व को इंगित करता है।
स्वयंभू, सर्व-निर्भर, जो जीवन देता है और लेता है। जीवन एक सरल और एकीकृत या एकरूप घटना है। इस सिद्धांत के विपरीत कि केवल
एक एकल इकाई किसी एक और एकीकृत चीज़ से निकलती है [यह सुझाव देते हुए कि हर चीज़ को एक अलग उत्पत्ति की आवश्यकता होती है], कुछ एक और एकीकृत (जैसे जीवन) जारी करता है
केवल एक और एकीकृत या एकरूप किसी चीज़ से। इसलिए, जीवन का निर्माता एक है
और अविभाज्य.

ये पाँच सत्य (अनुच्छेद २१-२५) संकेत देते हैं कि इस ब्रह्मांड का भगवान सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी, सर्वदानी, सर्वदयालु, सर्वकृपालु, सर्वप्रदाता, सर्वजीवित, स्वयंभू और सर्वपालक, एक है।

पूर्णता के गुणों से योग्य। ये पाँच सत्य एक खिड़की खोलते हैं
इस्लाम की रौशनी, साथ में पैगम्बरियत के प्रति समर्पण और
यह विश्वास कि वह ईश्वर है, एक है, और अनिवार्य रूप से विद्यमान है।
इन सत्यों से निर्मित प्रकाश से ब्रह्माण्ड साक्षी है कि कोई सत्य नहीं है
भगवान लेकिन भगवान.

26. सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त कृपा, जिससे सब कुछ
अनुग्रहपूर्ण, उस एक के आवश्यक अस्तित्व को इंगित करता है जिसके लिए अनुग्रह अनिवार्य है।

27. ब्रह्मांड की मासूम सुंदरता आवश्यक अस्तित्व का प्रतीक है
वह जो पूर्ण सुन्दरता से परिपूर्ण है।

28. हृदय की गहराई में ब्रह्माण्ड द्वारा महसूस किया गया सच्चा प्रेम, ईश्वर की निशानी है। सचमुच प्रियतम.

29. ब्रह्माण्ड द्वारा महसूस किया जाने वाला आकर्षण और परमानंद सबसे अधिक प्रदर्शित करता है वह गहन आकर्षण का केन्द्र है जिसकी ओर सब कुछ आकर्षित होता है।

30. हम सभी सिद्ध लोगों से सुनते हैं जो अपने अवलोकन का वर्णन करते हैं- विश्वास यह है कि सृष्टि एकता के प्रकाश की एकल सत्ता की छाया मात्र है।

ये पाँच सत्य (अनुच्छेद २६-३०) संकेत देते हैं कि ब्रह्मांड का एक भगवान है, आवश्यक रूप से विद्यमान और महिमा, सौंदर्य और गुणों द्वारा योग्य पूर्णता। इन पाँच सत्यों की भाषा में, ब्रह्मांड इस बात की गवाही देता है कि कोई भगवान नहीं है भगवान के सिवा।

31. एक प्रजाति का प्रत्येक सदस्य, साथ ही पूरी प्रजाति, व्यवस्थित है विशिष्ट लाभ और उद्देश्यों की ओर। यह आवश्यक अस्तित्व की ओर इशारा करता है एक सर्व-बुद्धिमान निपटानकर्ता या एजेंट का, क्योंकि एक कार्य के लिए एक कर्ता होना चाहिए, और एक कार्य या इसका कोई भाग स्वयं कर्ता नहीं हो सकता।

32. पौधों और प्राणियों में कुछ विशेष लाभ के लिए निरंतर परिवर्तन देखा जाता है, जो उन्हें निर्देशित करने वाले एक गुरु के आवश्यक अस्तित्व को इंगित करता है।

33. पौधों और पौधों में निरंतर, उद्देश्यपूर्ण परिवर्तन देखे जाते हैं जानवरों के लिए, व्यक्तिगत रूप से और एक प्रजाति के रूप में। यह एक बुद्धिमान गुरु के आवश्यक अस्तित्व की ओर इशारा करता है।

34. दिन और रात का परिवर्तन अनेक उद्देश्यों और लाभों के लिए किया जाता है। एक एजेंट के आवश्यक अस्तित्व का संकेत जो जो चाहे वह कर सकता है।

35. आदेश देने के लिए एक आदेशकर्ता होना चाहिए, आदेशित वस्तु और आदेश के लिए स्वयं इस कार्य का कर्ता नहीं हो सकता, जिसके लिए चेतना की आवश्यकता होती है। ब्रह्मांड का क्रम और व्यवस्था प्रत्येक वस्तु को पूर्णता के अपने विशिष्ट स्तर तक पहुँचाने और सृष्टि को पूर्णता के अपने अंतिम बिंदु तक पहुँचाने का काम करती है। यह एक सर्वशक्तिमान, आत्मनिर्भर और पालनहार के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है। क्या एक बुलबुल अपने सुंदर, अलंकृत शरीर को पहन सकती है? क्या पृथ्वी अपनी समृद्ध रूप से सजी हुई पोशाक बुन सकती है?

निपटाना, बदलना, रूपान्तरण करना, परिवर्तन करना और व्यवस्था देना ये पाँच कार्य (अनुच्छेद 31-35) दर्शाते हैं कि इस ब्रह्माण्ड का एक स्वामी है। वे दर्शाते हैं कि वह जो इसे नियंत्रित करता है वह बुद्धिमान, कुशल, शक्तिशाली, आत्मनिर्भर और टिकाऊ है, जो जो चाहे करता है और जिसमें पूर्णता के गुण हैं। इन कृत्यों की भाषा के माध्यम से, ब्रह्मांड यह घोषणा करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

36. ब्रह्मांड की एक शुरुआत है। चाहे वह संपूर्ण हो या भागों में, यह हमेशा बना रहता है। समय के भीतर अस्तित्व में आया। जबकि अनंत संभावनाएँ थीं इसमें कैसे और क्या गुण हो सकते हैं, इस पर विचार किए बिना इसने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण कर लिया।

पूर्ण व्यवस्था, सामंजस्य और संतुलन। यह आवश्यक अस्तित्व को दर्शाता है
वह स्वतंत्र चुनाव करने वाला, सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान है।

37. हर चीज़ को पोषण और जीवित रहने की अंतहीन ज़रूरत होती है। अगर यह एक है
एक सचेत जीव होने के बावजूद, इसकी आध्यात्मिक और बौद्धिक ज़रूरतें भी होती हैं।
हर चीज़ की सबसे तुच्छ ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थता के बावजूद, हर चीज़ की ज़रूरतें समय पर और अप्रत्याशित स्रोत से पूरी होती हैं। यह एक ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व की ओर इशारा करता है जो पालन-पोषण करने वाला, प्रदान करने वाला, उदार, दयालु और करुणामय है।
भगवान।

38. प्रत्येक वस्तु असीम अभाव में है और वह जो चाहती है उसे प्राप्त करने में असमर्थ है।
जीवित रहने के लिए सभी को जरूरत है। हालाँकि, हर चीज सही मात्रा में उपलब्ध कराई जाती है
जो भी उसे चाहिए। यह एक दयालु, दयालु, दयालु परमेश्वर के अस्तित्व को इंगित करता है।
उदार, मुफ्त में देने वाला, सर्व-प्रेमी और सर्व-जागरूक [यहां तक कि सबसे छोटी चीज का भी
प्राणी की सबसे छोटी ज़रूरत].

39. अपनी अनिवार्य और अत्यधिक गरीबी के बावजूद, पेड़ और मिट्टी जैसी चीजें,
सर्दियों में पूरी तरह से मृत और सूखे हुए दिखाई देते हुए भी, जोश के लक्षण प्रदर्शित करते हैं
और वसंत में शक्ति। यह एक पूर्ण शक्तिशाली के अस्तित्व को इंगित करता है,
जिसकी शक्ति के सम्मुख सब कुछ, बिना किसी अपवाद के, समान है।

40. अपनी मूलभूत गरीबी के बावजूद, जैसा कि जीवित प्राणियों के लिए भोजन उपलब्ध कराने वाली
सूखी मिट्टी से पता चलता है, ब्रह्मांड पूर्ण समृद्धि के संकेत दिखाता है।
एक परम धनी के अस्तित्व की ओर इशारा करता है। सूर्य और पेड़ "कोशिकाएँ" हैं
उसकी दया के खज़ाने में से; जल और प्रकाश दो “धाराएँ” हैं जो
उनकी करुणा का सागर।

41. सब कुछ मूलतः मृत है। जीवन की “रोशनी” फैलाई गई
सभी जीवित प्राणी उस एक सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं, जो जीवन देता है और लेता है।

42. किसी भी चीज़ की अपनी चेतना नहीं होती।39 दृष्टि और
श्रवण, सचेत जीवन द्वारा प्रदर्शित व्यापक चेतना
यह एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ के अस्तित्व को दर्शाता है।

43. प्रत्येक वस्तु का, विशेषकर जीवित वस्तुओं का, निरंतर, व्यवस्थित परिवर्तन और क्षय, उस एक के अस्तित्व की ओर संकेत करता है जो परिवर्तन करता है, लेकिन जो परिवर्तन करता है, वह स्वयं परिवर्तन करता है।
वह स्वयं स्थायी और अपरिवर्तनीय है।

४४. हम देखते हैं कि वे जीवित, सचेत प्राणी जो अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं
उपासना का ठीक-ठीक तौला हुआ पुरस्कार मिलता है और उच्च-

---

39 एक मानव भ्रूण पर विचार करें। मांस और हड्डियों के एक ढेर के रूप में शुरू होकर, यह किसी तरह विकसित होता है
जीवन और चेतना। यह दावा करना अतार्किक है कि भ्रूण स्वयं, प्रकृति, या केवल नाममात्र अस्तित्व वाले कुछ जैविक-तार्किक कानून (जो सभी अज्ञानी, अचेतन और
शक्तिहीन) इसे जीवन और चेतना से सुसज्जित करें। (ट्र.)

आध्यात्मिक पद, अदृश्य लोकों के निवासियों के साथ किसी तरह का संपर्क रख सकते हैं। उनकी पूजा की छाप उनके जीवन, व्यवहार और यहाँ तक कि उनके चेहरों पर भी देखी जा सकती है। यह उस एक के अस्तित्व को इंगित करता है जो अकेला है
पूजा के योग्य है.

45. ब्रह्माण्ड की महिमा, चाहे शब्दों में हो या कार्यों में, इंगित करती है
उस एक के अस्तित्व की ओर जिसकी महिमा आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह करता है (59:24)।
"स्वाभाविक स्वभाव" या कार्यों की गवाही अकाट्य है।
इसलिए, आप सभी प्राणियों की उनकी स्थिति, कार्य, जीवन और शारीरिक संरचना के माध्यम से उस परमेश्वर के आवश्यक अस्तित्व की गवाही का खंडन कैसे कर सकते हैं, जिसकी महिमा स्वर्ग और पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु द्वारा की जाती है?

46. जीवित प्राणियों की प्रार्थनाएँ और विनती [मौखिक, शारीरिक,
या ज़रूरत और लाचारी की भाषा में] जवाब दिया जाता है और आमतौर पर हार मान ली जाती है
यह उस परमेश्वर के अस्तित्व को इंगित करता है जो प्रार्थनाओं का उत्तर देता है ।

47. पीड़ित व्यक्ति जानबूझकर या अनजाने में शरण लेते हैं
"अज्ञात" रक्षक या निर्माता। यह शरणस्थल के अस्तित्व की गवाही देता है
दुःखी और भयभीत लोगों का, सहायता मांगने वालों का सहायक।

48. जो लोग अस्तित्व की आंतरिक वास्तविकता में प्रवेश करते हैं और अपने अंतर्ज्ञान, आध्यात्मिक अनुभव और अवलोकन पर खुद को आधारित करते हैं, वे इस बात से सहमत हैं कि
समय और स्थान में जो कुछ भी विद्यमान है वह "अनन्त सूर्य" के प्रकाश की छाया है,
और इसके आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है।

49. [अपनी निर्जीवता, अज्ञानता और अचेतनता के बावजूद] निर्जीव वस्तुएं, खास तौर पर परमाणु और उपपरमाण्विक कण, व्यापक, सचेतन और सार्वभौमिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। उनकी व्यापक गतिविधियाँ

या उन पर नामों की अभिव्यक्ति के कारण कार्य, आवश्यक से उत्पन्न होते हैं
अस्तित्व और एकता, आकस्मिकता नहीं। यह आवश्यक होने का प्रमाण है
एक पवित्र व्यक्ति का अस्तित्व जो सभी चीजों का उपयोग करता है और नामों से पुकारा जाता है
उन पर प्रकट हुआ।

50. [जो लोग एकमात्र सृष्टिकर्ता के रूप में किसी दिव्य सत्ता के अस्तित्व को नकारते हैं
अस्तित्व और जीवन की उत्पत्ति की व्याख्या करने में मतभेद हैं।] कुरान कहता है: भागो
अल्लाह की ओर (51:50), निश्चय ही अल्लाह की याद से दिलों को शांति मिलती है और
शांति (13:28), और: अल्लाह के पास सब चीज़ें लौटाई जाती हैं (35:4)।
जो लोग ऐसी दिव्य घोषणाओं की सच्चाई को स्वीकार करते हैं, उन्हें राहत मिलती है
स्वयं को, प्रकृति को अस्तित्व का श्रेय देने में कठिनाइयाँ, भ्रम और समस्याएँ,

---

40 परमेश्वर हमेशा वह नहीं देता जो माँगा जाता है, क्योंकि हो सकता है कि माँगनेवाले को उससे लाभ न हो। कभी-कभी वह बेहतर देता है और कभी-कभी वह आख़िरत में देता है। (संपादक)

या भौतिक कारण। सृष्टिकर्ता की शक्ति को अस्तित्व का श्रेय देने से सभी कठिनाइयाँ और समस्याएँ आसानी से हल हो जाती हैं, और मन और हृदय को शांति मिलती है। वास्तव में, ईश्वर के अलावा कोई अन्य रचनात्मक एजेंट नहीं है।

51. हर चीज़ को सटीक अनुपात में मापा जाता है। [साथ ही, जैसा कि लगभग हर किसी को सपनों में भविष्य की झलक या संकेत मिला है], एक सार्वभौमिक नियति जिसने सब कुछ पूर्व निर्धारित किया है, ब्रह्मांड में व्याप्त है। [यह संयोग को नकारता है।

पुनः, सभी बीज और पूर्ण विकसित पौधे या वृक्ष सार्वभौमिक भाग्य की ओर संकेत करते हैं।]

इस सर्वसमावेशी नियति के कारण, सब कुछ पूरी तरह से व्यवस्थित है और अपने रूप, विशेषताओं और क्षमताओं के अनुसार पूर्वनिर्धारित, स्पष्ट उद्देश्यों को पूरा करता है। मानव शरीर पर विचार करें, इसकी सभी रेखाओं और उंगलियों के साथ। प्रत्येक को उसके उद्देश्य के अनुसार बनाया और आकार दिया गया है, और इसलिए यह उस नियति को दर्शाता है जिसने उन उद्देश्यों और संरचना को निर्धारित किया है। नियति की योजना के अनुसार, शक्ति ज्ञान द्वारा स्थापित और रखे गए अर्थों को "लिखित" करती है। वह नियति जिसने सभी चीजों की पूर्व योजना बनाई है, और वह नियति जो सभी चीजों के जीवन-इतिहास को दर्ज करती है, उसके आवश्यक अस्तित्व को इंगित करती है, जिसकी नियति और निर्णय की कलम ने सभी चीजों की रूपरेखा तैयार की है।

52. हमारी व्यापक क्षमताएँ बताती हैं कि हम सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, और इस प्रकार सृष्टि का सबसे उत्तम भाग हैं। हमारी प्रकृति का एक पहलू हमें अस्तित्वहीनता, दुनिया के अंधकारमय चेहरे की ओर ले जाता है। हालाँकि, उपासना के लिए हमारी व्यापक क्षमता का तात्पर्य है कि हमें अस्तित्व के लिए (शाश्वत अस्तित्वहीनता के लिए नहीं), स्थायित्व के लिए (क्षणभंगुरता के लिए नहीं) और रचयिता के लिए (सृजित नहीं) बनाया गया था। उपासना सृष्टि में आरंभ को अंत से जोड़ती है। इस प्रकार हमारा स्वाभाविक स्वभाव उस व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है जिसने स्वयं को प्रकट करने के लिए ब्रह्मांड और उसकी सामग्री का निर्माण किया, जिसने मानवता और जिन्न को बनाया ताकि वे उसे [जानें और] पूजें।

53. सृष्टि में, आकस्मिकता, गुणन और प्रभावित होने के स्थान हैं। [जो कुछ भी बनाया गया है वह आकस्मिक है, क्योंकि उसका अस्तित्व आवश्यक और निरपेक्ष नहीं है; वह अद्वितीय या अद्वितीय नहीं है, क्योंकि वह ऐसी चीज़ है जिस पर कार्य किया जाना है।] इसके लिए आवश्यकता, एकता और एजेंसी की स्थिति की आवश्यकता होती है।

दूसरे शब्दों में, ऐसा एक अवश्य होना चाहिए जिसका अस्तित्व परम आवश्यक है; जो अद्वितीय, अद्वितीय और एकात्मक है; तथा जो क्रियाशील है।

54. हम देखते हैं कि प्रत्येक वस्तु निरंतर अपनी पूर्णता के विशेष बिंदु की ओर बढ़ती रहती है। जब वह पूर्णता पर पहुँचती है, तो उसमें स्थिरता और स्थायित्व आ जाता है।

पूर्णता के लिए स्थिरता और निरन्तरता की आवश्यकता होती है। अस्तित्व का अस्तित्व पूर्णता से है, और पूर्णता की पूर्णता निरन्तरता से है। [एक चीज़ वास्तव में

पूर्णता प्राप्त करने के बाद ही अस्तित्व में आता है, और इसकी सच्ची पूर्णता इसके पूर्ण बने रहने में निहित है।]
इसलिए, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, वह पूर्णतः है
परिपूर्णता, और आकस्मिक प्राणियों द्वारा साझा की गई सभी परिपूर्णताएं केवल छायाएं हैं
उसकी पूर्णता के प्रकाश की अभिव्यक्तियाँ। यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर ही है
अपने दिव्य सार और गुणों दोनों में पूर्णतया परिपूर्ण,
कृत्य.

55. किसी चीज़ का अंदरूनी हिस्सा बहुत सूक्ष्म होता है और उसमें बहुत अधिक कलात्मकता दिखती है
इसके बाहरी भाग से ज़्यादा। इसलिए, इसका निर्माता इससे दूर नहीं है। साथ ही, इसके और अन्य चीज़ों के बीच
सटीक संतुलन और अनुपात बनाए रखना यह दर्शाता है
कि इसका निर्माता इसके अंदर समाहित नहीं है। जब हम किसी चीज़ को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं
अपने आप में, इसके अस्तित्व में, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसका निर्माता सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है। जब हम इसे अन्य
चीजों के साथ इसके संबंधों के संदर्भ में देखते हैं, तो हम निर्णय लेते हैं
इसका निर्माता सब कुछ सुनने वाला और देखने वाला है, वह सब कुछ देखता है
ऊपर, उन्हें आकार देता है, और कुछ उद्देश्यों के लिए उनके रिश्तों को नियंत्रित करता है। यह सत्य निर्माता के
आवश्यक अस्तित्व को इंगित करता है जो न तो है और न ही
वह न तो ब्रह्माण्ड में समाहित है, न उससे दूर है, न उससे बहिष्कृत है।41 वह परमपिता परमेश्वर है।
भीतर से भी भीतर, सबसे ऊंचे से भी ऊंचे। वह एक चीज और सब कुछ देखता है
चीजें एक साथ.

ये सत्य (अनुच्छेद 36-55) एक समग्र सत्य बनाते हैं जो दर्शाता है कि
ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी, शासक और पालनकर्ता है जिसका अस्तित्व पूर्णतः शाश्वत है।
वह सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली, सर्वदयालु, सर्वकरुणामय, सर्वप्रदाता, सर्वदानी, सर्वधनवान, सर्वजीवित, स्वावलंबी,
सर्वज्ञ, सदा रहनेवाला, स्थायी और उपासना के योग्य है।

वह जो चाहता है, वही करता है, और जो कुछ आकाश में है, उससे उसकी महिमा होती है।
धरती पर जो लोग प्रार्थना करते हैं, उनकी वह शरणस्थली है। वह डरने वालों का शरणस्थान है।
और जो लोग उससे मदद मांगते हैं उनकी मदद करता है। यह ब्रह्मांड उसकी रोशनी की छाया है,
उनके नामों की अभिव्यक्ति, और उनके कार्यों की छाप या कार्य।
उसकी याद में शांति और सुकून मिलता है, और सारे काम उसी की ओर हैं
वापस लाया। उसने इंसानों और जिन्न को पैदा किया ताकि वे उसे जानें और उसकी इबादत करें।
अपने भाग्य और आदेश के नियमों के माध्यम से ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया। वह अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है और
एक है, अद्वितीय है, और अपने सार में बिल्कुल परिपूर्ण है,
गुण और कार्य। वह सर्व सूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वश्रुत और सर्वदर्शी है।

---

41 अपने सार या दिव्य अस्तित्व के कारण, वह समय या स्थान के भीतर समाहित नहीं है। हालाँकि,
अपने नाम और गुणों की अभिव्यक्ति के माध्यम से, वह हर जगह और निकट है
अपने से अधिक सब कुछ, जैसे सूर्य स्वयं को आपकी आंखों की पुतलियों में रखता है और आपके अंदर प्रवेश करता है
शरीर को प्रकाश और गर्मी से भरता है।

अपनी रोशनी के ज़रिए ये सच्चाईयाँ इस्लाम और पैग़म्बरी के अधीन होने की ज़रूरत को दर्शाती हैं। इससे यह विश्वास होता है कि वह ईश्वर है, जिसका अस्तित्व बिल्कुल ज़रूरी है, जो एक और अकेला है। ये सच्चाईयाँ एक ऐसी भाषा बनाती हैं जिसमें ब्रह्मांड घोषणा करता है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

हे मित्र, यह जान लो कि विश्वास का आधार यह स्थापित करता है कि कोई भी सत्य नहीं है।
परमेश्वर के बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

ऐ दोस्त, जान लो कि इन सबूतों और ईश्वर पर ईमान के लिए यह ईमान ज़रूरी है कि मुहम्मद उसके रसूल हैं। उनके रसूल होने पर ईमान में ईमान के बाकी पाँच स्तंभ भी शामिल हैं और यह आईने की तरह ईश्वर के गुणों को दर्शाता है।

इस प्रकार विश्वास के संतुलन में, यह विश्वास कि मुहम्मद ईश्वर के संदेशवाहक हैं, इस विश्वास के बराबर है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, क्योंकि पैगम्बरत्व की एक सार्वभौमिक, सर्वव्यापी स्थिति है क्योंकि यह ब्रह्मांड के शासक और पालनहार के रूप में उनके गुणों को प्रतिबिंबित करने के लिए दर्पण है। पैगम्बरत्व से संतत्व का संबंध ईश्वर के सभी संसारों के स्वामी होने के नाते उनके एक व्यक्ति के स्वामी होने जैसा है, उनके सर्वोच्च सिंहासन का एक आस्तिक के हृदय से संबंध जैसा है, या पैगंबर के स्वर्गारोहण का सभी स्वर्गों से परे के क्षेत्रों में आरोहण जैसा है, जो प्रार्थना करते समय आस्तिक के "आरोहण" से संबंधित है।

एक टिप्पणी

हे मित्र, जान लो कि जिस बिंदु पर हमने अब तक चर्चा की है, वह एक केंद्र की तरह है जिसके चारों ओर हमने अपने तर्कों के माध्यम से एक घेरा बनाया है। प्रत्येक बिंदु केंद्र की ओर देखता है। प्रत्येक बिंदु के बीच एक एकजुटता है जो उन लोगों को दूर करती है जो कमजोर हैं। संपूर्ण तर्क एक दृढ़ विश्वास पैदा करता है जो इस्लाम के प्रकाश को बढ़ाता है, पैगंबर के प्रति समर्पण में योगदान देता है, और फिर विश्वास में। विभिन्न तर्क वे स्रोत हैं जिनसे यह दृढ़ विश्वास उत्पन्न होता है।

हालाँकि, यह अपेक्षा करना तर्कसंगत नहीं है कि प्रत्येक तर्क पूरे तर्क जितना ही सशक्त और विश्वसनीय हो, और ऐसा रवैया केवल इनकार या अविश्वास का मार्ग प्रशस्त करता है। भगवान हमें इससे बचाए। ऐसे परिणाम से बचने के लिए, यदि कोई तर्क संदेह पैदा करता है, तो हमें पूरे तर्क का संदर्भ लेना चाहिए और उससे प्राप्त होने वाले परिणाम के दृष्टिकोण से उस पर विचार करना चाहिए।

हे मित्र, यह जान लो कि कुछ व्यक्तिगत तर्क पानी, हवा या प्रकाश की तरह होते हैं, इसलिए हमें उन पर व्यापक और सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए ताकि वे हमारी उंगलियों से फिसल न जाएं।

दो प्रकार के दृष्टिकोण

हे मित्र, जान लो कि एक विस्तृत, फल देने वाले वृक्ष के जीवन, लाभ और शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लोग उसे दो तरीकों से देखते हैं: उसकी जड़ों से

ऊपर की ओर, और उसके फलों से नीचे की ओर। पहला तरीका बेहतर है और सही निष्कर्ष पर ले जाता है, जबकि दूसरा दोषपूर्ण है और गलत धारणाओं की ओर ले जाता है
[खासकर एक पेड़ हर साल अच्छे फल नहीं दे सकता] उसी तरह,
इस्लाम का वृक्ष आकाश में जड़ जमाए हुए है, जबकि इसकी शाखाएँ बहुलता की दुनिया में फैली हुई हैं। इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम
इसे दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। इसके अलावा, इसके क्षेत्र में प्रवेश करने के दो रास्ते हैं।

पहला दृष्टिकोण इसकी जड़ों से है। अगर हम इसे सफलतापूर्वक करते हैं, तो हम देखेंगे
यह एक विशाल कुंड से उत्पन्न होता है जिसका स्रोत पूरी तरह से शुद्ध है: दिव्य
रहस्योद्घाटन। यह कुंड “संकेतों” के माध्यम से लगातार (“पानी में”) बढ़ता रहता है
बाहरी दुनिया और प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक दुनिया से इसे जोड़ना। इसके फल प्राप्त होते हैं
इस "पूल" से उनका "पोषण" होता है। एक फल के जीवन को साबित करने के लिए, यह है
पेड़ की फलदायीता और शक्ति को स्थापित करने के लिए पर्याप्त है, क्योंकि जड़ों और प्रत्येक फल के बीच एक बुनियादी संबंध है। हालाँकि, एक का गायब होना
फल का मतलब यह नहीं है कि पेड़ अनुत्पादक है। जिस स्रोत से फल मिलता है
पेड़ को जो शक्ति मिलती है, वह उसके निरंतर जीवन की गारंटी है। अगर इसे धारण करने वाले
दृष्टिकोण पेड़ में एक मृत फल को देखकर, वे इसे बाहरी कारकों के कारण मानेंगे। यह सही और सही दृष्टिकोण है। ईश्वर हमें यह प्रदान करे और
हमें इस पर दृढ़ता से पकड़ कर रखो।

दूसरा दृष्टिकोण गुमराही और कठिनाई का मूल है।
इस दृष्टि से पेड़ को उसके फलों से देखें और उसकी आलोचना करने के इरादे से देखें। चूँकि फलों के बीच वही संबंध है जो फलों के बीच है
पेड़ की जड़ें और उसके प्रत्येक फल का अस्तित्व नहीं है, वे जांच करते हैं और स्वाद लेते हैं
पेड़ का अंदाजा लगाने के लिए एक-एक करके फल देखें। साथ ही, वे यह भी नहीं देख पाते कि जड़ें कैसे फल देती हैं
फलों को जीवन देना। अगर वे एक मरा हुआ फल देखते हैं, तो वे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पूरा फल ही जीवन है।
पेड़ मर चुका है। भगवान हमें ऐसा नज़रिया रखने से बचाए।

निष्कर्ष: चार बीमारियों के बारे में

पहली बीमारी: निराशा

ऐ दोस्त, जान लो कि जो लोग जहन्नुम की सज़ा से डरते हैं और बच नहीं सकते,
ईश्वर के प्रति अपनी सेवा का कर्तव्य निभाते हुए वे दण्ड के अभाव और उसके विरुद्ध तर्क की इच्छा रखते हैं। जब वे ऐसे संकेत देखते हैं जो इस तर्क की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं, तो शैतान उन्हें अपने दल में भर्ती करना शुरू कर देते हैं।
[यदि आप ऐसी स्थिति में हैं,] तो निम्नलिखित बातों पर गंभीरतापूर्वक और ध्यानपूर्वक ध्यान दीजिए
कुरान की आयत:

जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे उनसे कह दो कि ऐ मेरे बन्दों! जो अपने ही विरुद्ध अत्याचार कर बैठे हो! अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ। निस्संदेह अल्लाह सारे गुनाहों को क्षमा कर देता है। वह अत्यन्त क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। (39:53)

दूसरी बीमारी: आत्म-प्रशंसा (अच्छे कर्मों के कारण)

जब निराशा हमें नर्क की सज़ा के खिलाफ़ सहारा तलाशने पर मजबूर करती है, तो हम अपने अच्छे कामों को देखते हैं और आत्म-प्रशंसा में डूब जाते हैं। वास्तव में, हमें अपने अच्छे कामों का मालिकाना हक नहीं है। आपको अपने शरीर पर स्वामित्व का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि न तो आपने इसे बनाया है और न ही इसे रास्ते में पाया है, और यह न तो अंधे संयोग का नतीजा है और न ही बेजान कारणों का उत्पाद है। बल्कि, इसकी अद्भुत रचना और इसके द्वारा प्रदर्शित कला के चमत्कारों के माध्यम से, आपका शरीर इस बात की गवाही देता है कि यह एक सर्वज्ञ निर्माता का काम है जो लगातार इसकी देखभाल करता है।

हमारे शरीर के संचालन में हमारा हिस्सा बहुत छोटा है। हालाँकि मानवता सबसे महान कारण है और सृष्टि में सबसे व्यापक इच्छाशक्ति रखती है, फिर भी हम जो स्वतंत्र इच्छाशक्ति का प्रयोग करते हैं, वह बहुत कम है। कार्य की स्वतंत्रता का क्षेत्र, अपनी स्पष्ट व्यापकता के बावजूद, बहुत संकीर्ण है। यदि तर्क कल्पना जैसी क्षमता को नियंत्रित नहीं कर सकता, तो अन्य क्षमताओं को मानव स्वतंत्र इच्छा के दायरे में कैसे माना जा सकता है? कोई भी उन पर व्यक्तिगत गर्व कैसे कर सकता है?

इसके अलावा, कई चीज़ें हमारे पक्ष में या हमारे खिलाफ़ काम करती हैं। हालाँकि हम उनमें से कई के बारे में अनजान हो सकते हैं, लेकिन वे स्पष्ट रूप से कई जानबूझकर उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।
इसका मतलब यह है कि जो उन्हें घटित कराता है, वह अनंत चेतना वाला एक सर्व-श्रवण करने वाला, सर्व-देखने वाला है, न कि कोई व्यक्ति या अन्य बहरे और अंधे कारण। इसलिए अच्छे कर्मों पर व्यक्तिगत स्वामित्व का दावा करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि उनमें किसी का हिस्सा काफी सीमित है।

हम अपनी स्वतंत्र इच्छा का गलत इस्तेमाल करके पैदा होने वाले दोषों और कमियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इस तरह का दुरुपयोग ईश्वरीय सिद्धियों के निरंतर प्रकटीकरण के कारण दुनिया में आने वाले गुणों की गुणवत्ता को बदल देता है। आपका शरीर (निवास स्थान) एक मुफ्त ऋण है जिसमें आप एक अतिथि हैं। अच्छे कर्म उपहार हैं [जो सर्वशक्तिमान हमें करने में सक्षम बनाता है]; पाप और बुराई गलत इस्तेमाल की गई इच्छाशक्ति का परिणाम है। इसलिए कहो: वह (ब्रह्मांड की सभी चीज़ों का) मालिक है, उसकी सारी प्रशंसा है, और उसके अलावा कोई शक्ति और ताकत नहीं है।

तीसरी बीमारी: घमंड

घमंड या अहंकार अतीत के पुण्यशाली और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बारे में "दूर की दृष्टि" पैदा करता है और लोगों को उन्हें छोटा समझने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे लोग वंचित रह जाते हैं

उनके अच्छे कर्मों और सद्गुणों से मिलने वाले आशीर्वाद और लाभ, क्योंकि वे भ्रम में अंधे हो गए हैं और उनके बारे में नकारात्मक राय रखते हैं। इसलिए, [इस बीमारी से बचने के लिए] उन्हें करीब से देखें और देखें कि कैसे उन्होंने 40 दिनों में वह कर दिखाया जो हम 40 साल में भी नहीं कर सकते।

चौथी बीमारी: संदेह

दूसरों पर संदेह करने से लोगों को लगता है कि दूसरे भी उन्हीं दोषों और बुराइयों से पीड़ित हैं, जो उनमें हैं। इस दृष्टिकोण के कारण वे सभी की निंदा करते हैं और वर्तमान और भूतकाल के महान लोगों के गुणों के प्रति अंधे हो जाते हैं, जिनसे उन्हें कुछ लाभ मिल सकता था। इस प्रकार वे अपने लिए दिन के उजाले को रात में बदल देते हैं।

ईश्वर हमें निराशा, आत्म-प्रशंसा, घमंड और संदेह से बचाये।
आमीन.

चार महत्वपूर्ण सत्य जो मैंने अपनी बौद्धिक और आध्यात्मिक यात्रा में देखे

इस यात्रा के दौरान, मैंने निम्नलिखित सत्य देखे:

पहला सच

हे मित्र, जान लो कि सच्चे स्वामी, सर्व-महिमावान और महाप्रतापी के प्रति उदासीनता लोगों को पूर्ण स्वतंत्रता और स्वयं के स्वामित्व का दावा करने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह की गलत धारणा व्यक्ति को व्यक्तिगत प्रभुत्व के दायरे की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती है। फिर, दूसरे लोगों और भौतिक कारणों की तुलना खुद से करने के बाद, वे ईश्वर की शेष संपत्ति या प्रभुत्व को आपस में बाँट लेते हैं।

हालाँकि, सर्वशक्तिमान ने हमें एक बिल्कुल अलग उद्देश्य के लिए (मानव) अहंकार दिया है: हमें दिव्यता के गुणों को मापने या तुलना करने की अनुमति देने के लिए ताकि हम उन्हें समझ सकें।42 लेकिन हम उनकी शक्तियों या क्षमताओं का दुरुपयोग करते हैं, दिव्य आज्ञाओं का विरोध करने का प्रयास करते हैं, और निर्माता की नियति और आदेश के खिलाफ संघर्ष करते हैं।

हे मेरे सफ़र में मेरे साथ चलने वालों! यह सत्य बन गया है
अपने सभी आयामों में मेरे सामने प्रकट हुआ, इस प्रकार:

---

42 उदाहरण के लिए, देखने, सुनने और सीखने की सीमित शक्तियों से लैस एक व्यक्ति शायद यह निष्कर्ष निकाले कि सृष्टिकर्ता ज़रूर सब कुछ देख सकता है, सब कुछ सुन सकता है और सब कुछ जान सकता है।
किसी की गरीबी, लाचारी और नश्वरता उसे यह पता लगाने के लिए प्रेरित कर सकती है कि सृष्टिकर्ता पूर्णतः धनवान, शक्तिशाली और स्थायी है। (ट्र.)

लोग तुलना के माध्यम से सूक्ष्म सत्यों, विशेषकर अमूर्त सत्यों को जान सकते हैं, तथा अनंत चीजों की सीमाओं की कल्पना करके उन्हें समझा जा सकता है।
तो मानव अहंकार, जो उदासीनता [सृष्टि के सच्चे मालिक के प्रति] के "जल" के माध्यम से हम में से प्रत्येक में निहित है, हमें केवल एक बिंदु के रूप में सेवा करने के लिए दिया गया था
तुलना का एक माध्यम जिसके द्वारा हम सृष्टिकर्ता के गुणों को समझ सकते हैं,
उसका कोई साझी नहीं है, और न ही उसकी प्रभुता, आधिपत्य या ईश्वरत्व के मामले में कोई उसके विरुद्ध संघर्ष कर सकता है।

अहंकार न तो खुद का मालिक है और न ही अपने शरीर का। उसका शरीर कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो पाई जाती है रास्ते में, संयोग का परिणाम, या स्व-निर्मित। बल्कि, यह एक अत्यंत जटिल, पेचीदा और अद्भुत दिव्य मशीन या कारखाना है जिसमें कलम की कलम
दैवी शक्ति निरंतर भाग्य और निर्णय के हाथों में काम करती है।

हे आत्मस्वरूप! ऐसा मिथ्या दावा त्याग दो। अपनी सम्पत्ति (शरीर) समर्पित कर दो।
अपने मालिक के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में एक विश्वसनीय ट्रस्टी बनें
वह शरीर जो तुम्हें सौंपा गया है। जब लोग एक कण का भी दावा करते हैं, तो वे ईश्वर की संपत्ति को अपने साथियों के साथ साझा करना शुरू कर देते हैं।
प्राणियों और फिर भौतिक कारणों से। [इसमें कई प्रकार की जड़ें निहित हैं
ब्रह्मांड के निर्माण और शासन में ईश्वर के साथ साझेदारी करने का।]

हे आत्म-स्वामित्व! लोग स्वयं के स्वामी नहीं हैं। वे अपने शरीर को बनाते या बनाते नहीं हैं। भौतिक कारण भी उस पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकते।

लोग अपना शरीर स्वयं बनाते हैं, यह देखते हुए कि मूलतः वे अन्य प्राणियों से भिन्न नहीं हैं
भेड़? [लोग और भेड़ एक ही तत्व से बने हैं और उनमें कोई समानता नहीं है
[भेड़ कैसे दावा कर सकती है कि उसने खुद को बनाया है]
भेड़ और अनार के बीच बहुत गहरा संबंध है।
क्या अनार की रंगाई से उसके बीज बन सकते हैं? सबसे ऊपर रखा गया फल कैसे
एक पेड़ का पेड़ कैसे बनाया जा सकता है? अगर एक भेड़ खुद को बना सकती है, अगर एक अनार खुद को बना सकता है यदि हम इसका वृक्ष बना लें, तो मनुष्य स्वयं का स्वामी बन सकता है।

प्रत्येक प्राणी घोषणा करता है: "मैं एक सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी, सर्वश्रुत, सर्वश्रुत तथा सर्वदर्शी परमेश्वर द्वारा सटीक माप के अनुसार बनाया गया हूँ।" भौतिक
कारण अंधे, बहरे और बेजान हैं। उनका आपस में मिलना केवल उनकी संख्या को बढ़ाता है
अंधापन और बहरापन। एक निश्चित दवा तैयार करने के लिए प्रवीणता की आवश्यकता होती है
प्रासंगिक चिकित्सा विज्ञान और औषध विज्ञान, और सटीक ज्ञान
सामग्री और आवश्यक मात्रा। अगर ये सभी चीज़ें छत पर रखी जाएँ
और हवा उन्हें उड़ाकर नीचे ले आती है और फिर उन्हें मिला देती है, क्या आवश्यक औषधि स्वयं बन सकती है या संयोग से?

भौतिकवादी और प्रकृतिवादी सृष्टि का श्रेय स्वयं को, कारणों को या प्रकृति को देते हैं।
यदि कोई दी गई दवा ऊपर उल्लिखित परिस्थितियों में स्वयं को निर्मित कर सकती है,

कोई यह दावा कर सकता है कि सृष्टि या तो स्वयं निर्मित है या संयोग और कारणों का उत्पाद है। लेकिन सृष्टि की शुरुआत और चीजों और जीवन की उत्पत्ति ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर नहीं मिल पाया है। इस प्रकार, सृष्टि का श्रेय किसी सर्वज्ञ, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को देना, जिसकी पूर्ण इच्छा है, के अलावा किसी और को देना, सरासर अहंकारी मूर्खता है।

दूसरा सत्य

हे दुष्ट आत्मा, जान लो कि प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने लिए एक विशेष दुनिया है, जो बहुत विशाल है और व्यक्तिगत आकांक्षाओं, रिश्तों और जरूरतों पर आधारित है। इसका मुख्य स्तंभ व्यक्ति का जीवन है।

हालांकि, यह स्तंभ समय, घटनाओं और बीमारियों से कमज़ोर हो जाता है। दूसरे शब्दों में, यह अस्वस्थ है और क्षय और अचानक पतन के अधीन है। मानव शरीर लंबे समय तक चलने वाला नहीं है, क्योंकि यह लोहे या चट्टान से नहीं बना है, बल्कि मांस, हड्डियों और रक्त से बना है, जो किसी भी समय विघटित होने के लिए तैयार हैं। इसके विघटन का मतलब है उस व्यक्ति की दुनिया का विनाश।

अतीत को देखो - एक बड़ी कब्र जिसमें मृतकों की बर्बाद दुनिया है; भविष्य एक कब्र है जिसे भरने का इंतज़ार है। हम सभी दो बड़ी कब्रों के बीच खड़े हैं: कल मेरे पिता की कब्र थी, और कल मेरी होगी।

हालाँकि हम जिस दुनिया में रहते हैं वह एक है, लेकिन इसमें जितने लोग रहते हैं, उतनी ही दुनियाएँ हैं। किसी की मृत्यु का मतलब है उसकी दुनिया का अंत।

तीसरा सत्य

यह संसार और इसके सुख एक भारी बोझ हैं। कोई भी (आत्मा में भ्रष्ट लोगों को छोड़कर) इससे संतुष्ट नहीं है। लगभग पूरे ब्रह्मांड पर निर्भर रहने, सभी साधनों और कारणों की ज़रूरत पड़ने और बहरे, गूंगे और अंधे गुरुओं से लड़ने के बजाय, लोगों को एक ही, सब कुछ सुनने वाले और सब कुछ देखने वाले गुरु की शरण लेनी चाहिए। अगर वे उस पर अपना भरोसा रखते हैं, तो वह उनके लिए पर्याप्त है।

चौथा सत्य

हे अहंकार, जान लो कि तुम्हारे सिर के चारों ओर बुने गए वैज्ञानिक आविष्कार, तुमसे जुड़ी हुई सचेतन कलात्मकता की रेखाएँ, और ज़रूरत में तुम्हारे हाथों में दी गई चीज़ें, ये सब दर्शाते हैं कि तुम्हारा रचयिता, निर्माता और सहायक तुम्हारी विपन्नता की आहें और मदद के लिए तुम्हारी पुकार सुनता है। तुम पर दया करके, वह तुम्हारी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है। यह देखकर कि रचयिता और रचयिता

आपकी सबसे छोटी कोशिकाओं की मदद के लिए पुकार का जवाब देता है, वह - जो सब कुछ सुनता है,
सर्वज्ञ - क्या वह आपकी सहायता के लिए की गई पुकार का उत्तर नहीं देता?

हे विशाल कोश को जान लो, जिसे अहंकार या स्वत्व कहते हैं और जो अल्प से निर्मित है।
कहो: "हे ईश्वर! हे प्रभु! हे मेरे निर्माता! हे मेरे निर्माता! हे मेरे मालिक!
ऐ मेरे पालनहार! ऐ मेरे पालनहार! (सब चीज़ों पर) राज्य तेरा है और
आपकी जय हो! मैं इस शरीर में एक मेहमान हूँ, आपकी संपत्ति जो आपके पास है
मुझे सौंपा गया है।"

हे आत्मस्वरूप! जो तुम्हारा कभी नहीं होगा, उस पर अपना दावा क्यों करते हो?
इस झूठे दावे को छोड़ दें जो आपको तीव्र पीड़ा में डाल देता है। दया और स्नेह की भावनाओं पर विचार करें, जो आत्मा के उत्साहवर्धक अलंकरणों में से हैं: यदि उन्हें आपके दिखावटी स्वामित्व पर छोड़ दिया जाए, तो वे नुकसान पहुँचाएँगे

और आत्मा को पीड़ा पहुँचाते हैं।

उदाहरण के लिए, आप पर या दूसरों पर आने वाली दुर्भाग्य और विपत्तियाँ
आपको लगातार दर्द में रहने के लिए मजबूर कर सकता है और इसके लिए आप भाग्य को दोषी ठहरा सकते हैं
हालाँकि, जब आप किसी सैनिक को, जिसने अपना घोड़ा खो दिया है या जिसका घर गलती से जला दिया गया है, सीधे राजा के अधीन काम करते हुए देखते हैं, तो आप उसे राजा के अधीन काम करते हुए देखते हैं।
सिपाही पर ज्यादा दया मत करो। अगर तुम समझते हो कि दोनों घोड़े
और निवास राजा का है, आप देखेंगे कि उनका गायब होना
इससे उसकी संपत्ति में कोई खास कमी नहीं आएगी। न ही सैनिक को इस बात की चिंता है कि
इसके बारे में - वास्तव में, चूंकि वह गरीब है, इसलिए यह अत्यधिक संभावना है कि दया के कारण
राजा अपने नुकसान की भरपाई किसी बेहतर चीज़ से करेगा। उसी तरह,
ईश्वर दयालु है और वह अपने बंदों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करता है।
करुणा.43 इसलिए, ईश्वर के प्राणियों के प्रति करुणा आत्मा को प्रसन्न करती है। इसके विपरीत, यह मानने से उत्पन्न होने वाली दया कि सब कुछ उसका स्वामी है
यह स्वयं लगातार आत्मा का दम घोंटता और उसे व्यथित करता है।

ईश्वरीय एकता में विश्वास के आधार पर एक ठोस दृष्टिकोण वाला व्यक्ति हर चीज को देखता है
जीवित प्राणी के शरीर को राजा के जहाज पर किराए के कप्तान के समान माना जाता है, जिसे राजा द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो अपनी संपत्ति को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करता है। यह दृष्टिकोण
किसी को चींटी या मधुमक्खी को हमलावर कारणों से जूझते हुए देखने की अनुमति नहीं देता। इसके बजाय, इसके अनुसार, चींटी एक सांसारिक "वाहन" को नियंत्रित करती है जबकि अन्य-

---

43 ईश्वर और सृष्टि के साथ संबंध के कुछ पहलुओं पर लागू होने वाला सबसे अच्छा सादृश्य
यह एक राजा और उसकी प्रजा के बीच का मामला है। चूँकि कई अमूर्त सत्य, विशेष रूप से
जो ईश्वरीय सत्ता से संबंधित हैं, वे अमूर्त और समझने में कठिन हैं, ...
शास्त्रों में आमतौर पर दृष्टांतों, रूपकों, उपमाओं और सादृश्यों का इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर एक है
कभी-कभी इसे एक सम्राट या राजा के रूप में पेश किया जाता है, जिसके पास सिंहासन और सेनाएँ होती हैं। सैद नूरसी द्वारा इस तरह की उपमाओं का इस्तेमाल करने का एक और कारण यह हो सकता है कि उन्होंने यह किताब 1910 के दशक में लिखी थी,
जब अनातोलिया में अभी भी सल्तनत थी। (ट्र.)

वह एक "विमान" को नियंत्रित करता है, जिसकी बागडोर एक सर्वशक्तिमान की शक्ति के हाथों में है। किसी भी जानवर की दृष्टि में कारणों का अधिक महत्व नहीं है, वे सच्चे मालिक (सभी चीजों के) पर निर्भर करते हैं।

जब कोई यह कहता है कि: "हम ईश्वर के हैं और हम उसी की ओर लौट रहे हैं" (2:156), तो इसका मतलब है: सारी संपत्ति ईश्वर की है और मैं उसी के अधीन हूँ, उसी की ओर यात्रा कर रहा हूँ। मेरा अपने शरीर के साथ, जो कि उसकी संपत्ति है, ऐसा रिश्ता है जैसे एक सैनिक राजा की कोई चीज़ अपने पास रखता है।

जब लुटेरे उस पर हमला करते हैं, तो वह कहता है: "मुझे सौंपी गई इस संपत्ति की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। लेकिन, मैं अब इसकी रक्षा करने में असमर्थ हूँ। इस संपत्ति की तरह, मैं भी राजा का हूँ और उसके पास जा रहा हूँ।" जब ऐसे दृष्टिकोण वाले लोग किसी व्यक्ति को दुर्भाग्य से पीड़ित या व्यक्तिगत रूप से दुर्भाग्य से पीड़ित देखते हैं, तो वे निरंतर दु:ख से मुक्त हो जाते हैं। अन्यथा, वे लगातार दर्द और संकट से दबे रहते हैं।

दूसरा अध्याय

यह सुभान अल्लाह [ईश्वर की महिमा करने वाला वाक्यांश] के बारे में है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हम निम्नलिखित कारणों से परमेश्वर की महिमा कहते हैं:

• वह अपने ईश्वर होने के लिए आवश्यक शक्ति के माध्यम से पूर्ण रूप से शक्तिशाली है, पूर्ण रूप से धनवान है और शक्तिहीनता और आवश्यकता से मुक्त है। • वह अपने अस्तित्व, गुणों और कार्यों में पूर्ण रूप से परिपूर्ण है, और उसमें कोई दोष या कमी नहीं है। उसके कार्यों की पूर्णता उसके कार्यों की पूर्णता की ओर इशारा करती है, जो उसके नामों की पूर्णता की ओर इशारा करती है। उसके नामों की पूर्णता उसके गुणों की पूर्णता को इंगित करती है, जो उसके सार की पूर्णता की गवाही देती है।

सभी पूर्णता और सुंदरता उसकी पूर्णता और सुंदरता की एक धुंधली छाया मात्र हैं। आध्यात्मिक अनुभव और खोज के सभी लोग, साथ ही वे लोग जो सृष्टि में छिपे सत्यों को उजागर करते हैं, इस बात पर सहमत हैं कि सृष्टि अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के प्रकाश की एक छाया है।

• वह एक और एकल है। उसके प्रभुत्व में कोई भागीदार नहीं है, क्योंकि कार्य की एकता उसके कर्ता की एकता को इंगित करती है; उसके प्रभु और पालनहार होने में, जैसा कि कलम की एकता [समय और स्थान के "पृष्ठ" पर "लेखन") द्वारा दर्शाया गया है; या उसकी दिव्यता में, क्योंकि दिव्यता के लिए पूर्ण स्वतंत्रता और अद्वितीय और अद्वितीय होने की आवश्यकता होती है। • वह सर्वशक्तिमान और अनादि है, बिना किसी सहायक और मंत्री के, क्योंकि ऐसी सीमित आकस्मिकताएँ अनंत, पूर्ण शक्ति पर सीमाएँ लगाती हैं।

- वह शाश्वत और अनादि है, उसका कोई समान या बराबर नहीं है।
- वह अनिवार्यतः विद्यमान है, जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है
 आकस्मिकताओं के लिए।
- आकाशों और धरती में उसकी तुलना सबसे ऊँची है।44 वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है, और उसमें कोई गुण नहीं है जिसे कोई गुण रखने वाला व्यक्ति उस पर आरोपित करे।
 झूठी मान्यताएँ। उसमें कोई दोष नहीं है, क्योंकि दोष और खामियाँ विशेष रूप से
 आकस्मिक नश्वर। चूँकि ईश्वर अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है, तो ऐसा कैसे हो सकता है
 क्या वे उसी के लिए जिम्मेदार ठहराए जा सकते हैं?
- वह शाश्वत, शाश्वत है जो बदलता या परिवर्तित नहीं होता, क्योंकि ये
 उसकी विशेषताएँ विशिष्ट रूप से आकस्मिक, सृजित प्राणियों के लिए हैं तथा उसके परम आवश्यक अस्तित्व और एकत्व के विपरीत हैं।
- वह सृष्टि और अंतरिक्ष का निर्माता है जिसमें कोई विभाजन नहीं है और वह अखंड है।
 अंतरिक्ष में निहित है, क्योंकि यह दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक पूर्ण स्वतंत्रता के साथ असंगत है।

- वह शाश्वत, स्थायी है जिसका कोई आरंभ या अंत नहीं है।
- वह अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता है, जो उसके लिए अनुपयुक्त चीजों से मुक्त है, जैसे अवतार और मिलन।
 45 मिट्टी या मिट्टी से बनी किसी चीज का उन सब के प्रभु से क्या संबंध हो सकता है?

 जो आधिपत्य का दावा करते हैं? सीमित होने का मतलब है प्रभुत्व में होना, और कहना भगवान द्वारा कुछ उत्पन्न करने का अर्थ है उस पर सीमाएँ लगाना। वह ऐसी गलत धारणाओं और अवधारणाओं से पूरी तरह मुक्त और मुक्त है।
- वह वह है जिसे सारे फ़रिश्ते और आसमान और ज़मीन की सारी चीज़ें मंज़ूर हैं
 पृथ्वी पर भाग्य की कलम ने जो कुछ लिखा है, उसके माध्यम से गौरवान्वित होती है
 माथे.

तीसरा अध्याय

यह अल-हम्दु लिल्लाह [ईश्वर की स्तुति करने वाला वाक्यांश] के बारे में है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हम निम्नलिखित कारणों से परमेश्वर की स्तुति करते हैं:

---

44 चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर पूर्णतः अनंत है, इसलिए हम उसके सार को नहीं समझ सकते। हमें अपने गुणों का कुछ ज्ञान और समझ देने के लिए, वह आमतौर पर बोलते हैं दृष्टांत, समानताएं या तुलना। (ट्र.)

45 अवतार वह विश्वास है कि ईश्वर मानव शरीर धारण करता है। मिलन वह विश्वास है कि ईश्वर मानव शरीर धारण करता है। मनुष्य आत्मा में ईश्वर के साथ एक हो सकता है, इस प्रकार मानव रूप में ईश्वर बन सकता है। इस्लाम ऐसी मान्यताओं को नकारता है। (ट्र.)

• सभी प्राणी और रचनाएँ मौखिक रूप से या फिर आध्यात्मिक रूप से उसकी स्तुति और गुणगान करती हैं। उनके जीवन और अस्तित्व की भाषा, उनके गुणों को प्रकट करके पूर्णता। अपनी सम्पूर्णता में तथा अपनी प्रारम्भिक तथा आकस्मिक भाषाओं में, तथा अपनी आवश्यकता, अभाव तथा अपने उद्देश्यों में वे महामहिम की स्तुति करते हैं।

अपनी प्रदर्शित कलात्मकता, सुव्यवस्थितता, संतुलन, दृढ़ता और पूर्णता की भाषाओं में, तथा अपनी आराधना और महिमा के कार्यों में, वे उसकी महानता के गुणों का बखान करें और पुष्टि करें कि वह ईश्वर है, अनिवार्य रूप से विद्यमान, अनादि, नित्य, शाश्वत, एक और अद्वितीय, अद्वितीय, सभी द्वारा सदा-प्रार्थित, सर्वशक्तिमान, सर्व-आकर्षक, गौरवान्वित और सर्व-प्रभावशाली।

वे उसकी सुन्दरता और अनुग्रह के गुणों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि वह हमारा सृष्टिकर्ता, अत्यन्त दयालु, अत्यन्त करुणामय, सर्वप्रदाता, अत्यन्त उदार, सर्वप्रेममय, सर्वकृपालु, अतिसूक्ष्म, अति कृपालु और सर्वसुन्दर है।

वे उसका उल्लेख उसकी पूर्णता के गुणों के साथ करते हुए कहते हैं कि हमारा निर्माता और मालिक है, सर्व-जीवित, आत्मनिर्भर, सर्व-सहायक, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली, सर्वइच्छुक, सर्वश्रुत, सर्वदर्शी, सर्वभाष, सर्वभाष और सर्वसाक्षी। वे उसकी सुन्दर स्तुति भी करते हैं।
ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए नाम।४६

• ब्रह्मांड उसकी विशेषताओं को दर्शाकर उसकी स्तुति, महिमा और उत्थान करता है पूर्णता की। अपने सभी अध्यायों, खंडों, पृष्ठों, पंक्तियों, वाक्यों के साथ, और अक्षर, और इसके उद्देश्यों और कलात्मकता और डिजाइन के साथ यह दर्शाता है कि यह महानतम पुस्तक (ब्रह्मांड) अपने आप में एक संपूर्ण है। और इसमें हर कोई उसके गुण की "बिजली" को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है महिमा की, उनकी कृपा और सौंदर्य के गुणों की “चमक”, उसकी पूर्णता के गुण की “चमक”, उसके सुंदर नामों की “किरणें”।

• हम उस अस्तित्व के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं, जो शुद्ध अच्छाई है, वह हमें प्रदान करता है हमें; जीवन के आशीर्वाद के लिए, जिसके द्वारा अस्तित्व परिपूर्ण होता है; और

---

४६ एक दृष्टि से, परमेश्वर के दो प्रकार के गुण और नाम हैं: महिमा के और वे कृपा का नाम। सर्वव्यापी, सर्व-सम्मोहक, सर्व-शक्तिशाली, और इसी तरह के अन्य नाम पहले समूह से संबंधित हैं; नाम सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय, सर्व-प्रावधान, और इसी तरह की घटनाएँ दूसरे वर्ग में आती हैं। मृत्यु, तूफान, और ऐसी घटनाएँ आपदाएँ, अंततः, महामहिम के नामों के प्रकटीकरण के परिणाम हैं, बिना उन घटनाओं में मानवीय स्वतंत्र इच्छा को छोड़कर जिनमें हम शामिल हैं। जीवन जैसी घटनाएँ, खुशी के उदाहरण, जीवित प्राणियों का प्रावधान, और वसंत ऋतु की अभिव्यक्तियाँ हैं अनुग्रह के नाम. (ट्र.)

विश्वास का आशीर्वाद, सच्चे जीवन का सार और जिसके द्वारा जीवन पूर्णता प्राप्त करता है।

• हम विश्वास के प्रकाश के लिए उनकी स्तुति करते हैं जो अंधकार को दूर करता है और बाहरी दुनिया के साथ-साथ हमारे आंतरिक संसार को भी प्रकाशित करता है। विश्वास एक स्रोत है
प्रकाश का वह स्तंभ जिसमें से अनन्त की उत्पत्ति होती है
प्रभु की ज्ञान की किरणें.

• हम ईश्वर में विश्वास के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं, क्योंकि यह आत्मा को दुखों से मुक्ति दिलाता है
विनाश का अंधकार, ब्रह्माण्ड में पूर्ण विनाश की भावना, अस्तित्व में सभी चीजों को शोकगीत के रूप में देखना, तथा अन्य असंख्य विनाशकारी भावनाएं।

• हम विश्वास के प्रकाश के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं, जो हमें शरण, अनुग्रह और दया दिखाता है।
उदारता, प्रेम, दया और करुणा। विश्वास अनंत जीवन का अनावरण करता है,
अपनी चमक दिखाता है, और हमें अनंत खुशी का शुभ समाचार लाता है।
यह हमें सहारा और सहायता का स्रोत प्रदान करता है, हमें सिखाता है कि हमें किससे संपर्क करना चाहिए।
हमें किस पर भरोसा करना चाहिए और किससे मदद मांगनी चाहिए, और किससे पर्दा उठाना चाहिए
सृष्टि को घेरे हुए दया के मुख से विलाप। विश्वास
यह दोनों संसारों की तुलना करके वैध सुखों से अलग होने के कष्टों को भी दूर करता है, तथा अनुग्रह के अनन्त वृक्ष को दिखाकर अनुग्रह और आशीर्वाद की निरन्तरता को सक्षम बनाता है।

विश्वास का प्रकाश सभी चीजों और अवस्थाओं की सच्ची प्रकृति को दर्शाता है
विवादास्पद, अजीब, मृत और डरावना माना जाता है, और इसे बनाता है
यह स्पष्ट है कि वे सभी मित्रवत, परिचित, जीवंत और सौहार्दपूर्ण हैं। यह प्रकाश
सभी दुनियाओं और इस क्षेत्र और अगले को गले लगाता है, जो परिपूर्ण हैं
विश्वासियों के लिए दया के उपहारों के साथ। इस प्रकार विश्वासियों को कहना चाहिए: "सभी प्रशंसा
जो कुछ भी उसने बनाया है, उसके लिए परमेश्वर के प्रति समर्पित हो जाओ," और केवल उसी को प्रभु और
स्वामी मानकर स्वीकार करो और उसी से संतुष्ट रहो। उन्हें अपना दिल इस पर लगाना चाहिए
उसे ही पूजा और प्रेम का एकमात्र पात्र माना जाता है, तथा वह वस्तु या व्यक्ति है जो प्रेम और भक्ति का पात्र है।
जीवन का लक्ष्य.

• हम सारे संसार के पालनहार की प्रशंसा करते हैं, क्योंकि उसने सारे संसार पर दया की है।
हमारे गुरु मुहम्मद हैं। उनके और उनके संदेशवाहक के माध्यम से, प्रकाश
देवत्व की अवधारणा, जो के तहत बुझा दिया गया था
भ्रष्ट दर्शन और धर्मों का घना पर्दा फिर से उठ गया और
स्थिरता और स्थायित्व प्राप्त किया। उनके संदेशवाहक के माध्यम से, जो
संसार के प्रभु को प्रसन्न करने की बात मानवता के लिए स्पष्ट हो गई, और इसके माध्यम से
उसने मानवता को विश्वास की ओर निर्देशित किया है, जो सृष्टि का प्रकाश है
और अस्तित्व.

• हम इस्लाम की नेमत के लिए ईश्वर की प्रशंसा करते हैं, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो सारे संसार के रब को पसंद आता है। इस्लाम हमें दिखाता है कि उसे क्या पसंद है और हमारे रब, सारे संसार के रब और आकाश और धरती के रब, क्या चाहते हैं और क्या मंजूर करते हैं। • हम ईमान की रोशनी के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं, जो ईश्वर के नाम से शक्ति प्राप्त करती है, जो दयालु

और कृपालु है। जो लोग प्रशंसा करते हैं, उन्हें अपना ध्यान नेमतों से हटाकर नेमतों के काम पर लगाना चाहिए ताकि वे महसूस कर सकें कि नेमतों का दाता उन्हें देखता है, उनसे ज़्यादा उनके करीब है जितना वे खुद से हैं, और नेमतों के ज़रिए खुद को प्रकट करता है और एहसानों के ज़रिए प्यार करता है। जब लोग उसके खुद को प्रकट करने और प्यार करने की चाहत के बारे में जागरूक हो जाते हैं, तो वे उसके प्रति आभारी होने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

चौथा अध्याय

यह अल्लाहु अकबर (ईश्वर की स्तुति करने वाला वाक्यांश) के बारे में है।

प्रथम खंड

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हम निम्नलिखित कारणों से ईश्वर को महानतम कहते हैं:

• वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है, जो अपनी असीम शक्ति के माध्यम से सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है। वह बिना किसी अपवाद के, एक ही सहजता से सब कुछ बनाता है: तुम्हारा सृजन और मृतकों में से उठाना एक ही आत्मा को बनाने और उठाने के समान है (31:28)। वह एक विशाल तारा, एक संपूर्ण और एक प्रजाति को उतनी ही आसानी से बना सकता है, जितनी आसानी से वह एक छोटे कण, एक भाग और एक व्यक्ति को बना सकता है। • वह सर्वज्ञ है, जो दिव्य प्राणी के रूप में उसके लिए आवश्यक असीम ज्ञान के माध्यम से सभी चीजों को जानता है। कुछ भी उससे बच नहीं सकता, क्योंकि वह हर जगह

मौजूद है। व्यापक ज्ञान, सर्वव्यापी अनुग्रह और सर्वव्यापी चेतना; सभी चीजों को सटीक क्रम में रखने वाले आदेश; और फलदायी अध्यादेश और माप, नियत घंटे, नियमित प्रावधान, सार्वभौमिक विविधता की दया, दृढ़ और शानदार संगठन और सटीक देखभाल, जो सभी पूरे ब्रह्मांड में देखे जाते हैं, सर्वशक्तिमान के सर्वव्यापी ज्ञान की गवाही देते हैं: क्या वह जो बनाता है उसे नहीं जानना चाहिए? (67:14).

• उसकी इच्छा में सभी चीज़ें शामिल हैं। जबकि ब्रह्मांड और उसकी सामग्री के लिए एक निश्चित रूप धारण करने की अनंत संभावनाएँ थीं, इसे सटीक माप के अनुसार वर्तमान क्रम में व्यवस्थित किया गया था। पत्तियों, फूलों और फलों वाले एक पेड़ की तरह, सभी सुव्यवस्थित जीव सरल, निर्जीव तत्वों से बनाए गए थे। यह सब सर्वशक्तिमान की सर्वव्यापी इच्छा का प्रमाण है और यह दर्शाता है कि जो कुछ भी वह चाहता है वह होता है, और जो वह नहीं चाहता वह नहीं होता।

• वह शाश्वत "सूर्य" है, और यह ब्रह्मांड केवल उसकी रोशनी, उसके नामों की अभिव्यक्तियाँ और उसके कार्यों की छापों की एक छाया दिखाता है। • वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है। वह शाश्वत संप्रभु है।

सभी संसार उसके द्वारा स्थापित व्यवस्था और माप पर पूर्णतः निर्भर होकर उसके अधीन हैं।

• वह शाश्वत शासक है। उसने अपने सामान्य कार्य करने के तरीके, अपने भाग्य और आदेश के निर्देशों, अपनी इच्छा और बुद्धि के उपदेशों, अपनी कृपा और दया की आवश्यकताओं और अपने नामों और गुणों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्मांड को आदेश दिया। जिसे हम (प्रकृति के) नियम कहते हैं, वह सभी प्रजातियों पर उसके ज्ञान, आदेश और इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं।

• वह शाश्वत निर्माता है, जिसने इस वृहद ब्रह्मांड (ब्रह्मांड) और इस सूक्ष्म ब्रह्मांड (मानवता) को बनाया और स्थापित किया है। उसकी मुहर दोनों के माथे पर है, बल्कि दोनों के प्रत्येक भाग पर है।

• वह शाश्वत निर्माता है। यह ब्रह्मांड उसके भाग्य और निर्णय की "कलम" की रेखाओं, उसकी बुद्धि के "कम्पास" के डिजाइन, उसकी दया के प्रसार के फल, उसके अनुग्रह के "उज्ज्वल हाथ" की सजावट, उसकी उदारता के वितरण के फूल और उसकी कृपा की अभिव्यक्तियों की किरणों से बना है। • वह शाश्वत रूप से शक्तिशाली है। यह ब्रह्मांड उसकी शक्ति के चमत्कारों से बना है, जो इस बात की गवाही देता है कि वह सभी चीजों पर शक्तिशाली है। कोई भी चीज उसकी शक्ति के प्रभुत्व से बच नहीं पाई है (या नहीं बच पाई है), जिसके संबंध में एक छोटा कण और सूर्य समान हैं। • वह निर्माता, मूल

निर्माता और निर्माता है जिसके लिए सुंदर नाम हैं। सभी स्वर्गीय वस्तुएं उसकी दिव्यता और भव्यता के चमकदार सबूत हैं, और उसके प्रभुत्व और वैभव के दीप्तिमान गवाह हैं। • वह सभी चीजों का निर्माता है, सभी जीवित प्राणियों का प्रदाता है, सभी जरूरतमंदों को दान देने वाला है, दोनों लोकों में दयालु है।

हमारे स्वामी मुहम्मद और स्वर्ग उनकी व्यापक रचनाएँ हैं

दया। वह सभी चीज़ों का स्वामी और पालनहार है, जो सभी चीज़ों का पालन-पोषण, प्रशिक्षण और रखरखाव करता है।

• वह सभी चीज़ों का निर्माता है, जिसने इस दुनिया को व्यवस्थित किया है

और सभी चीजों को नियंत्रित करता है.

• वह मानवीय समझ से कहीं अधिक ऊँचा है, और अक्षमता और दोष से पूरी तरह मुक्त है। • वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है, क्योंकि

वह सबसे महान, सर्वोच्च, सबसे सुंदर, अपने आप में सर्वश्रेष्ठ है, और अपने आप में सबसे भव्य और सबसे राजसी है।

एक टिप्पणी

ये पवित्र वाक्य - सुभान अल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह और अल्लाहु अकबर - दैनिक प्रार्थनाओं के बाद बार-बार पढ़े जाते हैं ताकि उनके अर्थों को स्थापित और पुष्ट किया जा सके, जो हमारे मन और हृदय में एक दूसरे का समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिए, एक बड़े तालाब के बीच में एक पत्थर फेंकें और देखें कि एक के बाद एक बड़े घेरे कैसे बनते हैं। कहो, "बड़ा...बड़ा...बड़ा...बड़ा..." इसी सादृश्य का उपयोग करते हुए, हम पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के बाद सुभान अल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह और अल्लाहु अकबर को बार-बार पढ़ते हैं ताकि उनके अर्थों को स्थापित और पुष्ट किया जा सके और उनके पाठ से अपेक्षित फल प्राप्त हो सके।

* * *

प्रश्न: हम ईश्वर को सबसे महान कहकर उसकी तुलना जीवों से क्यों करते हैं ? आकस्मिकताओं की क्या भूमिका है, और हम क्यों कहते हैं कि अनिवार्य अस्तित्व वाला ईश्वर उनसे बड़ा है? क्या सर्वशक्तिमान के अलावा कोई अन्य सृष्टिकर्ता या सर्व-दयालु प्राणी हैं जो हमें उसे सृष्टिकर्ताओं में सर्वश्रेष्ठ और दयालुओं में सर्व-दयालु के रूप में वर्णित करने के लिए बाध्य करते हैं?

उत्तर: उससे बड़ा और महान, सुंदर, भव्य या राजसी कुछ भी नहीं है। ईश्वर हमारी कल्पना से कहीं अधिक महान है, हमारे मन और हृदय में जो कुछ भी है, उससे कहीं अधिक महान है, और हमारी इच्छाओं और लक्ष्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उसे सृष्टि के आवरण में छिपाया नहीं जा सकता।

"उत्तम रचनाकार" का अर्थ है कि वह उन सभी संभावित "रचनाकारों" से बेहतर है जो रचनात्मकता के गुण के प्रतिबिंबों के कारण किसी के मन में उत्पन्न होते हैं। यह ऐसा है जैसे यह कहना कि सूर्य सूर्यों से अधिक चमकदार है, इसका तात्पर्य यह है कि सूर्य स्वयं दर्पणों या दर्पण जैसी चीज़ों में अपनी छवियों से अधिक चमकदार है। साथ ही, वह उन सभी चीज़ों से बेहतर है जिन्हें मन निर्माता के रूप में समझ सकता है। कभी-कभी, चाहे सचेत रूप से या अनजाने में, हम गलती से रचनात्मकता को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं-

भौतिक कारणों या प्राणियों के प्रति ईश्वर का समर्पण। "ईश्वर सर्वश्रेष्ठ रचनाकार है" का अर्थ है कि वह कारणों से ढके बिना सृष्टिकर्ता के रूप में सर्वश्रेष्ठ है, और इसलिए हमें अवश्य ही उसका पालन करना चाहिए। प्रत्यक्ष भौतिक कारणों पर विचार किए बिना, सदैव उसकी ओर मुड़ें।

ऐसी तुलनाएं हमसे और उन चीज़ों से संबंधित होती हैं जिनसे हम संबंधित हैं; सार यह है कि उनका सर्वशक्तिमान से कोई संबंध नहीं है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी से कहते हैं अपने विशेष कर्तव्य के बारे में निजी तौर पर कि "राजा बेहतर और महान है," हमारा मतलब है कि राजा का कर्तव्य उसके तत्काल अधीनस्थों के कर्तव्यों से अधिक है। वरिष्ठ अधिकारी.

ईश्वर इतना महान है कि उसे समझना मस्तिष्क के लिए कठिन है, तथा अक्षमता और स्पर्श करने में कोई दोष नहीं है। वह अपने सार, गुण और कार्यों में बिल्कुल परिपूर्ण है।

दूसरा खंड

यह अल्लाहु अकबर (ईश्वर सबसे महान है) के दर्जों के बारे में है ।

पहला रैंक

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

> कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने कभी अपना कोई पुत्र नहीं बनाया,
> और जिसका कोई साझीदार नहीं और न उसे किसी संरक्षक की आवश्यकता है।
> निर्बलता और अपमान के कारण, उसकी महिमा का गुणगान करो। (18:111)

हम ईमान लाए हैं और तेरे हुक्म पर हैं। खुदा सबसे बड़ा है, सबसे बड़ा सभी चीजें शक्ति और ज्ञान में हैं, क्योंकि वह निर्माता है जिसने सब कुछ बनाया है मानवता और ब्रह्मांड को उनकी शक्ति द्वारा, और मानवता और अंकित किया गया अपने भाग्य की “कलम” से ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है। सूक्ष्म जगत (मानवता) की तरह, यह भी स्थूल जगत (ब्रह्मांड) उसकी शक्ति द्वारा निर्मित कुछ है, जो उसके द्वारा "अंकित" है उसका भाग्य। उसने इसे एक “मस्जिद” बनाया है, जबकि मनुष्यों को इसमें इबादत करने वाला बनाया है। उसने पहले को निवास के रूप में स्थापित किया है, और दूसरे को उसमें एक नौकर रहता है।

ब्रह्मांड में उनकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई है, जबकि मानवता को रंगने की उनकी कला भाषण के रूप में विकसित हुई है। ब्रह्मांड में उनकी शक्ति उनकी महिमा को प्रदर्शित करती है, जबकि मानवता के प्रति उनकी दया उनके प्रावधान की व्यवस्था करती है। ब्रह्मांड में उनकी महिमा इस बात की गवाही देती है कि वह एक हैं, जबकि उनकी

मानवता का प्रावधान यह घोषणा करता है कि वह एक है। ब्रह्मांड पर उसकी मुहर, पूरे ब्रह्मांड पर और उसके भागों पर, कभी न खत्म होने वाली गति में स्पष्ट शांति में खुद को दिखाती है, जबकि मानवता पर उसकी मुहर ब्रह्मांड के प्रत्येक भाग पर है साथ ही सम्पूर्ण मानव शरीर भी।

उसके कामों को देखो, जो दृढ़ और सुव्यवस्थित हैं।
पूर्ण प्रचुरता के बावजूद व्यवस्था, पूर्ण माप और संतुलन के बावजूद
पूर्ण गति, पूर्ण सुविधा के बावजूद पूर्ण दृढ़ता, पूर्ण सौंदर्य
पूर्ण विविधता के बावजूद कला, पूर्ण सामंजस्य और सहसंबंध के बावजूद
पूर्ण दूरी, पूर्ण समग्रता के बावजूद पूर्ण भेद, तथा
अनंत अर्थव्यवस्था के बावजूद पूर्ण मूल्य और महत्व। यह स्पष्ट गुणवत्ता
अस्तित्व एक समझदार व्यक्ति के लिए गवाही देता है, और जो इनकार करता है उसे मजबूर करता है
यह स्वीकार करना कि अस्तित्व एक परम शक्तिशाली, पूर्णतः सर्वज्ञ का है।

अस्तित्व को एक के ऊपर आरोपित करके बहुत आसानी से समझाया जा सकता है
दिव्य सत्ता। यदि आप इसे विभिन्न स्रोतों से जोड़कर समझाने की कोशिश करते हैं, तो आप
दुर्गम बाधाओं का सामना करें। यदि आप इसका श्रेय एक ईश्वर को देते हैं
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण एक मधुमक्खी और एक पक्षी के निर्माण जितना आसान हो जायेगा।
मधुमक्खी को बनाना उतना ही आसान होगा जितना कि फल। इसके विपरीत, यदि आप इसे
अनेक मूलों के कारण, एक मधुमक्खी का निर्माण करना ब्रह्मांड के निर्माण जितना ही कठिन होगा, तथा एक
फल का निर्माण करना ब्रह्मांड के सभी वृक्षों के निर्माण जितना ही कठिन होगा।
कविता.

ऐसा इसलिए है क्योंकि एक अकेला प्राणी, एक ही गति से,
एक प्रभाव और एक पूरे के साथ सौदा। अगर उस प्रभाव या उपचार की उम्मीद है
अनेक प्राणियों के बीच, यदि यह प्राप्त भी होगा तो अत्यंत कठिनाई से ही,
कई विवादों के बाद। कौन सा आसान है या अधिक कठिन: सेना का प्रबंधन करना
एक कमांडर या सैनिकों द्वारा, एक वास्तुकार द्वारा एक इमारत का निर्माण
या पत्थर, जिसमें ग्रह एक ही सूर्य के चारों ओर घूमते हैं या इसके विपरीत?

जब अस्तित्व को एक दिव्य सत्ता के रूप में माना जाता है, तो संबंध
अस्तित्व और उस सत्ता के बीच का अन्तर एक असीम शक्ति की तरह हो जाता है, और
कारणों की शक्ति एक समान नहीं होनी चाहिए। साथ ही, उत्पन्न प्रभाव भी समान हो जाता है
उस सत्ता के अनुपात में महान जिसके लिए यह जिम्मेदार ठहराया जाता है। अन्यथा प्रत्येक
कारण इतना असीम रूप से शक्तिशाली होना चाहिए कि वह अस्तित्व का निर्माण कर सके,
और उत्पन्न प्रभाव केवल उसके अपने आकार के समानुपाती होगा।

जब सभी चीजों को एक ईश्वरीय सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उनका कोई महत्व नहीं होता है।
पूर्णतया अस्तित्वहीनता से निर्मित होना, क्योंकि सृजन का अर्थ है उन चीजों को बाह्य, भौतिक अस्तित्व देना
जो पहले से ही दिव्य ज्ञान में विद्यमान हैं।
यह दर्पण में प्रतिबिम्बित रूप को विकसित करने, मन में अर्थ को शब्दों में व्यक्त करने या अदृश्य स्याही में लिखे
अक्षरों को दृश्यमान बनाने के लिए किसी पदार्थ को रगड़ने जैसा है। हालाँकि, अगर चीज़ों को खुद या उनके
कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उन्हें पूर्ण अस्तित्वहीनता से बनाया जाना चाहिए। यह असंभव है।

जिस सहजता से एक दिव्य सत्ता यह कार्य करती है, उससे अस्तित्व बनता है ऐसी चीजों को आसान माना जाता है जो बिल्कुल आवश्यक हैं; बाद की कठिनाई इससे कहीं अधिक है माप। एक जीवित प्राणी के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसे बनाने वाले कण, जो मिट्टी, पानी और हवा में फैले हुए हैं, उन्हें एक साथ आना चाहिए। इसलिए प्रत्येक कण या परमाणु को सार्वभौमिक ज्ञान होना चाहिए और पूर्ण इच्छाशक्ति। ऐसी ज्ञान और इच्छाशक्ति वाली कोई भी चीज़ स्वतंत्र होगी और उसे किसी भी भागीदार की ज़रूरत नहीं होगी। ब्रह्मांड में कहीं भी ऐसा नहीं है ऐसी चीज़ों और भागीदारों का कोई संकेत नहीं मिला है। स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण पृथ्वी को एक परिपूर्ण, अनंत शक्ति की आवश्यकता है जिसका कोई साथी न हो। अन्यथा, यह शक्ति को एक सीमित शक्ति द्वारा सीमित करना होगा, जो अकल्पनीय है। एक असीम शक्ति को सहयोगियों की आवश्यकता नहीं होती और न ही उन्हें स्वीकार करने की बाध्यता होती है, भले ही वे अस्तित्व में हों (वे नहीं हैं)।

इस शक्ति का कोई साझेदार, सहायक या मंत्री नहीं है। भौतिक कारण हैं शाश्वत शक्ति के संचालन के सामने केवल एक पतला पर्दा है, और कोई रचनात्मक नहीं है चीज़ों के अस्तित्व पर प्रभाव। मनुष्य, सबसे महान कारण और इच्छाशक्ति से लैस, उनके कार्यों में उनकी बहुत छोटी सी भूमिका होती है स्वतंत्र इच्छा से किया गया। अगर हमारा खुद पर पूरा नियंत्रण नहीं है, हमारी स्वतंत्र इच्छा के बावजूद, जानवर, पौधे और निर्जीव वस्तुएं [और निर्जीव, अंधे और बहरे कानून जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है] स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता के साथ सृजन और नियंत्रण में भागीदार बनें चीज़ें?

जाहिर है, वह "लिफाफा" जिसमें राजा अपने उपहार रखता है, वह "रूमाल" जिसमें वह अपनी भेंट लपेटता है, या वह "सैनिक" जिसके द्वारा वह अपनी भेंट चढ़ाता है। जो अपनी कृपा भेजता है, वह उसके राज्य में उसका भागीदार नहीं हो सकता। और कारण, जो "सैनिकों" की तरह हैं जिनके माध्यम से पूर्ण संप्रभु वह जो अपने उपहार हमें भेजता है, वह लिफाफे या संदूक जिसमें वह हमारे लिए अपनी भेंटें रखता है, वह रूमाल जिसमें वह हमारे लिए अपनी भेंटें लपेटता है, वह उसके साथ साझेदार नहीं हो सकते या उसके आदेशों के क्रियान्वयन में रचनात्मक प्रभाव का साधन नहीं हो सकते।

दूसरा रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह सबसे बड़ा है। सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, रचयिता, सर्वबुद्धिमान, दयालु, दयावान। सभी सांसारिक प्राणी और स्वर्गीय वस्तुएँ एक सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की शक्ति के चमत्कार हैं। पूरे बगीचे में फैले बहुरंगी और सजे हुए पौधे और सजे हुए जानवरों की असंख्य प्रजातियाँ

पृथ्वी एक सर्वज्ञ निर्माता की कला का चमत्कार है। इसके मुस्कुराते फूल और

सजे हुए फल एक दयालु, सर्व-करुणामय ईश्वर की दया के उपहार हैं
एक।

प्रत्येक वस्तु यह घोषणा करती है कि उनका निर्माता, निर्माता और उपहार देने वाला वही है
सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, सब कुछ जानता है, और सभी चीज़ों को अपने में समाहित करता है
दया और ज्ञान। उसकी शक्ति के संबंध में, बिना किसी अपवाद के सब कुछ समान है। सभी पिछली घटनाएँ एक सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं, और
इस बात की गवाही दें कि वह निर्माता सभी भविष्य की आकस्मिकताओं पर शक्तिशाली है और
वह भविष्य में जो चाहे कर सकता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ है
सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, और सर्वशक्तिमान।

महिमा हो उसकी जिसने पृथ्वी के बगीचे को प्रदर्शनी बना दिया है
उनकी कला, उनकी रचनात्मकता के उत्पादों का संयोजन स्थल, एक ऐसा स्थान जहाँ
उसकी शक्ति और बुद्धि प्रकट होती है, एक बगीचा जहाँ उसकी दया खिलती है,
वह खेत जहाँ स्वर्ग के लिए बीज बोए जाएँ, और वह स्थान जहाँ प्राणी आते और जाते हैं
निश्चित माप के अनुसार निरंतर प्रवाह में।

अलंकृत पशु, सजे-धजे पक्षी, फलदार वृक्ष, पुष्पित पौधे
पौधे-सभी उसके ज्ञान के चमत्कार हैं, उसकी कला के चमत्कार हैं, उसकी कृपा के उपहार हैं।
उदारता और उसकी कृपा के प्रमाण। फल देने का वादा करते हुए मुस्कुराते फूल, पक्षी
भोर में गाना, फूलों पर पड़ती बारिश की बूंदें, बच्चों के प्रति माँ की करुणा
उसका शिशु - ये सब एक सर्व-प्रेमी के स्वयं को ज्ञात करने के उदाहरण हैं,
एक दयालु व्यक्ति खुद को प्यार करता है, करुणा की छाप
एक अत्यन्त दयालु परमेश्वर, तथा एक अत्यन्त दयालु परमेश्वर की दया जिन्न, मनुष्य, आत्मिक प्राणी, फ़रिश्तों और जानवरों पर होती है।

बीज, फल, अनाज और फूल बुद्धि के चमत्कार हैं, कला के चमत्कार हैं,
दया के उपहार, [ईश्वरीय] एकता के प्रमाण, और उसकी उदारता के साक्षी
वे कहते हैं कि उनका रचयिता सर्वशक्तिमान है और जानता है कि परलोक में क्या होगा।
सभी चीजें, और वह सभी चीजों को दया, ज्ञान, रचनात्मकता, पोषण, निर्माण और रूपांकन में शामिल करता है।

सृजन, व्यवस्था, पालन, निर्माण और स्वरूपण के अपने गुणों के संबंध में सूर्य एक बीज के समान है,
तारा एक फूल के समान है, और पृथ्वी एक फूल के समान है।
एक अनाज। बीज और फल बहुलता के दायरे में [दिव्य] एकता को दर्शाते हैं,
और भाग्य के संकेत और शक्ति के संकेत हैं। बहुलता (ब्रह्मांड और इसकी सामग्री) का स्रोत एकता का क्षेत्र है।
बहुलता उत्पत्ति और निर्माण में निर्माता की एकता की गवाही देती है, और एकता में समाप्त होती है

सृजन, पोषण और रखरखाव में निर्माता की बुद्धिमता की ओर इशारा करते हुए।

चूँकि सार्वभौमिक दृष्टिकोण सभी विवरणों को सम्मिलित करता है और उन पर विचार करता है, इसलिए बुद्धि
यह प्रकट करता है कि सभी चीजों का निर्माता विशेष को ध्यान में रखता है। यदि विशेष एक फल है, तो जाहिर है कि यह कारण है कि पेड़ क्यों बनाया गया था। हम हैं

ब्रह्मांड का फल, सृष्टिकर्ता का सबसे स्पष्ट उद्देश्य [ब्रह्मांड का निर्माण करना]। हृदय एक बीज या नाभिक [व्यक्ति का] जैसा है, और सृष्टि के निर्माता का सबसे चमकीला दर्पण है। इस प्रकार हम ब्रह्मांड की धुरी हैं जिस पर सृष्टि का चक्र घूमता है, और जिसके लिए ब्रह्मांड लगातार नष्ट होता है और बदलता है, रूपांतरित होता है और नवीनीकृत होता है।

> हे महानतम! हे ईश्वर, आप ही वह हैं जिनकी महानता, महानता और महिमा को बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता।
> सभी चीजें एक स्वर में घोषणा करती हैं: हे सत्य के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, निरंतर खोजो और सदा कहो: हे जीवित!

तीसरा रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह सर्वशक्तिमान, सर्व-निर्धारक, सर्वज्ञ, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-निर्माण करने वाला, सर्व-उदार, सर्व-सूक्ष्म और कृपालु, सर्व-सजाने वाला, सर्व-प्रेमी, स्वयं को ज्ञात कराने वाला, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय, सर्व-दयावान, सर्व-सुंदर, परम सौंदर्य और पूर्णता वाला, तथा शाश्वत निर्माता है। संसारों (संपूर्ण और अंशों में) और सृष्टि (संपूर्ण और अंशों में) के सत्य, तथा अस्तित्व और रखरखाव सभी एक निश्चित क्रम, निर्धारण, ज्ञान और बुद्धि के अनुसार उसके आदेश और नियति की "कलम" द्वारा खींची गई रेखाओं में निहित हैं, और एक निश्चित कला और फैशन के अनुसार उसके ज्ञान और बुद्धि के "कम्पास" द्वारा बनाए गए डिजाइनों में निहित हैं।

वे उसकी कला के "उज्ज्वल हाथ" द्वारा बनाए गए अलंकरणों से मिलकर बने हैं, अनुग्रह और उदारता के साथ फैशन, सजावट और चित्रण; उसकी कृपा, उदारता, ज्ञाता बनाने और दया और उदारता के साथ प्यार करने के फूलों में; और अनुग्रह और पूर्णता के साथ उसकी दया, उदारता, दया और स्नेह के बहते झरने के फलों में। वे एक शाश्वत सौंदर्य और शाश्वत पूर्णता के विकिरणों से भी मिलकर बने हैं, जैसा कि इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि दर्पण [उन सत्यों को दर्शाते हैं - यानी, सभी जीव] नश्वर हैं और प्रतिबिंब गायब हो जाते हैं, जबकि सौंदर्य की अभिव्यक्तियाँ स्थायी हैं और अपने प्राप्तकर्ताओं की नश्वरता के बावजूद उपहार प्रदान करना जारी रखती हैं।

दर्पणों की नश्वरता और प्राणियों का क्षय, अत्यधिक प्रचुरता में [दिव्य नामों, गुणों और कार्यों का] निरंतर प्रकटीकरण होने के बावजूद, एक स्पष्ट संकेत और ठोस तर्क है कि प्रकट सौंदर्य और खिलती हुई पूर्णता उन लोगों की नहीं है जिन पर वे दैवीय गुणों, गुणों और कार्यों का प्रभाव डालती हैं।

यह अमूर्त सौंदर्य और सदैव नवीनीकृत परोपकार, अनिवार्य रूप से विद्यमान और सर्व-प्रेममय, स्थायी एक की सबसे स्पष्ट व्याख्या और स्पष्ट प्रमाण है।

एक परिपूर्ण कार्य एक परिपूर्ण कार्य की ओर संकेत करता है। एक परिपूर्ण कार्य एक परिपूर्ण नाम और एक परिपूर्ण कर्ता को इंगित करता है। एक परिपूर्ण नाम एक परिपूर्ण गुण को दर्शाता है। एक परिपूर्ण गुण एक परिपूर्ण कार्य या आवश्यक क्षमता को दर्शाता है। एक परिपूर्ण कार्य या आवश्यक क्षमता उस सत्ता की पूर्णता को प्रदर्शित करती है जो उस सत्ता के लिए उपयुक्त है, जो सबसे स्पष्ट सत्य है।

चौथा रैंक

महामहिम की महिमा हो। ईश्वर सबसे महान है, क्योंकि वह सर्व-न्यायप्रिय और न्याय का स्रोत है, वह सर्व-न्यायकर्ता, सर्व-शासक और सर्व-बुद्धिमान है। उसने अपनी इच्छा और बुद्धि के सिद्धांतों से 6 दिनों में इस ब्रह्मांड के वृक्ष की स्थापना की, अपने आदेश और नियति के निर्देशों के अनुसार इसे शाखाओं में विभाजित किया, अपने कार्य करने के तरीके के नियमों के अनुसार इसे व्यवस्थित किया, अपनी कृपा और दया के उपदेशों से इसे सजाया और अपने नामों और गुणों के प्रकटीकरण के माध्यम से इसे प्रकाशित किया। उसकी रचना की सुव्यवस्था और संतुलन; उसके प्राणियों की सजावट; उनके बीच समानता, सही अनुपात, परस्पर सहायता और उत्तर; और नियति ने प्रत्येक के लिए उसकी क्षमता के अनुसार जो कुछ भी निर्धारित किया है, उसमें दृढ़, सचेत कलात्मकता, इस बात की पुष्टि करती है।

सृष्टि की व्यवस्था में एक व्यापक, सर्वसमावेशी बुद्धिमत्ता है; प्रत्येक वस्तु को आवश्यक भागों और अंगों से सुसज्जित करने, साथ ही उसे सुन्दर और सुसंगठित बनाने में एक पूर्ण अनुग्रह है; प्रत्येक प्राणी की आवश्यकताओं को पूरा करने में एक सर्वव्यापी दया है; प्रत्येक प्राणी द्वारा सृष्टि में इन सभी गुणों के पालन-पोषण और पालन-पोषण में एक सर्वसमावेशी प्रावधान है और प्रत्येक जीवित वस्तु या प्राणी को प्रदान किया गया जीवन उसे सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्तियों का प्रदर्शन बनाता है; और कुछ प्रयोजनों के लिए उसे प्रदान की गई सुन्दरता यह दर्शाती है कि सृष्टिकर्ता एक है।

एक प्रजाति के सदस्य मर जाते हैं लेकिन प्रजाति बनी रहती है। प्रत्येक प्रजाति अपने निर्माता के प्रति सहज प्रेम महसूस करती है, जिसे वह पूजती है, और उसके प्रति आकर्षण महसूस करती है। इसका अस्तित्व में आना, निर्माण और जीवन, और इसके शारीरिक अंगों का सही ढंग से काम करना, अद्भुत है। सृष्टि में ऐसे सभी गुण यह भी दर्शाते हैं कि निर्माता और भगवान एक हैं।

पौधों और जानवरों का पालन-पोषण और पालन-पोषण किया जाता है, और वे बुद्धिमानी से और कई उत्कृष्ट उद्देश्यों के लिए उत्पादन करते हैं। पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तनों में एक परिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण क्रम है, और प्रत्येक चीज़ में अद्भुत, परिपूर्ण कलात्मकता और सुंदरता है

इसके बावजूद कि यह सब एक साथ अस्तित्व में आया। यह सब दर्शाता है कि सृष्टिकर्ता और शासक एक ही है।

ब्रह्मांड में असंख्य जीवों को भोजन की आवश्यकता होती है। सृष्टि बहुत विविधतापूर्ण है, इसलिए सृष्टि के प्रत्येक भाग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत विविधता की आवश्यकता होती है। कोई भी प्राणी अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। यह देखते हुए कि एक अंगूर की कीमत ब्रह्मांड के लगभग बराबर है, क्योंकि इसे बनाने के लिए सभी तत्वों (विशेष रूप से सूर्य, मिट्टी, पानी और बेल) के सहयोग की आवश्यकता होती है, यह स्पष्ट है कि कोई भी प्राणी अपनी एक भी आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन हर प्राणी की ज़रूरतें अप्रत्याशित स्रोतों से समय पर पूरी हो जाती हैं। यह सार्वभौमिक, सटीक प्रावधान दर्शाता है कि निर्माता और प्रदाता एक है।

हर प्राणी मूलतः कमज़ोर और असहाय है। उसके पास अपना कुछ भी नहीं है।
शक्ति और धन के नाम पर जो कुछ भी उसके पास है, वह सृष्टिकर्ता की ओर से है। अपनी कमजोरी और असहायता को स्वीकार करने पर उसे ईश्वरीय सहायता मिलती है।
इसलिए इसकी ताकत इसकी कमजोरी में निहित है, और इसकी शक्ति इसकी असहायता से प्राप्त होती है। निर्जीव पदार्थ और पदार्थ जीवन और विवेक से सुसज्जित और विकीर्ण होते हैं। वे अपने जीवन-इतिहास के दौरान कई बदलावों से गुजरते हैं। उनकी ज़रूरत, उनकी जन्मजात क्षमता, ईश्वर द्वारा स्वीकार्य प्रार्थना है।

यह सब दर्शाता है कि सृष्टिकर्ता एक है, अपरिवर्तनीय है और प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाला है।

एक सचेतन, जीवित प्राणी अपनी प्रार्थनाओं और पूजा के कार्यों के माध्यम से ईश्वर के निकट आता है। ईमानदारी से, नियमित पूजा और प्रार्थनाएँ व्यक्ति को गहरी अंतर्दृष्टि और "हृदय की आँख" प्रदान करती हैं, जिसके द्वारा वह वस्तुओं और घटनाओं के अर्थ और सृष्टि में दिव्य उद्देश्यों को समझ सकता है, और सृष्टि में और दिव्यता से संबंधित कुछ छिपे हुए सत्यों को उजागर कर सकता है। ईश्वर की नियमित पूजा, प्रार्थना और स्मरण व्यक्ति को शांति और स्थिरता प्रदान करते हैं और उसे एक परिपूर्ण मनुष्य, सृष्टि का एक सर्वोत्तम उदाहरण बनाते हैं - सृष्टि के ऐसे सभी गुण और कई अन्य अवर्णित गुण इस बात के साक्षी हैं कि यह ब्रह्मांड एक ही सर्वज्ञ द्वारा संचालित है; एक ही, सर्व-दयालु प्रभु, एक ही सबका चाहने वाला, एक ही स्वामी की सेवा करता है; और एक ही शासक के अधीन है। साथ ही, सृष्टि का उद्गम एक ही शक्ति है, जिसकी एकता की छाप उसके प्रत्येक "संदेश" पर, उसके प्रत्येक "पृष्ठ" पर, और उन संदेशों और पृष्ठों की संख्या जितनी अधिक है, उतनी ही अधिक है।

हर फूल और फल, पौधा और पेड़, जानवर और चट्टान, रेत का कण और पत्थर एक स्पष्ट मुहर है जो यह दर्शाता है कि जिसने इसे रखा है वह इस स्थान, भूमि और समुद्र और उनकी सभी सामग्री का "लेखक" है। वह आकाश के पृष्ठ पर सूर्य और चंद्रमा का डिज़ाइनर है। उस डिज़ाइनर की महिमा का गुणगान हो। वह सबसे महान ईश्वर है।

इसलिए संसार एक स्वर में गाता है: उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।

पांचवां रैंक

ईश्वर सबसे महान है। वह सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान, निर्माता और सर्वदर्शी है। सभी आकाशीय पिंड और मोती जैसे तारे उसकी दिव्यता के प्रमाण हैं
और भव्यता, उसके प्रभुत्व और शक्ति के साक्षी हैं। वे इसकी पुष्टि करते हैं और
उनके प्रभुत्व के राज्य की महिमा, उनके शासन की विशालता का बखान करें
और बुद्धि, और उसकी शक्ति की भव्यता और महानता।

क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया है? (50:6) आकाश की ओर देखो और उसमें निश्चल सन्नाटा, उद्देश्यपूर्ण गति को देखो,
और इसकी व्यवस्थित रचना और सुसंगठित कला के साथ शानदार चमकदार मुस्कान। इसका "दीपक" ऋतुओं के परिवर्तन के लिए चमकता है, इसका "लालटेन" दुनिया की रोशनी के लिए चमकता है, इसके सितारे दुनिया की सजावट के लिए चमकते हैं।
सभी ब्रह्माण्ड के संगठन में असीम संप्रभुता की घोषणा करते हैं और
रखरखाव।

वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता सब कुछ जानता है और उसकी इच्छाशक्ति इतनी व्यापक है कि जो कुछ वह चाहता है वह हो जाता है, और जो कुछ वह नहीं चाहता है वह नहीं होता है।
एक पूर्ण, सर्वव्यापी शक्ति द्वारा सभी चीजों पर शक्तिशाली है
उसकी दिव्य सत्ता के लिए। जिस प्रकार सूर्य का बिना अस्तित्व के अस्तित्व में होना अकल्पनीय है
प्रकाश और गर्मी, यह स्वर्ग के ईश्वर और निर्माता के लिए अकल्पनीय है
सर्वव्यापी ज्ञान और परम शक्ति से रहित होना। वह जानता है
वह अपने दिव्य अस्तित्व के लिए आवश्यक सर्वव्यापी ज्ञान द्वारा सभी चीजों को जानता है।
सभी चीज़ों के साथ इसके संबंध के कारण, इस ज्ञान से कोई भी बच नहीं सकता
और इसकी भेदक क्षमता और व्यापकता।

सृष्टि में जो कुछ भी देखा जाता है (जैसे, सुव्यवस्था, संतुलन और सामंजस्य; सर्व-समावेशी ज्ञान, पूर्ण पक्षपात, अच्छी तरह से स्थापित उपाय, सुव्यवस्थित वितरण, फलदायी आदेश, नियुक्त घंटे, नियमित प्रावधान,

और (सब वस्तुओं के प्रति) सुखद देखभाल, और पूर्ण, सुस्पष्ट माप, व्यवस्था और दृढ़ता, और उनकी पूर्ण सहजता) अदृश्य और सभी वस्तुओं के ज्ञाता के व्यापक ज्ञान की गवाही देती है।

आयत: क्या वह जिसने पैदा किया है, वह न जाने? वह तो अत्यन्त सूक्ष्म, सर्वज्ञ है (67:14),
बताते हैं कि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए उसे जानना ज़रूरी है। अगर किसी के काम में कला की खूबसूरती किसी छोटी सी हद तक उसकी चेतना की ओर इशारा करती है
एक घने अंधेरे रात में तारे की चमक, मानवता की रचना इसकी ओर इशारा करती है
सृष्टिकर्ता का ज्ञान दोपहर के समय सूर्य के तेज के बराबर है।

चूँकि वह सब कुछ जानता है, इसलिए उसकी इच्छा सब कुछ को समाहित करती है।
उसकी इच्छा के बिना कोई भी स्थान नहीं है। शक्ति प्रभाव उत्पन्न करती है, ज्ञान भेद करता है, और इच्छा शक्ति बांटती है और व्यक्ति बनाती है। इस तरह से चीजें अस्तित्व में आती हैं-

सर्वशक्तिमान की इच्छा के उतने ही साक्षी हैं जितनी चीजों की विशेषताएं, गुण और अवस्थाएं हैं।

प्रत्येक वस्तु को उसके लिए असंख्य विकल्पों और संभावनाओं में से उद्देश्यपूर्ण रूप से चुने गए विशिष्ट चरित्र और गुणों के साथ बनाना और गढ़ना; प्रत्येक को असीम रूप से विविध प्रवाह में सबसे नाजुक ढंग से और सबसे संवेदनशील उपायों के साथ बनाना; सरल, निर्जीव तत्वों से विविध, अच्छी तरह से निर्मित जीवों का निर्माण करना (उदाहरण के लिए, एक शुक्राणु [और एक अंडे] से मानवता को उसकी इंद्रियों और अन्य सभी प्रणालियों और शारीरिक अंगों के साथ बनाना, एक अंडे से एक पक्षी और उसके शारीरिक तंत्रों को बनाना, एक बीज से उसके सभी भागों के साथ एक पेड़ बनाना) यह प्रमाणित करता है कि सर्वशक्तिमान की इच्छा और पसंद से हर चीज को उसका व्यक्तिगत चरित्र और गुण दिए गए हैं। उसकी जय हो।

किसी प्रजाति के सदस्यों के बीच शारीरिक संरचनाओं और बुनियादी प्रणालियों में सामंजस्य यह दर्शाता है कि उनका निर्माता एक और एकल है। हालाँकि, यह तथ्य कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है, यह दर्शाता है कि वह एक और एकल निर्माता जो चाहता है वही करता है और जैसा चाहता है वैसा ही न्याय करता है। महामहिम की महिमा हो।

चूँकि सर्वज्ञ और सर्व-इच्छुक सृष्टिकर्ता के पास सर्वव्यापी ज्ञान और सर्वसमावेशी इच्छा है, इसलिए उसके पास एक पूर्ण शक्ति है जो उसके दिव्य अस्तित्व से निकलती है और उसके लिए आवश्यक है। उस शक्ति का कोई विपरीत नहीं है, क्योंकि इसके लिए दो विपरीतों के समझौते या संयोजन की आवश्यकता होगी, जो सार्वभौमिक सहमति से अकल्पनीय है। उस शक्ति में कोई ग्रेड नहीं हो सकता, क्योंकि उसके संबंध में सब कुछ, बिना किसी अपवाद के, समान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शक्ति भौतिक नहीं है।

अस्तित्व के अभौतिक आयाम की पारदर्शिता जिसके साथ वह व्यवहार करता है, वस्तुओं के बीच का अंतरसंबंध, सृष्टि में सटीक संतुलन, अस्तित्व का पूर्ण क्रम और उसके प्रति अस्तित्व की परम आज्ञाकारिता, इस बात की गवाही देते हैं।47 सृष्टि में पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य, उसमें देखी गई पूर्ण मापनीयता और विशिष्टता, सृजन की गति और सहजता तथा सृजित की अनंत बहुलता, वैयक्तिकता और विविधता के बावजूद, भी इस तथ्य की गवाही देते हैं।

जिसके पास वह शक्ति है, वह बिना किसी अपवाद के, बड़ी आसानी से कुछ भी बना सकता है क्योंकि वह एक और एकल है, और उसके अस्तित्व की आवश्यकता और निर्मित से पूरी तरह से अलग होने के कारण (वह अप्रतिबंधित, अविभाज्य और स्थान से असंबद्ध है)। कुछ भी उसे बाधित नहीं करता है; बल्कि, जो कुछ भी बाधा प्रतीत होता है वह आसानी का साधन बन जाता है, हालाँकि

47 इन गुणों को उनतीसवें वचन के दूसरे उद्देश्य में समझाया गया है। (ट्र.)

उसे अपने आदेशों के पालन में किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है।
वह ऐसा कर सकता है क्योंकि वह जो कुछ भी बनाता है, बिना किसी अपवाद के, उसमें वही गुण होते हैं।
कला की गुणवत्ता वैसी ही है जैसी हर दूसरी चीज़ में दिखती है। जो कोई भी बाद वाली चीज़ बनाता है, वह पहले वाली चीज़ भी बनाता है। वह जो बीज बनाता है, जो एक छोटी-सी नकल होती है
उसके वृक्ष का जिसमें सृष्टिकर्ता ने वृक्ष को सिद्धांतों द्वारा शामिल किया है
उसका ज्ञान, निस्संदेह वृक्ष का निर्माता होना चाहिए। जो शक्ति विवरणों को अस्तित्व में लाती है, उसके लिए वृक्ष का निर्माण करना कठिन नहीं है।
सार्वभौमिक.

ठीक उसी तरह जैसे "ज्ञान की कुरान" की प्रतिलिपि एक परमाणु में अंकित है
ईथर कणों में सौंदर्य और कला का वही गुण है जो प्रतिलिपि में पाया जाता है
स्वर्ग के पन्नों पर लिखी गई "शानदार कुरान"
सितारों और सूरज, इसलिए एक मधुमक्खी और एक चींटी बनाने के लिए कम कौशल और कौशल की आवश्यकता नहीं है
खजूर के पेड़ से भी ज़्यादा कलात्मकता है। गुलाब में जो कला है, वह किसी खजूर से कम नहीं है
मोती जैसे सितारे में समाहित कला। जबकि अत्यंत और पूर्ण सहजता
चीजों का निर्माण करने से गुमराह लोग सृजन को आत्म-निर्माण समझने लगते हैं, जिसके लिए असंभवताओं और अंधविश्वासों को स्वीकार करना पड़ता है जो सही तर्क और निर्णय का खंडन करते हैं, यह सत्य के लोगों को इस निश्चितता की ओर ले जाता है कि ग्रह और सूक्ष्म कण शक्ति के संबंध में एक ही हैं
ब्रह्मांड के निर्माता की महिमा हो और उनका नाम
उसकी प्रशंसा की जाए। उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।

छठा रैंक

परमेश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीज़ों से महान है। वह
सर्व-न्यायी, सर्व-बुद्धिमान, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, एक, एकल और शाश्वत
प्रभु! सभी संसार व्यवस्था और संतुलन, व्यवस्था और माप, न्याय और बुद्धि, और ज्ञान और के उनके "हाथों" के अधीन हैं
शक्ति। वे उसकी एकता और एकनिष्ठता को दर्शाते हैं। कुछ भी बहिष्कृत नहीं है
उसका आदेश और संतुलन या उसकी व्यवस्था और माप, जो प्रकट रिकॉर्ड और प्रकट पुस्तक के दो "अध्याय" हैं,48 जो बदले में,

---

48 प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक को तीसवें वचन में समझाया गया है:

कुरान में कई स्थानों पर प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक का उल्लेख किया गया है।
व्याख्याकार मानते हैं कि वाक्यांशों का अर्थ एक जैसा है; अन्य कहते हैं कि उनके अर्थ और अर्थ भिन्न हैं। हालाँकि उनके द्वारा सही अर्थों और अर्थों की व्याख्या
दोनों की विषय-वस्तु अलग-अलग है, लेकिन वे इस बात पर सहमत हैं कि दोनों ही ईश्वरीय ज्ञान का वर्णन करते हैं। हालाँकि,
कुरान के ज्ञान से मुझे यह विश्वास है:

प्रकट अभिलेख, जो दृश्यमान दुनिया की अपेक्षा अदृश्य दुनिया की ओर अधिक देखता है,
भौतिक जगत, ईश्वरीय ज्ञान और आज्ञाओं के एक पहलू को व्यक्त करता है। अधिक जानकारी के लिए देखें
वर्तमान की अपेक्षा अतीत और भविष्य के प्रति अधिक सचेत रहने वाली यह ईश्वरीय नियति की पुस्तक है, जिसमें

सर्वज्ञ और सर्वविवेकशील के ज्ञान और आदेश की उपाधियाँ, तथा सर्वशक्तिमान और सर्वदयालु की शक्ति और इच्छा।

इस पुस्तक में व्यवस्था और संतुलन, उस अभिलेख के साथ, इस बात की गवाही देते हैं कि सब कुछ दयालु के अधीन है, दयावान आदेश देने वाला है, कृपालु सजाने वाला है और शासक मापने वाला है।

संक्षेप में: दिव्य नामों “प्रथम” और “परमेश्वर” की अभिव्यक्तियाँ

सृष्टि में "अंतिम" शब्द शुरुआत और अंत, उत्पत्ति और मुद्दा, भूत और भविष्य, आदेश और ज्ञान को संदर्भित करता है, और प्रकट अभिलेख की ओर संकेत करता है। प्रकट अभिलेख-

---

वस्तुओं के दृश्य अस्तित्व में उनके फलते-फूलते रूपों के बजाय उनकी उत्पत्ति, जड़ें और बीज को महत्व दिया जाना चाहिए।

वे मूल, स्रोत और जड़ें जिनसे सर्वशक्तिमान ईश्वर चीज़ों को पूर्ण क्रम और कला के साथ आकार देते हैं, यह दर्शाते हैं कि वे दिव्य ज्ञान में निहित सिद्धांतों की एक पुस्तक के अनुसार व्यवस्थित हैं। बीज और फल, जिनमें उन प्राणियों के अनुक्रमणिका और कार्यक्रम होते हैं जो बाद में अस्तित्व में आएंगे, दिव्य आदेशों का एक लघु रजिस्टर बनाते हैं। उदाहरण के लिए, एक बीज को वह कार्यक्रम और सूचकांक कहा जाता है जिसके अनुसार एक पूरा पेड़ बनाया जा सकता है। इसके अलावा, यह दिव्य सिद्धांतों का लघु अवतार है जो पेड़ को अस्तित्व में लाता है और जो इस कार्यक्रम और सूचकांक को निर्धारित करता है। संक्षेप में, प्रकट अभिलेख समग्र रूप से सृष्टि के वृक्ष का एक सूचकांक और कार्यक्रम है, जो अपनी शाखाओं को भूत, भविष्य और अदृश्य दुनिया में फैलाता है। इस अर्थ में, यह दिव्य नियति की एक पुस्तक या उसके सिद्धांतों का एक रजिस्टर है। इन सिद्धांतों के निर्देशों और मांगों के माध्यम से, चीजों को अस्तित्व में लाने के लिए सूक्ष्म कणों या परमाणुओं का उपयोग और प्रबंधन किया जाता है।

प्रकट पुस्तक अदृश्य दुनिया की तुलना में दृश्यमान, भौतिक दुनिया को अधिक देखती है, क्योंकि यह भूत और भविष्य की तुलना में वर्तमान को अधिक देखती है। यह ईश्वरीय ज्ञान और आज्ञाओं या सृष्टि के नियमों और सिद्धांतों के बजाय ईश्वरीय शक्ति और इच्छा को व्यक्त करती है। यदि प्रकट अभिलेख ईश्वरीय नियति की पुस्तक है, तो प्रकट पुस्तक ईश्वरीय शक्ति की पुस्तक है। हर चीज के सार और अस्तित्व, गुण और कार्यों में परिपूर्ण कला और व्यवस्था यह प्रदर्शित करती है कि हर चीज को एक प्रभावी इच्छा के नियमों और एक पूर्ण शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार अस्तित्व दिया गया है। साथ ही, इसे विशेष रूप से बनाया गया है और एक नियत माप और विशेष आकार दिया गया है। इसलिए, यह दर्शाता है कि ईश्वरीय शक्ति और इच्छा के पास कानूनों का एक सार्वभौमिक, व्यापक रजिस्टर है, एक महान पुस्तक है, जिसके अनुसार प्रत्येक इकाई के लिए एक विशेष रूप और पदार्थ निर्धारित किया जाता है।

यह अजीब बात है कि उपेक्षा, गुमराही और [भ्रष्ट] दर्शन के लोगों ने, हालांकि उन्होंने ईश्वर की सर्वोच्च संरक्षित या संरक्षित पट्टिका (लौहुन महफूज) के अस्तित्व को महसूस किया है और दिव्य बुद्धि और इच्छा की उस पुस्तक की अभिव्यक्तियों और प्रतिबिंबों को देखा है, इसे "प्रकृति" नाम दिया है, और इस तरह इसे पूरी तरह से निरर्थक बना दिया है। हालाँकि, वास्तविकता में, प्रकट अभिलेख (ईश्वरीय नियति का आदेश और निर्देश) के निर्देशों के माध्यम से, ईश्वरीय शक्ति कणों या परमाणुओं का उपयोग करके प्राणियों की श्रृंखला का निर्माण या प्रकट करती है, जिनमें से प्रत्येक कड़ी समय के रूपक पृष्ठ (मिटाव और पुष्टि की पट्टिका) पर उसका संकेत है। इसका मतलब है कि कण या परमाणु गति करने के लिए सेट किए गए हैं ताकि प्राणियों को अदृश्य दुनिया से भौतिक, दृश्यमान दुनिया में स्थानांतरित किया जा सके; ज्ञान के (क्षेत्र) से शक्ति के (क्षेत्र) में। (ट्र.)

परमेश्वर के सृष्टि-गुण से जुड़ी चीज़ों पर "बाह्य" और "आंतरिक" नामों का प्रयोग प्रकट पुस्तक की ओर संकेत करता है।

ब्रह्माण्ड एक विशाल वृक्ष की तरह है और इसमें स्थित प्रत्येक विश्व भी एक वृक्ष की तरह है। ब्रह्माण्ड की रचना और विश्वों और प्रजातियों में विभाजन की तुलना की जा सकती है एक पेड़। एक पेड़ का एक मूल (उसका बीज) और एक मुद्दा होता है जो उसका कार्य करता है इसकी मृत्यु के बाद (इसके फल में बीज)। इसकी शुरुआत और अंत "प्रकट होता है प्रथम" और "अंतिम।" इसकी रचना और इसके उद्देश्यों के माध्यम से, मूल बीज पेड़ के निर्माण के लिए एक सूचकांक या कोड है। इस प्रकार यह "प्रथम" को दर्शाता है। पेड़ के फलों में बीज "अंतिम" को प्रकट करते हैं।

बीज छोटे बक्से की तरह होते हैं जिनमें भाग्य की कलम अंकित होती है नए वृक्ष बनाने के लिए अनुक्रमणिका और कोड जो मूल वृक्षों से बिल्कुल मिलते जुलते हों एक. एक पेड़ का बाहरी हिस्सा "बाहरी" नाम को प्रकट करता है। अपनी परिपूर्ण, सुव्यवस्थित संरचना, सजावट और इसके द्वारा किए जाने वाले उद्देश्यों के माध्यम से, यह एक पेड़ की तरह है। पेड़ पर फिट होने के लिए पूर्ण बुद्धि और अनुग्रह के साथ बनाई गई पूरी तरह से सुंदर पोशाक। वृक्ष का आंतरिक भाग "अंतर्मुखी" नाम को अभिव्यक्त करता है। अपनी परिपूर्णता के माध्यम से, अद्भुत संगठन और जिस तरह से इसे खिलाया जाता है, इसका इंटीरियर एक असाधारण मशीन या कारखाने की तरह है जो सही क्रम और संतुलन में काम कर रहा है।

पेड़ की शुरुआत एक अद्भुत कोड की तरह दिखती है, इसका अंत एक असाधारण सूचकांक है, और दोनों ही मैनिफ़ेस्ट रिकॉर्ड की ओर इशारा करते हैं। इसका बाहरी भाग मैनिफ़ेस्ट रिकॉर्ड की ओर इशारा करता है। प्रकट पुस्तक, ठीक वैसे ही जैसे मानव स्मृति सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका को इंगित करती है। सभी पेड़ों के मूल बीज और फल प्रकट अभिलेख को इंगित करते हैं, और उनके बाहरी और आंतरिक भाग मैनिफ़ेस्ट बुक का प्रतीक हैं। किसी खास पेड़ से तुलना करें, धरती का "पेड़" उसके अतीत और भविष्य के साथ, ब्रह्मांड का "पेड़" उसकी शुरुआत और भविष्य के साथ, और किसी व्यक्ति का "पेड़" उसके अतीत और भविष्य के साथ उसके पूर्वज और वंशज।

सातवां रैंक

परमेश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीज़ों से महान है। वह निर्माता, खोलने वाला, सब कुछ करने वाला, सब कुछ जानने वाला, उपहार देने वाला, वितरक ' सभी संसार और उनकी सामग्री उसकी रोशनी की छाया, उसके कार्यों के कार्य, उसके नामों की कढ़ाई के रंग हैं।'

अभिव्यक्तियाँ, उसकी नियति और आदेश की "कलम" की रेखाएँ, और दर्पण उसकी सुंदरता, महिमा और पूर्णता के गुणों को प्रकट करना। यह सब शाश्वत साक्षी - स्वयं सर्वशक्तिमान - द्वारा अपनी समस्त शक्तियों के साथ प्रमाणित किया गया है

---

49 इन नामों का उपयोग करके प्राणियों के पीछे छुपे दिव्य कार्यों और छापों को देखा जा सकता है। इन नामों से पुकारे जाने वाले को।

किताबें, पन्ने या स्क्रॉल; सृष्टि के संकेतों और कुरान की आयतों द्वारा;
पृथ्वी, अपनी अनिवार्य अभाव और आवश्यकता के बावजूद पूर्ण समृद्धि और संपदा के साथ; और पैगंबरों, संतों और शुद्ध, सटीक द्वारा
प्रबुद्ध बुद्धि और प्रकाशित हृदय वाले विद्वान, उनकी जांच, आध्यात्मिक खोज और प्रार्थनाएं, और आशीर्वाद जिनके साथ
वे इष्ट हैं।

उपरोक्त सभी, अत्यंत निश्चयता के साथ, सृष्टि की निशानियों, कुरान की आयतों और आकाशीय पुस्तकों की वसीयत को स्वीकार करते हैं।
और अनिवार्य रूप से विद्यमान की गवाही वाले पृष्ठ। सभी
ये साक्षी इस बात पर सहमत हैं कि सभी प्राणी उसकी शक्ति के कार्य हैं, शिलालेख
उसके भाग्य के प्रतीक, उसके नामों के दर्पण, और उसके प्रकाश की छवियाँ।

निष्कर्ष: अलग-अलग अनुभवी मुद्दे

जान लो, ऐ दोस्त, कि जब तक मैं जीवित हूँ मैं यही कहता हूँ, जैसा मौलाना जलालुद्दीन ने कहा था
अल-रूमी, ईश्वर उन्हें पवित्र करे, कि: "मैं कुरान का सेवक हूँ जब तक
मैं जीवित हूँ; मैं चुने हुए मुहम्मद के मार्ग की मिट्टी हूँ।

कुरान समस्त बौद्धिक और आध्यात्मिक विकिरण का स्रोत है।
मेरी किताबों में जो भी सत्य है, वह उसमें पाया जाता है। इस प्रकार मेरी किताबों में कुरान की चमत्कारिक प्रकृति के संदर्भ हैं। मैंने उनमें से लगभग 40 का उल्लेख किया है।
यहाँ, मैं इस पुस्तक के लिए आशीर्वाद के साधन के रूप में केवल एक को शामिल करूँगा :
किसी भाषण या कहे गए शब्द के संबंध में इन प्रश्नों पर विचार करें:
यह किसने कहा? यह किससे कहा गया? यह क्यों कहा गया? यह किस बारे में कहा गया?

एक शब्द की ताकत और सुंदरता उसके वक्ता और श्रोता से आती है, और यह क्यों और कब कहा गया। कुछ साहित्यिक लोग गलत तरीके से मानते हैं कि
अवसर शब्द की सुंदरता का एकमात्र स्रोत है। हालाँकि, शब्द या
अर्थ व्यक्त करने के लिए चुने गए शब्द भाषण का मुख्य भाग नहीं हैं; वे उसके मूल हैं।
पोशाक। भाषण का स्पष्ट या सतही अर्थ उसकी "भावना" नहीं है, बल्कि उसका
भाषण वक्ता के इरादे और भावनाओं से जीवन प्राप्त करता है, और
इसलिए इसका भाव वक्ता का इच्छित अर्थ है। यदि भाषण या शब्दों में कोई आदेश या निषेध निहित है, तो उनका अधिकार वक्ता के कथन के अनुपात में होता है।
वक्ता की शक्ति, जो उनकी ताकत और उदात्तता को बढ़ाती है।

गैर-आधिकारिक आदेश जारी करने और गैर-आधिकारिक आदेश जारी करने में बहुत अंतर है।
और एक दृढ़ निश्चयी अधिकारी की ओर से एक सशक्त आदेश। दोनों आदेशों में कितना अन्तर है: ऐ धरती, अपना जल पी जा और ऐ आकाश, (अपनी वर्षा) रोक ले (11:44)

ब्रह्मांड के एकमात्र संप्रभु से] कथित मानवीय आदेशों से लेकर जीवन तक-

कम तत्व: "हे पृथ्वी, शांत हो जाओ और आराम करो"; "हे स्वर्ग, विभाजित हो जाओ"; और "हे दुनिया, अपने आप को नष्ट करो और पुनरुत्थान के लिए फिर से निर्मित हो जाओ।"

"मार्च!" आदेश के बीच अंतर पर विचार करें जो कि जारी किया गया है
एक शक्तिशाली आज्ञाकारी सेना का आज्ञाकारी सेनापति, और एक व्यक्ति का
जिनके आदेशों की अनदेखी की जाती है। कथन और कथन में अंतर देखिए
उनके सच्चे कर्ता, एक आधिकारिक कमांडर, एक निर्माता जो बनाता है, द्वारा कार्य करता है
जो भी वह चाहता है, जब वह कहता है: "मैंने ऐसा किया है और मैं ऐसा करता हूँ,"
और जिसका किए गए कार्यों से कोई सीधा संबंध नहीं है। अंतर देखें
वास्तविक तारों और उनके प्रतिबिंबों के बीच, जिनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है।

सृष्टिकर्ता द्वारा कहे गए शब्दों से "स्वर्गदूत" कितने भिन्न हैं?
सूरज और चाँद हमारे शब्दों से कितने अलग हैं। क़ुरआन के शब्द कितने अलग हैं-
मार्गदर्शन, विश्वास, सिद्धांतों की "मोतियों की माताएँ" फैलती हैं
परमेश्वर का सर्वोच्च सिंहासन, और जो ज्ञान, शक्ति और इच्छा से युक्त शाश्वत वाणी का निर्माण करते हैं - हमारे खोखले शब्दों से कितना अलग है
एक पेड़ है जो भागों में विभाजित हो गया है, विकसित हुआ है, खिल गया है, और फल पैदा हुआ है
किसी फल के रूप को बदलकर उससे प्राप्त किया गया कोई पदार्थ,
जीवन के नाभिक को हटाकर उन्हें किसी अन्य तत्व के साथ मिलाना।50

कुरान एक वृक्ष की तरह है जिसके बीज आचरण के सिद्धांतों के रूप में विकसित हुए हैं और जिनसे इस्लाम की दुनिया बनी है।
इससे निकले विचार और इससे निकले महान सत्य निर्विवाद सिद्धांत और ज्ञान की शाखाएँ बन गए हैं। यदि आप एक सत्य लेते हैं, तो उसे बदल दें
इसे, इसके जीवन के नाभिक को हटा दें, इसे अपनी इच्छानुसार सजाएं, और फिर इसे अपना बनाएं
राय एक मानदंड है जिसके द्वारा कुरान की आयतों का न्याय किया जा सकता है, आप न्याय कर सकते हैं
क्या बचकानी इच्छाओं के अनुसार कीमती पत्थरों को दिए गए रूपों और स्वयं उन पत्थरों की तुलना करना उचित है।

मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है और पाया है कि
कुरान की खूबसूरती के लिए एक स्वस्थ, शुद्ध हृदय की आवश्यकता है। [आध्यात्मिक रोगों] से दूषित हृदय केवल वही महसूस कर सकता है जो उसके रोगों ने गंदा और मैला कर दिया है।
कुरान की शैलियाँ और [मानव] हृदय दो संगत दर्पण हैं जो
एक दूसरे को प्रतिबिंबित करते हैं।

एक सूक्ष्म बिंदु

विश्वास सभी चीजों के बीच भाईचारा और आत्मीयता स्थापित करता है।
विश्वासियों में लालच, शत्रुता, घृणा या निराशा की प्रबल भावनाएँ न पायें।

---

50 इन पंक्तियों में कुरान और मानवीय शब्दों या भाषणों के बीच अंतर पर जोर दिया गया है ऐसी तुलनाओं के माध्यम से जो पाठक को अपरिचित लग सकती हैं। (ट्र.)

दिल। विश्वासी सबसे मजबूत दुश्मन को भी भाई या बहन के रूप में देखते हैं। अविश्वास अलगाव और अलगाव का कारण बनता है, जो अविश्वासियों में लालच, दुश्मनी, आत्म-वरीयता और आत्म-निर्भरता की मजबूत भावनाओं के रूप में प्रकट होता है। ऐसी भावनाएँ उन्हें इस जीवन में सफल होने में मदद करती हैं, क्योंकि वे अपने गुणों को ज्यादातर यहीं और अभी पुरस्कृत होते देखते हैं, जबकि विश्वासियों को अपनी कुछ कमियों और पापों के परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसीलिए पैगंबर ने घोषणा की: "दुनिया एक आस्तिक के लिए जेल है, लेकिन एक अविश्वासी के लिए स्वर्ग है।"51

हे मित्र, जान लो कि यदि विश्वास तुम्हारे हृदय में प्रवेश कर जाता है, तो तुम अनंत काल और स्वर्ग के योग्य रत्न बन जाते हो। तथापि, अविश्वास तुम्हें एक मूल्यहीन, नाशवान पत्थर बना देता है, जिसमें श्रेष्ठतम भावनाएँ और गुण नहीं होते।

विश्वास नाशवान आवरण के भीतर की ध्वनि, सुखद सार या सार को उजागर करता है, तथा कथित नाशवान झाग को एक चमकते हीरे के रूप में प्रदर्शित करता है।

अविश्वास आवरण को कर्नेल के रूप में दिखाता है, उससे मजबूती से चिपकता है, और आपको हीरे से कांच, बर्फ या झाग के टुकड़े जैसा बना देता है। यही मैंने विश्वास और अविश्वास के बारे में देखा है।

एक बिंदु

मैंने देखा है कि लोग जितना ज़्यादा दर्शनशास्त्र में व्यस्त रहते हैं, उतना ही ज़्यादा उनका दिल आध्यात्मिक बीमारी से पीड़ित होता है। मैंने यह भी देखा है कि दिल की यह आध्यात्मिक बीमारी जितनी ज़्यादा होती है, उतना ही ज़्यादा लोग तर्कसंगत विज्ञान में व्यस्त रहते हैं। आध्यात्मिक बीमारियाँ तर्कसंगत विज्ञान में व्यस्तता की ओर ले जाती हैं, और तर्कसंगत विज्ञान में व्यस्तता आध्यात्मिक बीमारियों को जन्म देती है।

दुनिया के दो पहलू हैं: बाहरी पहलू जो आंशिक रूप से और अस्थायी रूप से आकर्षक है लेकिन अंदर से हमेशा के लिए भयानक है, और बाहरी पहलू जो आंशिक रूप से भयानक है जबकि अंदर से हमेशा के लिए सुंदर है। कुरान दूसरे पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो परलोक से संबंधित है। पहला पहलू शाश्वत विनाश से जुड़ा है, जो शाश्वत परलोक के विपरीत है।

मैंने यह भी देखा है कि मानव अहंकार पर आधारित अस्तित्व का अंत गैर-अस्तित्व में होता है, जबकि आत्म-विनाश या अहंकार के विनाश के परिणामस्वरूप अस्तित्व प्राप्त होता है और अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की ओर ले जाता है। यदि आप अस्तित्व की इच्छा रखते हैं और उसे पाते हैं, तो अपने अहंकार का विनाश करने का प्रयास करें।

---

51 मुस्लिम, "ज़ुहद," नहीं। 2959; तिर्मिधि, "ज़ुहद," नहीं। 2324; इब्न माजा, "ज़ुहद," नहीं। 4113.

एक सूक्ष्म बिंदु

हे मित्र, जान लो कि मैंने परिचय में इरादे का उल्लेख किया है।

मेरी उम्र 40 वर्ष हो गई है। इरादा सामान्य कार्यों और रीति-रिवाजों को पूजा के कार्यों में बदल देता है। यह एक मर्मज्ञ और सर्वव्यापी आत्मा है
जो निर्जीव अवस्थाएँ और कर्म जीवन प्राप्त करते हैं और "जीवित" कार्य बन जाते हैं
पूजा। यह इरादे की एक विशेष गुणवत्ता के माध्यम से भी है कि बुराई बदल जाती है
सद्गुण या अच्छे कर्मों में। इरादा एक "भावना" है जो सामान्य कर्मों का कारण बनती है
और रीति-रिवाजों को पूजा के "जीवित" कार्य बनने के लिए। इसकी "आत्मा" ईमानदारी या केवल भगवान के लिए कार्य करना है। मोक्ष केवल ईमानदारी से किए गए कार्यों में पाया जाता है
उसका तरीका। ईमानदारी किसी कार्य के मूल्य को कई गुना बढ़ा देती है, और इसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति
थोड़े से कार्य और छोटे से जीवन से स्वर्ग तक पहुंचें।

नीयत की पवित्रता आपको ईश्वर के प्रति निरंतर आभारी बनाती है, क्योंकि सांसारिक वरदानों और सुखों के दो पहलू हैं। इसका पहला पहलू यह है कि आप स्वीकार करते हैं कि उपभोग की गई कृपाएँ दया और करुणा के "हाथ" से प्रदान की गई हैं।

अनुग्रह। इस प्रकार आप दान से दान देने के दिव्य कार्य की ओर बढ़ते हैं,
और उसमें मिलने वाला आनंद बढ़ जाता है।दूसरा पहलू यह है कि आप
केवल शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही सुख का पीछा करो। ईश्वर द्वारा वरदान देने का कार्य स्मरण नहीं होता; बल्कि, तुम वरदान और सुख पर ध्यान केन्द्रित करते हो
अपने आप को ऐसी वस्तु समझो जो तुम्हारे भाग्य में व्यर्थ ही पड़ी है, और इस बात पर विचार मत करो कि यह तुम्हें कैसे और क्यों मिली है।

पहले मामले में, "आत्मा" तब तक बनी रहती है जब तक उसका आनंद गायब नहीं हो जाता। यह सोचकर कि "कृपा देने वाले की दया मुझे नहीं भूलती," आप कृपा देने वाले के साथ एक अटूट संबंध महसूस करते हैं। यह दूसरे के लिए सच नहीं है

हालाँकि, जब आनंद चला जाता है तो "आत्मा" गायब हो जाती है। लेकिन
सुख का "धुआँ" बना रहता है - पाप [कृतघ्नता और उपहार प्राप्त करने और उपभोग करने के गैरकानूनी तरीकों से उत्पन्न]।

विश्वास के प्रकाश से देखा जाए तो संसार में वैध सुख और
परलोक में प्राप्त होने वाली कृपाएँ एक पुण्य चक्र बनाती हैं। सुखों का लुप्त होना या कृपाओं से वियोग होना दुख नहीं देता, क्योंकि परलोक के सुख दुख हैं।
विश्वास और कृतज्ञता स्थायी हैं। लेकिन विश्वास के बिना, सुख बदल जाते हैं
सुखों के क्षय के कारण दुःख उठाना; उनके क्षय के विषय में सोचना भी दुःख का कारण बनता है
दर्द। अविश्वास प्रत्येक सुख को अपने आप में एक अंत मानता है, और उसका लुप्त होना
दर्द का कारण बनता है.

एक बिंदु

हे मित्र, जान लो कि भौतिक कारणों से आसक्ति अपमान और अस्वीकृति को जन्म देती है। इस पर विचार करो: कुत्ते, जिन्हें सम्मान दिया जाना चाहिए, क्यों हैं?

अपने कई अच्छे गुणों (विशेष रूप से उनकी लौकिक वफ़ादारी) के कारण धन्य माने जाने वाले कुत्ते, अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध क्यों माने जाते हैं? अन्य पालतू जानवर (यानी, मुर्गियाँ, गाय और बिल्लियाँ) जो हमारे द्वारा उनके साथ किए गए अच्छे कामों के बदले में कोई कृतज्ञता और वफ़ादारी महसूस नहीं करते, उन्हें धन्य क्यों माना जाता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि - बशर्ते कि कुत्तों की पीठ पीछे बुराई न की जाए और उनका दिल न तोड़ा जाए - कुत्ते लालची होते हैं और स्पष्ट कारणों से इतने जुड़े होते हैं कि वे सच्चे वरदान देने वाले को नहीं देख पाते। इस प्रकार वे साधनों को [अपने भोजन की प्राप्ति में] वास्तव में प्रभावी मानते हैं और इसलिए अपने अंधेपन और सच्चे मालिक और वरदान देने वाले के प्रति उदासीनता के दंड के रूप में अनुष्ठानिक अशुद्धता का कलंक झेलते हैं।

धन्य जानवर साधनों और कारणों को नहीं पहचानते या उन्हें कोई मूल्य या महत्व नहीं देते। बिल्लियाँ भोजन माँगती हैं और जब उन्हें वह मिल जाता है जो वे चाहती हैं, तो वे ऐसे व्यवहार करती हैं जैसे वे आपको नहीं जानतीं या आप उन्हें नहीं जानते। वे आपके प्रति कोई कृतज्ञता महसूस नहीं करतीं। इसके बजाय, वे सच्चे वरदान देने वाले को यह कहकर धन्यवाद देती हैं: "हे दयालु, हे दयालु।" स्वभाव से, वे अपने निर्माता को पहचानती हैं और सचेत या अचेतन रूप से उनकी पूजा करती हैं।

एक सूक्ष्म बिंदु

यदि सभी चीजों को सर्वशक्तिमान के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो असंख्य देवताओं को मान्यता दी जानी चाहिए, जो सभी मूलतः विपरीत हैं, लेकिन साथ ही समान भी हैं।
सभी चीजों के आपसी संबंध और दिव्यता के आवश्यक गुण के कारण, उनकी संख्या सृष्टि में पाए जाने वाले कणों और यौगिकों की संख्या के अनुपात में बढ़ेगी।

उदाहरण के लिए, एक देवता जो मधुमक्खी या अंगूर बनाता है, उसे ब्रह्मांड में सभी तत्वों पर शासन करने और उन्हें प्रभावित करने में सक्षम होना चाहिए, क्योंकि मधुमक्खी या अंगूर सृष्टि का एक छोटा सा हिस्सा है। इसके अलावा, केवल एक अनिवार्य रूप से अस्तित्व में रहने वाले के लिए ही जगह है। अगर चीजों को खुद से जोड़ा जाए, तो हर छोटा कण एक देवता होगा। इस प्रकार हागिया सोफिया के गुंबद में प्रत्येक पत्थर अपना खुद का वास्तुकार होगा। अपने एकल निर्माता के लिए ब्रह्मांड की गवाही अपने स्वयं के अस्तित्व की गवाही की तुलना में अधिक स्पष्ट, उज्ज्वल, स्पष्ट और अभिव्यंजक है। भले ही ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकार दिया जाए, लेकिन एक के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता, जो सभी चीजों पर शक्तिशाली है।

एक बिंदु

असावधान और गुमराह लोग कारणों के एक साथ आने और परिणाम उत्पन्न करने में सृजन की श्रृंखला से कार्य-कारण के नियम को निकालते हैं, और फिर उस नियम को रचनात्मकता का श्रेय देते हैं। हालाँकि, इसके लिए एक अंतहीन स्वीकार करना पड़ता है

असंभवताओं की श्रृंखला, इसके अलावा यह एहसास कि इसका कोई संकेत नहीं है
सृष्टिकर्ता का कथित साथी कभी नहीं मिला है। बल्कि, हर चीज की संरचना और कला एक सर्वशक्तिमान, अनिवार्य रूप से अनंत शक्ति का खुलासा करती है
अस्तित्वमान एक। यह देखते हुए, कोई कैसे विश्वास कर सकता है या सोच सकता है कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता का कोई साथी है?

एक सूक्ष्म बिंदु

ना'बुदु [हम पूजा करते हैं] में अक्षर नन [जिसका अर्थ है हम] का सार्वभौमिक अर्थ है। ना'बुदु का पाठ करते समय, लोग सामूहिक रूप से सचेत होकर प्रार्थना करते हैं
और इसके अर्थ और महत्व के प्रति जागरूकता में पृथ्वी को एक मस्जिद के रूप में देखें
जिसमें सभी आस्तिक ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए कतार में खड़े हैं। वे खुद को इस विशाल समुदाय के सदस्य के रूप में देखते हैं। सभी की सहमति के आधार पर
पैगम्बरों और संतों का मानना है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और क्योंकि सभी व्यक्ति ईश्वर हैं
मण्डली में एक ही शब्द का पाठ करते हुए, विश्वासी समय को भविष्यद्वक्ताओं के नेता के नेतृत्व में पाठकों के एक समूह के रूप में देख सकते हैं।

पैगम्बर दाहिनी ओर बैठे हैं (जो अतीत का प्रतिनिधित्व करते हैं) और
बाईं ओर संत (भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं), पूरा चक्र ईश्वर का उल्लेख करता है
और अपने नामों का उच्चारण इतनी जोर से करते हैं कि सुनने वाले भी इस उच्चारण को सुन सकते हैं। जिनकी सुनने और देखने की क्षमता अधिक तीव्र है, वे सभी प्राणियों को उनका उच्चारण करते हुए सुन सकते हैं।
भगवान के नामों का स्मरण करें और स्वयं को इस सार्वभौमिक स्मरण चक्र में देखें।

एक बिंदु

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर के अलावा बाकी सभी से प्रेम करने के दो पहलू हैं। पहला
वह यह है कि कोई व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है और इस प्रकार उनसे प्रेम करता है जिनसे ईश्वर प्रेम करता है। ईश्वर का प्रेम
इस प्रेम को कम नहीं करता, बल्कि बढ़ाता है। दूसरा यह है कि
साधन [ईश्वर के प्रेम को प्राप्त करने के लिए] से प्रेम करता है, और इस प्रेम का उपयोग ईश्वर के प्रेम तक पहुँचने के लिए करता है
भगवान। ऐसे प्रेम के कई प्रकार हैं। हालाँकि, एक मजबूत, आकर्षक साधन बाधा डालता है
यदि कोई ईश्वर का प्रेम प्राप्त भी कर ले, तो भी वह दोषपूर्ण होगा।

एक सूक्ष्म बिंदु

हे मित्र, यह जान लो कि जैसा कि कहा गया है: पृथ्वी पर कोई गतिशील प्राणी नहीं है।
लेकिन इसका प्रावधान ईश्वर पर है (11:6), ईश्वर सभी प्राणियों के लिए प्रावधान करता है।
प्रावधान दो प्रकार के होते हैं: बिल्कुल आवश्यक और अनावश्यक। भगवान वही प्रदान करते हैं जो बिल्कुल आवश्यक है। अनावश्यक ज़रूरतें ज़रूरी हो जाती हैं
अपनी इच्छा का दुरुपयोग करने, साथ ही बुरी आदतों और रीति-रिवाजों के ज़रिए। इस तरह की व्यवस्था ऊपर बताए गए आयत में बताए गए परमेश्वर के प्रावधान में शामिल नहीं है।

जो कोई भी बैंगन (भूमि की "मछली") और मछली (भूमि के "बैंगन") पर चिंतन करता है
समुद्र), इस पर कि कैसे रचनात्मक शक्ति उन सभी को मांसल बनाती है और कैसे उनका
उन्हें अज्ञात स्रोतों से प्रचुर मात्रा में प्रावधान प्राप्त होता है, इसलिए वे निश्चित रूप से समझते हैं कि प्रावधान के बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
सर्व-प्रदाता को दोष दो।

एक बिंदु

हे मित्र, जान लो कि मासूम बच्चों द्वारा अनुभव किए गए दुर्भाग्य और
जानवरों में कुछ ऐसे कारण होते हैं, जिन्हें लोग आमतौर पर नोटिस करने में विफल रहते हैं। उदाहरण के लिए,
प्रकृति और जीवन के दिव्य नियम ईश्वरीय इच्छा के सिद्धांत हैं जो न केवल लागू होते हैं
बौद्धिक प्राणियों के लिए; बिना तर्क वाले प्राणियों को भी आज्ञा पालन करने के लिए “बाध्य” किया जाता है
उनके स्वभाव के आधार पर। वे नियम हृदय, भावनाओं और इंद्रियों को भी आकर्षित करते हैं। एक बच्चे को कुछ इंद्रियों या भावनाओं में परिपक्व माना जा सकता है। एक बच्चे की भावनाएँ एक वयस्क की तुलना में अधिक परिपूर्ण और सतर्क भी हो सकती हैं
तर्क। जबकि एक वयस्क का तर्क उसे अनाथ पर अत्याचार करने से नहीं रोक सकता है, लेकिन इस अत्याचार को देखने वाले उसके बच्चे की करुणा उस बच्चे को आँसू बहाने पर मजबूर कर सकती है।

ऐसा होने पर, यदि बच्चे उनकी करुणा या दया की भावना पर ध्यान नहीं देते हैं
और किसी आवेग को पूरा करने के लिए मधुमक्खी को मार देते हैं, तो उन्हें दंडित किया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक मादा तेंदुआ अपने बच्चों के प्रति बहुत स्नेह महसूस करती है और उनकी रक्षा करती है।
अपने साथी को मार डालता है। हालाँकि, जब ये भावनाएँ उसे किसी बच्चे को मारने से नहीं रोक पातीं
हिरन, यह शिकारी की गोली का निशाना बन सकता है। क्या यह वही नहीं है जो यह है
क्या यह जानवर इसके लायक है, क्योंकि इसका वैध भोजन अन्य जानवरों की लाशें हैं?

[हमारी तरह] जानवर भी खुद के मालिक नहीं होते और अपनी मर्जी से व्यवहार नहीं कर सकते।
इच्छा। ब्रह्माण्ड का सच्चा स्वामी, महिमा और अनुग्रह का स्वामी, स्वामी है
और सृष्टि का एकमात्र शासक, जिसमें सभी जीवित प्राणी शामिल हैं, और उनका निपटान करता है
अपने राज्य में वह जो चाहे करे। वह जो चाहे करे, और जो कुछ वह करता है, उसके बारे में उससे कोई प्रश्न नहीं किया जाना चाहिए। बल्कि, उनसे पूछा जाना चाहिए कि वह क्या करता है।
प्रश्न किया (21:23).

* * *

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारे संसार के स्वामी परमेश्वर की स्तुति हो। आशीर्वाद और शांति हो
हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर।

प्रतीक

ऐ दोस्त! जान लो कि प्रत्येक काम को करना उचित है।
अपने समय की शुरुआत में दैनिक प्रार्थना और खुद को भगवान के सामने कल्पना करें
काबा। वे काबा के चारों ओर प्रार्थना में खड़े विश्वासियों की कल्पना करते हैं, जो संकेन्द्रित वृत्तों के रूप में हैं, पहला काबा के सबसे निकट है और अंतिम मुस्लिम दुनिया को घेरे हुए है। वे दूसरों के साथ पूरे दिल से जुड़ने की तीव्र इच्छा महसूस करते हैं। जुड़ने के बाद, इस विशाल समुदाय की आम सहमति और एकता बन जाती है
इसमें निहित सभी अर्थों और कारणों की सत्यता का निर्णायक प्रमाण
प्रार्थना.

उदाहरण के लिए, जब प्रार्थना करने वाले कहते हैं: "परमेश्वर की स्तुति हो," तो ऐसा लगता है मानो पृथ्वी की मस्जिद में प्रार्थना करने वाले सभी विश्वासी उत्तर देते हैं: "मैं सहमत हूँ। आप कहते हैं कि सत्य।" उनके दिलों से सारे संदेह और आशंकाएँ गायब हो जाती हैं। हर इंद्रिय और संकाय को अपने लिए एक अद्वितीय विश्वास और आनंद प्राप्त होता है, और इस तरह के प्रश्न क्यों और कैसे बाधा नहीं बन सकते। धर्मपरायण लोगों का विशाल समूह,
ईश्वर के प्रति जागरूक विश्वासियों का निर्माण तब होता है जब प्रार्थना शुरू होती है। इसके एकरूपी कृत्यों और पाठों के कारण, क्षेत्रीय समय के अंतर इस तरह के आयोजन को नहीं रोकते हैं
कल्पना.

जहाँ भी प्रार्थना करने वाले विश्वासी होते हैं, वे काबा की ओर मुड़ते हैं। वे कल्पना करते हैं कि काबा उनके सामने है और विश्वासियों का समुदाय उसके सामने खड़ा है।
इसके चारों ओर संकेन्द्रित वृत्त, प्रार्थना करने वाले विश्वासियों को इस छवि से विचलित नहीं होना चाहिए। बल्कि, इसे सरल रखें। उन्हें कैसे पता कि भाग्य,
जो किसी भी चीज़ की उपेक्षा नहीं करता, उनमें से प्रत्येक कार्य और पाठ को रिकॉर्ड नहीं करता
प्रतीकों या अमूर्त की दुनिया के पन्नों पर व्यवस्थित, धन्य पंक्तियाँ
वे रूप, जिनमें सभी चीजें शाश्वत रूप से संरक्षित रहती हैं?

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि मैंने अपनी यात्रा के दौरान "परतों" में देखा है
पैगंबर के कथन और आचरण, साथ ही इस्लामी कानून के सिद्धांत, सितारों की तरह हैं जो असंख्य अंधकार और मुश्किलों के बीच हमारा मार्गदर्शन करते हैं।
अपने रास्ते या परंपरा [सुन्नत] से भटकना
शैतानों का खिलौना, भ्रम और संदेह की वस्तु, भय का लक्ष्य,
और असहनीय बोझ का पहाड़। ऐसी चीज़ों से मुक्ति मिलती है
केवल सुन्नाह का पालन करने से।

मैंने यह भी देखा है कि सुन्नाह के सिद्धांत लटकी हुई रस्सियों की तरह हैं
स्वर्ग से नीचे। जो कोई भी उनमें से एक हिस्से को भी मजबूती से पकड़ता है, वह ऊंचा हो सकता है। जो कोई भी उनका विरोध करता है और अपने स्वयं के या यहां तक कि सार्वजनिक तर्क पर भरोसा करता है-

बेटा उस व्यक्ति के समान है जो सांसारिक वाहनों में आकाश के क्षेत्रों के माध्यम से यात्रा करने का साधन प्राप्त करना चाहता है और फिरौन की तरह उपहास किया जाता है, जिसने कहा: हे हामान! मेरे लिए स्वर्ग में साधन प्राप्त करने के लिए एक टॉवर बनाएं (40:36)।

प्रतीक

हे मित्र, यह जान लो कि आत्मा में एक महत्त्वपूर्ण, अस्पष्ट गाँठ होती है, जो किसी चीज़ को उसके विपरीत को जन्म देती है, और जिसके द्वारा आत्मा अपने विरुद्ध चीज़ों को अपने पक्ष में मानती है।

उदाहरण के लिए, सूरज अपना हाथ आपकी ओर बढ़ाता है और या तो आपको सहलाता है या फिर थपकी देता है। लेकिन आप अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाकर उसे प्रभावित नहीं कर सकते। वह आपसे आपसे ज़्यादा नज़दीक है, भले ही वह आपसे बहुत दूर हो। अगर आपको लगता है कि उससे आपकी दूरी इतनी ज़्यादा है कि वह आप पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता, या वह आपके इतना नज़दीक है कि आप उसे प्रभावित कर सकते हैं, तो आप ग़लत हैं। इसी तरह, अगर शारीरिक आत्मा अपने निर्माता को दूर समझती है, भले ही वह खुद से ज़्यादा उससे नज़दीक हो, तो वह गुमराह है।

जब शारीरिक आत्मा को कोई बड़ा इनाम मिलता है, तो वह कहती है: “काश मैंने भी वैसा ही किया होता। काश मैंने भी वैसा ही व्यवहार किया होता।” हालाँकि, जब उसे कोई भयानक सज़ा मिलती है, तो वह उसे नज़रअंदाज़ करके या नकारकर खुद को सांत्वना देती है।

सर्वशक्तिमान के कार्य, सबसे पहले, उससे संबंधित हैं, न कि शारीरिक स्वार्थ और उसके संकीर्ण मन से। सृष्टि का "चक्र" शारीरिक स्वार्थ की कल्पनाओं के अनुसार नहीं घूमता है, और इसने ब्रह्मांड के निर्माण को नहीं देखा। निश्चित रूप से, इमाम रब्बानी ने सच कहा: "संप्रभु के उपहार केवल उन लोगों द्वारा वहन किए जा सकते हैं जो उनके लिए योग्य हैं।"

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि जिसने तुम्हारे सिर को सुन्दर ढंग से सजाया है और उसे दृष्टि से सुशोभित किया है, वह तुम्हें तुमसे बेहतर देखता है। जिस रचयिता ने तुम्हारे सिर को आँखों, कानों और जीभ से सुशोभित किया है, वह तुम्हें तुमसे बेहतर देखता और सुनता है, वह तुमसे अधिक निकट है और तुमसे अधिक दयालु है।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि जो लोग बड़ी कठिनाई में हैं और बहुत कठिनाई में हैं उनकी प्रार्थनाएँ महान परिणाम लाती हैं। वे सबसे शक्तिशाली और महानतम कार्य करती हैं।

सबसे कमज़ोर और सबसे छोटे व्यक्ति के अधीन होना। उदाहरण के लिए, एक गरजता हुआ समुद्र अपनी सतह पर तैरते हुए लकड़ी के टुकड़े पर टूटे हुए दिल वाले शिशु की प्रार्थना के जवाब में कम हो सकता है। इसका मतलब है कि जो प्रार्थनाओं का जवाब देता है, उसके पास सभी चीज़ों पर पूर्ण अधिकार है और वह सृष्टि का स्वामी है।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि गुमराह मानव आत्म-स्वभाव की एक महत्वपूर्ण बीमारी यह है कि वह प्रत्येक भाग में संपूर्ण की महिमा और एक निजी भाग में राजा की महिमा तलाशता है। ऐसा न पाकर वह संपूर्ण या राजा को अस्वीकार कर देता है। उदाहरण के लिए, जब सूर्य बुलबुले में प्रतिबिम्बित होता है तो वह सूर्य की सभी अभिव्यक्तियों को देखना चाहता है और जब वह ऐसा नहीं कर पाता तो यह मानने से इंकार कर देता है कि वह छवि सूर्य की है।

सूर्य की एकता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसकी अभिव्यक्तियाँ एक हों। किसी और चीज़ की ओर इशारा करने वाली चीज़ में वह दूसरी चीज़ शामिल होना ज़रूरी नहीं है। किसी और चीज़ का वर्णन करने वाली चीज़ में कुछ खास योग्यताएँ होना ज़रूरी नहीं है। एक छोटी, पारदर्शी वस्तु सूर्य की ओर इशारा करती है और उसके कुछ गुणों को प्रदर्शित करती है; एक मधुमक्खी का छत्ता सर्वज्ञ निर्माता के गुणों को प्रदर्शित करता है।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि अविश्वास के मार्ग पर चलना बर्फ या भूमिगत मार्ग पर चलने जैसा है, और इसलिए उस पर चलने वाले के लिए यह घृणित और बहुत कठिन है। लापरवाह, अनुकरणीय दृष्टिकोण वाला व्यक्ति इस कठिनाई को नहीं समझ सकता। हालाँकि, विश्वास के मार्ग पर चलना पानी, हवा या प्रकाश में यात्रा करने जैसा है।

यह मूलतः आकर्षक है, और इसलिए इसका अनुसरण करना किसी के लिए भी बहुत आसान है।

उदाहरण के लिए, यदि आप चाहते हैं कि आपके छहों अंग सूर्य से लाभान्वित हों, तो या तो आप अपने पूरे शरीर को सूर्य के सामने घुमाकर लेट जाएँ, या सूर्य को अपने स्तर पर आने दें और अपने चारों ओर घुमाएँ। पहला विकल्प ईश्वर की एकता में विश्वास से जुड़ी सहजता को दर्शाता है; दूसरा विकल्प अविश्वास से जुड़ी कठिनाई को दर्शाता है।

प्रश्न: यदि ऐसा है, तो फिर इतने सारे लोग अविश्वास का अनुसरण क्यों करते हैं और विश्वास को अस्वीकार क्यों करते हैं?

उत्तर: लगभग कोई भी व्यक्ति जानबूझकर अविश्वास का पालन नहीं करता है। बल्कि, अविश्वास व्यक्ति से चिपक जाता है और उसे गंदा कर देता है क्योंकि व्यक्ति की शारीरिक इच्छाएँ आकर्षक होती हैं। जो व्यक्ति जानबूझकर और सचेत रूप से विश्वास का पालन करता है, उसके दिल में विश्वास स्थापित हो जाता है।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि यदि बोला गया शब्द किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा सुना भी जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता। एक या लाखों लोग। शाश्वत शक्ति के संबंध में, एक व्यक्ति और एक प्रजाति के बीच कोई अंतर नहीं है।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि क़ुरआन के अर्थ असीम रूप से व्यापक हैं, यह सभी स्तरों की समझ को समाहित करता है, तथा अपने श्रोताओं की भावनाओं पर विचार करता है। उदाहरण के लिए, इसके शब्दों को आम लोग भी समझ सकते हैं, क्योंकि वे आखिरकार, ये पूर्ण बहुमत हैं और सबसे पहले संबोधित किए जाने वाले मुद्दे हैं। हालाँकि यह कुरान की परिपूर्णताओं में से एक है, क्योंकि इससे सांसारिक आत्माएं गुमराह हो जाती हैं। वे अभिव्यक्ति की सबसे उत्कृष्ट शैली और सबसे संतुलित तरीके खोजते हैं चर्चा किए गए विषयों और दर्शकों के लिए आवश्यक सरलतम तरीका स्तर। वे शैली बनाते हैं, जो स्वाभाविक रूप से दर्शकों के विचार करना चाहिए भावनाओं और स्तर, एक मानदंड और एक "वेधशाला" देखने और न्याय करने के लिए वक्ता- सर्वशक्तिमान। इसीलिए वे बहुत दूर भटक जाते हैं।

प्रतीक

दुनिया के तीन पहलू हैं। पहला भगवान के नाम से संबंधित है। इसके दूसरे पहलू में, दुनिया आख़िरत का कृषि योग्य क्षेत्र है। ये दो पहलू पहलू सुंदर हैं। तीसरा पहलू सीधे और विशेष रूप से संबंधित है दुनिया ही है, और यह वह जगह है जहाँ लोग अपनी शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं और मिलना चाहते हैं इस क्षणभंगुर सांसारिक जीवन की ज़रूरतें।

मुझे एक ऐसा शरीर पहनने के लिए मजबूर किया जाता है जो मूलतः बेजान है। आज मेरा ताबूत है। कल और कल के बीच, जो मेरे पिता की कब्रें हैं और "उसका बेटा," मैं दो लाशों और कब्रों के बीच दबा हुआ हूँ। लेकिन इस बात से अवगत हैं कि, परलोक के कृषि योग्य क्षेत्र के रूप में इसके पहलू के संबंध में, दुनिया को विश्वास के प्रकाश से देखने से आध्यात्मिक सुख मिलता है स्वर्ग। तीसरे पहलू से कोई कैसे प्रसन्न हो सकता है और उसमें आनंद ले सकता है?

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारा शरीर सार्वजनिक रूप से स्वामित्व वाली राइफल या घोड़े जैसा है एक सैनिक को सौंपा गया। जिस तरह राइफल या घोड़े की जिम्मेदारी सैनिक की होती है, उसी तरह आप पर अपनी आस्था - अपने शरीर - को सुरक्षित रखने का दायित्व है।

हे मित्र, जान लो कि मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मेरा शारीरिक स्वभाव सद्गुणों पर गर्व करता है। मैंने उससे कहा: “तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है।” उसने उत्तर दिया: “तो मैं उस चीज़ की परवाह नहीं करता जो मेरे पास नहीं है।” मैंने कहा: “तुम्हें अपने शरीर की देखभाल करने में मक्खी से पीछे नहीं रहना चाहिए। देखो कि मक्खी अपने पैरों से अपने पंख कैसे साफ करती है और अपने हाथों से अपनी आँखें कैसे पोंछती है।” उसकी महिमा हो जिसने मक्खी को ऐसा करने के लिए प्रेरित किया और उसे एक प्रशिक्षक बनाया जिसने मेरे आत्म को चुप करा दिया।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि त्रुटि और विचलन दिव्य नाम "आंतरिक" के आदेशों और कार्यों को "परमेश्वर" के आदेशों और कार्यों के साथ भ्रमित करने का एक परिणाम है।

बाहरी," और पूर्व से वही अपेक्षा करना जो बाद वाले से करनी चाहिए। व्यक्ति ईश्वरीय शक्ति की आवश्यकताओं को ईश्वरीय शक्ति की आवश्यकताओं से भी भ्रमित करता है।

दिव्य बुद्धि, तथा पूर्व में वह देखने का प्रयास करती है जिसे बाद में देखने का प्रयास करना चाहिए।

उस क्षेत्र की आवश्यकताओं को भ्रमित करना जहाँ ईश्वर के कार्यों में कार्य-कारण के नियम की एक निश्चित भूमिका होती है, उसकी पूर्ण एकता में विश्वास के साथ, और दिव्य शक्ति के प्रकटीकरण के कार्यों और तरीकों को दिव्य अस्तित्व या अन्य दिव्य गुणों की अभिव्यक्तियों के साथ, और बाद में पूर्व के नियमों और कानूनों को खोजने की कोशिश करना त्रुटि और विचलन का कारण बनता है। उदाहरण के लिए, इस दुनिया में आपका जन्म और विकास क्रमिक है, लेकिन इस भौतिक क्षेत्र और विशुद्ध आध्यात्मिक क्षेत्रों के बीच के मध्यवर्ती क्षेत्रों के दर्पणों में - जैसे कि सपनों में, उदाहरण के लिए - यह सब एक साथ होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दिव्य गुण खुद को प्रकट करने में भिन्न होते हैं, और सृजन और अभिव्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

प्रतीक

ऐ दोस्त, जान लो कि इस्लाम एक सार्वभौमिक दया है। इस्लाम नास्तिकों को भी अपने सांसारिक जीवन में कुछ खुशी पाने में सक्षम बनाता है और सुनिश्चित करता है कि उनका सुख अंतहीन दर्द में न बदल जाए। इस्लाम पूर्ण अविश्वास और इनकार को, जो निराशा और दर्द का कारण बनता है, संदेह और संकोच में बदल देता है। इसकी स्पष्ट घोषणाओं से प्रभावित होकर, नास्तिक अनंत जीवन को संभावित मान सकते हैं। यह उन्हें घुटन भरे दर्द [अनंत विलुप्ति या दंड के विचार से उत्पन्न] से राहत देता है और, चूंकि वे अनंत जीवन के बारे में आश्वस्त नहीं हैं, वे खुद को इसके दायित्वों से मुक्त मानते हैं। ऐसे लोग शुतुरमुर्ग, ऊंट जैसे पक्षी हैं जो उड़ने के लिए कहे जाने पर उत्तर देते हैं: "मैं ऊंट हूं, नहीं

एक पक्षी।” लेकिन जब उनसे बोझ उठाने को कहा जाता है, तो वे ऊँट की तरह जवाब देते हैं: “मैं एक पक्षी हूँ, ऊँट नहीं।”

शैतान द्वारा भ्रमित होकर [विरोधाभासी रूप से, परलोक में मोक्ष की झूठी आशा के साथ, जबकि धार्मिक दायित्वों से मुक्त होने के लिए अनन्त जीवन को अस्वीकार करते हुए], अविश्वासी और [ईश्वरीय आचरण के नियमों के] उल्लंघनकर्ता, नास्तिकों और सच्चे विश्वासियों के विपरीत, सतही खुशी पाते हैं।

प्रतीक

हे मित्र! यह जान लो कि अहंकार अपने क्षेत्र में अपने प्रभुत्व को बनाये रखने के लिए ऐसी किसी भी वस्तु को स्वीकार या कल्पना नहीं करना चाहता जो स्वयं से उत्पन्न हुई हो और जो सृष्टिकर्ता की शक्ति द्वारा निर्मित वस्तु से कम मूल्यवान हो।

जब तक अहंकार स्वयं को सबसे छोटा प्राणी या सार रूप में कुछ भी नहीं मानता, तब तक कोई भी व्यक्ति सृष्टिकर्ता के गुणों को नकारने या गुप्त रूप से ईश्वर के साथ साझेदारी करने से बच नहीं सकता।

प्रतीक

हे मित्र, जान लो कि अहंकार अपने कर्तव्यों के प्रति आलस्य के कारण चाहता है कि कोई उसे न देखे और वह छिपा रहने की कोशिश करता है। वह सभी चीजों के मालिक के अस्तित्व पर विचार करता है और पूर्ण स्वतंत्रता चाहता है। पहले वह इच्छा करता है, फिर विचार करता है और उसके बाद गर्भधारण करता है। अब वह अपने ऊपर किसी मालिक और शासक के अस्तित्व पर विश्वास करना शुरू कर देता है और अंत में अपने विश्वास को त्याग देता है। हालाँकि, अगर वह जानता कि जिस स्वतंत्रता और आराम की वह आकांक्षा करता है और जिस गैरजिम्मेदारी की वह तलाश करता है, उसके नीचे कितनी बड़ी, कष्टदायक पीड़ा और असहनीय दर्द है, तो वह उनसे दूर भाग जाएगा और उनसे दूर रहेगा, उनका पश्चाताप करेगा या मर जाएगा।

प्रतीक

चीजें उनके समर्थन के बिंदुओं के अनुसार भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, एक महान, शक्तिशाली संप्रभु से जुड़ा और उसका समर्थन प्राप्त एक निजी व्यक्ति वह कर सकता है जो एक राजा नहीं कर सकता। इस प्रकार यह निजी व्यक्ति उस व्यक्ति से “सात डिग्री” अधिक है जो सामान्यतः उससे “सत्तर डिग्री” अधिक है। यही कारण है कि अनन्त शक्ति द्वारा नियुक्त एक मच्छर ने एक सबसे शक्तिशाली और जिद्दी शासक को हरा दिया।52 सर्वशक्तिमान ईश्वर की अनुमति से, अनाज और अनाज को अलग करने वाले

52 यह उस मच्छर को संदर्भित करता है जो निम्रोद के एक नथुने के माध्यम से उसके शरीर में प्रवेश कर गया था, जिससे उस अत्याचारी की मृत्यु हो गई जिसने पैगम्बर अब्राहम को आग में फेंक दिया था। (ट्र.)

बीज, एक बीज में वह सब कुछ होता है जो एक विशाल ताड़ के पेड़ को चाहिए। नौ गांवों के आकार के क्षेत्र में बनी फैक्ट्रियां वह सब कुछ नहीं बना सकतीं जो उस पेड़ को चाहिए।

हे मित्र, जान लो कि कुरान के मार्ग (जिसका मैंने "द ड्रॉप" में पालन किया) और दार्शनिकों के मार्ग में यही अंतर है: मैं जहाँ भी हूँ, वहाँ जमीन खोदता हूँ और पानी निकलता है। दार्शनिक पानी उपलब्ध कराने के लिए ब्रह्मांड में नहरें खोलने और पाइप बिछाने की कोशिश करते हैं। वे ईश्वरीय सिंहासन तक भी जाते हैं। चूँकि वे भौतिक कारणों को बहुत महत्व देते हैं, इसलिए उन्हें पाइप के मार्ग पर लाखों पहरेदार रखने चाहिए ताकि इसे हमले और विनाश से बचाया जा सके। कुरान ने मुझे जो सिखाया है, वह मूसा की छड़ी की तरह है: मैं जहाँ भी इसे मारता हूँ, चाहे मैं चट्टान पर ही क्यों न हो, जीवन का पानी फूट पड़ता है।

मैं दुनिया से परे लंबी यात्रा करने और बहुत लंबी पाइपों को टूटने या नष्ट होने से बचाने के लिए बाध्य महसूस नहीं करता। कहावत: "प्रत्येक वस्तु में एक संकेत है जो दर्शाता है कि वह एक है," इस बिंदु को स्पष्ट करता है।

प्रतीक

मानव अहंकार या शारीरिक स्व [सभी दोषों और वासनाओं का स्रोत] अनिवार्य रूप से अंधा है। जब तक यह अस्तित्व में है [अनुशासित किए बिना], भले ही यह मच्छर के पंख जितना छोटा हो, यह सत्य को ढकने वाला पर्दा बना रहता है।

चूँकि यह अपने अस्तित्व पर ध्यान केंद्रित करता है [और जो कुछ भी निर्माता इसे देता है उसे अपने लिए हड़प लेता है और अपने ऊपर सर्वोच्च प्रभुत्वशाली शक्ति को नकारना चाहता है], जब यह निर्णायक प्रमाणों [उस शक्ति के अस्तित्व के] के पत्थरों से बने एक बड़े महल के एक पत्थर में दोष देखता है, तो यह महल के अस्तित्व को नकार देता है। इससे, अहंकार की अज्ञानता का अंदाजा लगाया जा सकता है जो अपने अस्तित्व के प्रति आसक्ति से उत्पन्न होती है।

प्रतीक

हे अहंकार! तुम जानते हो कि जो तुम्हारा है वह बहुत छोटा है, अगर वह वास्तव में तुम्हारा है! इसलिए अपनी स्वतंत्र इच्छा के उस छोटे, कमज़ोर हिस्से को जितना तुम सहन कर सको उतना ही धारण करो। अपनी चेतना को, जो बाल जितनी कमज़ोर है, "बड़े पत्थरों" से मत लदवाओ। जो तुम्हारा नहीं है, उस पर कुछ भी मत रखो, सिवाय इसके कि उसके मालिक की अनुमति हो।

जब तुम अपनी तरफ से लापरवाही से काम करो, तो अपनी हदों को पार मत करो। तुम्हारी हरकतों का दायरा एक बाल जितना छोटा है। जब तुम सारे साम्राज्य के मालिक की तरफ से काम करो, तो जो कुछ भी तुम देखते हो, उसे अपने ऊपर लाद लो, बशर्ते कि वह उसकी आज्ञा और इच्छा के अनुसार हो, न कि तुम्हारी अपनी इच्छा के अनुसार। तुम्हें उसकी आज्ञा और इच्छा उसके कानून-शरीअत से सीखनी चाहिए।

प्रतीक

हे प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के चाहने वालों! जान लो कि प्रसिद्धि और दिखावा एक ही है

और दिखावा, और यह जहरीला शहद है जो दिल को मारता है। केवल वे ही

जो लोग मनुष्यों के दास बनना चाहते हैं, वे इसकी खोज में रहते हैं। यदि ऐसा तुम्हारे साथ घटित हो तो कह दो, " निश्चय ही ऐसा होगा।"

हम परमेश्वर के हैं और उसी की ओर लौट रहे हैं (2:156)।

समाप्त करने के लिए:

• ईश्वर के अलावा किसी भी चीज़ पर केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर के कारण ही विचार करें। • अच्छी नीयत और सही दृष्टिकोण बुरे कार्यों को अच्छे कार्यों में बदल देता है। • इसका महत्व: मैं खुद का मालिक या स्वामी नहीं हूँ; मृत्यु अपरिहार्य है;

मेरा प्रभु एक है; और मानव अहंकार एक काला बिंदु है, तुलना का एक बिंदु

ईश्वर को जानें और पहचानें]

• पैगम्बर मुहम्मद और कुरान ईश्वरीय कृपा के सबसे स्पष्ट प्रमाण हैं।

अस्तित्व और एकता। इस्लाम, अन्य प्रकट धर्म, और अस्तित्व के हर पहलू

ब्रह्मांड में जीवन और व्यवस्था ईश्वर के अस्तित्व और एकता को दर्शाती है। • निराशा, आत्म-

प्रशंसा, घमंड और संदेह हृदय के चार रोग हैं। • सैद नूरसी द्वारा देखे गए चार महत्वपूर्ण सत्य और महिमा पर चिंतन

ईश्वर की, सारी स्तुति ईश्वर की है, और ईश्वर सबसे महान है।

• किसी भाषण या शब्द के बारे में प्रश्नों के दृष्टिकोण से कुरान: कौन

यह किसने कहा? यह किससे कहा गया? यह क्यों कहा गया? यह किस बारे में कहा गया? • विश्वास भाईचारा

और आत्मीयता स्थापित करता है, और तीव्र लालच की अनुमति नहीं देता,

किसी विश्वासी के दिल में दुश्मनी, घृणा या निराशा घर कर सकती है। अविश्वास के कारण

अलगाव और अलगाव, ऐसे लोगों को लालच, दुश्मनी, आत्म-वरीयता और आत्म-निर्भरता से भर देता है। नतीजतन,

अविश्वासी इस जीवन में सफल हो सकते हैं,

क्योंकि वे अपने सद्गुणों का प्रतिफल संसार में ही देखते हैं, जबकि आस्तिक लोग कुछ कमियों और पापों का

परिणाम भुगतते हैं। • दर्शनशास्त्र में अधिक रुचि हृदय में आध्यात्मिक रोग को बढ़ाती है।

जितना अधिक किसी का हृदय आध्यात्मिक रोग से ग्रस्त होता है, उतना ही अधिक वह व्याकुल रहता है
तर्कसंगत विज्ञान के साथ.

• इरादा सामान्य कृत्यों और रीति-रिवाजों को पूजा के कृत्यों में बदल देता है। • भौतिक कारणों से लगाव

अपमान और अस्वीकृति का कारण बनता है। • ना'बुदु [हम] में नून [जिसका अर्थ है हम] अक्षर का

सार्वभौमिक महत्व

पूजा करना]।

• मासूम बच्चों और जानवरों पर आने वाली विपत्तियाँ आमतौर पर क्यों होती हैं?

लोगों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता

है। • प्रार्थना की शुरुआत में प्रार्थना करना [एक आस्तिक के लिए] सराहनीय है

समय का आनंद लें और अपने सामने काबा की कल्पना करें।

• पैगम्बर के कथन और आचरण तथा इस्लामी कानून के सिद्धांत मार्गदर्शन करते हैं

सुन्नाह के सिद्धांत हमें ऊपर उठाते हैं।

• आत्मा में एक महत्वपूर्ण लेकिन अस्पष्ट गाँठ होती है जो किसी चीज़ को प्रभावित करती है
इसके विपरीत को जन्म दें, और इससे आत्मा को यह देखने का मौका मिलता है कि वास्तव में क्या है
इसे इसके विरुद्ध समझें। • वह
जिसने आपके सिर को सजाया और उसे शक्ति से सुशोभित किया
दृष्टि आपको आपसे बेहतर देखती है। • बड़ी
मुश्किल और गंभीर परेशानी में रहने वालों की प्रार्थनाएँ महान परिणाम देती हैं
परिणाम।

• एक गुमराह मानव स्वत्व गलती से एक पूरे के वैभव की तलाश करता है
प्रत्येक भाग.

• अविश्वास का अनुसरण करना बर्फ पर या ज़मीन पर चलने जैसा है, और इसलिए इसका अनुसरण करने वालों के लिए यह बहुत कठिन है।

• शाश्वत शक्ति के संबंध में, किसी व्यक्ति और प्रजाति के बीच कोई अंतर नहीं है। • कुरान अर्थ में असीम रूप से
व्यापक है, समझ के सभी स्तरों
को शामिल करता है, और उन सभी की भावनाओं पर विचार करता है जिनसे यह संबोधित करता है।

• संसार के तीन पहलू हैं। ये सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से संबंधित हैं,
परलोक और इस संसार।

• दिव्य नाम "अंतर्मुखी" के आदेशों और कार्यों को भ्रमित करना
"बाहरी" लोगों से, तथा पूर्व से वही अपेक्षा करना जो किसी को करना चाहिए
उत्तरार्द्ध से जो अपेक्षा की जाती है, वह त्रुटि का स्रोत है।

• इस्लाम एक सार्वभौमिक दया है और अविश्वासियों को भी कुछ खुशी पाने में सक्षम बनाता है।
अपने सांसारिक जीवन में सफलता प्राप्त करें।

• अपने क्षेत्र में प्रभुत्व बनाए रखने के लिए मानव अहंकार
अपने आप से उत्पन्न होने वाली किसी चीज़ को स्वीकार या कल्पना नहीं करना चाहता
सृष्टिकर्ता की शक्ति द्वारा निर्मित की तुलना में कम मूल्यवान। • मानवीय अहंकार,
निगरानी नहीं चाहता, इसलिए छिपा रहना चाहता है। • चीजें उनके समर्थन बिंदुओं के अनुसार भिन्न होती हैं। •
कुरान के तरीके (और “द ड्रॉप” में इसके बाद) के बीच का अंतर

और दार्शनिकों का।

• मानव अहंकार या शारीरिक स्व अनिवार्य रूप से अंधा है। जब तक यह जारी रहता है
[अनुशासित हुए बिना] अस्तित्व में रहना, भले ही वह मच्छर के पंख जितना छोटा हो,
यह सत्य के सूर्य के प्रति स्वयं को अंधा बना लेता है।

• शोहरत दिखावे और दिखावे के समान है, और दिल को मार देती है।
जो इसे चाहता है वह दूसरों का गुलाम बन जाता है।

पांचवां ग्रंथ

पांचवां ग्रंथ

कुरान के सागर से एक बुलबुला

मेरा रब बड़ा दानी है, वह अपना माल तुमसे खरीदता है, उसकी रक्षा करता है
आपके लिए एक उपहार है, और बदले में आपको एक अच्छी कीमत देता है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारे संसार के प्रभु की स्तुति हो। शांति और आशीर्वाद आप पर हो
हमारे स्वामी मुहम्मद, उनका परिवार और साथी।

K अब ऐ ईमान वालो, जब ईमान वाले प्रार्थना करते हैं और अल्लाह की दुहाई देते हैं उदाहरण के लिए, नाम लेते हुए कहना: “मैं गवाही देता हूँ कि कोई परमेश्वर नहीं है लेकिन भगवान," या "मुहम्मद भगवान के दूत हैं," या "सभी प्रशंसा भगवान के लिए हो," उन्होंने एक दावा किया है, एक कारण और दृढ़ विश्वास की घोषणा की है, और एक निष्कर्ष घोषित किया है। उसी क्षण, करोड़ों लोग उनके कारण की सत्यता की गवाही देते हैं, और उन्हें ऐसा लगता है जैसे असंख्य भूतपूर्व विश्वासियों ने वही शब्द कहे और उनकी पुष्टि की है।

इसके अलावा, जो कुछ भी इस्लाम की सच्चाई की गवाही देता है, उसके मूल तत्वों की पुष्टि करता है या निर्णय लेता है, तथा उसे सबूतों और गवाहों के साथ समर्थन देता है और उनकी पुष्टि करता है उनके विश्वास और निष्कर्ष को मजबूत बनाता है। इन घोषणाओं को असंख्य आशीर्वाद और उपहार मिलते हैं, और अनगिनत पुरस्कार बरसते हैं
बदले में उन्हें नीचे। वे एक आकर्षक प्रभामंडल से घिरे हुए हैं
आध्यात्मिक परमानंद से निर्मित अर्थपूर्ण और सजीव, प्रेरणादायक भावना
विश्वासियों के समुदाय से निकलने वाली रोशनी, और ईश्वर की एकता में विश्वास करने वालों के दिलों से निकलने वाली रोशनी की वर्षा जो ईश्वर की एकता को अवशोषित करती है।
इन धन्य वचनों के झरनों से जीवन का जल मिलता है।

हे मित्र, जान लो कि जो किसी बात की पुष्टि करता है, वह उस बात को अस्वीकार करने वाले से बेहतर है, क्योंकि निषेध स्वयं सीमित होता है जबकि पुष्टि किसी एक स्रोत या साधन तक सीमित नहीं होती। एक हजार निषेध एक निषेध के बराबर होते हैं। हालाँकि, 1,000 पुष्टियों के मामले में, प्रत्येक पुष्टि सभी पुष्टियों जितनी ही मजबूत होती है।

मान लीजिए कि कई लोग अलग-अलग खिड़कियों से अर्धचंद्र को देखते हैं [यह निर्धारित करने के लिए कि रमज़ान का पवित्र महीना शुरू हो गया है या नहीं]। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति ने इसे अपनी खिड़की से देखा और सभी एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं, इसलिए एक पुष्टि सभी पुष्टियों के बराबर होती है। लेकिन क्या होगा अगर कोई व्यक्ति अर्धचंद्र को इसलिए नहीं देख सकता क्योंकि वहाँ कोई खिड़की नहीं है, देखने वाले की आँखें कमज़ोर हैं, उसने नहीं देखा है, इत्यादि? ऐसा नकार उस विशेष व्यक्ति तक ही सीमित है। अर्धचंद्र के दिखने से उसका इनकार उसके अस्तित्व को नकार नहीं देता, क्योंकि ऐसा एक इनकार दूसरे इनकारों का समर्थन नहीं करता। इस प्रकार प्रत्येक इनकार उस व्यक्ति तक ही सीमित है जो इनकार करता है।

यह सूक्ष्म बिंदु निम्नलिखित सत्य को प्रकट करता है: भले ही गुमराही और अविश्वास की पूरी दुनिया विश्वास के एक मुद्दे को नकार दे, लेकिन परिणामी इनकार एक ऐसे व्यक्ति की तरह होगा जो दोषपूर्ण तर्क प्रस्तुत करता है, और पाता है कि यह केवल खुद तक ही सीमित है। हालाँकि, विश्वास के मामलों में, जिस पर सभी निर्देशित लोग सहमत हैं और इस प्रकार एक दूसरे की पुष्टि करते हैं, एक व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत तर्क सभी विश्वासियों द्वारा प्रस्तुत तर्क जितना ही मजबूत है।

जान लो, ऐ दोस्त, कि एक मजबूत इमारत के हिस्से या पत्थर एक दूसरे को सहारा देते हैं और पूरे से ताकत प्राप्त करते हैं। जैसे-जैसे प्रत्येक इकाई दूसरे को सहारा देती है, सभी व्यक्तिगत कमजोरियाँ दूर हो जाती हैं। यह ऐसा है जैसे पूरी इमारत प्रत्येक हिस्से की मदद करती है। एक पेड़ की प्रत्येक शाखा और फल के गुणों को जानना पूरे पेड़ को जानने पर निर्भर करता है, क्योंकि प्रत्येक पूरे के लिए ज्ञान प्रदान करता है। यह ऐसा है जैसे प्रत्येक भाग एक खिड़की है जिसके माध्यम से दूसरे भाग को देखा जा सकता है, और पूरे को जानने के लिए एक मानक के रूप में कार्य करता है। इस तरह, विश्वास और इस्लाम का प्रत्येक विकिरण और विषय-वस्तु पूरे द्वारा समर्थित है, और पूरे के समानांतर इसे अधिक स्पष्ट और समझने योग्य बनाया जा सकता है। जितना अधिक विश्वास और इस्लाम शाखाएँ फैलती हैं, उतना ही अधिक हम प्रत्येक भाग की सच्चाई के बारे में आश्वस्त होते हैं।

इस तथ्य के बावजूद, शारीरिक आत्म और शैतान विपरीत दिशा की ओर प्रवृत्त होते हैं: एक भाग की कमजोरी पूरे को कमजोर मानने के बहाने के रूप में कार्य करती है।

हे मित्र, यह जान लो कि ब्रह्माण्ड का प्रत्येक भाग तुलना की एक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से हम इसके अन्य सभी भागों के संभावित अस्तित्व को देख सकते हैं।
इसके विपरीत, इसके भाग तुलना की इकाइयों के रूप में भी काम करते हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक भाग के संभावित अस्तित्व को देखा जा सकता है।

हे मित्र, जान लो कि एक बहुत बड़े पूरे समूह के सबसे छोटे हिस्से को भी वही चाहिए जो पूरे समूह को चाहिए। एक पेड़ को जो चाहिए वो एक फल को भी चाहिए। इसलिए फल का निर्माता, बल्कि इसकी सबसे छोटी व्यक्तिगत कोशिकाओं का निर्माता, पेड़ का निर्माता है, और (उसी तरह) पृथ्वी, इसकी सभी सामग्री और सृष्टि के पूरे पेड़ का निर्माता है।

हे मित्र, यह जान लो कि विश्वास और अविश्वास तथा इसी प्रकार के विषयों में अंतर समझने के लिए इस तुलना पर विचार करो: इस अंक के दो भाग एक दूसरे से अनंत दूरी पर हैं तथा प्रत्येक भाग बीज की तरह विकसित होकर एक विस्तृत वृक्ष बन गया है। इसके विकास के प्रमाण के पश्चात् किसी को भी उस अंक की विशिष्टता तथा प्रामाणिकता पर संदेह नहीं करना चाहिए। बीज जब भूमिगत होते हैं, तब उनकी प्रकृति पर संदेह किया जा सकता है। लेकिन प्रत्येक के वृक्ष बन जाने तथा फल देने के पश्चात् कोई संदेह नहीं रह जाता, क्योंकि सब कुछ स्पष्ट हो चुका है। करेले के बीज से सेब का वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सकता, जब तक कि कोई आत्म-प्रवंचना न करे अथवा सेब को करेले में न बदल दे।

नबूवत एक बीज की तरह है जिससे इस्लाम का पेड़, उसकी शाखाएँ और फल उगे हैं। क़ुरआन एक सूरज है जिसने इस्लाम के ग्यारह स्तंभों के ग्रहों के फल पैदा किए हैं।[53] [क्या उस बीज के सभी अमूल्य फलों को देखने के बाद भी उसकी प्रामाणिकता और मज़बूती पर संदेह करना संभव है?]

हे मित्र, जान लो कि एक अंडा फूटता है और उसमें से एक मोर का बच्चा या कोई अन्य बच्चा निकलता है। वह बच्चा या बच्चा बड़ा होकर एक सुंदर मोर या कोई अन्य सुंदर पक्षी बनता है। एक पेड़ बीज से उगता है, अपनी शाखाएँ आसमान में फैलाता है और फल देता है। यदि तुम अंडे के छिलके में मोर या किसी अन्य पक्षी की सुंदरता और गुण खोजते हो, या बीज में पेड़ की सभी शाखाएँ और पत्ते, फूल और फल खोजते हो, तो तुम अपने आप को धोखा दोगे या मूर्ख बनाओगे।

अगर हम अपने पैगम्बर को सतही तौर पर और इतिहास की किताबों में उनके शुरुआती जीवन के बारे में कही गई बातों के आधार पर देखें, तो हम उन्हें समझ नहीं पाएंगे, उनकी कीमत नहीं समझ पाएंगे और उनके चरित्र को पूरी तरह से नहीं पहचान पाएंगे। हालाँकि, इस्लाम और उसकी विश्व सभ्यता उनके कारण ही फली-फूली है। हमें ऐतिहासिक और जीवनी संबंधी विवरणों को एक पतले आवरण के रूप में देखना चाहिए जिसे फाड़कर उन्हें इस सभ्यता का बीज और संस्थापक दिखाना होगा। उनके मात्र मानवीय आयाम को एक बीज के खोल के रूप में देखा जाना चाहिए जिससे पैगम्बर मुहम्मद का धन्य वृक्ष विकसित हुआ है, एक ऐसा वृक्ष जिसे ईश्वरीय आशीर्वाद से सींचा गया है और जो ईश्वरीय कृपा की मदद से हमेशा फलता-फूलता रहेगा। हमें उनके मानवीय गुणों और अवस्थाओं या उनके शुरुआती जीवन से चिपके नहीं रहना चाहिए, बल्कि उनके व्यक्तित्व के बारे में जानना चाहिए।

53 अर्थात् ईमान के छः स्तम्भ और इस्लामी जीवन के पाँच स्तम्भ। (अनुवाद)

महानता की वह डिग्री जो उन्होंने प्राप्त की [एक पैगंबर के रूप में जिसका संदेश अपनाया गया है
विश्व के एक बड़े भाग पर इसका प्रभाव पड़ा है, यह एक शानदार सभ्यता का स्रोत रहा है, तथा भविष्य में सम्पूर्ण विश्व को अपने में समाहित करने की इसकी क्षमता है।

जो लोग संदेह या जिज्ञासा की दृष्टि से उसके चरित्र का अध्ययन करते हैं
वह भेद नहीं कर सकता कि वह विषय है या वस्तु, स्रोत है या दर्पण, अक्षर है (जो किसी और की ओर ध्यान आकर्षित करता है - ईश्वर) या शब्द (जो किसी और की ओर ध्यान आकर्षित करता है - ईश्वर)
अपने आप में एक अर्थ रखता है और इसलिए खुद पर ध्यान आकर्षित करता है), और जो ईश्वरीय सत्ता के लिए आवश्यक या अंतर्निहित है और जो उसके द्वारा प्रसारित या प्रकट किया जाता है। पैगंबर पूरी तरह से सर्वशक्तिमान ईश्वर के एक निर्मित सेवक हैं,
और उसकी आराधना और सेवा में सबसे आगे है।
उसे ईश्वरीय अभिव्यक्तियों की वस्तु के रूप में देखना चाहिए। उसकी सभी परिपूर्णताएँ
सर्वशक्तिमान से हैं.

कोई भी चीज़ अपना स्रोत या उद्गम नहीं हो सकती। लेकिन सबसे छोटा कण भी
एक दर्पण की तरह [सूर्य को प्रतिबिंबित करने वाला], तारों को समाहित कर सकता है। हालाँकि, वे
जो चीज़ों की वास्तविकता को नहीं समझते वे हर चीज़ को उसके वास्तविक रूप में देखते हैं।
उस चीज़ की वास्तविक उत्पत्ति के संबंध में सोचने के बजाय, स्वयं के बारे में सोचें और गलती से सोचें
प्रकृति के रूप में दिव्य कला का दर्शन।

हे मित्र, जान लो कि प्रार्थना या विनती में निम्नलिखित अर्थ निहित हैं
एक ईश्वर में विश्वास और पूजा। प्रार्थना करने वालों को यह विश्वास होना चाहिए कि
जिससे वे प्रार्थना करते हैं वह सुनता है, जानता है, और उनकी इच्छाओं को पूरा कर सकता है और
इसके लिए यह विश्वास करना ज़रूरी है कि जिससे प्रार्थना की जा रही है, वह सब कुछ जानता है और उसके पास सब कुछ पर अधिकार है।

हे मित्र, जान लो कि सूर्य - संसार का दीपक - प्रवेश कर सकता है और
अभिव्यक्ति के माध्यम से एक मच्छर की आंख को रोशन करें। हालाँकि, द्वारा उत्पादित एक लौ
माचिस जलाकर ऐसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसकी लौ से आंखें अंधी हो जाएंगी।
उसी तरह, एक छोटा कण शाश्वत "सूर्य" के नाम को प्रकट कर सकता है,
भले ही इसमें सृजन में वास्तव में प्रभावी और क्रियाशील कुछ भी नहीं है।

हे आत्मस्वरूप! तू क्यों हठी, दंभी और अभिमानी बना हुआ है?
जबकि वास्तव में आप कमज़ोर और शक्तिहीन, बेसहारा और दीन हैं? एक छोटा सा
सूक्ष्म जीव आपको पूरी तरह से हरा सकता है।

हे मित्र, जान लो कि यह दर्शाता है कि तुम वास्तव में कितने कमजोर और नपुंसक हो।
जब आपको अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है और सृष्टिकर्ता की शक्ति और
भव्यता। यदि आप अपनी स्मृति को पार करने का प्रयास करते हैं, जिसे सरसों के दाने के आकार का कहा जाता है, तो यह छोटा सा दाना एक विशाल अभेद्य रेगिस्तान की तरह दूर तक फैल जाएगा। यदि आप अपनी स्वयं की स्मृति को पार नहीं कर सकते, तो आप अपने पूरे [मन] को कैसे पार कर सकते हैं? यदि, आपके मन के संबंध में, आपका

स्मृति एक असीम रेगिस्तान की तरह है, आपका मन एक अथाह जैसा है
सागर। महिमा है उसकी जिसने अनाज को संसार जैसा बनाया
मन के लिए, और संसार उसके लिए एक दाने के समान है।

हे मित्र, जान लो कि लोग अन्यायपूर्वक एक समूह के कर्मों के फल को दूसरों पर आरोपित करते हैं।
किसी एक व्यक्ति को कार्रवाई सौंपें और मान लें कि उसने ही ये काम किए हैं।
गलती से ईश्वर के साथ एक गुप्त साझेदारी की शुरुआत होती है, क्योंकि
एक धारणा किसी के इस विश्वास पर आधारित होती है कि संबंधित व्यक्ति के पास
कुछ बनाने के लिए पर्याप्त शक्ति। प्राचीन काल के देवी-देवता
यूनानी और अन्य मूर्तिपूजक लोग ऐसी ही गलतियों से उत्पन्न हुए।

हे मित्र, यह जान लो कि व्यक्ति संकेन्द्रित वृत्तों से घिरा हुआ है: उसके कपड़े और शरीर, उसका गृहनगर, पृथ्वी, दृश्यमान संसार, इत्यादि।
पहले वाले को छोड़कर, उनका किसी भी मंडल में कोई हिस्सा या प्रभाव नहीं है। वास्तव में, वे मंडलों से प्रभावित होते हैं, क्योंकि वे उनसे लाभ उठा सकते हैं
भौतिक और आध्यात्मिक रूप से। यदि वे उनके साथ हस्तक्षेप करने की कोशिश करते हैं, तो वे केवल कारण बनते हैं
इससे संबंधित लाभ कम हो जाएंगे।

हे मित्र, जान लो कि जो लोग भगवान के नाम का जाप करते हैं, चाहे वे सचेत रूप से करें या नहीं, उन्हें बहुत से लाभ मिलते हैं। मानवता एक बहुत ही रोचक रचना है। प्रत्येक व्यक्ति एक समान प्राणी है जो कई भागों से बना है, एक साथ सरल और जटिल, जिसमें अंग, अंग, प्रणालियाँ, इंद्रियाँ, भावनाएँ,

और क्षमताएँ। उनमें से प्रत्येक के अपने दर्द और सुख हैं, साथ ही
अन्य लोग पूरे शरीर से संबंधित हैं और उससे आते हैं। उनके बीच एक त्वरित, पारस्परिक सहायता और समर्थन है। इस विशिष्टता के कारण, जो लोग
परमेश्वर की सेवा के मार्ग पर चलने वालों को पुरस्कृत किया जाएगा, विशेष रूप से
इसके बाद, सभी सुखों, आशीर्वाद और सिद्धियों के साथ [उनके अंगों, अंगों, प्रणालियों, इंद्रियों, भावनाओं और संकायों द्वारा अर्जित या आवंटित]। लेकिन
यदि वे अहंकार के मार्ग पर चलेंगे तो उन्हें दुःख, पीड़ा और अन्याय का सामना करना पड़ेगा।
और पीड़ा। दांत का दर्द कान के दर्द से अलग होता है, दांत का दर्द कान के दर्द से अलग होता है।
आँखों का ज्ञान जीभ से भिन्न है, तथा स्पर्श, कल्पना, बुद्धि और हृदय से उत्पन्न होने वाले सुख और दुःख एक दूसरे से भिन्न हैं।

हे मित्र, जान लो कि मृत्यु का समय निश्चित न करना इसका स्पष्ट प्रमाण है।
इसके मूलकर्ता के ज्ञान में निश्चित होने के बारे में। यदि इसे [प्रत्येक व्यक्ति के लिए] निश्चित बना दिया गया होता, तो यह मानते हुए कि यह किसी "प्राकृतिक" कानून पर निर्भर है,
लोगों ने सोचा होगा कि यह ईश्वरीय ज्ञान के भीतर अपरिभाषित है।
चूँकि यह हमारे लिए परिभाषित नहीं है, इसलिए वे यह नहीं मान सकते कि यह अपरिभाषित है [दिव्य ज्ञान के भीतर]।

हे मित्र! जान लो कि कुछ ईश्वरीय नामों का नियमित पाठ इस्लाम का चिह्न या निशान है, क्योंकि इस्लाम के चिह्न इतने महान हैं कि दिखावे और पाखंड का "हाथ" उन तक नहीं पहुंच सकता।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वरीय एकता के सूत्र को दोहराने से - ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है - हृदय को [आंतरिक] संबंधों से [जो कुछ भी व्यक्ति को ईश्वर से अलग करता है] और झूठी पूजा की वस्तुओं से अलग कर देता है। जो व्यक्ति इस सूत्र का पाठ करता है, उसके पास कई क्षमताएँ और इंद्रियाँ होती हैं, जिनमें से प्रत्येक को ईश्वरीय एकता के बारे में आश्वस्त होना चाहिए और विशेष रूप से अपने प्रति बहुदेववादी दृष्टिकोण से पूरी तरह से अलग होना चाहिए।

हे मित्र, जान लो कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम सूरत अल-फातिहा पढ़ने का इनाम एक व्यक्ति को देते हो या लाखों लोगों को, क्योंकि एक व्यक्ति और एक बोले गए शब्द को सुनने में लाखों लोगों के बीच कोई अंतर नहीं होता। अमूर्त चीजें बहुत तेजी से बढ़ती या फैलती हैं, बिना किसी एक प्रति के किसी अन्य को बाधित किए, जैसे कि एक प्रकाश एक या लाखों दर्पणों में परिलक्षित होता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि नबी पर दुआ और सलामती की दुआ मांगना उस नेमत के दाता के निमंत्रण का जवाब देने के समान है, जिसने अपनी नेमतों को मुफ्त में फैलाया और जिस पर उसने स्वर्गारोहण का सम्मान किया, उस पर अपनी नेमतों की मेज़ बिछा दी। जब तुम नबी पर दुआ और सलामती की दुआ मांगो और उनकी किसी (अच्छी) खूबी का ज़िक्र करो, तो उस पर ध्यान केंद्रित करो और चिंतन करो जिसकी तुम प्रशंसा करते हो ताकि तुम उस पर बार-बार दुआ और सलामती की दुआ मांगने के लिए जोश में बढ़ो।

ऐ धार्मिक विद्वानों! लोगों की आपके ज्ञान के प्रति उदासीनता और उनके द्वारा आपको दी जाने वाली छोटी सी रकम से परेशान न हों। सांसारिक भुगतान ज़रूरत के हिसाब से होता है, व्यक्तिगत पुण्य के हिसाब से नहीं, जो आख़िरत में दिया जाएगा। आपको इस दुनिया की भ्रामक चीज़ों के लिए अपनी व्यक्तिगत योग्यता को थोड़ी सी कीमत पर बेचने की इजाज़त नहीं है।

ऐ लेखकों और सार्वजनिक वक्ताओं जो मीडिया के ज़रिए लोगों को संबोधित करते हैं। [लोगों के सामने] विनम्र बनो और अपनी कमियों की खुलकर घोषणा करो और तौबा करो। तुम्हें आत्म-गौरव महसूस करने और इस्लाम के चिह्नों या संकेतों के ख़िलाफ़ जो कुछ है उसे प्रचारित करने का कोई अधिकार नहीं है। किसने तुम्हें ऐसा करने की इजाज़त दी है? किसने तुम्हें इस्लाम के बारे में निराधार संदेह फैलाने और पूरे देश और मुस्लिम समुदाय के बीच गुमराही फैलाने का अधिकार दिया है? क्या तुम सोचते हो कि राष्ट्र तुम्हारी तरह गुमराह है? कोई भी दूसरों को गुमराह नहीं देख सकता या दिखा नहीं सकता। तुम्हें यह संदेह करने की इजाज़त किसने दी कि मुस्लिम समुदाय इस्लाम के प्रतीकों से भटक गया है? जो ज़्यादातर मोमिन नहीं करते उसे प्रकाशित करना

स्वीकार करना विचलन का आह्वान है, और जो ऐसी सामग्री प्रकाशित करता है वह विचलन का आह्वान करता है विचलन।

हे मित्र, जान लो कि चूँकि अविश्वास विश्वास के विपरीत है, इसलिए अविश्वासी विश्वासियों के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। इस प्रकार अविश्वासियों का प्रेम [उनके विश्वास के कारण]
अविश्वास], जिसके साथ मित्रता स्थापित करना असंभव है, बेकार है।
कुरान ने काफिरों और उनके काफिर पूर्वजों को नरक की अनंत सजा की निंदा की है। ऐ कुरान वालों, उनसे प्रेम और दया की उम्मीद मत करो।
कह दो कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा संरक्षक और अच्छा सहायक है।
वह है।

हे मित्र, जान लो कि अविश्वासियों की सभ्यता और (सच्चे) विश्वासियों की सभ्यता में यही अंतर है: पहला छद्म बर्बरता है।
सभ्यता के रूप में, बाहर से चमकदार लेकिन अंदर से घिनौना, दिखने में आकर्षक लेकिन वास्तव में डरावना। जहाँ तक विश्वासियों की सभ्यता का सवाल है, तो उसके अंदर
यह अपने बाहरी स्वरूप से कहीं अधिक महान है। यह दिखने में जितना अर्थपूर्ण है, उससे कहीं अधिक परिपूर्ण है। यह मित्रता, प्रेम और आपसी मदद से बना है, क्योंकि ईश्वरीय एकता में विश्वास करने वाले और उसकी पुष्टि करने वाले लोग हर उस चीज़ के बीच भाईचारा देखते हैं जो मौजूद है, साथ ही साथ दोस्ती और प्यार भी देखते हैं।

यह विभाजन करता है, विशेष रूप से मनुष्यों के बीच, और अधिक विशेष रूप से
वे मूल में भाईचारा और अंत में एकता देखते हैं। [दूसरे शब्दों में, सभी चीजें एक ही मूल से निकलती हैं और एक पेड़ की तरह विभाजित होने के बाद
शाखाएँ, अंत में एक साथ आती हैं।]

अविश्वासी सभी चीजों को शत्रुतापूर्ण, पराया और एक दूसरे से अलग मानते हैं
वे अपने साथी अविश्वासियों के बीच भी इस शत्रुता को देखते हैं, क्योंकि वे
भाईचारे को सिर्फ़ दो अलग-अलग रेखाओं के मिलन बिंदु के रूप में देखें। एक रेखा हमेशा अतीत में फैली रहती है, और दूसरी
हमेशा के लिए भविष्य में। वे केवल राष्ट्रीय उत्साह या जातीय जुनून के समय एक मजबूत (और बहुत अस्थायी) भाईचारे का अनुभव करते हैं। हालाँकि, वास्तव में ऐसे
भाई या बहन के प्रति दिखावटी प्रेम वास्तव में स्वयं के प्रति प्रेम से अधिक कुछ नहीं है
या खुद को। किसी भी स्वीकार्य मानवीय पहलू और आध्यात्मिक गुण
अविश्वासियों की सभ्यता या तो इस्लामी सभ्यता से उधार ली गई है, प्रकट धर्मों से बची हुई है, या कुरान के मार्गदर्शन के कारण है
[दुनिया में होना].

ऐ तुम जो इज्तिहाद (इस्लामी कानून में नए धार्मिक उदाहरण स्थापित करने के लिए निगमनात्मक तर्क का उपयोग करना) चाहते हो, इज्तिहाद का दरवाजा खुला है। लेकिन तुम
केवल कुछ मामलों में ही इसके माध्यम से:

एक: जब सर्दी के मौसम में तेज हवाएं चलती हैं और छोटे-छोटे छेदों को ढंकना पड़ता है, तो दरवाज़े कैसे खोले जा सकते हैं? जब अस्वीकार्य कार्य खुलेआम किए जाते हैं, जब धर्म की भावना के विपरीत नवाचारों की बाढ़ आ जाती है, और जब विनाशकारी विचार हर तरफ से उस पर हमला करते हैं, तो क्या उसमें दरारें बनाकर "दीवार" को नष्ट करना उचित या जायज़ है?

दो: इस्लाम के मूल तत्व इज्तिहाद के अधीन नहीं हो सकते , क्योंकि वे मुसलमानों के लिए पोषण या जीविका की तरह हैं। जब उन्हें उपेक्षित या अस्वीकार कर दिया जाता है, जैसा कि आज है, तो हमें उन्हें पुनर्जीवित करने और अपने दैनिक जीवन में लागू करने का प्रयास करना चाहिए। यदि आवश्यकता होती है, तो इज्तिहाद को माध्यमिक सैद्धांतिक मामलों में लागू किया जा सकता है, जिसे पहले के विद्वानों ने भविष्य की (और अज्ञात) जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त रूप से विस्तृत बनाया था।

तीन: हर समय की अपनी मांगें होती हैं। आज, ये राजनीति और सांसारिक जीवन की ज़रूरतों को पूरा करना है। लेकिन, पैगम्बर के बाद की शताब्दियों में, कुरान से यह अनुमान लगाया जाता है कि ब्रह्मांड के निर्माता को खुश करने और शाश्वत सुख को सुरक्षित करने वाली चीज़ों की मांग थी।

चूँकि उस समय लोगों के मन, दिल और आत्माएँ उन चीज़ों पर केंद्रित थीं, इसलिए बहुत से लोग, जाने-अनजाने में, मौजूदा परिस्थितियों, घटनाओं और बातचीत से सीखते थे। ऐसा लगता था मानो हर चीज़ उन्हें इज्तिहाद के लिए सिखाने और तैयार करने का काम करती थी, ताकि उनके दिमाग का ईंधन तब भी जलता रहे जब वे विशेष अध्ययन की "माचिस" से नहीं जले हों। जब वे इज्तिहाद की ओर मुड़े , तो इसका मतलब उनके लिए रोशनी पर रोशनी थी।

लेकिन आज, मन और दिल भ्रमित हैं। [आधुनिक जीवन की भ्रामक जटिलता के कारण] लोग एक विषय पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं, और आधुनिक विचार और राजनीति के रुझान दिमाग पर हावी हो जाते हैं। इस प्रकार, सुफ़यान इब्न उयना54 जैसे होशियार व्यक्ति को इज्तिहाद करने में सक्षम होने के लिए सुफ़यान की तुलना में कम से कम दस गुना अधिक समय बिताने की आवश्यकता होती है। जब सुफ़यान ने युवावस्था में इज्तिहाद के लिए अध्ययन करना शुरू किया, तो वह एक माचिस की तरह जलने के लिए तैयार था।

उनके आधुनिक समकक्ष इज्तिहाद से बहुत दूर हैं , क्योंकि वे आधुनिक, गैर-धार्मिक विज्ञानों में गहराई से जुड़े हुए हैं और उनमें अपनी लीनता की सीमा तक उनसे प्रभावित हैं।

चौथा: धर्मपरायणता की उच्चतर डिग्री प्राप्त करने और इस्लाम के सिद्धांतों का पालन करने के लिए इस्लामी गौण मामलों के क्षेत्र का विस्तार करके इज्तिहाद करने की इच्छा।

---

54 इस्लामी इतिहास के सबसे महान विद्वानों में से एक सुफ़यान इब्न उयना (726-814) हदीस और फ़िक़्ह के अच्छे जानकार थे। उन्होंने साथियों के बाद की पीढ़ी के 80 से ज़्यादा विद्वानों से मुलाक़ात की। उन्होंने ज़ुहरी, इब्न मुनकादिर, इब्न अल-ज़िनाद, अमाश और अन्य लोगों से हदीस सुनाई। इमाम अल-शफ़ीई, शुबा, इब्न इशाक, इब्न जुरैह, याह्या इब्न कथिर और अन्य लोगों ने उनसे हदीस सुनाई। वे बहुत ही नेक विद्वान थे। (संपादक)

अनिवार्यताएं अधिक सख्ती से पूर्णता का कारण बनती हैं। हालाँकि, अगर कोई इसका पालन नहीं करता है इस्लाम के स्तंभों में से एक है और परलोक की अपेक्षा संसार को अधिक तरजीह देता है, ऐसी इच्छा प्रबल होती है यह विनाश की ओर है क्योंकि यह वास्तव में धार्मिक जिम्मेदारियों से छुटकारा पाने का एक प्रयास है।

पाँचवाँ: इस्लाम का मानना है कि धार्मिक दायित्व से प्राप्त लाभ
कोई व्यक्ति इसे क्यों पूरा करना चाहता है, इसका कारण। दूसरे शब्दों में, इसे लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से कानून नहीं बनाया गया। लेकिन वास्तव में यही दृष्टिकोण है
आधुनिक लोगों द्वारा। आधुनिक दृष्टिकोण सबसे पहले सांसारिक सुख पर विचार करता है;
शरीयत सबसे पहले व्यक्ति के शाश्वत सुख पर विचार करती है, फिर उसके सांसारिक जीवन को शाश्वत सुख प्राप्त करने के साधन के अनुपात में देखती है।
इसके अलावा, कई आधुनिक "ज़रूरतें" केवल इसलिए "आवश्यकताएं" बन गई हैं क्योंकि
लोगों ने अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग किया है और गैरकानूनी प्रवृत्तियों का पालन किया है। इसलिए,
उनकी "आवश्यकता" को नई व्यवस्थाओं और निर्माण के लिए आगे नहीं रखा जा सकता
अवैधानिक चीजें वैध हैं। यह वही सिद्धांत है जिसके तहत एक शराबी, जिसने
अपनी इच्छा से नशे में धुत होना, नशे में होने का दावा नहीं कर सकता
आपराधिक आचरण के बहाने के रूप में। ऐसे संदर्भ में किया गया कोई भी इज्तिहाद
"सांसारिक", "स्वर्गीय" नहीं। और कानूनों में कोई भी जोड़ या संशोधन
आकाश और पृथ्वी का निर्माता, और बाहर अपने सेवकों का शासन
उसके अधिकार को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

हे असावधानी और स्वाभाविकता से घिरा हुआ, और इस प्रकार “अंधा”
और "बहरा", कल्पना के अंधेरे में भौतिक कारणों का "पूजक"
प्रकृति को अस्तित्व का मूल माना जाता है। मैं आपको ब्रह्मांड के प्रत्येक सूक्ष्म कण और यौगिक द्वारा बोली जाने वाली 55 "भाषाओं" में से एक के बारे में समझाऊंगा।
सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और उसकी दिव्यता में उसकी एकता का साक्षी बनें
और आधिपत्य.

इस पर विचार करें: सृष्टि का श्रेय या तो स्वयं प्राणियों और कारणों को दिया जाना चाहिए या फिर एक, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता को। दोषपूर्ण तर्क के कारण, आपको सभी चीजों को अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराना कठिन लग सकता है।
अस्तित्ववान प्राणी। लेकिन, चूँकि कोई भी कारण किसी भी प्राणी को अस्तित्व नहीं दे सकता,
उनके अस्तित्व को आत्म-निर्माण या भौतिक कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना अतार्किक है और
स्वीकार नहीं किया जा सकता। पहले विकल्प में जो माना गया है वह निश्चित है
दूसरा।

इसके अलावा, जबकि जिम्मेदार ठहराने में केवल एक ही कठिनाई है
सृष्टि को एक एकल, अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता में बदलना, स्पष्ट असंभवता है
इसे जीवों या कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराने में ब्रह्मांड में भागों की संख्या जितनी ही संख्या है। उदाहरण के लिए, यदि किसी मधुमक्खी को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है

एक एकल, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता, आकाश और पृथ्वी में सब कुछ
इसके अस्तित्व में आने में भाग लेना होगा क्योंकि मधुमक्खी
किसी न किसी तरह से दुनिया के सभी हिस्सों से जुड़ा हुआ है।
एक ही स्रोत से अनेक चीज़ें बनाना एक ही चीज़ बनाने से कहीं ज़्यादा आसान है
अनेक स्रोतों से, जो सभी एक दूसरे का खंडन करते हैं, बहरे हैं और
अंधे हैं, और उनका एक साथ आना उनके बहरेपन और अंधेपन को बढ़ाता है।

यदि किसी एक सत्ता को वस्तुओं का श्रेय देने में कथित कठिनाई केवल इतनी है कि
एक छोटे कण जितनी बड़ी, वही कठिनाई एक पहाड़ जितनी बड़ी होगी जब जीवों को खुद या कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा। एक आंदोलन के साथ, एक ही प्राणी एक परिणाम उत्पन्न कर सकता है और कई चीजों को एक रूप या क्रम दे सकता है। लेकिन कई चीजें एक ही परिणाम नहीं दे सकतीं, भले ही वे एक ही हों।

अनेक गतिविधियाँ, तथा प्रयास करने के बाद ही वही रूप या क्रम दे सकते हैं
बहुत प्रयास और कठिनाई। उदाहरण के लिए, एक कमांडर कई लोगों को आदेश दे सकता है
सैनिकों को बहुत आसानी से ऐसा करने में सक्षम बनाना; हालाँकि, सैनिक ऐसा बहुत कठिनाई से या बहुत ही कम समय में कर पाते हैं।
बिलकुल नहीं। एक ही नल से असंख्य बूंदें गिरती हैं।

पहले मामले में एक कथित कठिनाई असंख्य हो जाती है
दूसरे में असंभवताएँ। इनमें से कुछ असंभवताएँ इस प्रकार हैं:

- चूँकि वस्तुओं में देखी जाने वाली उत्तम कलात्मकता और डिजाइन के लिए सर्वव्यापी ज्ञान, पूर्ण दृष्टि, पूर्ण शक्ति और सर्वव्यापी इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए प्रत्येक कण में आवश्यक रूप से सर्वोत्कृष्टता के गुण होने चाहिए।
  अस्तित्वमान प्राणी.
- यदि किसी एक, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता को चीज़ों का श्रेय नहीं दिया जाता है, तो प्रत्येक चीज़ को दिव्यता का श्रेय दिया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि हम दिव्य सत्ता के साथ उसकी दिव्यता और अनिवार्य अस्तित्व में भागीदार जोड़ते हैं,
  जिसमें साझेदारों से पूर्णतः मुक्त होना चाहिए।
- यदि हम किसी गुम्बद का श्रेय निर्माता को नहीं देते हैं, तो उसका दोषरहित निर्माण, जो संयोग से नहीं हो सकता, उसके प्रत्येक पत्थर की आवश्यकता होगी
  एक इंजीनियर जितना ज्ञानवान और कुशल बनना। उन पत्थरों की तरह,
  यदि चीजों को किसी एकल सत्ता से संबद्ध नहीं किया जाता है, तो वस्तु के कण या परमाणु
  एक दूसरे पर सचेत रूप से हावी होना चाहिए और एक दूसरे पर हावी होना चाहिए
  और उस चीज़ से ही.
- चूँकि पूर्ण संतुलन, एकजुटता, पारस्परिक सहायता और सहसंबंध
  ब्रह्मांड में देखी गई चीज़ों के लिए एक व्यापक चेतना की आवश्यकता होती है और
  देखने की एक पूर्ण शक्ति, प्रत्येक कण चीजों और कारणों का निर्माण करता है
  इस स्तर की चेतना और ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए
  देखना। यदि चीजों को स्वयं के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वे या यहां तक कि प्रत्येक भाग-

उन्हें बनाने वाले क्ली में ये विशेषताएँ होनी चाहिए। यदि उन्हें इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है
प्रत्येक कारण के अपने कारण होने चाहिए।

यदि एक एकल, अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता के अस्तित्व को सभी वस्तुओं के मूलकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है, तो ऐसी कई अन्य असंभवताएं और गलत धारणाएं उत्पन्न होती हैं।

जब चीज़ों को उनके सच्चे भगवान के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो अनिवार्य रूप से मौजूद हैं
और एक है, कण और यौगिक वर्षा की बूंदों की तरह बन जाते हैं जो इसे प्रतिबिंबित करते हैं
सूर्य की छवियाँ। वे सूर्य की किरणों द्वारा अस्तित्व में आती हैं
ईश्वरीय शक्ति जो पूर्ण, प्रकाशमान, व्यापक, शाश्वत और
अनंत, और शाश्वत, अनंत ज्ञान पर आधारित - बल्कि उसमें शामिल है
और इच्छाशक्ति। यह वह शक्ति है जिसकी गवाही प्राणियों के चमत्कार देते हैं, और
जिसमें एक किरण सूर्य की तुलना में अधिक चमकदार और भेदक होती है, जैसे सूर्य का प्रकाश
बहुलता की दुनिया में बाधा उत्पन्न हो सकती है, अपवर्तित हो सकती है, विभाजित हो सकती है और बिखर सकती है
- वह (भौतिक) दुनिया जहां चीजें अलग-अलग और बहुतायत में मौजूद हैं।
इस शक्ति की सबसे छोटी अभिव्यक्ति सबसे बड़ी भौतिक वस्तु से भी बड़ी है
कारण, किसी चमकदार चीज़ की आंशिक अभिव्यक्ति के रूप में गुण होते हैं
संपूर्णता की, यहाँ तक कि बहुलता की दुनिया में भी - जैसे कि सूरज कांच के सबसे छोटे टुकड़े में "समाया हुआ" है।

चीजों को स्वयं या कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराने और
एक, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता सूर्य की छवि के बीच की तरह है
बारिश की बूंद में प्रतिबिम्बित होने और यह दावा करने का कि वह छवि सूर्य है। क्या कोई ऐसे दावे पर विश्वास कर सकता है? इसके विपरीत, शाश्वत दिव्य शक्ति आसानी से सभी चीजों में प्रवेश कर जाती है। इसके संबंध में, बिना किसी अपवाद के, मौजूद हर चीज,
वही है। ऐसी शक्ति स्वयं दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक और अंतर्निहित है,
शाश्वत और अनंत, और इसलिए कोई विपरीत, डिग्री, सीमा या नपुंसकता नहीं हो सकती।

तुलना के माध्यम से इस बिंदु को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए
आकस्मिकताओं और बहुलता के क्षेत्र में, निम्नलिखित पर विचार करें:

सूर्य की अभिव्यक्तियों को छवियों के रूप में प्राप्त करने के संबंध में,
कांच के टुकड़े, महासागर और ग्रह अपनी पारदर्शिता और सूर्य की चमक के कारण एक जैसे हैं। केंद्र में स्थित एक दीपक के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने के संबंध में, सबसे छोटे वृत्त (उस केंद्र के चारों ओर) में सबसे छोटा दर्पण और सबसे बड़े वृत्त में सभी दर्पण एक जैसे हैं क्योंकि उनकी पारस्परिक या एक-दूसरे के सामने की स्थिति है। चूँकि कोई चीज़ अमूर्त है, इसलिए बड़ी संख्या में चीज़ें उस चीज़ से एक साथ लाभ उठा सकती हैं - जैसे कि किसी स्रोत से

उदाहरण के लिए, प्रकाश का - एक दूसरे को बाधित किए बिना। उदाहरण के लिए,

एक शब्द को सुनना, एक और हजारों एक समान हैं, क्योंकि इसे सुना जा सकता है
एक ही समय में हजारों लोगों द्वारा बिना किसी बाधा के।

[ब्रह्मांड में एक बहुत ही सटीक तराजू या माप है । ऐसी सटीकता को समझने के लिए,] एक ऐसे तराजू पर विचार करें जो इतना बड़ा और संवेदनशील हो कि अखरोट के आकार की या पहाड़ के आकार की चीज़ों को एक ही सटीकता से तौला जा सके। मान लीजिए कि हम दो चीज़ों का वजन करते हैं, चाहे वे दो सूर्य जितनी बड़ी और भारी हों
या दो अखरोट जितना छोटा और हल्का। अगर अखरोट को किसी भी तराजू पर रखा जाए, तो
तराजू की संवेदनशीलता के कारण तराजू एक दूसरे से बहुत दूर होंगे। चीजों के बीच सटीक क्रम और अंतर्संबंध के कारण , एक बच्चा
एक विशाल जहाज या खिलौना जहाज को उसी आसानी से शुरू करें और फिर चलाएं।
आज्ञाकारिता के कारण, एक कमांडर एक विशाल सेना को एक निजी सैनिक की तरह आसानी से स्थानांतरित कर सकता था।
आदेश देते हुए: "मार्च!"

चूँकि वस्तुओं का मुख्य अस्तित्व उनके आंतरिक अमूर्त आयाम में निहित है, और कोई भी प्रजाति अपनी प्रकृति को अपनी भौतिक संरचना से प्राप्त नहीं करती है,
किसी भी प्रजाति के सभी सदस्यों का स्वभाव, बिना किसी अपवाद के, एक जैसा होता है। इस प्रकार,
चीज़ों के ऐसे आवश्यक गुणों या अस्तित्व की बुनियादी विशेषताओं के कारण, ईश्वरीय शक्ति के संबंध में सब कुछ एक जैसा है।
अपवाद.

अस्तित्व का आंतरिक आयाम [इसका आवश्यक आयाम, क्योंकि बाहरी दृश्यमान, भौतिक रूप क्षणभंगुर हैं] अमूर्त और पारदर्शी है।
जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसका मुख ईश्वरीय शक्ति की ओर है, जो निराकार और शुद्ध प्रकाश है। अस्तित्व में असीम रूप से सटीक संतुलन है, और
सभी चीजें असीम रूप से सुव्यवस्थित हैं और एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
सभी कण सृष्टि के दिव्य नियमों और आदेशों का "उत्साहपूर्वक" पालन करते हैं,
जिसे इस शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है: बनो! अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के रूप में
भौतिकता से पूर्णतया मुक्त और भौतिक वस्तुओं से पृथक है, यह
ईश्वरीय शक्ति के लिए एक मक्खी और पृथ्वी को पुनर्जीवित करना, एक मधुमक्खी और आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न करना, एक सूक्ष्म कण और सूर्य को उत्पन्न करना भी उतना ही आसान है।

दरअसल, यह सहजता इतनी प्रत्यक्ष और ठोस है कि इसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।
[उदाहरण के लिए, बेलों या ताड़ के पेड़ों की सूखी, मृत लकड़ी उत्पन्न करती है
अंगूर या खजूर के गुच्छे]। दैवीय शक्ति ऐसी है कि यदि इसके कार्यों को कारणों या स्वयं कारणों के लिए
जिम्मेदार ठहराया जाए, तो असंख्य कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। यह शक्ति,
दूसरी ओर, यह चीज़ों के आंतरिक, पारदर्शी आयामों में प्रवेश करता है या
उनके आदर्श - जो दिव्य में उनके अस्तित्व का सार बनाते हैं
ज्ञान - यहां तक कि सुई की आँख जैसे छोटे से छिद्र के माध्यम से भी,
अपनी रचनात्मकता से उन पर प्रकट होता है।

संक्षेप में, हम देखते हैं कि किस प्रकार ईश्वरीय शक्ति राक्षसी चीजों का निर्माण करती है।
स्तर:

एक: साधन और प्रत्यक्ष कारण, ईश्वरीय शक्ति की गरिमा को बनाए रखने के लिए पर्दे हैं, जो वस्तुओं के भौतिक पहलुओं के साथ उसके व्यवहार में [लोगों की नज़रों में] होती है।55 दो: जो वस्तुएँ अपने बाह्य और आंतरिक दोनों पहलुओं (जैसे, जीवन, अस्तित्व और

प्रकाश) में पारदर्शी हैं, उनके और ईश्वरीय शक्ति के बीच कोई पर्दा (साधन और कारण) नहीं होता।

तीन: ईश्वरीय शक्ति सभी चीज़ों से आसानी से निपट लेती है। वह अपने धूल के कण के आकार के बीज से एक विशाल अंजीर का पेड़ बनाती है, और धागे जैसे तने से अंगूरों का गुच्छा लटकाती है। उस शाश्वत शक्ति के स्वामी का अस्तित्व ब्रह्मांड के अस्तित्व से कहीं ज़्यादा स्पष्ट है। प्रत्येक प्राणी अपनी गवाही देता है

कुछ तरीकों से अपना अस्तित्व बनाए रखता है, जबकि यह अपने निर्माता के अस्तित्व को कई अवलोकनीय, समझदार और तर्कसंगत तरीकों से प्रमाणित करता है। कोई भी प्राणी, सभी स्वर्गीय और सांसारिक कारणों की मदद से भी, इसके जैसा कुछ नहीं बना सकता। उनमें निहित कला और उन्हें बनाने के लिए आवश्यक कौशल में, अंजीर के पेड़ का बीज पेड़ के समान ही है, और एक इंसान पृथ्वी के समान ही है। इसलिए, बीज और मानवता की उत्पत्ति करने वाली शक्ति आसानी से पेड़ और पृथ्वी का निर्माण करती है।

हे तुम जो एक अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता को सब कुछ न बताकर भटक जाते हो। तुम देखते हो कि अस्तित्व को स्वयं या कारणों को बताना कितना असंभव है। इस तरह के प्रयास से होने वाली मानसिक और आध्यात्मिक पीड़ा तभी समाप्त होगी जब तुम भागकर उस एक अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के सामने समर्पण कर दोगे, जिसकी शक्ति से ही सभी चीजों के अस्तित्व को समझाया जा सकता है। उसकी इच्छा का उल्लेख करने से सभी अस्पष्टताएँ स्पष्ट हो जाती हैं, और उसे याद करने और उसके नाम पर निर्भर रहने से दिल और दिमाग को शांति और स्थिरता मिलती है।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारा हृदय और मन जिस क्षेत्र में गति करते हैं, उसे कोई घेर नहीं सकता। यद्यपि तुम कभी-कभी एक छोटे कण में यात्रा करते हो, एक बूँद में तैरते हो, तथा अपने को एक बिन्दु में कैद कर लेते हो, किन्तु वास्तव में तुम सम्पूर्ण जगत को अपनी आँखों के सामने रखते हो, तथा समस्त सृष्टि को अपनी बुद्धि में समाहित करते हो, तथा उस अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को देखने की आकांक्षा रखते हो। कभी-कभी तुम छोटे हो जाते हो-

55 इस शक्ति द्वारा दुर्भाग्य भेजने और तुच्छ और महत्वहीन लगने वाली चीज़ों और घटनाओं से निपटने के पीछे की सच्ची बुद्धि को न देख पाने के कारण लोग ईश्वरीय सत्ता को दोष दे सकते हैं। ऐसी गलतियों से उन्हें बचाने के लिए, ईश्वर दृश्यमान, भौतिक दुनिया में कारणों के पीछे काम करता है।

एक छोटे कण से भी बड़ा या आकाश से भी बड़ा, या आप एक बूंद में प्रवेश करते हैं या मौजूद हर चीज को शामिल करते हैं।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर ने मानवता को जो उपहार दिए हैं, उन्हें प्राप्त करना ही चाहिए।
या शर्तों के साथ आते हैं का उपयोग करें। इनमें से कुछ शर्तें स्थापित हैं-

ईश्वर द्वारा दी गई चीजें, जबकि अन्य चीजें खुद इंसानों से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाश, हवा, भोजन और वाणी ईश्वर की देन हैं, और हम इनसे कितना लाभ उठाते हैं, यह हमारे संबंधित अंगों की स्वस्थता और सेहत पर निर्भर करता है। सभी इंद्रियों और अंगों को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने बनाया है; हमारा काम उन्हें स्वस्थ और स्वस्थ रखना है। ऐसा मत सोचिए कि वे संयोग से हमारे पास आती हैं और परिणामस्वरूप, हम उन्हें अपनी इच्छानुसार अपने पास रख सकते हैं और नियंत्रित कर सकते हैं। वे हमें उस व्यक्ति की इच्छा से मिलती हैं जिसने उन्हें हमें दिया है; हम उन्हें अपनी इच्छा से काम करते रहते हैं, और उन्हें उस व्यक्ति की इच्छा के अनुसार उपयोग करते हैं जिसने उन्हें दिया है।

हे मित्र, जान लो कि चीजें अपने अंत की तुलना में अपनी शुरुआत में अधिक व्यवस्थित और सुदृढ़ नहीं होती हैं। उनके बाहरी रूप और रूप कला में उनके अंदरूनी हिस्सों की तुलना में अधिक सुंदर और ज्ञान में अधिक उत्कृष्ट नहीं होते हैं। क्या तुम मानते हो कि ऐसी चीजें संयोग पर छोड़ दी जाती हैं? क्या तुम नहीं देखते कि फूल और उसका फल बीज और उसकी टहनी की तुलना में अधिक ज्ञान प्रदर्शित करते हैं? निर्माता वह है जो प्रथम और अंतिम है, बाहरी और आंतरिक है, और जो सभी चीजों को जानता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन की चमत्कारी वाक्पटुता इसे भ्रष्ट होने से बचाती है। कोई भी इसके शब्दों को किसी भी व्यक्ति के शब्दों के साथ नहीं मिला सकता, चाहे उसकी पहचान या अरबी भाषा पर उसका कितना भी अधिकार क्यों न हो। कोई भी व्यक्ति क़ुरआन का “पोशाक” नहीं पहन सकता, जैसा कि अन्य अवतरित पुस्तकों के साथ किया गया और अंततः उनके भ्रष्ट होने का कारण बना।

जान लो, ऐ दोस्त, कि सूरत अल-रहमान में अवतरित आयतों के अंत में यह दोहराना कि तुम अपने रब की कौन-सी नेमतों से इनकार करते हो? विभिन्न "प्राकृतिक" घटनाओं की ओर संकेत करता है - प्रत्येक ईश्वरीय अस्तित्व और एकता का संकेत है। यह दर्शाता है कि मानवता और जिन्नों की अवज्ञा [ईश्वर के आदेशों के प्रति], विद्रोह और कृतघ्नता मुख्य रूप से ईश्वरीय अनुदान देने के कार्य के प्रति उनकी अंधी दृष्टि और अनुदान देने वाले के प्रति उनकी असावधानी से उत्पन्न होती है। इसलिए, वे अनुदानों को कारणों और संयोग से जोड़ते हैं और ईश्वर के आशीर्वादों से इनकार करते हैं। इसे देखते हुए, विश्वासियों को ईश्वर के नाम से कहना चाहिए, जो दयालु, दयावान है जब वे किसी अनुदान का उपयोग या उपभोग करना शुरू करते हैं। इसका मतलब है कि यह ईश्वर की ओर से है

उसके लिए, साधनों और कारणों के लिए नहीं। सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी की है।

हे तुम जो शैतान की फुसफुसाहटों, अपने दिल और शारीरिक स्वभाव से उत्पन्न होने वाले अनैच्छिक विचारों और सुझावों, और अश्लील दृश्यों और कल्पनाओं के संपर्क में आते हो, जब तुम ईश्वरीय सत्यों पर विचार करने और उन पर चिंतन करने का प्रयास करते हो, तो जानो। अश्लील और दुर्भावनापूर्ण छवियाँ तुम्हारी आँखों के सामने से गुज़रती हैं, जब तुम सत्यों के "सूर्य" को देखते हो तो तुम काँप उठते हो। ऐसा लगता है जैसे तुम्हारी कल्पना तुम्हारे हाथों को गंदा कर देती है जब तुम उन्हें परमेश्वर की महिमा करने के लिए फैलाते हो, और तुम्हारा शारीरिक स्वभाव तुम्हारी आँखों को गंदा कर देता है जब तुम उन्हें परमेश्वर की स्तुति और महिमा पर केंद्रित करते हो।

जब आप उन चीज़ों पर विचार करते हैं जिन्हें आप पवित्र मानते हैं, तो ऐसी गंदगी आपको कष्ट पहुँचाती है और आपका ध्यान उनकी ओर और अधिक आकर्षित करती है। उनके कारण कष्ट न उठाएँ, और इस स्थिति से बचने के लिए उन पर विचार न करें, क्योंकि वे तभी हानिकारक हैं जब आप उन्हें ऐसा मानते हैं और उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

धूल से सने कपड़ों के छेदों से सूरज और उसकी रोशनी, आसमान और उसके सितारों, बगीचे और उसके फूलों को देखें। गंदगी आपके देखने को प्रभावित नहीं करती। अनजाने में आए विचार और सुझाव कुछ खास कीड़ों और मधुमक्खियों की तरह होते हैं: अगर आप खुद को बचाने के लिए उनसे संघर्ष करेंगे, तो वे आपको घेर लेंगे और आपको और परेशान करेंगे; अगर आप उन्हें अनदेखा करेंगे, तो वे आपको अकेला छोड़ देंगे।

हे मित्र, जान लो कि तुम दर्शनशास्त्र में उलझे हुए हो और रहस्योद्घाटन की अपेक्षा तर्क को प्राथमिकता देते हो, फिर भी रहस्योद्घाटन पर टिप्पणी करते हो। तुम इसे भ्रष्ट करते हो, क्योंकि तुम्हारा तर्क, आत्म-गर्व और दर्शनशास्त्र के प्रति गहरा लगाव तुम्हें इसे समझने से रोकता है। एक बार मैं भी वैसा ही सोचता था जैसा तुम अब सोचते हो।

लेकिन फिर मैंने एक ऊंचा, शानदार महल देखा जिसकी मंजिलें स्वर्ग की छत से जुड़ी हुई हैं। इसकी खिड़कियों से अलग-अलग रस्सियाँ लटकी हुई हैं, जिनमें से कुछ धरती के करीब हैं। जो कोई भी सांसारिक स्वार्थ पर काबू पा लेता है और रस्सी को मजबूती से पकड़ लेता है, वह सबसे ऊंचे पदों पर पहुँच सकता है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो आत्म-गर्व में खोए रहते हैं और इन रस्सियों की परवाह नहीं करते, अपने पैरों के नीचे ढेर की गई चीज़ों पर चढ़ने की कोशिश करते हैं।

थोड़ा ऊपर उठने के बाद वे गिर जाते हैं। ये चीजें उन्हें ऊपर उठने में कैसे मदद कर सकती हैं?

मैंने दूसरों को देखा है जो अपने अहंकार पर भरोसा करते हुए महल की दीवारों में कीलें ठोंकते हैं और उनके सहारे ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हैं। हालांकि, वे भी गिर जाते हैं और उनकी गर्दन टूट जाती है। और इसी तरह। लोगों के पास जो भी योग्यताएँ और बौद्धिक क्षमताएँ हैं, उन्हें उनकी क्षमताओं के अनुसार उपयोग करने और उन्हें रस्सियों तक पहुँचने में सक्षम बनाने के लिए दिया गया है, न कि स्टेशनों तक। जब सही तरीके से इस्तेमाल किया जाता है, तो आपका तर्क आपको केवल रस्सियों तक ले जा सकता है, जबकि आप रहस्योद्घाटन के द्वारा ऊपर उठ सकते हैं।

जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखता है, वह उसे पर्याप्त पाता है।

हे मित्र , इस सांसारिक जीवन में पापियों की पुण्यात्मा पर विजय और दुष्टों की धर्मात्मा पर श्रेष्ठता के विषय में जो आश्चर्य करता है, उसे जान लो । एक दर्शन में मैंने एक किला देखा जिसमें अनेक मंडप थे। उनके निवासी सौंदर्य, श्रेष्ठता, वैभव और चमक में भिन्न-भिन्न थे। बीच में बैठा हुआ व्यक्ति राजा जैसा दिख रहा था। उसके नीचे द्वार तक ऐसे कक्ष थे जिनके निवासियों के पद और प्रतिष्ठा में भिन्नता थी। एक नौकर दरवाजे के पास खड़ा था और दरवाजे के सामने एक चापलूसी करने वाला कुत्ता लेटा था। फिर मैंने एक और किला देखा जिसका सामने का भाग चमचमा रहा था। आश्चर्य से मैंने उसके भीतर झाँका और देखा कि राजा द्वार के सामने कुत्ते के साथ खेल रहा है। स्त्रियाँ अभद्र वस्त्र पहने बच्चों के साथ ठिठोली कर रही थीं। महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह गए चाहे वह कितना भी चमकीला, किलानुमा और भव्य क्यों न हो, वास्तव में वह महल अंधकारमय और दयनीय था।56 मैं मानवता, एक व्यक्ति और अपने शारीरिक स्व को महलों के रूप में देखता हूँ। जो लोग महलों में रहते हैं, उनके पास [ज्ञान, नैतिकता और मूल्यों में] असीम रूप से भिन्न डिग्री या रैंक होती हैं। आधुनिक, सभ्य लोग जिसे "प्रगति" कहते हैं, वह वास्तव में पतन और पतन है। जिसे वे "सत्ता प्राप्त करना और उसे बनाए रखना" कहते हैं, वह अश्लीलता और मूल्य की हानि है। जिसे वे "जागृत होना", "पुनरुत्थान" और "ज्ञानोदय" कहते हैं, वह असावधानी की नींद में गहरा होता जा रहा है। जिसे वे "विनम्रता" कहते हैं, वह दिखावा और पाखंड, चतुराई और शैतानी साज़िश है, और

मानवता का जानवरों में रूपांतरित होना है।

ईश्वर द्वारा दी गई उनकी उज्ज्वल शक्तियों के कारण उनकी अँधेरी आत्माओं के साथ मिलकर, इन पतित, विद्रोही लोगों में कुछ सुंदर और आकर्षक दृश्य दिखाई दे सकते हैं। लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर की आज्ञा मानने वाले पवित्र विश्वासियों के लिए, उनका शारीरिक स्वभाव दरवाजे के सामने दुखी दिखने वाले कुत्ते का प्रतिनिधित्व करता है। वे अपनी ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का उपयोग नीच इच्छाओं और कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को उनकी रचना के उद्देश्य की ओर वापस लाने के लिए करते हैं। यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर किसी सेवक से प्रेम करता है, तो वह उसे दुनिया की सुंदरता से प्रेम करने के लिए नहीं बनाता है; बल्कि, जब आवश्यक हो, तो वह उस सेवक को उनसे घृणा करने के लिए दुर्भाग्य का उपयोग करता है।

---

56 पहला किला एक आस्तिक को दर्शाता है, जो दिखने में भले ही नीरस और चमकीला न हो, लेकिन वास्तव में खुश और प्रतिभाशाली है, जिसकी क्षमताएँ (हृदय, बुद्धि, इंद्रियाँ और अंग) सृष्टिकर्ता की इच्छा के अनुसार काम करती हैं। दूसरा किला एक आधुनिक अविश्वासी को दर्शाता है, जो दिखने में तो चमकीला और खुश है, लेकिन दुखी है और अपनी क्षमताओं, इंद्रियों और अंगों का उपयोग केवल दुनिया के अस्थायी सुखों के लिए करता है। (ट्र.)

इस भ्रष्ट सभ्यता ने आकर्षक उपकरण और मनमोहक खिलौने विकसित किए हैं जो महल में रहने वालों को मोहित करते हैं और जो पतंगों की तरह हैं
प्रकाश से आकर्षित, जलती हुई आग की ओर आकर्षित।

हे अभागे पापी ने कहा, जान, यह अहंकार, असावधानी,
और उदासीनता [भगवान के आशीर्वाद के लिए]? क्या आप नहीं देखते कि आपकी स्वतंत्र इच्छा है
एक बाल जितना कमजोर, आपकी शक्ति एक छोटे कण से भी कम, आपका जीवन प्रकाश की चमक जितना अस्थायी, आपकी चेतना धुंधली और क्षयकारी प्रकाश जितनी सुस्त
प्रकाश की किरण, आपका समय एक गुज़रते हुए पल जितना छोटा, और आपका स्थान एक गुज़रते हुए पल जितना छोटा
कब्र की? फिर भी आपकी नपुंसकता अनंत है, आपकी ज़रूरतें अनंत हैं, आपकी गरीबी असीम है, और आपकी महत्वाकांक्षाएँ असीम हैं। क्या ऐसे व्यक्ति को भरोसा करना चाहिए
उसके हाथ में क्या है और उसे अपने आप पर निर्भर रहना चाहिए, या उसे
वह ईश्वर पर भरोसा करती है, जो दयालु और दयावान है?
उसकी दया और वरदानों के संदूक प्रकाश से भरे और प्रकाश फैलाने वाले सूर्य हैं
और फलदार वृक्षों के बीच, और उसके स्रोत से निकलने वाली नदियों के बीच
उसकी कृपा और दया की बाढ़ जल और प्रकाश हैं।

हे मित्र , जान लो कि कौन निष्कर्ष को इतना महान मानता है कि उसे दिए गए साक्ष्यों से समर्थन नहीं मिल सकता। विश्वास का प्रत्येक सत्य हर दूसरे सत्य द्वारा पुष्ट, समर्थित और मजबूत होता है, जो सत्य की ओर संकेत करता है।
इस्लाम और उसके प्रत्येक भाग के बारे में अनगिनत साक्ष्य, गवाह और तथ्य मौजूद हैं।
इस्लाम और ईमान की सच्चाई के संकेत एक दूसरे की सच्चाई की पुष्टि करते हैं।
इस पर स्वीकृति की मुहर लगा दी, जबकि कई बातों का निषेध या अस्वीकृति
एक के बराबर है, जैसा कि पहले बताया गया है, एक की पुष्टि कई की पुष्टि से मजबूत होती है।

हे मित्र, यह जान लो कि तीव्र प्रेम व्यक्ति को उस वस्तु को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है जिसे वह प्रेम करता है।
यह बात तीव्र भय, अत्यधिक महानता और व्यापक तर्क के लिए भी सत्य है। जो प्राप्त नहीं किया जा सकता है उसके लिए तीव्र प्रेम, उस चीज़ को नकारने की ओर ले जा सकता है।
प्रिय वस्तु, तीव्र भय के कारण व्यक्ति उस चीज़ को अस्वीकार कर सकता है जिससे वह डरता है, तथा
तर्क की समझ से परे महानता को तर्क द्वारा नकारा जा सकता है।

हे मित्र, जान लो कि अविश्वास का बीज नरक को जन्म देता है।
जैसे सरसों का पौधा अपने बीज में समाहित होता है। इसी तरह, विश्वास संभावित रूप से धारण करता है
स्वर्ग का बीज, जैसे खजूर का पेड़ अपने बीज में समाया हुआ है। यह सामान्य बात है
राई के बीज से राई का पौधा बनना, और खजूर के बीज से
ताड़ के पेड़ में। उसी तरह, गुमराही नरक और मार्गदर्शन की ओर ले जाती है
स्वर्ग की ओर ले जाता है।

हे मित्र, जान लो कि यदि हृदय में बीज बो दिया जाए तो वह उग नहीं सकता।
[एक पेड़ में] ताकि उसे खुद पर "गर्व" हो। इसी तरह, जब आपका अहंकार

यदि आपके नियमित दिव्य नाम जप की किरणों और प्रज्वलित "लपटों" से कठोर अनाज को छेद दिया जाए, तो वह विकसित नहीं हो सकता और मजबूत नहीं हो सकता
फिरौन की तरह, मानवीय उपलब्धियों पर बेतहाशा भरोसा करके खुद पर गर्व करना
और सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं
आकाश और पृथ्वी। नक्शबंदी संतों ने दिल का दाना खोल दिया है
और अहंकार के चट्टानी पहाड़ को प्रज्वलित करने और उसे तोड़ने का एक छोटा रास्ता खोज लिया
भगवान के नामों को चुपचाप जपने की "अभ्यास" के साथ अभिमानी आत्म के सिर को हिलाना।
उन नामों का उच्च स्वर में उच्चारण करने से (दार्शनिक) मूर्ति नष्ट हो जाती है।
प्रकृतिवाद.

हे मित्र, जान लो कि सबसे दूरस्थ, सबसे बड़े और सबसे नाजुक स्थान में भी
बहुलता के क्षेत्र [भौतिक क्षेत्र जहां चीजें अलग-अलग मौजूद होती हैं
और बहुतायत में], ज्ञान, देखभाल, और दृढ़ और परिपूर्ण बनाने की छाप स्पष्ट रूप से देखी जाती है। अपने शरीर की त्वचा के सबसे दूर के छोर को देखें। देखें
कैसे दिव्य शक्ति की कलम ने रेखाएं और डिजाइन अंकित किए हैं
आपके शरीर के माथे के पन्नों पर इसके स्वामी की आत्मा के अर्थ,
चेहरे और हथेलियों पर। आपके जीवन-इतिहास की अदृश्य, अमूर्त प्रतिलिपि लटका दी गई है
यह आपके गले में लटका होता है और आपके भाग्य की ओर इशारा करता है। इस शिलालेख [जो किसी के भाग्य को इंगित करता है] में कोई छेद नहीं है जिसके माध्यम से अंधा संयोग या कोई भी समान एजेंट [जैसे कार्य-कारण] गुजर सकता है।

हे मित्र , जान लो कि इस सांसारिक जीवन में कौन प्रिय है। तुम सोचते हो कि
जीवन का उद्देश्य और जो कुछ भी शाश्वत शक्ति ने मानवजाति और जीवित प्राणियों को सौंपा है - जैसे कि अद्भुत प्रणालियाँ और असाधारण क्षमताएँ - उसका उद्देश्य केवल इस क्षणभंगुर जीवन को बनाए रखना और इसकी निरंतरता को सुरक्षित करना है। लेकिन
आप गलत हैं। यदि जीवन का उद्देश्य इसकी निरंतरता है, तो ज्ञान, पक्षपात और सुव्यवस्था के सबसे मानवीय, स्पष्ट और उज्ज्वल प्रमाण भी हैं।
चूँकि पूरे ब्रह्माण्ड में निरर्थकता का पूर्ण अभाव देखा जाता है और इसकी समग्र व्यवस्था द्वारा देखा जाता है, यह सबसे आश्चर्यजनक निरर्थकता का प्रतिनिधित्व करेगा और
अपव्यय, उद्देश्यहीनता और अराजकता [क्योंकि सब कुछ नष्ट हो जाता है]।

जीवन के फल और उद्देश्यों से आपको जो मिलता है, वह आपके जीवन के स्वामित्व और नियंत्रण में आपकी भूमिका के अनुपात में होता है। अन्य उद्देश्य और उद्देश्य
फल जीवनदाता के हैं। मानवता केवल उनके नाम की वस्तु है।
अभिव्यक्तियाँ। भगवान अपनी दया के रंग और विकिरणों को प्रदर्शित करेंगे
स्वर्ग में सबसे बड़ी डिग्री, जिसमें फल उगेंगे
इस जीवन के बीज.

आपका अपने जीवन के साथ संबंध एक खेनेवाले और नाव चलानेवाले के बीच के संबंध जैसा है।
वह शाही जहाज़ चलाता है। खेनेवाला उन उपकरणों पर अपना हाथ रखता है

जो जहाज को चलाता और चलाता है। जहाज के उपयोग और आय में उसका हिस्सा जहाज के साथ उसके संबंध और उसके द्वारा दी जाने वाली सेवा के अनुपात में है - शायद हज़ारों में से एक। आपके और आपके अस्तित्व और जीवन के जहाज के बीच यह संबंध एक जैसा है, और आपके उपयोग और उद्देश्यों से आपका हिस्सा

ज़िन्दगी भी हज़ारों में एक ही है। और यह भी तुमने कमाया नहीं है
अपने शब्दों या कार्यों से भाग लें।

हे मेरे हृदय, जान ले कि संसार का सुख और सौंदर्य,
हमारे सृष्टिकर्ता, स्वामी और प्रभु के विषय में ज्ञान का अभाव नरक से अधिक कुछ नहीं है,
भले ही वे स्वर्ग के समान महान हों। यह मेरा अनुभव है और
अवलोकन। उनके ज्ञान से करुणा जैसा आशीर्वाद भी इतना ही हो जाता है
इतना मनभावन और मधुर कि यह किसी को भी संसार में मौजूद किसी भी चीज़ के प्रति उदासीन बना दे
दुनिया भर में, यहाँ तक कि स्वर्ग में भी।

हे मेरे हृदय, यह जान ले कि यहां जो कुछ भी घटित होता है उसके दो पहलू हैं: एक
इस संसार, शारीरिक स्व, तथा हमारी सांसारिक इच्छाओं और कल्पनाओं से संबंधित है;
दूसरा परलोक से संबंधित है। सांसारिक पहलू के संबंध में,
सबसे बड़ा, सबसे महत्वपूर्ण और सबसे स्थापित मामला सबसे छोटा, सबसे
यह अपने आप में महत्वहीन और क्षणभंगुर है। इसलिए इसके बारे में चिंता या शोक मत करो, या
इसे महत्वपूर्ण समझें.

हे मेरे हृदय, जान ले कि मुझसे अधिक मूर्ख और अज्ञानी कोई नहीं है।
जो सूर्य की छवि को क्षणभंगुर, छोटी वस्तु में या उसकी अभिव्यक्ति पर देखता है
एक फूल को रंग के रूप में प्रस्तुत करना, तथा फिर मांग करना कि वह छवि या रंग बिल्कुल वैसा ही हो
मूल के वे - दुनिया की छत पर प्रकाश और गर्मी फैलाने वाला दीपक जो सौर मंडल में केंद्रीय स्थान का आनंद लेता है
और ग्रहों को इसके चारों ओर चक्कर लगाता है। इसके अलावा, जब छोटी वस्तु या

फूल “गायब हो जाता है”, उनके सीमित और दोषपूर्ण दृष्टिकोण के कारण, वे इनकार करते हैं
मध्यान्ह में सूर्य का अस्तित्व, भले ही बिना किसी अपवाद के सभी चीजें विद्यमान हों,
दिनदहाड़े इसकी गवाही देता है।

ऐसे लोग, नियति द्वारा निर्धारित अभिव्यक्ति या प्रतिबिंब के माध्यम से निर्मित एक छायादार अस्तित्व को,
मुख्य, वास्तविक अस्तित्व के साथ भ्रमित करते हैं।
वे एक पारदर्शी वस्तु में सूर्य की छवि देखते हैं और
पूछें: "क्या सूरज इतना छोटा है? इसकी अद्भुत गर्मी और अन्य गुण कहाँ हैं?"
और इसी तरह।

ऐसी आपत्तियों के पीछे एक ब्रांड को पकड़ने की गलत इच्छा है
सूर्य की अग्नि को छूना या प्रभावित करना। वे यह समझने में विफल रहते हैं कि सूर्य के "निकट होने" का अर्थ या आवश्यकता यह नहीं है कि वे इसे प्रभावित कर सकते हैं

उनके कार्य।57 इसके अलावा, यह देखते हुए कि सबसे छोटी चीजें आश्चर्यजनक रूप से दृढ़, आश्चर्यजनक देखभाल और मनभावन कला के साथ और महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए बनाई जाती हैं, वे एक गलत सादृश्य प्राप्त करते हैं: उनके निर्माता ने उन्हें बनाने में बहुत (और अनावश्यक) प्रयास किया होगा। इसलिए वे पूछते हैं: "बुद्धिमान निर्माता ने इस मच्छर पर इतना बड़ा श्रम क्यों खर्च किया है? इसका क्या मूल्य है?"

हे तुम जो सोफिस्ट की तरह सोचते हो। ईश्वर की तुलना सबसे ऊंची है, और उसके लिए सबसे ऊंचे उदाहरण और उपमाएं गढ़ी जानी चाहिए। ईश्वर सभी चीजों का निर्माता और संरक्षक है। निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें ताकि आप इस मामले पर स्पष्ट रूप से विचार कर सकें:

पहली बात: हर चीज़ अपने गुणों के कारण, अपने पूर्ण प्रभुत्व में सर्वशक्तिमान की ओर संकेत करती है। जो कुछ भी उस चीज़ में है, वह उसी की ओर से है; उसे उसका अपना गुण नहीं कहा जा सकता।

दूसरा बिंदु: सर्वशक्तिमान की रोशनी में हर चीज़ के दरवाज़े खुले हैं। अगर एक दरवाज़ा बंद दिखता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि बाकी सभी दरवाज़े बंद हैं। बल्कि, एक खुले दरवाज़े का मतलब है कि सभी दरवाज़े खुले हैं।

तीसरा बिन्दु: भाग्य, जो ईश्वर के सर्वव्यापी ज्ञान का प्रतिबिम्ब है, ने प्रत्येक वस्तु के लिए ईश्वर के परम प्रकाशमान नामों की किरणों में से एक विशिष्ट, उपयुक्त चरित्र निर्धारित किया है।

चौथा बिन्दु: जब वह किसी चीज़ की इच्छा करता है, तो उसका आदेश बस इतना है कि उससे कहो: “हो जा!” और वह हो जाती है (36:82); तुम्हारी रचना और पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28)। चीज़ों को उनके अपने या संभावित कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए ज़रूरी है कि हम इस तरह के गलत निर्णय से उत्पन्न होने वाली सभी तरह की असंभवताओं को स्वीकार करें।

हे मित्र, जान लो कि कुरान दृष्टांतों और तुलनाओं के माध्यम से कई सत्यों की व्याख्या करता है, क्योंकि इसके अमूर्त ईश्वरीय सत्य केवल इस [भौतिक] आकस्मिकता के क्षेत्र में सीमित, ठोस रूपों में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। एक आकस्मिक प्राणी इन ठोस, आकस्मिक रूपों पर विचार करता है और उनके प्रकाश में, परम आवश्यकता (ईश्वरीयता के क्षेत्र) के क्षेत्र से निकलने वाले कार्यों पर विचार करता है।

---

57 ईश्वर में विश्वास करने के लिए, कुछ लोग ईश्वर को स्वयं देखना चाहते हैं या हर चीज़ और घटना में उसकी मौजूदगी को नंगी आँखों से देखना चाहते हैं, उसे “छूना” चाहते हैं या उस पर कुछ प्रभाव डालना चाहते हैं। वे यह नहीं देख पाते कि सूर्य से उनकी निकटता और उसके प्रत्यक्ष प्रभाव के दायरे में होना उनके कारण नहीं है, बल्कि सूर्य द्वारा अपनी रोशनी और गर्मी के प्रकटीकरण के कारण है। इसलिए, ईश्वर अपने नामों और गुणों, जैसे ज्ञान, इच्छा, शक्ति, अनुग्रह, जीवन देने वाले और पोषण देने वाले के प्रकटीकरण के कारण हमसे ज़्यादा हमारे करीब है। लेकिन जो लोग उससे बेखबर हैं, वे इस वास्तविकता को नहीं समझ पाते और इस बहाने से उसके अस्तित्व को नकारने की कोशिश करते हैं कि वे उसे देख या छू नहीं सकते। (अनुवाद)

हे मित्र, जान लो कि हृदय का तुम्हारे लिए वही अर्थ है जो पृथ्वी का है।
दिव्य सिंहासन ब्रह्मांड के लिए है। आपका हृदय आपके अस्तित्व का "बाहरी आयाम" है, और आप अपने हृदय में अपने अस्तित्व का "आंतरिक आयाम" हैं। क्षेत्र में
दिव्य नाम "बाह्य" का दिव्य सिंहासन सब को समाहित करता है
चीज़ें। दिव्य नाम "आंतरिक" के क्षेत्र में, यह हृदय की तरह है
सृष्टि का। "प्रथम" नाम के क्षेत्र में, यह इस प्रकार इंगित किया गया है: उसका
सिंहासन पानी पर था (11:7)। दिव्य नाम "अंतिम" में, इसका प्रतीक है: स्वर्ग की छत ईश्वर का सिंहासन है। 58 दिव्य सिंहासन में पानी है।
प्रथम और अंतिम, बाहरी और आंतरिक होने के गुण, से निकलने वाले: वह है
प्रथम और अन्तिम, बाहरी और भीतरी (57:3).59

हे मित्र, जान लो कि लाचारी से याचना और आवश्यकता उत्पन्न होती है।
प्रार्थना करने का कारण बनता है.

> हे प्रभु, हे सृष्टिकर्ता, हे स्वामी! मैं आपसे विनती करता हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ क्योंकि
> मैं जरूरतमंद हूँ। मैं अपनी प्रार्थना के माध्यम से आपकी शरण लेता हूँ क्योंकि मैं जरूरतमंद हूँ।
> बेसहारा हूँ। मेरी लाचारी ही आपसे विनती करने और माँगने का मेरा जरिया है
> आपकी मदद के लिए। मेरी कमज़ोरी ही मेरा ख़ज़ाना है। मेरी महत्वाकांक्षा और दर्द ही मेरा ख़ज़ाना है।
> मेरी पूंजी। आपके प्रिय - पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो - और आपकी दयालुता मेरे मध्यस्थ हैं। मुझे क्षमा करें,
> मेरे पापों को क्षमा करें
> हे परमेश्वर, हे दयालु, हे करुणामय! हे परमेश्वर, हे करुणामय! हे परमेश्वर, हे करुणामय!

एक प्रार्थना

हे प्रभु! मैंने अपने दर्द के इलाज के लिए सभी छह दिशाओं में देखा। अफसोस, मुझे कोई इलाज नहीं मिला।
कोई नहीं। मैंने सांत्वना पाने के लिए अपने दाहिनी ओर बीते समय की ओर देखा, लेकिन कल
मेरे पिता की कब्र के रूप में प्रकट हुआ। मैंने बाईं ओर भविष्य की ओर देखा,
और कोई इलाज नहीं मिला। बल्कि, कल मेरी कब्र के रूप में सामने आया। मैं
वर्तमान दिन को देखा, और इसे एक ताबूत की तरह देखा जो मेरी हताशा को ले जा रहा है
संघर्षरत लाश। मैंने अपना सिर उठाया और देखा कि मेरी लाश नीचे देख रही थी
मुझ पर। मैंने अपना सिर नीचे किया और देखा कि मेरे पैरों के नीचे मेरी हड्डियों की धूल थी
मेरी पहली रचना की धूल में मिल गया। उस दिशा से दूर मुड़ते हुए,
मैंने पीछे देखा और एक अस्थायी दुनिया देखी जिसका कोई आधार नहीं था
शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधकार में।

---

58 इब्न माजा और इब्न असकिर द्वारा वर्णित पैगम्बर का कथन। जामी अल-सगीर, संख्या 3116।

59 दिव्य सिंहासन की सच्चाई और वास्तविक पहचान अज्ञात है। इसका (प्रतीकात्मक) संबंध
सृष्टि को एक अमूर्त केंद्र के रूप में देखा जा सकता है जिसके माध्यम से ईश्वर की आज्ञाएँ पहुँचती हैं
पूरे ब्रह्मांड में पहुँचाया या संचालित किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक मामले में, पानी
दया का सिंहासन (ईश्वर की दया का संवाहक) और मिट्टी को जीवन का संवाहक माना जाता है। (ट्र.)

चूँकि मुझे उस दिशा से भी कोई अच्छाई नहीं दिखी, इसलिए मैंने अपनी नज़र आगे की ओर घुमाई। मैंने देखा कि मेरे रास्ते के अंत में मेरी कब्र का दरवाज़ा खुला हुआ था, जिसके पीछे अनंत काल की ओर जाने वाला राजमार्ग दूर से मेरी आँखों को आकर्षित कर रहा था। मेरे पास जो कुछ है वह एक तुच्छ स्वतंत्र इच्छा है जिसमें शक्ति की कमी है और जिसकी सीमा बहुत छोटी है जो अतीत को भेद नहीं सकती या भविष्य को नहीं समझ सकती। वह क्षेत्र जहाँ इच्छाशक्ति सक्रिय है वह संक्षिप्त वर्तमान समय और गुज़रता हुआ वर्तमान क्षण है।

मेरी समस्त विपन्नता और असहायता के बावजूद, आपकी शक्ति की “कलम” ने मेरे स्वभाव में अनंत काल तक फैली हुई असीम इच्छा और महत्वाकांक्षा अंकित कर दी है।

ज़रूरत का दायरा उतना ही विस्तृत है जितना कि नज़र जाती है। वास्तव में, कल्पना जहाँ भी जाती है, ज़रूरत का दायरा उतना ही विस्तृत होता है, जबकि मेरी शक्ति की सीमा मेरी भुजा से आगे नहीं पहुँचती। मेरी इच्छा और ज़रूरत अनंत हैं, जबकि मेरी पूंजी एक परमाणु जितनी छोटी और महत्वहीन है। तो, इस ज़रूरत के सामने वह महत्वहीन इच्छाशक्ति क्या दर्शाती है जो इतनी बड़ी है कि यह ब्रह्मांड को अपने में समेटे हुए है?

हालाँकि, हे प्रभु, मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा को आपके मार्ग में समर्पित करता हूँ, और अपने अहंकार को त्यागता हूँ ताकि आपकी परम दया मेरी सहायता और समर्थन कर सके। जो व्यक्ति दया के असीम सागर को पा लेता है, वह अपनी स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर नहीं रहता, जो मृगतृष्णा की एक बूँद से अधिक कुछ नहीं है।

हे प्रभु, यह जीवन तो बस एक नींद है; यह जीवन भी हवा की तरह उड़ता रहता है। हे मेरे दुखी आत्मा, जीने के शौकीन और लंबे जीवन की चाहत रखने वाले। जागो और अपने होश में आओ! तुम्हारा रचयिता वह है जिसके हाथ में सारा जीवन और अस्तित्व है। सारा अस्तित्व उसी का है, और वही जीवन और अस्तित्व देता है। इसलिए, स्थायित्व पाने के लिए अपने आप को उसके मार्ग में बलिदान कर दो, क्योंकि निषेध का निषेध ही पुष्टि है। इस प्रकार यदि हमारा न होना निषेध (अस्तित्व के पक्ष में) हो जाता है, तो हमारा अस्तित्व सच्चा अस्तित्व पाता है।

> हे ईश्वर, हे परम दयालु और कृपालु! मुझे अपनी उपस्थिति से जीवन और स्थान प्रदान कर। मुझे अपनी दृष्टि में असीम मूल्य प्रदान कर, क्योंकि निश्चय ही तू ही सर्वपालक, सर्वरक्षक है।

संसद को संबोधन[60]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

निश्चित समय पर नमाज़ पढ़ना ईमान वालों के लिए अनिवार्य है।

हे संसद के सदस्यों, तुम एक महान दिन के लिए पुनर्जीवित किये जाओगे। हे इस्लाम के सैनिकों। हे राष्ट्र की सर्वोच्च सलाहकार परिषद। कृपया सुनो

---

60 यह संबोधन तुर्की राष्ट्रीय युद्ध के ठीक बाद 19 जनवरी 1923 को तुर्की संसद में दिया गया था।

इस विनम्र व्यक्ति की सलाह [सर्वोच्च महत्व के] मामले पर।
यह सलाह दस खंडों में दी गई है।

पहला: इस जीत में निहित असाधारण ईश्वरीय आशीर्वाद के लिए धन्यवाद की आवश्यकता है ताकि यह स्थायी हो सके। यदि किसी आशीर्वाद का उत्तर धन्यवाद के साथ नहीं दिया जाता है, तो वह गायब हो जाता है। अब जब आपने ईश्वर की सहायता से कुरान को दुश्मन के हमलों से बचा लिया है, तो इसके सबसे स्पष्ट, सबसे निर्णायक आदेशों का पालन करें, जैसे कि निर्धारित प्रार्थना, ताकि इसकी आशीषें आपको निरंतर मिलती रहें।

दूसरा: आपने मुस्लिम दुनिया को खुशी दी है और उनका प्यार और अनुकूल झुकाव जीता है। फिर भी, यह तभी कायम रह सकता है जब आप इस्लाम के आदेशों का पालन करें, जो दर्शाता है कि तुर्की मुस्लिम है। मुसलमान आपसे इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि आप मुसलमान हैं।

तीसरा: आपने इस्लाम के उन सैनिकों को आदेश दिया है, जो शहीद हो चुके हैं या बच गए हैं, और जिन्हें संत माना जा सकता है। इसलिए, आपसे कुरान का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि आप दूसरी दुनिया में उन महान व्यक्तियों की संगति में रह सकें। अन्यथा, भले ही आप यहाँ अधिकार का पद रखते हों, लेकिन आपको दूसरी दुनिया में प्रकाश के लिए एक साधारण सैनिक से भीख माँगनी पड़ेगी। अपनी सारी प्रसिद्धि और सम्मान के बावजूद, यह नीच दुनिया इतनी मूल्यवान नहीं है कि यह आपके लिए पर्याप्त हो और आपके लिए एक अंत हो।

चौथा: भले ही वे खुद धार्मिक न हों, फिर भी मुसलमान चाहते हैं कि उनके नेता धार्मिक हों। दक्षिण-पूर्वी तुर्की में लोग अपने अधिकारियों से सबसे पहला सवाल यही पूछते हैं कि क्या वे नमाज़ पढ़ते हैं। अगर वे पढ़ते हैं, तो लोग उन पर भरोसा करते हैं। अगर वे नहीं पढ़ते, तो लोग उनकी निंदा करते हैं, भले ही वे प्रतिष्ठित अधिकारी क्यों न हों। एक बार बैत अल-शबाब की जनजातियों ने अपने अधिकारियों के खिलाफ़ विद्रोह कर दिया था।

जब मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया, तो उन्होंने जवाब दिया: "हमारा गवर्नर प्रार्थना नहीं करता और शराब पीता है। हम ऐसे अधार्मिक व्यक्ति की आज्ञा कैसे मान सकते हैं?"
इन लोगों ने स्वीकार किया कि वे प्रार्थना नहीं करते थे। इसके अलावा, वे लुटेरे थे।

पाँचवाँ: ज़्यादातर पैगम्बर पूर्व में आए, जबकि ज़्यादातर दार्शनिक पश्चिम में उभरे। यह नियति का संकेत है जो दर्शाता है कि पूर्व में प्रगति के लिए मुख्य प्रेरणा धर्म और "हृदय" है, न कि तर्क और दर्शन।

आपने पूर्व को जगा दिया है। अब, इसे उचित और उपयुक्त मार्ग पर ले जाइए ताकि आपके प्रयास व्यर्थ न हों या केवल अस्थायी, सतही उपयोग के हों।

छठा: पश्चिमी शक्तियां, जो आपके और इस्लाम के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं, ने धर्म के प्रति आपकी उपेक्षा और उदासीनता का इस्तेमाल किया है - और अभी भी कर रही हैं।
दूसरे लोग भी जो धर्म के प्रति आपकी उपेक्षा का फायदा उठाते हैं, वे आपको और इस्लाम को उतना ही नुकसान पहुंचाते हैं जितना आपके दुश्मन पहुंचाते हैं। इस्लाम की भलाई और राष्ट्र की भलाई के लिए

सुरक्षा और समृद्धि की कामना करते हुए, इस उपेक्षा को त्यागें और अपने धार्मिक कर्तव्यों को फिर से शुरू करें। क्या आप यह नहीं देखते कि अपने असाधारण संकल्प और दृढ़ता तथा मुसलमानों में कुछ हद तक जागृति लाने के बावजूद, उनके अनुयायी संघ और प्रगति पार्टी के लोग तिरस्कृत और घृणास्पद थे क्योंकि वे इस्लाम के पालन में उदासीन और लापरवाह दिखाई दिए? दूसरे देशों में रहने वाले मुसलमानों ने उनका सम्मान किया, उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्होंने इस उपेक्षा को नहीं देखा।

सातवीं बात: अविश्वास की दुनिया मुस्लिम दुनिया से लड़ रही है सदियों से अपनी पूरी ताकत के साथ। इसकी तकनीकी सुविधाओं, सभ्यता, दर्शन, विज्ञान और मिशनरी संगठनों ने अंततः भौतिक जगत को स्थापित किया और मुस्लिम दुनिया पर सैन्य श्रेष्ठता। हालाँकि, इसने इस्लाम पर विजय प्राप्त नहीं की है। राज्य के भीतर सभी विचलित धार्मिक समूह लंबे समय से तिरस्कृत और नगण्य गुट बने रहे। इस्लाम ने अपनी पहचान बचाए रखी है दृढ़ता और धैर्य [बहुतों के] मार्ग पर चलने से पैगम्बर मुहम्मद के प्रति आस्था और सम्मान को देखते हुए हमारी आंतरिक एकता और सामंजस्य कायम हुआ है। यह एक अधार्मिक आंदोलन है जो भ्रष्ट तत्वों से उत्पन्न हुआ है यूरोपीय सभ्यता को असावधानी के माध्यम से उभरने और विकसित होने की अनुमति नहीं दी जा सकती। मुस्लिम दुनिया में क्रांतिकारी, महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस्लाम के स्तंभों का पालन करने पर ही सब कुछ संभव है। यदि कुछ उपलब्धियां भी देखने को मिली हैं, तो वे स्थायी नहीं हैं।

आठवां: यूरोपीय सभ्यता के भ्रष्ट तत्व, जिन्होंने धर्म के प्रति उदासीनता के कारण, गिरावट के कगार पर हैं। एक नया कुरान सभ्यता का उदय होने वाला है। ऐसे समय में, यह संभव नहीं है इस्लाम को नज़रअंदाज़ करने से क्या फ़ायदा है? नकारात्मक, विनाशकारी प्रवृत्तियों को समझने के लिए, इस्लाम जगत को इतना नुकसान हो चुका है कि अब उसे उनकी जरूरत नहीं है।

नौवां: जो लोग आपकी सेवाओं और आपकी जीत की सराहना करते हैं इस राष्ट्रीय युद्ध में, जो आपको दिल की गहराइयों से प्यार करते हैं, वे हैं इस देश के बहुसंख्यक लोग आस्थावान हैं। खास तौर पर आम लोग मज़बूत मुसलमान जो ईमानदारी से आपसे प्यार करते हैं और आपका समर्थन करते हैं, आपके बलिदानों की सराहना करते हैं और आपके प्रति ऋणी महसूस करते हैं। वे आपको एक विशाल, बहुत बड़ी शक्ति प्रदान करते हैं जो जागृत हो चुका है। इस्लाम के लाभ के लिए, आपको उनके साथ संबंध बनाना चाहिए और कुरान का पालन करके उन पर भरोसा करना चाहिए। अन्यथा, क्योंकि यह इस्लाम और मुसलमानों की भलाई के खिलाफ है कि एक भाग्यशाली, पथभ्रष्ट अल्पसंख्यक को प्राथमिकता दी जाए जो पूरे दिल से पश्चिम की नकल करता है। मुस्लिम जनता, मुस्लिम दुनिया आपसे मुंह मोड़ लेगी और मदद मांगेगी दूसरों से.

दसवीं बात: केवल वही व्यक्ति जो जीने से थक गया है, 90% संतुष्टि का मार्ग अपनाने का प्रयास करता है। निश्चित रूप से विनाश की ओर ले जाने वाली प्रार्थनाएँ 99 प्रतिशत तक निश्चित हैं। निर्धारित प्रार्थनाओं में मोक्ष की 99 प्रतिशत संभावना है, जो इस्लाम का एक अनिवार्य दायित्व है।
प्रार्थना करने में सिर्फ़ एक घंटा लगता है। प्रार्थना करने से दुनिया भर में ज़्यादा से ज़्यादा 1 प्रतिशत नुकसान हो सकता है, जबकि प्रार्थना न करने से 99 प्रतिशत नुकसान होने की संभावना है।
इस्लाम का पालन करना। मुझे आश्चर्य है कि इस्लामी दायित्वों की उपेक्षा या अनदेखी करने के लिए क्या बहाना दिया जा सकता है, क्योंकि ऐसा करने से दोनों ही तरह से नुकसान होना निश्चित है
दुनिया और अगली दुनिया। धार्मिक और राष्ट्रीय उत्साह इसकी अनुमति कैसे देते हैं?

लोग मुस्लिम सैनिकों के इस समूह, संसद के सदस्यों की नकल करते हैं,
अपने कामों में। लोग या तो अपने नेताओं की कमियों और दोषों की नकल करते हैं या उनकी आलोचना करते हैं। वे जो भी करते हैं, उससे नुकसान होता है। इसका मतलब है कि नेताओं के अधिकारों का हनन हो रहा है।
भगवान ने नेताओं पर लोगों के अधिकार भी निहित किये हैं। कुछ लोग इसका अनुसरण करते हैं
उनके कामुक स्व और सनक और कल्पनाओं के सुझाव फुसफुसाए
शैतान। वे एक स्पष्ट संदेश नहीं सुनते जिस पर पूरा मुसलमान भरोसा करता है
समुदाय हमेशा सहमत रहा है, और इसके लिए अनगिनत सबूतों पर ध्यान नहीं देता
सत्य, लाभकारी स्वभाव, तथा इसकी उपेक्षा करने के बारे में चेतावनियाँ। ऐसे लोगों से अच्छी, महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करने की उम्मीद नहीं की जा सकती।

यह महान क्रांति ठोस बुनियाद पर आधारित होनी चाहिए।
इस सम्मानित संसद के सामूहिक व्यक्ति को अपनी शक्ति का पूरा लाभ प्राप्त है
शासी निकाय का अर्थ और कार्य ग्रहण किया। इसे विफल नहीं होना चाहिए
धार्मिक मामलों के कार्यालय का कार्यभार संभालना और
लोगों को इस्लाम के उन सिद्धांतों को पूरा करने के लिए मजबूर करना जो यह दर्शाते हैं कि कोई देश मुस्लिम है या नहीं। इस संसद को लोगों की धार्मिक ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए
ऐसे लोग जिन्हें जीवन के लिए चार चीजों की आवश्यकता है, लेकिन उन्हें धर्म की भी आवश्यकता महसूस होती है।
दिन में कम से कम पाँच बार। आधुनिक सभ्यता के कारण वे कमज़ोर नहीं हुए हैं
वे मोहक सुखों का आनंद लेते हैं, और अपनी आध्यात्मिक ज़रूरत को नहीं भूले हैं।
धार्मिक मामलों के कार्यालय में आपकी नियुक्ति को स्वीकार करें और पूरे दिल से समर्थन दें। कोई भी समर्थन और शक्ति जो उत्पन्न नहीं होती है और निर्भर नहीं करती है
संसद पर हमले से आंतरिक कलह और दरार पैदा होगी, जो कि संविधान के विपरीत है।
कुरान की आज्ञा: सब लोग मिलकर ईश्वर की रस्सी को मजबूती से थामे रहो (3:103)।

यह समय एकजुट समुदाय बनने और सामूहिक संगठन स्थापित करने का है।
चेतना। समुदाय में उत्पन्न सामूहिक व्यक्तित्व है
शरिया के आदेशों को लागू करने में दृढ़ और बेहतर सक्षम।
धार्मिक कार्यों के संचालन का भार ही इसकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है
सामूहिक व्यक्ति [संसद में प्रतिनिधित्व] पर निर्भर करके
लोग]। यदि यह सामूहिक व्यक्ति ईमानदार है, तो प्रदान की जाने वाली सेवाएँ बहुत अधिक होंगी

एक व्यक्ति के भ्रष्टाचार से बेहतर और व्यापक है। लेकिन अगर यह भ्रष्ट है, तो भ्रष्टाचार अधिक और व्यापक होगा।

एक व्यक्ति जो भी अच्छा या बुरा करता है, वह आम तौर पर सीमित होता है, जबकि एक समुदाय का अच्छा या बुरा असीमित होता है। देश के भीतर बुराई और भ्रष्टाचार पैदा करके, बाहरी दुश्मन से लड़कर जो अच्छाई और पुण्य आपने प्राप्त किया है, उसे नष्ट न करें। आप अच्छी तरह जानते हैं कि आपके बाहरी दुश्मन और विरोधी इस्लाम के मुख्य स्तंभों को नष्ट करना चाहते हैं। इसलिए, आप उन्हें बहाल करने और संरक्षित करने के लिए बाध्य हैं ताकि आप अनजाने में दुश्मन की सचेत इच्छा को बढ़ावा न दें। इस्लाम के मुख्य आदेशों का पालन करने में लापरवाही और उदासीनता राष्ट्र की कमजोरी को दर्शाती है, और यह कमजोरी राष्ट्र के दुश्मनों को हमला करने से नहीं रोकती है; बल्कि, यह उन्हें प्रोत्साहित करती है।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा रक्षक है। कितना अच्छा प्रभु और कितना अच्छा सहायक है।

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

ईश्वर की स्तुति हो जो अपने सार और गुणों में समान होने के कारण असीम रूप से श्रेष्ठ है। वह सृष्टिकर्ता है। वह स्थूल-ब्रह्माण्ड-
संसार उसकी रचना है और यह सूक्ष्म जगत (मानवता) उसका आविष्कार है। वह (ब्रह्मांड) उसकी रचना है और यह (मानवता) उसकी इमारत है। वह उसकी कला है और यह उसकी चित्रकारी है। वह उसकी रचना है और यह उसका श्रृंगार है। वह उसकी दया है और यह उसकी उदारता है। वह उसकी शक्ति है और यह उसकी बुद्धि है। वह उसकी महानता है और यह उसका प्रभुत्व है। वह उसकी रचना है और यह उसका निर्माण है। वह उसका राज्य है और यह उसका सेवक है। वह उसका पूजा स्थल है और यह उसका पूजा करने वाला सेवक है। दोनों के किनारों पर, बल्कि दोनों के प्रत्येक भाग पर, एक मोहर है जो दर्शाती है कि जो कुछ भी मौजूद है वह उसकी संपत्ति है।

हे ईश्वर, हे धरती और आकाश को संभालने वाले! गवाह बनो और तुम्हारे सिंहासन को धारण करने वाले और तुम्हारे फ़रिश्ते गवाह बनें - तुम्हारे सभी पैगम्बरों, संतों, संकेतों, आयतों (तुम्हारी भेजी गई किताबों में) और सारी सृष्टि की गवाही के साथ - कि तुम ईश्वर हो, तुम्हारे अलावा कोई ईश्वर नहीं है, एक, कोई साझी नहीं। हमें माफ़ कर दो। हम पश्चाताप में तुम्हारी ओर मुड़ते हैं और गवाही देते हैं कि मुहम्मद तुम्हारे सेवक और रसूल हैं जिन्हें तुमने सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजा है। हे ईश्वर, उन पर अपनी कृपा बरसाओ जैसा कि वह सम्मान के हकदार हैं और तुम्हारी दया जिसके वह हकदार हैं, और उनके सभी परिवार और साथियों पर।

ऐ दोस्त, जान लो कि तुम्हारा शरीर और उसे पालने वाली चीज़ें तुम्हें ईश्वर ने दी हैं। तुम उनके मालिक नहीं हो, इसलिए तुम उन्हें अपनी मर्ज़ी से नियंत्रित नहीं कर सकते। जो तुम्हें दिया गया है, उसे तुम तभी नियंत्रित कर सकते हो जब उसकी इजाज़त हो, जैसे मेहमान मेज़बान की किसी चीज़ को उसकी मर्ज़ी के बिना बरबाद या नष्ट नहीं कर सकता।

हे मित्र , जान लो कि पुनरुत्थान को कौन असंभव या असंभव मानता है। क्या तुम अपनी आँखों के सामने घटित हो रहे छोटे-छोटे पुनरुत्थान, एकत्रीकरण और विनाश के असंख्य उदाहरणों को नहीं देख सकते? जब तुम हर फलदार या फूलदार वृक्ष की वार्षिक मृत्यु और पुनर्जीवन देखते हो, तो तुम दुनिया के अंतिम विनाश और पुनर्निर्माण को असंभव कैसे मान सकते हो?

अगर आप इसकी प्रत्यक्ष पुष्टि करना चाहते हैं, तो वसंत और गर्मियों के अंत में खुबानी या शहतूत के पेड़ के नीचे खड़े हो जाइए। देखिए कि कैसे उनके मीठे और जीवंत फल फिर से बनाए और फिर से पेश किए जाते हैं। आपके चेहरे पर मुस्कुरा रहे ये ताजे, सुखद और आनंददायक फल लगभग पिछले साल मर चुके फलों के समान ही हैं।
यदि उनमें मनुष्यों जैसी आत्मा होती, तो वे वास्तव में पिछले वर्ष मरे हुए फल होते।

इस तथ्य पर विचार करें कि यद्यपि पेड़ सूखी लकड़ी से बना है और इसमें जटिल, संकीर्ण केशिका नलिकाएं हैं जिनके माध्यम से भोजन इसके फूलों और फलों तक पहुंचता है, इसका सिर अचानक एक चमकदार "दुनिया" बन जाता है। एक सावधान पर्यवेक्षक के लिए, यह इसका अर्थ प्रदर्शित करता है: जब क़ब्रें पलट जाती हैं [उनकी सामग्री को बाहर लाने के लिए] (82:4)। उस शक्ति के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है जो सूखे पेड़ से ऐसे मीठे, सुखद फूल, पत्ते और फल पैदा करती है।

हे मित्र, जान लो कि प्रत्येक सूरा में संपूर्ण कुरान का सारांश है, साथ ही अन्य सूराओं के उद्देश्य और कहानियाँ भी हैं। इस प्रकार जो लोग केवल एक छोटा सूरा पढ़ सकते हैं , वे इसे पूरा पढ़ने का सवाब पा सकते हैं। चमत्कार की इस चमक के कारण, एक सूरा पूरे कुरान का स्थान ले लेता है।

हे मित्र, जान लो कि जो व्यक्ति अनेक चीजों को नियंत्रित करता है, उसे उनके बीच में रहने या उनके साथ सीधे, शारीरिक संपर्क में रहने की आवश्यकता नहीं है। यह और भी अधिक तब होता है जब इन चीजों को वितरित करने वाला व्यक्ति उस चीज से भिन्न प्रकृति का होता है जिसे वह नियंत्रित करता है, या यदि कोई आकस्मिक, भौतिक इकाई नहीं है। अपने आदेश को लागू करने के लिए, एक कमांडर को हमेशा अपने सैनिकों के बीच व्यक्तिगत रूप से रहने की आवश्यकता नहीं होती है; बल्कि, उसका आदेश आमतौर पर उसके आदेशों और आदेशों के माध्यम से लागू होता है। यदि आदेश सैनिकों पर छोड़ दिया जाता, तो प्रत्येक सैनिक को कमांडर के रूप में कार्य करना पड़ता और आदेश दिया जाता, जिसके लिए कमांडर की क्षमता की आवश्यकता होती।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अपनी असीम महिमा और हमारे बीच रहने या हमारे साथ शारीरिक संपर्क में रहने की आवश्यकता न होने के बावजूद, हमें अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करते हैं। सूर्य की तरह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमसे हमसे ज़्यादा निकट हैं, और हम उनसे बहुत दूर हैं।
उससे दूर.

हे मित्र, जान लो कि जिस प्रकार एक वृक्ष अपने फल में समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार एक भाग में संपूर्ण के गुण होने से [और मूल या उत्पत्तिकर्ता की एकता] अनेक वस्तुएँ एकता में परिणत होती हैं। एक संपूर्ण वस्तु संपूर्ण प्रजाति के समान हो जाती है, और एक भाग उस वस्तु के संपूर्ण के समान हो जाता है जिसका वह भाग है। उदाहरण के लिए, चूँकि अंतरिक्ष में फैले सूर्य के प्रकाश के प्रत्येक कण में सूर्य की छवि होती है, इसलिए सूर्य के प्रकाश का प्रत्येक कंपन करने वाला कण सूर्य के साथ अपने अखंड संबंध के कारण एक छोटे सूर्य के समान हो जाता है। ज्योतियों के शाश्वत प्रकाश के नाम इसी प्रकार प्रकट होते हैं। प्रत्येक अभिव्यक्ति एक व्यक्ति और पूरी प्रजाति पर दिखाई देती है।

हे संसार से संतुष्ट और संतुष्ट लोगों, जान लो कि तुम उस व्यक्ति के समान हो जो एक ऊंचे महल की चोटी से लुढ़क कर नीचे गिरता है। इसके बाद, महल एक बाढ़ में लुढ़क कर एक खड़ी पहाड़ी से नीचे गिर जाता है, और पहाड़ भूकंप के माध्यम से पृथ्वी की गहराई में गिर जाता है।

जीवन का किला ढह जाता है, और आपके जीवनकाल का “विमान” बिजली की गति से उड़ जाता है। जल्द ही आपको आपके सफ़ेद कफ़न में लपेटकर दफ़ना दिया जाएगा।
समय की धारा अपने पहियों को भयावह गति से घुमाती है और धरती का "जहाज" बादलों की तरह तैरता रहता है। अगर तेज गति से चलती हुई रेलगाड़ी में यात्रा करते हुए आप रेल के किनारे लगे काँटेदार फूलों को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाते हैं और काँटे आपके हाथों को चीर देते हैं, तो क्या आप खुद के अलावा किसी और को दोषी ठहरा सकते हैं? दुनिया के सुखों की लालसा न करें और न ही उन तक पहुँचें, क्योंकि अगर उन्हें पकड़ते समय वियोग की पीड़ा आपके दिल को चीरती है, तो आपको इस बात का थोड़ा सा अंदाजा हो जाएगा कि अंतिम वियोग के समय क्या होगा।

हे दुष्ट आत्मा, तुम जिसकी चाहो पूजा करो और जो चाहो मांगो। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं सिर्फ़ उसी की पूजा करता हूँ जिसने मुझे बनाया है और जो कुछ भी मौजूद है (उसके अलावा) उसे मेरे अधीन कर दिया है। मैं सिर्फ़ उसी से मदद माँगता हूँ जो मुझे नियति के “अंतरिक्ष” से गुज़रते हुए जीवन के “विमान” पर ले जाता है और ग्रहों के बीच “अंतरिक्ष यान” को मेरे अधीन कर देता है। मैं सिर्फ़ उसी से मदद माँगता हूँ जो मुझे समय की “ट्रेन” पर चढ़ाता है जो बिजली की गति से जीवन के पहाड़ के नीचे खुली सुरंग से होकर कब्र के द्वार की ओर अनंत काल के रास्ते पर यात्रा करती है। उसकी अनुमति से उस पर बैठकर, मैं उसे इस दिन के डिब्बे में याद करता हूँ जो कल और आने वाले कल दोनों से जुड़ा हुआ है।

मैं केवल उसी से सहायता मांगता हूं जो भाग्य के चक्र को रोक सकता है,
जो स्पष्ट रूप से पृथ्वी के जहाज को चलाता है, और समय की गति को रोकता है
सूर्य और चंद्रमा को फिर से एक करके। मैं केवल उसी से मदद मांगता हूं, जो इस धरती को दूसरी धरती में बदलकर, इस बदलती दुनिया को स्थिर कर सकता है
अस्तित्व के शिखरों से नीचे पतन की घाटियों की गहराई में।
मेरी महत्वाकांक्षा और लक्ष्य सभी चीज़ों से जुड़े हुए हैं। मेरी महत्वाकांक्षाएँ समय बीतने और पृथ्वी की गति से जुड़ी हुई हैं। मैं भी इनसे गहरा जुड़ाव महसूस करता हूँ।
सभी प्राणियों के सुख और दुःख, विशेषकर मानवता के और विशेषकर
स्वर्ग में और पृथ्वी पर धर्मी लोगों के साथ।

इसलिए मैं केवल उसी की पूजा करता हूँ जो मेरे हृदय के गुप्ततम विचारों से परिचित है
और अपनी न्यूनतम महत्वाकांक्षा और प्रवृत्ति को संतुष्ट करता है। दुनिया को नष्ट करके और
इसे परलोक में परिवर्तित करके, वह मेरी बुद्धि की इच्छा को समझता है और
कल्पना, अर्थात् मानवता के लिए शाश्वत खुशी स्थापित करना। उसका हाथ
वह एक ही पल में सबसे छोटे कण और सबसे बड़े सूर्य तक पहुँच जाता है, और उसकी शक्ति के लिए कुछ भी इतना बड़ा नहीं है कि वह उसे घेर न सके। वह ऐसा है कि आपका दर्द बदल जाता है
यदि आप उसे जानते हैं तो विज्ञान आनंद में बदल जाता है, और उसके बिना विज्ञान केवल आनंद में बदल जाता है
कल्पना और अनुमान, तथा दर्शनशास्त्र भ्रांति में।

उसके प्रकाश के बिना, अस्तित्व अनस्तित्व में बदल जाता है, प्रकाश अविद्या में बदल जाता है।
अंधकार की परतें, जीवित प्राणियों को मृत चीजों में, सुख को दर्द में और
पाप, और प्रियजनों (वास्तव में सभी चीजों) को शत्रु बना देता है। उसके बिना, स्थायित्व एक आपदा बन जाता है, पूर्णता बेकार हो जाती है, जीवन बर्बाद हो जाता है और
यातना बन जाती है, बुद्धि दुःख और पीड़ा का साधन बन जाती है, और
महत्वाकांक्षा पीड़ा बन जाती है।

जो लोग परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित होते हैं और उसकी प्रसन्नता का पीछा करते हैं, उनकी सेवा की जाती है
जो लोग परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते, उनके विरुद्ध सब कुछ हो जाता है।
यह बात उन लोगों के लिए भी सत्य है जो बिना किसी अपवाद के, अस्तित्व में मौजूद सभी चीजों को स्वीकार करते हैं।
उसका है और उसकी संपत्ति है। उसने तुम्हें ज़रूरतों के घेरे में बनाया है और तुम्हें ऐसी युक्तियां दी हैं जो तुम्हें ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करती हैं, अगर तुम अपने भरोसे पर भरोसा करो
इच्छाशक्ति और शक्ति, केवल सबसे छोटे दायरे में मौजूद जरूरतों को पूरा करने के लिए।
आपकी अन्य ज़रूरतें अनंत अतीत से अनंत भविष्य तक तथा पृथ्वी के केंद्र और सिंहासन के बीच फैले एक विशाल चक्र से संबंधित हैं
ईश्वर की इन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसने तुम्हें प्रार्थना या दुआ से सुसज्जित किया है: कह दो: "यदि तुम दुआ न करते तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं करता" (25:77)। एक बच्चा अपने माता-पिता से वह चीज़ माँगता है जो उसे नहीं मिल सकती,
और बन्दे अपने रब से उस चीज़ के लिए दुआ करते हैं जिसे वे हासिल नहीं कर सकते।

हे मित्र, जान लो कि हर चीज़ में परिपूर्ण कला और उसकी दृढ़ संरचना एकता [मूल की] से आती है, जो विभाजन और विघटन की अनुमति नहीं देती और जिसे प्रकट होने से रोका नहीं जा सकता। अगर ऐसा न होता, तो अस्तित्व में असंगति और अव्यवस्था होती। उदाहरण के लिए, सूर्य, एक और एकल, जो कुछ भी अपने प्रकाश से छूता है, उसमें मौजूद होता है, एक पारभासी, छोटे कण से लेकर एक महासागर तक। और फिर भी एक चीज़ में इसका प्रतिबिंब या अभिव्यक्ति इसे दूसरी चीज़ में प्रकट होने से नहीं रोकती।

अगर यह सूर्य के लिए सच है, जो एक आकस्मिक, निहित, निर्जीव भौतिक वस्तु है, दिव्य नाम "प्रकाश" की किरण की अभिव्यक्ति से चमकने वाली एक "बूंद", तो यह सदा-अस्तित्व वाले सूर्य, शाश्वत संप्रभु, अनिवार्य रूप से विद्यमान और स्थायी रूप से आत्मनिर्भर, एक और एकल, सदा-जीवित, सर्वशक्तिमान, सदा-प्रार्थना-योग्य के लिए और भी अधिक सच है। चारों ओर फैले प्रकाश की एकता एकता की ओर इशारा करती है; सूर्य का अस्तित्व, अपने प्रकाश की अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्तिगत चीजों और संपूर्ण, भागों और कणों में अपने सभी गुणों के साथ, एकता का संकेत देता है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर के सबसे सच्चे गवाहों में से एक
एकता के निम्नलिखित उदाहरण हैं:

- हर चीज़ में एकता या चमत्कारिक सामंजस्यपूर्ण संगठन,
  आपकी आंख की कोशिकाओं के कणों को ब्रह्मांड तक पहुंचाना।
- प्रत्येक वस्तु की पूर्णतः सुदृढ़ संरचना उसकी क्षमता के अनुसार होती है, जैसा कि ईश्वरीय आदेश और नियति द्वारा निर्धारित होता है।
- वस्तुओं की रचना और निर्माण में पूर्ण सहजता, जो दर्शाती है कि सृजनकर्ता का अस्तित्व निर्मित वस्तु की तुलना में कहीं अधिक गहराई से निहित और स्थापित है।

हे मित्र, जान लो कि धरती तुम्हें अपनी उपज बहुत सस्ते दामों पर देती है और बेचती है। अगर वह जो देती है वह उसका अपना होता या भौतिक कारणों से पैदा होता तो तुम एक भी अनार नहीं खरीद पाते, क्योंकि तुम्हें मिट्टी, पेड़ों, खेतों, सूरज और हवा से जो कुछ मिला है, उसके लिए तुम्हें कीमत चुकानी पड़ती।

तुम्हारा निर्माता हर चीज़ को बनाने में, यहाँ तक कि अनाज को भी बनाने में, उसे असीम रूप से दृढ़ बनाता है और उसे सबसे विस्तृत रूप से सुसज्जित करता है। वह उसमें वह भी शामिल करता है जो पूर्ण चेतना और बुद्धिमानीपूर्ण कौशल के साथ आवश्यक है, उसे ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए रंग, पोषण और सुगंध की सूक्ष्मताओं से सुसज्जित करता है। वह आसानी से बनाता है, और इसके साथ शारीरिक संपर्क की आवश्यकता नहीं होती है। अगर इन चीज़ों को बनाने वाला वही नहीं होता जिसने इतनी आसानी से अस्तित्व में मौजूद हर चीज़ को बनाया है, तो वह क्या करता?

उन सभी को उसकी शक्ति के साथ एक ही संबंध के साथ, ये चीजें तब नहीं होंगी
उनमें वह उत्तम गुण है जो अब उनके पास है।

चूँकि इसे इतनी दृढ़ता और कलात्मकता से और इतनी प्रचुरता से बनाया गया है, इसलिए ये चीज़ें सिर्फ़ कुछ सजीव प्राणियों के अस्थायी आनंद और विशेष इच्छा को संतुष्ट करने के लिए नहीं बनाई गई होंगी। अगर यह सच होता, तो यह सच होता।
उन्हें यह अपेक्षा होगी कि उनका सृष्टिकर्ता विवेक, इच्छा, ज्ञान से रहित हो,
पसंद, और पूर्णता। हालाँकि, हर चीज़ में परिपूर्ण, सचेत, बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण कला ऐसी परिकल्पना का खंडन करती है।

अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता सर्वशक्तिमान, सर्व-इच्छुक, सर्वज्ञ, सर्व-बुद्धिमान है, तथा प्रत्येक वस्तु पर उसका पूर्ण प्रभुत्व है: जब वह

जब कोई चीज़ चाहता है तो उसका आदेश बस इतना है कि उससे कह दे कि "हो जा!" और वह हो जाती है (36:82); तुम्हारी रचना और पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है (31:28)। उसने तुम्हारे अन्दर एक आत्मा को रखा है (36:82)।

प्रत्येक प्राणी ज्ञान और उद्देश्यों के उदाहरण न केवल से जुड़ा हुआ है
अपने ग्राहकों के लाभ के लिए ही नहीं, बल्कि उनसे भी अधिक, उनके नामों के प्रकटीकरण और सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में उनके कार्यों के अर्थ के लिए भी।

ऐसा सर्वव्यापक भोज किसी अंधी शक्ति द्वारा तैयार नहीं किया जा सकता था; फलों और अन्य उत्पादों की बाढ़ संयोग का परिणाम नहीं हो सकती थी।
और संयोग। प्रत्येक को दिए गए विशेष रूप, रंग, गंध और स्वाद
कुछ उद्देश्यों के लिए वस्तु, तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा सचेत रूप से प्रदान की जाने वाली सेवाएँ,
अंधे संयोग और संयोग के हस्तक्षेप को खारिज करता है। इसके विपरीत,
उनकी प्रचुरता और सस्तापन, उन्हें व्यक्तिगत रूप से बनाने में आसानी और
एक प्रजाति के रूप में, उनकी दृढ़ संरचना, और (उनकी अनंत विविधता के बावजूद) उनकी
केवल कुछ पदार्थों से निर्मित, सभी परम उदारता की गवाही देते हैं
वह परम उदार, बुद्धिमान और शक्तिशाली है।

उसकी जय हो जिसने अनंत, पूर्ण उदारता को ईश्वर के साथ जोड़ दिया है।
अनंत ज्ञान और मितव्ययिता। उसकी जय हो जिसने अप्रतिबंधित, पूर्ण मुक्त-दान को एक पूर्ण व्यवस्था, एक संवेदनशील सीमा के भीतर रखा है
संतुलन या माप, और एक पूर्ण न्याय। यह व्यवस्था, संतुलन और न्याय
ऐसे हैं कि एक हाथी को एक मक्खी से खुद की रक्षा करनी पड़ती है, और घमंडी, अति-दंभित लोगों को एक मच्छर के छोटे "भाले" के खिलाफ लड़ना पड़ता है:

> ऐ लोगो! एक मिसाल पेश की गई है, तो उसे सुनो। निश्चय ही वे लोग जो
> ईश्वर के अलावा आप जिसे पुकारते हैं, वह कभी भी मक्खी पैदा नहीं करेगा, भले ही वे दोनों
> मिलकर इस उद्देश्य के लिए मिल जाएं। और अगर मक्खी किसी चीज़ को ले जाती है
> वे उसे उससे बचा नहीं सकते, अतः खोजनेवाला और खोजा जानेवाला दोनों ही कमज़ोर हैं।
> (22:73)

और समुद्र का प्रकोप और तूफानों का प्रकोप शांत हो जाता है और ठंड की गंभीरता कम हो जाती है, एक टूटे हुए दिल वाले बच्चे की चुपचाप प्रार्थना के माध्यम से और बच्चा सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाता है। क्या वह वह नहीं है जो सताए हुए लोगों की प्रार्थना सुनता है और उनकी परेशानियों को दूर करता है? (27:62) वह जो दिल की धड़कन को सुनता है और जो कुछ भी उसके साथ होता है उसे जानता है, उसका उत्तर देता है और सूर्य और चंद्रमा की गति को नियंत्रित करता है।

हे मित्र , जान लो कि कौन सब कुछ कारणता के नियम पर आरोपित करता है। कारण बनाना और उसे परिणाम का कारण बनाना, और फिर परिणाम को अस्तित्व में लाना, उससे अधिक सरल, अधिक परिपूर्ण और अद्भुत कार्य नहीं है, जब परिणाम को इस आदेश के साथ निर्मित किया जाता है: "हो जाओ!" जो उससे संबंधित है, जिसके संबंध में सभी विद्यमान चीजें एक समान हैं।

हे मेरे हृदय, जान लो कि तुम जो दुख, क्षय और मृत्यु को दुनिया में भरते हुए देखते हो, वह ऐसी ही चीज़ों से मिलकर बना है जो दुनिया में आती हैं और जाती हैं, और जन्म और मृत्यु की घटनाएँ बार-बार होती रहती हैं। हालाँकि, प्रत्येक अलगाव और क्षय में, विश्वासियों को पतन और लुप्त होने के दर्द के बजाय नवीनीकरण का आनंद मिलता है। विश्वास करो और सुरक्षा और संतुष्टि पाओ। अपने आप को उसके अधीन करो और शांति और खुशी पाओ।

ऐ दोस्त, जान लो कि नस्लवाद असावधानी, अज्ञानता, गुमराही, दिखावे और गलत कामों का मिश्रण है जो एक दूसरे को सहारा देते हैं और मजबूत करते हैं। नस्लवादी अपनी नस्ल को एक बुत बना लेते हैं। हम ऐसे भटकाव से खुदा की शरण में जाते हैं। जहाँ तक इस्लाम के लिए जोश की बात है, तो यह ईमान से आने वाली एक उज्ज्वल रोशनी है।

हे मित्र , जान लो कि तुम विधर्मियों, अज्ञेयवादियों और पश्चिमी नास्तिकों की नकल करने वालों से कौन विवाद करता है। तुम बहुत बड़े खतरे में हो, क्योंकि अगर तुम पूरी तरह से शुद्ध नहीं हो और विश्वास और इस्लाम की सच्चाइयों के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो, तो तुम धीरे-धीरे और अनजाने में अपने विरोधियों की ओर आकर्षित हो सकते हो। तुम वस्तुनिष्ठ तर्क में अपने बुरे-आदेश देने वाले स्व पर भरोसा नहीं कर सकते, क्योंकि आलोचना और दोष-खोज का बीज एक न्यायपूर्ण विवादकर्ता के भीतर उगना शुरू हो जाता है जो अस्थायी रूप से प्रतिद्वंद्वी के विचारों को सच मानकर उनका उत्तर खोजने लगता है। धीरे-धीरे, विवादकर्ता प्रतिद्वंद्वी के प्रतिनिधि की तरह व्यवहार करना शुरू कर देता है। इसका फायदा उठाकर शैतान उस व्यक्ति के दिमाग पर कब्जा कर लेता है और उस बीज को बढ़ने और फल देने की कोशिश करता है।

हालाँकि, यदि आपका इरादा शुद्ध है [विवाद करते समय], जब आपको लगे कि आप अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रतिनिधि की तरह व्यवहार करने लगे हैं, तो तुरंत अपने भीतर के सबसे बड़े दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करें और विनम्रतापूर्वक भगवान से क्षमा मांगें।

हे मित्र, मान लो कि एक शक्तिशाली राजा के लिए एक अद्भुत महल बनाया और सजाया जा रहा है। जो कोई भी उसमें प्रयुक्त यंत्रों और काम करने वालों को देखेगा, वह

नियोजित, लेकिन उनके अंतर्निहित उद्देश्य को जाने बिना, निष्कर्ष निकालेंगे
कि श्रमिक अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए काम कर रहे हैं
नियोक्ता और एक निश्चित उद्देश्य के लिए। सजीव और निर्जीव को देखें
ब्रह्मांड में अनेक महान और सूक्ष्म उद्देश्यों के लिए कार्यरत प्राणी और
ऐसे कई उद्देश्य हैं, जिन्हें सबसे बुद्धिमान विद्वान भी नहीं समझ सकते। विचार करें
फूल जो सुंदरता दिखाते हैं, जिससे वे लोगों का प्रिय बन जाते हैं
जो उन्हें देखते हैं। आपको यकीन हो जाएगा कि फूल, अन्य प्राणियों की तरह, हैं
उदार, सर्व-बुद्धिमान परमेश्वर द्वारा पृथ्वी पर अपने मेहमानों की सेवा करने का दायित्व
और उससे प्रेम करना।

क्या फूलों में भावनाएँ और जानवरों में चेतना होती है?
उदारता के डिजाइन, सजावट और अनुग्रह के उद्देश्यों को समझना
वे प्रदर्शन के लिए बनाए गए हैं? नहीं। बल्कि, वे उदार भगवान को ज्ञात करते हैं
और उसके चेतन सेवकों, उसके मेहमानों द्वारा प्रेम किया जाता है।

हे दुष्ट-इरादे वाले, दुष्ट-आदेश देने वाले आत्मा को जानो ! तुम यह देखना चाहते हो कि क्या
एक ही ग्रेड में अस्तित्व के सभी ग्रेड के लिए आवश्यक है, और क्या जरूरत है
सभी इंद्रियों द्वारा एक ही अर्थ में। आप उन सभी सुखों का अनुभव करना चाहते हैं जो
आपकी भावनाएँ, क्षमताएँ और इंद्रियाँ आपको अलग-अलग अनुभव करने में सक्षम बनाती हैं।
प्रत्येक नाम में सभी दिव्य सुंदर नामों की किरणों को देखने का प्रयास करें, प्रत्येक प्राणी में सृष्टिकर्ता की महिमा को देखें,
तथा मन में उसके प्रतिबिंब में प्रत्येक चीज़ का वास्तविक, प्रकट अर्थ खोजें। बल्कि, प्रत्येक नाम में खोजने का प्रयास करें

वह चीज़ जो उसके योग्य है और जो उसमें समाहित हो सकती है, ताकि आप उसके संपर्क में न आएं
सृष्टिकर्ता के बारे में बुरे सुझाव और विचार।

हे मित्र, जान लो कि जब तुम अपने बारे में ऊंचा विचार करो, तो अपने से बड़े लोगों को समझो। जब तुम उन चीजों को देखो जो तुमसे छोटी हैं,
कीड़ों की तरह, अपने शरीर की कोशिकाओं पर विचार करें और उनमें से एक पर ध्यान केंद्रित करें।
देखोगे कि एक मक्खी भी तुमसे बड़ी है। अपने अंदर की बुद्धि, दया, कृपा और उत्तम कला को तुच्छ मत समझो; बल्कि जब तुम देखते हो कि तुम्हारे ऊपर भी वही अनगिनत नेमतें बरस रही हैं, तो अपनी ज़रूरत और कमज़ोरी की हद पर विचार करो और उन नेमतों के उद्देश्यों पर भी विचार करो ताकि तुम उन्हें तुच्छ न समझो

उन्हें।

क्या यह बात आपकी आँख की ज़रूरत को कम कर देती है कि सभी जानवरों की आँखें होती हैं?
क्या यह किसी विशेष इनाम की समग्रता और उद्देश्य को कम करता है? नहीं। बल्कि, यह इसकी आवश्यकता को तीव्र करता है और इसकी समग्रता को बढ़ाता है।

हे मित्र, यह जान लो कि प्रत्येक जीव के असंख्य उद्देश्य हैं।
प्राणी का जीवन। केवल एक ही जीवित प्राणी से संबंधित है, जबकि
जो लोग जीवन देने वाले से संबंधित हैं, वे उसकी सीमा के अनुपात में हैं-

कम स्वामित्व। सृष्टि का कोई भी सदस्य, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, अपने से छोटे लोगों के सामने शेखी बघारने का अधिकार नहीं रखता। यद्यपि सृष्टि में कुछ भी बेकार और उद्देश्यहीन नहीं है, फिर भी कुछ लोग जो हर चीज को अपने हितों और इच्छाओं के संबंध में देखते हैं, वे उस चीज को व्यर्थ और उद्देश्यहीन मान सकते हैं जो उनके अपने उपयोग के लिए अप्रासंगिक है। ईश्वर के नाम पर पृथ्वी को समृद्ध बनाने के अपने कर्तव्य के कारण, पृथ्वी पर फैली सार्वभौमिक मेज मानवता के लिए एक उपहार है, बशर्ते वह इस जिम्मेदारी को पूरा करे। यह मेज केवल मानवता के उपयोग के लिए नहीं है और न ही फैलाई गई है।

हे मित्र, जान लो कि यदि कोई तुमसे फुसफुसाकर कहे: "तुम असंख्य जानवरों के बीच एक जानवर हो। चींटी तुम्हारा भाई है, और मधुमक्खी तुम्हारी बहन है।
तुम उससे कैसे रिश्ता बना सकते हो जो किताबों के लिए लपेटे गए स्क्रॉल की तरह आकाश को लपेटता है? क़यामत के दिन पूरी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा," जवाब दो: "उसके सामने मेरी नपुंसकता, गरीबी और महत्वहीनता को स्वीकार करना, साथ ही उसके बारे में मेरी मान्यता और विश्वास, मुझे उसकी शक्ति, धन और गरिमा दिखाने के लिए एक दर्पण बन जाता है। इस प्रकार मैं एक जानवर से एक इंसान बन गया हूँ। उसकी महानता की पूर्णता और उसकी शक्ति की व्यापकता के लिए यह आवश्यक है कि वह मेरी पुकार सुने और मेरी ज़रूरतों को देखे, और उसकी पालनहार धरती और आकाश उसे मेरा पालन करने और मेरे मामलों को निर्देशित करने से न रोकें।"

ईश्वर का तुच्छ दिखने वाली चीज़ों और घटनाओं से सरोकार उसकी महानता के विरुद्ध नहीं है। बल्कि, अगर वह उनसे सरोकार न रखता, तो उसके प्रभु की महानता में कमी रह जाती। क्या तुम नहीं देखते कि हर बुलबुला, पानी की बूँद और कांच का टुकड़ा, चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, उसमें सूर्य की छवि होती है? अगर वह बोल सकता, तो कहता: "सूर्य मेरा है। वह मुझमें है या मेरे साथ है।" वे बूँदें, टुकड़े, ग्रह या समुद्र एक दूसरे को सूर्य से संबंध बनाने से नहीं रोकते, न ही सूर्य की महानता उन संबंधों को रोकती है। बल्कि, जितना अधिक हम सर्वशक्तिमान को जानते हैं और उसके सामने अपनी गरीबी और तुच्छता के बारे में जानते हैं, उतना ही हम उसके करीब होते हैं। उन लोगों की स्थिति कितनी अच्छी है जो उसके सामने अपनी गरीबी और नपुंसकता को याद रखते हैं, जिसके धन और शक्ति, गरिमा और महिमा की कोई सीमा नहीं है।

जय हो उसकी, जिसने असीम महानता में असीम दया और असीम महिमा में असीम कोमलता को सम्मिलित किया है, जिसने असीम निकटता को असीम दूरी के साथ संयोजित किया है और सूक्ष्म कणों और सूर्यों के बीच भाईचारा स्थापित किया है, और जो विपरीतताओं को संयोजित करके अपनी शक्ति को प्रकट करता है।

पृथ्वी और आकाश को बनाए रखना और निर्देशित करना उसे नहीं रोकता
कीड़ों को पालने से। पालने और व्यवस्था करने से उसे कोई बाधा नहीं होती
चाहे जमीन पर हो या समुद्र में, सबसे छोटे जानवरों को बनाने से भी।
हिंसक हवाएं और उग्र समुद्र उसे बिना किसी अपवाद के, हर प्राणी को अपनी पूर्ण दयालुता और अच्छाई प्रदान करने से विचलित नहीं कर सकते हैं, चाहे वह किसी भी कारण से हो।
आकार, स्थान या किसी अन्य कारक के आधार पर।

दया समुद्र के क्रोध के बीच और उसके कठोर, भौंहें सिकोड़ते चेहरे के पीछे मुस्कुराते हुए प्रकट होती है। जबकि वह दहाड़ती है: "हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, सर्व-महान, महानतम! महिमा
आप कितने महान हैं!, वह छोटा प्राणी चुपचाप पुकार कर जवाब देता है: "हे सर्व-सूक्ष्म और दयालु ईश्वर, सर्व-उदार, सर्व-प्रदाता, सबसे
दयालु। आपकी कृपा कितनी दयालु है।" इन दो प्रकार से परमेश्वर को उसके नामों से पुकारना और उसकी महिमा करना एक सौम्य, दयालु वैभव है
और एक शानदार अनुग्रह और सौम्यता, साथ ही एक उत्कृष्ट प्रकार की पूजा - एक, एकल और शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना।

हे मित्र! यह जान लो कि विश्वास का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के बाद,
तुम्हें अच्छे और नेक काम करने चाहिए। क्योंकि ईमान के मुताबिक, कुरान
घोषणा करता है: जो लोग अच्छे, नेक काम करते हैं।

यह छोटा सा जीवन केवल वही करने के लिए पर्याप्त है जो सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी आवश्यक हैं क्योंकि वे आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने, मानव प्रगति (बौद्धिक और आध्यात्मिक दोनों) और दोनों दुनिया में मानव समृद्धि में मदद करते हैं। यदि वे अपव्यय और राजद्रोह का कारण बनते हैं, तो वे हानिकारक हैं।

हे ईश्वर, हे दयालुओं में सबसे दयालु। दया करो
मुहम्मद के समुदाय पर प्रकाश डालिए और उसके लोगों के दिलों को रोशन कीजिए
ईमान और क़ुरआन की रौशनी को रोशन करो। क़ुरआन के सबूत को रोशन करो,
और इस्लाम की स्तुति करो। आमीन।

समाप्त करने के लिए:

• वे विश्वासी जो कहते हैं: “मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है,” “मुहम्मद ईश्वर का दूत है,” या “सभी प्रशंसा ईश्वर की है” ने दावा किया है,
एक कारण और दृढ़ विश्वास की घोषणा की, और एक निष्कर्ष की घोषणा की।

• ईमान और इस्लाम का हर विकिरण पूरे द्वारा समर्थित है। • पूरे के हर हिस्से को, चाहे उसका
आकार कुछ भी हो, [अपने अस्तित्व के लिए] जो भी हो, उसकी ज़रूरत है।
संपूर्ण जरूरतें [इसके अस्तित्व के लिए]।

• पैगम्बरत्व एक बीज के समान है जिससे फल-फूलों से लदा हुआ वृक्ष निकलता है।
इस्लाम का विस्तार हुआ
है। • पैगम्बर के जीवन का इतिहास में वर्णन केवल बीज का छिलका दर्शाता है
जहाँ से पैगम्बर मुहम्मद का पवित्र वृक्ष उगा है।

• एक छोटा कण केवल शाश्वत "सूर्य" के नामों को प्रकट कर सकता है, क्योंकि
इसमें कुछ भी बनाने की कोई वास्तविक प्रभावी और क्रियाशील क्षमता नहीं है। • समूह के कार्य का
श्रेय किसी एक व्यक्ति को देने से संबद्धता बढ़ती है
ईश्वर के साथ भागीदार, क्योंकि अंतर्निहित धारणा यह है कि व्यक्ति
प्रश्न ने वे फल उत्पन्न किए। • ईश्वर की सेवा करने
से पुरस्कार मिलता है, विशेष रूप से परलोक में, जबकि ईश्वर की सेवा करने से पुरस्कार मिलता है।
अहंकार दुख और पीड़ा की ओर ले जाता है।

• मृत्यु का समय अनिर्धारित छोड़ना यह दर्शाता है कि इसे संविधान में परिभाषित किया गया है।
प्रवर्तक का ज्ञान.

• पैगम्बर पर दुआ और सलामती की दुहाई देना उस नेमत के दाता के निमंत्रण का उत्तर देने के समान है जो अपनी नेमतों
को मुफ्त में फैलाता है। • अविश्वासियों की सभ्यता और (सच्ची) सभ्यता के बीच का अंतर

विश्वासियों.

• इज्तिहाद की अनुमति है, लेकिन सभी परिस्थितियों में नहीं। • 55 "भाषाओं"
में से एक जो सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है-
उनकी दिव्यता और प्रभुत्व में उनका विश्वास और एकता।

• वह क्षेत्र जहाँ आपका मन और हृदय भ्रमण करता है, वह इतना विशाल है कि उसमें प्रवेश करना कठिन है।
• परमेश्वर
के उपहारों की शर्तें होती हैं।

• कुरान की चमत्कारिकता उसे भ्रष्ट होने से बचाती है।

• हमारी अवज्ञा, विद्रोहीपन और कृतघ्नता ज्यादातर हमारे द्वारा उत्पन्न होती है
ईश्वरीय कृपा प्रदान करने के कार्य के प्रति अंधापन और ईश्वरीय कृपा के प्रति उदासीनता
वह जो प्रदान करता है।

• शैतान की फुसफुसाहटें और अनैच्छिक विचार और सुझाव
हृदय और शारीरिक अहं को नजरअंदाज किया जाना चाहिए।

• दार्शनिक जो इस्लाम की आलोचना करते हैं, और क्यों अविश्वासी कभी-कभी इस्लाम को हरा देते हैं
इस दुनिया में विश्वासियों.

• तीव्र प्रेम व्यक्ति को उस चीज़ से इनकार करने के लिए प्रेरित करता है जिससे
वह प्यार करता है। • अविश्वास का बीज संभावित रूप से नर्क को जन्म
देता है। • आपका अपने जीवन के साथ संबंध एक नाविक और नाविक के बीच के संबंध जैसा है।
वह शाही जहाज जिसे वह चलाता है।

• अभिव्यक्ति या रहस्य के माध्यम से निर्मित छायादार अस्तित्व को भ्रमित न करें ।
नियति ने जो निर्धारित किया है उसके अनुसार मुख्य, मूल अस्तित्व के साथ प्रतिबिंब।

• कुरान कई सच्चाइयों को दृष्टांतों और तुलनाओं के माध्यम से समझाता है,
इससे अमूर्त ईश्वरीय सत्य आसानी से समझ में आ जाते हैं। • हृदय का आपके लिए वही अर्थ
है जो ईश्वरीय सिंहासन का है। • प्रार्थना।

• तुर्की संसद को संबोधन।

• आपका शरीर और उसका रखरखाव करने वाली चीजें आपकी नहीं हैं, इसलिए आप उन्हें अपनी इच्छानुसार नियंत्रित नहीं कर सकते।

• कुरान के प्रत्येक सूरा में संपूर्ण कुरान का सारांश है। • जो लोग ईश्वर की इच्छा के आगे झुकते हैं और उसकी प्रसन्नता का पीछा करते हैं, उन्हें हर चीज से लाभ मिलता है; जो लोग ईश्वर की अवज्ञा करते हैं, उन्हें लगता है कि हर चीज उनके विरुद्ध हो जाती है। • यदि आपको उन चीजों के लिए भुगतान करना पड़े, जो पृथ्वी आपको उसकी अनुमति से मुफ्त में देती है, तो आप

• जब वह किसी चीज़ को चाहता है, तो उसका आदेश केवल यह है कि उससे कहे: "हो जाओ!" और वह हो जाती है (36:82);

और तेरा सृजन और तेरा पुनरुत्थान एक ही प्राण के समान है (31:28)। • नस्लवाद असावधानी, अज्ञानता, गुमराही, दिखावे और गलत कामों का एक संयोजन है, जो एक दूसरे को समर्थन और ताकत देते हैं। • पाश्चात्य नास्तिकों के विधर्मियों, अज्ञेयवादियों और अनुकरणकर्ताओं के साथ वाद-विवाद करना। • जब आप अपने बारे में उच्च राय रखते हैं, तो उन लोगों पर विचार करें जो आपसे बड़े हैं। • प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन के असंख्य उद्देश्य हैं। • ईश्वर के सामने नपुंसकता, गरीबी और तुच्छता की आपकी स्वीकृति, उसके प्रति आपकी मान्यता और विश्वास के साथ-साथ, दिखाने के लिए एक दर्पण बन जाती है

उसकी शक्ति, धन और प्रतिष्ठा। • विश्वास के बारे में आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के बाद, एक आस्तिक को क्या करना चाहिए अच्छे और धार्मिक कर्म.

छठा ग्रंथ

छठा ग्रंथ

कुरान के बगीचे में एक फल में निहित एक अनाज

अनाज कहता है: मैं
दिव्य एकता के फलों से लदी एक वृक्ष की शाखा हूँ, या समुद्र की एक बूंद हूँ जो
ईश्वर की स्तुति के मोतियों से भरी है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

इस्लाम और ईमान की पूर्णता के लिए ईश्वर की स्तुति हो। इस्लाम के चक्र के केंद्र और ईमान की रोशनी के स्रोत मुहम्मद पर ईश्वर की कृपा और शांति बनी रहे, और उनके सभी परिवार और साथियों पर जब तक दिन और रात चलते रहें और सूर्य और चंद्रमा अपने मार्ग पर चलते रहें।

अब, हे मित्र, यदि आप ब्रह्मांड को एक महान पुस्तक के रूप में देखते हैं, तो आप मुहम्मद के प्रकाश को उस स्याही के रूप में देखेंगे जिससे वह पुस्तक लिखी गई है। यदि आप ब्रह्मांड को एक वृक्ष के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को मूल रूप से उसके बीज और फलस्वरूप उसके फल के रूप में देखेंगे। यदि आप ब्रह्मांड को एक चेतन प्राणी के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी आत्मा के रूप में देखेंगे। यदि आप ब्रह्मांड को एक वृहद मानव के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी बुद्धि के रूप में देखेंगे। यदि आप ब्रह्मांड को एक फूलों के बगीचे के रूप में देखते हैं, तो आप उसके प्रकाश को उसकी रात्रि-आंधी के रूप में देखेंगे।

यदि आप ब्रह्माण्ड को एक ऊंचे, समृद्ध रूप से सुसज्जित महल के रूप में देखते हैं, जिसमें अनेक कमरे और कक्ष हैं, जो शाश्वत प्रभु की प्रभुता की महिमा, उसकी महिमा के चमत्कार, उसकी कृपा की सुंदर अभिव्यक्तियाँ और उसकी कला की अद्भुत डिजाइनों को प्रदर्शित करते हैं, तो आप प्रकाश का प्रकाश देखेंगे।

पैगम्बर मुहम्मद एक दर्शक के रूप में। वह पहले उन्हें अपनी ओर से देखता है और फिर घोषणा करता है: "हे लोगों। आओ और इन मनभावन दृश्यों को देखो। उनमें अपना हिस्सा पाने के लिए जल्दी करो - प्रेम, विस्मय, ताज़गी, प्रशंसा, ज्ञान, चिंतन और कई अन्य महान चीजें।" वह उन्हें ये सब दिखाता है; वह उन्हें देखता है और दूसरों को भी उन्हें देखने के लिए कहता है। जैसे वह खुद उनसे चकित होता है, वैसे ही वह दूसरों को भी उनसे चकित होने के लिए प्रेरित करता है। वह उनके मालिक से प्यार करता है और दूसरों को भी उनसे प्यार करवाता है। जैसे वह उनके माध्यम से प्रकाशित होता है, वैसे ही वह दूसरों को भी प्रकाशित करता है। वह उनसे लाभ उठाता है और दूसरों को भी लाभान्वित करता है।

हे मित्र, जान लो कि मानवता सृष्टि के वृक्ष का फल है। फल वृक्ष का सबसे उत्तम भाग होता है और जड़ों से सबसे दूर होता है। यह उन भागों में सबसे व्यापक भी होता है और इसमें पूरे वृक्ष के गुण होते हैं। एक मनुष्य अवश्य होगा जिससे सर्वशक्तिमान ने सृष्टि के इस वृक्ष को उगाया। रचयिता ने उस व्यक्ति को वृक्ष का फल बनाया और फिर, दयालु के रूप में, इस शानदार फल को इस्लाम के वृक्ष का बीज, इसकी दुनिया का दीपक, इसकी व्यवस्था का सूर्य बनाया।

जो पेड़ के लिए ज़रूरी है, वही उसके बीज के लिए भी ज़रूरी है। पेड़ इतना बड़ा है और बीज इतना छोटा है, इसका मतलब यह नहीं कि छोटा बीज इस नियम से मुक्त हो। इंसानियत के अंदर भी एक दाना है। अगर इंसानियत फल होती, तो यह दाना उसका बीज होता। यह दाना दिल है।

मानवीय आवश्यकताओं की विविधता के कारण, मनुष्य का संबंध सृष्टि के सभी प्राणियों और व्यक्तिगत भागों से है। अपनी आवश्यकता और गरीबी की तीव्रता के कारण, उनका दिव्य सुंदर नामों की सभी ज्योतियों से संबंध है। ऐसा लगता है कि सृष्टि के जितने भाग हैं, उनकी उतनी ही ज़रूरतें हैं।

लोगों के पास दुनिया भर की प्रतिकूलताएं और शत्रुताएं हैं, और वे केवल उसी से संतुष्ट हैं जो उन्हें स्वतंत्र बना सके और हर चीज से उनकी रक्षा कर सके।

एक मानचित्र, एक सूचकांक या एक नमूने की तरह, प्रत्येक व्यक्ति पूरी सृष्टि को शामिल या प्रतिनिधित्व कर सकता है। उनके पास एक बीज है जो केवल एक, एकल को स्वीकार करता है। वे केवल उसी से संतुष्ट हैं जो शाश्वत और सतत है। यह बीज हृदय का अनाज है, जिसे इस्लाम द्वारा सींचा जाना चाहिए और विश्वास से प्रकाश प्राप्त करना चाहिए।

अगर उसे दासता और पवित्रता की मिट्टी में इस्लाम द्वारा सींचा जाए और ईमान द्वारा जीवन के लिए जागृत किया जाए, तो वह एक ऐसा शानदार आध्यात्मिक वृक्ष बन जाता है कि वह अपने भौतिक शरीर की आत्मा बन जाता है। अगर उसे सींचा न जाए, तो वह एक सूखा बीज ही रह जाता है जिसे तब तक आग में जलना पड़ता है जब तक कि वह प्रकाश का गुण प्राप्त न कर ले।

बीज में बहुत ही सूक्ष्म, नाजुक चीजें होती हैं जैसे कि नसें, जिनमें से प्रत्येक, अगर ठीक से अंकुरित हो जाए, तो एक महत्वपूर्ण कर्तव्य पूरा करती है। साथ ही, हृदय का दाना भी

इसमें निष्क्रिय सेवक होते हैं, जो हृदय के जीवन से सक्रिय और विकसित होने पर, पक्षियों की तरह ब्रह्मांड के बगीचों में भ्रमण करते हैं। परिणामस्वरूप, यह दाना इस हद तक फैलता है कि कोई कहता है: "उसके सभी प्राणियों के लिए ईश्वर की स्तुति हो, क्योंकि वे सभी मुझ पर प्रदान की गई कृपा हैं।" (यह दाना इस हद तक फैलता है कि), उदाहरण के लिए, कल्पना, हृदय का सबसे कमजोर और दुर्बल सेवक, एक अजीब कर्तव्य के बोझ से दब जाता है। इसके माध्यम से मनुष्य, जो एक संकीर्ण स्थान में सीमित हैं, एक उल्लासपूर्ण उद्यान में प्रवेश करते हैं और सुदूर पूर्वी या पश्चिमी कोने में प्रार्थना करते हुए, काबा के काले पत्थर के नीचे अपना सिर रखते हैं, और उसे अपनी गवाही (ईश्वर के उनके भगवान होने की) सौंपते हैं।

अनाज को खलिहान में कूटा जाता है और सुरक्षित रखा जाता है। उसी तरह, पुनरुत्थान का मैदान मानवता, सृष्टि के फल, [अनाज को भूसे से अलग करने] की प्रतीक्षा कर रहा है।

हे मित्र, जान लो कि हर किसी की एक खास दुनिया होती है जो बाहरी दुनिया के समान होती है, सिवाय इसके कि उसका केंद्र वह व्यक्ति होता है न कि सूर्य। इसकी चाबियाँ उस व्यक्ति के हाथों में होती हैं, और उसकी इंद्रियों और क्षमताओं से जुड़ी होती हैं। यह दुनिया व्यक्ति से अपना रंग लेती है और उसी व्यक्ति के आधार पर या तो समृद्ध और सुंदर होती है या बदसूरत, प्रकाशित या अंधकारमय। जिस तरह एक बगीचे का प्रतिबिंब और उसमें होने वाले परिवर्तन दर्पण पर निर्भर करते हैं, उसी तरह हर व्यक्ति की दुनिया उसके मालिक के विचारों और विशेषताओं पर निर्भर करती है। आपका छोटा शारीरिक आकार आपके पापों की तुच्छता का बहाना नहीं है। आपके दिल में अंधकार या कठोरता की एक नगण्य मात्रा आपकी विशेष दुनिया के सभी सितारों को बुझा सकती है।

हे मित्र, जान लो कि 30 वर्षों से मैं दो "विद्रोहियों" के विरुद्ध संघर्ष कर रहा हूँ: मनुष्य के भीतर का अहंकार, और बाहरी दुनिया में प्रकृति। मैंने पहले वाले को किसी और को प्रतिबिंबित करने वाले छायादार दर्पण के रूप में देखा है। फिर भी, मानवता इसे एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में देखती है, जो खुद को प्रकट करती है, और इसलिए अपने निर्माता के विरुद्ध विद्रोह में एक अडिग तानाशाह बन जाती है।

मैंने प्रकृति को ईश्वरीय कला का एक काम, दयालु ईश्वर की एक पेंटिंग के रूप में देखा है। हालाँकि, इसे [निर्माता के प्रति] लापरवाह होने के कारण, भौतिकवादी इसे एक देवता, स्वयं-उत्पन्न और अपने आप में विद्यमान मानते हैं, और कृतघ्नता का बहाना मानते हैं। इसका परिणाम अविश्वास है।

ईश्वर का धन्यवाद और उसकी स्तुति हो, क्योंकि एक, सदा-से-सबकी-प्रार्थना की सहायता से और शानदार कुरान के ज्ञान से, मेरा संघर्ष इन दो विद्रोहियों की मृत्यु और इन दो मूर्तियों के टूटने के साथ समाप्त हुआ है। जैसा कि इस पुस्तक के कई अन्य खंडों में चर्चा की गई है, ईश्वर का एक कार्य

कला, सृष्टि के निर्माण और संचालन के दिव्य नियमों का संग्रह, प्रकृति के पर्दे के पीछे प्रकट हो गया है। अहंकार टुकड़े-टुकड़े हो गया है,
और उसके पीछे वह प्रकट हुआ है जिसके समान कुछ भी नहीं है।
महामहिम की जय हो!

हे अहंकार! यह जान कि नौ चीजें हैं जिनके स्वभाव और परिणाम हैं-
कुछ ऐसे परिणाम जिनसे आप अनजान हैं:

प्रथम: संक्षेप में आपका शरीर एक ताजे, सुखद और आनंददायक फल के समान है-
यह मछली सर्दियों में सूख कर सड़ जाती है।

दूसरा: आपका पशु गुण। देखिए कि क्षय और मृत्यु कितनी जल्दी आती है
जानवरों के लिए.

तीसरा: आपका मानवीय गुण, जो विलुप्त होने और नष्ट होने के बीच झूलता रहता है।
शुद्धि, क्षय और स्थायित्व। जो टिकने के लिए इच्छुक है उसे सुरक्षित रखें
उस स्थायी परमेश्वर के निरन्तर स्मरण से सदैव के लिए।

चौथा: आपका छोटा और सीमित जीवनकाल, जो केवल अगले जन्म तक ही रहता है।
इसके लिए जो समय निर्धारित किया गया है, वह न तो पहले से निर्धारित है और न ही स्थगित किया गया है। इसलिए शोक मत करो
इसके लिए चिंतित रहें, या इसे सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से बोझिल करें जो कि संभव नहीं है
आपके जीवित रहते ही इसे प्राप्त किया जा सकता है।

पांचवां: आपका भौतिक अस्तित्व सभी शक्तियों के सच्चे स्वामी के हाथ में है।
कौन है जो तुमसे ज़्यादा उसकी परवाह करता है। अगर तुम उसकी इजाज़त के बिना उसमें दखलंदाज़ी करोगे तो उसे नुकसान पहुँचाओगे। क्या तुम नहीं देखते कि लालच कैसे नुकसान पहुँचाता है
निराशा और हताशा के बावजूद, सोने पर जोर देने से कैसे अनिद्रा और बेचैनी होती है?

छठा: आप पर आने वाली विपत्तियाँ वास्तव में कड़वी नहीं हैं, क्योंकि वे शीघ्र ही समाप्त हो जाती हैं। उनके समाप्त होने का सुख सौभाग्य के साथ आता है।
इसके अलावा, वे आपको क्षणभंगुर से स्थायी की ओर मोड़ देते हैं
स्थायी के माध्यम से.

सातवीं बात: आप जहां भी हैं, मेहमान हैं। मेहमान अपनी मर्जी से कुछ नहीं तय करते।
वे उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनसे उनका कोई संबंध नहीं है या जो उनकी यात्रा में उनके साथ नहीं हैं।
आप जल्द ही यहाँ से चले जाएँगे, और इस शहर से—आप या तो बाहर जाएँगे
या तो आप इस दुनिया से चले जाएँगे या फिर इसमें दफन हो जाएँगे। आप इस क्षणभंगुर दुनिया को छोड़ देंगे या फिर यहाँ से निकाल दिए जाएँगे
इसलिए इसे सम्मान और गरिमा के साथ त्याग दें, इससे पहले कि आप इसके शिकार हो जाएं।
अपमानित करके निष्कासित कर दिया गया।

आठवां: आपको अपना भौतिक अस्तित्व उस एक के लिए त्याग देना चाहिए जो
उसने तुम्हें यह दिया है, क्योंकि वह इसे बहुत ऊंचे दाम पर खरीदता है। जल्दी से बेचो
बल्कि, इसे त्याग देना चाहिए। क्योंकि, सबसे पहले, यह बिना किसी कीमत के चला जाता है। दूसरा, यह
तीसरा, उस पर आपका भरोसा-

यह आपको अस्तित्वहीनता में गिरने पर मजबूर करता है, क्योंकि आपका अस्तित्व उसके लिए खुला एक द्वार है। अगर आप त्याग के ज़रिए उस द्वार को खोलते हैं, तो आपको स्थायी अस्तित्व मिलेगा। चौथा, अगर आप उससे चिपके रहते हैं, तो उसका सिर्फ़ एक बिंदु-आकार का हिस्सा आपके हाथ में रह जाता है और आप "अस्तित्वहीनता" के घने अंधेरे से घिर जाते हैं। अगर आप उस हिस्से को उड़ा देते हैं, तो अस्तित्व की रोशनी आपको घेर लेगी।

नौवीं बात: सांसारिक सुख या आनंद। भाग्य में जो कुछ भी लिखा है, वह तुम्हें मिलेगा, इसलिए इसकी चिंता मत करो। समझदार लोग क्षणभंगुर चीजों पर अपना दिल नहीं लगाते। तुम्हारा अपना संसार जैसे भी समाप्त हो, तुम्हें सांसारिक सुखों का त्याग कर देना चाहिए। अगर इसका अंत सुख में होता है, तो तुम सुखों का त्याग करके सुख प्राप्त कर सकते हो। अगर इसका अंत दुख में होता है, तो फाँसी पर लटकने का इंतज़ार करने वाले को सजे हुए फाँसी के तख्ते से कैसे सुख मिल सकता है? यहाँ तक कि अविश्वासी लोग भी जो सोचते हैं कि वे पूर्ण अस्तित्वहीनता की ओर जा रहे हैं - मैं ऐसी धारणा से ईश्वर की शरण लेता हूँ! - उन्हें सांसारिक सुखों का त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि ऐसे सुखों के निरंतर लुप्त होने से उन्हें उस पूर्ण अस्तित्वहीनता की पीड़ा का निरंतर अहसास होता है, जिसे वे मृत्यु के बाद मानते हैं। ऐसा दुख उन्हें जीवन में मिलने वाले सुखों से कहीं अधिक तीव्र होता है।

हे मित्र, जान लो कि जब भाग्य द्वारा विपत्ति का सामना करना पड़ता है, तो तुम्हारी स्थिति सार्वजनिक चरागाह में प्रवेश करने की कोशिश कर रही भेड़ों की तरह होती है। चरवाहा उन पर पत्थर फेंककर उन्हें वापस भगाना चाहता है। पत्थरों से मारी गई भेड़ें पीछे हट जाती हैं, मानो कह रही हों: "हम चरवाहे के आदेश के अधीन हैं। वह हमें हमसे बेहतर जानता है, इसलिए हमें वापस लौटना चाहिए।"

हे मेरे प्राण! जान ले कि तू भेड़ों से अधिक भटका हुआ नहीं है। जब तू मुसीबत में पड़ जाए तो कह दे कि हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटना है।

हे मित्र! यह जान लो कि हृदय को मुख्यतः सांसारिक कार्यों में व्यस्त रखने के लिए नहीं बनाया गया है, अतः इस बात पर ध्यान दो: जब हृदय किसी चीज से आसक्त हो जाता है, तो वह उससे दृढ़तापूर्वक आसक्त हो जाता है।

यह बहुत जोश से उस पर चढ़ता है और स्थायित्व और शाश्वतता की तलाश में पूरी तरह से खो जाता है। जब हृदय उसे पकड़ने के लिए अपना "हाथ" बढ़ाता है, तो वह जितना संभव हो सके उतना पाने की कोशिश करता है। हालाँकि, यह केवल वही पा सकता है जो एक बाल से बड़ा नहीं है, या कुछ भी नहीं है। हृदय शाश्वत-प्रार्थना-की-सभी को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है। यह पत्थर से बनी मूर्ति को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वह पत्थर उसे तोड़ देता है। एक प्रेमी ज्यादातर प्रेमिका के हाथों पीड़ित होता है, क्योंकि प्रेमिका अनजाने में उस चीज़ को अस्वीकार कर देती है जो उसकी नहीं है, क्योंकि प्रेमी प्रेमिका के दिल में रहने के योग्य नहीं है।

ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन के साथ एक आसमानी मेज भी भेजी गयी थी। इस पर लोग अपनी बौद्धिक भूख के अनुसार कुछ भी पा सकते हैं। भोजन एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया गया है। सबसे पहले आम लोगों के लिए भोजन है, जो मानवता के एक बड़े हिस्से का गठन करते हैं। उदाहरण के लिए, उनका हिस्सा: आकाश और पृथ्वी पहले एक टुकड़े थे, फिर हमने उन्हें अलग कर दिया (21:30) यह है: आकाश और पृथ्वी के बीच कोई संबंध नहीं था। आकाश स्वच्छ और बिना बादलों के था, बारिश भेजने में असमर्थ था, जबकि पृथ्वी सूखी और बंजर थी। फिर, सर्वशक्तिमान की इच्छा और अनुमति से, उनके बीच एक संबंध (एक अनुबंध) स्थापित किया गया था। फिर जब आकाश ने बारिश को जन्म दिया, तो पृथ्वी ने अपनी उपज पैदा करना शुरू कर दिया। उपरोक्त वाक्यों के ठीक बाद आयत का हिस्सा, और हमने हर जीवित चीज़ को पानी से बनाया है, इसी का संकेत देता है।

उच्च स्तर की समझ वाले लोगों द्वारा इसका अर्थ यह निकाला गया है: सूर्य और ग्रह उस पदार्थ से अलग हो गए थे जो सभी सृष्टि के प्रमुख के प्रकाश से बनाया गया था, और [वह पदार्थ] आटे की तरह कोई भी आकार ले सकता था। यह हदीस से संकेत मिलता है: "जो कुछ ईश्वर ने सबसे पहले बनाया वह मेरा प्रकाश है।"61

विचार करें: क्या हम पहले सृजन से थक गए थे? फिर भी वे एक नए सृजन के बारे में संदेह में हैं (50:15)। इस आयत से, आम लोग समझते हैं कि जो लोग पुनरुत्थान को स्वीकार नहीं कर सकते हैं वे अपनी रचना की पुष्टि करते हैं, जिसे उन्हें और भी अधिक आश्चर्यजनक मानना चाहिए। वे पुनरुत्थान को असंभव मानते हैं, हालाँकि यह आसान होगा। समझ के इस स्तर से परे पुनरुत्थान की पूर्ण सहजता के लिए एक उज्ज्वल प्रमाण निहित है: हे पुनरुत्थान के इनकार करने वालों। तुम अपने जीवन में कई बार पुनर्जीवित और पुनर्जीवित होते हो, बल्कि हर साल, बल्कि हर दिन। जैसे सुबह और शाम कपड़े बदलते हैं, वैसे ही तुम अपने शरीर को रोजाना पहनते और फिर उतारते हो।

हे मेरे मित्र, जान लो कि मानव अहंकार या आत्मत्व कितना मूर्ख है। यह अपने अंदर एक पूर्णतया स्वतंत्र, सर्वज्ञ भगवान के निर्माण, पालन-पोषण और प्रशासन के निशान, निशान और चिह्न देखता है, और समझता है कि यह सभी अन्य व्यक्तिगत प्राणियों, प्रजातियों और प्रकारों के लिए एक सार्वभौमिक, सर्वव्यापी नियम के रूप में सत्य है। इसलिए इसे सृष्टि द्वारा पुष्टि की गई एक निर्विवाद वास्तविकता के रूप में इसके बारे में आश्वस्त होना चाहिए। फिर भी मूर्ख अहंकार दिव्य सुंदर नामों की ऐसी समग्र और सार्वभौमिक अभिव्यक्ति को, जो उस पर मानव रूप से भी प्रकट होती है, अपने प्रति (दिव्य) उपेक्षा के संकेत के रूप में देखकर खुद को धोखा देता है, एक ऐसा पर्दा जिसके नीचे वह [भगवान की] निगरानी और निरीक्षण से छिप सकता है। इन अभिव्यक्तियों की सार्वभौमिक-

61 अल-'अजलुनी, खासफ अल-खफा', 1:205।

इतनी तीव्रता और तीव्रता के कारण ऐसा लगता है कि कोई भी उसे नहीं देख रहा है। शैतान भी ऐसी कुतर्कबाजी पर शर्मिंदा है।

हे व्यथित, बेचैन आत्मा , जान लो । जैसे सूरज सुबह उगता है और शाम को डूबता है, वैसे ही तुम्हारे साथ जो कुछ भी होता है और तुम्हारी सभी परिस्थितियाँ नियति की कलम द्वारा पूर्वनिर्धारित होती हैं और तुम्हारे माथे पर अंकित होती हैं। यदि तुम नियति की आलोचना करोगे तो तुम्हारा दुख और अवसाद और बढ़ेगा; यह जानबूझकर अपने सिर को निहाई से मारने से अलग नहीं होगा। जो व्यक्ति आकाश और पृथ्वी के क्षेत्रों और गहराईयों में प्रवेश नहीं कर सकता, उसे स्वेच्छा से उस एक के प्रभुत्व को स्वीकार करना चाहिए जिसने सब कुछ बनाया और उसका भाग्य निर्धारित किया।

हे मित्र, जान लो कि यदि किसी वस्तु का निर्माता उसमें होता, तो वह भी उसी प्रकृति का होता, और जितनी वस्तुएँ बनाई जाती हैं, उतने ही निर्माता भी होने चाहिए। उदाहरण के लिए, इस पुस्तक को देखो। यह एक कलम से लिखी गई है, लेकिन वर्णमाला के सभी अक्षरों का उपयोग करके मुद्रित की गई है। [या कोई व्यक्ति टाइपराइटर पर कई कुंजियाँ दबाकर इसे टाइप करता है।] कला के किसी कार्य में डिज़ाइन या कढ़ाई उस कार्य से नहीं बनाई जाती, किसी पेड़ के फल उस पेड़ से नहीं बनते, और किसी पृष्ठ के अक्षर उस पृष्ठ से नहीं बनते। अन्यथा, व्यवस्था नष्ट हो जाएगी और सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाएगा। लेकिन हम देखते हैं कि सृष्टि में एक पूर्ण व्यवस्था और स्थिरता है, क्योंकि सब कुछ भाग्य की रेखाओं पर दिव्य शक्ति की कलम द्वारा अंकित है।

हे मित्र! यह जान लो कि बुद्धि जो ब्रह्माण्ड को समझती है और उससे बहुत आगे तक जाती है, कभी-कभी एक बूँद में डूब जाती है, एक अणु में लुप्त हो जाती है, एक बाल में खो जाती है, और जिसमें खो जाती है, उसी में अपना अस्तित्व सीमित कर लेती है, और जो कुछ समझती है, उसे उसमें समाहित कर लेना चाहती है, जिसने उसे निगल लिया है।

यदि आपके पास इस भौतिक क्षेत्र को अपने पास रखने और नियंत्रित करने की शक्ति होती, यदि यह वास्तव में आपका होता, तो इसे बनाए रखने के बारे में आपका डर और चिंता आपके लिए इससे लाभ उठाना बहुत कठिन बना देती। हालाँकि, उदार दाता ईश्वर आपको जो भी चाहिए वह प्रदान करने के लिए सहमत है। आपको बस इतना करना है कि उसके उपकारों की मेज़ से खाना है और उसका धन्यवाद करना है। उसका धन्यवाद करने से वह आप पर अपने उपकारों को बढ़ाएगा, क्योंकि इसका अर्थ है अनुग्रह करने या वरदान देने का कार्य देखना। इस कार्य को देखने से वरदानों के लुप्त होने से उत्पन्न होने वाला दुःख दूर हो जाता है, क्योंकि यह लुप्त होना शाश्वत नहीं है। जैसे इस वर्ष खाए गए फलों के बाद अगले वर्ष नए फल आते हैं, इसका अर्थ है कुछ नया करने के लिए जगह बनाना। इस प्रकार, यह आपको हमेशा नवीनीकृत आनंद का आनंद देता है। उनका नवीनतम आह्वान: सभी प्रशंसा ईश्वर की हो, जो संसार के स्वामी हैं (10:10), यह दर्शाता है कि प्रशंसा करना अपने आप में एक आनंद है। प्रशंसा करने का अर्थ है कि आप फलों के पक्ष में [ईश्वरीय] अनुग्रह के वृक्ष को देखते हैं। यह दर्द को दूर करता है

उनके लुप्त होने के विचार से उत्पन्न होने वाली अनुभूति स्वयं आनंद बन जाती है।

हे मित्र, जान लो कि भौतिकवादी विज्ञान और दर्शन द्वारा बाहरी दुनिया के बारे में दी गई जानकारी हमेशा संदेह और त्रुटि से मुक्त नहीं हो सकती। लेकिन किसी के विवेक पर आधारित जानकारी ज्यादातर संदेह और परेशानी से मुक्त होती है। इसलिए अगर आप गलती से बचना चाहते हैं तो अपनी आंतरिक दुनिया, अपने विवेक से बाहरी दुनिया की ओर देखें।

हे मित्र, जान लो कि इस सभ्यता ने दुनिया को एक छोटे से शहर में बदल दिया है, लोग मीडिया के माध्यम से एक दूसरे से जानते और सुनते हैं, एक दूसरे को पाप करने में मदद करते हैं, और जो उनके लिए फायदेमंद नहीं है उसका पीछा करते हैं। यह उन्हें पाप की ओर ले जाता है और उनकी असावधानी [विश्वास और धार्मिक जीवन] को और गहरा करता है। केवल एक शक्तिशाली प्रयास और संघर्ष ही इस पर्दे को फाड़ सकता है। इस सभ्यता ने हमारी आत्माओं में दुनिया के लिए असंख्य द्वार खोले हैं। केवल ईश्वर की विशेष दया ही उन्हें बंद कर सकती है।

हे मित्र! यह जान लो कि एक सूक्ष्म पारदर्शी कण में सूर्य का प्रतिबिम्ब समाया हुआ है, यद्यपि वह अपने आकार और प्रकृति के दो कणों को धारण नहीं कर सकता।
वर्षा की बूंदें [और समुद्र के चेहरे पर बुलबुले] सूर्य की छवियों के साथ चमकती हैं।
इसी तरह, ब्रह्मांड के घटक कण और यौगिक प्रकाशमान, निरपेक्ष और शाश्वत दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकते हैं, जो शाश्वत, अनंत दिव्य ज्ञान और इच्छा के साथ होती है। आपकी आंख में एक कोशिका का घटक कण उस शक्ति, चेतना और इच्छा का स्रोत नहीं हो सकता है जिसकी उसे आपकी नसों, धमनियों और तंत्रिका तंत्र में और आपकी देखने, सुनने, सोचने और वर्णन करने की शक्तियों में अपने कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यकता होती है।

इस संपूर्ण और आश्चर्यजनक कला, इस पूरी तरह से सजाए गए और व्यवस्थित डिज़ाइन और इस गहन और सूक्ष्म ज्ञान को दो तरीकों से समझाया जा सकता है। या तो ब्रह्मांड के प्रत्येक घटक कण और यौगिक संपूर्ण, निरपेक्ष और सर्वव्यापी गुणों [जैसे शक्ति और इच्छा, ज्ञान और चेतना] का मूल है, या प्रत्येक वस्तु शाश्वत "सूर्य" के विकिरणों को प्राप्त करने और परावर्तित करने वाली वस्तु है, जिसमें वास्तव में ये सभी गुण हैं।

पहले विकल्प में उतनी ही असंभवताएँ हैं जितनी ब्रह्मांड के कणों और यौगिकों की संख्या है। इसे स्वीकार करने का मतलब है कि एक मधुमक्खी अपने पंखों पर अरारत और सुफन पर्वतों को उठा सकती है,62 और नील और फ़रात नदियाँ एक मच्छर की आँखों से बह सकती हैं। लेकिन वास्तव में, हर कण अपनी शक्ति से परे जो कुछ भी है उसे सहन नहीं कर सकता है और इसलिए यह प्रमाणित करता है कि कोई निर्माता, पालनहार, पालनकर्ता और प्रशासक नहीं है, कोई मालिक, आत्मनिर्भर या निर्धारक नहीं है।

62 अरारत और सुफान पूर्वी तुर्की में दो पर्वत हैं। (ट्र.)

भगवान को छोड़कर कोई देवता नहीं है। ब्रह्मांड के कण और यौगिक अलग-अलग भाषाओं में घोषणा करते हैं और अलग-अलग तरीकों से गवाही देते हैं:

> हमारी अभिव्यक्तियाँ भिन्न हैं, लेकिन आप सदैव एक ही सुन्दरता वाले हैं; इसलिए जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह उस सर्व-सुन्दर “चेहरे” की ओर संकेत करता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक का प्रत्येक अक्षर केवल एक ही तरीके से और एक अक्षर होने की क्षमता में अपने अस्तित्व की ओर संकेत करता है, जबकि यह अपने लेखक और कलाकार को अनेक तरीकों से इंगित करता है। यह अपने ऊपर प्रकट नामों की भाषा में प्रशंसा की एक लंबी कविता गाता है।

> ब्रह्माण्ड की पुस्तक की पंक्तियों पर मनन करें, क्योंकि वे सर्वोच्च क्षेत्र से आपके लिए पत्र हैं।

हे मित्र, जान लो कि बहुत से "दर्पण" ईश्वरीय अभिव्यक्तियों को दर्शाते हैं: कांच, पानी, हवा, प्रतीकों या अमूर्त रूपों की दुनिया, आत्मा, बुद्धि, कल्पना, समय और कई अन्य चीजें जिन्हें हम नहीं जानते। ठोस, भौतिक चीजों के प्रतिबिंब मृत, अलग या खुद से अलग होते हैं। उनमें अपने मूल की आवश्यक विशेषताएं नहीं होती हैं और इसलिए वे उनके समान नहीं होते हैं। यह तब संकेत मिलता है जब उनकी तस्वीरें ली जाती हैं: उन्हें केवल उनके बाहरी, भौतिक रूपों के साथ देखा जाता है।

लेकिन चमकदार चीज़ों के प्रतिबिंब उनके मूल से जुड़े होते हैं और उनकी विशेषताओं या गुणों को धारण करते हैं। [हालाँकि उनके मूल के बिल्कुल समान नहीं हैं], वे उनसे भिन्न भी नहीं हैं। अगर सृष्टिकर्ता ने सूरज की गर्मी को उसकी आत्मा, उसकी रोशनी, उसकी चेतना और सूरज के रंगों को उसका प्रकाश और उसकी इंद्रियाँ बनाया होता, तो वह आपके हाथ में दर्पण के "हृदय" के ज़रिए आपसे बात करता। यह आपके टेलीफ़ोन या आपके दिल के "दर्पण" के ज़रिए आपसे बात करने जैसा होगा। क्योंकि, अपनी क्षमता के अनुसार, दर्पण में सूर्य की छवि में जीवन की गर्मी, चेतना का प्रकाश और इंद्रियों के रंग होते। इस तथ्य के कारण, पैगंबर, जो पहचान में चमकदार है, एक ही समय में अपने लिए बुलाए गए सभी आशीर्वादों से अवगत हो जाता है। यह कई रहस्यमय सत्यों की कुंजी है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर की महिमा और ईश्वर की स्तुति सर्वशक्तिमान को उसकी महिमा और कृपा के गुणों के साथ वर्णित करती है। ईश्वर की महिमा का तात्पर्य है तुम्हारा आकस्मिक स्वभाव और ईश्वर से दूरी, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, उच्च और महान है। ईश्वर की स्तुति का तात्पर्य है उसकी दया और कृपा के साथ तुम्हारे और उसके प्राणियों के प्रति उसकी निकटता। विचार करें: सूर्य तुम्हारे निकट है, उसकी गर्मी और प्रकाश तुम तक पहुँचता है, और इसका तुम पर एक निश्चित नियंत्रण है।

सृष्टिकर्ता की अनुमति। इस प्रकार यह दिव्य नाम को प्रकट करने के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है
“प्रकाश” और उसकी गर्मी और प्रकाश की उदारता के एक पात्र के रूप में। लेकिन आप
इससे बहुत दूर हैं और इसका कुछ नहीं कर सकते। यह आपको प्रभावित करता है, लेकिन आप नहीं कर सकते
उस पर प्रभाव.

इसी तरह, परमेश्वर हमारे निकट है ताकि हम उसकी स्तुति करें, और हम दूर हैं ताकि हम उसकी स्तुति करें
उससे ताकि हम उसकी महिमा करें। उसकी स्तुति करो, क्योंकि वह तुम्हारे निकट है
उसकी दया। उसकी महिमा करो, क्योंकि तुम उससे दूर हो। उसकी दया को भ्रमित मत करो।
उससे आपकी दूरी के साथ आपकी निकटता भी बनी रहेगी, ताकि आप भ्रमित न हों।
आप इन दोनों बातों को आपस में न मिलाएँ, अपनी दूरी के नज़रिए से उसकी नज़दीकी पर विचार करें और अपनी दूरी को
उसकी नज़दीकी के नज़रिए से देखें। फिर, इन दोनों बातों को मिलाएँ और कहें: "परमेश्वर की महिमा हो

उसकी स्तुति के साथ।”

हे मित्र , जो संसार के लिए प्रयत्नशील है, उसे जान लो । परलोक के लिए संसार का त्याग करो।
निम्नलिखित चार कारण हैं:

प्रथम: यह तेजी से नष्ट हो जाता है और क्षय हो जाता है। क्षय और वियोग से उत्पन्न होने वाला दुःख क्षय के अधीन
किसी वस्तु की प्राप्ति या उसके साथ मिलन के सुख को समाप्त कर देता है।

दूसरा: सुख के बाद केवल दुःख और पीड़ा ही बचती है।

तीसरा: कब्र, जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही है और जिसकी ओर तुम यात्रा करते हो, वह है
दूसरी दुनिया का दरवाज़ा। यह दुनिया के आपके आभूषणों को स्वीकार नहीं करता
उपहार के रूप में, क्योंकि दूसरी दुनिया में वे त्रुटि और पाप में बदल जाएंगे।

चौथा: [इस दुनिया और दुनिया के बीच का अंतर समझना]
इसके बाद, इस बात पर विचार करें कि शत्रुओं और कीड़े-मकौड़ों के बीच एक घंटा रहना और अपने सबसे प्रिय मित्रों और
बुजुर्गों के बीच वर्षों तक रहना, इन दोनों में क्या अंतर है।
सांसारिक और आध्यात्मिक प्रभुत्व का प्रभु आपको उस घड़ी को त्यागने के लिए बुलाता है
ताकि उन वर्षों में आप अपने प्रियजनों की संगति में पूर्ण आराम और संतुष्टि पा सकें। इसलिए, इससे पहले कि आप मर जाएँ,
उसकी पुकार का उत्तर दें।
उसे जंजीरों में जकड़ कर भेजा गया।

सारी महिमा परमेश्वर की है, उसकी दया और कृपा मनुष्यों पर कितनी महान है। वह उस सम्पत्ति को, जो उसने हमें
सौंपी है, बहुत ऊंचे दाम पर खरीदता है,
और इसे हमारे लिए स्थायी रूप से सुरक्षित रखता है। अगर हम इस पर स्वामित्व का दावा करते हैं और नहीं करते हैं
भगवान को बेचकर, हम बड़ी विपत्ति और दुर्भाग्य का सामना कर रहे हैं, क्योंकि हमारी शक्ति इतनी छोटी और अपर्याप्त है कि
हम इसे संरक्षित और वहन नहीं कर सकते। अगर हम कोशिश करते हैं
इसे ले जाना हमारे लिए बहुत भारी साबित होगा। यह तेजी से गायब हो जाएगा
और बिना कुछ लिए चले जाओ, और हमारे लिए केवल हमारे पाप छोड़ जाओ।

हे मित्र, यह जान लो कि यह दोहा मानो मेरे बारे में कहा गया है:

जवानी की रात में मेरी आँखें सोती थीं; बुढ़ापे की सुबह होने पर ही वे जागती थीं।

जिसे मैं अपनी युवावस्था में सबसे बड़ी जागृति मानता था, वह वास्तव में सबसे गहरी नींद थी। इसलिए आधुनिकतावादी जिसे ज्ञान और जागृति कहते हैं, वह मेरी युवावस्था की जागृति से मिलता-जुलता होना चाहिए। वे ऐसे लोगों की तरह हैं जो सपने देखते हैं कि वे जाग गए हैं और दूसरों को यह बात बताते हैं, जबकि वास्तव में वे केवल गहरी नींद में प्रवेश कर चुके होते हैं। ऐसे लोग, जो मृतकों की तरह होते हैं, जागने वालों को कैसे जगा सकते हैं? सोए हुए लोग नींद के घने पर्दों के पीछे से अपनी आवाज़ कैसे सुना सकते हैं?

ऐ सोये हुए लोगों, जो सोचते हैं कि वे जाग रहे हैं। आधुनिक, भ्रष्ट लोगों के पास रियायतें देकर और धर्म में उनके जैसा बनने की कोशिश करके मत जाओ। तुम उनके और हमारे बीच इस तरह से पुल नहीं बना सकते या खाई को नहीं भर सकते। ईमान वालों और काफ़िरों के बीच की दूरी इतनी ज़्यादा है कि उसे मिटाना मुश्किल है और बीच की खाई इतनी गहरी है कि उसे भरना मुश्किल है। (अगर तुम ऐसा करने की कोशिश करोगे,) तो शायद तुम उनके साथ मिल जाओगे या फिर सही रास्ते से बहुत दूर चले जाओगे।

हे मित्र, जान लो कि पापों के सार में, विशेष रूप से बार-बार किए जाने वाले पापों में, अविश्वास का बीज होता है, क्योंकि ऐसे पाप लोगों को उदासीन बना देते हैं और व्यसन बन जाते हैं, जिनका केवल त्याग ही उपचार कर सकता है। ऐसे लोग आशा करते हैं कि उनके पापों के लिए कोई दंड नहीं होगा, और इसलिए अनजाने में वे अनन्त दुनिया में पीड़ा के अस्तित्व न होने पर विश्वास करने का बहाना ढूँढ़ते हैं। यह तब तक जारी रहता है जब तक वे दंड के निवास को नकार नहीं देते। जब पाप करने से उत्पन्न शर्म के बाद पश्चाताप और ईश्वर से क्षमा माँगना नहीं होता, तो पापी इस बात से इनकार करना शुरू कर देते हैं कि उनके पाप वास्तव में पाप हैं, और फिर उन लोगों के अस्तित्व को नकारना शुरू कर देते हैं - जैसे रक्षक देवदूत - जो उनकी देखरेख करते हैं और उनके पापों से अवगत हैं। इस तीव्र शर्म के कारण, वे आशा करते हैं कि दूसरी दुनिया में कोई हिसाब नहीं होगा। जब वे इसके अस्तित्व न होने के लिए एक झूठे तर्क का भी सामना करते हैं, तो वे इसे एक मजबूत सबूत के रूप में लेते हैं और अंतिम हिसाब को नकार देते हैं। परिणामस्वरूप, उनका दिल और भी काला हो जाता है।

भगवान हमें ऐसे परिणाम से बचाए! आमीन।

हे मित्र, जान लो कि क़ुरआन की चमत्कारिकता से संबंधित लगभग 40 प्रकार की किरणें हैं। निम्नलिखित इसकी वाक्पटुता के कई पहलुओं में से कुछ हैं: इसमें शुद्ध, वास्तविक प्रवाह है और शब्दों और अर्थ में सभी दोषों से मुक्त है। इसके वाक्य और पैराग्राफ, जो एक दूसरे की पुष्टि करते हैं, में दृढ़ एकजुटता

है और पूरी तरह से आनुपातिक हैं। यद्यपि 23 वर्षों में विभिन्न अवसरों पर भागों में प्रकट किया गया, अलंकारिक शैली और विज्ञान के विज्ञान

शब्दार्थशास्त्र इस बात की गवाही देता है कि इसकी आयतों और उद्देश्यों के बीच सामंजस्य और एकरूपता इतनी पक्की है कि ऐसा लगता है मानो कुरान एक ही बार में अवतरित हुआ हो। हालाँकि इसके कई हिस्से अलग-अलग सवालों के जवाब देने के लिए आए हैं, लेकिन इसमें अर्थ में कोई विरोधाभास नहीं है, और उन हिस्सों के बीच इतनी सहमति और सामंजस्य है कि ऐसा लगता है जैसे यह केवल एक ही सवाल का जवाब है।

यह बहुत अलग-अलग घटनाओं की व्याख्या करने और उनका न्याय करने के लिए आया था, लेकिन इसका क्रम ऐसा है कि इसे केवल एक घटना का न्याय करने के लिए ही उतारा जा सकता था। कुरान में, ईश्वर सभी स्तरों की समझ के लिए उपयुक्त शैलियों में बोलता है। यह सबसे पहले पैगंबर के पास आया, उनके विभिन्न मूड में। हालाँकि, इसके हिस्सों में इतनी सहजता और संगति दिखती है कि यह तब भी प्रकट हो सकता था जब वह हमेशा एक ही मूड में होते थे। हालाँकि यह सभी समय के सभी लोगों को संबोधित करता है, यह इतनी सहजता और धाराप्रवाहता से, इतने व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से बोलता है, कि ऐसा लगता है कि यह केवल एक स्तर की समझ को संबोधित करता है। (यह इस तरह से बोलता है कि) जिस भी समूह के लोगों से यह बात करता है, उन्हें लगता है कि यह सीधे और मुख्य रूप से उन्हें संबोधित कर रहा है।

कुरान सभी को मार्गदर्शन प्रदान करता है और उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, लेकिन यह इतना संतुलित, व्यवस्थित और सीधा है कि ऐसा लगता है कि यह एक ही उद्देश्य का अनुसरण करता है। हालाँकि, इसके मुख्य रूप से चार या पाँच उद्देश्य हैं: ईश्वरीय एकता, पैगम्बरी-हुड, पुनरुत्थान, न्याय, और विश्वास और व्यक्ति के दैनिक जीवन में ईश्वर की पूजा या भक्ति। चूँकि कुरान मुख्य रूप से ईश्वरीय एकता पर केंद्रित है, इसलिए यह पूरी तरह से सुसंगत और सामंजस्यपूर्ण, सुसंगत और व्यवस्थित है।

जिसके पास आँखें हैं, वह देखेगा कि कुरान में एक आँख है जो पूरी सृष्टि को एक ही साफ पन्ने की तरह देख रही है। यह अपने उद्देश्यों को मन और दिल में स्थापित करने के लिए खुद को दोहराता है, और अपनी चेतावनियों और शिक्षाओं को पुख्ता करने के लिए कुछ पैगम्बरों की कहानियों को बार-बार बयान करता है। हालाँकि, इसके दोहराव से इसके श्रोताओं का स्वाद न तो थकता है और न ही खराब होता है। जैसे कस्तूरी घिसने के बाद और खुशबू देती है, वैसे ही कुरान जितना ज़्यादा किसी विषय को दोहराता है, उतनी ही ज़्यादा खुशबू बिखेरता है और उतनी ही ज़्यादा “अल्लाह की साँसें” उससे फैलती हैं।

अगर आप अच्छे स्वाद और स्वस्थ दिल वाले हैं, तो आप इसे जितना ज़्यादा पढ़ेंगे, उतना ही ज़्यादा आपको इसमें मज़ा आएगा, क्योंकि यह दिल को पोषण देता है और आत्मा को स्वास्थ्य और शक्ति देता है। हवा, पानी और रोटी जैसे ज़रूरी शारीरिक पोषण बार-बार लेने पर नाराज़ नहीं होते; बल्कि शरीर को हर समय इनकी ज़रूरत होती है। हमें हर पल हवा, दिन में कुछ बार पानी और दिन में कम से कम एक बार भोजन की ज़रूरत होती है। हमें रोशनी की भी ज़रूरत होती है। चूँकि हमें इन बुनियादी पोषण की हर समय ज़रूरत होती है, इसलिए इन्हें बार-बार लेने से हमें बोरियत के बजाय हमेशा नया आनंद मिलता है। इसी तरह, कुरान सभी बौद्धिक और आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करता है।

मानव जीवन की आध्यात्मिक ज़रूरतें। हमें इसके कुछ तत्वों की ज़रूरत है, जैसे कि वह ... ईश्वर हर पल, क्योंकि वे हमारी आत्मा को तरोताज़ा करते हैं; कुछ जैसे कि ईश्वर के नाम पर हर घंटे; और फिर भी कुछ अन्य दैनिक, हमारी ज़रूरत के हिसाब से। इसलिए, कुरान दिल द्वारा महसूस की गई ज़रूरत के अनुसार खुद को दोहराता है।

उदाहरण के लिए, चूँकि वह ... ईश्वर या ईश्वर के नाम पर ताजी हवा की तरह है जो शरीर को तरोताजा करती है और रक्त को ऑक्सीजन देती है, इसे हर समय दोहराया जाना चाहिए। हर बार जब कुरान एक ही घटना का उल्लेख करता है, तो वह एक अलग दृष्टिकोण से ऐसा करता है और इस प्रकार कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों की ओर इशारा करता है। उदाहरण के लिए, मूसा की कहानी बताने के लिए इस्तेमाल किए गए वाक्यांश और वाक्य उसके कर्मचारियों की तुलना में हमारे लिए अधिक फायदेमंद हैं, और उनके लाभ किसी निश्चित समय और लोगों तक सीमित नहीं हैं।

संक्षेप में: कुरान ईश्वरीय नामों के पाठ, चिंतन, विधान, ज्ञान, सत्य और कानून की पुस्तक है; यह मानव हृदयों में व्याप्त समस्याओं का निदान है; तथा ईमान वालों के लिए शुद्ध मार्गदर्शन और दया है।

हे मित्र, जान लो कि मनुष्य का स्वभाव बहुत ही विचित्र है: असावधानी के कारण वे अपनी शारीरिक इंद्रियों और अंगों के कार्यों, तथा अपनी बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को भ्रमित कर देते हैं। वे उन लोगों की तरह हैं जो अपनी आँखों और हाथों के बीच की निकटता के कारण जो कुछ भी देख सकते हैं उसे पकड़ने की कोशिश करते हैं। ईश्वरीय और मानवीय के बीच के अंतर से अनभिज्ञ, [क्योंकि वे अपने अस्तित्व और बाहरी दुनिया में दोनों को साथ-साथ, यहाँ तक कि मिश्रित रूप में देखते हैं], वे अपने अहंकार में, ब्रह्मांड पर ईश्वर के नियंत्रण में हस्तक्षेप करने की कोशिश करते हैं, भले ही वे स्वयं कुछ भी नहीं कर सकते।

हालाँकि लोगों के बीच शारीरिक रूप से बहुत ज़्यादा अंतर नहीं है, लेकिन उनके स्वभाव में उतना ही अंतर है जितना कि एक परमाणु, सूरज और "सूर्यों के सूरज" में देखा जाता है। मछली और पक्षियों में शारीरिक रूप से बहुत अंतर है, लेकिन "जानवर" होने के नाते वे लगभग एक जैसे हैं। जहाँ तक इंसानों की बात है, वे "अस्तित्व के शंकु" के सबसे ऊपरी केंद्रीय बिंदु पर खड़े हैं, और जो कुछ भी मौजूद है, उसकी उनसे समान दूरी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी क्षमताएँ या शक्तियाँ—वासना, क्रोध, बुद्धि, इत्यादि—प्रतिबंधित नहीं हैं। अहंकार और घमंड उन्हें सबसे निचले दर्जे पर ले जाता है, जबकि इन दो चीज़ों को त्यागकर और ईश्वर की पूजा और सेवा करके वे सबसे ऊँचे दर्जे पर पहुँच जाते हैं, पैगंबर मुहम्मद की तरह "सूर्यों के सूरज" होने की हद तक।

हे मित्र, जान लो कि शाश्वत परमेश्वर चीजों को पूर्णतया अस्तित्वहीन नहीं होने देता। यहां तक कि जो चीजें तेजी से नष्ट हो जाती हैं या गायब हो जाती हैं, जैसे बोले गए शब्द और क्षणिक विचार, वे भी सुरक्षित रहते हैं। हालांकि, वे जहां सुरक्षित रहते हैं, उसके अनुसार अलग-अलग रूप धारण कर सकते हैं। ऐसा लगता है जैसे चीजें हैं

किसी चीज़ को उसके सटीक रूप और प्रकृति में या केवल एक पहलू के साथ संरक्षित करने का आरोप लगाया जाता है। हालाँकि वैज्ञानिकों ने इस वास्तविकता की खोज की है, फिर भी वे इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। वे गलती से संयोजन, संरचना और विघटन जैसी रासायनिक प्रक्रियाओं को चीज़ों के लिए ही जिम्मेदार ठहराते रहते हैं और इस तरह पदार्थ को शाश्वत मानते हैं। लेकिन पदार्थ शाश्वत नहीं हो सकता, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर चीज़ों को घोलता है, संयोजित करता है और बनाता है, और वह उन्हें बनाता और मरता है। वह जैसा चाहता है वैसा कार्य करता है, और जैसा चाहता है वैसा आदेश देता और न्याय करता है।

हे अभागे ने कहा! कब्र एक द्वार है - इसके अंदर दया और खुशी है; बाहर दुख और दुख है। तुम्हारे लगभग सभी प्रियजन और मित्र इस द्वार के दूसरी ओर रहते हैं। क्या अब समय नहीं आ गया है कि तुम उनके और उनकी दुनिया में शामिल होना चाहो? अपने आप को [अपने पापों से] शुद्ध करो; अन्यथा वे तुमसे घृणा करेंगे।

अगर आपको बताया जाए कि इमाम रब्बानी अहमद अल-फारुकी, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें, भारत में रह रहे हैं, तो निश्चित रूप से आप अपनी मातृभूमि को छोड़कर उनसे मिलने के लिए सब कुछ जोखिम में डाल देंगे। लेकिन "सूर्य" के चारों ओर अहमद नामक हज़ारों तारे हैं

बाइबिल में अहमद, टोरा में अहयाद और कुरान में मुहम्मद के रूप में उल्लेख किया गया है। और मुहम्मद नाम से लाखों लोग हैं। सभी कब्र के दरवाजे के अंदर हैं, भगवान की दया से घिरे हुए हैं। इसलिए हमेशा निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रखें: यदि आप एक अच्छे सेवक हैं जो पूरी तरह से ईश्वर के अधीन हैं, तो सब कुछ आपके अधीन है। यदि आपने ईश्वर को समर्पित नहीं किया है, तो सब कुछ आपके लिए शत्रुतापूर्ण है। सब कुछ

पहले से तय है, इसलिए जो आपके पास आता है उससे संतुष्ट रहें ताकि आप आराम कर सकें। अन्यथा आप दुख के बाद दुख में फंस जाते हैं। आपका जीवन और शरीर ईश्वर का है लेकिन आपको सौंपा गया है।

हालाँकि, वह उन्हें आपसे खरीदना चाहता है ताकि उन्हें आपके लिए स्थायी रूप से सुरक्षित रखा जा सके। अगर वे आपके पास रह जाएँ, तो वे बेकार हो जाएँगे। आपको हर तरह से और हर परिस्थिति में उसकी ज़रूरत है। आप हर तरफ से घिरे हुए हैं और कब्र की ओर आपका इंतज़ार कर रहे हैं। दिल को जो कुछ भी अस्थायी है, उससे शुद्ध आनंद नहीं मिलता। आप, आपकी दुनिया और बाकी सभी लोगों की दुनिया, दोनों ही तरह से सड़ रहे हैं।

ब्रह्माण्ड से उसका वर्तमान वस्त्र उतारकर उसे दूसरा वस्त्र पहना दिया जाएगा, जैसे कि वह एक बड़ी घड़ी हो जिसकी सुइयां नियत समय पर पहुंच गई हों। अतः इस क्षणभंगुर दुनिया में अपने कर्मों और निशानों को महत्व न दो, क्योंकि वे तुम्हें परलोक में कोई लाभ नहीं पहुंचाएंगे।

सृष्टि के प्रति उसकी दया और कृपालुता को अपनी लघुता और उससे दूरी, तथा उसकी महानता और शक्ति के दृष्टिकोण से मत देखो। [दूसरे शब्दों में, यह मत सोचो कि सृष्टि की दूरी और तुच्छता, उसके संबंध में, उसे कृपा और दया से व्यवहार करने से रोकती है, और यह मत पूछो कि उसे तुम पर कृपा करने और तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्यों नीचे आना चाहिए।] सृष्टि के साथ उसके संबंध के लिए यह आवश्यक है कि तुम उसे महिमा दो, जैसा कि वह योग्य है।

उसकी महानता के गुणों को इस दृष्टिकोण से न देखें कि वह सृष्टि से बहुत निकट है और उसे अपने ज्ञान और दया से आच्छादित रखता है, और यह कि तुम भी उसकी रचना हो और उसकी कृपा और उदारता में सम्मिलित हो। इससे तुम पर संदेह और भ्रांति (उसकी शक्ति और महानता के बारे में) आक्रमण करेगी।

> उसकी महिमा है जो मन और बुद्धि से समझ में नहीं आता और उसकी स्तुति है जिसकी दया सभी चीज़ों को घेरे हुए है।
> उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह एक है, और उसका कोई शरीक नहीं। हर चीज़ पर हुकूमत उसी की है और हर तरह की तारीफ़ उसी की है। वही ज़िन्दगी देता है और मौत भी देता है। हर तरह की भलाई उसके हाथ में है और वह हर चीज़ पर ताक़तवर है।

हे मित्र , जान लो कि जब "जीवित" हृदय वाले लोग अपना ध्यान ब्रह्माण्ड की ओर मोड़ते हैं, तो वे अपनी समझ से परे महान, व्यापक मामलों को देखते हैं और आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इस आश्चर्य की पीड़ा का इलाज खोजने के लिए, एक प्यासे व्यक्ति की तरह मीठे पानी की ओर दौड़ते हुए, वे बिना कहे नहीं रह सकते: "ईश्वर की जय हो।" वे ईश्वरीय कृपा की सूक्ष्मता को देखते हैं और उस आनंद का अनुभव करते हैं जो उन्हें प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए मजबूर करता है। वे अपने द्वारा उपभोग किए जाने वाले उपहारों में कृपा करने के कार्य को समझकर और कृपा करने के कार्य में वरदान देने वाले को समझकर अधिक आनंद की इच्छा करते हैं। फिर एक ऐसे व्यक्ति की तरह जिसने गड़ा हुआ खजाना खोज लिया हो, वे यह कहकर राहत महसूस करते हैं: "ईश्वर की जय हो।"

जब वे ऐसे अनोखे और अनोखे जीव देखते हैं जिनका वर्णन वे नहीं कर सकते, तो उनके मन में उनके बारे में सच्चाई जानने की इच्छा जाग उठती है और वे सिर्फ़ यह कहने में राहत पाते हैं: “ईश्वर सबसे महान है।” यानी उनका रचयिता अतुलनीय और असीम रूप से महान है और उन्हें आसानी से बना और चला सकता है। ऐसे लोग उन लोगों की तरह हैं जो चाँद के घूमने पर बहुत हैरान हो जाते हैं या भूकंप के दौरान पहाड़ के ज़मीन से बाहर निकलने पर डर जाते हैं। उन्हें सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिशाली, सर्वदृढ़ के “जहाज़” पर बिठाकर आश्चर्य और भय के “बोझ” से बचाया जाता है।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारे पाप और बुराई ईश्वर को नुकसान नहीं पहुँचा सकते; वे केवल तुम्हें नुकसान पहुँचाते हैं। उदाहरण के लिए, ईश्वर का कोई साझीदार नहीं है। तुम्हारा उसे साझीदार बनाना उसकी संपूर्ण, पूर्ण संप्रभुता और ब्रह्मांड पर शासन को प्रभावित नहीं करता। यह केवल तुम्हें नुकसान पहुँचाता है, क्योंकि यह तुम्हें विनाश की ओर ले जाएगा।

ऐ दोस्त! जान लो कि जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उसके लिए काफ़ी है। अतः कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा संरक्षक है।

पहला: परमेश्वर पूर्णतः परिपूर्ण है। पूर्ण परिपूर्णता को उसके अपने हित के लिए प्यार किया जाता है, और उसके लिए महान चीज़ों का बलिदान किया जाता है।

दूसरा: चूँकि उसे उसके अपने हित के लिए प्रेम किया जाता है, वह सच्चा प्रिय है,

और प्रेम के लिए त्याग की आवश्यकता होती है।

तीसरा: वह अनिवार्य रूप से विद्यमान है। उसकी निकटता से अस्तित्व के प्रकाश उत्पन्न होते हैं, जबकि उससे दूर होने पर विलुप्ति या अस्तित्वहीनता का अंधकार आता है, और मानव आत्मा की आकांक्षाओं को बुझाकर उसे असाध्य पीड़ा होती है।

चौथा: वह भौतिक अस्तित्व के संकीर्ण दायरे में घुटती हुई, संसार के छल से पीड़ित, सृष्टि के प्रति स्नेह से उत्पन्न पीड़ा से कुचली हुई मानव आत्मा का आश्रय है।

पाँचवाँ: वह स्थायी है, जिसके द्वारा सभी चीज़ें स्थायी हो जाती हैं और जिसके बिना सभी चीज़ें नष्ट हो जाती हैं और बुझ जाती हैं, जो दुख और पीड़ा का कारण बनती हैं। उसके बिना मनुष्य की आत्मा में पीड़ा जमा हो जाती है, जबकि जो उसे पाता है और उस पर भरोसा करता है, उस पर हर जगह से प्रकाश बरसता है।

छठा: वह अस्तित्व का एकमात्र स्वामी है। वह तुम्हारे जीवन और शारीरिक अस्तित्व का बोझ उठाना चाहता है, जो उसने तुम्हें सौंपा है, क्योंकि तुम उसे नहीं उठा सकते और यदि तुम सोचते हो कि तुम उसके स्वामी हो तो तुम्हें कष्ट उठाना पड़ेगा। यदि तुम उनके स्थायित्व और उनकी निरंतर कृपा की इच्छा रखते हो, तो जब वह उन्हें तुमसे ले ले तो दुखी मत हो। सूर्य की छवियों वाले बुलबुले गायब होने पर दुखी नहीं होते, और सूर्य के प्रतिबिंबों के नवीनीकरण के लिए खुशी-खुशी अपने स्पष्ट रूपों का त्याग करते हैं। फल अपने पेड़ से अलग होने पर दुखी नहीं होते, और बीज जमीन में फल के विघटित होने पर दुखी नहीं होते, क्योंकि इसके विघटित होने का अर्थ है एक नए पेड़ का विकास जो कई फल देगा। आप भी उनकी कृपा का एक फल, एक अवतार हैं।

सातवाँ: वह सर्वधनवान और धन देने वाला है, और उसके हाथ में हर चीज़ की कुंजियाँ हैं। अगर तुम उसके सच्चे सेवक बन जाओ और फिर ब्रह्मांड को देखो, तो तुम अपने मालिक की प्रभुता और भव्यता को देखोगे और राहत पाओगे। तुम ब्रह्मांड को ऐसे देखोगे जैसे कि वह तुम्हारी संपत्ति हो जिस पर तुम बिना किसी परेशानी के मालिक हो, और जिसके गायब होने से कोई नुकसान नहीं होगा।

तुम्हें दु:खी न करें। राजा का सच्चा सेवक जो उसके प्रेम में नष्ट हो जाता है, वह जो कुछ उसका है, उस पर गर्व करता है।

आठवाँ: वह सभी रसूलों और नबियों, संतों और ईश्वर-भक्त लोगों का रब है, वे सभी उसकी दया से खुश हैं। अगर आपका दिल स्वस्थ और भ्रष्ट नहीं है, तो उनकी खुशी का ज्ञान आपको खुशी और आनंद देगा।

हे मित्र! जान लो कि यदि तुम्हारी बुद्धि स्वस्थ है, तो तुम्हें यहाँ जो कुछ भी मिलता है या खोता है, उस पर न तो प्रसन्न होना चाहिए, न शोक करना चाहिए, न क्रोध करना चाहिए और न शिकायत करनी चाहिए, क्योंकि यह संसार नाशवान है, जैसे कि तुम्हारा अपना संसार और तुम। तुम यहाँ स्थायी रूप से रहने के लिए नहीं बने हो, न ही तुम लोहे या लकड़ी से बने हो कि तुम अधिक समय तक रह सको। तुम सदैव नवीनीकृत होने वाले मांस, रक्त और नाजुक अंगों से बने हो, और हर चीज के प्रति संवेदनशील हो। तुम्हारा एक अंग या अवयव टूट जाता है, दूसरा जम जाता है, और फिर तीसरा अपने परमाणुओं के विघटन के माध्यम से विलीन हो जाता है। बुढ़ापे ने तुम्हारे आधे सिर को सफेद कफन की तरह ढक लिया है। तुम्हारे पास आने वाले और आने वाले रोग मृत्यु के अग्रदूत और [इस जीवन के] सुखों का नाश करने वाले हैं। अनंत जीवन तुम्हारे सामने है। यद्यपि परलोक में तुम्हारा आराम और सुख इस बात पर निर्भर करता है कि तुम यहाँ क्या करते हो, तुम्हारा लोभ इतना बड़ा है कि तुम सोचते हो कि तुम यहाँ हमेशा रह सकते हो। मृत्यु की पीड़ा तुम्हें जगाने से पहले ही जाग जाओ।

हे मित्र, जान लो कि जब तुम सर्वशक्तिमान की ओर यह मानकर मुड़ते हो कि वह एक जाना-पहचाना और पहचाना हुआ व्यक्ति है, तो वह अज्ञात और अपरिचित हो जाएगा, क्योंकि तुम्हारा अनुमान उसके बारे में एक सामान्य, अनुकरणीय ज्ञान पर आधारित है। अधिकांश मामलों में, ऐसे ज्ञान का सत्य से कोई लेना-देना नहीं होता।
यह आपके मन को जो अर्थ देता है, वह परम दिव्य गुणों की व्याख्या करने से बहुत दूर है। लेकिन अगर आप सर्वशक्तिमान की ओर मुड़ते हैं, उसे एक अस्तित्ववान लेकिन अज्ञात के रूप में स्वीकार करते हैं, तो उसके बारे में सच्चे ज्ञान की किरणें प्रकट होंगी और ब्रह्मांड में प्रकट होने वाले सर्वव्यापी, परम दिव्य गुण इस ज्ञान के प्रकाश में प्रकट होंगे।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारे लिए यह बहुत है, एक असीम गर्व के स्रोत के रूप में, कि तुम्हारे पास एक स्वामी, एक मालिक है, जो सभी चीजों पर शक्तिशाली है। वह इतना शक्तिशाली है कि प्रलय के दिन आकाश उसके "दाहिने हाथ" में लपेटा जाएगा और पृथ्वी उसकी मुट्ठी में होगी। वह तुम्हारा लालन-पालन, प्रशिक्षण और भरण-पोषण ऐसे प्यार और करुणा के साथ करता है जो तुम्हारे माता-पिता से कहीं अधिक परिपूर्ण है। तुम समुद्र में एक बूंद की तरह हो, समुद्र ब्रह्मांड के ज्ञात भाग में एक बिंदु की तरह है, और वह भाग उसके विशाल जीवों के बीच एक छोटे कण की तरह है। वह प्रकाशों का प्रकाश है, सभी रहस्यों का ज्ञाता है।

यदि कोई राजा अपने राज्य के कामों में व्यस्त नहीं है, तो इसका कारण यह नहीं है कि वह बहुत महान है, बल्कि इसलिए कि वह ऐसा नहीं कर सकता। इसके विपरीत, शाश्वत प्रभु की महानता के कारण, वह अपनी दिव्यता के संकेतों को मोती जैसे तारों की स्याही से अपनी बनाई हुई कलम से आकाश के पृष्ठ पर अंकित करता है। साथ ही, वह अपनी प्रभुता के संकेतों को उसी कलम से परमाणुओं की स्याही से आँख की पुतली के पृष्ठ पर अंकित करता है।

उसकी जय हो, जिसकी दिव्यता और महिमा के लिए सभी आकाशीय पिंड और मोती जैसे ग्रह उज्ज्वल प्रमाण हैं, और जिसके प्रभुत्व के लिए सभी मुस्कुराते हुए, चमकते हुए सितारे साक्षी की किरणें हैं।

हे मित्र, जान लो कि सात रंगों वाले प्रकाश की तरह, दिव्य सुंदर नाम एक दूसरे को समाहित करते हैं, संकेत देते हैं, गवाही देते हैं, परिणाम हैं और एक दूसरे में प्रतिबिम्बित होते हैं। उन्हें एक साथ इस तरह से पढ़ा जा सकता है जैसे कि वे दोनों सादृश्य और उनके माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष हों, या दोनों तर्क और उनके माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष हों। प्रत्येक महान नाम में सबसे बड़ी मात्रा में अन्य सभी नाम समाहित होते हैं। कुछ लोग किसी अन्य नाम या नामों के माध्यम से महान नाम के प्रकाश तक पहुँच सकते हैं, और महान नाम क्या है यह उस व्यक्ति के अनुसार भिन्न होता है जो इसे खोजने और उस तक पहुँचने का प्रयास करता है। ईश्वर सत्य को जानता है।

एक प्रार्थना

हे ईश्वर, मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि मैं दोनों जीवन खो दूं—यह और अगला—या फिर ब्रह्मांड मेरा हो जाए, क्योंकि आप मेरे भगवान, मेरे निर्माता और मेरे ईश्वर हैं, और मैं आपके द्वारा रचित और बनाया गया हूँ। मेरी विद्रोही-निष्ठा और अनुग्रह के अन्य संबंधों से दूर होने के बावजूद, मेरा आपसे एक संबंध है, जो कि मेरा आपका प्राणी होना है। मैं इस संबंध की भाषा में प्रार्थना करता हूँ।

हे मेरे सृष्टिकर्ता, प्रभु, प्रदाता, स्वामी, निर्माता, और मेरे परमेश्वर!
तेरे सुन्दर नामों और तेरे महानतम नाम की खातिर; तेरे विवेकपूर्ण कसौटी (कुरान) और तेरे प्रियतम (पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो), तेरे शाश्वत वचन और तेरे महान सिंहासन की खातिर; और हज़ारों-हज़ारों की खातिर कहो: "वह ईश्वर है, एकमात्र," हे ईश्वर, मुझ पर दया कर! दयालु, दयावान, अत्यन्त उदार, सर्वोच्च शासक।

हे सर्व-क्षमाशील, सर्व-आवरण करने वाले, सर्व-क्षमाशील, सर्व-दानी, मुझे क्षमा कर। हे सर्व-प्रेमी, सर्व-दयालु, सर्व-क्षमाशील, सर्व-क्षमाशील, सर्व-क्षमाशील, अपनी दया और सौम्यता से मुझ पर कृपा करें। हे सर्व-सहनशील, सर्व-ज्ञानी, सर्व-उदार, सर्व-देखने वाले, मेरे दोषों को अनदेखा करें। हे सर्व-सहनशील, सर्व-ज्ञानी, सर्व-उदार, सर्व-दयालु।

हे प्रभु, सदा-सर्वदा-प्रार्थना करने वाले, सर्व-मार्गदर्शक, हमें सीधे मार्ग पर ले चलो। हे, हमेशा अपनी कृपा और उदारता से मुझ पर कृपा करो।

हे सृष्टिकर्ता, सर्व-स्थायी, सर्व-न्यायी, हे मेरे हृदय को सजीव कर और मेरी कब्र को ईमान और कुरान की रौशनी से प्रकाशित कर, हे प्रकाश, सत्य, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर और सर्व-निर्भर, सभी क्षेत्रों का स्वामी, महिमा और परोपकार वाला, प्रथम और अंतिम, बाह्य और आंतरिक, सर्व-शक्तिमान, सर्वशक्तिमान, मेरे स्वामी, क्षमाशील, दयालुओं में सर्वाधिक दयालु।

कुरान में आपके महानतम नाम और पैगंबर मुहम्मद के लिए, जो सृष्टि को दिए गए आपके अर्थ के सबसे महान अवतार हैं, मैं आपसे इन सुंदर नामों के माध्यम से ऐसी खिड़कियाँ खोलने के लिए कहता हूँ, जिनके माध्यम से आपके महानतम नाम की रोशनी इस दुनिया में मेरे दिल में और मेरी कब्र में मेरी आत्मा में आ सके। इस पृष्ठ को मेरी कब्र की छत बनने दो, और इन नामों को ऐसी खिड़कियाँ बनने दो, जिनके माध्यम से सत्य के सूर्य की किरणें मेरी आत्मा में प्रवेश करें।

हे ईश्वर, मैं एक ऐसी शाश्वत ज़ुबान चाहता हूँ जिससे मैं अंतिम दिन तक आपको पुकार सकूँ। मेरी नश्वर ज़ुबान के लिए इन पंक्तियों को एक स्थायी विकल्प के रूप में स्वीकार करें। हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद को इस तरह से शांति और आशीर्वाद प्रदान करें जिससे आप हमें सभी दुर्भाग्य और विपत्तियों से बचाएँ, हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करें, हमें हमारी सभी बुराइयों से शुद्ध करें, और हमारे सभी पापों और दोषों को क्षमा करें।

हे ईश्वर जो सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। मेरे जीवन के दौरान और मेरे जीवन के बाद प्रत्येक क्षण में मेरे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार, साथियों, सहायकों और अनुयायियों पर असीमित आशीर्वाद और शांति स्वीकार करें। मेरे जीवन के दौरान मेरे द्वारा ली जाने वाली और छोड़ी जाने वाली सांसों की संख्या के अनुसार आशीर्वाद के इन आह्वानों को बढ़ाएँ, और मुझे क्षमा करें और आशीर्वाद के प्रत्येक आह्वान के लिए मुझ पर दया करें, और आपकी दया के लिए, हे दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन।

परिशिष्ट

हे मित्र, जान लो कि मैं अपने कामों के ज़रिए किसी बहुत महत्वपूर्ण चीज़ को उजागर करने के लिए बाध्य हूँ। मुझे नहीं पता कि मैंने इसे पहले ही खोज लिया है या यह भविष्य में सामने आएगा, या मैं किसी और के लिए इसे खोजने और उस तक पहुँचने का एक ज़रिया मात्र हूँ। ईश्वर के अलावा कोई शक्ति और ताकत नहीं है। ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना अच्छा संरक्षक है। हे ईश्वर, हमें शहीदों और विश्वासियों के रूप में दुनिया से बाहर निकालो।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

मैं ईमान और इस्लाम की नेमत के लिए अल्लाह की असीम प्रशंसा करता हूँ, और हर परिस्थिति में उसकी हर नेमत के लिए उसका असीम शुक्रिया अदा करता हूँ। पवित्र संतों और पवित्र लोगों के राजकुमार पर शांति और आशीर्वाद हो।

मानव जाति की भलाई - चुने हुए पैगंबर, मुहम्मद - और उनके शुद्ध परिवार और साथियों पर, जिनमें से प्रत्येक एक चमकदार, मार्गदर्शक सितारा है, जब तक रात और दिन चलते हैं।

हे मित्र, यह जान लो कि प्रत्येक स्थान के लिए विशेष परिस्थितियाँ होती हैं।
ईश्वर की यात्रा करने वालों को प्रत्येक स्थान, पद और आवरण के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिससे वे या तो गुजरें या गुजरें, और प्रत्येक अवस्था के प्रति जो उन्हें अनुभव करनी है। जो कोई भी इन्हें [एक दूसरे के साथ] भ्रमित करता है, वह गलतियां करता है। वे उन लोगों की तरह होंगे जो गांव में घोड़े की हिनहिनाहट सुनते हैं और फिर शहर में बुलबुल को गाते हुए सुनते हैं, वे दोनों जानवरों को एक दूसरे के साथ भ्रमित करते हैं या उम्मीद करते हैं कि बुलबुल घोड़े की तरह हिनहिनाएगी।

हे मित्र, जान लो कि सांसारिक जीवन को सुंदर मानने का एक कारण यह है कि दुनिया के "दर्पण" में मार्गदर्शन के सितारों की तरह चमकते हुए पिछले शानदार, महान व्यक्ति हैं। भविष्य अतीत का दर्पण है। अतीत, जो पहले से ही इस दुनिया और अगली दुनिया के बीच के मध्यवर्ती क्षेत्र में घुला हुआ है, भविष्य के दर्पण में और इतिहास और लोगों की यादों में अपना रूप छोड़ देता है।

इन लोगों के लिए आपके मन में जो प्यार पैदा होता है, वह इस दृष्टांत की तरह है: सड़क पर किसी को एक बड़ा सा आईना मिलता है, जिसमें उसे अपने दोस्तों और प्रियजनों की छवियाँ दिखाई देती हैं, जो “पूर्व” (मृत्यु) की ओर चले गए हैं। लेकिन आईने में, वे पश्चिम की ओर जाते हुए दिखाई देते हैं। पूर्व से भयभीत होकर, वह पीछे हट जाता है और “पश्चिम” की ओर भागता है। अगर उसके चेहरे से अज्ञानता और असावधानी का पर्दा हट जाए, तो वह खुद को एक विशाल रेगिस्तान में मृगतृष्णा और पीड़ा की ओर भागता हुआ देखेगा, न कि मीठे पानी के स्रोत की ओर।

हे मित्र, जान लो कि कुरान की महानता का एक पहलू और इसकी सच्चाई का सबसे सच्चा सबूत इस प्रकार है: इसमें ईश्वरीय एकता और इसकी विविधताओं की पूर्ण पुष्टि के लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह सब कुछ शामिल है - सार, गुण, नाम और कार्य में एकता - और सभी उच्च ईश्वरीय सत्यों के बीच संतुलन बनाए रखता है। यह ईश्वरीय सुंदर नामों के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे समझता है, उनके बीच अनुपात को बनाए रखता है, और प्रभुत्व और ईश्वरत्व के आवश्यक गुणों को पूर्ण संतुलन के साथ समाहित करता है।

कुरान की यह विशेषता किसी भी मानव मस्तिष्क की रचना में नहीं पाई जाती, चाहे वह अस्तित्व के आंतरिक आयाम को समझने वाला संत हो, चीजों और घटनाओं के आंतरिक पक्ष को समझने वाला एक इल्लुमिनिस्ट दार्शनिक (इशराकी) हो, या अदृश्य को देखने वाला एक पूर्ण, शुद्ध विद्वान हो। वे अपने सीमित दृष्टिकोण से पूर्ण सत्य को नहीं समझ सकते, बल्कि केवल उसके एक पहलू को देख सकते हैं। इसे समझने के अपने प्रयास में, वे इसे कुछ चरम, अन्यायपूर्ण तरीकों से संभालते हैं जो इस संतुलन को नष्ट कर देते हैं और इस पूर्ण आनुपातिकता को हटा देते हैं।

ऐसे लोग समुद्र तल पर खजाना इकट्ठा करने वाले गोताखोरों की तरह हैं। कुछ लोग एक बड़ा हीरा पाते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि खजाने में सिर्फ़ उसी तरह का हीरा है। जब वे सुनते हैं कि दूसरों को दूसरे रत्न मिले हैं, तो वे सोचते हैं कि उन रत्नों को उनके हीरे में जड़ा जाना चाहिए। फिर भी कुछ लोग गोल माणिक या चौकोर अंबर पाते हैं। प्रत्येक समूह यह मानता है कि खजाना वही है जो उसने पाया है और अन्य रत्नों को उसमें जोड़ा जाना चाहिए। अगर यह सच होता, तो संतुलन और आनुपातिकता नष्ट हो जाती और समूह दूसरों द्वारा पाई गई चीज़ों पर गलत या अस्वीकार्य टिप्पणियाँ करते (या यहाँ तक कि इनकार भी करते)। जो कोई भी सुन्ना के मानदंडों का उपयोग करके इल्लुमिनिस्ट दार्शनिकों और आध्यात्मिक गुरुओं के कार्यों की उनके विशेष निष्कर्षों और टिप्पणियों के आधार पर जाँच करता है, वह मुझसे सहमत होगा।

कुरान भी एक गोताखोर है - लेकिन एक ऐसा गोताखोर जिसकी आँखें खुली हैं, जो पूरे खजाने को देखता है और उसका वर्णन ठीक उसी तरह करता है जैसा वह है, बिना किसी अतिशयोक्ति के, किसी चीज़ की उपेक्षा किए, या उसके भागों के बीच संतुलन और अनुपात को नष्ट किए। उदाहरण के लिए, इसमें वह सब कुछ शामिल है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की महानता का वर्णन करने के लिए आवश्यक है, जैसे:

> क़यामत के दिन सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा। (39:67)
>
> उस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे पुस्तकों को लपेटा जाता है। (21:104)
>
> वह तुम्हें गर्भ में अपनी इच्छानुसार रचता है। (3:6)
>
> कोई भी चलता-फिरता प्राणी ऐसा नहीं है जिसे उसने माथे से न पकड़ा हो। (11:56)
>
> उसी ने आकाशों और धरती को पैदा किया। (6:73)
>
> वही तुम्हें पैदा करता है और जो कुछ तुम करते हो उसे भी पैदा करता है। (38:96)
>
> वह पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है। (30:50)
>
> तुम्हारे रब ने मधुमक्खी की ओर प्रकाशना की है। (16:68)
>
> सूर्य, चन्द्रमा और तारे सब उसके आदेश के अधीन हैं। (7:54)
>
> क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर पंख फैलाए हुए पंक्तिबद्ध उड़ते और उतरते हुए नहीं देखा? उन्हें तो केवल दयावान ही संभालता है। वह हर चीज़ को देखने वाला है। (67:19)

वह आकाश के पृष्ठ पर सितारों और सूर्यों को अंकित करता है, जैसे मधुमक्खी के पंख पर उसकी कोशिकाओं और कणों को अंकित किया जाता है।

उसका सिंहासन आकाश और पृथ्वी को घेरे हुए है। (2:255)

तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। (57:4)

वही प्रथम है, अन्तिम है, प्रत्यक्ष है, अन्तर्यामी है, और हर चीज़ को जाननेवाला है। (57:3)

(विचलित) संप्रदाय इसलिए प्रकट हुए क्योंकि उनके नेता, जो अस्तित्व के आंतरिक आयाम में "प्रवेश करते" थे, अपने निष्कर्षों पर भरोसा करते हुए आधे रास्ते से ही वापस लौट आए।
उन्होंने कुछ पाया और बहुत कुछ खोया।

ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन ने सात आसमानों का ज़िक्र किया है। दुनिया के आसमान का ज़िक्र हमने दुनिया के आसमान को सजाया है (41:12) और दुनिया को आख़िरत के विपरीत बताया है, यह इस बात की ओर इशारा करता है कि बाकी छह आसमान आख़िरत की दुनियाओं से जुड़े हुए हैं, क़ब्र की बीच की दुनिया से लेकर जन्नत तक। जिस आसमान को हम उसके सितारों के साथ देखते हैं, वह दुनिया का आसमान है। हालाँकि, अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि तुम "अस्तित्वहीनता" से पैदा हुए हो। फिर तुम्हारे पैदा करने वाले ने तुम पर एहसान किया कि तुमको अस्तित्व के सबसे निचले स्तर से उठाकर एक मुसलमान इंसान के स्तर पर पहुंचा दिया। जो कुछ भी तुमने पाया और जो कुछ भी तुम्हारे पहले कदम से लेकर तुम्हारी मौजूदा हालत के बीच हुआ, वह सब तुम्हारे ऊपर अल्लाह का एहसान है। हर एहसान से एक फल और एक रंग जुड़ा है। तुम एक हार या गुच्छे की तरह हो जिस पर एहसान के "मोती" या "दाने" पिरोए गए हैं, जो कि सर्वशक्तिमान के एहसानों का एक सूचकांक है। अस्तित्व के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है; गैर-अस्तित्व के लिए नहीं। तुमसे पूछा जाएगा कि कण से मृत्यु तक के स्तर से एक पूर्ण, मुकम्मल अस्तित्व प्राप्त करते हुए तुमने इतने सारे एहसान कैसे हासिल किए, तुम उनके कैसे हकदार थे, और क्या तुमने उनके लिए [भगवान] का शुक्रिया अदा किया। कोई पत्थर से नहीं पूछता कि वह पेड़ क्यों नहीं बना, या पेड़ से नहीं पूछता कि वह इंसान क्यों नहीं बना।

हे फ़रमाया, हे अभागे, अहंकारी प्राणी! तू जीवों की शृंखला के बीच में एक बिन्दु है। तुझे अनंत उपकार मिले हैं, और तू उनमें से प्रत्येक के लिए धन्यवाद देने का ज़िम्मेदार है। जहाँ तक तुमसे ऊपर वालों पर किए गए उपकार का सवाल है, वह तुम्हारे लिए नहीं है। जो तुम प्राप्त नहीं कर सकते, उसके बारे में तुमसे कोई प्रश्न नहीं करेगा, जैसे कि कण को यह कहते हुए आहें भरने का कोई अधिकार नहीं है कि: "हाय! मैं सूरज क्यों नहीं बना?" या मधुमक्खी को अपने निर्माता से यह शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है कि: "काश, तूने मुझे फल देने वाले खजूर के रूप में बनाया होता।"

हे अहंकार, जान लो कि हर चीज़ को उसका हक देने से इनकार करना और उस पर सिर्फ़ उतना ही बोझ डालना जो वह उठा सकती है, यही एक कारण है कि तुम नष्ट हो जाते हो और तुम विनाश, भटकाव और अपमान की ओर ले जाते हो। तुम एक सैनिक पर सेना की ज़रूरतों का बोझ डालते हो। तुम सूरज को, उसकी सारी भव्यता और ग्रहों के साथ, उसकी छवि में, एक बूंद की आँख में या एक फूल के चेहरे पर देखना चाहते हो। सच में, एक बूंद या एक फूल तुम्हारे लिए सूरज का वर्णन करता है [प्रत्येक अपनी प्रतिबिंब की क्षमता के अनुसार], लेकिन उनमें उसके गुण नहीं होते।

ऐ दोस्त, जान लो कि सारी चीज़ों की मिल्कियत और हुकूमत उसी की है। तुम्हारा शरीर भी उसी का है, जो उसने तुम्हें सौंपा है। इसकी चिंता करने से कोई फ़ायदा नहीं है और जो चीज़ स्थायी नहीं है, उससे कोई फ़ायदा नहीं है।

जो आप नहीं कर सकते उसे करने की कोशिश करने से बचें। आपकी किस्मत में मरना लिखा है, और जीवन में परिणत होने वाली मृत्यु, जीवन में परिणत होने वाली मृत्यु से बेहतर है।

हे मित्र, जान लो कि दर्पण में प्रतिबिम्बित किसी वस्तु की छवि भले ही उस वस्तु के समान न हो, लेकिन वह उससे भिन्न भी नहीं है। छवि एक साथ वास्तविक वस्तु के समान और उससे भिन्न दोनों होती है। चूँकि छवि प्रतिबिम्बित "अर्थ" का रूप है, इसलिए वह वस्तु के समान होती है।

जो चीज़ के बारे में सच है, वही छवि के बारे में भी सच है। हालाँकि, चूँकि छवि में केवल दर्पण में प्रतिबिंबित वस्तु का रूप होता है, इसलिए यह वस्तु से भिन्न है। यह देखते हुए, हालाँकि यह वस्तु के समान नहीं है, यह वस्तु से भिन्न कुछ नहीं है। इसी तरह, मन के दर्पण में जो प्रतिबिंबित होता है, चूँकि यह अर्थ का रूप है, इसलिए यह ज्ञात चीज़ है। लेकिन चूँकि यह प्रतिबिंबित वस्तु का विवरण है, इसलिए यह ज्ञान है।

हे मित्र, जान लो कि अनेक संसार अस्तित्व में हैं, जिनमें से एक दूसरे को रोके बिना है। यदि तुम एक घनघोर अंधेरी रात में कांच की दीवारों वाले तथा बिजली के लैंप से प्रकाशित कमरे में प्रवेश करो, तो सबसे पहले तुम दीवारों में अनेक प्रकाशित स्थान देखोगे, तथा शहर स्वयं प्रतिबिंबित तथा प्रकाशित होता हुआ देखोगे। तुम इन प्रतिबिंबित छवियों को बदल सकते हो या उनमें फेरबदल कर सकते हो। तुम यह भी देखोगे कि दीपक प्रतिबिंबित लैंपों में सबसे दूर के लैंप के सबसे निकट है, क्योंकि यह सभी प्रतिबिंबित लैंपों का मूल है। इस प्रकार इस कण आकार के अस्तित्व का एक भाग प्रतिबिंबित अस्तित्व की पूरी दुनिया को समाहित कर सकता है।

ये सभी गुण कई अन्य चीज़ों के लिए भी सत्य हैं, यहाँ तक कि अनिवार्य अस्तित्व और आकस्मिकताओं की दुनिया के लिए भी, जो उस एक की रोशनी की छाया हैं जिसका अस्तित्व बिल्कुल ज़रूरी है। हालाँकि आकस्मिकताओं की दुनिया का अस्तित्व अपने आप में भ्रामक है, लेकिन सर्वशक्तिमान की आज्ञा से इसमें स्थिरता है और अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की रचना द्वारा इसे देखा और महसूस किया जाता है।

हे मित्र, जान लो कि अस्तित्व के इस क्षेत्र में एक ऐसा व्यक्ति अवश्य है जिसने इसे बनाया है और इसका स्वामी है। इसके अतिरिक्त, स्वामी को स्वयं को मानवता के समक्ष प्रकट करना चाहिए, जो इस क्षेत्र की सुंदरता को समझ सके [और समझ सके कि यह] स्वामी की पूर्णता की गवाही दे रहा है। मानवता, जिसे पृथ्वी (उसका पालना) पर शासक बनाया गया है, जिसे समतल किया गया और मानव निवास के लिए तैयार किया गया, पृथ्वी और इसकी छत (स्वर्ग) को नियंत्रित करती है। इसके अतिरिक्त, मानवीय कमज़ोरी और छोटेपन के बावजूद, जैसा कि हमारे विचित्र और अद्भुत मानवीय स्वभाव से प्रमाणित होता है, हम प्राणियों में सबसे महान हैं। इसके अतिरिक्त, कारणों में से [जिसका उपयोग ईश्वर अपने कार्यों और स्वतंत्र निपटान को छिपाने के लिए करता है], मानवता सबसे व्यापक और प्रभावशाली है जब चुनाव और स्वतंत्र निर्णय की बात आती है। इसलिए, स्वामी उस व्यक्ति [पैगंबर मुहम्मद] को भेजता है जो स्वामी को उसके क्षेत्र के उन निवासियों से परिचित कराएगा जो उसके बारे में नहीं जानते हैं, और उन्हें बताएगा कि उसे क्या पसंद है और वह उनसे क्या चाहता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि तुम्हारी सारी भावनाएँ और क्षमताएँ, यहाँ तक कि अनुमान और कल्पना की भी, अंततः सत्य पर सहमत होने और उसमें शरण लेने के लिए बाध्य होती हैं। झूठ को उनमें कोई जगह नहीं मिल सकती। वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि ब्रह्मांड उससे अलग नहीं हो सकता जैसा कि कुरान ने उसका वर्णन किया है।

हे मित्र, जान लो कि प्रकाश, ऊष्मा, वायु, विद्युत और गुरुत्वाकर्षण की दुनिया और ईथर, विचार या अमूर्त रूपों और कब्र की मध्यवर्ती दुनिया के बीच कोई टकराव और प्रतिकर्षण नहीं है। वे जहाँ कहीं भी तुम हो, तुम्हारे साथ मौजूद हैं, बिना एक दूसरे को रोके या मिलाए। इसी तरह, हालांकि इस संकीर्ण दुनिया की तुलना में बहुत अधिक विस्तृत या बड़ा है, कई अदृश्य दुनियाएँ एक साथ मौजूद हो सकती हैं। इसके अलावा, हवा और पानी हमें यात्रा करने, [इस पर या इसके माध्यम से] जाने से नहीं रोकते हैं, जैसे कि कांच प्रकाश को अपने से गुजरने से नहीं रोकता है, और एक ठोस वस्तु एक्स-रे, बुद्धि के प्रकाश और एक देवदूत की आत्मा के प्रवेश में बाधा नहीं डालती है। लोहा गर्मी के प्रसार और बिजली के चालन को रोक नहीं सकता है।

गुरुत्वाकर्षण के प्रवेश, आत्मा की गति और बुद्धि के प्रकाश को कोई नहीं रोक सकता। इसी तरह, यह ठोस, भौतिक दुनिया आत्माओं को घूमने से, जिन्न को इधर-उधर घूमने से, शैतान को घुसपैठ करने और घुसने से और स्वर्गदूतों को यात्रा करने से नहीं रोकती या रोकती नहीं है।

हे मित्र, जान लो कि प्रकाश और प्रकाश से बनी चीजें आँख, दीपक और सूर्य की तरह हैं। चाहे वे एक हों या अनेक, भाग हों या पूरे, उनके लिए यह समान है [उनके व्यक्तित्वों से घिरा होना]। सूर्य को देखो, और देखो कि कैसे ग्रह, महासागर, बुलबुले, बूँदें, ओस की बूँदें, बारिश की बूँदें या कांच एक साथ और बड़ी आसानी से इसकी छवियों को धारण करते हैं और प्रतिबिंबित करते हैं। अनन्त सूर्य, ज्योतियों के प्रकाश द्वारा ब्रह्मांड की पुस्तक का निपटान,

समान। वह इसके सभी अध्याय, खंड, पैराग्राफ, पंक्तियाँ, वाक्य, शब्द और अक्षर एक साथ और पूरी सहजता से लिखता है। वह घोषणा करता है: तुम्हारा सृजन और पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (30:28)।

हे मित्र , जान लो कि जो व्यक्ति वस्तुओं के सबसे छोटे घटक कणों की गतियों पर विचार करता है और यह देखता है कि वे जीवन में अपने उद्देश्य को कैसे पूरा करते हैं, उसे यकीन हो जाता है कि कोई है जो उन्हें आदेश देता है: "रुक जाओ और स्थिर हो जाओ!" यह ढलाई के साँचे की तरह है जो पिघलते हुए सोने को दृढ़ तरीके से आदेश देता है: "मत बहो! एक खास उद्देश्य के लिए बनाए गए साँचे की सीमाओं के भीतर स्थिर और स्थिर रहो!" जो चीज़ों के सबसे छोटे घटक कणों को आदेश देता है वह है व्यापक ज्ञान जो खुद को नियति के रूप में प्रकट करता है - नियति, निर्धारण और आदेश देने वाली शक्ति। नियति एक निश्चित माप या राशि बन जाती है, और माप एक साँचा बन जाता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि जिस तरह कुरान की आयतें एक दूसरे की व्याख्या करती हैं, उसी तरह ब्रह्मांड की किताब के हिस्से भी एक दूसरे की व्याख्या करते हैं। जिस तरह भौतिक दुनिया को वास्तव में सूरज की ज़रूरत है जिससे सर्वशक्तिमान की कृपा की रोशनी उस पर फैलती है, उसी तरह आध्यात्मिक दुनिया को भी पैगंबरी के सूरज की ज़रूरत है ताकि सर्वशक्तिमान की दया की रोशनी उस पर फैल सके। अहमद-मुहम्मद- की पैगंबरी दोपहर के सूरज की तरह स्पष्ट, स्पष्ट और निश्चित है [एक स्पष्ट गर्मी के दिन]। क्या दिन के समय को किसी सबूत की ज़रूरत है?

हे मित्र, जान लो कि किसी वस्तु के जीवन के उद्देश्य केवल उसके जीवन, लाभ और पूर्णता से संबंधित नहीं होते। वे केवल एक मामले में उस वस्तु से संबंधित होते हैं, बल्कि अनंत मामलों में जीवनदाता से संबंधित होते हैं। वस्तु के अंतर्निहित उद्देश्य की प्राप्ति में लंबा समय लगता है, जबकि जीवनदाता से संबंधित उद्देश्य तुरंत ही साकार हो जाते हैं। उनके सबसे सुंदर नामों के प्रकटीकरण को प्रतिबिंबित करके, एक जीवित वस्तु अपने निर्माता की पूर्णता, अनुग्रह और महिमा के सभी गुणों के साथ उनकी स्तुति करने के अपने कार्य को तुरंत पूरा करती है।

हे मित्र, जान लो कि प्रत्येक व्यक्ति अन्य प्राणियों की प्रजाति की तरह है, क्योंकि प्रत्येक का एक अतीत और एक भविष्य होता है। [चूँकि सभी मानव कोशिकाएँ हर 6 महीने में नवीनीकृत होती हैं,] हर व्यक्ति के दो अलग-अलग रूप हर साल विदा होते हैं, लेकिन केवल उस व्यक्ति में अपने सभी दर्द, पाप, महत्वाकांक्षा, इत्यादि जमा करने के बाद। ऐसा लगता है जैसे मनुष्य सर्व-समावेशी व्यक्ति हैं।

साथ ही, उनकी बौद्धिक क्षमता और व्यापक विचार, भावनाएँ और संवेदनाएँ प्रत्येक व्यक्ति को एक प्रजाति की तरह बनाती हैं। एक व्यक्ति और एक प्रजाति के रूप में, वे ईश्वर के आदेशों [जिसे हम वाइसरेंसी कहते हैं] के अनुसार दुनिया को बेहतर बनाने और उसके चारों ओर धुरी होने के लिए जिम्मेदार हैं।

जिसके द्वारा उनकी विशेष दुनिया और पूरी दुनिया घूमती है।
सृष्टि के सभी भागों के साथ-साथ कई पौधों और जीवों के निपटान से संबंधित चिंता
पशु प्रजातियों और तत्वों की विविधता के कारण प्रत्येक व्यक्ति एक प्रजाति जैसा होता है।

इसके अलावा, स्वर्ग और पृथ्वी के सभी निवासियों के लिए एक आस्तिक की प्रार्थना
पृथ्वी से पता चलता है कि वह विश्वास के माध्यम से एक दुनिया या उसके केंद्र की तरह बन जाता है।
इस बात पर विचार करें कि हर वर्ष जानवरों और पौधों की प्रजातियों में क्या होता है
मृत्यु, पुनर्जीवन और नवीनीकरण का। ईश्वर की दया के निशान और निशानों को देखिए
हर साल फलों के नवीकरण या भर्ती के साथ उनके लगभग प्रकट होने से
समान उत्तराधिकारियों, तथा अनेक कीट और कृमि प्रजातियों के पुनरुत्थान पर
बिल्कुल सहजता से। हर व्यक्ति के साथ यही होता है।
सृष्टि के इन "छंदों" में, ब्रह्मांड की पुस्तक दुनिया के बारे में संकेत देती है
मानवता पर समग्र विनाश और मानवता का पुनरुत्थान, एक तथ्य जो
कुरान अपनी आयतों के ज़रिए इस बात की ओर इशारा करता है। मैंने दसवें वचन और उनतीसवें वचन में
पुनरुत्थान के लिए तर्कसंगत तर्कों का उल्लेख किया है।63

ऐ दोस्त, जान लो कि कुरान की हर धुन श्रोताओं के स्तर के अनुसार एक नया दृष्टिकोण और भाव ग्रहण करती है।
गैब्रियल से लेकर मध्यस्थों की मनोदशा को समझें, जो लाए थे
इसे पैगम्बर को, उस व्यक्ति को सुनाओ जिससे तुम इसे सीधे सुनते हो। इसे सुनते समय, इसे ऐसे सुनने की कोशिश करो जैसे कि तुम पैगम्बर को पैगम्बरी के शिखर पर सभी लोगों और अन्य प्राणियों को इसे सुनाते हुए सुन रहे हो। फिर
जब वह पैगंबर को यह पढ़कर सुनाता है तो वह गेब्रियल की तरह व्यवहार करता है।
“सबसे ऊंचे क्षितिज।” अंत में, इसे ऐसे सुनने की कोशिश करें जैसे कि आप इसे कहीं से सुन रहे हों
70,000 पर्दों के पीछे से, जो सदा बोलने वाले परमेश्वर से बात करता है
पैगम्बर “दो धनुष की दूरी पर”।64

हे मित्र, जान लो कि चेतना और ज्ञान का तुम्हारा हिस्सा है
आपके अस्तित्व में आपके हिस्से के अनुपात में, क्योंकि अस्तित्व में कोई बर्बादी नहीं है, कारण प्रभाव के अनुपात में है, और परिणाम के लिए शक्ति है। जब आपका हिस्सा
तुम्हारे अस्तित्व की तुलना उस परमेश्वर से की जाती है जिसने तुम्हें पैदा किया है, यह ऐसा है जैसे
एक बाल की तुलना एक मोटी रस्सी से की जा सकती है, एक रेशे की तुलना कपड़ों से की जा सकती है। जब आपकी चेतना और खुद के बारे में ज्ञान की तुलना आपके निर्माता के ज्ञान और आपकी दृष्टि से की जाती है, तो वे दोपहर में जुगनू की रोशनी की तरह होते हैं। आप अंधेरे में हैं-

---

63 सईद नर्सी, द वर्ड्स, द लाइट, इंक., न्यू जर्सी: 2005.

64 "दो धनुष की लंबाई की दूरी" का उल्लेख कुरान 53: 9 में पैगंबर की इच्छा को व्यक्त करने के लिए किया गया है।
स्वर्गारोहण के दौरान ईश्वर से निकटता। यह विशुद्ध रूप से रूपक है। (ट्र.)

उदासीनता की रात, और प्रकृति या प्रकृतिवाद की रात आपको अपना प्रकाश दिखाती है जैसे कि वह एक भेदने वाला तारा हो।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर के कार्यों में एक अनुपात है, और उसके कार्यों में एक समानता है। उसके नाम एक दूसरे पर प्रतिबिम्बित होते हैं, उसके गुण आपस में मिले हुए हैं, और उसके मूल गुण एक दूसरे के साथ मिश्रित हैं। हालाँकि, प्रत्येक का एक विशेष दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति और संचालन का तरीका है, जबकि अन्य उस पर निर्भर और अधीनस्थ हैं।

किसी के प्रकटीकरण और संचालन के क्षेत्र में, नियम और परिणाम दूसरों को नहीं दिए जाते हैं, न ही दूसरों के छाप और कामों को उससे मांगा जाना चाहिए। इसलिए जब आप निर्जीव वस्तुओं को देखते हैं, तो पहले उसकी शक्ति और भव्यता पर विचार करें, और फिर आप देखेंगे कि अन्य नामों की अभिव्यक्तियाँ इनके अधीन हैं। जब आप जानवरों को देखते हैं, तो पहले उन नामों पर विचार करें जो उन पर सबसे अधिक प्रकट होते हैं। उसने सभी चीजों के लिए एक माप बनाया और स्थापित किया।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर के अलावा कोई भी शक्ति और ताकत नहीं है, जिसका संबंध या सरोकार आपकी सृष्टि के दौरान आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली प्रत्येक अवस्था से है, प्रकृति में तत्वों का एक घटक होने से लेकर एक आस्तिक मनुष्य होने तक। प्रत्येक अवस्था के संबंध में और प्रत्येक इंद्रिय और क्षमता की संतुष्टि के लिए, आपकी अलग-अलग ज़रूरतें और अपेक्षाएँ हैं और आप अलग-अलग पीड़ाएँ झेलते हैं:

ईश्वर के अलावा , अस्तित्व से उत्पन्न करने वाली कोई शक्ति नहीं है , तथा अस्तित्व देने वाली कोई शक्ति नहीं है।

क्षय से बचाने के लिए कोई शक्ति नहीं है और स्थायीत्व देने के लिए कोई शक्ति नहीं है।
नेन्स, भगवान के साथ बचाओ।

ईश्वर के अलावा , हानि पहुंचाने वाली कोई शक्ति नहीं है, तथा लाभ पहुंचाने वाली कोई शक्ति नहीं है।

ईश्वर के अलावा किसी के पास दुर्भाग्य से बचाने के लिए कोई शक्ति नहीं है, तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कोई शक्ति नहीं है।

परमेश्वर के अलावा, किसी के पास पाप का प्रतिरोध करने के लिए कोई शक्ति नहीं है , तथा किसी के पास परमेश्वर की आराधना और आज्ञाकारिता जारी रखने के लिए कोई शक्ति नहीं है।

किसी को दर्द और पीड़ा से बचाने के लिए कोई ताकत नहीं है और न ही कोई
ईश्वर के बिना, वरदान देने की शक्ति ।

ईश्वर के अलावा किसी के पास बुराई से बचाने के लिए कोई शक्ति नहीं है, तथा कृपा अर्जित करने और अच्छाई करने के लिए कोई शक्ति नहीं है।

किसी के पास दर्द सहने की ताकत नहीं है और न ही किसी को दर्द सहने की ताकत है।
किसी को अपनी महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने में सक्षम बनाना, ईश्वर के साथ रहना।

अंधकार का पर्दा हटाने के लिए कोई ताकत नहीं है और न ही अंधकार को दूर करने की कोई ताकत है।
प्रकाशमान ज्योतियाँ भेजो, परमेश्वर, जो सर्वोच्च है, महान है, को बचाओ।

हे मित्र, जान लो कि जो कोई ईश्वर पर भरोसा करता है और उस पर निर्भर रहता है, वह सच्चा है। उसके लिए पर्याप्त है [बुराई से बचाने और सभी अच्छे प्राप्त करने के लिए।]

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि वह हमारा स्वामी है और सभी चीज़ों का स्वामी है। इसलिए, अगर हम खुद को उसके अधीन कर दें, तो ऐसा लगेगा जैसे सब कुछ हमारे अधिकार में है।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि वह पूर्णतया परिपूर्ण है, और परिपूर्णता उसे प्रिय है। उस परिपूर्णता के लिए बलिदान दिया जाना उचित है।

ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि वह सर्व-प्रतापी और सर्व-सुन्दर है और पूर्ण पूर्णता से युक्त है।
सौन्दर्य उसे प्रिय है और उसके सौन्दर्य के प्रकटीकरण से उत्पन्न नवीकरण से उत्पन्न उत्साह और आनन्द के लिए, हम मुस्कुराते हुए मरते हैं और आनन्दित होकर पुनर्जीवित होते हैं।

ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जो सभी चीजों को अस्तित्व देता है। उसके अस्तित्व की परम आवश्यकता के बारे में हमारा ज्ञान, हर उस चीज को जो अस्तित्व में है (ईश्वर को छोड़कर) हमारे अधीन कर देता है और हमें शाश्वत अस्तित्व प्रदान करता है। उसके आवश्यक अस्तित्व के बारे में हमारी अज्ञानता या इनकार हमें अस्तित्वहीनता के अंधकार से घेर लेता है।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि वह शाश्वत और शाश्वत है, समय और स्थान से परे है। उसके "चेहरे" को छोड़कर सभी चीजें नाश हो रही हैं (28:88)।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि संसार क्षणभंगुर है और जीवन क्षणभंगुर है।

भगवान हमारे लिए पर्याप्त हैं और वे कितने अच्छे संरक्षक हैं, क्योंकि उनके बिना, दुनिया में सभी सुख दुख में बदल जाते हैं। उनकी ओर मुड़ने और उनकी दया से जुड़ने से, व्यक्ति नश्वर होने के दर्द से बच जाता है, और क्षणभंगुर सुख स्थायी हो जाते हैं।

ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि उसके द्वारा ही हमें अस्तित्व का प्रकाश प्राप्त होता है, जबकि उसके बिना हम अस्तित्वहीनता के अंधकार में गिर जाते हैं।

ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है और वह कितना अच्छा संरक्षक है, क्योंकि अगर हम उसे पहचानते हैं और अपनी ज़रूरतें और शिकायतें उसके पास भेजते हैं, तो वह उन्हें संतुष्ट करता है। अगर हम कारणों की ओर मुड़ते हैं और अपनी ज़रूरतें और शिकायतें उसके पास भेजते हैं - हालाँकि कारण अंधे और बहरे हैं, और हमें देख या सुन नहीं सकते हैं - तो हम भ्रमित और खोए हुए हैं। हम उस व्यक्ति की तरह हैं, जिसे अपनी शिकायतें सीधे राजा के पास भेजने की अनुमति है, जो उनका तुरंत जवाब दे सकता है, इसके बजाय देश की पूरी आबादी से, एक-एक करके, मदद माँगता है।

हे मित्र, जान लो कि कुरान की चमत्कारिक सूक्ष्मताओं और प्रमाणों में से यह कि यह सृष्टि के लिए एक व्यापक दया है, निम्नलिखित बातें हैं: जिस प्रकार हममें से प्रत्येक की इस दुनिया के भीतर अपनी दुनिया है, उसी प्रकार हम भी इस दुनिया में अपनी दुनिया रखते हैं।

हमारे पास एक कुरान भी है जो हमारे व्यक्तिगत स्वभाव को संबोधित करता है, हमें शिक्षित करता है, हमारी [आध्यात्मिक] बीमारियों को ठीक करता है, और हमारी बौद्धिक जिज्ञासाओं का उत्तर देता है।

कुरान के मार्गदर्शन के गुण निम्नलिखित हैं:

• इसके बीच एकदम सही सामंजस्य, स्थिरता और संबंध है
छंद, जो प्रत्येक व्यक्ति को मार्गदर्शन के लिए विशिष्ट छंदों का चयन करने में सक्षम बनाता है
और व्यक्तिगत आध्यात्मिक बीमारियों का इलाज करना। यही वह काम है जो विभिन्न स्कूलों से
संबंधित विद्वान और आध्यात्मिक मार्गदर्शक करते हैं। हालाँकि कुरान
भागों में और विभिन्न अवसरों पर प्रकट हुई, इसकी आयतें व्यवस्थित हैं,
एक माला के मोतियों की तरह, पूर्ण सामंजस्य और सुसंगति में।
श्लोकों और अध्यायों में विभाजन से मतभेद और फूट नहीं पड़ती,
और पाठकों को इसके मुख्य उद्देश्यों से विचलित नहीं करता।
अन्य छंदों या छंदों के समूहों के बीच कोई व्यवधान नहीं होता। इसके अधिकांश छंद एक दूसरे के साथ सूक्ष्म रूप से जुड़े हुए हैं ताकि उनका एक साथ उल्लेख किया जा सके या उन्हें एक साथ इकट्ठा करके, उदाहरण के लिए, प्रार्थनाओं का संकलन बनाया जा सके।

• सूरत अल-इखलास की आयतें एक दूसरे की पुष्टि करती हैं, क्योंकि वे दोनों
एक दूसरे के लिए तर्क और उनसे निकाले जाने वाले निष्कर्ष
तर्क.६५ इसी तरह, इसकी आयतों के आपसी संबंध और व्यापक अर्थ के कारण, एकल कुरान के भीतर असंख्य कुरान हैं
कुरान, और इसके प्रत्येक सत्य के इर्द-गिर्द एक पुस्तक बनाई गई है।

> हे ईश्वर, कुरान के अवतरणकर्ता, कुरान के लिए,
> कुरान मेरे जीवन में मेरा घनिष्ठ मित्र रहा है और मेरे अनुसरण में
> मृत्यु, और मेरे हृदय और मेरी कब्र में एक प्रकाश। कोई ईश्वर नहीं है सिवाय
> अल्लाह, मुहम्मद उसके रसूल हैं।

परिशिष्ट का एक परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

दयालु ईश्वर की स्तुति हो, जो पवित्रता के महानतम फलों में से एक है।
जिसकी रहमत का पेड़ हमारा मालिक मुहम्मद और जन्नत है, जो इस दुनिया और आख़िरत दोनों तक लटके हुए हैं। वह सर्वशक्तिमान है। ये सभी चीज़ें

---

[65] सूरत अल-इखलास: "कहो: "वह ईश्वर है, (वह) एक है। ईश्वर सभी का सदा-प्रार्थना वाला है। वह न तो वह जन्मा है, न ही वह जन्मा था। उसके तुल्य कोई नहीं है।" (112:1-4)
एक दूसरे की पुष्टि करने वाली आयतें और एक दूसरे के लिए तर्क और उन तर्कों से निकाले जाने वाले निष्कर्ष, देखें सैद नूरसी, द वर्ड्स, द लाइट, इंक.,
न्यू जर्सी: 2005.

हमेशा नए-नए दिखने वाले, शानदार जीव और स्वर्गीय वस्तुएँ उसकी प्रभुता के साक्षी हैं। धरती के बगीचे में ये बहुरंगी पौधे और विविध जानवर उसकी कला के चमत्कार और उसकी दिव्यता के प्रमाण हैं। ये चमकीले फूल और, अपने सभी पत्तों, फूलों और फलों के साथ, ये फलदार पेड़ उसकी शक्ति के चमत्कार और उसकी दया के प्रमाण हैं। सभी इस बात की गवाही देते हैं कि वह सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है।

अतीत की घटनाएँ उसकी शक्ति के चमत्कार हैं जो यह संकेत देते हैं कि वह भविष्य में भी ऐसी ही घटनाएँ कर सकता है। जो कुछ भी हुआ है या होगा, वह उसकी शक्ति के आदेश से परे नहीं है। उसके संबंध में, सबसे छोटे कण और सबसे बड़े सूर्य एक समान हैं। वह प्रत्यक्ष सत्य, एक, एकल है। अपनी विभिन्न भाषाओं में, ब्रह्मांड के कण और घटक उसकी परम सुंदरता की ओर संकेत करते हैं और कहते हैं:

यद्यपि हम अभिव्यक्ति में भिन्न हैं, किन्तु आपकी सुन्दरता एक ही है; जो कुछ भी [ब्रह्माण्ड में]
विद्यमान है, वह उस सुन्दरता की ओर संकेत करता है।

अपने सभी अध्यायों, खंडों, अनुच्छेदों, वाक्यों, शब्दों और अक्षरों के साथ, ब्रह्मांड की पुस्तक उसके परम आवश्यक अस्तित्व और एकता के संकेतों को पढ़ती है, और इसकी पंक्तियाँ घोषणा करती हैं:

ब्रह्माण्ड की रेखाओं पर विचार करो, क्योंकि वे
तुम्हारे लिए सर्वोच्च निवास से संदेश हैं।
हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके सभी परिवार और साथियों पर शांति और
आशीर्वाद हो।

हे विद्रोही ने कहा, जो तुम्हारे लिए नहीं है उसके बजाय अपने आप को देखो।
तुम क्या हो? तुम्हारा मूल्य क्या है? तुम किस पर निर्भर हो? तुम नपुंसकता और अभाव की प्रतिमूर्ति हो, क्योंकि तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह तुम्हें ईश्वर ने दिया है। और फिर भी तुम सोते हो और खुद को जागता हुआ मानते हो।

आपका शरीर नपुंसक है, और आपकी आवश्यकता ही उसकी आत्मा है जो उसे गतिशील होने के लिए प्रेरित करती है।
आपके पास जो कुछ भी है, उसके साथ आप ईश्वर की कृपा के प्रतीक हैं। आपका जीवन नींद में बीतता है। काश! मैं एक बूँद में डूब गया हूँ जो मुझे निगलने वाला सागर बन गया है। मैं एक ऐसे पल में खो गया हूँ जो मेरे लिए अनंत काल जैसा बन गया है।
मैं कल्पना करता हूँ कि जीवन की यह किरण एक चमकता हुआ सूरज है जो कभी अस्त नहीं होगा।

हे अभागे ने कहा, तुम्हारी पूंजी केवल 60 डॉलर है, जिसमें से तुमने अपनी सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 45 डॉलर पहले ही खर्च कर दिए हैं।66 तुम अपने "घर" को भूल गए हो और उसकी उपेक्षा की है, और तुम्हारी संपत्ति तुम्हारे लिए चुकाने के लिए एक ऋण बन गई है।

---

66 लेखक ने किसी व्यक्ति के सामान्य जीवनकाल को दर्शाने के लिए $60 का प्रयोग किया है, तथा इस पुस्तक को लिखते समय अपनी उम्र को दर्शाने के लिए $45 का प्रयोग किया है। (अनुवाद)

और आग जलाओ। बाकी 15 डॉलर के लिए, यह संदिग्ध है कि क्या आप इसका एक हिस्सा या कुछ भी खर्च कर पाएंगे। आप जो भी खर्च करते हैं, उसे अपने स्थायी घर पर खर्च करें। कम से कम इसका एक तिहाई हिस्सा आपके लिए रोशनी बन जाए। आपकी अज्ञानता और नुकसान बहुत बड़ा है, क्योंकि आपने अपनी अधिकांश पूंजी इस गुज़रते जीवन पर खर्च कर दी है, और इसलिए आपके शाश्वत निवास के लिए जो कुछ बचा है वह महत्वहीन है। आप एक लापरवाह यात्री हैं, क्योंकि आप पहले ही अपने घर और शहर से निकल चुके हैं और इस क्षणभंगुर दुनिया से बाहर निकलने वाले हैं।

हे मित्र, जान लो कि जो लोग कहते हैं: "वस्तुएँ अपने आप बनती हैं,"
"कारणों ने इसे लाया है" या "प्रकृति को इसकी आवश्यकता है" बहुत भ्रम पैदा करते हैं, क्योंकि ऐसे कथन झूठे हैं। आप मौजूद हैं। इसलिए, पहले कथन के अनुसार, आप अपने स्वयं के प्राणी हैं। दूसरे के अनुसार, [भौतिक] कारणों ने आपको बनाया है। अंतिम कथन के अनुसार, कुछ अचेतन, बहरे और अंधे नियम या शक्तियाँ [प्रकृति के लिए जिम्मेदार] या "प्रकृति" नामक बेजान चीज़ों को आपके अस्तित्व की आवश्यकता थी। लेकिन सच्चाई यह है कि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्राणी हैं।

जहाँ तक पहले कथन का सवाल है, चीज़ें अपने आप नहीं बन सकतीं, क्योंकि आपके शरीर को बनाने वाले प्रत्येक कण या परमाणु के पास आपके पूरे शरीर और पूरी सृष्टि को देखने के लिए एक आँख होनी चाहिए, साथ ही चेतना [जीवन और अस्तित्व की सभी आवश्यकताओं के बारे में जागरूक होने के लिए] होनी चाहिए। आपकी संपूर्ण रचना, आपके अंदर कला की पूर्णता, इसकी आवश्यकता है, क्योंकि अस्तित्व के सभी कण एक दूसरे के साथ और सभी सृष्टि के साथ महत्वपूर्ण और पर्याप्त संबंधों में हैं।

किसी पुस्तक को छापने के लिए, प्रिंटिंग हाउस में उतने ही लौह अक्षर या कुंजियाँ होनी चाहिए जितनी उसे छापने के लिए आवश्यक हैं। यदि आपने स्वयं बनाया है, तो आपके पास उतने ही साँचे होने चाहिए जितने आपके अंदर परमाणुओं की संख्या है, क्योंकि वे एक दूसरे के साथ सचेत संबंध और संचार में हैं। आपकी रचना एक समान है, जिसका अर्थ है कि सभी भाग एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध में हैं। इसलिए, मेहराब या गुंबद बनाने वाले पत्थरों की तरह, आपके सभी परमाणु या निर्माण खंड एक दूसरे पर हावी होने चाहिए और एक दूसरे पर हावी होने चाहिए। उन्हें उस एक के नाम और गुणों की अभिव्यक्ति की तरह भी होना चाहिए जो पुस्तकों के लिए लपेटे गए स्क्रॉल की तरह आकाश को लपेटता है - एक दूसरे के विपरीत और पूरक दोनों।

कारण अपने आप कुछ भी नहीं बना सकते। उदाहरण के लिए, अगर मेडिकल सामग्री वाली बोतलें शेल्फ से गिरकर फर्श पर मिल जाती हैं, तो क्या मनचाही दवा बनाई जा सकती है? इसी सादृश्य का उपयोग करते हुए, क्या आप संयोग से या यादृच्छिक कारणों से बने हो सकते हैं? असंख्य बहरे, अंधे और अचेतन कारण एक साथ कैसे आ सकते हैं और कुछ ऐसा बना सकते हैं जो हो सकता है

पूर्ण व्यवस्था? एक साथ आने से वे केवल बहरेपन और अंधेपन को बढ़ाते हैं। प्रत्येक मनुष्य कला का एक आदर्श कार्य है [बुद्धिमान, सचेत और
अनंत और अत्यंत जटिल भावनाओं, इंद्रियों और क्षमताओं से सुसज्जित, और अनंत आवश्यकता महसूस करना]। जो बहरा, अंधा और अचेतन है, वह किसी और चीज़ को सुनने, देखने और चेतना कैसे प्रदान कर सकता है?

मान लीजिए कि असंख्य कारण एक साथ मिलकर सबसे व्यवस्थित तरीके से और सटीक मात्रा में आपकी आंख में एक कोशिका बनाते हैं। समान मात्रा में
प्रयास के, तो, ब्रह्मांड के बुनियादी भागों या तत्वों, विशाल स्वर्गीय वस्तुओं सहित, अपने आप को अपनी हथेली में या प्रत्येक हाथ में इकट्ठा करने में सक्षम होना चाहिए।
आपकी कोशिकाओं का। क्यों? क्योंकि अगर आप किसी घर में काम करते हैं, तो इसका मतलब है कि घर में आप हैं। ब्रह्मांड के सभी हिस्से और सामग्री मानवता से संबंधित हैं।
इसलिए यदि कारणों ने आपको बनाया है, तो संपूर्ण ब्रह्मांड आपके शरीर के प्रत्येक भाग के भीतर काम करने में सक्षम होना चाहिए और आपकी एक कोशिका द्वारा समाहित होना चाहिए। यह एक है
सबसे अकल्पनीय कुतर्क.

प्रकृति सृजन नहीं कर सकती क्योंकि यह अस्तित्व में रहने वाली चीज़ है, एक नाम
यह उन लोगों द्वारा दिया गया है जो मामले के वास्तविक तथ्यों को नहीं जानते हैं।
अपने सच्चे अर्थ में, यह एक दिव्य कला है, सर्व-दयालु द्वारा बनाई गई एक पेंटिंग है।

"प्राकृतिक शक्तियां" केवल दयालु भगवान की शक्ति की अभिव्यक्तियाँ हैं,
सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्व-इच्छुक। “संयोग” केवल एक गलत धारणा है जिसे उन लोगों द्वारा आगे रखा गया है जो एकल निर्माता से अनभिज्ञ हैं या उसे अस्वीकार करते हैं।
इस पुस्तक में शामिल मेरे कई ग्रंथों में, मैंने तर्क दिया है कि यह अद्भुत कला [जो प्रकृति कहे जाने वाले सार का गठन करती है] वास्तव में है
सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सभी गुणों से युक्त, की शक्ति का कार्य
पूर्णता की.

क्या कोई प्रतिबंधित, ठोस, निर्जीव वस्तु, जिसका अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है (जिसका अर्थ है कि किसी को उसके अस्तित्व को प्राथमिकता देनी चाहिए और
इसे बनाएँ), ब्रह्मांड के वस्त्र बुने हैं? क्या एक मच्छर इन बेहतरीन ढंग से डिज़ाइन किए गए और सजे हुए वस्त्रों को बुनने में भाग ले सकता था जिसमें
वे शब्द कपड़े पहने हुए हैं? आपके अस्तित्व और उसके लिए एकमात्र स्पष्टीकरण
सृष्टि का सिद्धांत यह है कि जो कुछ भी बनाया गया है वह शाश्वत सृष्टि का एक प्राणी है।
निर्माता, और वे सभी इस तथ्य की गवाही देते हैं। इन गवाहों में से एक है
दृश्यमान, भौतिक ब्रह्मांड, अपने सभी कणों और यौगिकों के साथ, जो 55 भाषाओं में उसकी गवाही देता है (चौथे ग्रंथ में समझाया गया है।)

अन्य गवाह भी हैं: कुरान और अन्य सभी अवतरित पुस्तकें;
ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास रखने वाले संतों और लोगों के लेखन; जो कुछ भी विद्यमान है
और ब्रह्मांड में घटित होता है; सृष्टि का स्वामी और अन्य सभी पैगम्बर,

संत और देवदूत; पैगम्बर मुहम्मद; मानवता और जिन्न उनके सभी
“प्राकृतिक” ज़रूरतें; और ईश्वर - ये सभी इस बात की गवाही देते हैं कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है
(3:18).

हे मित्र, यह जान लो कि वस्तुओं को सृष्टि का श्रेय देना मिथ्या है।
स्वयं, प्रकृति या कारणों को एक फलदार वृक्ष के उदाहरण के माध्यम से समझाया जा सकता है। यदि आप इस वृक्ष को ईश्वर, एक और एकल से जोड़ते हैं, तो आप इसे इसके बीज और अंकुरण, सृजन और विकास के नियमों से जोड़ते हैं जो अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान सत्ता, एक और एकल से निकलते हैं, और जिस पर

वह बीज निर्भर करता है। पेड़ एकल से जारी होने वाले कानूनों पर निर्भर है
सृष्टिकर्ता, क्योंकि जो शासन करता है उसकी एकता से सहजता आती है
इसका अंकुरण, विकास और जीवन। उस एकल निर्माता के लिए यह उतना ही आसान है
उस बीज को एक बड़े नारियल के पेड़ में विकसित करें जो अनगिनत फलों को जन्म दे या एक बहुत बड़ा नारियल का पेड़ हो
छोटा सा, केवल कुछ फलों वाला।

लेकिन यदि आप किसी वृक्ष को स्वयं, कारणों या प्रकृति का भाग मानते हैं, तो उस पर लगे प्रत्येक फल, फूल, पत्ती, शाखा और टहनी को वह सब चाहिए होगा जो पूरा वृक्ष करता है।
क्योंकि प्रत्येक भाग एक पूरे का प्रतीक है। इस प्रकार, पूरे को जो कुछ भी चाहिए
प्रत्येक भाग के लिए आवश्यक है।

इन दो विकल्पों पर विचार करें। पहला विकल्प जो ईश्वर द्वारा किया जाता है
पूर्ण सहजता के साथ, सृजन को आवश्यक और अपरिहार्य बनाता है, जबकि दूसरा इतना अविश्वसनीय रूप से कठिन है कि यह किसी भी चीज़ का निर्माण करना असंभव बना देता है
अकल्पनीय.

संक्षेप में: यदि आप सृजन का श्रेय वस्तुओं को देते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा
कि आपके शरीर की हर कोशिका ब्रह्मांड को समाहित कर सकती है। यदि आप
भौतिक कारणों से सृष्टि के निर्माण के लिए, आपको यह पुष्टि करनी होगी कि प्रत्येक कोशिका एक कमरे की तरह है
जिसमें ब्रह्मांड में सक्रिय सभी कारण शामिल हैं, क्योंकि सभी कोशिकाएं हैं
एक ही है और एक ही संरचना प्रदर्शित करते हैं। यह एकरूपता आपको एकता की ओर ले जाती है
विविधता, ब्रह्मांड में देखी जाने वाली अंतर्संबंधता, और इसलिए
निर्माता की एकता। कुछ एकीकृत, एकरूपता प्रदर्शित करने वाली, और से बनी हुई
एक दूसरे के साथ बुनियादी रिश्ते में अनगिनत परस्पर संबंधित हिस्से हो सकते हैं
एक से अधिक निर्माता द्वारा नहीं बनाया गया है। एक सेल जिसमें
यहां तक कि एक मच्छर के दो पंख भी इतनी सारी सामग्री को समाहित नहीं कर सकते,
क्या इसके कार्य करने के लिए आवश्यक शारीरिक कारण हैं?

बाह्य, भौतिक अस्तित्व वाली कोई चीज़, केवल आदर्श, अभौतिक अस्तित्व वाली चीज़ की तुलना में अधिक स्थापित, स्थिर और निश्चित होती है।
पूर्व के एक छोटे कण में उत्तरार्द्ध का एक पहाड़ समा सकता है।
उदाहरण के लिए, एक पहाड़ का प्रतिबिंब एक छोटे दर्पण में फिट हो सकता है।

यद्यपि इसका अस्तित्व आकस्मिक है, इसका अस्तित्व या अनस्तित्व समान रूप से संभव है।
इसका अस्तित्व में आना उस एक की पसंद का परिणाम था जिसके पास पसंद करने का पूर्ण अधिकार था, जिसके पास एक बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व था जिसके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता था। इसलिए, वह आवश्यक अस्तित्व सभी भौतिक अस्तित्वों की तुलना में अधिक स्थापित, स्थिर और निश्चित है। यह वास्तविक अस्तित्व है, और इसलिए इसे आकस्मिक अस्तित्व द्वारा समाहित नहीं किया जा सकता है।

आकस्मिक वस्तुएँ - जो कुछ भी अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अलावा अन्य अस्तित्व में है - शाश्वत, सर्वव्यापी ज्ञान के दर्पण में प्रतिबिंबित होती हैं, जबकि उनका वास्तविक अस्तित्व उस ज्ञान में उनके अस्तित्व में निहित है [अर्थ के रूप में]। वे अनिवार्य अस्तित्व के प्रकाश की अभिव्यक्ति के माध्यम से भौतिक अस्तित्व में आते हैं, और इस प्रकार अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व को दर्शाते हैं। भौतिक दुनिया में उनका भौतिक अस्तित्व, ज्ञान के सर्वव्यापी क्षेत्र से उनके स्थानांतरण का परिणाम, कभी भी वास्तविक अस्तित्व के समान सार और गुणवत्ता या समान अस्तित्वगत डिग्री का नहीं हो सकता है।

हे मित्र, जान लो कि ठोस, भौतिक और स्थूल चीजें अमूर्त चीजों या प्रकाश की चीजों द्वारा क्रियान्वित और प्रभावित होती हैं। सूर्य के प्रकाश और एक पर्वत को देखो। पहला आकाश से आता है और पृथ्वी पर स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, जबकि दूसरा अपने विशाल आकार के बावजूद कुछ भी नहीं कर सकता और अपने पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं डालता। कोई चीज जितनी सूक्ष्म और प्रकाश से बनी होती है, वह उतनी ही अधिक प्रभावी और सक्रिय होती है; कोई चीज जितनी अधिक भौतिक और ठोस होती है, उस पर क्रिया किए जाने और प्रभावित होने की उतनी ही अधिक संभावना होती है। हम इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कारणों और प्रभावों का निर्माता वह है जो ज्योतियों का प्रकाश है: उसके जैसा कुछ भी नहीं है, वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है (42:11)। दृष्टि उसे नहीं समझती, लेकिन वह सभी दृष्टि को समझता है। वह सर्व-सूक्ष्म, सर्वज्ञ है (6:103)।

हे मित्र, जान लो कि [सृष्टि और ब्रह्मांड में ईश्वर के संकेतों पर] चिंतन करना प्रकाश की तरह है, क्योंकि यह [ईश्वर] के प्रति तुम्हारी जमी हुई लापरवाही और अनभिज्ञता को दूर करता है या पिघला देता है। सावधान और चौकस रहना आग की तरह है, क्योंकि यह [उसके बारे में] तुम्हारे संदेह और संदेह के "सूखे कचरे" को जला देता है। हालाँकि, जब तुम अपने बारे में (और अपनी आंतरिक दुनिया, भावनाओं, भावनाओं, क्षमताओं और विवेक पर) चिंतन करते हो, तो गहराई से चिंतन करो, जैसा कि ईश्वरीय नाम "आंतरिक" चाहता है कि तुम ऐसा करो। कला की पूर्णता उसके विवरण और शाखाओं में देखी जाती है।

जब आप बाहरी दुनिया पर चिंतन करते हैं, तो इसे संक्षिप्त और सतही रूप से करें, क्योंकि आपको केवल उन नींवों को समझने की आवश्यकता है जिन पर यह आधारित है। यही वह है जो "बाहरी" नाम की आवश्यकता है, क्योंकि कला की भव्यता बन जाती है

समग्र रूप से देखने और जांचने पर यह अधिक स्पष्ट और अधिक चमकदार लगता है।
बाहरी दुनिया बहुत विशाल है और इसका कोई किनारा नहीं है। अगर आप इसमें गोता लगाएंगे, तो आप
डूब सकता है.

यदि आप अपनी आंतरिक दुनिया में गहराई तक जाएं लेकिन एक संक्षिप्त और तेज यात्रा करें
बाहरी दुनिया में, आप एकता के करीब पहुँच सकते हैं। अलग-अलग हिस्से संपूर्णता प्राप्त करते हैं,
यौगिक संयुक्त पदार्थ बन जाते हैं, और संयुक्त पदार्थ एकीकृत हो जाते हैं। इससे
एकता एकता के विश्वास की रोशनी जारी करती है। यदि आप केवल एक संक्षिप्त और
अपने भीतर की दुनिया की सतही जांच करते हुए विस्तार से जानें
बाहरी दुनिया में आपकी यात्रा, चीजों की विविधता भ्रम और संदेह पैदा करेगी। यह आपके अहंकार को मजबूत करेगा
और आपके अंदर असावधानी को जन्म देगा,
ऐसे विकास जो आपको प्रकृतिवाद की ओर प्रवृत्त करेंगे और अंततः उससे दूर कर देंगे
चीज़ों की विविधता से और गुमराही से। हे ईश्वर, हमें शामिल न कर
गुमराह लोगों के बीच! आमीन।

ऐ दोस्त! जान लो कि वर्णित है कि जब लोग लालच से आगे बढ़ते हैं,
उनका भाग्य रुक जाता है। जब वे [लालच दिखाना] बंद कर देते हैं, तो उनका भाग्य
यह एक गहन सत्य को स्पष्ट करता है। पेड़ नहीं चलते, और उनका प्रावधान उनके पास आता है। जानवर लालच से
चलते हैं, और उनका प्रावधान उनके पास आता है।
पौधों के तनों पर स्थिर। अपने विविध रंगों और गंधों के साथ, एक पौधा
भूखे जानवरों को अपनी ओर बुलाता है और उन्हें अपनी ओर आने के लिए उकसाता है।

हे मित्र, जान लो कि मनुष्य विचित्र प्राणी है। यदि उन्हें लगता है कि इससे उन्हें थोड़ी सी भी हानि हो सकती है,
तो वे बड़ी-बड़ी अच्छाइयों को भी अनदेखा कर देते हैं।
लेकिन जब बात हज़ारों प्रमाणों से सिद्ध सच्चे मार्गदर्शन की आती है, तो वे
ज़रा सी शंका के कारण उसे त्याग देते हैं और गुमराही को अपना लेते हैं। अगर हम इतने सावधान हैं कि हम ऐसी
चीज़ को छोड़ देते हैं जो हमें थोड़ा-बहुत नुकसान पहुँचा सकती है, तो फिर हम ऐसा क्यों करते हैं?
क्या हम उस चीज़ को अपना लें जो हमें आख़िरत में बहुत नुक़सान पहुँचाएगी?

हे मित्र, जान लो कि मानव आत्मा की अनंत आवश्यकताएं हैं और वह अनंत पीड़ा सहती है। इसमें अनंत सुख
की भूख है और अनंत महत्वाकांक्षाएं पोषित होती हैं। यहां तक कि करुणा भी एक गुमराह आत्मा के लिए अनंत पीड़ा
का कारण बन सकती है [क्योंकि
ईश्वर में अविश्वास तथा उसकी नियति और सच्ची करुणा में अविश्वास।
इसलिए आप यह नहीं पूछ सकते: "क्या मैं इतना मूल्यवान और इतना कीमती हूँ कि भगवान मुझे इतना मूल्यवान समझेंगे?"
इस संसार को नष्ट कर दोगे और फिर इसका पुनर्निर्माण करोगे ताकि इसमें मेरा न्याय कर सको?”

हे भ्रमित, संशयी! यहाँ धोखा मत खाओ।
इस दुनिया में जो कुछ भी तुम पाते हो वह भ्रामक तर्क पर निर्भर करता है। जो लोग संदेह करते हैं
परलोक के अस्तित्व के बारे में जानने वाले, जो नश्वर होने और अनंत विलुप्ति का सामना करने से डरते हैं, वे इस
संभावना में राहत की तलाश कर सकते हैं कि मृत्यु के बाद भी अनंत सुख है।
दूसरी दुनिया। हालाँकि, जब वे धार्मिक कर्तव्यों को करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं, तो वे तलाश करते हैं

इस संभावना में राहत है कि कोई दूसरी दुनिया नहीं है और इस दुनिया में उन्होंने जो कुछ भी किया है उसके लिए उन्हें जवाबदेह नहीं ठहराया जाएगा। ऐसे तरीकों से वे दोनों तरह के दर्द से बचना चाहते हैं। लेकिन जल्द ही समस्या हल हो जाती है और सच्चाई सामने आ जाती है: पहला विकल्प उन्हें तुरंत संचित दर्द में डाल देता है, और दूसरा विकल्प उन्हें नर्क का सामना करने के लिए मजबूर करता है

पीड़ा.

वे यह सोचकर खुद को सांत्वना देने की कोशिश करते हैं: "आने वाली विपत्ति [मृत्यु और उसके बाद की सज़ा] ज़्यादातर लोगों को अपने आगोश में ले लेगी। चूँकि मैं भी बाकी सभी लोगों की तरह ही हो जाऊँगा, तो मुझे इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए?" हालाँकि जब मृत्यु निकट आती है, तो पीड़ितों की संख्या के अनुपात में उनका दर्द बढ़ जाता है। अपने दर्द के अलावा, उन्हें अपने रिश्तेदारों और दोस्तों का दर्द भी महसूस होता है। चूँकि लोग दूसरे लोगों के साथ सहज संबंध महसूस करते हैं, इसलिए दुर्भाग्य की व्यापकता उनके अपने दर्द को बढ़ा देती है।

यह मत समझो कि जो कुछ तुम असावधानी और संदेह में चखते हो वह असली सुख है, क्योंकि वास्तव में उसमें भयंकर और संचित पीड़ा होती है जो तुम पर एक साथ आक्रमण करेगी और नरक की यातनाओं के रूप में प्रकट होगी। यदि तुम चाहते हो कि यह पीड़ा नए सुख में और वह अग्नि प्रकाश में परिवर्तित हो जाए तो अहंकार छोड़ दो और दिन में पाँच बार ईश्वर के सामने नम्रता से सजदा करो। ईश्वर के सामने इतने नम्र बनो कि कुरान की "मेज" पर ईमान की रोशनी और उपहार उतर आएं। उसकी आयतों और "प्राकृतिक" घटनाओं पर विचार करते रहो और नियमित उपासना में संलग्न रहो, ताकि संदेह और असावधानी का पर्दा जल जाए, गुमराही की कड़वाहट से बचने का मीठा स्वाद उभरे और ईश्वर से प्रार्थना करने का सुख उत्पन्न हो।

हे मित्र, जान लो कि सर्वशक्तिमान ईश्वर की सेवा के लिए समर्पण की आवश्यकता होती है। तुम ईश्वर की परीक्षा नहीं ले सकते [कि वह अपना वादा पूरा करेगा या नहीं]। प्रभु को अपने सेवक की परीक्षा लेने का अधिकार है, सेवक को अपने प्रभु की परीक्षा लेने का नहीं।

हे मित्र, जान लो कि दिव्य नामों के क्षेत्र "आंतरिक" और "बाह्य" दोनों ही भीतर हैं और एक दूसरे के सम्मुख हैं। जो लोग सीमित करते हैं,

जो लोग प्रकृति में ही ईश्वर की तलाश करते हैं, वे अंततः कारणों और प्रकृति को रचनात्मकता और रचनात्मक प्रभाव का श्रेय देकर ईश्वर के साथ भागीदार बन जाते हैं। जो लोग केवल पूर्व के प्रकाश में ईश्वर तक पहुँचने की कोशिश करते हैं, वे अंततः विभाजन और मिलन [कुछ मनुष्यों के साथ] का श्रेय ईश्वर को देते हैं।

पारदर्शी चीजों में सूर्य की छवियाँ सूर्य के गुणधर्मों को धारण करती हैं, और इस प्रकार जो व्यक्ति वास्तविक और परावर्तित छवि के बीच अंतर नहीं कर सकता, वह प्रत्येक छवि को सूर्य के रूप में मान सकता है। इसी तरह, जो व्यक्ति वास्तविक और परावर्तित छवि के बीच अंतर नहीं कर सकता, वह प्रत्येक छवि को सूर्य के रूप में ही मान सकता है।

ईश्वर तक केवल दिव्य नाम के प्रकाश में ही पहुंचें "अंतर्मुखी" भ्रमित कर सकता है
स्वयं में, हृदय में, तथा अन्य आंतरिक इन्द्रियों और क्षमताओं में ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ
भगवान के साथ। इससे लोग खुद को अवतार के रूप में देखने लग सकते हैं
भगवान की।

जो लोग अपने आपको "बाह्य" नाम तक सीमित रखते हैं और जो लोग
जो लोग अपने आपको "आंतरिक" नाम तक सीमित रखते हैं, वे उन लोगों के समान हैं जो क्रमशः कुरान की सतही व्याख्या का अनुसरण करते हैं और सुन्नत को अस्वीकार करते हैं,
और जो लोग इस्लाम की केवल गूढ़ व्याख्या का अनुसरण करते हैं। वे भूल जाते हैं
कि इस्लाम मध्यम, सीधा मार्ग है।

ऐ क़ुरआन के अवतरितकर्ता, क़ुरआन के लिए हमें मार्गदर्शन प्रदान कर।
मध्यम, सीधा रास्ता। आमीन। आमीन। आमीन।

समाप्त करने के लिए:

• मानवता सृष्टि के वृक्ष का फल है, और इसलिए इसका सबसे उत्तम और व्यापक हिस्सा है। • इस दुनिया के भीतर हर किसी की एक खास दुनिया है। इसके केंद्र में वह व्यक्ति है जो
इसका "मालिक" है।

• बाहरी दुनिया में अपने अहंकार और प्रकृति के विरुद्ध मेरा संघर्ष।
• नौ बातें जिनसे अहंकार अनभिज्ञ है। • जब भाग्य आप तक दुर्भाग्य
को आने देता है, तो आप एक भेड़ की तरह होते हैं जो अपने जीवन में कभी भी सफल नहीं हो पाती।
सार्वजनिक चरागाह में प्रवेश करने से रोका जाना चाहिए। • आपका दिल
सांसारिक मामलों में व्यस्त रहने के लिए नहीं बनाया गया है। • कुरान हर किसी की बौद्धिक भूख को संतुष्ट कर सकता है। • आपके साथ जो कुछ भी होगा वह भाग्य द्वारा पूर्व निर्धारित है। • यदि
आप इस भौतिक क्षेत्र को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होते, तो आप होते

इतना व्यथित कि आप शायद ही इससे लाभ उठा सकें।
• एक छोटे पारदर्शी कण में सूर्य की छवि होती है, भले ही वह
अपने आकार और प्रकृति के दो कणों को धारण नहीं कर सकता। इसी तरह, ब्रह्मांड में सभी घटक कण और यौगिक अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करते हैं
दिव्य ज्ञान के साथ प्रकाशमान, पूर्ण दिव्य शक्ति
और विल.
• परमेश्वर की महिमा का तात्पर्य सेवक की आकस्मिक प्रकृति और परमेश्वर से दूरी से है
ईश्वर। ईश्वर की स्तुति का तात्पर्य है कि ईश्वर अपनी दया और कृपा से सेवक और अपने प्राणियों के प्रति निकटता रखता है। • ईश्वर अपनी दया और कृपा से वह
संपत्ति खरीदता है जो उसने हमें सौंपी है।
इसे ऊंची कीमत पर खरीदा गया है ताकि इसे स्थायी रूप से संरक्षित किया जा सके।
• पाप, विशेषकर बार-बार किये जाने वाले पापों में अविश्वास के बीज होते हैं।

• क़ुरआन की चमत्कारिकता में लगभग 40 अलग-अलग किरणें हैं। • शाश्वत परमेश्वर उस चीज़ को अपने अंदर नहीं आने देता जिसे ज़रूरी माना जाता है।

पूर्णतया अस्तित्वहीनता.

• कब्र एक दरवाज़ा है। इस तरफ़ दुख और विपत्ति है; दूसरी तरफ़ दया और खुशी है। • आपके पाप और बुराई सिर्फ़ आपको नुकसान पहुँचाती है, भगवान को नहीं। • जो कोई भी भगवान पर भरोसा करता है, उसके लिए भगवान ही काफी है।

• जो कुछ भी हो, उस पर खुश न हों, दुखी न हों, क्रोधित न हों या शिकायत न करें इस क्षणभंगुर संसार में आपको लाभ या हानि होती है।

• यदि आप सर्वशक्तिमान की ओर यह मानकर मुड़ते हैं कि वह ज्ञात और मान्यता प्राप्त है, वह अज्ञात और अपरिचित हो जाएगा। यदि आप उसे स्वीकार करते हुए उसकी ओर मुड़ते हैं कि वह एक है, विद्यमान है किन्तु अज्ञात है, उसके सच्चे ज्ञान की किरणें तुम्हें बता दिया जाएगा.

• यह तथ्य कि आपके पास एक स्वामी है, एक मालिक है, जो सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, असीम गर्व का स्रोत है.

• जैसे प्रकाश में सात रंग होते हैं, वैसे ही दिव्य सुंदर नामों में भी सात रंग होते हैं एक दूसरे का अर्थ है। • एक प्रार्थना। • प्रत्येक आध्यात्मिक स्टेशन के साथ विशिष्ट शर्तें जुड़ी हुई हैं। • कुरान की महानता का एक पहलू और इसका सबसे सच्चा सबूत सच।

• आपका अहंकार आपके विनाश, भटकाव और अपमान का एक कारण हो सकता है। • प्रतिबिंबित छवि उस चीज़ के समान नहीं होती है, लेकिन यह उस चीज़ से मेल नहीं खाती है। उस चीज़ से अलग कुछ। • कई दुनियाएँ अस्तित्व में हैं। एक दूसरे को रोकता नहीं है। • प्रकाश, गर्मी, हवा, आदि की दुनियाओं के बीच कोई टकराव और प्रतिकर्षण नहीं है । बिजली, गुरुत्वाकर्षण और साथ ही ईथर, विचार या अमूर्त रूप, और कब्र की मध्यवर्ती दुनिया।

• जिस तरह कुरान की आयतें एक दूसरे की व्याख्या करती हैं, उसी तरह किताब के हिस्से भी एक दूसरे की व्याख्या करते हैं। ब्रह्मांड एक दूसरे की व्याख्या करता है। • प्रत्येक व्यक्ति अन्य प्राणियों की एक प्रजाति की तरह है। • कुरान का पाठ, इसकी प्रत्येक धुन के लिए, एक नया दृष्टिकोण ग्रहण करता है और दर्शकों के बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर के अनुसार मनोदशा। • आपकी चेतना और ज्ञान में आपका हिस्सा आपके हिस्से के समानुपाती है आपके अस्तित्व में.

• ईश्वर के कार्यों के बीच एक अनुपात है, और उसके कार्यों के बीच एक अनुपात है एक समानता। प्रत्येक नाम और विशेषता के प्रकट होने का एक विशेष तरीका होता है, जबकि अन्य सभी उस पर निर्भर और अधीनस्थ होते हैं।

• कोई भी बल और ताकत ऐसी नहीं है जिसका ईश्वर से कोई संबंध या सरोकार हो।
आपकी रचना के प्रत्येक चरण.

• कुरान की चमत्कारिकता की सूक्ष्मताएँ और यह प्रमाण कि यह सृष्टि के लिए एक व्यापक दया है। • अपने आप को देखें। आप क्या हैं? आपका मूल्य क्या है?

आप किस पर भरोसा करते हैं? • इस तरह के झूठे कथनों का अर्थ: "चीजें अपने आप बनती हैं," "कारणों ने इसे बनाया है," और "प्रकृति को इसकी आवश्यकता है [ऐसा होना]।" • क्यों सृष्टि का श्रेय चीजों को, प्रकृति को या कारणों को देना गलत है। • चिंतन आपकी [ईश्वर] के प्रति उदासीनता और अनभिज्ञता को दूर करता है। जब

जब आप अपने भीतर की दुनिया पर चिंतन करते हैं, तो उसे गहराई से करें। जब आप बाहरी दुनिया पर चिंतन करते हैं, तो उसे संक्षिप्त और सतही रूप से करें।

• जब तुम [लालच के साथ] आगे बढ़ते हो, तो तुम्हारा ईश्वर रुक जाता है। जब तुम [लालच दिखाना] बंद कर देते हो, तो तुम्हारा ईश्वर चलता है। • तुम इस डर से एक

बड़ी अच्छाई को छोड़ देते हो कि यह तुम्हें बहुत छोटे रूप में नुकसान पहुंचा सकती है
तुम भी सच्चे मार्गदर्शन को त्याग देते हो, यद्यपि इसके हजारों प्रमाण हैं
इसकी सच्चाई के लिए, एक मामूली संदेह के कारण।

• दिव्य नामों के क्षेत्र “आंतरिक” और “बाह्य” दोनों हैं
जो लोग अपने आपको बाद वाले तक ही सीमित रखते हैं, वे भी एक दूसरे के सामने खड़े हो जाते हैं।
वास्तव में वे ईश्वर के साझीदार होते हैं, जबकि जो केवल उस तक पहुंचना चाहते हैं
पूर्व के प्रकाश में अंततः विभाजन और मिलन [कुछ मनुष्यों के साथ] का श्रेय ईश्वर को दिया जाता है।

सातवां ग्रंथ

सातवां ग्रंथ

कुरान के बगीचे से एक फूल

हर जीवित प्राणी एक नियमित सैनिक की तरह है जो राजा की ओर से और उसके नाम पर काम करता है। अगर आप खुद को अपना स्वामी समझते हैं तो आप गलत हैं, क्योंकि आप नाश होने के अधीन हैं।

ब्रह्मांड में देखी जाने वाली पूर्ण व्यवस्था और संतुलन दयालु ईश्वर के दो सिद्धांत हैं, और प्रकट पुस्तक और ब्रह्मांड की पुस्तक के दो अध्याय हैं। कुरान इन दो पुस्तकों, दो अध्यायों की अनुक्रमणिका और दो सिद्धांतों का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करता है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारी प्रशंसा ईश्वर की है, वह सर्वज्ञ शासक जिसने इस ब्रह्माण्ड को अपने कार्य करने के तरीके के नियमों से व्यवस्थित और संगठित किया है, और अपने आदेश और नियति के सिद्धांतों के साथ इसे एक निश्चित आकार और रूप दिया है। उसने इसे अपनी इच्छा और बुद्धि के नियमों के साथ बनाया है, इसे अपनी कृपा और दया के मानकों से सजाया है, और अपने नामों और गुणों के प्रकटीकरण से इसे प्रकाशित किया है। वह है

सर्वशक्तिमान, आत्मनिर्भर और सदा-स्थायी।

यह ब्रह्मांड, अपनी सभी बाहरी और आंतरिक विशेषताओं और गुणों, सामग्री, सजावट और सुंदरता के साथ, उनके आदेश और नियति की कलम की रेखाओं से अधिक कुछ नहीं है। यह उनके ज्ञान और बुद्धि के कम्पास की रचनाएँ हैं, उनकी कला और कृपा के "उज्ज्वल हाथ" की सजावट हैं। ब्रह्मांड में उनकी दयालुता और उदारता के फूलों के बगीचे, उनकी प्रचंड दया और परोपकार के फल और उनकी परम सत्ता की अभिव्यक्तियों की चमक शामिल है।

सौंदर्य और पूर्णता। उसकी महिमा का विस्तार हो! उसे अनंत प्रशंसा मिले!

हे वह जिसने अपने नाम की बिजली जैसी चमक से उन सभी अद्भुत प्राणियों को प्रकट किया है। हे वह जिसकी शक्ति के संबंध में सूक्ष्मतम कण और ग्रह एक समान हैं (सृजन और दिशा में)। हे वह जिसने उन सभी सुशोभित लोकों को प्रकट पुस्तक के माप के अनुसार अंकित किया है - जो व्यवस्था और संतुलन का स्रोत है।

हर उस ठहराव और शुरुआत से पहले जिसके द्वारा ब्रह्मांड के सभी कण और यौगिक गति करना शुरू करते हैं, हम आपको विश्वास की गवाही देते हैं: हम गवाही देते हैं कि आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है - आप एक हैं, कोई साझी नहीं। हम गवाही देते हैं कि मुहम्मद आपके सेवक और रसूल हैं, जिन्हें आपने सभी संसारों के लिए दया बनाकर भेजा है।

हे ईश्वर, उस पर, उसके परिवार और साथियों पर कुरान के अक्षरों की संख्या के अनुसार शांति और आशीर्वाद प्रदान करें। आपकी अनुमति से, यह अपने अवतरण के पहले दिन से लेकर पुनरुत्थान के दिन तक प्रत्येक पाठक द्वारा उनके पाठ के दौरान वायु के अणुओं के दर्पणों में आकार लेता है।

O अफ़सोस की बात है! आपकी आजीविका किसी और की पसंद से या स्वतंत्र पसंद के हस्तक्षेप के बिना आप तक पहुँचती है। दूसरा विकल्प ईश्वर के नाम से और उसके लिए आता है। इसे ग्रहण करें और ईश्वर का नाम लेते हुए और सिर्फ़ उसका शुक्रिया अदा करते हुए इसे खाएँ। अगर कोई चीज़ आपके पास अपनी पसंद से आती है, तो उसे तभी ग्रहण करें और खाएँ जब ईश्वर का नाम लिया गया हो। जब आपको खाने के लिए कुछ दिया जाए, तो उसके असली मालिक को याद करें या उस पर विचार करें और अपना ध्यान उसी पर केंद्रित करें - जैसा कि इस आयत में बताया गया है: जिस चीज़ पर ईश्वर का नाम न लिखा हो, उसे न खाएँ (6:121)।

लेकिन अगर वे इसे देते हैं और आपको इसे लेना है, तो इस पर भगवान का नाम लें और उस पर विचार करें जिसने इसे उस व्यक्ति (जो आपको देता है) और अपने ऊपर दिया है। जो दिया जाता है उसमें देने के कार्य पर विचार करें और देने के कार्य में वास्तविक दाता पर विचार करें। इस तरह के विचार का मतलब है धन्यवाद देना। फिर उस व्यक्ति का धन्यवाद करें जिसके माध्यम से वह चीज़ आपके पास पहुँची है, क्योंकि वह उसके माध्यम से आपके पास आई है। लेकिन सावधान रहो, हे मेरे दिल, पहले असली दाता पर विचार मत करो।

संक्षेप में, जो चीज़ किसी और के ज़रिए आपके पास आती है, उस पर दो बार भगवान का नाम लें और जो किसी के ज़रिए आपके पास नहीं आती, उस पर एक बार। साधनों को वास्तविक कारण न समझें। अगर आपको किसी के काम से कुछ मिलता है, तो आप मान लेते हैं कि वह खास काम ही असली वजह है जिसकी वजह से वह चीज़ आपके पास आई। लेकिन ऐसा नज़रिया ग़लत है। अगर आपको लगता है कि कोई चीज़ किसी चीज़, काम या व्यक्ति की अनुपस्थिति के कारण अनुपस्थित है, तो आप उसका अस्तित्व ईश्वर को मानते हैं।

उस चीज़, कार्य या व्यक्ति का अस्तित्व। लेकिन ईश्वर के कार्य करने के तरीके के अनुसार, किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए आवश्यक एक शर्त, भाग या कारण की अनुपस्थिति उस चीज़ की अनुपस्थिति का परिणाम है, क्योंकि इसका अस्तित्व सभी शर्तों, भागों या कारणों के अस्तित्व पर निर्भर करता है। तो, क्या किसी को सिंचाई नहरों के मुख्य वाल्व को खोलने और बंद करने का काम सौंपा जा सकता है जो बगीचे की सिंचाई करते हैं

क्या फूलों का निर्माता यह दावा कर सकता है कि वह उन पौधों का वास्तविक निर्माता और मालिक है?
इससे हमें अपनी अज्ञानता और विस्मृति की सीमा को समझने में मदद मिलती है
वास्तविक निर्माता, मालिक और निर्देशक की, और सहयोगियों की
उसे अनजाने में.

हे मेरे हृदय, सावधान रह कि तू किसी समूह के प्रयास से उत्पन्न किसी कार्य या उत्पाद का श्रेय स्वयं को या समूह के प्रतिनिधि, नेता को न दे।
या मार्गदर्शन करें। ऐसा करना एक गंभीर गलती है जो आपको गलत और गलत महसूस कराएगी
भयानक आत्म-दंभ, अहंकार और अहंवाद। यह संगति के लिए द्वार खोलता है
अनजाने में ही ईश्वर का भागीदार बन जाता है, क्योंकि साधन कर्ता के लिए लिया जाता है,
वह परिणाम जिसकी आप तलाश करते हैं और साधनों की अपील करते हैं, "द्वारपाल" से पूछते हैं
जो “राजा” का है।

हे मेरे हृदय, सावधान ! जब भी आध्यात्मिक तेज का एक निश्चित प्रवाह
और परमानंद किसी के माध्यम से आप तक पहुंचता है, तो यह मत सोचिए कि वह उसका स्वामी है।
स्रोत, क्योंकि वह कुछ और नहीं बल्कि एक दर्पण की तरह है जो उसमें प्रकट होने वाली चीज़ों को दर्शाता है।
हालाँकि, उस व्यक्ति के प्रति आपकी भक्ति
आपको यह कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है कि निर्देशक से आपके दिल में क्या बहता है
दिलों को सबसे पहले आपके आध्यात्मिक मार्गदर्शक द्वारा ग्रहण किया जाता है और फिर सचेत रूप से आपको प्रतिबिंबित किया जाता है। आप उन लोगों की तरह हैं जो कांच के टुकड़े पर ध्यान केंद्रित करते हैं और एकाग्रता की एक निश्चित अवधि के बाद, प्रतीकों की दुनिया में यात्रा करना शुरू करते हैं या
अमूर्त रूप, कुछ चमत्कार देखें, और सोचें कि वे वास्तव में प्रकट होते हैं या
दर्पण में प्रकट होते हैं। ऐसा दृष्टिकोण ग़लत है।

हे [भौतिक या प्राकृतिक] कारणों से सहायता चाहने वाले , जान लो । तुमने गलत स्रोत चुना है और गलत अपील कर रहे हो, ठीक उसी तरह जैसे कोई जो
वजन बढ़ने को अच्छे स्वास्थ्य का संकेत मानते हैं, जबकि वास्तव में ऐसा होना चाहिए
किसी बीमारी के लिए.

कल्पना कीजिए कि आप विभिन्न अद्भुत रत्नों से एक महल बनते हुए देख रहे हैं।
लेकिन कुछ केवल चीन में ही पाए जा सकते हैं, अन्य केवल मोरक्को या यमन में ही पाए जा सकते हैं।
और अभी भी कुछ अन्य केवल साइबेरिया में हैं। क्या आप यह नहीं कहेंगे कि केवल एक ही जो
पूरी दुनिया पर उसका प्रभुत्व है, जो जो चाहे ला सकता है
क्या वह जब चाहे, उस महल का निर्माण कर सकता है?

प्रत्येक जीवित वस्तु एक इमारत की तरह है, और प्रत्येक जानवर एक दिव्य शक्ति की तरह है। महल। मानवता सबसे सुंदर और अद्भुत महल है [इसके रत्न-कण या परमाणु - कई दुनियाओं से एकत्र किए जाते हैं: आत्माओं की दुनिया और प्रतीकों, सर्वोच्च संरक्षित टैबलेट, और हवा, पानी की दुनिया से, पृथ्वी, प्रकाश और अग्नि]। मानवीय ज़रूरतें अनंत हैं, और मानवीय इच्छाएँ स्वर्ग और पृथ्वी को घेरती हैं। चूँकि मनुष्य का इस दुनिया और परलोक की हर चीज़ से संबंध है, इसलिए उन्हें उस चीज़ की प्रार्थना और पूजा करने का कोई अधिकार नहीं है जो पृथ्वी और स्वर्ग पर हावी नहीं है और जो उन्हें धारण करता है

दुनिया और आख़िरत की बागडोर।

हे मेरे हृदय, जान ले कि सबसे मूर्ख लोग वे हैं जो दर्पण में सूर्य की छवि देखकर उसे पहचानते हैं, बल्कि दर्पण से प्रेम करते हैं और उसे सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं ताकि वे सूर्य को स्थायी रूप से पकड़ सकें। काश वे समझ पाते कि सूर्य नष्ट नहीं होता या गायब नहीं होता जब वह नष्ट हो जाता है।
दर्पण करता है, वे अपना प्रेम केवल सूर्य की ओर ही निर्देशित करेंगे। प्रतिबिंब अपने स्थायित्व के लिए दर्पण पर निर्भर नहीं करता है; बल्कि दर्पण का स्थायित्व इस पर निर्भर करता है, जबकि मूल वस्तु स्वयं-निर्भर है। दर्पण की "जीवंतता" और उसकी चमक [सूरज की रोशनी में] की स्थायित्व यह केवल सूर्य की अभिव्यक्तियों की स्थायित्व के माध्यम से ही संभव है और दर्पण सूरज की ओर है। आपका दिल उस दर्पण की तरह है, और प्यार आपके स्वभाव में निहित स्थायित्व का लक्ष्य केवल उसी ओर निर्देशित होना चाहिए जो है अतः कहो: "हे स्थायी, आप स्थायी हैं," और उसकी ओर मुड़ो ताकि तुम स्थायी हो जाओ। फिर नश्वरता को वैसा ही करने दो जैसा तुम करते हो यह कामना करता है, क्योंकि हमारे साथ जो भी घटित होता है, हमें उसकी परवाह नहीं होती।

हे मित्र, जान लो कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने तुम्हारे भीतर यह गुण डाला है। मानव स्वभाव की एक अजीब विशेषता है: चूँकि दुनिया आपको अपने अंदर समाहित नहीं कर सकती, तुम अक्सर घुटन भरी कालकोठरी में घृणा की आवाज़ निकालते हो। फिर भी सरसों के दाने जितनी छोटी कोई चीज़, एक कोशिका, एक स्मृति या समय का एक मिनट यह आपको इतना आकर्षित कर लेता है कि आप इसमें खो जाते हैं और इसके प्रति जुनूनी रूप से आकर्षित हो जाते हैं। सृष्टिकर्ता ने तुम्हें ऐसी क्षमताएँ दी हैं कि उनमें से कुछ लोग दुनिया को निगलने पर भी संतुष्ट नहीं होंगे। दूसरे लोग सूक्ष्म कणों से ऊब चुके हैं और एक बाल भी अपनी जगह से बाहर नहीं निकल सकता। तुम जानते हो कि

यदि आपकी आंख में बाल है तो वह ठीक से काम नहीं कर सकती।

आप जो भी करते हैं, उसके प्रति सतर्क और सावधान रहें ताकि आप खुद को बर्बाद न करें और आपकी सबसे सूक्ष्म क्षमताएँ। एक (अवैध) निवाला या एक शब्द, एक (अवैध) नज़र, इशारा या चुंबन आपको बर्बाद कर सकते हैं। हर चीज़ में एक ऐसा पहलू होता है जो आपको बर्बाद कर सकता है और निगल सकता है। अपने हाथ में दर्पण को देखो, और देखो कि आकाश और उसके तारे किस तरह उसमें समाए हुए हैं। देखो कि सत्य किस तरह उसमें समाया हुआ है।

तुम्हारे अधिकांश कार्यों और कर्मों को, यहाँ तक कि तुम्हारे जीवन के अधिकांश भाग को तुम्हारी सरसों के दाने के बराबर स्मृति में अंकित कर देता है।67 उसकी महिमा है, जो सर्वशक्तिमान, स्वयंभू है।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारा निजी संसार कब्र के समान संकीर्ण स्थान है।
लेकिन चूंकि इसकी “दीवारें” “कांच” से बनी हैं, इसलिए आप इसे विशाल मानते हैं। सम्मानपूर्वक
इस सांसारिक जीवन के भौतिक आयाम में, अतीत समाप्त हो गया है और भविष्य
अस्तित्व में नहीं है। हालाँकि, जैसे ही आपकी दुनिया की दो दर्पण जैसी दीवारें एक दूसरे का सामना करती हैं
दूसरी ओर, वे आपके वर्तमान समय के बिंदु पर एक साथ आते हैं और आपके लिए यह अंतर करना कठिन बना देते हैं कि क्या वास्तविक है और क्या प्रतिबिंबित है [में]
उन्हें]। आपके वर्तमान की “रेखा” [आपके अतीत और भविष्य] तक फैली हुई है और
एक क्षेत्र बन जाता है। जब दुर्भाग्य आपको ले जाता है, तो आप अपना सिर किसी और से टकराते हैं
दीवारें, निराशा और नींद की कमी आपको अपनी दुनिया को कब्र और पुल से भी संकरी लगती है, और आपकी ज़िंदगी नदी और पुल से भी तेज़ चलती है
यहां तक कि बिजली भी.

हे जो प्रत्यक्षदर्शियों को देखना चाहता है, उसे जान ले!
ईश्वरीय नाम जो सब कुछ रिकॉर्ड करता है और सुरक्षित रखता है। इस नाम को संदर्भित किया जाता है
में: जो कोई भी एक परमाणु के वजन का अच्छा काम करता है, वह इसे देखेगा, और जो कोई भी करता है
परमाणु का वजन बुराई को देखेगा (99:7-8) और पृथ्वी पर एक परमाणु का वजन भी नहीं
आकाश में तुम्हारे रब से कुछ नहीं छूटता, न कोई चीज़ छोटी है, न कोई बड़ी, परन्तु वह आकाश में है।
एक प्रकट पुस्तक (10:61).

हे मनुष्य, जो उन्हें ब्रह्माण्ड की पुस्तक में देखना चाहता है, वह जान ले।
शीट, मैनिफेस्ट बुक के मानकों के अनुसार अंकित।68 मुट्ठी भर फूल और पेड़ के बीज लें, जो अलग-अलग प्रजातियाँ होने के बावजूद इतने भिन्न हैं
इतने समान कि आप उनमें अंतर नहीं कर सकते, और उन्हें एक साथ दफना सकते हैं
अँधेरे में - साधारण, बेजान-सी दिखने वाली मिट्टी का अँधेरा। फिर, छिड़क दें
उन पर पानी - पानी जिसका कोई माप या मानक नहीं है जिससे उन्हें पहचाना और पहचाना जा सके। आप इसे जहाँ भी छिड़कते हैं, यह वहीं चला जाता है। उन्हें देखो
वसंत, वार्षिक पुनरुत्थान का समय जब प्रकृति पुनः जीवित हो जाती है।

---

67 लेखक ने “अधिकांश” शब्द का प्रयोग किया है, “सभी” का नहीं, क्योंकि मानवता भुलक्कड़ है। (अनुवाद)

६८ प्रकट अभिलेख ईश्वरीय ज्ञान और आज्ञाओं के एक पहलू को दर्शाता है जिसमें
हर चीज़ का एक अनिवार्य, आदर्श अस्तित्व होता है। यह वृक्ष का एक सूचकांक और कार्यक्रम है
सृष्टि की, ईश्वरीय नियति की पुस्तक, सृष्टि में कार्यरत ईश्वरीय नियमों का रजिस्टर
ब्रह्मांड और उसकी सामग्री का जीवन और जीवन। प्रकट पुस्तक दिव्य शक्ति और इच्छा का प्रतीक है।
प्रत्येक वस्तु को उस इच्छा के नियम और उस शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार अस्तित्व दिया गया है।
मैनिफेस्ट रिकॉर्ड के निर्देशों के माध्यम से, अर्थात दिव्य नियति के आदेश और निर्देश के माध्यम से, दिव्य शक्ति कणों को प्राणियों को बनाने या उन्हें "पृष्ठ" पर प्रकट करने के लिए नियुक्त करती है।
समय। अधिक विस्तृत विवरण के लिए, फ़ुटनोट 36 देखें। (ट्र.)

देखो कि कैसे एक दूसरे से मिलते-जुलते ये मिश्रित बीज सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता द्वारा दिए गए सृजन के आदेशों का पालन करते हैं (विभिन्न फूलों और पेड़ों को पैदा करके) ताकि उनकी बुद्धि, ज्ञान, इच्छा, उद्देश्य, विवेक और चेतना की पूर्णता प्रकट हो सके। क्या तुम नहीं देखते कि ये फूल तुम्हारे लिए सजाए गए हैं और तुम पर मुस्कुरा रहे हैं, जिससे तुम उन्हें प्यार करते हो? क्या तुम नहीं देखते कि ये फल तुम्हारी भूख को बढ़ाते हुए तुम्हें अपने पास बुलाते हैं और खुद को तुम्हारे लिए बलिदान कर देते हैं?

सृष्टिकर्ता ने इन बीजों को विभिन्न फूलों और पेड़ों से भरे एक स्वर्ग जैसे बगीचे में बदल दिया है। क्या आप इसमें कोई त्रुटि या दोष देखते हैं? फिर से देखें! क्या आप कोई दरार देख सकते हैं? (67:3)। सर्व-संरक्षक ने प्रत्येक बीज को ठीक वैसा ही और पूरी तरह से दिया है जैसा कि उसके माता-पिता की संपत्ति से उसे दिया गया था। ऐसा करने वाला वही है जो अंतिम दिन ब्रह्मांड को नष्ट करता है और फिर से बनाता है। यहाँ पर देखी गई सही रिकॉर्डिंग और संरक्षण, यहाँ तक कि तुच्छ, नाशवान चीजों में भी, महत्वपूर्ण चीजों के रिकॉर्डिंग और संरक्षण का एक निर्विवाद प्रमाण है, जिसका प्रभाव अनंत काल तक फैला हुआ है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने वाले लोगों के कर्म और कार्य दर्ज किए जाते हैं, जैसे कि सर्वोच्च ट्रस्ट को मानने वालों के कार्य और शब्द, और एक, एकल के सेवकों के अच्छे और बुरे कर्म। क्या मानवता सोचती है कि उसे अपने आप पर छोड़ दिया जाएगा, अनियंत्रित, बिना उद्देश्य के? (75:36)। मानवता को उसके हाल पर नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि सभी लोग अनंत काल की यात्रा पर हैं, जहां उन्हें अपने कार्यों और शब्दों का हिसाब देना होगा।

यह ईश्वरीय कार्य के अनगिनत उदाहरणों या उपमाओं में से केवल एक है जो अभिलेखित और संरक्षित करता है। उसकी जय हो, जो सर्वरक्षक, सर्वनियंत्रक, सर्वसाक्षी, सर्वगणना करने वाला है।

हे असावधान ! जान लो ! उस पर अपना दिल मत लगाओ जो तुम्हें तब छोड़ देगा जब यह और यह दुनिया दोनों नष्ट हो जाएँगी। तुम उस पर अपना दिल कैसे लगा सकते हो जो तुम्हारे मरने पर तुम्हें छोड़ देगा, जो कब्र की मध्यवर्ती दुनिया की यात्रा में तुम्हारा साथ नहीं देगा? तुम उस पर कैसे भरोसा कर सकते हो जो एक या दो साल में तुम्हें छोड़ देगा, अपने पापों से तुम्हारा खाता काट देगा, और जो तुम्हें उसी क्षण छोड़ देगा जब तुम उसे प्राप्त करोगे?

अनंत काल की यात्रा में जो तुम्हारे साथ नहीं जाएगा, जो संसार के कोलाहल और ऐंठन के दौरान नष्ट हो जाएगा, कब्र की मध्यवर्ती दुनिया की निरंतर बदलती परिस्थितियों और परलोक की क्रांतियों के बारे में चिंता मत करो। क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हारे भीतर कुछ ऐसा है जो केवल अनंत काल और शाश्वत से प्रसन्न है, कि वह केवल उसी की ओर मुड़ता है और खुद को नीचा करता है

यह तुम्हारी शक्तियों का राजा है, इसका पालन करो, क्योंकि यह अपने अत्यन्त बुद्धिमान रचयिता के आदेश का पालन करता है।

हे मेरे मित्र, जान लो कि मैंने खुद को एक सपने में लोगों से कहते हुए देखा: "यह कुरान का सिद्धांत है कि तुम उस महान व्यक्ति के अलावा किसी और चीज़ को अपने से बड़ा न समझो और इसलिए उसकी पूजा करना शुरू करो, या यह कि तुम खुद को किसी चीज़ से बड़ा समझो और इसलिए उस पर पूर्ण प्रभुत्व का दावा करो। जो कुछ भी उसके अलावा है वह पूजा की वस्तु होने और उसके एक सृजित वस्तु होने के संबंध में अपनी दूरी में किसी भी अन्य चीज़ के बराबर है।"

हे असावधान ! जान ले ! तू चारों ओर देखता है और संसार को स्थिर और नित्य मानकर सोचता है कि तू भी स्थिर और नित्य है। इसलिए संसार का अंतिम विनाश तुझे डराता है, मानो तू उस विनाश तक जीवित रहेगा। पर यह सत्य नहीं है, क्योंकि तू और तेरा अपना संसार प्रतिक्षण क्षय हो रहा है। इस भ्रम के कारण तू उस व्यक्ति के समान है जो एक भवन, एक नगर या एक बगीचे को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण पकड़े हुए है। दर्पण की जरा सी भी हलचल या परिवर्तन उस प्रतिबिम्बित छवि में हलचल पैदा कर देता है जिससे वह व्यक्ति इतना संतुष्ट है। उनकी स्पष्ट, प्रतीत होने वाली स्थायित्व से तुझे कोई लाभ नहीं है, क्योंकि तेरा भाग केवल वही है जो दर्पण प्रतिबिम्बित करता है। अपने दर्पण पर विचार कर और देख कि वह और उसका प्रतिबिम्ब दोनों किसी भी क्षण नष्ट हो सकते हैं। उस पर वह बोझ मत डाल जो वह सहन नहीं कर सकता।

हे मित्र, जान लो कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता आमतौर पर उन चीज़ों को पुनर्जीवित करता है जो बहुत मूल्यवान होती हैं। अर्थात्, वह उन मूल्यवान चीज़ों को मौसम, वर्ष और शताब्दियों के परिवर्तन के माध्यम से हमेशा के लिए नष्ट नहीं होने देता; बल्कि, वह उन्हें लगातार जीवन में वापस लाता है। जब आप प्रतिदिन, वार्षिक और हर शताब्दी में होने वाले पुनरुत्थान के प्रकारों को देखते हैं, तो आप इस स्थापित, नियमित नियम को देखते हैं। वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि मानवता सृष्टि के वृक्ष का सबसे उत्तम फल है और इसका सबसे अधिक महत्व और मूल्य है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति अन्य जीवित प्राणियों की एक प्रजाति की तरह है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को न्याय के दिन उसकी सटीक पहचान और शरीर, शीर्षक और रूप के साथ पुनर्जीवित किया जाएगा।

हे अज्ञानी, अभिमानी आत्मा! जान ले कि प्रत्येक पद या स्थिति की अनेक छायाएँ होती हैं। एक छाया मूल के बराबर कैसे हो सकती है?

जो व्यक्ति राजा के सिंहासन को पानी में प्रतिबिम्बित देखता है या उस पर बैठने का सपना देखता है, वह कैसे सोच सकता है कि वह राजा है या राजा के बराबर है? जो व्यक्ति तालाब में सितारों को प्रतिबिम्बित देखता है और खुद को आकाश में होने की कल्पना करता है, वह कैसे उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो सितारों के बीच या उनसे ऊपर यात्रा करता है? जो लोग आंतरिक आयाम में यात्रा करते समय व्यक्तिगत बुद्धि और ज्ञान पर भरोसा करते हैं

अस्तित्व के बारे में जानने वाले लोग खतरनाक अहंकार में हैं, क्योंकि यद्यपि उनका पद मूल की छाया मात्र है, फिर भी उन्हें अपने ज्ञान पर गर्व है। वे इसे अपने ऊपर आरोपित करते हैं, खुद को उस पद के वास्तविक स्वामी के बराबर मानते हैं। वे एक गंभीर गलती करते हैं और अपने अहंकार के कारण कृतघ्नता से कहने लगते हैं: "यह मुझे मेरे ज्ञान के कारण दिया गया है।" लेकिन यह केवल उन्हें परखने का एक साधन है।

ऐ दोस्त, जान लो कि कुरान की आयत के अंत में आने वाले वाक्यांश या वाक्यों का वास्तविक आयतों के साथ-साथ चर्चा किए जाने वाले विषय, सूरा और संपूर्ण कुरान के साथ संबंध होता है।

वे आयतों को एक दूसरे से जोड़ते हैं, जिससे व्यक्ति उन्हें याद करता है और उन पर विचार करता है। उनमें जो कुछ कहा गया है, उसका निर्णय केवल उन आयतों के अर्थों से न करें जिनमें वे पाई जाती हैं, और न ही उनकी महानता की तलाश केवल वहीं करें जहाँ उनका उल्लेख किया गया है।

उदाहरण के लिए: इस प्रकार हम निशानियों और आयतों को विस्तार से बताते हैं (7:174); हम इस कुरान में बार-बार स्पष्टीकरण करते हैं (17:41); हमने कुरान में मानवता के लिए सभी प्रकार की उपमाएँ गढ़ी हैं (30:58); निस्संदेह, ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली है (9:58); निस्संदेह, ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली है (16:70); ताकि तुम चिंतन करो (51:49); ताकि तुम ईश्वर की सुरक्षा के पात्र बनो (2:183) और इसी प्रकार की आयतों में कुरान की अधिकांश आयतों, ईश्वर की सृष्टि की अधिकांश निशानियों और मानव जीवन और विशेषताओं की सामान्य स्थितियों और मामलों को देखने वाली आँखें हैं। ये समापन वाक्यांश या वाक्य, जो आयतों को सील और पुष्ट करते हैं, पाठक का ध्यान मिश्रित और विस्तृत विशेष मामलों से सार्वभौमिक और समावेशी नियमों और सत्यों की ओर, और उच्च उद्देश्यों और उद्देश्यों की ओर आकर्षित करते हैं।

पोज़.

हे मेरे हृदय, जान लो कि शैतान तुम्हें धोखा दे रहा है, क्योंकि वह तुम्हें असीम रूप से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध चीज़ों की ओर आकर्षित कर रहा है, ताकि तुम्हें दिए गए उपहारों के मूल्य को कम कर सके। इस धोखे से खुद को बचाने के लिए, विचार करो कि तुम अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में कितने असमर्थ और ज़रूरतमंद हो। तुम्हें दिए गए उपहारों में उद्देश्यपूर्ण बुद्धि और उपहार देने के उद्देश्यपूर्ण कार्य पर चिंतन करो। ईश्वरीय शक्ति, ज्ञान और इच्छा की असीम अभिव्यक्तियों, तुम्हारे अस्तित्व के उद्देश्यों और उसके परिणामों पर ध्यान दो, जो तुम्हें अस्तित्व प्रदान करते हैं, जो सभी सुंदर नामों के स्वामी हैं।

शैतान आपके अहंकार और दंभ के माध्यम से भी आपको धोखा देता है।
वह छोटे जीवों और कीड़े-मकौड़ों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए पूछते हैं: “ऐसी अल्पकालिक चीजों को बनाने का क्या फायदा है?” इस प्रकार वह जीवन के उद्देश्य को दर्शाते हैं।

जीवन में ही निहित है और इसका मूल्य शाश्वतता से प्राप्त होता है। यह तर्क बताता है कि अल्पकालिक जीवों का निर्माण अर्थहीन है, और इस प्रकार आपको
आप जो कर रहे हैं उसमें दया, पक्षपात और उत्तम कलात्मकता के मूल्य को कम करना
निरीक्षण करें। यह बदले में, आपको निर्माता को भूलने या यहां तक कि उसे नकारने का कारण बनता है। प्रतिक्रिया दें
शैतान को धोखा देते हुए उसे स्वर्ग के साथ उसके तारे और पृथ्वी के साथ उसके तारे दिखाए।
इसके सजीव जीव। आपकी तुलना में, उनका विशाल आकार आपको जगा देगा।
अपनी कोशिकाओं को देखें और देखें कि वे कितनी अद्भुत हैं और कितने शानदार ढंग से अपना काम पूरा करती हैं। देखें कि आपके जीवित रहते हुए आपकी श्वेत और लाल रक्त कोशिकाएँ कौन से महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। उभरती हुई सूक्ष्म शक्तियों को देखें
अपने दिल की।

हे यूरोप , जान लो ! तुममें से दो लोग हैं: एक वह जो लाभ उठा रहा है
ईसा मसीह के धर्म और इस्लामी सभ्यता ने अपने आविष्कारों के माध्यम से मानव जीवन को अधिक आरामदायक बना दिया है; और दूसरा जो प्रकृतिवादी सिद्धांतों पर आधारित है
और भौतिकवादी दर्शन, प्रकट धर्मों का विरोध करता है।
उत्तरार्द्ध पूर्व के अच्छे से बढ़कर है, और अधिकांश मानवीय समस्याओं का कारण है
दुख और पीड़ा से भरा हुआ। अब मैं इस दूसरे यूरोप को संबोधित करता हूँ:

तूने अपने दाहिने हाथ में अंधकारमय, भटकावपूर्ण दर्शनशास्त्र लिया है और
आपके बाएं हाथ में भ्रष्ट, हानिकारक सभ्यता है। और फिर आप दावा करते हैं कि
मानवता की खुशी उनमें निहित है। काश तुम्हारे हाथ टूट जाते, और तुम्हारा
दो भेंटें तुम्हें मृत्यु का कारण बनायेंगी।

हे अविश्वास और कृतघ्नता फैलाने वाले! क्या भ्रष्ट अंतःकरण और मानसिक और आध्यात्मिक बीमारियों वाला व्यक्ति महंगे कपड़ों और उपहारों से खुश रह सकता है?
सांसारिक संपत्ति? एक भी उम्मीद की पूर्ति न होने से निराश या मोहभंग होने वाले व्यक्ति के लिए, मिठास खट्टी हो जाती है, खुशी खट्टी हो जाती है
दर्द, और दुनिया संकीर्ण हो जाती है। कोई आपकी बुराई के सामने कैसे आ सकता है,
जिनके हृदय और आत्मा तुम्हारे पथभ्रष्टता से पीड़ित हो गए हैं और
निराश और व्यथित, आप जो देते हैं उससे खुशी पाएं? क्या कोई ऐसा हो सकता है
क्या किसी को खुश तब कहा जा सकता है जब उसका शरीर एक भ्रामक, क्षणभंगुर स्वर्गीय स्थिति में हो, जबकि उसकी आत्मा और हृदय नारकीय यातना में हों?

हे धूर्त और भ्रष्ट आत्मा, जो मैं तुझ से कहता हूं, उसे सुन।
मानवता पर कई संकट और परेशानियाँ आईं। निम्नलिखित पर विचार करें
दृष्टांत: हमारे सामने दो रास्ते हैं। हम एक को चुनते हैं और चलना शुरू करते हैं।
हर कदम पर असहाय लोगों पर गुंडों द्वारा हमला किया जाता है जो उनका सब कुछ लूट लेते हैं, उनके घरों को नष्ट कर देते हैं, और उन्हें इतनी बुरी तरह से पीटते हैं कि स्वर्ग भी रो पड़ता है
उनके लिए। जहाँ भी हम देखते हैं, हमें वही दृश्य दिखाई देता है, उत्पीड़कों की चीखों और उत्पीड़ितों की चीखों और विलापों से भरा हुआ। चूँकि हम दर्द महसूस करते हैं
जब दूसरे लोग पीड़ा में हों, तो हमारा विवेक ऐसा अन्याय सहन नहीं कर सकता और

विलाप। इसलिए, जो लोग ऐसी घटनाओं को देखते हैं और उन्हें रोक नहीं पाते, वे आशा खो देते हैं और सभी मानवीय भावनाओं को त्याग देते हैं। दूसरों के विनाश की चिंता किए बिना - जब तक वे सुरक्षित रहते हैं - वे बर्बरता की चरम सीमा तक आत्मसमर्पण कर देते हैं।

हे यूरोप! तुमने अपनी प्रतिभा का उपयोग मानवता को इस नारकीय स्थिति में लाने के लिए एक "उपहार" के रूप में किया है और फिर, यह देखते हुए कि यह बीमारी लाइलाज है, तुम लोगों को बेहोश करने के लिए इलाज के रूप में आकर्षक मनोरंजन और कल्पनाएँ पेश करते हो।
हालाँकि, आपका इलाज आपको मार देगा।

दूसरी तरफ़ चलते हुए, हम कुछ बिलकुल अलग देखते हैं: हर स्टेशन, जगह और कस्बे में सैनिक अपना काम करते हैं। कभी-कभी राजा के अधिकारी आते हैं, सरकार द्वारा उन्हें दिए गए हथियार और अन्य सामान लेते हैं, और उन्हें उनके डिस्चार्ज पेपर देते हैं। सैनिक खुश होते हैं, हालाँकि बाहर से वे उदास दिखते हैं, क्योंकि अब वे अपने राजा के पास लौट सकते हैं। अगर अधिकारियों को कोई ऐसा सैनिक मिलता है जो उन्हें नहीं जानता, तो वह सैनिक उनसे कहता है: “मैं राजा का सैनिक हूँ और उनकी सेवा में हूँ। मेरा अंतिम गंतव्य उनके पास है।

अगर उसने तुम्हें यहाँ भेजा है, तो स्वागत है। अगर नहीं, तो दूर रहो, क्योंकि चाहे तुम कितने भी हो, मैं अपने स्वामी के विश्वास और उनकी शाही गरिमा और सम्मान की रक्षा के लिए तुम्हारे साथ लड़ूंगा (अपने लिए नहीं)।

इस प्रकार हम लगातार देखते हैं कि नई सेनाएँ राजा (जन्म) की खुशी और प्रशंसा के साथ एकत्रित या संगठित होती हैं, जबकि कई अन्य लोग संतुष्ट होकर राजा (मृत्यु) की महिमा करते हैं। कुरान मानवता को एक उपहार प्रदान करता है। यदि लोग इसका सम्मान करते हैं और इसे एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करते हैं, तो वे इस दूसरे मार्ग में प्रवेश करेंगे। फिर उन पर कोई भय नहीं आएगा, न ही वे शोक करेंगे (10:62)।

हे यूरोप! तुम मानते हो कि सभी जीवित प्राणी अपने स्वामी हैं, अपने नाम पर और अपने आनंद के लिए काम करते हैं, कि जीवन में उनका एकमात्र उद्देश्य जीवित रहना है। क्या तुम उनके बीच सार्वभौमिक पारस्परिक सहायता नहीं देखते, जैसा कि उनके निर्माता ने स्थापित किया है? पौधे जानवरों की मदद करते हैं, और जानवर मानवता की मदद करते हैं। लेकिन तुम इसे संघर्ष और कलह के रूप में देखते हो, और उपदेश देते हो कि जीवन संघर्ष से बना है। भगवान की जय हो! यह कैसे सच हो सकता है? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि सभी खाद्य पदार्थों के कण या परमाणु शरीर की कोशिकाओं को पोषण देने में मदद करते हैं?

यह पारस्परिक सहायता प्रत्येक वस्तु द्वारा एक उदार प्रभु के आदेश का पालन करने से उत्पन्न होती है, तथा यह सिद्ध करती है कि कोई भी जीवित प्राणी स्वयं अपना स्वामी नहीं है।

इसके अलावा, ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी जीवित प्राणियों में मानवता सबसे सम्माननीय है, क्योंकि इसे स्वतंत्र चुनाव और गतिविधि का व्यापक क्षेत्र प्राप्त है। इसके बावजूद, हमारे दैनिक कार्यों में भी हमारी भूमिका नगण्य है। यदि यह सबसे सम्माननीय प्राणी, जिसे स्वतंत्र इच्छा और गतिविधि का सबसे व्यापक क्षेत्र प्राप्त है,

यदि किसी प्राणी का अपने स्वामित्व और आधिपत्य में इतना कम हिस्सा होता है, तो अन्य सजीव और निर्जीव वस्तुएं किस हद तक अपने ऊपर आधिपत्य का दावा कर सकती हैं?

हे यूरोप! तुम ऐसी भूल में इसलिए पड़े हो क्योंकि तुम्हारी प्रतिभा ने तुम्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया है।
तुम अपने प्रभु को भूल जाते हो - जो हर चीज़ का निर्माता है। परिणामस्वरूप, यह भ्रम
आपके सच्चे स्वभाव ने आपको सभी चीजों और कार्यों को (भौतिक) कारणों से जोड़ने और ईश्वर की चीज़ों को झूठे "दावेदारों" के साथ साझा करने के लिए प्रेरित किया है।
दिव्यता। यह सभी जीवित प्राणियों को एक परमाणु के वजन के माध्यम से अपनी अंतहीन जरूरतों को पूरा करने के लिए असंख्य विरोधों और शत्रुता के साथ संघर्ष करने के लिए मजबूर करता है
शक्ति की, इच्छा की एक बाल जितनी क्षमता की, चेतना की एक चमक जितनी रोशनी की, और
जीवन की एक छोटी सी चमक। उनके पास जो कुछ भी है (शक्ति और इच्छा के नाम पर,
चेतना और जीवन) उनकी एक भी ज़रूरत को पूरा नहीं कर सकते। जब दुर्भाग्य उन पर हावी होता है, तो वे बहरे और अंधे कारणों से मदद मांगते हैं। लेकिन
अविश्वासियों की अपील व्यर्थ है (13:14)।

आपकी अंधकारमय और अंधकारमय प्रतिभा ने मानवता के दिन को रात में बदल दिया है
झूठी, भ्रामक रोशनी से प्रकाशित। आपकी प्रतिभा के छात्र हर जीवित प्राणी को उन दुखी लोगों के रूप में देखते हैं
जिन्हें हमने पहले रास्ते में देखा था, जिन पर हमला किया गया था
हर तरफ से अंधकार। वे दुनिया को विलाप का घर समझते हैं, और
इसमें सभी आवाजें मौत पर विलाप और अनाथों की कराहें हैं।

आपकी प्रतिभा से पूर्णतः शिक्षित छात्र फिरौन बनते हैं और
अत्याचारी जो सबसे नीच चीजों को पसंद करते हैं और हर लाभकारी चीज से जुड़े होते हैं
इसका मतलब है, मानो वे उनके स्वामी हों। वे स्पष्ट रूप से दुर्दम्य हैं, लेकिन इसलिए
सुखों के लिए वे खुद को इतना दीन बना लेते हैं कि शैतान के पैर भी चूम लेते हैं
वे बहुत शक्तिशाली प्रतीत होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे
(उनके आंतरिक संसार में) कोई सहारे का बिन्दु नहीं है, वे वास्तव में असीम हैं
कमज़ोर। आपके छात्र केवल अपने पेट और गुप्तांगों की संतुष्टि चाहते हैं, या
अपने कबीले के हित के लिए (कबीले के नाम पर नहीं बल्कि निजी स्वार्थ, लालच और अहंकार के लिए)। वे सिर्फ अपने आप से प्यार करते हैं और उसके लिए सब कुछ त्याग देते हैं।

तथापि, कुरान के सच्चे विद्यार्थी ऐसे सेवक हैं जो किसी भी महानतम प्राणी या हित के समक्ष स्वयं को छोटा नहीं समझते, चाहे वह स्वर्ग ही क्यों न हो।
वे सौम्य और कोमल हैं, लेकिन अपने सृष्टिकर्ता के सामने खुद को नम्र बनाते हैं
और उसकी अनुमति से। वे गरीब हैं, लेकिन जो कुछ भी है उसके माध्यम से वे सबसे अमीर हैं।
उनके दयालु भगवान ने उनमें रखा है; कमजोर, लेकिन सभी में सबसे मजबूत
अपने गुरु की शक्ति से, जिनकी शक्ति अनंत है। खोज करना तो दूर की बात है
इस क्षणभंगुर संसार को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर वे स्वर्ग में प्रवेश की भी इच्छा नहीं करते,
और उससे प्रसन्न नहीं होते। [उनका उद्देश्य अपने रब की प्रसन्नता प्राप्त करना है।
केवल।]

इन दोनों समूहों के उद्देश्यों के बीच अंतर की मात्रा पर विचार करें।
कुरान के विद्यार्थी महानतम चीजों जैसे कि ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन और सूर्य को भी अपने आप में असहाय, कर्तव्यनिष्ठ और वशीभूत समझते हैं। उनकी आत्माओं का आकाश और पृथ्वी के सभी पवित्र निवासियों के साथ बहुत गहरा संबंध है, और वे उनके लिए उतनी ही ईमानदारी से प्रार्थना करते हैं जितनी ईमानदारी से वे अपने परिवार के लिए प्रार्थना करते हैं।

उनके गुणों पर विचार करें: पहले समूह के लोग अपने स्वार्थ के लिए अपने परिवार के सदस्यों से भी दूर भागते हैं; दूसरे समूह के लोग ईश्वर के सभी सेवकों को परिवार के सदस्य मानते हैं। कुरान अपने छात्रों को ईश्वर की महिमा के लिए प्रार्थना की माला के रूप में उपयोग करने के लिए ब्रह्मांड के सभी कण देता है। 99 मनकों वाली माला के स्थान पर, यह उन्हें अपने प्रभु का अनंत स्तर तक उल्लेख करने के लिए ब्रह्मांड की सभी परमाणु श्रृंखलाएँ देता है।

उस ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के ऐसे संत शिष्यों को देखें जैसे कि अब्दुल कादिर अल जिलानी, अल रुफाई,69 या अल शादिली, और देखें कि कैसे उन्होंने ब्रह्मांड की हर चीज का उपयोग ईश्वर की महिमा, उल्लेख और असीम स्तर तक प्रशंसा करने के लिए किया।

उन्होंने अपने कामों को छोटा समझा और इसलिए अनंत की ओर हाथ बढ़ाया और अदृश्य के ज्ञानी की ओर संकेत किया। इन लोगों को देखो। यद्यपि वे एक सूक्ष्म जीव से पराजित हो जाते हैं और जरा से दुख और चिंता से संकट और निराशा में चले जाते हैं, फिर भी देखो कि वे कितने ऊंचे पद पर पहुंच जाते हैं, कुरान के ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन से उनकी क्षमताएं किस हद तक विकसित हो जाती हैं।

ऐसे लोग दुनिया और उसकी चीज़ों को माला जपने के लिए नाकाफ़ी समझते हैं और जन्नत को अपनी तारीफ़ और महिमा का लक्ष्य नहीं मानते। इसके बावजूद वे खुद को ईश्वर की सबसे छोटी रचना से भी बड़ा और ज़्यादा नेक नहीं समझते।

क़ुरआन मानवता का मार्गदर्शन करता है। ऐ इंसानों, जो कुछ तुम्हारे हाथ में है वह एक अमानत है और मालिक (सब चीज़ों का) का है, जो सब कुछ जानता है और सब पर अधिकार रखता है। वह तुम पर दया करता है और बड़ा उदार है। वह तुमसे अपनी संपत्ति खरीदता है जिसे उसने तुम्हें सौंपा है, ताकि उसे तुम्हारी खातिर सुरक्षित रखे ताकि तुम उसे खो न दो। वह तुम्हें बदले में बहुत बड़ी कीमत देता है। एक सैनिक की तरह, तुम्हारे पास ज़िम्मेदारियाँ और कुछ कर्तव्य हैं, इसलिए उसके नाम और उसके लिए काम करो।

वह आपको वह सब प्रदान करता है जिसकी आपको आवश्यकता है और आपको हर संकट से बचाता है।
आप उस पर काबू नहीं पा सकते।

जीवन का उद्देश्य ईश्वर के नामों और आवश्यक गुणों की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करना है। जब दुर्भाग्य आपके पास आए, तो कहें: "हम ईश्वर के हैं और हमारे हैं।"

---

69 अहमद इब्न 'अली इब्न याह्या अल-रुफ़ाई (1120-84), रुफ़ैया सूफ़ी संप्रदाय के संस्थापक, एक हैं इस्लाम के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित संतों में से एक। (ट्र.)

उनकी सेवा। यदि आप उनकी अनुमति से आए हैं, तो आपका स्वागत है। हम उनके पास लौट रहे हैं और उनके दर्शन की इच्छा रखते हैं। वे जब चाहेंगे, हमें जीवन के कर्तव्यों और कठिनाइयों से मुक्त कर देंगे। हे दुर्भाग्य, यदि यह तुम्हारे हाथों होगा, तो ठीक है। लेकिन, यदि उन्होंने तुम्हें अपने विश्वास के प्रति मेरी सच्चाई की परीक्षा लेने के लिए आने की अनुमति दी है, लेकिन मुझे अपने आप को तुम्हारे सामने समर्पित करने की अनुमति नहीं दी है, तो मैं कभी भी उनके विश्वास को समर्पित नहीं करूंगा - जो जीवन उन्होंने मुझे दिया है।"

यह दोनों तरीकों की वास्तविकता है। लेकिन लोगों में मार्गदर्शन और गलत मार्गदर्शन में भिन्नता होती है, और असावधानी के कई स्तर होते हैं। असावधानी की वह डिग्री जिसने “सभ्य” लोगों को जकड़ लिया है, उसने उनके लोगों को तीव्र दर्द से बचा लिया है।
हालाँकि, बढ़ती वैज्ञानिक संवेदनशीलता और मृत्यु की चेतावनी इस असावधानी के आवरण को फाड़ सकती है।

हे युवा लोगों, खास तौर पर मुस्लिम देशों में रहने वाले! इस दूसरे यूरोप के हाथों इतनी बुरी तरह से पीड़ित होने के बाद भी क्या आप इसके दुराचार और विचारों का अनुसरण करेंगे और अनजाने में ही इसके साथ जुड़ जाएंगे? क्या यह आपके देशभक्ति के दावे का खंडन नहीं करता, क्योंकि इसका मतलब है राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति समर्पण को तुच्छ समझना और राष्ट्र का उपहास करना? ईश्वर हमें और आपको सीधे रास्ते पर ले जाए।

हे मित्र , अविश्वासियों की बड़ी संख्या और विश्वास की कुछ सच्चाइयों को उनके द्वारा साझा रूप से नकारे जाने से हिल जाना। मूल्य का आंकलन मात्रा से नहीं किया जाता। यदि कोई पुरुष या महिला मानव नहीं रह सकता, तो वह शैतानी जानवर बन जाता है। जैसे-जैसे वे पशुवत लालच और भूख में आगे बढ़ते हैं, धर्म को नकारने वालों में से कई लोगों की तरह, वे पशुता में वृद्धि करते हैं। उसी तरह, आप देखते हैं कि इस दुनिया में मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक (वास्तविक) जानवर हैं, हालाँकि मनुष्य ईश्वर के प्रतिनिधि हैं। [इससे पता चलता है कि मूल्य गुणवत्ता में निहित है, मात्रा में नहीं।] इसके अलावा, इनकार एक निषेध है, लेकिन दो लोग जो पुष्टि करते हैं, वे 1,000 लोगों से बेहतर हैं जो अस्वीकार करते हैं।

नास्तिक या नास्तिक कौन है? वे लोग हैं जो धर्म में विश्वास नहीं करते, एक प्रजाति जो इस दुनिया में भौतिक जीवन और आग (दूसरी दुनिया में) को बेहतर बनाने के लिए बनाई गई है। वे विश्वासियों पर सर्वशक्तिमान के आशीर्वाद की डिग्री को समझने में तुलना के साधन के रूप में काम कर सकते हैं। वे सत्य को नकारने पर सहमत हैं, लेकिन उनकी सहमति का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि इनकार, भले ही पुष्टि के रूप में हो, नकार, अस्वीकार, अज्ञानता और गैर-अस्तित्व की स्वीकृति है।

उदाहरण के लिए, यदि इस्तांबुल में दो लोगों को छोड़कर बाकी सभी ने अर्धचंद्र (रमजान के आरंभ में) के दिखने की बात को अस्वीकार कर दिया, और वे दो लोग कहते हैं कि उन्होंने इसे देखा है, तो उनकी गवाही को प्राथमिकता दी जाएगी, क्योंकि वे एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।
दूसरे शब्दों में, दो कथन किसी भी संख्या से अधिक शक्तिशाली माने जाते हैं।

नकार का। पुष्टिकरण वास्तविकता या तथ्य से संबंधित है, जबकि नकार उस व्यक्ति पर निर्भर करता है जो नकारता है। यदि एक घने बादल के कारण कुछ लोगों को छोड़कर सभी लोगों के लिए सूर्य को देखना असंभव हो जाता है, तो क्या हम कह सकते हैं कि सूर्य नहीं है? बिल्कुल नहीं, क्योंकि जो लोग इसे नहीं देख सकते वे कहेंगे: "मैं सूर्य को नहीं देख सकता," न कि "सूर्य मौजूद नहीं है।"

जो लोग विश्वास की सच्चाई या अनिवार्यताओं को नकारते या अस्वीकार करते हैं, वे इसी तरह के बहाने पेश करते हैं। लेकिन चूँकि उनके इनकार एक दूसरे की पुष्टि नहीं करते, इसलिए वे एक दूसरे का समर्थन नहीं करते। ऐसा समझौता एक संकीर्ण छेद से गुजरने के लिए एक साथ आने जैसा है; यह बेकार है और इसका कोई वजन या मूल्य नहीं है।

हे तुम जो मुसलमानों से सांसारिक जीवन और भौतिक प्रगति के लिए प्रयास करने का आग्रह करते हो, जान लो। सावधान रहो, क्योंकि उन्हें धर्म से जोड़ने वाली कुछ रस्सियाँ पतली हैं। ध्यान रखो कि वे टूट न जाएँ और उनके सामाजिक जीवन को बहुत नुकसान न पहुँचे, क्योंकि काफ़िरों के विपरीत, धर्मत्यागी पूरी तरह से बुरे हो जाते हैं और भ्रष्टाचार फैलाते हैं। मुसलमानों के बीच रहने वाले अन्य प्रकट धर्मों के अनुयायियों के विपरीत, जो लोग खुलेआम और बिना शर्म के बड़े पाप करते हैं, उनके साथ देशद्रोही जैसा व्यवहार किया जाता है। उनकी गवाही अदालत में स्वीकार नहीं की जाती, क्योंकि उनका विवेक दोषी और भ्रष्ट है।

ऐसे अपराधियों की बड़ी तादाद से धोखा न खाओ, क्योंकि वे अपने अपराध से खुश नहीं हैं। बिना अपराध की चाहत के वे खुद को इसमें पा गए हैं। लगभग सभी अपराधी नेक और धर्मनिष्ठ मुसलमान बनना चाहते हैं, अपने से बड़े लोगों को नेक और धर्मनिष्ठ देखना चाहते हैं। क्या तुम समझते हो कि मुसलमान कभी दुनिया से प्यार नहीं करते और उन्हें जागृति की ज़रूरत नहीं है, इसलिए वे यहाँ अपना हिस्सा भूल जाते हैं? ऐसा नहीं है, बल्कि लालच बढ़ गया है और ईमान वालों को नुकसान पहुँचा रहा है।

इसके अलावा, कई कारक लोगों को दुनिया में आमंत्रित करते हैं: व्यक्ति की शारीरिक इच्छा, ज़रूरतें, जुनून, इच्छाएँ, शैतान, आपके जैसे बुरे दोस्त, तत्काल लाभ की मिठास, और इसी तरह की अन्य चीज़ें, जबकि परलोक की ओर आमंत्रित करने वाले बहुत कम हैं। देशभक्ति की भावनाएँ और प्रयास भी इन कुछ में शामिल होने चाहिए। क्या आपको लगता है कि हमारी गरीबी हमारी तपस्वी प्रवृत्तियों से आती है? नहीं! क्या आप नहीं देखते कि यूरोप के हमलों और वर्चस्व के अधीन मगियन, बौद्ध और अन्य लोग हमसे ज़्यादा गरीब हैं? क्या आप नहीं देखते कि मुसलमानों के पास ज़रूरत से ज़्यादा है और वे अपनी ज़रूरतों को पूरा करने और अच्छी तरह से जीने के लिए पर्याप्त हैं, लेकिन यह पश्चिमी देशों द्वारा उनसे छीन लिया जाता है और उनसे ठगा जाता है?

यदि आप यह उम्मीद करते हैं कि उनकी सभ्यता का अनुसरण करने से आपके देश में बेहतर शासन और सुरक्षा होगी, तो आप गलत हैं, क्योंकि बुरे आचरण और कमजोर, हिले हुए विश्वास वाले सौ अपराधियों को नियंत्रित करना और उन पर शासन करना, हजारों धार्मिक विश्वासियों के साथ ऐसा करने से अधिक कठिन है।

उन्हें दुनिया के लिए लालच से प्रयास करने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें जिस चीज की आवश्यकता है, वह है
श्रम का अच्छा संगठन, काम के घंटों की व्यवस्था, लाभदायक सहयोग और आंतरिक सुरक्षा। ये सब केवल जागरूकता के माध्यम से ही संभव है
ईश्वर और धर्मपरायणता.

हे मित्र, जान लो कि सत्य ने अपनी पूर्ण दया से सेवा के बदले में कुछ पुरस्कार सेवा में तथा कर्म के बदले में कुछ पुरस्कार कर्म में भी शामिल कर लिया है।
अभिनय में। इस प्रकार निर्जीव प्राणी भी सृष्टि के संबंध में परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और
ब्रह्मांड का संचालन पूर्ण उत्साह और आनंद के साथ करते हुए। ऐसा करके, वे
ज्योतियों के प्रकाश के नामों की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करें। एक मिनट
उदाहरण के लिए, जमीन में दबा हुआ बीज अपने शुद्ध हृदय से सूर्य की ओर मुड़ता है
और, अपने हृदय को सूर्य का सिंहासन बनाकर, आपके चेहरे पर मुस्कुराता है। मान लीजिए कि
सूक्ष्म कणों और यौगिकों में चेतना होती है, जैसे उपर्युक्त बीज एक बहुत ही साधारण वस्तु से विकसित होकर एक समृद्ध और विकसित वस्तु बन जाता है।
वे परम ऐश्वर्य, सौन्दर्य और पूर्णता वाले उस एक के नामों के प्रकटीकरण को प्राप्त करने और प्रतिबिंबित करने में आनंद लेते हैं,

और इस प्रकार सृष्टिकर्ता की आज्ञाओं का पालन करने के माध्यम से एक महान विकास को साकार करें।

देखिये कि किस प्रकार आपकी इन्द्रियाँ और अंग आपको और मानवता को सक्षम बनाते हैं।
जीवित रहने के लिए जानवरों को पूरी तरह से सेवा करनी पड़ती है। उन्हें सेवा करने में इतनी खुशी मिलती है कि अगर वे और सेवा न कर सकें तो उन्हें बहुत पीड़ा होती है। देखिए जानवरों को सेवा करने से कितनी खुशी मिलती है
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए। क्या आप नहीं देखते कि मुर्गा मुर्गियों को खुद से ज़्यादा पसंद करता है
और उन्हें वह खाना खाने के लिए बुलाता है जो उसे मिलता है? यह इसके अर्थ से समझा जा सकता है
जिस तरह से वह उत्साह, खुशी और गर्व के साथ ऐसा करता है। इसके अलावा, मुर्गी को भी देखिए
अपने चूज़ों को ले जाती है। दूसरी माताओं की तरह, यह उन्हें तभी छोड़ती है जब वे
अपना ख्याल रखना। इससे पता चलता है कि मुर्गी यह सब अपने लिए नहीं करती
पूर्णता या सिद्धि के लिए नहीं, बल्कि उसके लिए जो इसका उपयोग करता है और उसकी इच्छा से
दया, उसे अपना कार्य पूरा करने में आनंद देती है।

पेड़-पौधों को अपने सृष्टिकर्ता की आज्ञा का पालन करते हुए देखिए। उनकी सजावट और सुगंध उनके उत्साह और उनके लिए खुद का बलिदान दर्शाती है।
अंकुर और फल दिखाते हैं कि उनका आनंद उन आज्ञाओं का पालन करने में है।
ऐसा लगता है जैसे वे दया के द्वार से शुद्धतम जीविका मांग रहे हैं और
अपने रब की अनुमति से वे अपने फलों को उसी से खिलाते हैं। अंजीर का पेड़ मिट्टी खाता है, लेकिन
अपने अंजीरों को दया के भण्डार से लिया गया शुद्ध दूध पिलाता है; अनार का पेड़ पानी पीता है, लेकिन अपने फलों को अपने द्वारा दिया गया शुद्ध शरबत पिलाता है
हे प्रभु, ज़मीन में पड़े बीजों को देखो और देखो कि वे एक बहुत ही कठिन परिस्थिति में कैदी की तरह हैं।
संकीर्ण कालकोठरी में जो लोग बगीचे में जाने की उत्सुकता से इच्छा रखते हैं, वे बढ़ने और हवा में अंकुर भेजने के लिए उत्सुक हैं।

पूरे ब्रह्माण्ड में प्रचलित यह ईश्वरीय नियम यह दर्शाता है कि एक निष्क्रिय वस्तु एक सक्रिय, सदैव नवीनीकृत होने वाली वस्तु की तुलना में अधिक थक जाती है, क्योंकि जब तक एक निष्क्रिय वस्तु एक सक्रिय, सदैव नवीनीकृत होने वाली वस्तु की तुलना में अधिक थक जाती है, तब तक वह अधिक थकती नहीं है। पहला समय और उसके जीवन की धीमी गति के बारे में शिकायत करता है, जबकि दूसरा धन्यवाद। सुख परेशानियों और कठिनाइयों से लड़ने में है, जबकि परेशानी बेकार बैठे रहने में है।

जब आप निर्जीव चीजों को देखते हैं, तो आप उनमें छिपी सम्भावनाओं को देखते हैं। एहसास होने के लिए पानी की बूँदें हिलती हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्हें उस हिलने में आनंद आ रहा है। क्या आप नहीं देखते कि पानी की बूँद कैसे उत्साह से अपना दिल खोलती है जब क्या इसका रचयिता इसे ऐसा करने का आदेश देता है? अपनी कमज़ोरी और कोमलता के बावजूद, जब वह अपने रब को यह आदेश देते हुए सुनता है: "ऐ पानी! बर्फ बन जाओ और फैल जाओ," ऐसा तीव्र उत्साह महसूस करता है कि वह कठोर लोहे को भी तोड़ सकता है।

ब्रह्माण्ड में सभी गति और प्रयास, बिना किसी अपवाद के, निर्भर करते हैं वे भाग्य के नियम पर आधारित हैं तथा ईश्वरीय शक्ति द्वारा निर्धारित एवं नियंत्रित होते हैं। वे सृष्टि के दिव्य आदेश द्वारा स्वयं को प्रकट करते हैं ज्ञान, इच्छाशक्ति और यहां तक कि शक्ति। प्रत्येक कण या परमाणु, यौगिक और जीवित प्राणी एक सैनिक की तरह है जिसका सभी उचित सैन्य क्षेत्रों और कर्तव्यों से संबंध होता है। उदाहरण के लिए, आपकी आंख की एक कोशिका में एक कण का आपकी आंख, आपके चेहरे की नसों, आपके शरीर की नसों आदि से संबंध होता है। इसलिए, कर्तव्यों को पूरा करने में इसकी अनिवार्य नपुंसकता की भाषा में

जिसे ब्रह्मांड के क्रम और रखरखाव में आरोपित किया गया है संतुलन, सब कुछ सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है एक।

व्यवस्था और संतुलन दृश्यमान जगत के दो महत्वपूर्ण, सूक्ष्म "अध्याय" हैं ब्रह्मांड की पुस्तक। उदाहरण के लिए, कोई कण या मधुमक्खी इसे कैसे पढ़ सकती है? किताब उस एक के हाथ में जो आकाश को लपेट देगा जैसे कि एक पत्थर लपेटता है स्क्रॉल? यद्यपि स्वयं एक व्यक्ति है, फिर भी प्रत्येक वस्तु एकता की गवाही देती है अनिवार्यतः विद्यमान-सत्ता, सत्य, महिमामय की अन्य सभी यौगिकों और कर्तव्यों के साथ उसके संबंधों के माध्यम से, तथा उसके साथ उसकी स्थिति के माध्यम से उन यौगिकों के सभी भागों के प्रति सम्मान।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने प्रत्येक वस्तु के लिए विशेष निर्धारण किया है तथा अपनी आवश्यकताओं के अनुसार, ब्रह्मांड की दृश्यमान पुस्तक के दो अध्यायों - व्यवस्था और संतुलन - में से सिद्धांतों को चुनता है। जब वह उनके अनुसार कार्य करता है सिद्धांतों के अनुसार, यह अनजाने में भी, कानूनों के अनुपालन में कार्य करता है उस पुस्तक का.

उदाहरण के लिए, जब कोई मच्छर दुनिया में आता है, तो वह तुरंत हमला करता है जीवन का जल पाने के लिए किसी व्यक्ति के चेहरे पर अपने डंक से वार करना। किसने सिखाया क्या यह लड़ने की कला है? अगर मैं इसकी जगह होता, तो मैं सीख पाता

यह केवल एक लंबी अवधि के प्रशिक्षण और कई परीक्षणों के बाद ही संभव है। यह बात सच है
अन्य सभी जानवरों और पौधों के लिए, क्योंकि परम उदार परमेश्वर ने प्रत्येक को आनंद और आवश्यकता की स्याही से लिखी एक “मार्गदर्शिका” दी है। देखिए कैसे
उन्होंने इसमें दृश्यमान पुस्तक के दो अध्यायों के रहस्यों को शामिल किया है
उदाहरण के लिए, एक मधुमक्खी के सिर में डाला गया "गाइडबुक" में ब्रह्मांड।
इन रहस्यों की कुंजी उस मधुमक्खी के लिए विशेष आनंद है जिस पर आरोप लगाया गया है
कुछ कार्य.

जो पहले ही कहा जा चुका है उसके आधार पर, आप विश्वास के माध्यम से एक महत्वपूर्ण संदेश, कई में से एक, निकाल सकते हैं: मेरी दया सभी चीजों को ग्रहण करती है (7:156);
ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करता हो, परन्तु तुम नहीं समझते
उनकी प्रशंसा (17:44); और जब वह कोई काम चाहता है तो उसका आदेश बस इतना ही है कि वह कहे
इसके लिए: “हो!” और यह हो गया। उसकी महिमा हो जिसके हाथ में सभी चीज़ों का प्रभुत्व है
और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे (36:82-83)

ऐ दुनिया में मुसलमानों को बुलाने वाले , जान ले तू ग़लत है।
आप सोचते हैं कि किसी के जीवन का आवश्यक उद्देश्य भौतिक प्रगति तक ही सीमित है,
वैज्ञानिक और तकनीकी विकास, आजीविका कमाना, और अन्य
सांसारिक जीवन से जुड़ी चीज़ों के बारे में क्या कहा जाए? सृष्टि के स्वामी और शासक,
जिसने कहा: "हो जाओ!" वह अस्तित्व, सृजन, वास्तविकताओं और मानव प्रकृति में शामिल भावनाओं और क्षमताओं द्वारा पुष्टि की गई बात कहता है: मैंने जिन्न और मनुष्य को केवल मेरी पूजा करने के लिए बनाया है (51:56), और कोई भी चलता-फिरता प्राणी नहीं है जो अपना भोजन स्वयं वहन कर सके, परन्तु अल्लाह उसे और तुम्हें भोजन प्रदान करता है (29:60)।

क्या तुम सोचते हो कि जिसने तुम्हें बनाया है और जो निरंतर तुम्हारा नवीनीकरण करता है?
क्या शरीर को उसकी ज़रूरत है कि आप उसके राज्य में क्या करें और उसके निपटान में आपकी मदद करें?
क्या आप यह नहीं देखते कि आप जो सबसे परिष्कृत चीज बना सकते हैं, वह भी
क्या कला और सृजन में हम कभी भी खजूर, मधुमक्खी, आँख या जीभ के बराबर नहीं हो सकते?

हे असावधान, यह जान लो कि यह अकल्पनीय है कि जिसने तुम्हें पैदा किया है वह यह नहीं जानता कि जब तुम सामाजिक जीवन में आगे बढ़ते हो तो तुम्हारे साथ क्या होता है।
परिस्थितियों और सांसारिक परिस्थितियों। आपकी मान्यताएँ और विचार जो भी हों
यदि आप नास्तिक और भौतिकवादी भी हैं, तो भी आपको यह स्वीकार करना होगा कि
यह एक रचनात्मक कार्य है, एक कला है और एक शुक्राणु या एक अंडे, एक अनाज या एक बीज में निपटान है।
क्या आपके लिए यह सोचना तर्कसंगत है कि जो कोई भी या जो भी किसी वृक्ष के बीज में उसके अवयव डालता है, वह वृक्षों की दुनिया और उसकी सभी स्थितियों से अनभिज्ञ है?

और दूसरी दुनियाओं के साथ संबंध? या वह जो बीज को तोड़ता है और
इसे एक युवा पौधे में विकसित करता है और फिर एक विस्तृत वृक्ष में बदल देता है
उस व्यक्ति को देखें और ध्यान से देखें जो पौधे लगाता है और फिर उससे लाभ उठाता है, और जानवरों के साथ उसके संबंध, उसका पर्यावरण, और उस पर्यावरण में क्या हो रहा है?

क्या आपके लिए यह कल्पना करना तर्कसंगत है कि जो हमें बनाता और आकार देता है, वह हमें बनाता और आकार देता है? अंडे से बच्चे निकलते हैं, और उसे पक्षियों के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध होते हैं, लेकिन वह नहीं देखता पक्षी की परिस्थितियाँ, दुनिया और वह प्रजातियाँ जिनके साथ उसका घनिष्ठ संबंध है? क्या यह कल्पना की जा सकती है कि सृष्टिकर्ता, जिसने मानवता का निर्माण किया,
मानवता की दुनिया, परिस्थितियों और घटनाओं को नहीं देखता है, हालाँकि उसने मानवता को एक बीज और एक निषेचित अंडे से कई चरणों (जैसे, एक प्रजनन) के माध्यम से बनाया है।
थक्का, ऊतक, हड्डियां, मांस और एक अन्य रचना को निलंबित कर दिया गया), इसे जीवन दिया और
एक ऐसा रूप जो कलात्मकता प्रदर्शित करता है, जो केवल उसी के पास हो सकता है जिसके पास असीम ज्ञान, दृष्टि और बुद्धि हो, और जो इसे संबंधित करने के लिए आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित करता हो
अधिकांश प्रजातियों और दुनियाओं के साथ? या कि वह मानवता की अवधि और उन दुनियाओं को नहीं जानता है जिनमें लोग अपने शरीर, भावनाओं, आत्मा के साथ घूमते हैं,
बुद्धि, कल्पना और अन्य सभी क्षमताएं जो उन्हें अवलोकन करने में सक्षम बनाती हैं
संसार को समझना और सत्य को समझना?

ऐ ग़ाफ़िल! क्या तू समझता है कि तू हस्तक्षेप से मुक्त है?
वह जो वृक्षों की डालियों के पास से तुम्हारे हाथ में अनार लाता है, और
क्या आप खरबूजे और तरबूज को फाइबर जैसे तने से उगाकर आपके लिए तैयार करना चाहते हैं?
तुम्हारी असावधानी के कारण तुम यह मान लेते हो कि खरबूजे का बनानेवाला अनजान है
अपने खाने वाले के बारे में। आपकी अंधता आपको यह कल्पना करने पर मजबूर करती है कि अनार का निर्माता इस बात से अनजान है कि वह इसे खाने वालों के लिए क्या करता है और आप आश्चर्यचकित हैं
इसकी कलात्मकता देखकर यह घोषणा होती है: “उसकी महिमा हो जिसने इसे बनाया है
और मुझे आकार दिया। उसने मुझे कितनी खूबसूरती से बनाया है"; उन लोगों के लिए जो चिंतन करते हैं
इसकी सुन्दरता पर घोषणा करते हुए: धन्य है ईश्वर, जो सर्वोत्तम सृष्टिकर्ता है (23:14); तथा
जो लोग इसकी दृढ़, परिपूर्ण संरचना के बारे में सोचते हैं, उनके लिए यह घोषणा है: क्या उसे
क्या तुम नहीं जानते कि कौन पैदा करनेवाला है? वह अत्यन्त सूक्ष्म, ख़बर रखनेवाला है (67:14) या तुम जानते हो कि कौन पैदा करनेवाला है?
सोचो कि जो हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उन फलों को भेजता है, वह नहीं देखता
और हमें जानो, या वह जो हमारे सामने और हमारे पूरे संसार में बिखरा हुआ है
क्या दुनिया में पालतू जानवर और अन्य जानवर हमारे लाभ के लिए नहीं हैं?

हे तुम जो अपने आप पर, कारणों पर और दुनिया पर भरोसा करते हो , जानो । तुम एक जुगनू की तरह हो जो अपनी रोशनी पर निर्भर रहता है और दिन के उजाले को रात में बदल देता है, या एक निजी व्यक्ति जो देखता है कि उसका राजा सभी लोगों और यहां तक कि सभी के प्रति दयालु है।
जानवरों, लेकिन फिर खुद से कहता है: "मेरे पास क्या मूल्य है जो उसे कारण होगा
मुझे विशेष सम्मान दिखाने के लिए? चूँकि मेरे दिल को एक स्नेही की ज़रूरत है,
मुझे बचाने और सहारा देने के लिए एक प्रियजन की आवश्यकता है, मुझे एक और रक्षक ढूंढना चाहिए और समर्थक।" इसलिए वह कानून पर विचार किए बिना ऐसा करने के लिए निकल पड़ता है। वे बताते हैं
उसे:

क्या तुम नहीं जानते कि राजा का खजाना तुम्हारी और अन्य सभी सैनिकों की सभी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है? तुम्हारे हाथ में और उन लोगों के हाथ में जो कुछ है, जिससे तुम अपील करते हो, वह तुम्हारी छोटी-सी ज़रूरत भी पूरी नहीं कर सकता, क्योंकि तुम असंख्य शत्रुओं और अंतहीन महत्वाकांक्षाओं से घिरे हुए हो।
राजा का कानून आपको बाहर नहीं करता; बल्कि, इसमें सभी शामिल हैं।
यदि आप अकेले सैनिक भी होते, तो भी आपको वैसा ही व्यवहार मिलता, जैसा कि राजा को आपसे विशेष सरोकार होता, क्योंकि उसका कानून सभी को समान रूप से समाहित करता है।
इसके अलावा, यदि राजा संत है और एक साथ कई स्थानों पर उपस्थित हो सकता है, तो वह आपकी आवश्यकताओं से एक क्षण के लिए भी अनजान नहीं रहेगा। प्रत्येक प्राणी की आवश्यकताओं की समुचित पूर्ति होती है, जिससे पता चलता है कि राजा आपको अपने समग्र पक्ष में देखता है, प्रत्येक प्राणी के बारे में जानता है, तथा सामान्य जनता की आवश्यकताओं में रुचि रखता है। वह सूर्य के समान है, जो प्रत्येक वस्तु को प्रकाशित करता है तथा संसार को प्रकाश देते हुए प्रत्येक पारमार्थिक वस्तु में दिखाई देता है; अथवा वस्तुओं के एक-दूसरे से मिश्रित होने से उत्पन्न स्पष्ट भ्रम के बीच प्रत्येक वस्तु में व्याप्त परिपूर्ण, सार्वभौमिक व्यवस्था के समान है।

संक्षेप में, आपका निर्माता और स्वामी आपके प्रति किसी भी अन्य मित्र या प्रियजन से अधिक दयालु, उदार और स्नेही है। वह आपके रहस्यों को जानता है और आपकी माँगों को पूरा कर सकता है, यहाँ तक कि सबसे बड़ी और सबसे गुप्त माँगों को भी। इसलिए केवल उसी पर भरोसा करें।

हे मित्र, जान लो कि ब्रह्माण्ड की पुस्तक (शक्ति की पुस्तक) प्रकट पुस्तक (ज्ञान या भाग्य की पुस्तक) के माप के अनुसार लिखी गई है, जो कि पूर्व की पुस्तक के नीचे रखे गए एक पंक्तिबद्ध कागज की तरह है जिसे सटीक माप में लिखा जाना है। सार्वभौमिक व्यवस्था और संतुलन, इन दो पुस्तकों के दो अध्याय और उनके बीच संबंध की एक रेखा, इस बात की पुष्टि करती है।

वे दयालु की दो ग्रास्प्स के दो शीर्षक भी हैं। सभी गीली और सूखी चीजें (सब कुछ) प्रकट पुस्तक के दो अध्यायों में शामिल हैं।

कुरआन, जो ईश्वरीय वाणी से निकलता है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, शक्ति और ज्ञान की पुस्तकों का अनुवाद करता है। यह दो अध्यायों की अनुक्रमणिका है और दो ग्रन्थों की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है।

ज्ञान, शक्ति और वाणी के तीन दिव्य गुणों से निकलने वाली इन तीन पुस्तकों का एक सिद्धांत यह है कि प्रत्येक जीवित प्राणी, वास्तव में प्रत्येक वस्तु, एक नियमित सैनिक या सेवक की तरह है जिसे विशेष कर्तव्य सौंपे गए हैं। वे अपने स्वामी राजा के लिए और उसके नाम पर काम करते हैं - अपने स्वयं के हित, स्वामित्व या आनंद के लिए नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों को पूरा करने में निहित आनंद के लिए। जो कोई भी यह मानता है और दावा करता है कि वह स्वयं का स्वामी है, वह नष्ट हो जाएगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

हे मित्र, यह जान लो कि आकाश बिना किसी दृश्यमान दरार के बना है।
उनका निर्माता इतना शक्तिशाली और प्रतिष्ठित, महिमावान और महान है कि उसने हर चीज़ को उसके सटीक स्थान पर आसानी से बनाया। उसके राज्य से कोई भी चीज़ बच नहीं सकती।
एक प्रजाति के सदस्य, जैसे कि मछली और मक्खियाँ, एक दूसरे के साथ घुलमिल जाते हैं, जो दर्शाता है कि एक प्रजाति और सभी प्रजातियों का निर्माता एक ही है। राज्य और प्रशंसा, सृजन और आदेश, और न्याय उसी का है। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

हे मित्र, जान लो कि पैगम्बर और उनकी पैगम्बरी सर्वोत्तम हैं, वे मानवता द्वारा साझा की जाने वाली पूर्णता और भलाई के प्रतीक हैं। उनका मार्ग और धर्म परम सुख और शुद्ध सौंदर्य की सबसे उत्तम अभिव्यक्ति है। हम उनकी रचना में श्रेष्ठ पूर्णता, स्पष्ट सत्य, विशिष्ट अच्छाई और उज्ज्वल सौंदर्य देखते हैं। पैगम्बर की ओर सत्य और सच्चाई पाई जाती है; दूसरी ओर पथभ्रष्टता, भ्रम और विनाश। पैगम्बर द्वारा लाए गए अनगिनत सौंदर्य और गुणों में से केवल इस पर ध्यान दो: ईश्वर की एकता में सभी विश्वासियों के दिल और जीभ कई अवसरों पर एकजुट होते हैं, जैसे कि पांच दैनिक प्रार्थनाएं और शुक्रवार और त्योहार के दिन की सामूहिक प्रार्थनाएं। इन अवसरों पर, प्रत्येक विश्वासी सभी विश्वासियों के दिलों की आवाज़ और उनकी प्रार्थनाओं और पाठों के साथ उपासना के शाश्वत उद्देश्य के शानदार और राजसी संबोधन का जवाब देता है। यह विशाल सहमति और व्यापक एकजुटता, संपूर्ण पृथ्वी के बोलने और प्रार्थना करने के समान है, जो इस आदेश को पूरा कर रही है: "प्रार्थना को सही ढंग से करो," जो सातों आसमानों से पूरे भय के साथ जारी हुआ।

इस आदेश को पूरा करके और प्रार्थना करने वाले विश्वासियों की विशाल सभा में भाग लेकर, कमज़ोर और असहाय मनुष्य, उन दुनियाओं के बीच एक छोटे कण की तरह होने के बावजूद, पृथ्वी और स्वर्ग के निर्माता के प्रिय सेवक बन जाते हैं। उन्हें पृथ्वी पर उनके नाम पर शासन करने का सम्मान मिलता है, और वे सभी सजीव प्राणियों के मुखिया बन जाते हैं और साथ ही ब्रह्मांड के निर्माण के लिए अंतिम उद्देश्य बन जाते हैं। अगर, अदृश्य दुनिया की तरह, ईश्वर के वे अनगिनत स्तुतिगान उत्सव की सामूहिक प्रार्थना के दौरान और उसके बाद एक ही समय में कहें: "ईश्वर सबसे महान है", तो यह पृथ्वी के स्तुतिगान के बराबर होगा - अगर यह मानवता की तरह स्तुतिगान करे।

ऐसा लगेगा मानो धरती त्यौहार के दिन जोर से हिल रही हो, अपने सभी क्षेत्रों और पहाड़ों के साथ ईश्वर का गुणगान कर रही हो, मक्का के अपने मुंह से, क़िबला के अपने दिल की ईमानदारी से - काबा - कह रही हो: "ईश्वर सबसे महान है"। इसकी गुफाओं से निकलने वाले शब्द - इसके चारों ओर फैले हुए विश्वासियों के मुंह, बल्कि, मध्यवर्ती दुनिया और आकाश में - ऊपर उठेंगे

लहरों में। जिसने धरती को बनाया और उसे अपने बन्दों के लिए पालने और सजदा करने की जगह बनाया, उसकी महिमा बुलंद हो और महिमा हो।

हे परमेश्वर , तू सत्य को देख और जान ले, तर्कों और प्रमाणों, उसकी निशानियों और गवाहों के द्वारा।

अपने आस-पास जो कुछ भी हो रहा है, उस पर आपत्ति जताकर उसमें हस्तक्षेप न करें। जो कुछ भी आपके साथ घटित हो रहा है, उसे संदेह की दृष्टि से न लें। बल्कि, अपने सामने आने वाले प्रकाश को पकड़ने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाएँ। खुद को असावधानी की स्थितियों से अलग करें, खुद को उन रोशनियों के आने के लिए खोलें, और पूरे दिल से उनकी ओर मुड़ें।

मेरा अनुभव है कि ईश्वर के ज्ञान के साक्ष्य और प्रमाण तीन प्रकार के होते हैं। पहला, वे जो पानी की तरह होते हैं। आप उन्हें महसूस कर सकते हैं और देख सकते हैं, लेकिन उन्हें अपने हाथों से पकड़ नहीं सकते। अपने आप को बेतरतीब विचारों से मुक्त करें और अपने पूरे अस्तित्व के साथ उनमें लीन हो जाएँ। उन्हें आलोचना या जिज्ञासु भाव से न देखें, क्योंकि वे बह जाते हैं और ऐसे कार्यों से प्रसन्न नहीं होते।

दूसरा, वे जो हवा की तरह हैं। आप उन्हें महसूस कर सकते हैं, लेकिन उन्हें देख या पकड़ नहीं सकते। अपने चेहरे, मुँह और आत्मा को दया की उन हवाओं के सामने उजागर करें।
उन्हें अपनी आत्मा से ग्रहण करें, बजाय इसके कि उन्हें पकड़ने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाएँ। अपनी आलोचना और संदेह को त्याग दें, अन्यथा वे गायब हो जाएँगे। ये वे हाथ नहीं हैं जिनमें इन गवाहों और सबूतों को थामा जा सकता है।

तीसरा, वे जो प्रकाश की तरह हैं। आप उन्हें देख सकते हैं, लेकिन उन्हें छू या ग्रहण नहीं कर सकते। अपनी अंतर्दृष्टि की आँखों से उनकी ओर मुड़ें और अपने दिल को उनके सामने उजागर करें। प्रकाश को केवल प्रकाश [दिल और अंतर्दृष्टि का प्रकाश] से ही पकड़ा और शिकार किया जा सकता है। महत्वाकांक्षी रूप से उस तक अपना हाथ न बढ़ाएँ, या उसे भौतिक उपकरणों से न मापें, क्योंकि इससे वह खुद को छिपा लेगा (लेकिन बुझ नहीं पाएगा)। यह भौतिक या शारीरिक बंधनों, प्रतिबंधों और ठोस मालिकों से खुश नहीं है।

ऐ दोस्त, कुरान की दया और आम लोगों के प्रति स्नेह की डिग्री को देखो । देखो कि यह उनकी सरल समझ का कितना सम्मान करता है और उसे महत्व देता है। यह आकाश और पृथ्वी के माथे पर अंकित स्पष्ट संकेतों को दोहराता है, और उन्हें पढ़ने में आसान बनाता है, जैसे कि आकाश और पृथ्वी का निर्माण, स्वर्ग से बारिश भेजना और मिट्टी को फिर से जीवित करना (प्रत्येक वसंत)। आम लोग मुश्किल से समझ पाते हैं कि छोटे, नाजुक अक्षरों में क्या लिखा गया है। कुरान की अभिव्यक्तियों की शुद्धता और वाक्पटुता पर विचार करें, वे मानवता से कैसे संबंधित हैं जो शक्ति ने ब्रह्मांड की चादरों पर लिखा है। ऐसा लगता है जैसे कुरान ब्रह्मांड का पाठ है, उसका आदेश है

और सामंजस्य, और इसके रचयिता और उसके कृत्यों की घोषणा। सुनो
जाग्रत हृदय से ऐसे सूरों जैसे कि 'ख़ुदावन्द' (78) और आयतों की ओर ध्यान दो: कह दो:
“हे परमेश्वर! प्रभु! प्रभु! प्रभु!” (3:26)

हालाँकि उन्हें गुप्त रखा जाना चाहिए, मैं अपने दिल की प्रार्थनाएँ लिखता हूँ
मेरे प्रभु के लिए। मैं सर्वशक्तिमान से आशा करता हूँ कि वह अपनी दया से इस भाषण को स्वीकार करेंगे
मेरी किताब की मृत्यु के बाद मेरी जीभ बंद हो जाती है।

हे दयालु प्रभु, उदार ईश्वर। मेरा जीवन और युवावस्था इसी में गुजरी है।
मेरी इच्छाशक्ति का दुरुपयोग। जो बचा है वह केवल दर्दनाक और अपमानजनक है
पाप, विनाशकारी और विचलित करने वाला दर्द और परेशानी, और परेशान करने वाली, लकवाग्रस्त
चिंता। इस भारी बोझ के साथ, बीमार दिल, और शर्मिंदा
मेरे पूर्वजों, प्रियजनों, रिश्तेदारों और समकालीनों की तरह,
अत्यंत तेजी से और अपनी स्वतंत्र इच्छा से मैं दरवाजे के पास पहुंच रहा हूं
कब्र का, इस क्षणभंगुर, क्षणभंगुर निवास से अलग होने के बाद अनंत काल के रास्ते पर अकेलेपन
का घर, जो क्षीण होने के अधीन है, और उन लोगों के लिए दयाहीन और धोखा देने वाला है, जो मेरे
जैसे, उनके अनुसरण करते हैं
शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाला स्व.

हे दयालु, उदार प्रभु, नियत समय आ गया है
हाथ। मैंने अपना कफ़न पहन लिया है, अपने ताबूत में लेट गया हूँ, अलविदा कह रहा हूँ
अपने दोस्तों के पास, और अपनी कब्र की ओर बढ़ रहा हूँ। मैं दरवाजे पर रो रहा हूँ
आपकी दया: "मदद करो! मदद करो, हे सर्व-स्नेही, सर्व-उदार!
मुझे विद्रोह की शर्म से बचाओ!" आह! मैं अपने कफ़न में हूँ, अपनी कब्र के पास खड़ा हूँ और अपना
सिर आपके द्वार की ओर उठा रहा हूँ
दया पुकारती है: "मदद करो! मदद करो, हे सर्व-दयालु, सर्व-स्नेही!
मुझे विद्रोह के भारी बोझ से मुक्ति दिलाओ!" आह! मैं अपने में हूँ
कफ़न ओढ़े, अपनी क़ब्र में लेटा हूँ। जो लोग मुझे विदा कर गए थे, वे मुझे छोड़कर चले गए हैं। मैं हूँ
आपकी क्षमा की आशा करते हुए, यह देखते हुए कि कोई आश्रय और शरण नहीं है
सिवाय तुम्हारे। मैं पुकार रहा हूँ: "मदद करो! संकीर्णता के खिलाफ मेरी मदद करो
इस जगह का, मेरे विद्रोह के कारण पैदा हुआ अकेलापन, और कुरूपता
हे दयालु, दयालु, दयालु, दयालु, क्षमाशील, मुझे पापों और विद्रोह की संगति से बचा।

हे ईश्वर! आपकी दया ही मेरा आश्रय है और आप तक पहुँचने का मेरा साधन है।
हे दयालु सृष्टिकर्ता, मैं अपनी व्यथा और दुःख की शिकायत तुझसे करता हूँ।
दयालु प्रभु, स्वामी, रक्षक! आपके नपुंसक, असावधान,
अज्ञानी, रोगी, पतित, पापी, वृद्ध, दुखी और भगोड़ा प्राणी, आपकी कलाकृति और आपका सेवक
आपके द्वार पर लौट आया है
40 वर्षों के बाद, आपकी दया की शरण में, अपने पाप को स्वीकार करते हुए और
भ्रम और बीमारियों के आदी, और आपसे प्रार्थना करते हुए
अत्यंत विनम्रता। यदि आप उसे स्वीकार करते हैं, क्षमा करते हैं और उस पर दया करते हैं, क्योंकि यह
हे दयालुतम परम दयालु, तुझसे क्या अपेक्षा की जाती है? अन्यथा, तेरे सिवाय और कौन सा द्वार है
जिसकी खोज की जाए?

आप ही वह ईश्वर हैं जिसकी खोज की जानी चाहिए और सत्य की पूजा की जानी चाहिए। आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, जिसका कोई साझी नहीं है।

अंत में, मैं यह साक्ष्य देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और मैं गवाही दो कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारी प्रशंसा ईश्वर की है, क्योंकि उन्होंने हमें कुरान प्रदान किया, तथा सृष्टि के स्वामी मुहम्मद को भेजकर जो दया प्रकट की, उसके लिए भी, उन पर और उनके परिवार पर शांति और आशीर्वाद हो।

हे मित्र, जान लो कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने वनस्पति और पशु जगत को - विशेष रूप से छोटे जगत को - अपनी शक्ति प्रदर्शित करने और अपने गुणों को सबसे अधिक प्रचुरता से प्रकट करने के लिए सबसे व्यापक क्षेत्रों में से एक बनाया है, और उन क्षेत्रों में से एक है जिसमें उनके नामों को दर्शाने वाले अधिकांश "दर्पण" हैं। उसने यह कुछ बुद्धिमानी भरे, उच्च उद्देश्यों के लिए किया है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

सब्ज़ियाँ या पौधे पृथ्वी के लिए बीज का काम करते हैं, और जानवर दुनिया के फल हैं। बीज एक छोटा पेड़ है, और उसका फल उसका छोटा सूचकांक है।
जो कुछ भी वृक्ष में प्रकट होता है, वही बीज और फल में भी प्रकट होता है।

अस्तित्व और जीवन का उद्देश्य परम पूर्णता के सर्व-महान और सुंदर एक के नामों की अभिव्यक्तियों को प्राप्त करना और प्रतिबिंबित करना है। दिव्य अनुग्रह पौधों और जानवरों के विस्तार और प्रजनन के माध्यम से खुद को प्रकट करता है, विशेष रूप से उनके सबसे नाजुक भागों और व्यक्तिगत अंगों के साथ। यह शाश्वत ज्ञान के लिए सबसे उपयुक्त है।

यह वर्णित है कि पैगंबर मूसा ने भगवान से मच्छरों के बहुत से झुंड के हमले की शिकायत की और पूछा: “इतने सारे मच्छरों को पैदा करने में क्या समझदारी है?” भगवान ने खुलासा किया कि: “मच्छर पूछता है: ‘आपने इतने बड़े इंसानों को क्यों बनाया? वे आपसे अनभिज्ञ और बेपरवाह हैं।

यदि आपने उनके सिर मच्छरों के बनाए होते, [प्रत्येक के बदले में], आपके पास दसियों हज़ार लोग होते जो आपकी प्रशंसा करते, आपका उल्लेख करते, और आपकी महिमा करते, और आपके नामों के प्रकटीकरण और आपकी कला की कढ़ाई को अपनी जीभ और स्वभाव के माध्यम से प्रदर्शित करते।'” सच है! जबकि आकाश की चादरों पर तारों की स्याही से अंकित अदृश्य कुरान आपको सृष्टि की भव्यता और वैभव के संकेत दिखाता है, उप-परमाणु कणों या आपकी आंख में परमाणुओं की स्याही से अंकित कुरान ज्ञान और बुद्धि के संकेतों को पढ़ता है।

पहला कहता है: "उसकी महिमा हो। उसके आवश्यक गुण कितने शानदार हैं," जबकि दूसरा कहता है: "उसकी महिमा हो। उसकी बुद्धि कितनी नाजुक है, उसकी कला कितनी सूक्ष्म है।" हालाँकि दोनों कुरानों का मूल्य और महत्व एक जैसा है, क्योंकि पर्यवेक्षकों और दर्शकों को बड़े को गुणा करने से कोई लाभ नहीं मिलता है, छोटे को गुणा करना उन असंख्य फ़रिश्तों और जिन्न, लोगों और अन्य लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जो इसका अध्ययन करते हैं और इस पर विचार करते हैं। जब इसे गुणा किया जाता है, तो यह एक ही, एकल पुस्तक नहीं रहेगी; बल्कि, यह अंतहीन विविधताओं वाली एक पुस्तक होगी जिसमें विभिन्न उपयोग और अर्थ होंगे, एक ऐसी पुस्तक जिसकी अभिव्यक्ति की सुंदरता और शुद्धता में बहुत वृद्धि हुई है।

इसके अतिरिक्त, जब छोटे कुरान के कई अध्याय और उसकी प्रतियां बड़े कुरान के कुछ अक्षरों में डाल दी जाती हैं, तो छोटा कुरान अपने छोटेपन की दृष्टि से बड़े कुरान से श्रेष्ठ हो जाता है।

कई जानवरों और पौधों को बनाने का एक और बुद्धिमान उद्देश्य यह है कि सबसे उत्तम दिव्य अभिव्यक्ति यह है कि ईश्वर अपने सभी नामों के साथ खुद को एक ही प्राणी पर केंद्रित करके प्रकट करता है। कला तब सबसे उत्तम बन जाती है जब सबसे बड़ी चीज़, उसकी सभी कढ़ाई के साथ, सबसे छोटी चीज़ में डाल दी जाती है। पेड़ के संबंध में बीज और फल, पृथ्वी के संबंध में पौधे और जानवर, ब्रह्मांड के संबंध में मानवता और पैगंबर, और मानवता के संबंध में हृदय और अंतरतम मानवीय भावना या क्षमता - ये आवश्यक, सघन नमूने हैं जो उनसे विकसित होने वाले मूल पर प्रकट सभी नामों को प्राप्त करते हैं और प्रतिबिंबित करते हैं।

उदाहरण के लिए, एक फल, पेड़ का एक हिस्सा (जो संपूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है) एकता की ओर इशारा करता है - सभी फलों और पेड़ों पर दिव्य नामों की अभिव्यक्ति। हालाँकि, पेड़ का एक नमूना होने के नाते (जो पेड़ में है उसे शामिल करता है) और पेड़ उससे बढ़ने वाले और उसके परिणामस्वरूप होने वाले संपूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है, एक फल दिव्य एकता को इंगित करता है - दिव्य नामों की अभिव्यक्ति जो कि सभी फलों और पेड़ों पर केंद्रित है।

फल.70

---

70 एकत्व (अहादिया) और एकता (वहीदिया) की अभिव्यक्ति , भाग (जुज') और संपूर्ण (कुल्ल); नमूना, विशेष, या व्यक्ति (जुज़ी); और कुल (कुल्ली) महत्वपूर्ण बिंदु हैं जिनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, एक हाथ, एक पैर, या एक सिर किसी के शरीर का हिस्सा है, शरीर संपूर्ण है। लेकिन वह व्यक्ति मानवता का प्रतिनिधित्व करने वाला एक नमूना या व्यक्ति है, जबकि मानवता समग्र है। जो कुछ भी पूरे में है वह भाग में नहीं पाया जाता है, जैसे कि जो कुछ भी किसी व्यक्ति में है वह उसके हाथ, पैर या सिर में नहीं पाया जाता है। लेकिन जो कुछ भी कुल में है वह नमूने में पाया जाता है। पूरे (एक व्यक्ति) पर प्रकट होने वाले दिव्य नामों को किसी भाग में नहीं खोजा जाना चाहिए, बल्कि कुल (मानवता) पर प्रकट होने वाले नाम नमूने (एक व्यक्ति) पर प्रकट होते हैं। दिव्य नामों का समग्र या समग्र पर प्रकटीकरण तजल्ल-ए-वहीदिया (एकता का प्रकटीकरण) कहलाता है, जबकि उनका समग्र पर प्रकटीकरण, जो भाग या व्यक्ति पर केन्द्रित होता है, तजल्ल-ए-अहादिया (एकता का प्रकटीकरण) कहलाता है। (अनुवाद)

उदाहरण के लिए, दिन के समय दुनिया को रोशन करने वाला सूरज की रोशनी एकता का प्रतीक है, जबकि प्रत्येक पारदर्शी वस्तु में प्रतिबिंबित सूर्य की छवि एकता की अभिव्यक्ति के लिए एक उदाहरण या सादृश्य है। जब आप अपने दर्पण में सूर्य को दर्पण के रंग और गुणों को लेते हुए देखते हैं और फिर इसे अन्य दर्पणों में देखते हैं, तो आप समझते हैं और देखते हैं कि एकता या एकता का क्या मतलब है। यह वही (और एकमात्र) सूर्य है जो सभी दर्पणों में प्रकट होता है जो घोषणा करता है: "हम अलग-अलग भाषाओं में बोलते हैं, लेकिन आपकी सुंदरता एक और एक ही है।"

जो कुछ भी मौजूद है, वह उस सौंदर्य की ओर इशारा करता है। हम इससे समझते हैं कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, महिमामय बुद्धि और नाजुक कला के साथ, अपनी सूक्ष्म शक्ति, पूर्ण कृपा, पूर्ण दया और संवेदनशील बुद्धि के साथ सृष्टि से पृथ्वी की ओर, और फिर, क्रमिक रूप से, जीवित प्राणियों, मानवता और किसी के हृदय की ओर; मानवता से उसके हृदय की ओर; और अंत में सृष्टि के हृदय और उसके बीज की ओर, जिससे ब्रह्मांड, साथ ही साथ उसका शानदार फल, उसके निर्माण का अंतिम उद्देश्य और सृष्टिकर्ता के प्रेम और दया का मूर्त रूप बनाया गया था। वह श्रेष्ठ, श्रेष्ठतम, शुद्ध, निष्कलंक हृदय मुहम्मद है, हमारा स्वामी और सृष्टि का स्वामी, सृष्टि के वृक्ष के फलों की संख्या पर उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

हे विचार करने वाले , जान ले कि प्रकृति में कुछ प्राणी अत्यधिक मात्रा में तथा व्यर्थ ही विद्यमान हैं। सृष्टि की उत्तम व्यवस्था तथा संतुलन इसका खंडन करते हैं, क्योंकि व्यवस्था एक ऐसी योजना है जो सृष्टि के सभी भागों, विवरणों या व्यक्तियों तथा विवरणों के अस्तित्व के कारण से गुंथी हुई है। कोई भी व्यक्ति किसी महल के सभी विवरणों के प्रयोजनों का निरीक्षण नहीं कर सकता, न ही उसके निर्माण के मुख्य उद्देश्य की उपेक्षा कर सकता है। चूँकि उसके सभी भागों सहित निर्माण करते समय मुख्य उद्देश्य पर विचार किया जाता है, इसलिए विवरणों से अपेक्षित गौण उद्देश्यों का इस प्रकार ध्यान रखा जाता है, क्योंकि सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर स्वामी से संबंधित प्रत्येक वस्तु के पीछे उसके स्वामित्व तथा निपटान के अनुपात में, तथा उस वस्तु पर उसके नामों के प्रकटीकरण की सीमा के अनुपात में सूक्ष्म उद्देश्य होते हैं। वस्तु से संबंधित उद्देश्य भी उसके जीवन तथा अस्तित्व के अनुपात में ही होते हैं।

हर चीज़ को जीवन में एक लक्ष्य सौंपा गया है, जिसका अध्ययन बुद्धिमान प्राणी करते हैं। अगर कोई इसे नहीं समझ सकता, तो दूसरे समझ सकते हैं। हर चीज़ में कई फ़ायदे हैं। अल्लाह के पास अनगिनत सेनाएँ हैं। तुम्हारे रब की सेना को उसके सिवा कोई नहीं जानता (74:31)। असंख्य प्राणी अपनी निगाहें हर उस चीज़ पर टिकाए रखते हैं जो मौजूद है। उनमें फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह की स्तुति और महिमा करते हैं, जिन्न हैं जो सृष्टि को देखकर आश्चर्यचकित होते हैं और उस पर विचार करते हैं, और रूह के प्राणी हैं जो अल्लाह की स्तुति करते हैं और उसकी एकता का ऐलान करते हैं, जिनके लिए चीज़ों की ठोसता

जो कुछ उनमें है उसे छिपा नहीं सकता और जो एक ही समय में कई चीजों को देख सकता है।
सबसे बढ़कर, सभी चीज़ों का निर्माता अपनी कला के कामों को देखता है।
और प्रबुद्ध विश्वासी, साथ ही साथ अपनी धारणाओं से प्रेरित कई जानवर भी परमेश्वर की कलाकृतियों को देखते हैं।

प्रश्न: ब्रह्माण्ड की पुस्तक में दिए गए संकेत अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं
गैर-मानव प्राणियों की जो उन्हें आश्चर्य से देखते हैं और उनका अध्ययन करते हैं और
मनन करें और फिर परमेश्वर की महिमा करें। कौन सी पंक्ति यह संकेत देती है?

उत्तर: बुद्धि के पृष्ठ पर संतुलन की रेखा पर क्रम इसका संकेत देता है। जब आप किसी थिएटर में प्रवेश करते हैं जहाँ कोई नाटक खेला जा रहा होता है, तो आप देखते हैं
कई चमत्कार जो दर्शकों को आश्चर्यचकित करते हैं, साथ ही मनभावन धुनें और कई
मन और कल्पना को आनंद देने वाले आकर्षण के प्रकार हैं।
इसके अलावा और भी बहुत सी चीजें हैं जो आपकी असंख्य क्षमताओं, भावनाओं और इंद्रियों को आनंद देती हैं।
फिर आप दर्शकों के हॉल को देखते हैं और कुछ लकवाग्रस्त, बहरे और अंधे बच्चों को देखते हैं। आप निष्कर्ष निकालेंगे कि दीवारों के सामने लटके पर्दों के पीछे अलग-अलग स्वाद वाले विभिन्न बुद्धिमान प्राणी हैं

और स्वभाव जो मासूम मनोरंजन के लिए आए हैं और प्रसन्न हैं
वे नाटक में हर नवीनता देखना चाहते हैं। वे आपको और नाटक को देखते हैं
जहाँ से आप उन्हें देख नहीं सकते.

यदि आप इस तुलना को समझते हैं, तो उन प्राणियों और उनके स्वभाव को देखिए।
दुनिया। आप देखते हैं कि "कालीन" बिछाए गए हैं, "सोफे" उठाए गए हैं, "वस्त्र" पहने गए हैं, और
“चादरें” खुली हुई हैं। फूल और ताजे फल हैं जो जीवित, जरूरतमंदों को आमंत्रित कर रहे हैं
वे अपने रंग, स्वाद और गंध से दूसरों को आकर्षित करते हैं और उन्हें आकर्षित करते हैं।
जो ऐसी चीजों को अपने डिजाइन, सजावट और कला से समझते हैं।
सृजन का अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए सीधे अपने डंठलों पर चढ़ जाते हैं, और जानवर खड़े हो जाते हैं
अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी पूजा का कर्तव्य निभाते हैं। इनमें से अधिकांश प्राणी अपने शरीर में निहित
आश्चर्यजनक, शुद्ध सौंदर्य और उत्कृष्ट क्षमताओं के प्रति सचेत नहीं हैं।
सृष्टि के अन्य प्राणियों के लिए हैं, जो देख और सुन सकते हैं।

इस आकर्षक ऐश्वर्य, मनमोहक श्रृंगार, तरह-तरह के उपकार, जानने की जिज्ञासा और प्रेम की भावना जगाने वाली चीजें और घटनाएं होने के बावजूद
उनके पीछे जो है; सभी उपक्रमों, इरादों और निर्णयों के बावजूद,
आत्म-सजावट, मुस्कुराहट, इशारे और छेड़खानी; और कई के बावजूद
समान आकर्षण और आकर्षण जो लगभग बात करना और अपना मतलब बताना शुरू कर देते हैं-
ऐसा प्रतीत होता है कि केवल दो प्रकार के बुद्धिमान, समझदार जीव ही इस सब की सराहना कर सकते हैं:
मानवता और जिन्न। हालाँकि, अधिकांश लोग इस बात को नहीं समझते कि यह सब कैसे होता है।
वे असावधान हैं और बहरे और अंधे बच्चों के समान हैं जिनके मन लकवाग्रस्त हैं
भौतिकवाद और प्रकृतिवाद के अंधेरे में। इससे पता चलता है कि इसके अलावा

मानवता और जिन्न, ब्रह्मांड आत्मा वाले प्राणियों से भरा है जो अस्तित्व पर विचार करते हैं और भगवान की महिमा करते हैं: सात आकाश और पृथ्वी, और जो कोई भी उनमें है, उसकी महिमा करो; कोई भी चीज उसकी प्रशंसा नहीं करती है, लेकिन आप उनकी महिमा को नहीं समझते हैं (17:44)।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वरीय शक्ति का नियंत्रण जितना अधिक होगा, तथा उनके समान जितनी अधिक संख्या में होंगे, व्यक्ति पर उतनी ही अधिक कृपा होगी। ऐसा मत कहो कि, "मैं सागर की एक बूंद हूँ, जिसे सागर की विशालता के कारण भुला दिया जाना चाहिए।" नहीं! बल्कि, जैसा कि सागर गवाही देता है, तुम अपने परिवेश के विस्तार के अनुपात में, अपनी पूरी शक्ति के साथ, अपने जैसे सभी चीजों में व्याप्त दृढ़ व्यवस्था के संरक्षण में हो।

क्योंकि कोई चीज़ जितनी छोटी, ज़्यादा छिपी हुई और ज़्यादा सख़्ती से घिरी हुई होती है, उतनी ही ज़्यादा देखभाल की जाती है और उतनी ही कम अनदेखी की जाती है और दूसरों के हस्तक्षेप और संयोग में विश्वास करने वालों की चालबाज़ियों से ज़्यादा सुरक्षित रहती है। एक सृजित चीज़ के रूप में यह ज़्यादा पसंदीदा बन जाती है। केंद्र हमले के प्रति ज़्यादा सुरक्षित रहता है, बीज संयोग में विश्वास करने वालों की चालबाज़ियों और तूफ़ानों के उत्पीड़न से ज़्यादा सुरक्षित रहता है, और बीज को ज़्यादा देखभाल दी जाती है।

हे मानवता! तुम धरती के बीज हो और धरती ब्रह्माण्ड का अंडा है। यही कारण है कि क़ुरान में बार-बार आकाश और धरती की एक साथ रचना का उल्लेख किया गया है, और इसका अर्थ है सभी चीज़ों की रचना।

हे मित्र, जान लो कि पक्षपात की पूर्णता बुद्धि की पूर्णता से आती है (यदि बुद्धि पूर्ण है तो पक्षपात पूर्ण हो सकता है), बुद्धि की पूर्णता व्यवस्था की पूर्णता से आती है, और व्यवस्था की पूर्णता संतुलन या माप की पूर्णता से होती है। एक उदाहरण पाँच मानवीय इंद्रियाँ हैं, जिन्हें सृष्टिकर्ता ने इसलिए बनाया ताकि लोग सभी फलों, फूलों, ध्वनियों, गंधों आदि की विशेषताओं और गुणों को महसूस कर सकें। यही कारण है कि स्वाद की इंद्रिय में इतने नाजुक, सुव्यवस्थित भाग होते हैं, जो सभी फलों, खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों की किस्मों के बराबर होते हैं। सुनने की इंद्रिय असंख्य ध्वनियों को ग्रहण कर सकती है और उनमें अंतर कर सकती है। इनकी तुलना अन्य बाहरी इंद्रियों और अधिक असंख्य और समृद्ध आंतरिक इंद्रियों से करें। इस व्यापक प्रकृति ने मनुष्य को वह बनाया है जो वह है: सृष्टिकर्ता के नामों की अनंत प्रकार की अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने और प्रतिबिंबित करने में सक्षम और उसकी असंख्य किस्मों का स्वाद लेने में सक्षम।

मनुष्य एक टेलीफोन स्विचबोर्ड की तरह है जिसमें शहर के भीतर कनेक्शन बनाने के लिए एक केंद्रीय कुंजी होती है। प्रत्येक व्यक्ति के पास ईश्वर की सभी खूबियों का स्वाद लेने के लिए एक केंद्रीय इंद्रिय होती है, साथ ही उसके सिर और गर्दन पर विशेष कुंजियाँ लगी होती हैं।

उनकी सभी अभिव्यक्तियों को प्राप्त करने और प्रतिबिंबित करने की खुशी का अनुभव करने की क्षमताएँ। शरिया के दिशा-निर्देशों के अनुसार उन कुंजियों का उपयोग करें ताकि उन्हें प्रसन्न किया जा सके
आपका सृजक.

लोग इन कुंजियों का किस तरह इस्तेमाल करते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस हद तक स्वर्ग के सुखों का अनुभव करेंगे। हालाँकि यह वादा कि आप साथ रहेंगे
स्वर्ग में आप जिससे प्रेम करते हैं, वह स्वर्ग में सबसे ऊंचे और सबसे निचले को एक साथ लाता है।
एक ही स्थान पर, (आपका इनका अनुभव इस बात पर निर्भर करता है कि आप कैसे और किस हद तक
इस संसार में अपनी इन्द्रियों, भावनाओं और क्षमताओं का उपयोग करें)।71

हे मित्र, जान लो कि यह स्पष्ट भ्रम और मिश्रित स्थिति
चीजों के अस्तित्व का यह मतलब नहीं है कि वे संयोग की वस्तुएँ हैं। बल्कि, वे
पुस्तक के सामान्य डिजाइन की सबसे नाजुक कढ़ाई हैं
ब्रह्मांड। हालाँकि, भ्रम के दर्पण में प्रतिबिंबों पर सतही, अप्रशिक्षित नज़र से उस डिज़ाइन को आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है। क्या आप नहीं देखते हैं
कि अलग-अलग पौधों के मिश्रित बीज बेतरतीब ढंग से बिखरे होने पर जब बढ़ते हैं तो एक आदर्श क्रम प्रदर्शित करते हैं? नियति की कलम उन्हें उस अद्भुत क्रम में रखती है
आदेश देना।

ऐ दोस्त, जान लो कि मुहम्मद के मुहर होने का एक निर्णायक सबूत यह है कि
पैगम्बर का मानना है कि उन्होंने धर्म की सीमाओं को हर तरह से इतना बढ़ा दिया कि कोई भी व्यक्ति
इससे अधिक व्यापक और परिपूर्ण व्यवस्था की कल्पना की जा सकती है। उदाहरण के लिए, ईश्वरीय एकता और प्रभुता के बारे में वे कहते हैं: सभी चीज़ों का प्रभुत्व उनके हाथ में है
(36:83); वह हर चीज़ को माथे से पकड़ता है (11:56); आकाश लपेटा हुआ है
अपने दाहिने हाथ में (39:67); वह तुम्हें गर्भ में अपनी इच्छानुसार रचता है (3:6); वह है
वह प्रथम और अन्तिम, बाह्य और आंतरिक है और उसे हर चीज़ का पूरा ज्ञान है (57:6); तुम नहीं करोगे जब तक अल्लाह न चाहे (76:30); और हम हैं
उसके गले की नस से भी अधिक निकट है (50:16)।

इसके अलावा, मुहम्मद को जो धर्म बताया गया है, उसमें यह भी कहा गया है कि सभी चीजें पवित्र हैं।
वे अपने निर्माता के समान हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं, जो उनके गुणों या आवश्यकताओं को साझा नहीं करता है। पुनरुत्थान और ईश्वरीय एकता के बारे में इस्लाम क्या सिखाता है
इसे पार नहीं किया जा सकता। ऐसा ही हर अन्य मामले में भी है, क्योंकि यह पहले से ही पूर्ण है
और परिपूर्ण है, और इसलिए शाश्वत होने का हकदार है, अंतिम क्षण तक जारी रहने का
दिन।

हे मित्र, जान लो कि वातावरण के मार्मिक दृश्य से मैं द्रवित होकर रो पड़ा। मैंने जो आँसू बहाए, वे इस प्रकार हैं:

मैं नश्वर हूं, लेकिन मैं नश्वरता नहीं चाहता।

---

71 बुखारी, "अदब," 96; मुस्लिम, नहीं. 2640.

मैं नपुंसक हूं, इसलिए मैं नपुंसक की इच्छा नहीं करता।

मैंने अपनी आत्मा को सर्व दयालु भगवान को समर्पित कर दिया है, अतः अब मुझे किसी अन्य की इच्छा नहीं है।

मैं केवल उसी को चाहता हूं जो सदैव मेरा मित्र बना रहे।

मैं तो एक तुच्छ कण हूँ, परन्तु मैं एक चिरस्थायी सूर्य की कामना करता हूँ।

मैं सारतः कुछ भी नहीं हूं, लेकिन मैं संपूर्ण सृष्टि की कामना करता हूं।

* * *

मुझे संसार में मत बुलाओ; मैं आया और मैंने इसे बुरा और नश्वर पाया।

असावधानी एक पर्दा थी; मैंने सत्य का प्रकाश छिपा हुआ देखा।

मैंने देखा कि सारी चीज़ें, सारी सृष्टि नश्वर और हानि से भरी हुई थी।

अस्तित्व, वास्तव में मैंने इसे धारण किया है।

अफ़सोस! यह अस्तित्वहीनता थी; मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा।

जहाँ तक जीवन की बात है, मैंने इसे अनुभव किया; मैंने देखा कि यह पीड़ा के भीतर पीड़ा थी।

बुद्धि शुद्ध प्रतिशोध बन गई; मैंने स्थायित्व को क्लेश के रूप में देखा।

जीवन एक हवा की तरह था, यह सनक में गुजर गया; मैंने पूर्णता को शुद्ध हानि के रूप में देखा।

कर्म तो केवल दिखावा थे; मैंने महत्वाकांक्षा को शुद्ध पीड़ा ही माना।

मिलन वस्तुतः अलगाव था; मैंने देखा कि इलाज ही बीमारी है।

ये रोशनियाँ अँधेरी हो गईं; मैंने इन दोस्तों को अनाथ होते देखा।

ये आवाजें मौत की घोषणाएं थीं; मैंने जीवितों को मृत देखा।

ज्ञान सनक में बदल गया; मैंने विज्ञान में हजारों बीमारियाँ देखीं।

सुख अमिश्रित पीड़ा बन गया; मैंने अस्तित्व को अ-अस्तित्व का मिश्रित रूप देखा।

मुझे सच्चा प्रियतम मिल गया है; आह! वियोग में मुझे बहुत दुःख हुआ।

मैंने अंततः ईश्वर को पा लिया है: (आप सांसारिक चीजों को त्यागने के अलावा उन्हें कभी नहीं पा सकेंगे।)

इस प्रकाश से मुझे दुनिया में स्वर्ग मिल गया है; मुर्दे पुनर्जीवित होने लगे हैं।

मैंने देखा है कि आवाज़ें ईश्वर की महिमा और उनके नामों का
स्मरण हैं।
चीजें परिचित हो गई हैं।
सुख दु:ख और पीड़ा में निहित है।
जीवन सत्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण बन गया है।
मैंने देखा है कि स्थायित्व आत्म-विनाश में निहित है।
सभी कण भगवान का नाम जपते हैं।
सब कुछ सत्य की गवाही देता है।

* * *

हर चीज़ में एक संकेत है जो इस बात की
ओर इशारा करता है कि वह एक है।

हे तुम जो यह सोचते हो कि दुनिया का सुख और खुशी असावधानी और धर्म के प्रतिबंधों की अनदेखी करने में है। मैंने एक बार अपने सांसारिक आत्म का परीक्षण किया। मैंने खुद को दो पर्वत चोटियों के बीच एक पुल पर देखा, जिसके नीचे एक गहरी घाटी थी। हर जगह अंधेरा था। मैंने दाईं ओर (अतीत में) देखा और केवल डरावने स्तर का अंधेरा देखा। मैंने बाईं ओर (भविष्य में) देखा और फिर से केवल भयानक अंधेरा देखा। मैंने नीचे देखा और एक गहरी, अथाह खाई देखी। मैंने ऊपर देखा और अंधेरे, बहरे और मूक बादलों को देखा जो दुख और शोक, निराशा और नुकसान भेज रहे थे। बाद में मैंने आगे देखा और अंधेरे के बीच सबसे दुर्भावनापूर्ण राक्षसों और बिच्छुओं, शेरों और भेड़ियों को देखा जिनके दांत फाड़ने के लिए तैयार थे। जब मैंने पीछे देखा, तो मुझे न तो मदद और न ही मददगार दिखाई दिया।

जब मैं निराश था और परीक्षा से थक गया था, तब ईश्वरीय मार्गदर्शन ने मेरी सहायता की। मैंने इस्लाम के चाँद को प्राणियों के ऊपर उगते देखा, और कुरान के सूरज को हर तरफ़ रोशनी करते देखा। मैंने (जीवन के) पुल को एक सड़क के रूप में देखा जो कि अल्लाह की नेमतों और रहम करने वाले की जन्नत के बीच फैली हुई है। मेरे दाहिनी ओर (अतीत के) बगीचे फैले हुए थे जो पैगम्बरों और संतों के नेक और शानदार फलों के फूलों से भरे हुए थे, जिनके नीचे समय की नदियाँ बह रही थीं जो उन्हें अनंत काल तक ले जा रही थीं।

मेरे बाईं ओर बगीचे थे जहाँ सर्व-प्रेमी, सर्व-उदार की दया से महत्वाकांक्षा और उम्मीद के फूल खिले थे। मेरे ऊपर दया के बादल मंडरा रहे थे जो जीवन के जल को प्रचुर मात्रा में बरसा रहे थे। इन बादलों के बीच में, सूरज मार्गदर्शन और शाश्वत खुशी के प्रकाश के साथ मुस्कुरा रहा था। मेरे सामने फैले खेतों में मेरे भाई-बहन, दोस्त और पालतू जानवर थे जिन्हें गुमराही के अंधेरे ने मुझे जंगली, हानिकारक जानवर के रूप में दिखाया था।

इस दर्शन को समझने के लिए यह श्लोक पढ़ें: ईश्वर रक्षा करने वाला मित्र है
जो लोग ईमान लाए हैं, उन्हें वह अंधकार की तहों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाएगा।
अविश्वासियों के लिए, उनके रक्षक मित्र वे लोग हैं जो अविश्वास और विद्रोह का नेतृत्व करते हैं।
वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की ओर ले जाते हैं (2:257)।

> हे ज्योतियों के प्रकाश! अपने प्रकाश नाम के लिए, हमें प्रकाश की ओर ले चलो।
> अंधकार के स्तरों से प्रकाश की ओर। आमीन।

हे अभागे ने कहा , जान ले ! तू एक मूर्ख बच्चे की तरह है जो धरती पर बैठा है।
समुद्र तट पर, जो सूरज की रोशनी को प्रतिबिंबित करने वाले बुलबुले गायब होने पर बिना रुके रोता है। बच्चा हर बुलबुले के फूटने पर रोता है, यह सोचकर कि सूरज मुस्कुरा रहा है
उसमें प्रतिबिंबित छवि हमेशा के लिए खो जाएगी। बच्चा रोता है क्योंकि बुलबुले बन जाते हैं
ठोस चीजों के मिश्रण के साथ मैला और अप्रिय, और नहीं दिखता
जब तक वह यह न समझ ले कि ये सभी प्रतिबिंब अभिव्यक्तियाँ हैं
समुद्र की सतह पर, लहरों के गालों पर, बूंदों में पुनः प्रकाशित होने वाली सूर्य की रोशनी की
आँखें।

जब दर्पण सूर्य को परावर्तित करता है तो सूर्य लुप्त नहीं हो जाता।
इसलिए, कुछ बुलबुले और उनकी छवियों का गायब होना चिंताजनक नहीं होना चाहिए।
किसी भी दर्दनाक क्षय या दुखद अलगाव को जन्म न दें। अपने उज्ज्वल चेहरे के साथ
और सुंदरता और इसकी महिमा की पूर्णता, दर्पणों की बहुलता में (जहाँ यह प्रतिबिंबित होता है) सतत सूर्य की अभिव्यक्तियाँ निरंतर नवीनीकृत होती रहती हैं। दर्पण और अन्य वस्तुएँ सूर्य की अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करती हैं

अपना कार्य प्रसन्नतापूर्वक पूरा करते हैं और जब अपना कार्य पूरा कर लेते हैं तो मुस्कुराते हुए छिप जाते हैं।

तुम जीवन सागर के किनारे बैठ कर प्राणियों की अस्तव्यस्तता पर रोते हो
पूर्णता, सौंदर्य और अनुग्रह के बारे में, तथा ईश्वरीय आशीर्वाद के फलों के क्षय के बारे में, जब उनका समय समाप्त हो जाता है। तुम सोचते हो कि सुंदरता सुंदर चीजों की होती है और फल पेड़ों के होते हैं। संयोग के तूफान उन्हें उड़ा ले जाते हैं,
और आप सोचते हैं कि वे अनंत काल के अंधकार में खो जाते हैं। लेकिन,
याद रखें कि जिसने आपकी प्रिय चीज़ों को प्रकाश से प्रकाशित किया है
सौन्दर्य का भी देवता वही है, जिसने ब्रह्माण्ड के बगीचे में सभी फूलों को प्रकाशित किया है, तथा प्रेममय कोकिलों के हृदयों को उनकी ओर आकर्षित किया है।

हे अभागे! तू कब तक रोएगा क्योंकि तूने मेरे फलों को खा लिया है।
आपका हाथ गायब हो गया है? स्प्लिटर के निरंतर इनाम पर विचार करें
उन फलों के पेड़ को बनाए रखने से अनाज और बीज की रक्षा होती है। अगर वह पेड़
फल देना बंद कर देता है, दुनिया भर में उसकी कृपा की सीमा पर विचार करें,
जहाँ एक ही तरह के असंख्य पेड़ पाए जाते हैं।
इस वर्ष फल के बारे में, नए साल के साथ नवीनीकृत होने वाली उनकी कृपा की सीमा पर विचार करें।

मौसमों और वर्षों के बारे में सोचो। फिर प्रतीकों या अमूर्त रूपों की दुनिया में और मध्यवर्ती दुनिया में जो कुछ तुम इस दुनिया में देखते हो, उसके साथ उसकी कृपा की सीमा पर विचार करो। अंत में, परलोक के उसके सबसे विशाल, शाश्वत क्षेत्र की सीमा पर विचार करो, जहाँ तुम पाओगे कि तुमने इस दुनिया के बगीचे में क्या-क्या दोस्त बनाए हैं।

यदि आप दान के बारे में सोचते हैं लेकिन उन्हें देने के कार्य के प्रति उदासीन हैं, तो आपके पास रोने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। दान के कार्य और उसके जारी रहने को दान में ही देखें। दान के कार्य में, दाता को उसके व्यापक दान के साथ-साथ उसकी दया की पूर्णता को भी देखें। उसके प्रति कृतज्ञता से मुस्कुराएँ और उसकी कृपा से राहत पाएँ।

जब आपकी आंखें और दिल खूबसूरत चीज़ों के नष्ट होने पर रोते हैं, तो उन क्षेत्रों की बहुलता और विशालता पर विचार करें, जो एक दूसरे के भीतर हैं और जिनमें वह सब समाया हुआ है, जिसे आप प्यार करते हैं। उनके समानों में उनके नवीनीकरण का आनंद आपको वियोग के दर्द को भूलने का कारण बनेगा। वे सभी क्षेत्र दर्पण हैं जो सर्व-महान, उदार, शाश्वत, शाश्वत, स्वयं-अवस्थावान, स्थायी, जिसका कोई आरंभ या अंत नहीं है, और जो कभी नहीं बदलता है, की सुंदरता से संबंधित प्रकाश की छायाओं की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करते हैं।

फिर भी।

दर्पण में जो कुछ भी प्रतिबिंबित होता है, उसका स्वामित्व दर्पण के पास नहीं होता, इसलिए यदि दर्पण का अस्तित्व समाप्त हो जाए, तो आपको उसके लिए रोने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपना ध्यान संसार से हटाकर अपने हृदय के दर्पण की ओर मोड़ें, ताकि आप सौंदर्य के सूर्य को देख सकें और जान सकें कि संसार में जो कुछ भी आप देखते हैं और जिससे प्रेम करते हैं, वह सब उसी का संकेत है।

उसकी कृपा और सौन्दर्य की निशानियों में से यह भी है कि उसने आकाश को दीपों से और धरती को फूलों से सजाया। उसकी सौन्दर्य की निशानियों में से यह भी है कि उसने मनुष्य को सबसे अच्छे ढंग से और सबसे सुन्दर रूप में बनाया और ब्रह्माण्ड की पुस्तक को सबसे शानदार अक्षरों में लिखा। उसकी श्रेष्ठता की निशानियों में से यह भी है कि उसने पैगम्बरों की आत्माओं को चमकीला और तेजस्वी बनाया, संतों की आंतरिक इंद्रियों को प्रकाशित किया और अपने सौन्दर्य के प्रकाश से उसे जानने वालों के दिलों को सजाया।

हे अहंकारी, तू जानता है कि तू नपुंसकता और दरिद्रता का स्वामी है, जो इतनी सारी सीमाओं और प्रतिबंधों में बंधा हुआ है। तेरे और उसके बीच कोई तुलना नहीं है, जिसके पास असीम शक्ति और धन है, जिसके नाम और गुण अप्रतिबंधित हैं। सारी सृष्टि उसकी शक्ति की मुट्ठी में है, और आकाश उसके "दाहिने हाथ" में लिपटा हुआ है। कोई भी कण उसके साथ नहीं चलता-

उसकी अनुमति के बिना। उसकी प्रभुता और ईश्वरत्व में उसका कोई साझी नहीं है और न ही कोई उसके प्रभुत्व और प्रभुता में उसका मुकाबला कर सकता है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।

यदि आप अपने सृष्टिकर्ता के साथ उसके प्रभुत्व में साझेदारी करना चाहते हैं, तो आपके और उसके बीच एक तुलनीय संबंध होना चाहिए।
लेकिन ऐसा कोई रिश्ता नहीं है, और न ही कभी हो सकता है। एक मच्छर उन दुनियाओं के लिए हर किसी के आकार के अनुसार उन समृद्ध रूप से सजे हुए वस्त्र कैसे बुन सकता है? आपका कर्तव्य एक पूजा करने वाला सेवक होना है, क्योंकि इसमें आपकी क्षमता की पूर्णता निहित है। सेवकत्व विनम्रता और ईश्वर के सामने खुद के कुछ न होने की स्वीकृति पर आधारित है और इसी से पनपता है। यह इस स्वीकृति से शुरू होता है और ईश्वर का प्रिय होने पर समाप्त होता है, जो ईश्वर द्वारा प्रेम किए जाने का फल देता है। चूँकि सेवकत्व आधिपत्य और संप्रभुता के विपरीत है, इसलिए उनके बीच कोई तुलना नहीं हो सकती। आप ईश्वर से प्रेम करते हैं और उनकी दया के पात्र हैं, जो उनकी आधिपत्य और संप्रभुता से आपकी दूरी के बारे में आपकी जागरूकता पर आधारित है।

जैसे एक काला पन्ना अपने ऊपर लिखे अक्षरों को प्रकाश में दिखाता है, वैसे ही दासत्व विपरीतता के माध्यम से प्रभुता को दर्शाता है और दिखाता है। एक पन्ना जितना काला होता है, वह उतना ही स्पष्ट और उज्ज्वल रूप से प्रभुता को दर्शाता है। ईश्वर के समक्ष प्राणी अपनी शून्यता के प्रति जितने अधिक सचेत होते हैं, वे उतने ही अधिक उज्ज्वल और स्पष्ट रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व की अभिव्यक्तियों को दर्शाते हैं। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

ऐ दोस्त, जान लो कि कुछ नबियों की बातें धार्मिक कामों के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती हैं। कुछ रिवायतें कहती हैं कि जो कोई कुछ खास नेक काम करेगा, उसे उतना ही सवाब मिलेगा जितना कि सारी इंसानियत और जिन्न को मिलता है। कुछ कहते हैं कि ऐसी रिवायतें सिर्फ़ लोगों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए होती हैं; दूसरे कहते हैं कि वे दिखाती हैं कि ये काम कितने पुण्य के हैं। हालाँकि, अगर कुछ शर्तें पूरी की जाएँ तो वादा किया गया सवाब पाना संभव है। उनकी सच्चाई को साबित करने के लिए इतना ही काफी है कि कुछ लोग, लेकिन सभी नहीं, जो ऐसे काम करते हैं, वादा किया गया सवाब पा सकते हैं - जब वे उन्हें करते हैं, तब नहीं, बल्कि सिर्फ़ कुछ परिस्थितियों में-

परिस्थितियों.

इस तरह के वर्णन ऐसे कार्यों में संभावित पुरस्कार का विचार व्यक्त करते हैं।
हालाँकि, इसका फल हर किसी को नहीं मिल सकता है या जब भी वे कार्य किए जाते हैं, तो उन्हें नहीं मिल सकता है, क्योंकि इसे पाने के लिए अत्यधिक ईमानदारी और ईश्वर की स्वीकृति की आवश्यकता होती है।
इसके अलावा, कोई भी पुरस्कार उनकी असीम कृपा और उदारता से आता है, और सेवक को शाश्वत निवास में पुरस्कार की अनंत आवश्यकता महसूस होगी। इस प्रकार,

एक सेवक यह नहीं समझ सकता कि उसने क्या दिया है, जिसकी असीम दया ऐसे असीम जरूरतमंद सेवकों के लिए कोई सीमा नहीं है।

ईश्वर की दया, जब ईश्वर के दृष्टिकोण से देखी जाती है, तो अनंत को दर्शाती है और इसलिए यह सेवक के ज्ञान से परे है। उदाहरण के लिए, यह वर्णित है कि जो कोई भी एक विशेष प्रार्थना पढ़ता है, उसे मूसा और हारून को दिए गए इनाम के बराबर इनाम दिया जाएगा। एक निश्चित आयत को पढ़ने के लिए दिया जाने वाला इनाम, आपके सीमित दृष्टिकोण में, इस सीमित दुनिया में नहीं बढ़ता है। हालाँकि, जब ईश्वर की असीम दया के संबंध में देखा जाता है, तो वादा किया गया इनाम इरादे की ईमानदारी या पवित्रता और ईश्वर द्वारा इसके स्वीकार्य होने पर निर्भर करता है। साथ ही, कथन में तुलना मात्रा को व्यक्त करती है, गुणवत्ता को नहीं। सूरज की छवि वाली एक बूंद समुद्र से कह सकती है: "तुम्हारा चेहरा विशाल है, लेकिन मेरी आँख सूरज की रोशनी और उसके रंगों को ग्रहण कर सकती है।"

प्रश्नगत भविष्यवक्ता कथनों में जिस इनाम का वादा किया गया है, वह बिना शर्त अस्तित्व की दुनिया से संबंधित है। उस दुनिया का एक छोटा कण इस भौतिक क्षेत्र से एक दुनिया को समाहित कर सकता है, जैसे कि कांच का सबसे छोटा टुकड़ा स्वर्ग को समाहित कर सकता है। कभी-कभी, कोई व्यक्ति आशीर्वादित, शुभ अवस्था में एक अच्छे शब्द से दया का खजाना आसानी से खोल सकता है। लोग (हर चीज को अपने दर्पणों से देखते हैं, और) अपने आंशिक, व्यक्तिगत मानदंडों के आधार पर निरपेक्ष और सार्वभौमिक का न्याय करते हैं। हालाँकि, सच्चा ज्ञान अदृश्य के ज्ञाता और हृदयों को परिवर्तित करने वाले के पास है।72

समाप्त करने के लिए:

- आपकी आजीविका या तो किसी और की पसंद के परिणामस्वरूप आपके पास आती है या स्वतंत्र विकल्प के हस्तक्षेप के बिना।

---

72 इस संबंध में लेखक ने एक और बात कही है: इस तरह के आख्यानों में दिए गए इनाम को भी हमारी कल्पना के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। एक आदिम, असभ्य व्यक्ति की कल्पना करें जिसने कभी राजा को नहीं देखा और इसलिए वह अपने राज-पद के वैभव से अनभिज्ञ है। यह व्यक्ति एक गांव में एक राजा की कल्पना करता है और अपने संकीर्ण अनुभव के साथ राजा को उस राजा से थोड़ा बड़ा समझता है। पूर्व में रहने वाले कबीलों में एक समय ऐसे लोग थे जो कहा करते थे: "हमारा राजा जानता है कि सुल्तान क्या करता है, जबकि वह आग पर एक सॉस पैन में अपना बुलगुर सूप पकाता है।" दूसरे शब्दों में, वे सुल्तान को एक साधारण व्यक्ति से बड़ा मानते थे, जो अपना सूप खुद पकाता था। अगर कोई इन लोगों में से किसी से कहे, "अगर तुम आज मेरे लिए यह काम कर दोगे, तो मैं तुम्हें उतना ही वैभव दूंगा जितना तुम सोचते हो कि सुल्तान के पास है," तो वह उस व्यक्ति को उतना ही वैभव देने का वादा कर रहा होगा जितना वह कल्पना कर सकता है - यानी, जितना सुल्तान के पास है। इस प्रकार, हमारे सांसारिक विचारों और संकीर्ण मन के साथ, हम सुल्तान की जीवनशैली के उदाहरण में व्यक्ति की तरह भी, परलोक से संबंधित वास्तविक पुरस्कारों के बारे में नहीं सोच सकते। प्रश्नगत परंपराएँ जो बताती हैं, वह ईश्वर के एक विश्वासी सेवक के लिए अज्ञात पुरस्कार की तुलना करना है। देखें सैद नूरसी, द वर्ड्स, द लाइट, इंक., न्यू जर्सी: 2005. (ट्र.)

• आपकी आवश्यकता और इच्छा अनंत हैं, और इसलिए आपका इस दुनिया और अगली दुनिया की हर चीज़ से संबंध है।

• सबसे मूर्ख व्यक्ति वह है जो असली सूर्य को न पहचानकर उससे प्रेम करता है

वह उस दर्पण को संरक्षित करने का प्रयास करता है जिसमें वह प्रतिबिंबित होता है।

• सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने मानव स्वभाव में अनेक क्षमताएँ स्थापित की हैं

विशिष्ट उद्देश्यों के लिए। • दिव्य

नाम की अभिव्यक्तियाँ जो सब कुछ रिकॉर्ड करती हैं और सुरक्षित रखती हैं

इस ओर संकेत किया गया है: जो कोई परमाणु के बराबर भी अच्छाई करेगा, वह उसे देखेगा, और जो कोई परमाणु के बराबर भी बुराई करेगा, वह उसे देखेगा।

• तुम अपना दिल अस्थायी चीज़ों पर क्यों लगाते हो जो अंततः ख़त्म हो जाएँगी?

क्या आप?

• यह कुरान का सिद्धांत है कि आप उसे, महिमावान को, अपना ईश्वर मानें।

वह तुमसे बड़ा है और तुम्हारी पूजा के योग्य है। उसका हर चीज़ पर अधिकार है; तुम्हारा किसी चीज़ पर अधिकार नहीं।

• प्रत्येक मनुष्य को न्याय के दिन उसके पापों के साथ पुनर्जीवित किया जाएगा।

उसकी वास्तविक पहचान और शरीर, शीर्षक और रूप।

• कुरान की आयतों के अंत में आने वाले वाक्यांश या वाक्य

स्वयं श्लोकों से संबंध रखते हैं, चर्चा की गई विषय-वस्तु से संबंध रखते हैं,

सूरा और पूरा कुरान। • शैतान आपको आपके

अहंकार और दुर्जेय दंभ के माध्यम से धोखा देता है। • दो यूरोप हैं। एक ने हमारे जीवन को अधिक आरामदायक बनाने के लिए ईसा के धर्म और इस्लामी सभ्यता का उपयोग किया है, जबकि दूसरे ने प्रकृतिवाद और भौतिकवाद का उपयोग करके हमारे अधिकांश दुखों को जन्म दिया है।

• आधुनिक सभ्यता और कुरान के छात्र। • इस्लामी और आधुनिक सभ्यता।

• इतने सारे काफ़िर क्यों हैं? • वे लोग जो मुसलमानों को

सांसारिक जीवन की ओर बुलाते हैं। • अपनी संपूर्ण दया से, ईश्वर ने सेवा के

पुरस्कार में कुछ हिस्सा शामिल किया है

सेवा करने में, और कार्य करने में कर्म के पुरस्कार का हिस्सा। • जो लोग खुद पर,

कारणों पर और दुनिया पर भरोसा करते हैं। • ब्रह्मांड की पुस्तक (शक्ति की पुस्तक) के

अनुसार अंकित है

प्रकट पुस्तक (ज्ञान और भाग्य की पुस्तक) के उपाय,

जो लिखे जाने वाले पूर्व के नीचे रखे गए पंक्तिबद्ध कागज की शीट की तरह है
सटीक माप में.

• पैगम्बर और उनकी पैगम्बरी मानव जीवन के सर्वोच्च स्तर का प्रतिनिधित्व करते हैं

पूर्णता और अच्छा.

• ईश्वर के ज्ञान के साक्ष्य और प्रमाण की तीन श्रेणियाँ।

• वनस्पति और पशु जगत उनके लिए सबसे व्यापक क्षेत्रों में से हैं

शक्ति के निपटान और उसकी विशेषताओं की अभिव्यक्तियाँ, और उनमें से अधिकांश शामिल हैं

उनके नामों को प्रतिबिंबित करने वाले “दर्पण”।

• कभी-कभी किसी प्रजाति के "बहुत अधिक" सदस्य होने का कारण। • विशेष रूप से दैवीय शक्ति का निपटान जितना व्यापक होता है, और उतना ही अधिक होता है

जितने अधिक समान लोग होंगे, व्यक्ति पर अनुग्रह उतना ही अधिक होगा। • अनुग्रह की पूर्णता बुद्धि की पूर्णता से होती है, बुद्धि की पूर्णता

व्यवस्था की पूर्णता के माध्यम से होता है, और व्यवस्था की पूर्णता संतुलन या उपायों की पूर्णता के माध्यम से होती है। इसका एक उदाहरण पाँच कलाओं में पाई जाने वाली कला है
मानव इंद्रियाँ.

• मुहम्मद पैगंबरों की मुहर हैं क्योंकि उन्होंने पैगंबरों की सीमाओं को बढ़ाया

धर्म के बारे में मेरा मानना है कि इससे अधिक व्यापक या परिपूर्ण धर्म असंभव है।

• गुमराह लोगों की दुनिया और सही मार्ग पर चलने वालों की दुनिया। • जो लोग सोचते हैं कि इस दुनिया में सुख और खुशी अज्ञानता से आती है-

धार्मिक दायित्वों का निर्वहन करना।

• आपके अहंकार में केवल पूर्ण नपुंसकता और दरिद्रता है, और वह सीमित है

इतनी सीमाओं और प्रतिबंधों के भीतर कि वह कुछ भी नहीं कर सकता। • कुछ भविष्यवक्ताओं की बातें धार्मिक गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर क्यों बताती हैं?
काम?

आठवां ग्रंथ

आठवां ग्रंथ

क़ुरआन के मार्गदर्शन की किरणों से एक चिंगारी

O वह जो सम्पूर्ण प्रभुत्व और प्रशंसा का अधिकारी है, मानवता के पालनहार पर शांति और आशीर्वाद प्रदान कर, जिसे आपने "ऐ पैगम्बर" कहकर संबोधित किया है (जिनमें पैगम्बरी के सभी गुण सबसे उत्तम स्तर पर हैं) (8:64)।

उन्होंने जवाब दिया: "मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।" उनका जवाब सर्वोच्च स्वर्ग के फ़रिश्तों तक भी पहुँचा। आपने उन्हें आदेश दिया: "शुभ सूचना दो और सावधान करो।" उन्होंने पुकारा: "हे मनुष्यों, अपने रब की इबादत करो" (2:21)। उनका आह्वान समय और स्थान में गूंज उठा है, और वे शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बन गए हैं (2:119)। वे जो देखते हैं, उसकी सच्चाई को देखते हैं और उसकी गवाही देते हैं, समय और स्थान के पार मानवता की सभी पीढ़ियों को पुकारते हैं, और सभी समय और स्थानों में उनकी आवाज़ सुनी गई है, ताकि दुनिया कुरान के आह्वान से भर जाए।

उन्होंने विश्व के एक बड़े भाग को अपने शासन के अधीन कर लिया है, जिसे उन्होंने अपनी संपूर्ण ईमानदारी (जिसका प्रमाण उनके जीवन और आचरण से मिलता है) और अपने संदेश में अपनी अत्यंत विश्वसनीयता और विश्वास (जिसका प्रमाण उनके जीवन की सादगी और सांसारिक सुखों से दूर रहना है) के द्वारा अपनी और कुरान की ओर आकर्षित किया है। उन्होंने इन लोगों को अपने असीम विश्वास और मन और हृदय की शांति (जिसका प्रमाण उनके सिद्धांतों और शिक्षाओं की ताकत से मिलता है) और अपने विश्वास की पूर्णता (जिसका प्रमाण यह है कि वे ईश्वर की सेवा में सबसे आगे थे और पापों से बचने में सबसे अधिक सावधान थे) के द्वारा भी आकर्षित किया है।

हे अज्ञानी आत्मा, जान ले ! तेरे लिए जितने द्वार खुले हैं,
ईश्वर जैसे ब्रह्माण्ड (पुस्तक) और उसके पृष्ठों के भाग हैं, और जैसे
यौगिक हैं। यह मान लेना कितना गलत है कि सभी दरवाजे बंद हैं
जब सिर्फ़ एक ही तुम्हारे करीब हो! तुम उस व्यक्ति की तरह हो जो सैनिक को न देखकर
एक शहर में, यह निष्कर्ष निकालता है कि देश में कोई राजा नहीं है और इसलिए उसके नियमों की अनदेखी करता है
और निर्देश। वास्तव में, देश राजा के सैनिकों, अधिकारियों और सरकारी कार्यालयों से भरा हुआ है।

हे मित्र! यह जान लो कि इससे यह सिद्ध होता है कि बाह्य सत्ता जीवन, चेतना और ज्ञान के नाम पर जो कुछ भी प्रदर्शित करती है, उससे आंतरिक सत्ता अधिक परिपूर्ण और उत्कृष्ट है, जीवन में अधिक सशक्त है, सुशोभित है, सूक्ष्म है और श्रेष्ठ है।
पूर्णता। बाह्य अस्तित्व में जो कुछ भी दिखाई देता है वह आंतरिक अस्तित्व का ही संकेत है
अस्तित्व का जीवन, चेतना और पूर्णता। अगर आंतरिक अस्तित्व होता
निर्जीव होने पर, बाह्य अस्तित्व जीवन और चेतना प्रदर्शित नहीं कर सकता।
आपका पेट आपके घर से कहीं अधिक व्यवस्थित है, आपकी त्वचा अधिक उत्कृष्ट है
आपके कपड़ों से अधिक बुनी हुई, और आपकी स्मृति आपकी पुस्तक से बेहतर ढंग से डिज़ाइन की गई है।
इन उदाहरणों से भौतिक और अभौतिक दुनिया, दृश्यमान और अदृश्य दुनिया, तथा इस दुनिया और अगली दुनिया की तुलना करें। आपका शारीरिक और दुष्ट-आज्ञाकारी स्व कल्पना और इच्छा की आँखों से देखता है, और इस प्रकार देखता है कि सब कुछ ठीक है।
बाह्य अस्तित्व को सजीव और सुन्दर रूप में प्रस्तुत करना तथा निर्जीव, अंधकारमय,
और भयानक आंतरिक अस्तित्व.

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारे चेहरे में ऐसी विशेषताएं हैं जो तुम्हें दूसरों से अलग करती हैं।
अन्य सभी लोग, भूत और भविष्य, यद्यपि सभी मानव चेहरे एक जैसे हैं
मुख्य भाग और संरचना। ऐसा लगता है मानो एकता ने बहुलता के भीतर खुद को प्रकट किया है। यह निर्माता की एकता को दर्शाता है, जबकि अनंत अंतर जो कि
व्यक्तियों में भेद करना यह दर्शाता है कि निर्माता असीम रूप से स्वतंत्र है
और बुद्धिमान है और उसके पास पूर्ण स्वतंत्र विकल्प है। यह वास्तविकता तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब लोगों को व्यक्तिगत रूप से माना जाता है। ऐसा बुद्धिमान भेद,
फलदायी विभेदन, और लाभकारी विभेदन उद्देश्यपूर्ण विकल्प को सिद्ध करते हैं
एक सर्व-स्वतंत्र की, एक पूर्णतया इच्छुक की इच्छा की, तथा एक सर्वज्ञ की ज्ञान की।

सारी महिमा उसकी है जो अनंत विशेषताओं को अपने में समाहित करता है और उन पर अंकित करता है।
आपके चेहरे का पन्ना। हालाँकि उन्हें तर्क और
सतही दृष्टि से देखे जाने पर, उन्हें अंतर्दृष्टि के माध्यम से पहचाना जा सकता है और
ध्यानपूर्वक देखने पर विस्तार से समझा जा सकता है। इस तरह के जानबूझकर व्यवस्थित और लाभकारी
मानवीय अंतर और सदस्यों के बीच संगत समानता
एक ही प्रजाति के लोगों का जन्म अंधे संयोग या संयोग के कारण नहीं हो सकता। बल्कि,
वे एक सर्व-श्रवण और सर्व-देखने, सर्व-जानने और सर्व-ज्ञान की कला हैं

बुद्धिमान व्यक्ति। ऐसी परिपूर्ण बहुलता में संयोग के लिए कोई स्थान नहीं है। यह नहीं है
उपेक्षित और अपने हाल पर छोड़ दिया गया है, बल्कि यह एक सर्वज्ञ उद्देश्य और इरादे, एक सर्वज्ञ स्वतंत्र
विकल्प के संचालन का क्षेत्र है, और
एक सर्व-श्रवण और देखने वाली इच्छा। इस प्रकार ईश्वर की इच्छा में संयोग के लिए कोई जगह नहीं है
यह अपने "भाई" प्रकृतिवाद और "पिता" ईश्वर के साथ साझीदारों के साथ, अस्तित्वहीनता और शाश्वत
विनाश के नरक में है। आयत: उसकी निशानियों में से आकाश और धरती का निर्माण और

तुम्हारी भाषाओं और रंगों की विविधता (30:22) ईश्वरीय बुद्धि की अभिव्यक्ति के प्रथम और अंतिम स्तर की ओर संकेत करती है।

हे मित्र, जान लो कि शैतान फुसफुसाता है: "यदि गाय एक प्राणी और डिजाइन है
सर्वज्ञ, शाश्वत शक्ति की कलम इतनी बेचारी क्यों है?
एक सर्वज्ञ परम इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति की नियति इसकी त्वचा के नीचे काम करती है
और उसके शरीर के भीतर, उसकी बाहरी त्वचा (उसके शरीर का स्पष्ट हिस्सा) इतनी क्यों है
विनम्र और अज्ञानी, असहाय और दुखी?”

उत्तर: यदि शाश्वत शक्ति की कला ने हर चीज़ को क्या पहनाया?
इसकी जरूरत है, आपके गधे का कान आपसे ज्यादा बुद्धिमान और कुशल होगा
और आपके शिक्षक, और आपकी उंगलियों के अंदर का हिस्सा चेतना और इच्छाशक्ति में आपसे बेहतर
होगा। इसके अलावा, आपकी उंगलियों में आपकी वर्तमान चेतना और इच्छाशक्ति की तुलना में अधिक
चेतना और इच्छाशक्ति होगी। सब कुछ
इसे विस्तार और विकास के लिए एक निश्चित क्षमता और संभावना दी गई है।

इसके अलावा, ईश्वरीय नियति हर चीज़ के लिए एक निश्चित माप निर्धारित करती है
और उस माप के अनुसार एक पात्र। यह क्षमता निर्धारित करता है
हर चीज़ के परम स्रोत से क्या प्राप्त होता है।
अंदर से बाहर तक इच्छाशक्ति और उसकी क्षमता के अनुरूप है,
आवश्यकता और उसकी मात्रा के अनुपात में, तथा क्षमता और क्षमता की सीमा तक
उस पर प्रकट हुए दिव्य नामों द्वारा निर्धारित माप के अनुसार
गाय भी इसका अपवाद नहीं है, क्योंकि किसी अन्य प्राणी के अंदर का हिस्सा भी इससे अलग नहीं है।
इसके बाहरी स्वरूप का निर्धारण करें। जो व्यक्ति सूर्य के सभी गुणों को अपने अंदर होने की अपेक्षा करता है
एक बुलबुले में प्रतिबिंबित छवि घोर भ्रामक है, क्योंकि एक छवि इंगित करती है
यह मूल तो है, लेकिन इसमें सूर्य के सभी गुण नहीं हैं।

हे मित्र, जान लो कि तुम बुद्धि से बनाई गई एक सचेत कलाकृति हो, जो निर्माता के गुणों को दर्शाती
है। तुम्हारा जीवित होना, निर्माता के गुणों को दर्शाता है।
बुद्धि जो सृजन को मूर्त रूप देती है, वह ज्ञान जो परम शक्ति से युक्त है
चुनाव का अधिकार, और वह शक्ति जो देखती है कि आप क्या पाने के लायक हैं। आप एक ऐसे व्यक्ति का फल हैं जो
दया जो आपकी ज़रूरत की पुकार सुनती है, एक कार्य का मूर्त रूप है
सर्व-इच्छा जो आपकी क्षमता की इच्छा के अनुसार इच्छा करती है, और एक सर्व-इच्छा का पक्ष लेना

यह जानना कि आपकी मांगें क्या हैं। आप आकार देने, मापने का एक रूप हैं
भाग्य जानता है कि आप कैसे बने हैं। आप इसे कैसे बाहर कर सकते हैं?
अपनी आंशिक इच्छा और चेतना के साथ, सृष्टि के सामान्य नियम से खुद को अलग कर लो, और फिर पूरे की तुलना अंश से करो? तुम अपने प्रभु और मालिक से कैसे बेखबर हो सकते हो, जो हर चीज़ का मालिक है और उस पर प्रभुत्व रखता है? तुम कैसे कल्पना कर सकते हो, कि सारी सृष्टि में ज्ञान होने के बावजूद, कोई भी तुम्हें नहीं देख रहा है, जो सब कुछ सुनता और देखता है,

सर्वज्ञ, सर्वप्रथम उत्तर देने वाला (पुकारने वाला, प्रार्थना करने वाला), सर्व-सहायक,
कौन तुम्हारी पुकार सुनता है, कौन तुम्हारी दीनता देखता है, कौन तुम्हारे पापों को जानता है?

हे दुखी आत्मा! क्या तुम सोचते हो कि तुम इस क्षेत्र से बाहर हो?
ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करना और इस प्रकार अन्य सभी प्राणियों के साथ अन्याय करना, उन्हें कोई महत्व न देना, उनके आगे झुकने के लिए विवश महसूस करना, या स्वयं को ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करने वाला समझना।
उन्हें प्रबंधित करने के लिए कौन जिम्मेदार है? आप इतना बोझ नहीं उठा सकते।
ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ना, जो सृष्टि को दी गई आदिम प्रकृति से आपके अलगाव को दर्शाता है, और ईश्वर के क्षेत्र में प्रवेश करता है
प्रभुत्व, जहाँ आप मन और दिल की शांति पा सकते हैं और सभी प्राणियों के सम्मानित भाई या बहन बन सकते हैं।
अन्यथा, आप एक ऐसे व्यक्ति की तरह हैं जिस पर आरोप लगाया गया है
राजा का सामान ले जाने वाले जहाज़ पर स्टीयरिंग व्हील संभालना।
जहाज पर भार रखकर हल्के से स्टीयरिंग करने वाला ऐसा व्यक्ति
अपनी पीठ पर बोझ ढोता है। थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति कहेगा:
"मैं इस जहाज पर यात्रा कर रहा हूँ, इसलिए मुझे अपना सामान राजा के सामान के पास रखना चाहिए, मेरे प्रभु और प्रशासक।" इसके अलावा, हे दुखी आत्मा, आराम और शांति प्राप्त करें
इस्लामी नियमों और सिद्धांतों को मुसलमान के जहाज पर रखकर
दुनिया के मन.

हे मित्र, यह जान लो कि जिसने तुम्हें बनाया है, उसने ही ब्रह्माण्ड और उसकी सामग्री को भी बनाया होगा, क्योंकि जो कुछ तुम्हारे अन्दर है, वह ब्रह्माण्ड में भी विद्यमान है।
जिसने तुम्हें बनाया है, वह सभी चीजों का निर्माता होगा, क्योंकि निर्माता
तरबूज का निर्माता उसके बीज का भी निर्माता है, जो तरबूज से लिया गया एक छोटा सा नमूना है और उसके भीतर समाहित है।

हे मित्र, जान लो कि एक सीमित प्राणी के रूप में तुम्हारा शरीर, जीवनकाल और
सभी शक्तियों पर प्रतिबन्ध है। अपना छोटा, क्षणभंगुर जीवन क्षणभंगुर पर बर्बाद मत करो
चीजों को मत खरीदो; बल्कि इसे उन चीजों पर खर्च करो जो स्थायी हैं ताकि वे स्थायी हो सकें। अधिक से अधिक, यहाँ तुम्हारा जीवन 100 साल तक चलेगा, जैसे कि 100 सूखे मेवे खाना
खजूर। उन्हें पैदा करने वाले पेड़ के बिना, वे कुछ लाभ देते हैं (लेकिन कारण
जीवन में केवल अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जीवन के बाद वे आपके किसी काम के नहीं रह जाते।
मरो। यदि आप परलोक की तलाश करते हैं (और उन खजूरों को उसकी मिट्टी में गाड़ देते हैं) और उन्हें पानी देते हैं
शरिया के अनुसार, आप 100 शानदार खजूर के पेड़ प्राप्त कर सकते हैं।

100 सूखे खजूर के बदले 100 उत्तम खजूर के पेड़ केवल अग्नि की लकड़ी के बराबर हैं।

हे मित्र, जान लो कि शारीरिक आत्मा का यह विश्वास कि वह किसी तरह भाग्य और दैवीय गुणों की अभिव्यक्ति के क्षेत्र से बाहर है, सभी भ्रम, संदेह और गुमराही का स्रोत है। यह कथित बहिष्कार शारीरिक आत्मा को यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि वह ईश्वरीय शासन से मुक्त है। और इसलिए यह

ईश्वर के राज्य और उसकी शक्ति के नियंत्रण से वह सब कुछ बाहर कर देता है जो अस्तित्व में आता है, जो ईश्वरीय नियति पर निर्भर करता है और एक या अधिक ईश्वरीय नामों द्वारा शासित होता है। जबरन सादृश्यों और व्याख्याओं के माध्यम से जो इसे शैतानों का शिक्षक बना देगा, शारीरिक स्व ईश्वर के साथ भागीदारों को उस निर्दोष चीज़ से जोड़ने से आने वाली अपनी कुछ स्थितियों को दर्शाता है।

शारीरिक, बुराई को नियंत्रित करने वाला स्व एक शुतुरमुर्ग जैसा होता है - यह अपने खिलाफ़ मौजूद चीज़ों को अपने पक्ष में देखता है। या यह सोफिस्टों की तरह है, जो एक दूसरे से बहस कर रहे दो लोगों में से एक से कहते हैं: "आपके प्रतिद्वंद्वी के तर्क आपको अस्वीकार करते हैं," और फिर दूसरे की ओर मुड़ते हैं और कहते हैं: "आपके प्रतिद्वंद्वी के तर्क आपके तर्क को अमान्य करते हैं। आप दोनों गलत हैं।"

हे मित्र, जान लो कि दैहिक आत्मा परलोक को इसी लोक का विस्तार मानती है और अपनी असावधानी जारी रखना चाहती है। परलोक के बारे में सोचते हुए, यद्यपि उसके आने का उसे भरोसा नहीं है, फिर भी वह संसार के विनाश के भय और पतन की पीड़ा से मुक्ति चाहती है। असावधानी या संदेह (परलोक के बारे में) का आश्रय लेकर, वह परलोक के लिए काम करने की परेशानियों से बचना चाहती है। वह मृत पीढ़ियों को जीवित (पर छिपी हुई) मानती है और मृत्यु से कुछ नहीं सीखती। परलोक की मिट्टी में अपनी सांसारिक अपेक्षाओं को रोपने के भ्रम में (परलोक को सांसारिक अपेक्षाओं से चिपके रहने के बहाने के रूप में उपयोग करते हुए) वह सोचती है: "मेरी अपेक्षाओं के दो पहलू हैं: एक संसार से संबंधित है, जो अनित्य है और धूल की तरह बिखरता है; दूसरा परलोक से संबंधित है, जो संसार और उसके विस्तार के समान आधार पर बना है।" उदाहरण के लिए, ज्ञान के दो पहलू हैं: एक प्रकाशित, दूसरा अंधकारमय। शैतानी शारीरिक आत्मा प्रबुद्ध पक्ष को दिखाती है और अपनी आड़ में अंधकार को पेश करती है। लोगों को यह समझाने की कोशिश करके कि ज्ञान परलोक में फल देगा, यह उन्हें सांसारिक लाभ के लिए इसका उपयोग करने के लिए कहता है। संक्षेप में, शारीरिक आत्मा एक शुतुरमुर्ग या शैतानी सोफिस्ट की तरह है।

हे मित्र, जान लो कि मैं पूर्णतः आश्वस्त हूं कि यदि ईश्वर को सभी चीजों का रचयिता नहीं माना जाता, तो वह किसी भी चीज का रचयिता नहीं है।
सृष्टि एक सम्पूर्ण इकाई है (जीव की तरह), जिसके सभी भाग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

जुड़ा हुआ और संबंधित। चूंकि विभाजन के लिए कोई जगह नहीं है, इसलिए हम किसी चीज के संबंध में जो भी स्वीकार करते हैं, उसे हर चीज के लिए वैसा ही करना आवश्यक है।
इसके अलावा, सृष्टिकर्ता या तो एक है या फिर अनंत संख्या में है। अगर कोई सच्चा सृष्टिकर्ता नहीं होता, (उसी कारण से जिसके लिए उसे ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता होना ज़रूरी है), तो सच्चे सृष्टिकर्ताओं की संख्या अनंत होनी चाहिए।

(एक जैसे अनंत गुणों वाले कई प्राणी नहीं हो सकते, और यह असंभव है कि एक से अधिक अनंत प्राणी हों।) इसके लिए कई अजीब विचारों को स्वीकार करना और निरपेक्ष रूप से एकता के अस्तित्व को नकारना आवश्यक होगा। अंततः, यह एकमात्र निर्माता के अस्तित्व की असंभवता को स्वीकार करने की ओर ले जाएगा।

यह असंभव है कि जो प्रकाश देता है वह प्रकाश के बिना हो, जो अस्तित्व देता है वह अस्तित्वहीन हो, और जो किसी चीज के अस्तित्व को आवश्यक बनाता है वह अस्तित्व में अनावश्यक हो। यह भी अकल्पनीय है कि जो ज्ञान देता है वह ज्ञान के बिना हो, जो चेतना देता है वह चेतना के बिना हो, जो इच्छाशक्ति देता है वह इच्छाशक्ति के बिना हो, और जो पूर्णता देता है वह अपूर्ण हो। क्या यह संभव है कि जो आंख को आकार देता है और दृष्टि देता है वह देख नहीं सकता? जो कुछ भी बनाया गया है, उसमें साझा की गई सभी पूर्णता निर्माता की पूर्णता से उत्पन्न होनी चाहिए।

हे मित्र! जान लो कि मनुष्य की आत्मा सबसे अधिक स्थायित्व और शाश्वतता चाहती है। यदि वह अपने आप को भ्रामक स्थायित्व से धोखा न दे, तो उसे किसी भी चीज़ में आनंद नहीं मिल सकता। हे स्थायित्व की मांग करने वाली आत्मा! उस स्थायी का उल्लेख करते रहो, ताकि तुम स्थायित्व प्राप्त कर सको। उसके प्रकाश को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण की तरह बनो, ताकि तुम बुझ न जाओ। उसके मोती बनो, ताकि तुम शुद्ध हो सको। उसकी याद की हवा के लिए एक शरीर बनो, ताकि तुम शाश्वत रह सको। उसके नाम की किरणों में से एक की किरण को मजबूती से पकड़ो, ताकि तुम अस्तित्वहीनता के अथाह गड्ढे में न गिर जाओ। यदि कोई फल इस बात से बेखबर है कि उसे कौन पालता और पोषण देता है, और इस प्रकार अपने चेहरे पर मुस्कुराती हुई विदेशी रोशनी की ओर आकर्षित होता है, तो वह अपने तने से अलग हो जाता है और जमीन पर गिर जाता है।

हे आत्मा! जो तेरा पालन-पोषण करता है, उसी को थामे रह, क्योंकि तेरे अस्तित्व के 999 भाग उसी के अधीन हैं; केवल एक ही भाग तुझे सौंपा गया है।
उस एक हिस्से को उसकी संपत्ति ले जाने वाले बर्तन में रख दें और शांति पाएं। यदि आप खुद को नहीं बना सकते और खुद को बनाए नहीं रख सकते, यदि आपके हाथ आपको कोई अच्छाई लाने के लिए बहुत छोटे हैं, तो सभी अन्य लोग और अधिक दूर के कारण या एजेंट आपके निर्माण और रखरखाव में भाग लेने में और भी अधिक असमर्थ हैं। क्या आप अपनी जीभ बना सकते हैं, जो शब्दों का एक पेड़ है, स्वादों का एक पूल है, और एक आदान-प्रदान है

संचार का? यदि नहीं, और आप ऐसा कभी नहीं कर पाएंगे, तो किसी को जिम्मेदार न ठहराएँ
परमेश्वर के साझीदार न बनो, क्योंकि यह बहुत बड़ा पाप है (31:13)।

हे मित्र, जान लो कि यह संसार एक दिव्य दुकान है, जिसमें सभी प्रकार की वस्तुएं हैं। कपड़ा, भोजन और पेय: मोटे और ठोस, पतले, अल्पकालिक और शाश्वत, अन्य गुठली और तरल पदार्थ के रूप में, और अन्य गैसीय रूप में। कुछ बुने हुए होते हैं
कुछ भी नहीं से और बनाया गया है; दूसरों को अभिव्यक्तियों के माध्यम से गढ़ा जाता है
प्रासंगिक दिव्य नाम या नाम)। (अधिकांश) दार्शनिक भटक गए हैं
सभी के अस्तित्व को स्वयं-आवश्यक मानकर, और इस प्रकार सृजन को भ्रमित करके
फैशन के साथ.

हे मित्र, जान लो कि जब तुम परदे के पीछे रहकर ईश्वर को साझी बनाते हो,
मानव अहंकार से उत्पन्न रूप ठोस और संघनित हो जाता है, यह बन जाता है
भौतिक कारणों को ईश्वर से जोड़ता है। (यह स्वयं को उत्पत्तिकर्ता और निर्माता मानता है)
(यदि यह क्रम जारी रहता है, तो यह अपने जीवन के संबंध में ईश्वर को कुछ भी जिम्मेदार नहीं ठहराता है।) यदि यह क्रम जारी रहता है, तो यह अपने जीवन के संबंध में ईश्वर को कुछ भी जिम्मेदार नहीं ठहराता है।
इसके आगे, यह नास्तिकता में परिवर्तित हो जाता है - ईश्वर हमें ऐसी स्थिति से बचाए।

हे मित्र, यह जान लो कि अंधकार में रहकर प्रकाश की खोज करो,
शारीरिक आत्म का प्रभाव और उस स्थिति को अपना स्वभाव बनाना, गंभीर कारण बनता है
दर्द और प्रकाश के प्रति अनादर और अपवित्रता दर्शाता है। इसके बजाय, अंधकार को छोड़ो और प्रकाश की ओर देखो जब तुम उससे दूर हो, उसके भीतर से नहीं।

हे मित्र, जान लो कि मानवता को खोलने और अनावृत करने के लिए बनाया गया था।
दिव्य नामों और गुणों के भण्डार, एक चमकदार संकेत बनें (मार्गदर्शक बनें)
ईश्वर), ग्रहण करें और प्रतिबिंबित करें (दिव्य अभिव्यक्तियाँ), प्रकाश देने वाला चंद्रमा बनें
शाश्वत शक्ति को प्रतिबिंबित करने वाला तथा शाश्वत सौंदर्य की अभिव्यक्ति का दर्पण।
स्वर्ग, पृथ्वी और पृथ्वी द्वारा अस्वीकार किए गए विश्वास को स्वीकार करके मानवता ने अधिक परिष्कार और शुद्धता प्राप्त की है, और अधिक परिष्कृत हो गई है।
पहाड़.

इस ट्रस्ट को शुरू करने की एक आवश्यकता यह है कि लोगों को
ईश्वर के सर्वव्यापी गुणों को समझने के लिए तुलना की इकाई।
मानव अहंकार, जो असावधानी और ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने के कारण अंधकारमय हो जाता है, उन गुणों को चालू करने के लिए एक स्विच होना चाहिए।
रोशनी। (इन आवश्यक कार्यों के विपरीत), क्यों और कैसे अधिकांश लोग परदे और अवरोध बन जाते हैं?
लोगों पर खोलने का आरोप लगाया जाता है; क्यों और कैसे
वे कैसे बंद होते हैं? उन्हें प्रकाशित होना चाहिए; वे क्यों और कैसे अंधकारमय हो जाते हैं?
उन्हें ईश्वर की एकता पर विश्वास करना चाहिए; क्यों और कैसे वे उसके साथ साझेदारों को जोड़ते हैं? उन्हें ईश्वर को देखने के लिए विशेष रूप से बनाए गए वेधशाला के माध्यम से देखना चाहिए, और यह स्वीकार करना चाहिए कि उसकी संपत्ति और साम्राज्य

इसके बजाय, मानव अहंकार की वेधशाला के माध्यम से सृष्टि को देखते हुए, लोग उसकी संपत्ति को प्राणियों के बीच साझा करते हैं, इस प्रकार गलत करते हैं और अज्ञानी बन जाते हैं।

हे आत्मा! जान ले कि यदि तू पाप से दूर रहकर, उसकी आज्ञा मानकर तथा धर्म के काम करके अपने रचयिता को प्रसन्न करेगा, तो जो कुछ उत्पन्न हुआ है, वह भी प्रसन्न होगा। यदि रचे हुए लोग सर्वशक्तिमान की ओर से तुझसे प्रसन्न होंगे, तो तुझे लाभ होगा; यदि वे स्वयं प्रसन्न होंगे, तो कोई लाभ नहीं, क्योंकि वे शक्तिहीन हैं - ठीक तुम्हारे समान। पहला विकल्प चुनने से तेरा प्रभु प्रसन्न होता है; दूसरा विकल्प चुनने से तू ईश्वर का साझीदार हो जाता है। यदि तू किसी मामले को निपटाने के लिए राजधानी में जाता है और राजा को प्रसन्न करता है, तो तेरा काम बहुत आसानी से हो जाएगा और प्रजा का प्रेम भी तुझे प्राप्त होगा। परंतु यदि तू यह अपेक्षा करता है कि राजा के अधीन रहने वाले लोग ही तेरा काम करेंगे, तो बहुत सी कठिनाइयाँ आएंगी, क्योंकि उन सभी को प्रसन्न करना होगा और तेरी आवश्यकता पूरी करने के लिए सहमत होना होगा। इसके अलावा, यदि यह पूरा भी हो जाए, तो भी तुझे राजा की अनुमति लेनी होगी, जो कि उसे प्रसन्न करने पर निर्भर करती है।

हे मित्र, जान लो कि अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता आकस्मिक वस्तुओं से मिलती-जुलती नहीं है, जो अपने अस्तित्व, सार, गुणों और कार्यों के लिए अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता पर पूरी तरह से निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, उनकी दृष्टि में निकट और दूर, कुछ और बहुत, छोटे और बड़े, व्यक्ति और प्रजाति, तथा भाग और संपूर्ण के बीच कोई अंतर नहीं है। आकस्मिक सत्ता के विपरीत, वह बिना समय गंवाए, सहजता से कार्य करता है, और खुद को किसी भी काम में व्यस्त नहीं रखता। यही कारण है कि बुद्धि सर्वशक्तिमान के कार्यों की प्रकृति को नहीं समझ पाती है और उन्हें करने वाले को नकारने तक चली जाती है।

शेर के दांत और पंजे बताते हैं कि उसे फाड़ने के लिए बनाया गया था; तरबूज का स्वाद बताता है कि उसे खाने के लिए बनाया गया था। मनुष्य की क्षमता यह दर्शाती है कि हमें ईश्वर की आराधना करने के लिए बनाया गया है। हमारा उच्च आध्यात्मिक आयाम और स्थायित्व और अनंत काल की चाहत यह बताती है कि सबसे पहले हमें (आत्मा में) इस दुनिया से अधिक सूक्ष्म और परिष्कृत दुनिया में बनाया गया था, और फिर अपने मूल में लौटने के लिए आवश्यक उपकरण प्राप्त करने के लिए यहाँ भेजा गया था। चूँकि हम सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, इसलिए एक व्यक्ति मानवता का बीज रहा होगा जिससे निर्माता ने सृष्टि के वृक्ष को उगाया। वह बीज ही सृष्टि का सबसे पुण्यशाली और महानतम हो सकता है, जिसकी पहचान पर सभी पूर्ण लोग, बल्कि आधी मानवता - जैसा कि सृष्टि को उसके आध्यात्मिक रंग में रंगा गया है - सहमत है: सारी सृष्टि के स्वामी, मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

चिंगारी का दूसरा भाग

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर आकाश और पृथ्वी को आदेश देता है, और रात-दिन पृथ्वी के सिर, हमारे पालने को, एक पगड़ी की तरह लपेटता है। वह सृष्टि के कुछ हिस्सों को कुछ बेचारे, आकस्मिक प्राणियों को कैसे सौंप सकता है? जो सिंहासन का स्वामी नहीं है, क्या वह सर्वोच्च सिंहासन के नीचे की चीज़ों का निपटान कर सकता है? ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि शक्ति का सभी चीज़ों पर नियंत्रण और अधिकार है, और बाहरी हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती। इसके अलावा, उसके पूर्ण अधिकार और स्वतंत्रता का सम्मान और गरिमा, साथ ही साथ जाने और प्यार किए जाने की उसकी इच्छा, दूसरों को (उसके और उसकी सृष्टि के बीच) एक पर्दा या ईश्वर के सेवकों को अपनी ओर आकर्षित करने का नाममात्र का साधन नहीं बनने देती।

प्रजाति और व्यक्ति के पूरे और हिस्से पर नियंत्रण एक साथ होता है, एक के भीतर और दूसरे का समर्थन करते हुए। यह गतिविधि दो एजेंटों के बीच साझा नहीं की जा सकती, क्योंकि जिसने सृष्टि का आदेश दिया, वह मानवता को बनाए रखता है, बड़ा करता है और निर्देशित करता है, साथ ही साथ पृथ्वी पर शासन और संचालन भी करता है। जिस समय वह एक प्रजाति के मामलों का संचालन करता है, उसी समय वह मानव कोशिकाओं को बनाता है और कणों का निर्माण करता है - चीजों के सबसे छोटे हिस्से - उसी शक्ति से जिसका उपयोग वह सृष्टि को नियंत्रित करने के लिए करता है। वह व्यवस्था करके नियंत्रण और प्रबंधन करता है; वह नियंत्रण और प्रबंधन करके बनाए रखता है, प्रशिक्षित करता है और बड़ा करता है; और वह बनाए रखने, प्रशिक्षित करने और पालने के द्वारा निपटान और निर्माण करता है।

सूर्य सागर के चेहरे को बिना उसके बुलबुले के गालों, उसकी आँखों की बूंदों, तथा उस पर गिरने वाली वर्षा की बूंदों की पुतलियों को एक साथ प्रकाशित किए बिना प्रकाशित नहीं कर सकता।

जो शक्ति पृथ्वी के चारों ओर रात-दिन घूमती रहती है, वह किसी भी सांसारिक प्राणी के सबसे छोटे अंग की कोशिका में भी हस्तक्षेप नहीं कर सकती। जिसने मक्खी के दिमाग और सूक्ष्म जीव की आंख को बनाया, गढ़ा और आदेश दिया, उसने आपके कार्यों को भी एक प्रकट पुस्तक में दर्ज किया है, और वह आपसे उनके लिए जवाब मांगेगा।

हे मित्र, जान लो कि प्रत्येक प्राणी और कण में देखी जाने वाली पूर्ण व्यवस्था, सर्वव्यापी शक्ति और सर्वज्ञ बुद्धि - साथ ही वे सभी जिनसे वे संबंधित हैं और जो कुछ उनके आसपास होता है - स्पष्ट प्रमाण और स्पष्ट संकेत हैं कि सभी चीजों के निर्माता का कोई साझीदार नहीं है। उसकी शक्ति में कोई विभाजन, पृथक्करण या वितरण नहीं है। यदि कोई आकस्मिक प्राणी निर्माता होता, तो उसके नियंत्रण और उसकी शक्ति और इच्छा को क्रियान्वित करने में विभाजन, पृथक्करण और साझेदारी होती। इसलिए, यह बिल्कुल आवश्यक है कि

निर्माता एक है, और उसका अस्तित्व आवश्यक है। उसकी शक्ति में कोई सीमा या विभाजन नहीं है, जो उसके भाग्य के माप के अनुसार काम करता है और उसके अनुसार "लिखता" है।

हे मित्र, जान लो कि छोटे जानवर बड़े जानवरों से ज़्यादा बुद्धिमान, संरचना में ज़्यादा परिष्कृत और कला में ज़्यादा सूक्ष्म होते हैं। इसके बावजूद, उनका जीवन छोटा होता है और उन्हें दुनिया से दूसरों की तुलना में कम फ़ायदा होता है। इससे साफ़ पता चलता है कि बनानेवाला हर चीज़ को आसानी से बना सकता है और वह उनमें से किसी के साथ ख़ास तौर पर व्यस्त नहीं रहता। वह सिर्फ़ कहता है: "हो जाओ!" और वे हो जाते हैं। कोई भी चीज़ उसे कुछ करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती; वह जो चाहता है वही करता है और जैसा चाहता है वैसा ही काम करता है। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

हे मित्र, यह जान लो कि बुलबुले में प्रतिबिंबित सूर्य की छवि उस बुलबुले का एक भाग भी है और एक छोटा सा व्यक्तिगत सूर्य भी है, जो वास्तविक सूर्य के गुणों को धारण करता है।
ये गुण इसे सूर्य की पहचान देते हैं, लेकिन इसकी प्रकृति नहीं। संक्षेप में, यह न तो सूर्य है और न ही सूर्य के अलावा कुछ और। सूर्य में अन्य सभी चीजों का हिस्सा, यानी सूर्य द्वारा दुनिया को रोशनी, गर्मी और रंग देना, बुलबुले के हिस्से को कम नहीं करता है, क्योंकि इससे बुलबुले को कोई फर्क नहीं पड़ता कि अन्य सभी चीजें मौजूद हैं या नहीं। बुलबुला कह सकता है: "सूर्य विशेष रूप से मेरा है, मुझमें समाया हुआ है, और मेरे लिए मौजूद है।"

हे मित्र, जान लो कि जो नाम "बाहरी" के विशालतम क्षेत्र से दूर चला जाता है और खुद को उसके सामने लगभग कुछ भी नहीं मानता, वह निकट आता है और खुद को "आंतरिक" नाम के सापेक्ष या वास्तविक क्षेत्र तक सीमित कर लेता है। किसी भी स्थिति में, ईश्वर उन सभी को अपने नामों और अपने ज्ञान, इच्छा, शक्ति और अन्य गुणों के माध्यम से घेरता है (85:20)। अपने आंशिक, सीमित दिमाग के साथ जो वे करते हैं उसमें खोए हुए, लोग सर्वशक्तिमान की भव्यता और ग्रहों के प्रशासन को देखते हुए सोचते हैं कि यह असंभव है कि वह खुद को बनाने के बारे में चिंतित करता है, उदाहरण के लिए, एक मक्खी। लोग बिल्कुल जरूरी एक की तुलना गरीब और आकस्मिक से करते हैं - शैतान द्वारा उकसाया गया एक तुलना जो लोगों को छोटे जीवों से घृणा करने के लिए प्रेरित करती है।

यह बहुत बड़ा अन्याय है, क्योंकि हर चीज़ अपने रचयिता की महिमा करती है। कोई भी चीज़ अपने आप को इतना नीचा नहीं करती कि वह किसी और को अपना स्वामी मान ले, सिवाय उसके जिसके लिए यह दुनिया उसके घरों में से एक है, सूरज उसकी लालटेनों में से एक है, और तारे उसके कुछ दीपों में से हैं, मानो दुनिया में उसके अलावा कोई और जीवित नहीं है। एक बड़ी चीज़ को खुद को एक छोटी चीज़ से बड़ा समझने और उस पर गर्व महसूस करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि बड़े और छोटे के बीच कोई अंतर किए बिना सही होने की तरह, एक छोटी चीज़ का अस्तित्व भी एक बड़ी चीज़ के अस्तित्व जितना ही मूल्यवान है।

हे मित्र, यह जान लो कि सूर्यों के सूर्य से लेकर सूर्यों के फल तक सब कुछ
पेड़ों को जब ध्यान से देखा जाता है तो उन्हें चुना जाता है और उनमें से अलग पहचाना जाता है
अनंत है। केवल वही एक, जिसके गुणों की अभिव्यक्तियाँ असीम हैं, उस पर नियंत्रण कर सकता है जो अनंत है।

हे मित्र, जान लो कि सर्वव्यापी प्रावधान किसी को बाहर नहीं करता
विशेष प्रावधान। भगवान की कृपा बारिश या पानी की तरह नहीं है, जिससे
हर कोई व्यक्तिगत ज़रूरतों पर विचार किए बिना लाभ उठा सकता है। इसलिए, व्यक्तियों को उनके लिए विशेष
आभार महसूस करने की ज़रूरत नहीं है। उनकी ज़रूरतें नहीं हैं
जैसे घर पर बने बर्तनों को उन दिव्य उपहारों से भरा जाना चाहिए जिनकी उन्हें अपेक्षा है
बारिश की तरह बरसता है। बल्कि, असली वरदान देने वाला हर व्यक्ति को व्यापक रूप से देखता है, एक खास बर्तन
बनाता है, और फिर उसे अपने वरदानों से भर देता है। जिस तरह सामान्य उपकार के लिए धन्यवाद देना हर किसी का
कर्तव्य है, उसी तरह यह भी ज़रूरी है कि हर कोई अपने उपकार के लिए धन्यवाद दे।
इन विशेष इनामों के लिए प्रत्येक व्यक्ति पर दायित्व है।

हे मित्र, जान लो कि अधिकतर लोग दूसरों को उचित सम्मान नहीं देते।
ब्रह्मांड की देखी गई पुस्तक और कुरान के लिए। दार्शनिक आवश्यक सत्ता को एक छोटा सा हिस्सा, एक पतला
आवरण, नाममात्र मूल्य का एक यौगिक मानते हैं, और फिर बाकी को कारणों के बीच साझा करते हैं - बल्कि,
कुछ निश्चित लोगों के बीच
असंभव और मात्र कल्पनाएँ। भगवान उन पर आक्रमण करें! वे कितने विकृत हैं!
(9:30) हालाँकि, जो उसकी एकता पर विश्वास करता है, वह कहता है: "जो कुछ भी मौजूद है
उसी का है, उसी से आया है, उसी में लौट रहा है, और उसी से जीवित है
समय के साथ विचारों और निष्कर्षों से धोखा खाकर विद्वान लोग,
कुरान के शब्दों और अर्थ के केवल कुछ हिस्सों को ही प्रभु के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।
उस भव्य महल से सर्वोच्च सिंहासन - कुरान। बाकी
इसकी दृढ़ नींव, सुस्थापित सिद्धांतों, स्वर्णिम निर्माण खंडों की,
और फूलदार वृक्ष जो वे पृथ्वी के निवासियों के साथ साझा करते हैं।

जो लोग सोचते हैं कि जो कुछ घटित होता है उस पर मानवता का कुछ नियंत्रण है
ब्रह्मांड में जो लोग हैं वे बहुत गलत हैं। वे उन लोगों की तरह हैं जो केवल कुछ ही देते हैं
बुलबुले उस व्यक्ति को कहते हैं जो सागर को भरता है, या जो सागर के बहने का श्रेय कुछ बुलबुले को देता है।
एक सत्य-प्रेमी आस्तिक कहता है: "जो कुछ भी सागर में है
कुरान ईश्वर की ओर से है और उसी का है।" कुरान कई शैलियों में गुंथी हुई है
जो प्रत्येक श्रोता की समझ और स्वभाव के स्तर पर विचार करते हैं।
70,000 पर्दों से होकर हमारे पास आकर, यह दिलों की गहराईयों में प्रवेश करता है
और आत्माओं को पवित्र करता है, तथा मानव समाज के सभी स्तरों पर अपना आशीर्वाद फैलाता है।
हर युग इसे समझता और जानता है, हर युग इसकी मान्यता और स्वीकार करता है
पूर्णता को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक युग उससे मित्रता करता है तथा उसे अपना गुरु मानता है,
और हर अवधि को इसकी आवश्यकता है और वह इस हद तक इसका सम्मान करती है कि यह उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करती है।

कुरान कोई सतही, उथली किताब नहीं है; बल्कि यह एक अथाह सागर, एक चमकता हुआ सूरज, एक गहन मार्गदर्शन है।

हे मित्र, जल और वायु को देखो , वे सृष्टि में कितने कोमल और व्यापक हैं। उसकी जय हो जो सूक्ष्म जीव और हाथी दोनों को भोजन प्रदान करता है। शक्ति के स्वामी को देखो, वह किस तरह भोजन बनाता है जो मधुमक्खी के गले से होकर गुजरता है और हाथी के मुंह में भर जाता है, जो न तो सूक्ष्म जीव के मुंह के लिए बहुत बड़ा है और न ही इतना छोटा कि गैंडा उसे तुच्छ समझे। एक सुनाई देने वाला शब्द एक अणु के कान द्वारा ग्रहण किया जाता है और सूर्य के कान को भर देता है। वह शब्द इतना गुणा हो जाता है कि एक गुफा उससे भर जाती है और उसे वापस आप तक प्रतिध्वनित करती है, फिर भी वह एक मच्छर के कान की कोशिकाओं के लिए बहुत बड़ा नहीं है।

कल्पना कीजिए, दोस्त , मुस्लिम दुनिया में रोज़ाना की नमाज़ के समय मस्जिद होती है, मक्का मेहराब (जहाँ इमाम खड़ा होता है) होता है, और काबा मेहराब का केंद्रीय बिंदु होता है। इस मस्जिद में पीढ़ियाँ प्रार्थना करती हैं, जो लगातार पीढ़ियों से भरी और खाली होती रहती है।

हे सईद! अगर तुम खुशी पाना चाहते हो और अपनी इज्जत को कायम रखना चाहते हो, तो आज इज्जत और इज्जत के साथ उस चीज को छोड़ दो जो कल तुम्हें छोड़ कर चली जाएगी और तुम्हारे लिए अपमान और दुख का कारण बनेगी। अगर तुम दुनिया को छोड़ दोगे, तो तुम इसकी बुराइयों से बच जाओगे और इसकी अच्छाइयों को पाओगे। अगर दुनिया तुम्हें छोड़ दे, तो तुम इसकी अच्छाइयों से वंचित हो जाओगे और इसकी बुराई को पाओगे।

हे मित्र, जान लो कि भ्रष्ट आधुनिक सभ्यता ने इतने बड़े घृणित दिखावे और पाखंड का द्वार खोल दिया है कि यश और प्रतिष्ठा के नाम पर पाखंड ही व्यक्ति और राष्ट्र पर राज करता है।

जनसंचार माध्यम इन “प्रसिद्ध” लोगों को सभी के सामने प्रस्तुत करते हैं, और, जैसा कि इतिहास की आधुनिक अवधारणाएँ और हाल ही में लिखी गई इतिहास की पुस्तकें उनकी प्रशंसा करती हैं, वे दूसरों से उनका अनुसरण करने का आग्रह करते हैं। राष्ट्रवाद की आड़ में नस्लीय विचारों के लिए व्यक्तियों के जीवन का बलिदान किया जाता है।

ऐ दोस्त, जान लो कि अगर लोग एक साथ मिलकर एक मजबूत एकता बनाते हैं, तो महिलाओं का एक समुदाय दृढ़ पुरुषत्व प्राप्त कर सकता है, जबकि पुरुषों का एक कमज़ोर समूह महिलाओं जैसा बन जाता है। कुरान के वाक्यांश जो महिलाएं कहती हैं (12:30) [मूल अरबी क्रिया का पुल्लिंग रूप है, जबकि अरबी व्याकरण के अनुसार इसे स्त्रीलिंग होना चाहिए था], और रेगिस्तान के (पुरुष) अरब कहते हैं (48:14) [मूल अरबी क्रिया का स्त्रीलिंग रूप है], इसी ओर इशारा करते हैं। कमज़ोर लोगों का समुदाय मज़बूत होता है, जबकि शक्तिशाली लोगों का समुदाय कमज़ोर होता है।

ऐ दोस्त! जान लो कि शैतानों का इन्कार करने और उन पर विजय पाने से जन्नत के दरवाजे खुल जाते हैं।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वरीय एकता मुहम्मद की पैगम्बरी होने का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। हमारे गुरु मुहम्मद ने ईश्वरीय एकता का झंडा सभी प्राणियों के सिर के ऊपर फहराया और इसे ब्रह्मांड के शिखर पर स्थापित किया। उन्होंने ईश्वरीय एकता को, इसके सभी रूपों के साथ, सभी प्राणियों के लिए घोषित किया और पिछले पैगम्बरों ने जो कुछ छोड़ा था, उसे एक रेखांकित और सामान्यीकृत रूप में समझाया।

चिंगारी का तीसरा भाग

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हे मित्र, जान लो कि ब्रह्माण्ड में देखी गई दिव्य प्रभुता की सजावट, पूर्णता, सुन्दर तमाशा और ऐश्वर्य, साथ ही दिव्यता की महिमा को देखने के लिए एक पर्यवेक्षक की आवश्यकता होती है जो उन्हें विस्मय में देखे। उन पर विचार करते समय, ऐसे पर्यवेक्षक को वहाँ से उनके निर्माता और स्वामी की महिमा और उनकी शक्ति और पूर्णता की ओर बढ़ना चाहिए। मनुष्य, अपनी अज्ञानता और अन्याय की प्रवृत्ति के बावजूद, इतनी व्यापक क्षमता रखते हैं कि उन्हें सृष्टि के नमूने माना जा सकता है जिन्हें एक ऐसा भरोसा मिला है जो छिपे हुए खजाने को देख सकता है और खोल सकता है - दिव्य ज्ञान और सृष्टि और मानव प्रकृति का रहस्य। चूँकि हमारी शक्तियाँ या क्षमताएँ सृष्टि में प्रतिबंधित नहीं की गई हैं, इसलिए हमारे पास शाश्वत संप्रभु के राज्य की महिमा और उनकी दिव्यता की शानदार सुंदरता को समझने के लिए एक सार्वभौमिक चेतना हो सकती है। जिस तरह सुंदरता एक प्रेमी के देखने (इसे देखने) की माँग करती है, उसी तरह शाश्वत डिजाइनर के प्रभुत्व को उन लोगों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है जो इसे प्रशंसा, विस्मय और चिंतन में देखेंगे। इस प्रकार के प्रभुत्व के लिए स्थायी चिंतनशील और भ्रमित पर्यवेक्षकों की भी आवश्यकता होती है, जो अनंत काल के मार्ग पर उन्हें भ्रमित करने वाली चीजों के साथ चलते हैं।

जिसने फूलों के चेहरे सजाए, उसने उन्हें प्यार करने के लिए कीड़े-मकोड़े और पक्षी भी बनाए। उसने सुंदर चीजों के गाल सजाए और ऐसे प्रेमी बनाए जो उन्हें चाहते हैं, और दुनिया के चेहरे को इतना अलंकृत और आकर्षक बनाया, उसकी आंखें उन मुस्कुराते हुए दीयों से चमक रही थीं। उसने दुनिया को इतनी उत्कृष्ट, परिपूर्ण और असाधारण सुंदरता से सजाया कि यह अपने निर्माता के लिए प्रेम की भावना और उसे जानने की जिज्ञासा जगाती है। ऐसा निर्माता इसे बिना प्रेमियों के नहीं छोड़ेगा जो इससे चकित हों, जो चिंतन करें, मोहित हों और प्रत्येक सुंदरता के मूल्य को समझें। अपनी व्यापक प्रकृति के साथ, एक परिपूर्ण, सार्वभौमिक व्यक्ति ब्रह्मांड के निर्माण का कारण बन जाता है । खुशी और वास्तविक आनंद उसके लिए अस्तित्व सहित सब कुछ त्यागने में है। उसका अस्तित्व बिल्कुल जरूरी है। वह

पूर्णतया परिपूर्ण, पूर्णतया महिमा, अनुग्रह और सौंदर्य से युक्त।
जो कुछ भी मेरे पास है, यहां तक कि मेरा पूरा अस्तित्व और जो कुछ भी विद्यमान है, वह सब उसके लिए बलिदान हो जाए।

हे मित्र, यह जान लो कि जिस प्रकार मनुष्यों में मेल और समानता होती है,
चीजें निर्माता की एकता और एकरूपता की ओर इशारा करती हैं, उनके बीच व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण असमानताएं और भेद यह संकेत करते हैं कि वह सर्वज्ञ है,
पूर्ण इच्छा, और जैसा वह चाहता है वैसा ही करता है। उदाहरण के लिए, इनके बीच समानता
मानव अंगों और अवयवों, विशेष रूप से अंगों के जोड़ों के बीच, यह सिद्ध करता है
सृष्टिकर्ता की एकता। लोगों, प्रत्येक प्राणी के बीच आवश्यक असमानता
अद्वितीय, यह स्पष्ट संकेत है कि सृष्टिकर्ता के पास पूर्ण इच्छा और बुद्धि है।

हे मित्र! यह जान लो कि पुरुष और स्त्री सभी प्राणियों में सबसे अधिक अन्यायी हैं।
अपने गहन आत्म-प्रेम के कारण, वे चीजों को उनके महत्व के अनुसार महत्व देते हैं।
उनसे लाभ प्राप्त किया जा सकता है। वे अपने फलों को मूल्यवान मानते हैं
केवल उसी सीमा तक जिस सीमा तक वे उनसे लाभ उठा सकते हैं। वे मानते हैं कि उद्देश्य
जीवन का सार तो जीवन ही है, जबकि प्रत्येक प्राणी में बुद्धि होती है, जो प्राप्त करना कठिन है।
लोगों को सृष्टिकर्ता से संबंधित समझने के लिए। अल्पकालिक सजीव प्राणी और तेजी से घटते जीव क्यों मध्यवर्ती युग में अपने अद्भुत पसंद के लिए नमूने और उदाहरण, नींव और बीज नहीं होने चाहिए

इस और अगले के बीच की दुनिया, भौतिक और आध्यात्मिक, और
अस्तित्व का आंतरिक आयाम? उन्हें अभिव्यक्तियाँ या अभिव्यक्तियाँ क्यों नहीं होनी चाहिए
इस संसार में ईश्वरीय शक्ति के नियंत्रण के प्रतिबिंब और फल
अदृश्य दुनिया?

हे मित्र, जान लो कि जिस प्रकार आंख अपने आपको केवल उसी तक सीमित रखती है जो वह देखती है या
जो कुछ भी उसके सामने आता है, सांसारिक, दुष्ट-आदेश देने वाला स्व उसे अस्वीकार कर देता है
वह उस चीज का अस्तित्व नहीं देख पाता, भले ही वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

हे मित्र, जान लो कि अपनी शक्ति की पूर्णता के माध्यम से, ईश्वर ने सभी कणों और यौगिकों को अपने नियमों और सृष्टि के आदेशों के अधीन कर लिया है।
एक मच्छर से कहता है: "ऐसा हो!" और वह वैसा ही हो जाता है, और उसी सहजता से कहता है
सभी जानवर: “ऐसी विशेषताओं और रूपों वाले हों, और जीवन की ऐसी लंबाई के साथ,”
और वे वैसे ही हैं जैसे उन्हें होने का आदेश दिया गया है। जिस शक्ति ने इन स्वर्गीय वस्तुओं को अपने हाथ में लिया और उन्हें व्यवस्थित किया, ठीक वैसे ही जैसे आपने अपने हाथों में रत्न जड़े हैं
दर्पण का फ्रेम, कुछ भी कर सकता है और किसी को भी हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देता है।

हे मित्र, जान लो कि पानी की एक बूंद का स्वभाव समुद्र के समान ही है।
(दोनों ही पानी हैं) और एक नदी (दोनों ही बादलों से बनती हैं)। एक तस्वीर में सूर्य की छवि
बूंद की पहचान लगभग सूर्य के समान ही है, और छोटी मछली सूर्य के समान ही है।
शार्क की ही प्रजाति (दोनों ही मछलियाँ हैं)। गेहूँ का एक दाना एक ढेर के समान है

गेहूँ का। इस तरह से सबसे छोटी कोशिका पर प्रकट होने वाला दिव्य नाम आता है

जिस चीज़ पर यह प्रकट होता है, उस पर और साथ ही उस नाम पर जो सभी सृष्टि पर प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, “सर्वज्ञ” नाम एक कोशिका पर “निर्माता” नाम के साथ, एक मधुमक्खी पर “फैशनर” नाम के साथ, एक फल पर “निर्माता” नाम के साथ और एक बीमारी पर “हीलर” नाम के साथ प्रकट होता है। यह अकल्पनीय है कि अभिव्यक्ति के सबसे व्यापक क्षेत्र वाले नाम का सबसे छोटी चीज़ पर प्रकट न होना।

हे मित्र, जान लो कि जड़ता, गतिहीनता, निष्क्रियता और नवीनीकरण का अर्थ है किसी आकस्मिक वस्तु के लिए एक तरह की मृत्यु या गैर-अस्तित्व, क्योंकि इसका जीवन और अस्तित्व गतिविधि और निरंतर नवीनीकरण पर निर्भर करता है। गैर-अस्तित्व दर्द और बुराई है। गतिविधि एक महान आनंद है, और परिवर्तन के माध्यम से नवीनीकरण बहुत अच्छा लाता है। हालाँकि परिवर्तन और नवीनीकरण में दर्द और दु:ख हो सकता है, लेकिन ऐसे दर्द और दु:ख कई मायनों में अच्छे हैं। अस्तित्व का प्रकाश होने के नाते, जीवन दु:ख के माध्यम से परिष्कृत होता है, दर्द के माध्यम से शुद्ध होता है, और इस अनुसार मापा जाता है कि यह जीवनदाता की अभिव्यक्तियों और गुणों को कैसे प्राप्त करता है और प्रतिबिंबित करता है।

प्रत्येक जीवन में जीवनदाता से संबंधित कई पहलू होते हैं, जबकि एक जीवित प्राणी में केवल एक ही होता है।

सूर्य के प्रतिबिम्ब से सजा हुआ बुलबुला सूर्य का विरोध नहीं कर सकता और न ही उससे कुछ मांग सकता है। विश्वास के माध्यम से मनुष्य, जो अस्तित्व के सागर में बुलबुले की तरह हैं, पारदर्शी, चमकती हुई वस्तुओं और जगमगाते सितारों की तरह बन जाते हैं जिनके दीपक अनन्त सूर्य की किरणों से प्रकाशित होते हैं।

हे मित्र, जान लो कि एक निर्माता एक विशाल महल बनाता है और उसमें जो कुछ भी आवश्यक है, उसे सुसज्जित करता है। फिर वह उसी सामग्री से एक छोटा महल बनाता है और सुसज्जित करता है। क्या कोई यह कह सकता है कि निर्माता का मुख्य उद्देश्य दूसरा महल बनाना नहीं है, और इसके निर्माण के उद्देश्य निर्माता से संबंधित नहीं हैं? आप, मानवता, वह छोटा महल हैं, पृथ्वी एक महल है, और ब्रह्मांड भी एक महल है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर अपने स्वरूप और कला के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है, तथा अपनी दया, उपकारों और प्रावधानों के माध्यम से प्रेम करता है। वह अपने लगभग सभी नामों को विभिन्न कारणों से प्रकट करता है। जो कोई भी समझ लेता है

प्रत्येक नाम क्यों स्वयं को प्रकट करता है और फिर दूसरों को समझाता है, यह पूरी तरह से इन शब्दों से संबोधित किए जाने का हकदार है: "यदि आप नहीं होते, तो मैं दुनियाओं का निर्माण नहीं करता।" वह पृथ्वी और स्वर्ग के बीच इतना दृढ़, भरोसेमंद बंधन है कि पृथ्वी उसके हृदय में बुनी गई रस्सी से ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से जुड़ी हुई है। एक मनुष्य के रूप में, वह सृष्टि का सबसे सम्माननीय प्राणी है; मानवता के नमूने के रूप में, वह जीवित प्राणियों में सबसे उत्तम है; और

एक व्यक्ति के रूप में, वह पृथ्वी पर ईश्वर की ओर से सम्मानित प्रजातियों का स्वामी और प्रभु है। वह पैगम्बरों का स्वामी, धर्मपरायण लोगों का नेता, संसार के प्रभु - मुहम्मद, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, और उनके परिवार और साथियों का अनंत काल तक प्रिय है।

निष्कर्ष

जो कुछ भी ईश्वर के लिए सहा जाता है वह अच्छा है। यह मीठा है, भले ही यह कड़वा लगे, क्योंकि यह आपको ईश्वर से प्रार्थना करने और प्रार्थना करने का आनंद चखाता है। इब्न सामून73 कहते हैं: "उससे बेपरवाह हर बात बेकार की बात है।"

मैं परलोक की यात्रा पर हूँ। मेरे इतने पाप हैं कि कई जन्म भी उनके लिए क्षमा मांगने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे। इसलिए मैं यह कार्य अपनी पुस्तक को सौंपता हूँ। अफसोस! यह कितना दयनीय, खेदजनक और निंदनीय है कि मैंने अपना जीवन, स्वास्थ्य और युवावस्था हानिकारक, क्षणिक इच्छाओं और कल्पनाओं के लिए पाप और विद्रोह में बर्बाद कर दी। मेरे बुढ़ापे और खराब स्वास्थ्य के लिए जो कुछ बचा है, वह पाप और दर्द है।

इस भारी बोझ, काले चेहरे और बीमार दिल के साथ मैं इस क्षणभंगुर दुनिया से हमेशा के लिए अलग होने के लिए कब्र के दरवाजे पर पहुँचता हूँ। मैं कितना अपमानित होऊँगा जब मेरा भगवान आदेश देगा: "सभी पाखंडियों को आग में डाल दो!"

हे ईश्वर! आपकी दया के द्वार के अलावा कोई शरण और शरण नहीं है।

हे परमेश्वर! तेरा विद्रोही सेवक अपने पापों को स्वीकार करके तुझसे प्रार्थना
कर रहा है।
यदि तू उसे क्षमा कर दे, तो तू यही करना चाहता है; उसे? यदि तू उसे दूर भगा दे, तो
उस पर दया करेगा? हे परमेश्वर! मैं अपने पापों पर पछताता हूँ और उनसे तौबा और कौन
करता हूँ; मैं अपने बुरे शब्दों और कर्मों पर शर्मिंदा हूँ।

पवित्रता की दुनिया से मेरे हृदय में आशीर्वाद उंडेलें ताकि मेरे हृदय से कल्पनाएं दूर हो जाएं।

मैं मौलाना की पुकार के साथ आपसे दया का द्वार खोलने की
प्रार्थना करता हूँ: हे ईश्वर! मैं बार-बार हे ईश्वर,
हे ईश्वर! पुकारता हूँ!
और अपने मार्ग में परमेश्वर के लिये बातें कहो।
हे परमेश्वर! मुझे अपने पास आने का मार्ग दिखा; मैं भटका हुआ हूँ, सीधे मार्ग की
खोज में हूँ।
हे ईश्वर! मैं न तो जन्नत की सबसे ऊंची मंजिल के लायक हूं और न ही मुझमें जहन्नम की आग सहने की
ताकत है।

---

73 अबू अल-हुसैन मुहम्मद इब्न अहमद इब्न इस्माइल या सैमून (913-97) बगदाद के एक मुस्लिम तपस्वी थे जो अपनी बुद्धिमत्ता और बुद्धिमत्तापूर्ण कथनों के लिए प्रसिद्ध थे। (ट्र.)

74 इब्राहिम इब्न अधम को जिम्मेदार ठहराया गया। (ट्र.)

मुझे अपने पापों का पश्चाताप करने में सक्षम बनाइये
और उनके लिए क्षमा मांगो, और मुझे क्षमा करो,
निःसंदेह तू पापों को क्षमा करने वाला है, चाहे वे कितने ही बड़े क्यों न हों।

समाप्त करने के लिए:

• ईश्वर की ओर खुलने वाले दरवाज़े उतने ही हैं जितने कि उसके हिस्से हैं
(ब्रह्मांड की) पुस्तक और उसके पृष्ठ, तथा जितने भी यौगिक हैं। • जीवन के सभी पहलुओं में आंतरिक अस्तित्व बाहरी अस्तित्व से श्रेष्ठ है,
चेतना और पूर्णता.

• आपके चेहरे की अनोखी विशेषताएं आपको बाकी सभी से अलग करती हैं, हालाँकि सभी
चेहरों के हिस्से और संरचना एक जैसी होती है। इससे पता चलता है कि निर्माता असीम रूप से स्वतंत्र और बुद्धिमान है और उसके पास पूर्ण स्वतंत्र विकल्प है।

• आप ज्ञान के साथ बनाई गई कला का एक सचेत कार्य हैं, जो दर्शाता है
निर्माता की विशेषताएँ.

• जिसने तुम्हें बनाया है, उसने ब्रह्माण्ड और उसकी सामग्री बनाई है, क्योंकि जो कुछ भी तुम्हारे अंदर है, वह उसमें भी मौजूद है। • तुम एक सीमित प्राणी हो, जिसका शरीर,
जीवन और शक्ति सीमित है।
इसलिए, अपना जीवन क्षणिक चीजों पर बर्बाद मत करो। • सांसारिक
आत्मा गलती से सोचती है कि वह संसार के दायरे से बाहर है।
भाग्य और दिव्य गुणों की अभिव्यक्तियाँ।

• जो प्रकाश और अस्तित्व देता है और अस्तित्व को आवश्यक बनाता है, उसे अवश्य ही
ये गुण हैं, अन्यथा वह उन्हें कैसे दे सकता था? • एक मानव आत्मा जो सबसे अधिक
चाहती है वह स्थायित्व और शाश्वतता है। • मानव अहंकार के कारण, एक छिपे हुए रूप में भगवान के साथ
साझेदारों को जोड़ना, धीरे-धीरे भगवान के साथ भौतिक कारणों को भागीदार बनाने में बदल जाता है। • मानवता को खोलने
और (दिव्य नामों के खजाने) का अनावरण करने के लिए बनाया गया था

और गुण), एक चमकदार संकेत बनें (ईश्वर की ओर मार्गदर्शन करें), प्राप्त करें और प्रतिबिंबित करें
(दिव्य अभिव्यक्तियाँ), शाश्वत को प्रतिबिंबित करने वाला प्रकाश देने वाला चंद्रमा बनो
शक्ति प्राप्त करें, और शाश्वत सौंदर्य की अभिव्यक्ति का दर्पण बनें। • यदि आप पापों से दूर रहकर, उनकी
आज्ञाओं का पालन करके अपने सृष्टिकर्ता को प्रसन्न करते हैं,
और धर्म के काम करके तू भी सृजित को प्रसन्न करेगा। • अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता अपने में
आकस्मिक सत्ता के समान नहीं है ।
सार, गुण, या कार्य।

• शेर के दांत और पंजे यह दर्शाते हैं कि उससे फाड़ने की उम्मीद की जाती है, तरबूज की खुशी
यह दर्शाता है कि यह खाने के लिए है, और मानव क्षमता दर्शाती है कि मानवता खाने के लिए है
भगवान की पूजा करो.

• छोटे जानवर संरचना में अधिक बुद्धिमान और परिष्कृत होते हैं, और उप-
कला में बड़े लोगों की तुलना में अधिक बड़े लोग हैं।

• सर्वव्यापी प्रावधान विशिष्ट, व्यक्तिगत प्रावधानों को बाहर नहीं करता है
सायन.

• अधिकांश मनुष्य देखे गए व्यक्ति को उचित सम्मान नहीं देते हैं
यह ब्रह्मांड की सबसे बड़ी पुस्तक है और कुरान की सबसे शानदार किताब है जब इसे पढ़ा और सुना जाता है।

• दैनिक प्रार्थना के समय मुस्लिम दुनिया की कल्पना एक मस्जिद के रूप में करें, जिसमें
मक्का मेहराब है और काबा मेहराब का केंद्रीय बिंदु है।
मस्जिद, जिसमें पीढ़ियाँ प्रार्थना करती हैं, लगातार भरती और खाली होती रहती है
• आज सम्मान और गरिमा के साथ
विदा लें, जो कल आपको छोड़कर जाएगा। • आधुनिक सभ्यता भ्रष्ट पाखंड, दिखावा और प्रसिद्धि को महत्व देती है। • जब एक साथ मिलकर एक मजबूत एकता बनाने के लिए महिलाओं का एक समुदाय आता है, तो वे एक दूसरे के साथ मिलकर एकता बना सकते हैं।

दृढ़ पुरुषत्व प्राप्त करते हैं, जबकि पुरुषों की कमज़ोर एकता महिलाओं जैसी हो जाती है। • ईश्वरीय एकता मुहम्मद की नबी होने का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। • ईश्वरीय प्रभुत्व की सजावट, पूर्णता, सुंदर चश्मा, और

महिमा, साथ ही दिव्यता की भव्यता, पर्यवेक्षकों को उनका निरीक्षण करने की आवश्यकता होती है
आश्चर्य में.

• जिस प्रकार वस्तुओं के बीच मेल और समानताएं निर्माता की ओर इशारा करती हैं
एकता और एकता, इसलिए उनकी व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण असमानताएं और
भेद यह दर्शाते हैं कि निर्माता सर्वज्ञ है और उसकी इच्छा पूर्ण है,
जो कुछ वह चाहता है, वही करता है।

• पुरुष और महिला सभी प्राणियों में सबसे अधिक अन्यायी हैं। • अपनी शक्ति की पूर्णता के माध्यम से, भगवान ने सभी कणों और यौगिकों को अपने नियमों और सृष्टि के आदेशों के अधीन कर दिया है। • जड़ता और गतिहीनता, निष्क्रियता और गैर-परिवर्तन का मतलब एक तरह की मृत्यु है
या किसी आकस्मिक चीज़ के लिए अस्तित्वहीनता, क्योंकि उसका जीवन और अस्तित्व निर्भर करता है
गतिविधि और निरंतर नवीनीकरण। • ईश्वर
अपने प्राणियों और कला के माध्यम से खुद को ज्ञात करता है, और अपने द्वारा प्यार करता है
उसकी दया, उपकार और प्रावधान। • परमेश्वर के लिए
जो कुछ भी सहा जाता है वह अच्छा है, क्योंकि यह आपको आनन्द का स्वाद चखाता है।
उससे विनती करना और प्रार्थना करना। • विनती
करना।

नौवां ग्रंथ

नौवां ग्रंथ

क़ुरआन के मार्गदर्शन की हवाओं का एक झोंका

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारे संसार के स्वामी परमेश्वर की स्तुति हो, क्योंकि उसने सारे संसार पर दया की है। पैगंबरों के गुरु मुहम्मद की पैगम्बरी के माध्यम से, उन पर, उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद हो।

K अब हे मित्र, वह सृष्टि, चाहे इस संसार में हो या परलोक में, अदृश्य दुनिया गवाही देती है कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है। यह है सहयोग और एकजुटता की आवश्यकता है और यह प्रदर्शित भी होता है सृष्टि के सभी भाग। सृष्टि के स्तंभ और सभी संरचनाएं गवाही देती हैं कि उसके सिवा कोई प्रभु नहीं,[75] जो कि सिमी द्वारा आवश्यक और प्रदर्शित किया जाता है- उन स्तंभों और संरचनाओं के बीच समानता और सुसंगतता।

सभी सांसारिक प्राणियों के सभी अंग और अवयव इस बात की गवाही देते हैं कि उनके अलावा कोई मालिक और स्वामी नहीं है, जो कि उनके लगभग पूर्ण होने से आवश्यक और प्रदर्शित होता है वही गठन और कार्य। सभी पौधों और जानवरों के सभी भाग इस बात की गवाही देते हैं कि कोई निर्देशक और आयोजक नहीं है, लेकिन वह आवश्यक है और प्रदर्शित होता है उन भागों के बीच आपसी मदद से। इन सभी उपविभागों में भाग गवाही देते हैं कि उसके अलावा कोई प्रशिक्षक नहीं है, जिसकी आवश्यकता है और प्रदर्शित किया जाता है प्रजातियों के अलग-अलग सदस्यों के बीच पत्राचार द्वारा। तथ्य यह है कि उनके अंग और संरचना लगभग एक जैसी होती है और पेन और

---

75 ईश्वरीय नाम अल-रब्ब, जिसका सामान्यतः अनुवाद भगवान होता है, ईश्वर को दर्शाता है जो उठाता है, सभी चीजों का पालन-पोषण, पोषण, शिक्षा, प्रशिक्षण और प्रशासन करता है। (ट्र.)

यह दर्शाता है कि प्रशिक्षक एक है। चेहरों के बीच विविधता यह गवाही देती है कि लेखक पूरी तरह से स्वतंत्र है, वह जो चाहे कर सकता है।

इन भागों और अंगों को बनाने वाली सभी कोशिकाएँ इस बात की गवाही देती हैं कि उसके अलावा कोई डिस्पोज़र नहीं है, और यह निपटान केवल उसके आदेशों या सृजन और संचालन के नियमों द्वारा ही संभव है। यदि डिस्पोज़र एक और एकल नहीं होता, तो असंख्य डिस्पोज़र होने चाहिए जो गुणों और विपरीतताओं के संदर्भ में बिल्कुल समान हों, स्वतंत्र और आश्रित, अप्रतिबंधित और प्रतिबंधित, इत्यादि। इन कोशिकाओं को बनाने वाले सभी परमाणु इस बात की गवाही देते हैं कि उसके अलावा कोई व्यवस्था करने वाला नहीं है, जैसा कि परमाणु संरचनाओं, कामकाज और कार्यों के बीच समानता और पत्राचार द्वारा अपेक्षित और प्रदर्शित होता है। और अपने सभी कणों के साथ, सृजन का मुख्य पदार्थ—ईथर—यह गवाही देता है कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, जैसा कि इसकी सरलता, शांति और गतिहीनता के साथ-साथ निर्माता के आदेशों को पूरा करने में दिखाई गई गति से अपेक्षित और प्रदर्शित होता है।

हे मित्र, जान लो कि किसी को भी ब्रह्मांड के निर्माता के बारे में शिकायत करने और आपत्ति करने का अधिकार नहीं है। यदि ऐसी मांग पूरी करनी होती, तो सृष्टि के सामान्य क्रम (जो ऐसी संतुष्टि को अस्वीकार करता है) में भाग लेने वाले ज्ञान के हजारों उदाहरणों का उल्लंघन या बलिदान करना पड़ता। यदि सत्य ने उनकी मनमानी का अनुसरण किया होता, तो आकाश, पृथ्वी और उनकी सामग्री भ्रष्ट हो गई होती (23:71)।

हे शिकायत करने वाले! तुम कैसे आपत्ति कर सकते हो और अपनी सनक को ब्रह्मांड की व्यवस्था का मानक बना सकते हो, और अपने भ्रष्ट स्वाद को ईश्वरीय उपहारों का मापदंड बना सकते हो? तुम कैसे जानते हो कि जिसे तुम दुर्भाग्य समझते हो वह आशीर्वाद नहीं है? क्या तुम अपनी तुच्छ और बेकार की कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए सृष्टि के घूमते पहियों की दिशा बदलने के लिए अधिकृत हो? तुम केवल उसी से शिकायत कर सकते हो, उसके बारे में नहीं, क्योंकि उससे जो तुम्हारे हिस्से में आता है वह अनाज के ढेर में से केवल एक "अनाज" है। जो स्वामित्व में है वह मालिक नहीं हो सकता। अपनी जगह पहचानो और अपने अधिकार की सीमाओं का उल्लंघन मत करो।

हे मित्र, जान लो कि जो एक कोशिका में काम करता है, वह पूरे शरीर में काम करता है, क्योंकि उसे कोशिका में शरीर के साथ उसके संबंध के अनुसार काम करना चाहिए। कोशिका में काम करना सभी चीजों के निर्माता के आदेश के अधीन है।

हे मित्र , जो कीड़े-मकौड़ों और मछलियों के अंडों और पौधों के बीजों को बुद्धिमानी और दयालु उद्देश्यों के लिए सुरक्षित रखता है, उसकी बुद्धि और संरक्षण का गुण कैसे शोभा देता है कि वह आपके कर्मों को रिकॉर्ड और संरक्षित न करे? वे कर्म पेड़ों के बीज हैं जो परलोक में अपना फल देंगे। यह हमारे मामले में विशेष रूप से सच है, क्योंकि हम उसके भरोसे और उसके भरोसे के वाहक हैं।

पृथ्वी पर प्रतिनिधि। प्रत्येक जीवित प्राणी में अपने जीवन को बचाए रखने की प्रबल इच्छा और झुकाव होता है। यह, और सृष्टि में जीवन को जारी रखने के लिए विपरीत परिस्थितियों को समेटने की प्रवृत्ति, यह इंगित करती है कि सांसारिक अस्तित्व का परिणाम सर्व-जीवित, सर्व-रक्षक और सर्व-स्थायी नामों की अभिव्यक्ति के माध्यम से शाश्वत स्थायित्व होगा। वे ईश्वरीय नियति द्वारा निर्धारित एक तथ्य की ओर भी संकेत करते हैं: प्रत्येक नाशवान, क्षणभंगुर वस्तु का एक महत्वपूर्ण, स्थायी बिंदु या बिंदु होता है

पहलू।

हे मित्र, यह जान लो कि जो एक अंजीर के पेड़ के बीज को, जब वह अंजीर में बदल रहा होता है, सुरक्षित रखता है, तथा उसे जमीन में सड़ने नहीं देता, ताकि वह अंजीर का पेड़ बन सके - वह सर्वरक्षक और संरक्षक, जो अन्य सभी पौधों और जानवरों की रक्षा करता है - वह पृथ्वी पर अपने प्रतिनिधि, मानवता के कार्यों की उपेक्षा नहीं करेगा।

हे मित्र, जान लो कि अर्थ का भौतिक अस्तित्व (अर्थात् अक्षर और शब्द) बदल सकता है और मिट सकता है, लेकिन अर्थ हमेशा बना रहता है। आवरण फट सकता है, लेकिन उसका सार या गूदा बना रहता है। कपड़े घिस जाते हैं, लेकिन शरीर बच जाता है; शरीर नष्ट हो जाता है, लेकिन आत्मा बच जाती है। शरीर बूढ़ा हो जाता है, लेकिन अहंकार जवान रहता है; अनेकता और अनेकता विभाजित होकर नष्ट हो जाती है, लेकिन एकता और एकात्मकता स्थायी रहती है। पदार्थ विलीन हो जाता है, लेकिन प्रकाश कायम रहता है। अलग-अलग "शरीर" धारण करने और अपने अनेक परिवर्तनों और विभिन्न स्थितियों के बावजूद, "अर्थ" अपने जीवन के आरंभ से अंत तक टिका रहता है और अपनी एकता बनाए रखता है (वह बदलता नहीं)। इससे पता चलता है कि वह मृत्यु की "खाई" को पार कर जाएगा और अपने कांटों से मुक्त होकर और अपने शरीर से अलग होकर, सुरक्षित और स्वस्थ अनंत काल तक चलता रहेगा। भौतिक (अस्थायी) चीजों के बने रहने और बचने की प्रबल प्रवृत्ति बताती है कि अर्थ, प्रकाश और आत्मा (स्थायित्व की ओर प्रवृत्त) जैसी साधारण चीजें हमेशा रहेंगी।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर की दिव्यता की महिमा और उसकी गरिमा तथा पूर्ण स्वतंत्रता के लिए यह आवश्यक है कि सभी चीजें उसके नियंत्रण में हों।

आपका शारीरिक रूप से छोटा आकार और आपकी कुछ महत्वहीन अवस्थाएँ आपको इस नियंत्रण से बाहर रखने की आवश्यकता नहीं है। उससे आपकी दूरी का मतलब यह नहीं है कि वह आपसे दूर है। आपके कुछ गुणों और आपके अस्तित्व की तुच्छता; आपका अपूर्ण चरित्र, मन और जीवन-शैली; और आपके अस्तित्व में सार्वभौमिक ज्ञान के संबंध में आपकी अज्ञानता आपको इस नियंत्रण से मुक्त नहीं करती है। सृष्टिकर्ता की महानता के लिए छोटी चीज़ों को उसके नियंत्रण से बाहर रखना आवश्यक नहीं है, क्योंकि महानता के लिए नियंत्रण में व्यापक होना और सृजन में स्वतंत्र होना आवश्यक है।

हे मित्र, जान लो कि जैसे-जैसे भौतिक, ठोस चीजें बड़ी होती जाती हैं, वे अपना आकार खोती जाती हैं। नाज़ुक, सूक्ष्म चीज़ों के प्रति संवेदनशीलता। लेकिन प्रकाश, जब फैलता है और फैलता है, छिपी हुई और सूक्ष्म चीज़ों में अधिक गहराई से प्रवेश करना और व्याप्त होना शुरू हो जाता है। जैसे-जैसे प्रकाश अधिक परिष्कृत होता जाता है, जैसे एक्स-रे, यह अधिक भेदक होता जाता है। आकस्मिक अस्तित्व के आयामों के साथ भी ऐसा ही है, कल्पना कीजिए कि यह कैसा होगा ज्योतियों के प्रकाश के साथ, अनिवार्य रूप से विद्यमान और एकल, सभी रहस्यों का ज्ञाता और गुप्त, और रात और दिन का संचालक। उसकी महानता अनिवार्य है उसका सर्वव्यापी, मर्मज्ञ और सर्वव्यापक होना।

जानें और देखें कि कुरान आम लोगों के स्तर पर कैसे विचार करता है समझ, क्योंकि वे पूर्ण बहुमत हैं। जब कोई मामला हो सकता है अनेक तरीकों से समझाए जाने के बाद, यह अपने दर्शकों के लिए सबसे उपयुक्त तरीका चुनता है। यदि ऐसा न होता, तो तर्क निष्कर्ष से भी अधिक गूढ़ होता।76 कुरान सृष्टिकर्ता की रचना का अनुमान लगाने के लिए प्राकृतिक घटनाओं का उल्लेख करता है। विशेषताएँ। जो बात आम लोगों को समझ में आती है, वह ज़्यादा उपयुक्त भी होती है दिशा - निर्देश के लिए।

उदाहरण के लिए, कुरान कहता है: और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का अंतर है (30:22)। रंगों का अंतर ईश्वर द्वारा लोगों को अलग-अलग चिह्नों के साथ निर्मित करने के कारण है और चेहरे। कुरान यह भी कहता है: [ईश्वर के अस्तित्व के लिए] निशानियाँ हैं और एकता] आकाश और पृथ्वी के निर्माण और रात के परिवर्तन में और दिन (3:190)। पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना रात और दिन की “चादर” के नीचे प्रकट होता है।77

क़ुरआन कहता है: (हमने) पहाड़ों को खूंटियाँ बनायीं (78:7)। कविता में, पृथ्वी की तुलना एक जहाज (अंतरिक्ष के महासागर में नौकायन) या एक तम्बू से की गई है जो खूंटियों (पहाड़ों) से स्थिर और स्थिर बना हुआ है, जो पृथ्वी के क्रोध का कारण बनता है शांत हो जाना चाहिए। अन्यथा, यह क्रोध से लगभग फट जाएगा (67:8) आंतरिक ऐंठन। पृथ्वी पहाड़ों के माध्यम से भी सांस लेती है। उनके बिना, यह अलग हो जाएगा, क्योंकि यह अपने पहाड़ों के कारण ही पृथ्वी है भूकंप आते हैं और फिर शांत हो जाते हैं। पहाड़ पानी के भंडार हैं, फिल्टर हैं हवा को सुरक्षित रखते हैं और ज़मीन को समुद्र के आक्रमण से बचाते हैं। इसलिए, लाक्षणिक अर्थ में, पहाड़ जीवन के खूंटे (स्तंभ) हैं।

---

[76] उदाहरण के लिए, यदि कुरान, जो लोगों को ईश्वरीय सत्यों की ओर मार्गदर्शन करता है, ने आधुनिक विज्ञान की शब्दावली में उप-परमाणु जगत का वर्णन किया होता, तो पहले की पीढ़ियां इसे समझ नहीं पातीं।

[77] अगर यह कहा जाए: पृथ्वी के अपने चारों ओर घूमने में [ईश्वर के अस्तित्व और एकता के] संकेत हैं और सूर्य, और रात और दिन क्रमशः होते हैं, यह लाखों लोगों को भ्रमित कर देता इस खोज से पहले रहने वाले लोगों की संख्या। (ट्र.)

कुरान में सबसे पहले आम लोगों को ध्यान में रखा गया है। उदाहरण के लिए, इस्लामी कानून खगोलीय गणना के बजाय अर्धचंद्राकार चाँद (रमजान की शुरुआत और अंत तथा हज के महीने धू अल-हिज्जा की शुरुआत निर्धारित करने के लिए) को मान्यता देता है, और इसमें पुष्टि करने के लिए दोहराव भी शामिल है।

हे मित्र, जान लो कि कुरान की आयतें काव्यात्मक कल्पना से कहीं अधिक अर्थपूर्ण हैं और हर संभव तरीके से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। कुरान में बोलने वाला व्यक्ति अपने आवश्यक गुणों और कार्यों का वर्णन करता है, जबकि अधिकांश कविताएँ दूसरों के बारे में बात करती हैं। कुरान सामान्य का वर्णन करते समय अधिकतर असाधारण है; कविता असाधारण के बारे में बात करते समय अधिकतर साधारण है।

हे मित्र, जान लो कि प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण और ईश्वर की एकता की गवाही देने वाले "पृष्ठ" (सृजन के) अनंत और विविध हैं, एक दूसरे के भीतर हैं, और एक ही केंद्र से उत्पन्न होते हैं। एक को देखने के लिए दूसरों को देखना आवश्यक है; एक को उजागर करने से व्यक्ति उन सभी में प्रवेश करने में सक्षम होता है। यदि आप एक को नहीं देख सकते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि अन्य परदे हैं या अस्तित्वहीन हैं। इसके बावजूद, शैतान द्वारा निर्देशित, शारीरिक, बुराई-आदेश देने वाला स्व, जो अनिवार्य रूप से सत्य है उसे नकारता है और जो अनिवार्य रूप से झूठ है उसकी पुष्टि करता है।

हे मित्र, जान लो कि जो शब्द लिखता है, वही अक्षर लिखता है, जो पंक्ति लिखता है, वही पृष्ठ लिखता है जिस पर वह दिखाई देता है, और जो पृष्ठ लिखता है, वही पुस्तक लिखता है। इस प्रकार एक चींटी का रचयिता सभी पशु प्रजातियों का रचयिता होना चाहिए, और सभी पशु प्रजातियों का रचयिता संसार का स्वामी होना चाहिए। यह पूर्ण, सर्वव्यापी प्रभुत्व का संकेत है कि एक शब्द या यहाँ तक कि एक पुस्तक एक बड़े अक्षर में अंकित है। समुद्र ब्रह्मांड में एक बड़ा अक्षर है, पेड़ रेखाएँ हैं, और पृथ्वी एक बिंदु है। रचयिता समुद्र के अक्षर में "मछली" शब्द लिखता है (सृजित करता है), और कुछ सांसारिक, गतिशील प्राणियों को पेड़ों और जानवरों की पंक्तियों में पृथ्वी के बिंदु में लिखता है। कोई सोच सकता है कि एक छोटी चींटी की उपेक्षा की जाएगी, लेकिन यह सच नहीं है। जिस तरह सूरत या सीन को उसके शुरुआती अक्षरों या सीन में लिखा जा सकता है , उसी तरह प्राणियों को उनके अंडों या बीजों में लिखा जाता है ।

ऐ दोस्त, जान लो कि सितारों और सूरजों के बीच समानता यह दर्शाती है कि उनका रब उनके जैसा या उनमें से एक नहीं हो सकता। उनमें से एक का रब उन सबका और सभी चीज़ों का रब है। ऐ लोगों, काश तुम पिस्सू और मच्छरों जैसे जीवों के मामले में न्यायपूर्ण और निष्पक्ष होते। जबकि वे अच्छे, मासूम जीव तुम्हारे द्वारा सभी फलों और अधिकांश जानवरों को काटे जाने को पूरी विनम्रता के साथ सहन करते हैं, क्या उनके द्वारा तुम्हें दी गई छोटी-सी भी चीज़ का बदला लेना उचित है?

हे मित्र, जान लो कि एक व्यक्ति जिम्मेदार व्यक्तियों से बना एक समुदाय है। अंगों और अंगों। प्रत्येक बाह्य और आंतरिक इंद्रिय की पूजा का एक विशेष रूप है, क्योंकि यह दुरुपयोग के कारण विद्रोही या पापपूर्ण हो सकता है।
जो ईश्वर नहीं है वह गुमराही है, जैसे कि कवियों की कल्पना सजदा करती है
खुद को ईश्वर के सामने रखना और हर उस सुंदरता की पूजा करना जो ईश्वर के लिए नहीं है और जो ईश्वर के लिए नहीं है
ऐसी चीजें कल्पना को स्थापित सीमाओं का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित करती हैं
(ईश्वर द्वारा)

हे मित्र, जान लो कि पथभ्रष्टता का सबसे बड़ा कारण है
किसी परिचित चीज़ को ज्ञात मानने की मानवीय प्रवृत्ति, क्योंकि वह आम और सामान्य है। हालाँकि, यह प्रवृत्ति अज्ञानता का कारण बन सकती है, क्योंकि लोग
ऐसी बातों पर विचार न करें, भले ही वे ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार हों।
बल्कि, वे उस पर ध्यान देते हैं जिसे वे असाधारण मानते हैं क्योंकि यह
यह दुर्लभ है। यह हवा से उठने वाली लहरों और सूरज की छवियों से चमकते समुद्र को देखने जैसा है, बिना पूरे समुद्र पर विचार किए।
जानवर और वनस्पतियाँ। फिर लोग उन तरंगों या छवियों का उल्लेख करने का प्रयास करते हैं,
समुद्र के स्वामी की महानता के प्रमाण के रूप में जानवर और वनस्पतियाँ नहीं
और निर्माता.

हे मित्र, यह जान लो कि पृथ्वी के विषय में हम जो कुछ जानते हैं और जिसे हम प्रत्यक्ष मानते हैं, उसका अधिकांश भाग सतही परिचय पर आधारित है, अज्ञानता पर फैला एक आवरण है,
और बिना किसी आधार के। इस प्रकार कुरान हमारा ध्यान सामान्य की ओर आकर्षित करता है
और साधारण। अपनी तीक्ष्ण अभिव्यक्तियों के साथ, यह पर्दा हटा देता है
सतही परिचय यह दिखाने के लिए कि जिसे हम सामान्य और साधारण के रूप में देखते हैं वह वास्तव में है
तथ्य असाधारण.

हे मित्र, जान लो कि दो व्यक्तियों के बीच का संबंध और वार्तालाप
चीजों को एक दूसरे के बराबर या समान होने की आवश्यकता नहीं है। बारिश की एक बूंद
और एक फूल का सूर्य के साथ एक रिश्ता और लेन-देन है। मानव
प्राणियों को कभी यह नहीं मानना चाहिए कि उनका छोटा होना उन्हें सभी चीज़ों के रचयिता की कृपा से वंचित करता है।

हे मित्र, यह जान लो कि कुछ संतों के लिए समय का विस्तार होना चाहिए
असंभव नहीं माना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, इमाम शारानी ने इब्न अल- का अध्ययन किया।
अरबी के चार खंडों वाले अल-फ़ुतुहात अल-मक्किया (मक्का की खोजें) को दिन में ढाई बार पढ़ना।78 इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है-

---

78 इमाम शारानी, 'अब्द अल-वहाब इब्न अहमद इब्न' अली अल-हनफ़ी (1493-1564) एक थे
मिस्र के सूफी विद्वान। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ हैं अल-मिज़ान अल-कुबरा (सबसे बड़ा संतुलन)
और अल-अनवर अल-कुदसिया फी मारीफत अदब अल-उबुदिया (पवित्र ज्योतियाँ जानने में)
दासता के मामले) यह क्षमता अल-यवाकित वा अल-जवाहिर के अंत में दर्ज की गई थी
["माणिक और अन्य प्रकार के रत्न"]. (अनुवाद)

उदाहरण: कुछ सेकंड तक चलने वाले सपने के दौरान, ऐसा लगता है कि आप एक साल तक जीवित रहे हैं। यदि आप ऐसे समय में कुरान पढ़ते हैं, तो आप इसे शुरू से अंत तक कई बार पढ़ सकते हैं। कुछ संत जो दूसरों के लिए छिपी हुई चीज़ों को उजागर कर सकते हैं, वे जागते समय समय के ऐसे विस्तार का अनुभव करते हैं। वे मानो आत्मा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं, जो समय से असंबद्ध है, और लगभग उसकी गति के साथ।

गति समय के शरीर की तरह है, या समय गति के रंग की तरह है, क्योंकि जो कुछ एक में होता है वह दूसरे में भी होता है। तो, एक संत जिसका शारीरिक अस्तित्व उसकी आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है, वह आत्मा या कल्पना की गति से क्यों नहीं चल सकता?

हे मित्र! जान लो कि कुछ लोग ईश्वरीय एकता के परिणामों को समझ नहीं सकते, और उनकी भ्रष्ट कल्पना उन्हें सहन नहीं कर सकती।
वे ईश्वरीय एकता को स्थापित करने वाले प्रामाणिक, निर्णायक प्रमाणों को अस्वीकार करने का प्रयास करते हैं और यह तर्क देते हुए कि ऐसे प्रमाण इतने जबरदस्त परिणाम नहीं दे सकते, उनकी प्रामाणिकता को कमज़ोर करने का प्रयास करते हैं। वे नहीं जानते कि विश्वास परिणाम का समर्थन करता है और उसे आगे ले जाता है, प्रमाण केवल एक खिड़की है जिसके माध्यम से इसे देखा जा सकता है, या उस पर भ्रम (धूल) को दूर करने के लिए एक ब्रश है। इसके अलावा, ईश्वरीय एकता के लिए उतने ही प्रमाण हैं जितने रेगिस्तान में धूल के कण, बारिश की बूंदें और समुद्र में लहरें हैं।

हे मित्र, जान लो कि जो तुम्हारे खाने के लिए खरबूजे और सेब तैयार करता है, वह तुमसे बेहतर जानता है कि तुम्हें क्या खाना चाहिए और वह जानता है कि तुम्हारी अंतरात्मा को क्या अच्छा लगता है। क्या पौधों और पेड़ों की शाखाएँ और तने इन बातों को जानते हैं? ईश्वरीय कृपा के ऐसे साधन या कारण केवल दया के माध्यम और कृपा की नहरें हैं।

झोंके का दूसरा भाग

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

भगवान की जय हो। अस्तित्व के बाहरी और आंतरिक, अदृश्य आयामों के बीच का पर्दा कितना पतला है। और फिर भी उनके बीच की दूरी कितनी बड़ी है।
इस दुनिया और परलोक के बीच का रास्ता कितना छोटा, फिर भी कितना लंबा है। ज्ञान और अज्ञान के बीच का पर्दा कितना महीन, फिर भी कितना मोटा है। विश्वास और अविश्वास के बीच का अंतर कितना पारदर्शी, फिर भी कितना घना है। ईश्वर की सेवा और विद्रोह के बीच की दूरी कितनी छोटी है, भले ही वे स्वर्ग और नर्क जितने दूर हों। जीवन कितना छोटा है, फिर भी महत्वाकांक्षा कितनी महान है।

इसी तरह, कल और आज के बीच एक पतला पर्दा है जिसे नहीं पहचाना जा सकता। आत्मा को गुज़रने और कल और यहां तक कि अंदर घुसने से रोकें परे। हालाँकि, शरीर के लिए यह दूरी इतनी अधिक है कि इसे पार करने में समय लगेगा इसके माध्यम से यात्रा करने के लिए एक वर्ष लगता है। अस्तित्व के बाहरी और आंतरिक आयामों के बीच और दुनिया और परलोक के बीच के पर्दे पतले और उन लोगों के लिए पारदर्शी जिनके दिल और आत्मा जीवित और जागृत हैं, जबकि वे उन लोगों के लिए अत्यंत मोटे हैं जो अपने शारीरिक स्व और शारीरिक आज्ञा का पालन करते हैं इच्छाएं.

इसी तरह, आपकी रात और दिन के बीच एक महीन अंतराल है: आपकी "पलक"। जब आप अपनी स्वयं की आंख खोलते हैं, तो आपकी रात गायब हो जाती है और आपकी दिन चमकता है। लेकिन अगर आप भूल जाते हैं कि आप क्या हैं, तो आप स्थायी रूप से रात में गिर जाते हैं। जब हम सर्वशक्तिमान के लिए ब्रह्माण्ड को देखते हैं, तो जो कुछ भी दिखता है, वह सब कुछ हो जाता है। ज्ञान का एक स्रोत; ऐसा करते समय असावधानी और भौतिक या प्राकृतिक कारणों से, जो कुछ भी ज्ञान के रूप में देखा जाता है वह शुद्ध अज्ञान बन जाता है।

अया सोफिया (हागिया सोफिया) की रोशनी और उसके अस्तित्व के बीच रात के घने अंधेरे में, एक क्षण ऐसा होता है जैसे लाइटें बंद करना चालू या बंद। बिजली चमकना और उसका गायब होना लगभग एक साथ होता है। हवा के झोंके से आसमान काला हो जाता है और फिर तेज़ी से साफ हो जाता है।
दया। जो ईश्वरीय एकता में विश्वास और आस्था के प्रकाश से देखता है, वह देखता है ब्रह्माण्ड प्रकाश और मैत्री, पारस्परिक प्रेम और स्नेह से भरा हुआ है, और उसमें मौजूद सभी चीज़ों और प्राणियों को मिलनसार, जीवित भाई-बहनों के रूप में देखते हैं। लेकिन जो अविश्वास से देखता है, वह सभी चीजों और प्राणियों को भयानक लाशों के रूप में देखता है और अजनबी एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। ऐसा व्यक्ति ब्रह्मांड को भी एक नज़र से देखता है अंधकार के पर्दे, और स्वयं लहरों से ढके गहरे समुद्र में, जिसके ऊपर बादल हैं। जब वह हाथ बढ़ाता है, तो वह लगभग अदृश्य हो जाता है।

आईने के दो चेहरों के बीच का पर्दा एक पत्ते से भी पतला होता है, लेकिन उनके बीच का अंतर उतना ही बड़ा होता है जितना कि पूर्व और पश्चिम के बीच का। उंगली हिलाने से आईना या तो आप पर मुस्कुराता है या आपके चेहरे को पूरी तरह से काला कर देता है। उसी तरह, हमारे कर्मों के भी दो "चेहरे" होते हैं। जो कर्म एक दूसरे के साथ किए जाते हैं, वे एक दूसरे के साथ किए जाते हैं।
ईश्वर को प्रसन्न करने का इरादा आपको एक पारदर्शी चेहरा प्रदान करता है, जिसमें असंख्य अभिव्यक्तियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। ऐसे इरादे की कमी एक अंधकारमय, अपारदर्शी चेहरा दिखाती है जो सत्य के नाम पर कुछ भी नहीं दर्शाता।

जबकि एक काले चेहरे में कोई गहराई नहीं होती है और इसमें कुछ भी नहीं होता है, क्योंकि यह केवल खुद को दिखाने के लिए पर्याप्त स्थान घेरता है, एक पारदर्शी चेहरा, अपने संबंध के कारण विचारों या प्रतीकों की अमूर्त दुनिया में, असीम विशाल चीजें समाहित हो सकती हैं।
इसी तरह, जीवन के भी दो चेहरे हैं: एक जो संसार से सम्बन्धित है और अन्धकारमय है,

संकीर्ण और क्षणभंगुर; दूसरा सत्य से संबंधित है और पारदर्शी, व्यापक और स्थायी है। लापरवाह शारीरिक आत्मा, शैतानी कुतर्क के प्रभाव में, अंधकारमय चेहरा पहनती है लेकिन पारदर्शी चेहरे में जो संभव है, उसकी मांग करती है, जैसे कि अनंत काल की तलाश।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारा अहंकार ही सृष्टि की कुंजी रखता है। यद्यपि सृष्टि के द्वार खुले हुए प्रतीत होते हैं, वास्तव में वे बंद हैं। सत्य ने मानवता को एक कुंजी सौंपी है जो सृष्टि के सभी द्वार खोलती है और सृष्टिकर्ता के खजाने को खोलती है। यह कुंजी तुम्हारा अहंकार है, जो एक पहेली है। जब तुम उस पहेली को उसके स्वरूप को जानकर सुलझाते हो, तो सृष्टि तुम्हारे लिए खुल जाती है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को एक अहंकार दिया है, जो तुलना की इकाई के रूप में कार्य करता है, ताकि वे दिव्य प्रभुत्व के गुणों को समझ सकें। जब आप जानते हैं कि अहंकार क्या है, तो आप इसे ठीक और कमजोर के रूप में देखते हैं, अपने अस्तित्व की रस्सी में एक सचेत बाल की तरह, अपने स्वभाव के कपड़े में एक पतली पट्टी की तरह, अपनी किताब में एक अलिफ (पहला अरबी अक्षर) की तरह। इसके भी दो चेहरे हैं: एक अच्छाई की ओर मुड़ा हुआ, ईश्वर की कृपा और आशीर्वाद का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता (एजेंट नहीं); दूसरा बुराई और अस्तित्वहीनता की ओर मुड़ा हुआ, और खुद को एक एजेंट मानता है। इसका एक भ्रामक स्वभाव और एक कल्पित प्रभुत्व और संप्रभुता है।

इसका अस्तित्व इतना कमज़ोर है कि यह अपने आप कुछ भी सहन नहीं कर सकता। यह थर्मामीटर या इसी तरह के किसी उपकरण की तरह है जो चीज़ों और गुणों को मापता है ताकि अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के निरपेक्ष, सर्वव्यापी गुणों को जान सके।
तुम्हें इस बात से भली-भाँति परिचित हो जाना चाहिए और इस बात का हवाला देते हुए कि, " वह सफल हो गया जिसने उसे शुद्ध किया" (91:9), तुम्हें जो अमानत दी गई है उसे पूरा करना चाहिए।

अगर तुम अपने अहंकार को सृष्टिकर्ता के गुणों और नामों को समझने के लिए तुलना की इकाई मानते हो, तो यह तुम्हारे लिए एक आँख बन जाता है जिससे तुम देख सकते हो कि ब्रह्मांड में क्या मौजूद है। तुम्हारे अहंकार में, यह जानकारी उसे खोजती है जो इसे पुष्ट करेगी और इसे वास्तविक ज्ञान में बदल देगी। फिर उसका आधिपत्य या संप्रभुता और स्वयं के स्वामित्व का दावा समाप्त हो जाता है, और वह अपने अस्तित्व को भ्रामक मानता है। लेकिन अगर तुम अपने अहंकार को स्वतंत्र मानते हो और इस तरह ट्रस्ट का उल्लंघन करते हो, तो तुम उन लोगों में से होगे जिनका उल्लेख इस प्रकार है: और वास्तव में उसने इसे बर्बाद कर दिया है जिसने इसे बाधित किया और बिगाड़ा (91:10), क्योंकि यह अहंकार ही है जिसे उठाने से आकाश, पृथ्वी और पहाड़ सिकुड़ गए।

ऐसा अहंकार ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने का स्रोत है, साथ ही सभी बुराई और गुमराही का भी। यदि अहंकार खुद को आपसे छिपाता है, तो यह मोटा हो जाता है और तब तक बढ़ता है जब तक कि यह आपको निगल नहीं लेता और आपको अहंकार में बदल नहीं देता। यह जनजातीय और फिर नस्लीय कट्टरता के साथ मजबूत होता जाता है, जब तक कि यह अपने निर्माता के आदेश के खिलाफ लड़ने वाला शैतान नहीं बन जाता। फिर यह अन्य लोगों, चीजों और प्राकृतिक कारणों की तुलना खुद से करता है, प्रत्येक को आत्म-स्वामित्व और संप्रभुता प्रदान करता है, और

ईश्वर के साथ भागीदार बनना शुरू कर देता है। यदि आप इस सृष्टि को देखें तो
राज्य, सब कुछ बंद है, ठीक उसी समय जब ऐसा लगता है कि आपकी आँखों के लिए सब कुछ खुल गया है
अपने आप में वापस लौटो और तुम्हें सब कुछ अहंकार से रंगा हुआ दिखाई देगा।
अहंकार ईश्वर को अपने साथ जोड़ना या नकारना है। भले ही सारे क्षितिज ईश्वर के साथ हों
(सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता के) सबसे स्पष्ट संकेतों से भरा हुआ,
अहंकार में जो शेष रह जाएगा वह एक अंधकारमय बिन्दु होगा जो उन सभी चिह्नों को ढक लेगा।

एक महत्वपूर्ण मामला

अहंकार के दो चेहरे हैं: पैगम्बरत्व और मानव दर्शन।

यह पहला चेहरा, परमेश्वर के प्रति शुद्ध दासता का मूल, केवल परमेश्वर की ओर ही संकेत करता है
और इसका अस्तित्व भ्रामक, आश्रित है। हालाँकि यह स्वयं-स्वामित्व वाला प्रतीत होता है,
यह ईश्वर के स्वामित्व में है और उसी के द्वारा नियंत्रित है। इसकी एक कथित (स्थापित नहीं) वास्तविकता है, और यह सृष्टिकर्ता के ईश्वर को समझने के लिए एक माप, तुलना की इकाई के रूप में कार्य करता है।
गुण। यह वास्तविकता सभी पैगम्बरों द्वारा देखी गई है, जिन्होंने अस्तित्व को ईश्वर के अधीन कर दिया है।
परमेश्वर ने पुष्टि की और प्रदर्शित किया कि उसकी संप्रभुता में उसका कोई साझेदार नहीं है,
प्रभुता या दिव्यता; और वह सभी चीज़ों की कुंजियाँ रखता है, और उन पर उसका पूर्ण अधिकार है। अहंकार के इस पारदर्शी चेहरे से, सर्व-दयालु भगवान
सेवकाई का एक धन्य वृक्ष उग आया है जिसकी धन्य शाखाएँ,
ब्रह्मांड का बगीचा, पैगम्बरों, पैगम्बरों के फलों के गुच्छों से लटका हुआ है,
संत, और सत्य की खोज करने वाले, शुद्ध विद्वान अंधेरे में सितारों की तरह चमकते हैं।

दर्शनशास्त्र पर आधारित दूसरा चेहरा अहंकार को एक स्वतंत्र, स्व-स्वामित्व वाले अस्तित्व के साथ प्रस्तुत करता है जो स्वयं की ओर इशारा करता है।
दार्शनिक कहते हैं कि अहंकार के पास एक स्वतंत्र, स्व-स्वामित्व वाला अस्तित्व है जो स्वयं की ओर इशारा करता है।
एक स्थापित वास्तविकता और उसका कर्तव्य आत्म-प्रेम के माध्यम से परिपूर्ण बनना है। इसने ईश्वर के साथ कई तरह के सहयोगी भागीदारों को जन्म दिया है,
विशेष रूप से गुमराही का शापित वृक्ष। इसकी वासना की शाखा, जो अन्यायपूर्ण शक्ति या बल और दिखावे से मोहित शारीरिक सुंदरता की सराहना करती है, ने मानवता को ऐसी मूर्तियाँ दी हैं जिनके सामने गुमराह लोग झुक जाते हैं।[79] वासना की शाखा, जो अन्यायपूर्ण शक्ति या बल और दिखावे से मोहित शारीरिक सुंदरता की सराहना करती है, ने मानवता को ऐसी मूर्तियाँ दी हैं जिनके सामने गुमराह लोग झुक जाते हैं।
क्रोध ने मानवता को फिरौन और निम्रोद से भर दिया है, जबकि तर्क ने नास्तिकों और भौतिकवादियों को जन्म दिया है। दार्शनिक ईश्वर को
उसके राज्य का केवल एक भाग ही मानते हैं, तथा शेष को उससे सम्बन्धित मानते हैं जो वह नहीं है।

यद्यपि अहंकार मूलतः वायु या वाष्प की तरह है, दार्शनिकों की गलत धारणा के कारण यह सघन होता जाता है, द्रव की तरह बन जाता है और फिर सतही परिचय के कारण ठोस वस्तु की तरह बन जाता है। असावधानी के कारण यह ठोस वस्तु बन जाता है।

---

[79] मूर्तियाँ पूजा की जाने वाली वस्तुएँ और आदर्श माने जाने वाले लोग दोनों हैं, जैसे कि फ़िल्म स्टार, खिलाड़ी, गायक और अन्य। विडंबना यह है कि अपने प्रशंसकों या अनुयायियों द्वारा आदर्श माने जाने वाले लोगों को वे स्वयं अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए अपने प्रशंसकों के सामने झुकते हैं। (ट्र.)

जम जाता है, जिसके बाद विद्रोह के कारण यह और मजबूत हो जाता है और तब तक फूलता रहता है जब तक कि यह अपने मालिक को निगल नहीं लेता। यह जनजातीय या नस्लीय दृष्टिकोण के साथ व्यापक हो जाता है और फिर, क्योंकि वह दूसरों को आत्म-अस्तित्व, स्वामित्व और यहां तक कि रचनात्मकता का श्रेय देता है लोगों और प्राकृतिक कारणों (क्योंकि यह खुद को भी यही मानता है) के बीच अंतर होने पर, अहंकार अपने निर्माता के आदेश के खिलाफ़ संघर्ष करना शुरू कर देता है। कुछ दार्शनिकों का मानना है कि प्राकृतिक कारणों का सृजन और चीज़ों के नियंत्रण पर वास्तविक प्रभाव पड़ता है, और वे रचनात्मकता का श्रेय प्रकृति और संयोग को देते हैं। यही कारण है कि वे पुनरुत्थान को नकारते हैं और स्वीकार करें कि आत्माओं या, जैसा कि भौतिकवादियों के मामले में है, पदार्थ का कोई अस्तित्व नहीं है शुरुआत। भगवान उनकी दुष्टता पर आक्रमण करें, क्योंकि उनके दंभ ने उन्हें शैतानों के खिलौने, जिन्होंने उन्हें गुमराही के गड्ढों में फेंक दिया है।

सामान्य ब्रह्मांड (मानवता) में अहंकार, ब्रह्मांड में प्रकृति का प्रतिरूप है। वृहत्-ब्रह्मांड: दोनों को ईश्वर के साथ साझेदारी का श्रेय दिया गया है और इसलिए उन्हें देवता माना गया है। जो कोई भी झूठे देवताओं को नकारता है और ईश्वर में विश्वास करता है, उसने पकड़ लिया है सबसे अटूट हैंडल का। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (2:256)

हे मित्र, जान लो कि अच्छे कर्म सच्चे इरादे से किए गए कार्य से शक्ति प्राप्त करते हैं, और दिखावे, आडंबर और पाखंड से भ्रष्ट हो जाते हैं। अच्छाई के प्रति भावनाएँ और (स्वाभाविक) प्रवृत्तियाँ व्यक्ति के अंतःकरण में समाहित होती हैं। सचेत या उद्देश्यपूर्ण इरादे के माध्यम से अपनी शुद्धता खो देते हैं। इरादा ही वह है जो कर्मों का जीवन है, जबकि उद्देश्यपूर्ण इरादा प्राकृतिक अवस्थाओं की मृत्यु है। उदाहरण के लिए, विनम्र होने का इरादा विनम्रता को बिगाड़ देता है, विनम्र होने का इरादा विनम्रता को बिगाड़ देता है महानता अवमानना को भड़काती है, राहत पाने का इरादा राहत को गायब कर देता है, और दुखी होने का इरादा दुख को कम कर देता है।

हे मित्र, जान लो कि वृद्धि का नियम वृक्ष में भी काम करता है। बीज (इसका सार) फल द्वारा निहित होता है और जब तक किसी तरह से बाधा न डाली जाए, अनन्त अनुग्रह से वृक्ष में बढ़ता है और पुनः उसके फल में स्थापित हो जाता है। फल पेड़ का सबसे मूल्यवान, सम्मानित, सुखद, महत्वपूर्ण और शानदार हिस्सा है, क्योंकि यह पेड़ के अस्तित्व का कारण है। ब्रह्मांड एक पेड़ है, और इसकी शाखाएँ पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि जैसे मूल तत्व हैं। इसकी पत्तियाँ पौधे हैं, उसके फूल पशु हैं, और फल पुरुष और स्त्रियाँ हैं।

सबसे महान, सबसे उज्ज्वल, शानदार, सुंदर, महान, व्यापक, और लाभदायक फल पैगंबर मुहम्मद, रसूलों के मालिक हैं, धर्मपरायण लोगों का नेता और जगत के स्वामी का प्रिय। उसने स्वर्गारोहण और उसकी आँखें नहीं झुकीं। चाँद उसके लिए विभाजित हो गया। छिपकली, हिरन, भेड़िया, ऊँट, पहाड़, चट्टान, खंभा, पेड़ और मिट्टी का ढेला बोला उसके लिए। उसकी उंगलियों से कवथर के झरने की तरह पानी बहता था। वह है सबसे पुण्यवान व्यक्ति, जो अपने व्यक्तित्व में विश्वास के सभी सत्यों को धारण करता है। सभी मनुष्य-

ईश्वरीय कृपा के प्रतीक उसके द्वारा प्राणियों तक पहुंचते हैं, और उसी पर कृपा होती है।
दयालु ईश्वर के सभी रहस्यों को इसमें केन्द्रित किया गया है।

वह पैगंबरों और धर्मपरायण लोगों की "घुड़सवार सेना" का नेतृत्व करता है जो अपनी निष्ठा और वादों के प्रति वफादार हैं, और सभी प्राणियों में सबसे अधिक पुण्यवान हैं। वह ईश्वरीय एकता में विश्वास और समर्पण के माध्यम से सबसे महान गौरव का ध्वज धारण करता है, और सबसे सम्मानित और प्रतिष्ठित रस्सी का मालिक है
इस्लाम के ज़रिए। वह शाश्वत रहस्यों का साक्षी है, प्रकाशों को देखता है, और अपने से पहले वालों की ज़बानों का अनुवाद करता है। वह ज्ञान का स्रोत है,
धैर्य और बुद्धि। उसने सेवकाई का सर्वोच्च पद प्राप्त किया, शुद्धतम पदों की सर्वोच्च नैतिकता से प्रतिष्ठित था, और ईश्वर का सबसे महान मित्र और उसका सबसे महान प्रिय है। उस पर सबसे अधिक पुण्य हो

जब तक आकाश और पृथ्वी रहेगी, आशीर्वाद और शांति बनी रहेगी।

हे रसूलों के मालिक, मेरा हाथ थाम लो। तुम ही वांछित और
हे ईश्वर की उदारता के प्रकट प्रकाश, मैंने जो खोजा, वह मेरा कोई नेता नहीं है,
शरण, तुम्हारे अलावा अन्य। मेरा प्रमाण है: "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और
मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।"

हे ईश्वर! काश मेरे पास हज़ारों ज़बानें होतीं जिनसे मैं आपसे पूछ पाता
क़यामत के दिन तक के लिए क्षमा की प्रार्थना करो। हे ईश्वर! मेरी जगह ले लो
क्षमा मांगने और आशीर्वाद मांगने वाली भाषाओं के लिए ग्रंथ
मेरे लिए पैगम्बर पर सदैव कृपा बनी रहे।

हे परमेश्वर! पापों ने मुझे गूंगा बना दिया है, और मेरे विद्रोही सिंह की बहुतायत ने मुझे लज्जित
किया है। मेरी बड़ी असावधानी ने मुझे अपनी आवाज़ कम करने पर मजबूर कर दिया है।
मैं आपकी दया के द्वार पर दस्तक देता हूं और आपके द्वार पर रोता हूं
मेरे स्वामी की ज़ुबान से माफ़ी और सहारा, शेख़ अब्द
अल-कादिर अल-जिलानी, ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दें, और उनकी अपील, जो है
द्वारपाल को स्वीकार्य और परिचित:

हे वह जिसकी दया सब कुछ समेटे हुए है! हे वह जिसके हाथ में सब कुछ है
हे प्रभु, सभी चीज़ों का स्वामी वही है! हे प्रभु, जिसे कुछ भी हानि या हानि नहीं पहुँचा सकता
लाभ, जिसे कुछ भी दूर नहीं कर सकता और जिससे कुछ भी नहीं कर सकता
छिपा हुआ हो, जिसे कुछ भी थकाता या मदद नहीं करता, जो एक से अधिक कर सकता है
एक साथ दो चीजें, और जिनसे कुछ भी मिलता जुलता या भ्रमित करने वाला नहीं है!
मैं जो कुछ भी करता हूँ (जिससे आप अप्रसन्न होते हैं) उसके लिए मुझे क्षमा करें ताकि आप
मुझसे मेरे किसी भी (पापपूर्ण) कार्य का हिसाब न मांगो।

हे वह जो सब कुछ अपने माथे से थामे हुए है और जिसके हाथ में
हे परमेश्वर, तू ही सब चीज़ों की कुंजी है! हे परमेश्वर, तू ही सब चीज़ों से पहले है;
अंतिम, सभी चीजों के बाद; बाह्य, सभी चीजों से ऊपर; आंतरिक,
सभी चीज़ों में सबसे ज़्यादा अंतर; सभी चीज़ों पर हावी! मुझे सभी के लिए माफ़ कर दो
हे सब कुछ जानने वाले, सब कुछ देखने वाले, सब कुछ देखने वाले, सब कुछ देखने वाले, सब कुछ
देखने वाले, सब कुछ देखने वाले, सब कुछ देखने वाले, सब कुछ जानने ...

मेरे सारे पापों और गलतियों को क्षमा कर दो ताकि तुम मुझे किसी भी बात का हिसाब न दो। तुम सभी चीज़ों पर शक्तिशाली हो।

हे ईश्वर! मैं आपकी महानता और आपकी शक्ति की महिमा, और आपकी संप्रभुता की शक्ति और आपकी शक्ति की संप्रभुता की शरण लेता हूँ, ताकि मैं आपसे अपना रिश्ता और घातक कल्पनाएँ न खो दूँ। हे आपके पड़ोस की तलाश करने वालों के पड़ोसी! मुझे शैतानी वासना से बचाएँ, मुझे मानवीय गंदगी से साफ़ करें, और अपने पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सच्चे प्यार के माध्यम से मुझे लापरवाही और अज्ञानता की कल्पनाओं से शुद्ध करें।

(मैं यह इसलिए माँगता हूँ) कि मैं अपने अहं से, अपने अहंकार से मुक्त हो जाऊँ, और जो तुम्हारे लिए है, तुम्हारे साथ है, तुमसे और तुमसे ही है, वही बचे; और मैं तुम्हारी कृपा के सागर में तुम्हारे अनुग्रह से अभिभूत हो जाऊँ। (मैं) उन लोगों में से होऊँ जिन्हें तुम्हारी तलवार से विजयी बनाया गया है, जिन्हें तुम्हारे उपहारों से अनुग्रहित किया गया है, और जिन्हें तुम्हारी सुरक्षा द्वारा तुमसे बाधित होने वाले कार्यों से दूर रखा गया है।

हे ज्योतियों के प्रकाश, रहस्यों के ज्ञाता, रात और दिन के संचालक। हे प्रभु, पराक्रमी, प्रबल, दयालु, प्रेममय, क्षमाशील।
हे अदृश्य के ज्ञाता, हृदय और नेत्रों को फेरने वाले, दोषों को दूर करने वाले, पापों को क्षमा करने वाले! मुझे क्षमा कर दीजिए और उस पर दया कीजिए जो दुर्गम कठिनाई में है, जिसके लिए सभी द्वार बंद हैं, जो बड़ी कठिनाई से धर्म के मार्ग पर चलता है, और जिसके दिन असावधानी, विद्रोह और पाप के स्थानों में व्यतीत होते हैं। हे पुकारे जाने पर उत्तर देने वाले! हे हिसाब लेने वाले! हे उदार और दाता! उस पर दया कीजिए जो गंभीर बीमारियों से ग्रस्त है जिनका इलाज करना कठिन है, और जिसके पास बहुत कम और कमजोर साधन हैं जबकि वह गंभीर दुर्भाग्य से ग्रस्त है! आप ही उसकी शरण और उसकी आशा हैं।

हे ईश्वर! मैं अपनी कठिनाइयों और कष्टों के बारे में आपसे शिकायत करता हूँ। हे ईश्वर! मेरी आवश्यकता ही मेरा औचित्य है, और साधन के नाम पर मेरे पास जो कुछ भी है, वह केवल मेरी कमी और मेरी लाचारी है। हे ईश्वर! आपकी कृपा के सागर की एक बूंद मुझे समृद्ध बनाती है, और आपकी क्षमा की बाढ़ की एक बूंद मेरे लिए पर्याप्त है।

हे प्रेमी! हे प्रेमी! हे प्रेमी! हे सर्वोच्च सिंहासन के स्वामी!
हे आरंभकर्ता और वापस लाने वाले! हे जो चाहे करने वाले! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, आपके "चेहरे" के प्रकाश के लिए जो आपके सिंहासन के सभी स्तंभों को भरता है, और आपकी शक्ति जिसके साथ आप अपने सभी प्राणियों पर शक्तिशाली हैं, और आपकी दया जो सभी चीजों को गले लगाती है। हे सहायक, आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी मदद करें और मेरे पापों और मेरे जीवन के दौरान मेरी जीभ की गलतियों को क्षमा करें, आपकी दया के लिए, हे दयालुओं में सबसे दयालु! आमीन। आमीन। आमीन।

हे क्षमा मांगने वाले ! पहले अपनी ओर से और फिर मेरी ओर से ईश्वर के लिए इसे पढ़ो। क्योंकि मैं अपनी कब्र में पड़ा हूँ और क्षमा मांगने में असमर्थ हूँ।

कुछ भी करने या कहने के लिए मैं अपनी पुस्तक के द्वारा केवल तेरी जीभ से बोल सकता हूँ, इसलिए मेरी ओर से केवल परमेश्वर के लिए बोल।

तीसरा भाग

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

मैं अपने मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए ईश्वर से सहायता माँगता हूँ। उसकी महिमा हो जो आकाश को अपनी प्रशंसा से बोलने में सक्षम बनाता है और ग्रहों तथा अन्य सितारों के शब्दों से महिमामंडित करता है। हे वह जो पृथ्वी को अपनी प्रशंसा से बोलने में सक्षम बनाता है और पेड़ों तथा पौधों के शब्दों से (उसकी) महिमामंडित करता है, जो पेड़ों तथा पौधों को फूलों तथा फलों के शब्दों से बोलने में सक्षम बनाता है, जो फूलों तथा फलों को बीजों तथा पत्थरों के शब्दों से बोलने में सक्षम बनाता है, तथा जो बीजों तथा पत्थरों को बालियों तथा अनाजों के शब्दों से बोलने में सक्षम बनाता है।

आपकी जय हो, जिसे प्रकाश अपनी समस्त किरणों से, वायु अपनी हवाओं से, जल अपनी नदियों से, पृथ्वी अपनी चट्टानों से, पौधे अपने फूलों से, वृक्ष अपने फलों से, वायुमंडल अपने पक्षियों से, बादल अपनी वर्षा से, तथा आकाश अपने चन्द्रमाओं से स्तुति के साथ महिमामंडित करता है।

हमारे स्वामी मुहम्मद पर, जो पैगम्बरों के दीपक हैं, पवित्र विद्वानों के चंद्रमा हैं, संतों के सितारे हैं, मानवता और जिन्न के सूर्य हैं, तथा पूर्व और पश्चिम के प्रकाश हैं, तथा उनके परिवार पर, जो मार्गदर्शन के सितारे हैं, तथा साथियों पर, जो अंधकार को प्रकाशित करने वाले दीपक हैं, आशीर्वाद और शांति हो।

हे वह जो इस आयत का अर्थ समझना कठिन समझता है, जान ले कि हमने उन्हें शैतानों के लिए हथियार बना दिया है (67:5) इस आयत के आकाश तक पहुँचने के लिए हमें सात सीढ़ियों वाली सीढ़ी की आवश्यकता है।

पहला कदम: स्वर्ग में अपने निवासी हैं जिन्हें स्वर्गदूत कहा जाता है।
जिस प्रकार पृथ्वी, आकाश की तुलना में अपने नगण्य आकार के बावजूद, जीवित, चेतन प्राणियों से भरी हुई है, उसी प्रकार आकाश भी, अपने तारामंडलों के सुसज्जित महलों के साथ, अपने-अपने विशिष्ट चेतन प्राणियों से भरा हुआ होगा।

ब्रह्मांड सुंदरता, डिजाइन और कढ़ाई से भरपूर है, जिसके लिए प्राणियों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है, ताकि वे प्रशंसा और विस्मय के साथ उन पर विचार कर सकें। सुंदरता केवल अपने प्रेमी के लिए प्रदर्शित की जाती है, क्योंकि भोजन केवल भूखे को दिया जाता है। मानवता और जिन्न, अपनी संख्या या अक्षमता के कारण, अस्तित्व की सभी राजसी सुंदरता को नहीं देख सकते और उस पर विचार नहीं कर सकते, क्योंकि इसके लिए कई प्रकार के स्वर्गदूतों और अन्य आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है।

दूसरा कदम: धरती और स्वर्ग के बीच एक घनिष्ठ संबंध और लेन-देन है। उदाहरण के लिए, प्रकाश, गर्मी और इसी तरह के आशीर्वाद स्वर्ग से आते हैं। यह दर्शाता है और इसकी आवश्यकता है कि मानवता के लिए स्वर्ग में चढ़ने का एक तरीका है, जैसा कि पैगंबरों, संतों और आत्मिक प्राणियों (स्वर्गदूतों के अलावा) द्वारा महसूस किया गया है, उनके शारीरिक वजन से मुक्त होकर।

तीसरा चरण: स्वर्ग की व्यवस्था, शांति और स्थिरता यह दर्शाती है कि उनके निवासियों को पृथ्वी के निवासियों के समान नहीं होना चाहिए, जहां अच्छाई और बुराई के मिश्रण के कारण भ्रम और ऐंठन, संघर्ष और परीक्षण व्याप्त हैं।

स्वर्ग के निवासी आज्ञाकारी हैं और जो आदेश उन्हें दिया जाता है, वे उसका पालन करते हैं।

चौथा कदम: हिसाब के दिन के स्वामी और संसार के स्वामी के नाम अलग-अलग हैं और उनके अलग-अलग स्वरूप हैं। उदाहरण के लिए, जिस नाम के लिए पैगंबर के साथियों की तरह अविश्वासियों से लड़ने के लिए स्वर्गदूतों को भेजने की आवश्यकता होती है, उसमें स्वर्गदूतों और शैतानों के बीच, स्वर्ग की अच्छाइयों और पृथ्वी की बुराई के बीच संघर्ष की भी आवश्यकता होती है।

पाँचवाँ कदम: दुष्ट आत्माएँ स्वर्ग में चढ़ने के अपने प्रयास में अच्छे लोगों की नकल करती हैं। स्वर्ग के निवासी उनका सामना करते हैं और उन्हें पीछे हटाते हैं। दिव्य प्रभुता की संप्रभुता की बुद्धि के लिए यह आवश्यक है कि इस स्वर्गीय प्रतियोगिता का इस दृश्यमान, भौतिक दुनिया में एक संकेत हो ताकि मानवता, जिसे देखने और निरीक्षण करने के लिए कहा गया है, को इसके बारे में सूचित किया जा सके। इस संघर्ष को ज्ञात करने का सबसे अच्छा तरीका नक्षत्रों के ऊँचे टावरों से तारों या उल्काओं को मारना है। अन्य सभी ब्रह्मांडीय घटनाओं के विपरीत, जिनमें ज्ञान के कई उदाहरण हैं, इस घटना के लिए कोई उचित ज्ञान नहीं है, सिवाय इस स्वर्गीय संघर्ष के संकेत के रूप में कार्य करने के - सभी सत्य-खोज करने वाले लोगों द्वारा ज्ञात और देखे गए ज्ञान का एक उदाहरण।

छठा कदम: कुरान लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करने तथा उन्हें उच्च शैली और श्रेष्ठ उपमाओं या तुलनाओं के माध्यम से विद्रोह से रोकने का प्रयास करता है।

उदाहरण के लिए, विचार करें: ऐ लोगों और जिन्नों के समूह, यदि आप आकाश और पृथ्वी के क्षेत्रों में प्रवेश कर सकते हैं, तो प्रवेश करें! आप अधिकार के बिना उनमें प्रवेश नहीं कर सकते (55:33)। आयत ईश्वरीय प्रभुत्व की विशालता और विशालता के साम्राज्य के समक्ष मानवता और जिन्न की लाचारी की घोषणा करती है, मानो कह रही हो: "ऐ मानवता, असहाय, गरीब और छोटे। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक सम्राट के खिलाफ विद्रोह करने की, जिसका सभी सूर्य और चंद्रमा, सितारे और फ़रिश्ते आज्ञा मानते हैं; जो शैतानों पर पहाड़ों या उससे भी बड़ी मिसाइलें फेंकता है! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक राजा के राज्य में विद्रोह करने की, जिसके सैनिकों में वे लोग हैं

अपनी पृथ्वी के आकार के शत्रु तारों पर उसी आसानी से गोली चलाओ जैसे आप अखरोट या हेज़लनट्स फेंकते हैं!”

सातवाँ कदम: तारे कई तरह के होते हैं, जैसे कि स्वर्गदूत और मछलियाँ कई तरह की होती हैं। आकाश में जो कुछ भी चमकता है उसे तारा कहते हैं।
कुछ रत्नों की तरह चमकते हैं और स्वर्ग को उसी तरह सजाते हैं जैसे फल बगीचे को सजाते हैं और मछलियाँ समुद्र को सजाती हैं, जबकि अन्य का उपयोग शैतानों को मारने के लिए किया जाता है ताकि यह दिखाया जा सके कि रक्षक अपना काम कर रहे हैं। ये रक्षक आज्ञाकारी होते हैं, विद्रोहियों के साथ घुलते-मिलते नहीं हैं, और स्वर्ग में प्रचलित संघर्ष या प्रतियोगिता के नियम का प्रतिनिधित्व करते हैं। ईश्वर का तर्क सबसे सही, सबसे निर्णायक तर्क और सबसे बड़ी बुद्धि है।80

जान लो, ऐ दोस्त, कि कुरान की कई आयतों में कहा गया है कि चीज़ें उनके भौतिक अस्तित्व से पहले और उसके दौरान दर्ज की जाती हैं, जैसे: गीली या सूखी कोई भी चीज़ एक प्रकट किताब में दर्ज नहीं होती (6:59)। इसकी पुष्टि ब्रह्मांड की व्यवस्थाओं और रचनाओं की किताब और उसकी “आयतों” से होती है, खास तौर पर सार्वभौमिक व्यवस्था और सामंजस्य, संतुलन और निर्माण, अलंकरण और विशिष्टता की आयतों से।

---

[80] वैज्ञानिकों ने उल्का वर्षा के लिए कोई स्वीकार्य कारण नहीं बताया है, जो लगभग हर साल होती है। हालांकि, लगभग हर साल देखी जाने वाली पर्सिड उल्का वर्षा से पता चलता है कि उल्काओं को कुछ खास उद्देश्यों के लिए गिराया जाता है, क्योंकि वे बहुत विविधता दिखाकर पर्यवेक्षकों को आश्चर्यचकित करते हैं। उदाहरण के लिए, 1993 में किए गए अवलोकनों से पता चलता है कि इस तरह की वर्षा की संरचना अभी भी कम समझी जाती है।

यूरोपीय पर्यवेक्षकों के प्रारंभिक डेटा से पता चला है कि 11 अगस्त को 20:00 बजे से 12 अगस्त को 01:00 बजे के बीच दरें धीरे-धीरे बढ़कर 100 मीटर/घंटा के ZHR तक पहुंच गईं। फ्रांस में पर्यवेक्षकों ने 12 अगस्त को 00:30 बजे के बाद दरों में उल्लेखनीय वृद्धि की सूचना दी, जो "सामान्य" से लगभग दोगुनी थी। 01:00 बजे से 03:00 बजे के बीच दरें लगातार बढ़ती रहीं।

इस अवधि के लिए 200-250 का प्रारंभिक ZHR जिम्मेदार ठहराया गया था। दरें 03:00 और 03:30 के बीच अधिकतम तक पहुंचती दिखाई दीं। अधिकतम ZHR का अनुमान लगाया गया था

कैनरी द्वीप समूह से प्राप्त अवलोकनों से पता चला कि दरें 04:00 बजे के बाद घटने लगीं।

अमेरिका और जापान में कई पर्यवेक्षकों ने सामान्य से अधिक दर की रिपोर्ट की। जैसा कि मार्टिन बीच ने एस्ट्रोनॉमी (पृष्ठ 11) में टिप्पणी की, परिणामों ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि वर्षा ने पूर्वानुमान के अनुसार व्यवहार नहीं किया। संभावित उल्का तूफान के बारे में अटकलें गलत साबित हुईं। 1993 में एक और अप्रत्याशित विशेषता थी चमकीले आग के गोले की उच्च संख्या देखी गई। पर्यवेक्षकों ने 11/12 अगस्त की रात को पर्सिड आग के गोले के सामान्य स्तर से पाँच गुना अधिक होने की सूचना दी। पर्सिड वर्षा ने एक बार फिर दिखाया कि उल्का वर्षा गतिविधि की भविष्यवाणी करना कितना कठिन है। (ट्र.)

1993 की बारिश की घटनाओं के बारे में अंतर्राष्ट्रीय उल्का संगठन द्वारा दिए गए डेटा के अनुसार (खगोल विज्ञान, अक्टूबर 1993), 11/12 अगस्त की रात के लिए पोस्ट किए गए पहले परिणाम जापान से आए थे। 11 अगस्त को 20:30 (सभी समय UT) तक, उल्का दर सामान्य पाई गई। इस समय बारिश के लिए 40 उल्का प्रति घंटे (m/h) की जेनिथल प्रति घंटा दर (ZHR) को आमतौर पर सौंपा गया था। (ट्र.)

अन्य प्रमाण बीज, माप और रूप हैं। बीज छोटे-छोटे बक्से हैं जो उस चीज़ को धारण करते हैं जिसे दिव्य नियति ने मापा है, निर्धारित किया है और नियुक्त किया है।
दिव्य शक्ति नियति के सटीक मापों के अनुसार निर्माण करती है, और उस निर्माण में कणों का उपयोग करती है। ये माप दिव्य में पहले से मौजूद सटीक साँचे हैं
ज्ञान। अंधे, बहरे और बेहोश होने के बावजूद कण गति करते हैं
चीजों को सही माप में विकसित करने के लिए। सीमाओं को लांघे बिना
उनके लिए दृढ़ निश्चयी, मानो उनकी दृष्टि और श्रवण बहुत तीव्र हो, वे जाते हैं और
फलों की तरह अच्छे परिणाम देने के लिए उन्हें वहीं बसना चाहिए जहां उन्हें बसना चाहिए।

चीजों के अस्तित्व के दौरान रिकॉर्डिंग के सबूत के रूप में, सभी फल,
पेड़ों का परिणाम और समापन और कागज के रोल की तरह जिस पर उनके "कर्म"
रिकॉर्ड किया गया है, गवाहों को दिखाएं कि पेड़ों ने क्या अनुभव किया है।
इनमें मौजूद बीज मिट्टी में दब जाते हैं और अगली वसंत ऋतु में फूट पड़ते हैं
एक नए वृक्ष के रूप में विकसित होना, जिससे पिछले वृक्ष का जीवन प्रदर्शित होता है।

एक अन्य प्रमाण सरसों के दाने के आकार की मानवीय स्मृति है, जो
ईश्वर के हाथ से हमारे कर्मों की नोटबुक से कॉपी किया गया एक दस्तावेज़ जैसा
भाग्य की कलम से शक्ति। यह हमें अंतिम निर्णय पर मिलेगी
ताकि हम देख सकें कि हमने यहाँ क्या किया। स्मृति यह भी दिखाती है कि इस भागदौड़, उथल-पुथल और क्षय के पीछे, "स्थायी दर्पण" हैं जिन पर
सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी क्षयग्रस्त चीज़ों की तस्वीरें और पहचान दर्ज करता है।
इसके अतिरिक्त, ऐसे बोर्ड या पट्टियाँ भी हैं जिन पर सर्वरक्षक, सर्वज्ञ परमेश्वर क्षणिक वस्तुओं के जीवन की प्रतिलिपि बनाता है और उनके परिणाम लिखता है।

हे मित्र, जान लो कि घड़ी स्थिर नहीं है, क्योंकि उसके पुर्जे हिलते-डुलते रहते हैं।
ऐसा ही संसार भी है, जो एक विशाल घड़ी की तरह है, जो हिलती और चलती है।
समय की गति को शामिल करते हुए, रात और दिन सेकंड की सुई के समान होते हैं,
वर्ष मिनट की सुई है, और शताब्दी घंटे की सुई है। अंतरिक्ष सहित, वायुमंडल में बहुत तेजी से परिवर्तन और बदलाव होते हैं, जैसे कि सेकंड की सुई; पृथ्वी की सतह जीवन और मृत्यु के चक्र के माध्यम से पौधों और जानवरों के निरंतर परिवर्तन को प्रदर्शित करती है, जैसे कि मिनट की सुई; और पृथ्वी का आंतरिक भाग घंटे की सुई की तरह, बड़े परिवर्तन और ऐंठन प्रदर्शित करता है।

हाथ दिनों की ओर इशारा करते हुए, आकाश अपने परिवर्तन के साथ एक विशाल दृश्य बन जाता है
पिंडों की गति, धूमकेतु और उल्काओं का दिखना, और जन्म
और तारों की मृत्यु.

संसार या सांसारिक जीवन इन सात स्तंभों पर आधारित है - दिन और रात,
वर्ष और शताब्दी, पृथ्वी, वायुमंडल और आकाश। यह एक दृश्य के रूप में कार्य करता है
जहाँ दिव्य नाम प्रकट होते हैं या कार्य करते हैं, और जहाँ
शक्ति और भाग्य निरंतर काम करते हैं। यह एक सतत प्रवाह में है, एक नदी की तरह-

यह क्षणभंगुर, क्षणिक और नाशवान है। फिर भी, असावधानी की आँख इसे स्थायी और शाश्वत मानती है, स्थिर आँख के समान स्थिर।
प्रकृति और प्रकृतिवाद पर जो परलोक को ढकता है।

आधुनिक दर्शन दुनिया या सांसारिक जीवन को स्वयं के दृष्टिकोण से देखता है
और आधुनिक भौतिकवादी-वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ इसके भौतिक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करता है। यह केवल पर्दा मोटा करता है और इसे कहीं अधिक वास्तविक रूप में प्रस्तुत करता है
स्थिर और शाश्वत। हालाँकि, कुरान की आयतें दुनिया और
इसे कार्डेड ऊन की तरह बनाओ (101: 5), उनके बयानों के साथ घूंघट को पारदर्शी बनाओ, इसे अपने प्रकाश और गर्मी से पिघलाओ, इसके भ्रामक स्थायित्व को तोड़ दो
इसकी घोषणाएँ (मृत्यु की, पिछले विद्रोही लोगों के भयानक अंत की और परलोक की भयावह घटनाएँ) और अपने "वज्रपात" से उस असावधानी को तितर-बितर कर देती हैं जो प्रकृतिवाद को जन्म देती है और उसे जन्म देती है।

सदैव हिलती हुई दुनिया अपनी वास्तविक स्थिति की भाषा में कहती है: जब
क़ुरआन पढ़ा जाता है, इसे कान लगाकर सुनो और ध्यान लगाओ, आशा है कि तुम पाओगे और तुम्हारे साथ दया की जाएगी (7:204)।

हे मित्र, जान लो कि एक बात जो हमें जानवरों से अलग करती है, वह है
कि हमारा अतीत और भविष्य के साथ संबंध है और हम उसे समझ सकते हैं
आंतरिक और बाहरी दोनों दुनियाएँ। हम इसके स्पष्ट कारणों का पता लगा सकते हैं
घटनाओं को समझना और वांछित परिणाम प्राप्त करना सीखना। हालाँकि, हमारी सबसे बड़ी और
सबसे प्रमुख कर्तव्य, जिसके लिए हमें बहुत महत्वपूर्ण क्षमताओं से सुसज्जित किया गया है, वह है ईश्वर की महिमा और स्तुति करना। हम निर्माता की महिमा उसके द्वारा करते हैं
अतीत, वर्तमान और भविष्य की भाषाओं के साथ-साथ हमारी भाषाओं के साथ
आंतरिक और बाहरी दुनिया। हम प्रभु की स्तुति करते हैं और अतीत और वर्तमान के लिए उनकी महिमा करते हैं
वर्तमान आशीर्वाद और उपहार जो उसने प्रदान किए हैं, और जो प्रदान किए जाएंगे
भविष्य में, और हमारे आंतरिक और बाहरी दुनिया में पाए जाने वाले आशीर्वाद के लिए।
हम अन्य प्राणियों को परमेश्वर की महिमा करते हुए देखते हैं, हम चीज़ों के निर्माता की प्रशंसा करते हैं
उनकी रचना में प्रकट नामों और उनके उद्देश्यों को समझना
ज़िंदगियाँ।

> परमेश्वर की जय हो, जिसकी प्रशंसा और महिमा विस्मय और प्रशंसा, भय और प्रेम में की जाती है, जिसकी पवित्रता और दोष से मुक्ति सर्वोपरि है।
> घोषित किया गया, जिसकी भव्यता धारणा से परे है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर नियति तय करता है, निर्णय करता है, अपने निर्णयों पर अमल करता है।
और बख्श देता है (माफ कर देता है और अपने आदेश के क्रियान्वयन को वापस ले लेता है)। उसका आदेश झुकता है
उसे बख्श दो, जैसे कठोर चट्टान और मिट्टी बहुत पतली, रेशे जैसी जड़ों को जन्म देती है, और
जैसे लोहे का प्रतिरोध बर्फ के सामने टूट जाता है। कभी-कभी भाग्य का नियम
यह उसके आदेश या किसी सार्वभौमिक कानून के कारण नहीं बनाया गया है जो कि नियति है

किसी प्रजाति या समूह का कानून किसी विशेष सदस्य के लिए लागू नहीं होता है। [उदाहरण के लिए, एक असहाय शिशु एक ऐसी आपदा से बच जाता है जो बड़ी मौत का कारण बनती है और इससे पता चलता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने अस्तित्व में पूर्णतः स्वतंत्र है। वह जो चाहता है, वही करता है, और जो चाहता है, वही आदेश देता है। उसके दान को रोका नहीं जा सकता, और उसके आदेशों का विरोध नहीं किया जा सकता।

बख्शने का संबंध डिक्री के निष्पादन से मिलता जुलता है। भाग्य के लिए। बख्शने का मतलब है कि किसी चीज़ को डिक्री के कानून से छूट दी गई है, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी किसी आदेश को भाग्य के नियम से छूट मिल जाती है। जो इस सम्बन्ध से परिचित हैं वे यह कहे बिना नहीं रह सकते कि: "हे ईश्वर! मेरे अच्छे कर्म आपके बख्शने से। मुझे पता है कि आपका फैसला आखिरकार आएगा। अगर आप ऐसा करते हैं मुझे नहीं छोड़ेंगे, तो मैं नाश होने वालों में शामिल हो जाऊंगा।" बुराई, बुराई का आदेश देने वाला स्वयं नष्ट होने योग्य है।

हे मित्र, जान लो कि कुरान की बहुत सी आयतें ईश्वरीय नामों से समाप्त होती हैं। दिव्य कार्यों को पाठक के ध्यान में लाना। अपने चमत्कारी अभिव्यक्तियों के अंत में, यह दिव्य नामों के साथ समाप्त होता है, जो ईश्वर की सच्ची उत्पत्ति है। वे कार्य, जैसा कि आयत में है: वह वह है जो सृष्टि की शुरुआत करता है, फिर उसे उत्पन्न करता है और वह लौटकर आएगा, और यह उसके लिए सरल है। आकाशों और धरती में उसका उदाहरण सबसे बड़ा है। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (30:27)

कुरान हमारी आंखों के सामने उसकी कला की बुनावट को उजागर करता है और फिर उन्हें दिव्य नामों में लपेटता है। यह दिव्य कृत्यों की व्याख्या करता है और फिर सारांशित करता है उन्हें दिव्य नामों से पुकारें। यह प्राणियों का उल्लेख करता है और उन्हें दिव्य नामों से पुकारता है। व्यवस्था, संतुलन और पक्षपात। कुरान फिर ईश्वरीय नामों की पेशकश करता है, यदि जीव उन नामों से लिखे गए "शब्द" होते। वे जीवों को उनका नाम देते हैं अर्थात्, उनके जीवन के लिए उनके कार्य और उद्देश्य निर्धारित करते हैं, जिससे वे वही बनते हैं जो वे हैं। वे जीवन देने वाले जल के रूप में कार्य करते हैं, वे बीज जिनसे वे उगते हैं, या उनका संक्षिप्त सारांश जिसमें उनकी प्रकृति में निहित जानकारी शामिल होती है और जिसके अनुसार वे कार्य करते हैं। क़ुरआन इसमें कुछ विशेष गुणों वाली भौतिक, परिवर्तनशील चीजों का भी उल्लेख है फिर उन्हें दिव्य नामों और उनके सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों के साथ संक्षेप में प्रस्तुत करता है-टिप्पणियाँ.

कुरान में ऐसी चीजों का वर्णन है जो स्वतंत्र रूप से उगती हैं और कई स्थानों पर पाई जाती हैं। और फिर उन पर एकता की मुहर लगाकर पाठक का ध्यान आकर्षित करता है उनके सामान्य बिंदु। यह उनके साथ-साथ प्रभावों या परिणामों को प्रकट करता है स्पष्ट कारण, कारणों और उनके परिणामों के बीच बड़ी दूरी दिखाने के लिए और कारण परिणामों का वास्तविक स्रोत नहीं हो सकते, क्योंकि सबसे बड़ा कारण भी परिणामों का वास्तविक स्रोत नहीं हो सकता। सबसे छोटा प्रभाव भी नहीं पैदा कर सकता। कुरान दोनों के बीच के बड़े अंतर को भरता है

प्रासंगिक दिव्य नामों के साथ कारण और प्रभाव, बुरे कर्मों का उल्लेख करता है
जीवों का वर्णन करके उन्हें धमकाता है, और फिर उन्हें सांत्वना देता है
दया युक्त नाम। यह विशेष उद्देश्यों का उल्लेख करता है और फिर उन्हें सुनिश्चित करने वाले सार्वभौमिक कानूनों वाले नामों के साथ स्थापित करता है
प्रयोजनों.

हे मित्र, यह जान लो कि प्रेम की तरह, ईश्वर के समक्ष अपनी जन्मजात असहायता की अनुभूति और उसे स्वीकार करना, ईश्वर तक ले जाने वाला एक मार्ग है, एक ऐसा मार्ग जो ईश्वर तक भी पहुंचता है।
प्रेम से ज़्यादा सीधा और सुरक्षित मार्ग। ईश्वर तक पहुँचने की चाह रखने वाले लोग
मौन पाठ द्वारा वे अपनी दस शक्तियों (हृदय, आत्मा और मन) को शुद्ध करना पसंद करते हैं।
अन्य अंतरतम); जो लोग जोर से पाठ करके ईश्वर तक पहुंचना चाहते हैं, वे चुनते हैं
अपने स्वयं को शुद्ध करने के लिए सात प्रकार या स्तर होते हैं (शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाला स्वयं; विरोध करने वाला लेकिन फिर भी विद्रोही और खुद को बुरा मानने वाला स्वयं;
स्वयं आज्ञाकारी और शांत; और स्वयं प्रसन्न और परमेश्वर से प्रसन्न
(इसके बारे में आदेश, आदि)।

असहायता के मार्ग में चार चरण हैं, जिनमें से प्रत्येक को कुरान की एक आयत द्वारा दर्शाया गया है:

> अपने आपको पवित्र न बनाओ। (53:32)
>
> उन लोगों के समान न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भूला दिया, फिर अल्लाह ने उन्हें अपने आप को भूला दिया (59:19)
>
> जो कुछ भी तुम्हारे साथ अच्छा होता है वह ईश्वर की ओर से है और जो कुछ भी तुम्हारे साथ बुरा होता है वह ईश्वर की ओर से है। अपने आप से. (4:79)
>
> सब कुछ नाशवान है, सिवाए उसके "चेहरे" के। (28:88)

पहला कदम

मनुष्य स्वयं के कारण स्वयं से प्रेम करते हैं। वे स्वयं को सीमित रखते हैं।
वे स्वयं के प्रति प्रेम रखते हैं, स्वयं की प्रशंसा करते हैं मानो वे पूजा के योग्य हों, दृढ़ता से अपना बचाव करते हैं, तथा स्वयं को दोष-रहित मानते हैं।
जो लोग अपनी इच्छा को देवता मानते हैं, वे अपनी दी गई शक्तियों का उपयोग प्रशंसा करने के लिए करते हैं
और खुद को महिमा देने के लिए सच्चे पूज्य परमेश्वर की महिमा करते हैं। यहाँ,
शुद्धि केवल स्वयं को इसकी आवश्यकता मानने से ही प्राप्त की जा सकती है।

दूसरा चरण

मनुष्य कठिनाई के समय और सेवा करने के समय स्वयं को रोक लेता है, लेकिन जब सेवा करनी होती है तो स्वयं को पहले पुरस्कार का हकदार मानता है।

अब फल लेने का समय है। यहाँ शुद्धि तभी प्राप्त हो सकती है जब पुरस्कार मिलने पर हम अपने आपको भूल जाएँ।

तीसरा चरण

मनुष्य को स्वयं को केवल दोष, अभाव, लाचारी और दरिद्रता वाला समझना चाहिए। उसे यह जानना चाहिए कि उसकी सुन्दरता ही उसकी सुंदरता है।
सृष्टिकर्ता का आशीर्वाद, जो अकेले ही प्रशंसा के पात्र हैं। यहाँ, शुद्धि आती है
यह जानने के माध्यम से कि अपूर्णता को स्वीकार करने में पूर्णता निहित है,
असहायता को समझना, और आवश्यक गरीबी को स्वीकार करने में धन और
अपर्याप्तता.

चौथा चरण

मनुष्य को यह समझना चाहिए कि, अपने स्वयं के कारण, वे हैं
अनिवार्य रूप से अस्तित्वहीन और आकस्मिक, क्षणभंगुर और नश्वर - लेकिन केवल
क्योंकि वे निर्माता के नामों को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं। वे केवल इसी कारण से मौजूद हैं, अनुभव करते हैं और अनुभव किए जाते हैं। यहाँ, शुद्धिकरण किया जा सकता है
यह अनुभव करने से प्राप्त होता है कि गैर-अस्तित्व स्वयं को स्वयं-अस्तित्व में देखने में निहित है, अस्तित्व आवश्यक गैर-अस्तित्व को स्वीकार करने में है, और अस्तित्व स्वयं होने में है।
पूरी तरह से आश्वस्त हूं कि केवल सर्वशक्तिमान ही अस्तित्व और सभी प्रशंसा का हकदार है।

जो लोग अस्तित्व की एकता (वहदत अल-वुजूद) के मार्ग का अनुसरण करते हैं
ब्रह्मांड को वास्तव में अस्तित्वहीन मानते हैं। जो लोग इस मार्ग का अनुसरण करते हैं
साक्षी की एकता (वहदत अल-शुहुद) समस्त अस्तित्व को पूर्ण विस्मृति की जेल में कैद कर देती है। मैंने जो निष्कर्ष निकाला है, वह यह है कि
कुरान में ब्रह्मांड के वास्तविक अस्तित्व को न तो नकारने और न ही अनदेखा करने की बात कही गई है।
क्योंकि यह सभी वस्तुओं को ईश्वरीय नामों को दर्पण के रूप में दर्शाता हुआ देखता है।
यह समस्त अस्तित्व को सर्वशक्तिमान की ओर से मानता है, स्वयं की ओर से नहीं।

प्रत्येक पुरुष और महिला में अस्तित्व के अलग-अलग क्षेत्र और सृजन के स्तर होते हैं- पौधे, जानवर, मानव और आस्तिक होना। पहले तीन
चौथा गुण हर किसी में पाया जाता है; चौथा गुण केवल आस्तिक में पाया जाता है।

शुद्धिकरण की प्रक्रिया चौथे स्तर से शुरू होती है - विश्वास के स्तर से -
और नीचे की ओर पौधे तक जारी रहता है, जहां सबसे अधिक प्रतिरोध होता है
दिखाया गया है। इस उपचार के दौरान, जो बिना किसी रुकावट के जारी रहता है, लोग स्तरों को भ्रमित कर सकते हैं और कह सकते हैं: "पृथ्वी पर जो कुछ भी है वह केवल मेरे लिए बनाया गया है।" वे यह सोचकर गलती करते हैं कि मानवता केवल अस्तित्व तक ही सीमित है
पौधे या जानवर, चीजों के जीवन के उद्देश्यों को सीमित मानकर
अपने स्वयं के लाभ के लिए, और उन्हें केवल उस सीमा तक मूल्यवान समझना

वे उसे लाभ पहुँचाते हैं। इसलिए, वे सुगंधित फूल के बदले में कुछ नहीं देते शुक्र. [वे कम मूल्य वाली चीज़ों से संतुष्ट हैं क्योंकि वे इससे जुड़े हुए हैं दुनिया। वे यह नहीं देख पाते कि दुनिया से परे क्या है, जो कि बहुत अधिक है कीमती।]

हे मित्र, जान लो कि उपासना ही वरदानों का परिणाम और मूल्य है। यह पहले से ही मानवता को दिया गया है; यह किसी भी भविष्य, अपेक्षित पुरस्कार का साधन नहीं है। हे मानवजाति, तुम्हें अपना पारिश्रमिक पहले ही मिल चुका है, क्योंकि उसने तुम्हें बनाया है। अस्तित्व के एक पैटर्न के रूप में, सबसे सुंदर रूप, और खुद को आपके लिए जाना जाता है आप पर विश्वास प्रदान करके.

आपको पेट देकर, उसने आपको असीमित भोजन दिया है और आपको जीवन प्रदान किया है, जिसने इस दृश्यमान, भौतिक दुनिया को आपके लिए उपहारों से भरी एक मेज बना दिया है। आपको मानव स्वरूप देकर, उसने दृश्यमान और अदृश्य दुनिया को उपहारों से भरी एक मेज बना दिया है। आपको विश्वास प्रदान करके, उसने आपको जीवन प्रदान किया है, जिसने इस दृश्यमान, भौतिक दुनिया को आपके लिए उपहारों से भरी एक मेज बना दिया है।
तुम्हें ये तालिकाएँ तथा उनके नाम के भण्डार में संग्रहित अन्य तालिकाएँ दी हैं। आपको अपना प्यार देते हुए, उसने आपके लिए द्वार खोल दिए हैं और आपको अवर्णनीय उपहार और आशीर्वाद प्रदान किए हैं। चूँकि आपको ये सब पहले से ही प्राप्त हैं, इसलिए आप उसकी सेवा करनी चाहिए। आपकी सेवा के बाद वह आपको जो देता है वह पूरी तरह से उसकी ओर से है अनुग्रह।

हे मित्र, जान लो कि प्राणियों में असीम प्रचुरता है। प्रजातियों, विशेष रूप से छोटे जीवों की, संरचना में थोड़ी सी भी त्रुटि के बिना और पूर्ण व्यवस्थितता के साथ, यह दर्शाता है कि निर्माता की अभिव्यक्तियाँ हैं वह असीमित है, वह उन सभी से बिल्कुल अलग है, और वह सभी उसकी शक्ति और आवश्यक अस्तित्व के संबंध में चीजें एक समान हैं। प्रचुरता और सृजन उसकी अनिवार्यता का परिणाम और प्रमाण हैं अस्तित्व। प्रजातियों की प्रचुरता महामहिम से संबंधित है, जबकि दृढ़ और सदस्यों की दोषरहित रचना उनकी कृपा से संबंधित है।

हे मित्र, जान लो कि जिस आसानी (या कठिनाई) से कोई चीज होती है किसी चीज़ को बनाने वाले की जानकारी (अज्ञानता) पर निर्भर करता है। यह खास तौर पर उन छोटी चीज़ों के लिए सच है जिनमें कई छोटे, नाजुक हिस्से होते हैं। बनाने वाले को उनके बारे में जितना ज़्यादा ज्ञान होगा, उन्हें बनाना उतना ही आसान होगा। पूरी तरह से आसान और असंख्य चीजों की प्रचुरता से रचना में तीव्रता देखी गई और बिना किसी दोष के यह दर्शाते हैं कि उनके निर्माता के पास अनंत ज्ञान है। कविता: हमारा आदेश (या कुछ करना) केवल एक (शब्द) है (और यह पूरा हो गया है) पलक झपकते ही (54:50) उस सहजता की ओर संकेत करता है।

हे मित्र, जान लो कि जो नाजुक कढ़ाई का उत्पादन करता है कला का एक उत्कृष्ट कृति है और इसे अत्यंत नाजुक "वस्त्रों" से ढक दिया गया है - जैसे कि चमड़े की डेनिम जैकेट।

माँ और एपिडर्मिस - एक ही पदार्थ से बुने हुए, इसमें गुहाएँ बनाते हुए
विभिन्न उपकरणों को इस प्रकार सेट करना कि उसके विभिन्न भाग एक साथ मिलकर काम कर सकें,
इसका एकमात्र स्वामी।

इसी प्रकार, वह जो अत्यंत कोमलता से असंख्य किस्मों की रचना करता है
लगभग एक जैसी साधारण चीजों की प्रजातियों को बनाता है और उन्हें उपयुक्त वस्त्र पहनाता है, वह जो उन्हें सम्मिलित करता है, विशेष रूप से जानवरों को जो लघु दुनिया हैं,
उन प्राणियों को रखने के लिए बनाए गए संसारों के उदर में जो उनके फल हैं
या बीज - वह एक है और सभी के लिए मांगा गया है, वह स्वयं को सभी के साथ प्रकट करता है
प्रत्येक प्राणी पर अलग-अलग तथा सम्पूर्ण जगत पर उनके नामों का प्रभाव पड़ता है।

हे मित्र, यह जान लो कि जिस प्रकार राजा की विभिन्न उपाधियाँ सरकारी विभागों, राजकीय कार्यालयों तथा उसकी प्रजा के बीच उसकी सत्ता का सूचक होती हैं, उसी प्रकार राजा की विभिन्न उपाधियाँ सरकारी विभागों, राजकीय कार्यालयों तथा उसकी प्रजा के बीच उसकी सत्ता का सूचक होती हैं।
और अपने राजत्व के कर्तव्यों को इस प्रकार दर्शाते हैं मानो वे सर्वत्र उपस्थित हों, इसलिए ईश्वर,
वह सर्वसुंदर नामों वाला, अपने नामों के साथ अपनी प्रभुता के विभागों में खुद को प्रकट करता है। एक नाम एक विभाग में प्रमुख है, और अन्य अधीनस्थ हैं। वह प्रत्येक स्तर के लिए एक विशेष नाम प्रकट करके अपने प्रभुत्व को कार्यान्वित करता है, जैसे कि वह नाम केवल विशेष था

उस स्तर तक। अपने आधिपत्य के स्तरों में, सर्व-महिमावान के पास अनिवार्य है
एक दूसरे के अनुरूप नियंत्रण; उनकी दिव्यता के क्षेत्रों में, उनके नाम हैं
एक दूसरे को प्रतिबिम्बित करते हैं; उनकी महिमा के दर्पणों में, उनका अलग-अलग प्रतिनिधित्व है; उनकी शक्ति के कार्यों में, उनकी विभिन्न उपाधियाँ हैं; उनके गुणों में, उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ हैं।
अभिव्यक्तियाँ, स्वयं को प्रकट करने के उनके पास पुष्पित तरीके हैं; उनके अभिनय में
उसके पास तदनुसार नियंत्रण है; और प्राणियों को उसके विभिन्न प्रकारों में विभाजित करने में भी
प्रत्येक प्राणी के लिए उसकी प्रभुता के निर्दिष्ट प्रकटीकरण हैं, जो उस प्रजाति पर भी प्रकट होते हैं।

पैगम्बर मुहम्मद, शाश्वत भाषा (कुरान) के अनुवादक,
अपनी अल-जौशन अल-कबीर (महान कवच) प्रार्थना में इस वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं। इस प्रार्थना में 99 रत्न बॉक्स जैसे खंड हैं, जिनमें से प्रत्येक में दिव्य एकता के 12 रत्न हैं।81 जब सर्वशक्तिमान को उनमें से किसी एक द्वारा बुलाया जाता है,
उल्लिखित नाम या गुण विशेष रूप से उसके लिए निर्दिष्ट है। उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं: "हे शाश्वत," तो हमारा मतलब है: "हे एक जिसके अलावा कोई नहीं है
सदा अस्तित्व में है। जैसा कि पैगंबर, सर्वशक्तिमान से वर्णित है
एक व्यक्ति के पास प्रकाश के 70,000 आवरण होते हैं।82 एक ऐसा अस्तित्व जो सबमें व्याप्त है
स्तर, जिनके आवश्यक निपटान एक दूसरे से मेल खाते हैं, जिनके नाम

81 प्रत्येक खंड में दस नाम हैं, जिनमें से प्रत्येक की तुलना लेखक ने एक रत्न से की है, इसलिए प्रत्येक खंड रत्नों से भरे एक बक्से के समान है। (अनुवाद)

82 तबरानी, अल-मुअज़म अल-कबीर, 2:580।

एक दूसरे को प्रतिबिंबित करते हैं, जिनके प्रतिनिधित्व और शीर्षक एक दूसरे के भीतर एक हैं, जिनके खुद को बंद करने के तरीके एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनके खुद को ज्ञात करने के तरीके एक दूसरे का समर्थन करते हैं, जिनके प्रभुत्व की अभिव्यक्तियाँ एक दूसरे की पुष्टि करती हैं, और जिनके नाम की अभिव्यक्तियाँ एक पर केंद्रित हैं

चीजें एक समूह के रूप में चीजों पर अपनी अभिव्यक्तियों द्वारा शामिल की जाती हैं
संपूर्ण - यह उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो उनमें से किसी एक के द्वारा उस अस्तित्व को जानता है
नाम, गुण, या अभिव्यक्ति के तरीके यह जानने के लिए भी उल्लेख किया गया है
अन्य लोग।

निश्चय ही हमने मनुष्य को उत्तम सृष्टि में पैदा किया है। (95:4)

हे मित्र, यह जान लो कि यह हमारी व्यापक आदिम प्रकृति की एक विशेषता है कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने उस छोटी सी वस्तु में असंख्य मीटरों को शामिल किया है, ताकि उसकी दया में जो अनंत भंडार है, उसे मापा जा सके, साथ ही

उसकी सर्वसुन्दर सत्ता में असंख्य वस्तुओं को समझने की असंख्य क्षमताएँ
नामों के खजाने.

अपनी दस इंद्रियों पर गौर करें और देखें कि वे आपको दुनिया के बारे में कैसे जागरूक बनाती हैं। देखी, सुनी, चखी, इत्यादि चीजों के बारे में। उसने आपको इच्छा, ज्ञान और सुनने की अत्यधिक सीमित विशेषताएँ या शक्तियाँ दी हैं, दूसरों के बीच, ताकि आप अपने आप को दूसरों के लिए तैयार कर सकें।
उसकी व्यापक विशेषताओं और आवश्यक, सर्वव्यापी गुणों को समझें।
उसने आपके अहंकार को कई तंतुओं (भावनाओं और इच्छाओं, क्षमताओं और
इन्द्रियों) का प्रयोग करो, क्योंकि संसार में ऐसी वस्तुएं हैं, जिससे तुम अपने अहंकार को जान सको।
प्रकृति। उसने आपके मूल स्वभाव को उतने ही वस्त्र पहनाए हैं जितने उसके
प्रभु के आवरणों को तोड़कर आप बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। उसने आपको अनुभूति की ऐसी अद्भुत क्षमता प्रदान की है कि
यह आपकी सरसों के दाने के आकार की स्मृति में बिना रुके यात्रा करता है, जैसे कि यह
एक असीम विशाल दुनिया जिसकी सीमाओं तक नहीं पहुंचा जा सकता। कभी-कभी
वह विशाल संसार इतना संकीर्ण हो जाता है कि आपकी धारणा उसे घेर लेती है;
अन्य समय में, आपकी धारणा, उन सभी क्षेत्रों के साथ, जिनसे यह गुजरती है
यात्राएँ और जिन पुस्तकों का अध्ययन करता है, वे सब उस छोटी सी स्मृति से घिरे होते हैं। उसकी जय हो जिसने अपनी असीम विशालता के बावजूद इसे इतना छोटा बना दिया है।

यह अद्भुत प्रकृति लोगों के बीच बहुत मतभेद पैदा करती है।
एक कण में; दुनिया दूसरे में खो जाती है। एक विशाल दुनिया खुलती है
उसे दी गई कुंजी के साथ बहुलता, भटक जाती है, खो जाती है और
एकता और ईश्वरीय एकता में विश्वास तक पहुंचना बड़ी कठिनाई से ही संभव हो पाता है।
लोग अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर जिस तरह आगे बढ़ते हैं, उसमें भी बहुत अंतर होता है। कुछ लोग आसानी से आगे बढ़ते हैं और शांति और एकता प्राप्त करते हैं; अन्य लोग पराजित हो जाते हैं

कल्पनाओं और असावधानियों के कारण, और (वस्तुओं की) बहुलता में पूरी तरह खोकर, एकता को भूल जाते हैं। वे "सभ्य" लोग जो भ्रष्टाचार और पतन को प्रगति मानते हैं, अज्ञानता को प्रमाणित ज्ञान मानते हैं, और गहरी नींद को पूरी तरह से जाग्रत मानते हैं, वे दूसरे समूह में हैं।

हे मित्र , जान लो कि ईश्वरीय एकता (वहीदिया) का प्रकटीकरण - एक नाम का समग्र रूप से प्रकटीकरण - यह दर्शाता है कि प्रकट ईश्वरीय नाम सभी चीज़ों को समाहित करता है। ईश्वरीय एकता (अहादिया) का प्रकटीकरण - एक विशेष चीज़ पर कई नामों का प्रकटीकरण - यह दर्शाता है कि एक जीवित प्राणी सृष्टि से संबंधित सभी नामों को इंगित करता है।

हे मित्र, जान लो कि समूह, समग्र और प्रजातियाँ दिव्य महिमा की अभिव्यक्ति की वस्तुएँ हैं, और इस प्रकार प्रजातियों में पूर्ण प्रचुरता की आवश्यकता होती है, जबकि अनुग्रह को प्रकट करने वाले अधिकांश "दर्पण" इन समग्रों के अलग-अलग हिस्से या उन समूहों और प्रजातियों के सदस्य हैं। व्यक्तियों की सुंदरता और "दर्पणों" की चमक, साथ ही संरचना और व्यवस्था में उनकी दृढ़ता, उस अभिव्यक्ति के कारण हैं। महिमा दिव्य एकता (वहीदिया) के प्रकटीकरण से उत्पन्न होती है, और कृपा दिव्य एकता (अहादिया) के प्रकटीकरण से आती है। हालाँकि, अनुग्रह भी महिमा से और महिमा अनुग्रह से उत्पन्न हो सकती है। अनुग्रह की नज़र में महिमा कितनी सुंदर है, और महिमा की नज़र में अनुग्रह कितना सुंदर है।

हे मित्र, जान लो कि "रत्न-जटित" प्राणियों को दृष्टि की शक्ति से देखा जाता है, और यह कि सृष्टिकर्ता को देखने में अंतर्दृष्टि की शक्ति की असमर्थता उसके अंधेपन, पदार्थ के महत्व को समझने में असमर्थता, या आवश्यक मार्गदर्शन की अनुपस्थिति के कारण है। सृष्टिकर्ता को नकारना दृष्टि की शक्ति को नकारने से कहीं अधिक हास्यास्पद होगा।

हे मित्र, जान लो कि खेत में बोए गए बीज बोने वाले को मौसम से तथा उन्हें नुकसान पहुँचाने वालों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। इस प्रकार बीज

खेत के चारों ओर एक अदृश्य दीवार की तरह काम करते हैं। उसी तरह, हर पौधे और पशु प्रजाति एक खेत की तरह है जिसे दुनिया भर में बोया और पाया जाता है। यह केवल उसी को इस पर नियंत्रण करने की अनुमति देता है जिसने इसे “बोया” है। सभी प्रजातियाँ, एक साथ और अपने व्यक्तिगत सदस्यों के साथ, इतनी मजबूत दीवार बनाती हैं कि केवल “बोने वाला” ही उन पर नियंत्रण कर सकता है।

हे मित्र, जान लो कि यदि तुम उनके स्वर्ग जैसे बागों की अद्वितीय सुन्दरता और वैभव को देखना और प्रदर्शित करना चाहते हो (इस सिद्धांत के अनुसार कि चीजें अपने विपरीत के माध्यम से बेहतर जानी जाती हैं), तो उनमें बेतरतीब ढंग से कुछ आकारहीन चट्टानें, टेढ़ी-मेढ़ी प्रतिमाएं और अन्य चीजें रख दो, और यहां-वहां कुछ गुफाएं खोद दो। उनकी व्यवस्था या सामंजस्य उनकी अव्यवस्था में निहित प्रतीत होता है।

हालाँकि, जो इन उद्यानों का अध्ययन करता है, वह निष्कर्ष निकालता है कि उनकी स्पष्ट अव्यवस्था उन्हें सुन्दर और व्यवस्थित दिखाती है।

इसी प्रकार, (पृथ्वी के बगीचे में) नियंत्रण का हाथ बिखर गया है,
प्रतीत होता है कि यादृच्छिक रूप से, विभिन्न आकार और आकृति के रेगिस्तान, पहाड़ियाँ और चट्टानें।
वास्तव में, सर्वज्ञ निर्माता, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने उन्हें अस्तित्व के सामान्य क्रम और सामंजस्य में योगदान देने के लिए जानबूझकर जोड़ा है। काँटेदार पेड़ और पौधे अपने काँटों का उपयोग पौधे खाने वाले जानवरों से खुद को बचाने के लिए करते हैं।

उनकी अद्भुत व्यवस्थितता और नाजुक सुंदरता इस बात का संकेत है कि सर्वज्ञ निर्माता के पास व्यवस्थितता की स्पष्ट कमी के पीछे एक विशेष उद्देश्य है, कि
अपनी प्रजाति के सामान्य क्रम से बाहर की चीज़ों का आकार अलग होता है
और आकार। अंतर उद्देश्य को दर्शाता है और संयोग को खारिज करता है। (मानव चेहरे के अंतर इसका स्पष्ट प्रमाण हैं।)

हे मित्र, जान लो कि मानवता की व्यापक प्रकृति लोगों को यह अनुमति देती है कि वे
जीवों द्वारा जीवनदाता को किए गए नमस्कार को समझो।
वह कारक जो लोगों को जानवरों से अलग करता है। जैसे-जैसे लोग अपने आप को समझते हैं
वे विश्वास के कान से जीवितों द्वारा बोले गए सभी शब्दों को भी सुनते हैं।
प्राणियों और निर्जीव वस्तुओं को उनके निर्माता की महिमा करने के लिए। एक बहरा व्यक्ति
आंतरिक रूप से केवल स्वयं से ही बात करें, और प्रत्येक प्राणी उस बात को समझ सकता है
अपनी अंतरात्मा की वाणी। हालाँकि, केवल मनुष्य ही बोल और बोल सकता है
सभी प्राणियों द्वारा उत्पन्न सभी ध्वनियों को, एक ही समय में, किसी चीज़ के संकेत के रूप में अनुभव करें
दिव्य सुंदर नाम। हर दूसरे प्राणी का मूल्य उसके अपने तक ही सीमित है,
जबकि एक आस्तिक सभी प्राणियों के बराबर मूल्यवान है, क्योंकि यद्यपि एक
व्यक्ति, वह एक प्रजाति की तरह है - यहाँ तक कि सभी प्रजातियाँ। भगवान जानता है कि
सच।

हे मित्र, यह जान लो कि यद्यपि किसी वस्तु का सत्य उसके बाह्य पहलू में ही निहित या सीमित प्रतीत होता है, तथापि उसके और बाह्य पहलू के बीच बहुत दूरी होती है।
उदाहरण के लिए, ईश्वर की एकता में एक औसत व्यक्ति का विश्वास केवल सर्वशक्तिमान को ही सब कुछ मानता है। यह ईश्वर को सब कुछ मानने से इंकार करना है।
जो ईश्वर नहीं है, उसके लिए कुछ भी नहीं है। हालाँकि, जो लोग जानते हैं उनका विश्वास
दिव्य एकता का वास्तविक अर्थ है जो कुछ भी वे देखते हैं उसे ईश्वरीय एकता का श्रेय देना
और सर्व-महिमावान को अनुभव होता है। वे उसकी छाप देखते हैं और उसकी ओर ध्यान देते हैं
हर चीज़ पर मुहर लगाओ। ऐसी स्वीकृति मन और दिल को शांति देती है
और असावधानी से बचाता है।

हे मित्र, जान लो कि सांसारिक जीवन में खोए हुए अविश्वासियों को ईश्वर द्वारा राहत देने में बुद्धिमत्ता यह है कि वे अनजाने में ही विभिन्न आशीर्वाद प्रकट करते हैं।

वे अपने श्रम और कौशल से ईश्वर की महिमा का बखान करते हैं, और अनजाने में ईश्वरीय कला के कामों की सुंदरता और उत्कृष्टता को दूसरों के सामने प्रदर्शित करने की व्यवस्था करते हैं। जिस तरह घड़ी समय बताने के बारे में नहीं जानती, उसी तरह अविश्वासियों को भी अपने काम के बारे में पता नहीं होता।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर की सहायता प्राप्त करने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक समूह में शामिल हुए बिना भी बाह्य से सत्य की ओर आगे बढ़ सकता है। मैंने कुरान में एक मार्ग देखा है जो बिना किसी दीक्षा के सीधे सत्य की ओर ले जाता है, और दूसरा मार्ग साधन विज्ञान (जैसे तर्क, गणित और विधि-विज्ञान) का अध्ययन किए बिना वांछित (धार्मिक) विज्ञान की प्राप्ति की ओर ले जाता है। सर्वव्यापी ईश्वरीय दया से वर्तमान समय के बच्चों को - जो समय बहुत तेजी से बह रहा है - एक छोटा, फिर भी सुरक्षित मार्ग प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है।

हे मित्र, जान लो कि किसी वस्तु का अस्तित्व और जीवन उसके रचयिता के आवश्यक अस्तित्व और गुणों के निर्णायक प्रमाण हैं, यह एक उज्ज्वल संकेत है कि रचयिता ही वह है जिसकी सभी चीजें हैं, और वह सभी (भौतिक या प्राकृतिक) कारणों को अपने "हाथ" में रखता है। इसी तरह, क्षय, मृत्यु, और चीजों को उनकी पसंद के साथ बदलना मूल निर्माता, लौटाने वाले, सभी के उत्तराधिकारी और पुनर्जीवित करने वाले की स्थायित्व को दर्शाता है। वे यह भी दिखाते हैं कि सृष्टि में उसका कोई साझीदार नहीं है, और केवल वही चीजों के आंतरिक स्व को नियंत्रित करता है।

जान लो, हे मित्र, कि जीवन कहता है: "कोई ईश्वर नहीं है, सिवाय उसके, एक के" और इस बात से इनकार करता है कि कारणों का इसमें कोई हिस्सा है। मृत्यु कहती है: "कोई ईश्वर नहीं है, सिवाय उसके, उसका कोई साझीदार नहीं है" और इस बात से इनकार करता है कि चीज़ों की आंतरिक आत्मा का इसमें कोई हिस्सा है।

हे मित्र! जान लो कि मानव जीवन का एक कर्तव्य यह है कि वह जीवों द्वारा जीवनदाता की स्तुति, सभी वस्तुओं की पूजा का साक्षी बने और इसकी घोषणा इस प्रकार करे मानो वह उन सभी का प्रतिनिधित्व कर रही हो और उनकी जिह्वा अपने स्वामी के प्रति अपने कर्मों की घोषणा कर रही हो।

ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन और पैग़म्बर मुहम्मद हमें अद्भुत बातों की जानकारी देते हैं, जबरदस्त सत्य स्थापित करते हैं और बहुत बड़ी नींव रखते हैं। उदाहरण के लिए, वे एक की एकता को साबित और स्थापित करते हैं:

> वह आकाश को लपेट देगा, जैसे पुस्तकों को लपेटा जाता है। (21:104)
>
> क़यामत के दिन धरती सारी की सारी उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा। (39:67)
>
> क़ियामत का मामला तो बस पलक झपकने जैसा है, या उससे भी अधिक निकट है। (16:77)
>
> सातों आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, सब उसकी स्तुति करते हैं। (17:44)

उसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया। (7:54)

वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है। (30:19)

उस पुनरुत्थान के दौरान, वह अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है, और उन्हें पृथ्वी की चादर पर "अंकित" करता है, सभी एक दूसरे के साथ मिश्रित (लेकिन अद्वितीय) होते हैं। न्याय के दिन मानवता का पुनरुत्थान इस वार्षिक पुनरुत्थान से अधिक कठिन नहीं है। याद रखें कि आदम के निर्माण से लेकर अंतिम दिन तक जितने लोग जीवित रहे हैं और रहेंगे, उनकी तुलना में एक गर्मियों के दौरान बहुत अधिक मक्खियाँ जीवित हो जाती हैं।

कुरान और पैगम्बर मुहम्मद भी कहते हैं:

ईश्वर सभी चीज़ों का निर्माता है और वह सभी चीज़ों का संरक्षक है।
आकाश और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। (39:62-63)

वही तुम्हें पैदा करता है और जो कुछ तुम करते हो उसे भी पैदा करता है। (37:96)

उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है। (33:8)

जो कोई कण भर भी बुराई करेगा, वह उसे देख लेगा। (99:8)

कुरान और पैगंबर मुहम्मद ब्रह्मांड को उसी तरह से नहीं देखते हैं जिस तरह से आधुनिक वैज्ञानिक, दार्शनिक और अन्य लोग देखते हैं। इसके बजाय, वे कलाओं में निर्देश देते हैं या एक कौशल प्रदान करते हैं जिसके साथ निर्माता को जानना है, जो सभी प्राणियों को अपने हाथों में रखता है और उन्हें अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करता है। वे अस्तित्व के आंतरिक और बाहरी आयामों को दिखाते हैं, साथ ही भागों और उनके निर्माता के लिए उनका क्या मतलब है। वे एक पुस्तक के माध्यम से इसके सभी अर्थों और अर्थों के साथ निर्देश देते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक और दार्शनिक जीवों का वर्णन उनकी शाब्दिक और बाह्य इंद्रियों के अनुसार करते हैं, न कि उनके आंतरिक आयामों और अर्थों के अनुसार, जिनके बारे में वे अनभिज्ञ हैं। अनैच्छिक बुरे विचारों या शैतान की फुसफुसाहटों से भरे मन की तरह, वे आपके मन को सतही मुद्दों से भर देते हैं और उनका अर्थ समझे बिना, आपको उनके बाहरी रूपों और उनके भागों के बारे में निर्देश देते हैं। वे आपको एक रत्नजड़ित पुस्तक में निर्देश देते हैं, जो इसके अक्षरों के रूपों, संरचनाओं और एक दूसरे के संबंध में पदों की व्याख्याओं से अलंकृत है।

आप कुरान और पैगम्बर मुहम्मद की सच्चाई को ऐसे मानकों से नहीं आंक सकते, न ही उन्हें उनके तराजू से तौल सकते हैं। ज़मीन में गहराई तक धंसे पहाड़ों को रत्नों के तराजू पर नहीं तौला जाता। विज्ञान और दर्शन के "सांसारिक" - अपवित्र - सिद्धांत उनका मूल्यांकन और पुष्टि नहीं कर सकते

कुरान और पैगंबर की सच्चाईयों को समझें। कुछ छोटी-छोटी बातों की आलोचना करने वालों को नज़रअंदाज़ करें वे सत्य आधुनिक विज्ञान और दर्शन द्वारा गुमराह किये गये हैं।

हे सहनशील! जब कोई विपत्ति तुम्हारे पास आए, तो उसे बांटना मत
अतीत और वर्तमान दोनों ही तरह की विपत्तियों का सामना करके अपने धैर्य को मजबूत करें।
वर्तमान को नष्ट कर दो, क्योंकि दुखद अतीत उन शेष आध्यात्मिक आशीर्वादों और पुरस्कारों के साथ जुड़ गया है जो उन्होंने तुम्हारे लिए परलोक में प्राप्त किए हैं।
भविष्य में संभावित दुर्भाग्य का सामना करने में आपका धैर्य, भविष्य के लिए क्या
जो लाता है वह ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर करता है। आज के लिए अपना धैर्य रखें, यहाँ तक कि इस दिन के लिए भी
दुर्भाग्य पर मुस्कुराकर और उससे प्यार करके इसे मजबूत करें ताकि यह आपके साथ जुड़ जाए
अपने धैर्य को बढ़ाएं और अपने मालिक पर भरोसा करने में मदद करें, जो कि अत्यंत दयालु, दयालु और बुद्धिमान है।
जब आप ऐसा करेंगे, तो आपका सबसे कमजोर धैर्य भी खत्म हो जाएगा
सबसे बड़े दुर्भाग्य के लिए पर्याप्त है।

हे मित्र, जान लो कि कुछ लोग विभिन्न परंपराओं को “अतिशयोक्तिपूर्ण” कहकर खारिज कर देते हैं। वास्तव में, ऐसी परंपराओं में मूल्यवान सत्य निहित हैं। उदाहरण के लिए,
पैगम्बर मुहम्मद ने कहा था: “यदि संसार का उतना ही भार होता जितना कि
ईश्वर को मच्छर के पंख के समान मानते हुए, अविश्वासी व्यक्ति पानी का एक घूंट भी नहीं पी सकता
इसका मतलब यह है कि आपके क्षणभंगुर जीवन के दर्पण में प्रकट होने वाले दुनिया के बाहरी चेहरे का वजन, आपके जीवन से निकले मच्छर के पंख से ज्यादा नहीं है ।
अनन्त संसार, जैसे कि मकई का एक दाना बढ़कर स्थायित्व प्राप्त करता है
एक पौधा एक विशाल खलिहान को भरने के लिए आवश्यक भूसे की मात्रा से बेहतर है
क्षेत्र-क्योंकि यह केवल उड़ा सकता है। हर किसी का अपना विशेष क्षेत्र होता है
दुनिया। अगर इस विशेष दुनिया को उसके असली मालिक की ओर इशारा करने वाला माना जाए
अपने आप से अधिक, और परलोक की खेती और उस क्षेत्र की खेती जहां
दिव्य सुन्दर नाम प्रकट होते हैं, तो उसका बहुत महत्व हो जाता है। अन्यथा,
इसके क्षणभंगुर पहलू के संबंध में, इसका मूल्य एक दाने से भी कम है।

हे मित्र, जान लो कि जीवन संघर्ष पर नहीं, बल्कि पारस्परिक सहायता पर आधारित है, इसका एक प्रमाण यह है कि घनी मिट्टी और कठोर चट्टानें एक दूसरे को सहयोग करने की अनुमति देती हैं।
पौधों की नाजुक जड़ों को भेदने के लिए। चट्टानें उनके कठोर दिलों को तोड़ देती हैं
जब पौधे की रेशमी उँगलियाँ छूती हैं, और मिट्टी अपना कठोर सीना खोल देती है
पौधों की नसें। ब्रह्मांड के हिस्से इसके सूर्य और चंद्रमा के साथ सहयोग करते हैं
पशुओं का लाभ, पौधे पशुओं के लिए भोजन के रूप में काम करते हैं, जीविका के तत्व
फलों के लिए भोजन बनने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं; फल जरूरतमंदों को आकर्षित करने के लिए सजे होते हैं, कण (मिट्टी, हवा और पानी के) भोजन बनने के लिए सहयोग करते हैं
शरीर की कोशिकाएँ, इत्यादि। यह सब इस बात का निर्णायक प्रमाण है कि जीवन का सामान्य सिद्धांत

---

83 अल-तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित, जिन्होंने इसे प्रामाणिक माना, अल-जामी अल-सागीर, संख्या 5168 में।

सिद्धांत है आपसी सहायता। संघर्ष केवल एक विशेष, अपवादात्मक सिद्धांत है, खास तौर पर कुछ जंगली जानवरों के बीच।

हे मित्र, यह जान लो कि आने वाली चीजों की पूर्ण, प्रत्यक्ष सहजता
अस्तित्व में आना ईश्वर की एकता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है, हर चीज़ के लिए,
विशेष रूप से जीवित चीजों को अपने अस्तित्व के लिए वह सब चाहिए जो उनके लिए आवश्यक है
संपूर्ण का अस्तित्व होना।८४ यदि एक से अधिक रचयिता होते, तो संपूर्ण का अस्तित्व होना असंभव था।
एक बात तो उतनी ही कठिन होगी जितनी कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का अस्तित्व।85

हे शारीरिक, दुष्ट आत्मा, जान लो कि तुम अपनी सबसे "महान" मांग के लिए भी निंदा के पात्र हो।
तुम उन चीज़ों की गहरी इच्छा रखते हो जो तुम्हारे लिए ज़रूरी हैं।
परलोक की खोज, लेकिन केवल क्षणभंगुरता के अंधकार से मुक्ति पाने और
नश्वरता के दर्द के लिए सांत्वना। एक राजा एक नश्वर प्राणी की सेवा कैसे कर सकता है? आप शाही परिवार से लिए गए रत्नों के स्तंभों पर एक सराय बनाते हैं
महल, ताकि कुछ जानवर रात भर उसमें रह सकें। [आप कीमती का उपयोग करते हैं
तुम्हें परलोक के लिए अपनी क्षणभंगुर इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए शक्तियाँ दी गई हैं।]
तुम अपने ऊपर महल को ढहा देते हो, और अनन्त के फल खाते हो
संसार के भ्रामक स्वर्ग में स्वर्ग।

हे आत्मा , तू अपने आप में आसक्त है और अपने भौतिक अस्तित्व पर निर्भर है, यह जान।
आप एक काल्पनिक सागर के पानी की एक बूंद से संतुष्ट हो गए
जीवन, रात में एक स्पष्ट दिन के सूरज से कमजोर चमक के साथ। संबंध
आपके भौतिक अस्तित्व और आपके सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्तियों के बीच
अस्तित्व एक आत्मा की तरह है जिसमें सभी जीव हैं और उन जीवों को बनाने वाले कणों से गुणा किया गया है। आपका अस्तित्व केवल उसी में खुद को इंगित करता है
सम्मान, जबकि अपने निर्माता के अस्तित्व को अंतहीन मामलों में इंगित करता है, जैसा कि
हर प्राणी। उसका अस्तित्व, जब आपकी तुलना में होता है, उतना ही स्पष्ट है जितना कि
ब्रह्माण्ड की महानता.

---

84 चेरी के अस्तित्व के लिए सूर्य और हवा, मिट्टी और के अस्तित्व और सहयोग की आवश्यकता होती है
पानी, और उसके पेड़ के तत्व। जिस आसानी से यह अस्तित्व में आता है, उससे पता चलता है कि
एकल निर्माता का इन कारकों पर पूर्ण नियंत्रण होता है। (ट्र.)

85 चूँकि सभी चीजों के निर्माण और नियंत्रण के लिए असीमित ज्ञान और शक्ति की आवश्यकता होती है,
अनन्त ज्ञान और शक्ति वाले एक से अधिक रचयिताओं का अस्तित्व अकल्पनीय है।
एक ही समय में दो अनंत नहीं हो सकते। दूसरा, यह कल्पना से परे है कि एक अलग निर्माता अस्तित्व के एक निश्चित हिस्से का निर्माण और निपटान कर सकता है, और ये निर्माता आपस में सहयोग करेंगे। ऐसी स्थिति असहमति को जन्म देगी,

क्योंकि स्वतंत्रता ईश्वरत्व का एक अनिवार्य गुण है। इसका परिणाम होगा अव्यवस्था
अस्तित्व। साथ ही, अस्तित्व में एकता और अंतर्संबंध के लिए यह आवश्यक है कि सभी कथित निर्माता सभी अस्तित्व को जानें और नियंत्रित करें, जिससे कई रचनाकारों का अस्तित्व संभव हो जाता है
वही गुण अनावश्यक हैं। इसलिए, भगवान के साथ साझेदार जोड़ना अतार्किक और गलत है। (ट्र.)

आप अपने आप से प्यार करते हैं क्योंकि यह आपके शारीरिक आनंद का स्रोत है, आपके अस्तित्व का केंद्र, आपकी रुचियों की खान, और क्योंकि यह है किसी भी चीज़ से ज़्यादा आपके करीब कोई नहीं है। हालाँकि, आप एक धुंधली, क्षणभंगुर छाया को सभी अस्तित्व के मूल के साथ भ्रमित करते हैं। यदि आप क्षणिक आनंद के लिए अपने आत्म-सम्मान से प्यार करते हैं, तो आपको उससे प्यार करना चाहिए जो आपको अनंत, शाश्वत आनंद देता है और वह सब कुछ बनाता है जो आपको खुश करता है। यदि आपका आत्म-सम्मान ही वह है जो आपको खुश करता है, तो आप उसे प्यार करेंगे जो आपको अनंत, शाश्वत आनंद देता है और वह सब कुछ बनाता है जो आपको खुश करता है। यदि तुम अपने अस्तित्व का केन्द्र हो, तो तुम्हारा प्रभु वही है जिसने तुम्हें वह दिया है। अस्तित्व और इसे बनाए रखता है, उन सभी के साथ जिनके लिए आपका अस्तित्व संबंधित है.

यदि आपका अस्तित्व आपके हितों की खान है, तो आपका प्रदाता वह है जिसके हाथ में सब भलाई है। वह स्थायी, दयालु है, और तुम्हारे सारे लाभ उसी को हैं, और उन सब के लाभ भी उसी को हैं जो उपकार करने वाले हैं। यदि आपका आत्म-स्वरूप आपके अधिक निकट है (किसी भी अन्य चीज़ से अधिक), तो आपका सृष्टिकर्ता अभी भी करीब है। उसका "हाथ" वहाँ पहुँचता है जहाँ तुम्हारा अस्तित्व नहीं पहुँच सकता, और जो उसकी चेतना की पहुँच से परे है। इसलिए अपने सारे प्यार को एक कर लो अब प्राणियों के बीच विभाजित है और इसमें अपने आत्मत्व के प्रति प्रेम को जोड़ते हुए, इसे सर्वशक्तिमान, सच्चे प्रियतम की ओर निर्देशित करें।

हे मित्र, जान लो कि जो चीज़ तुम्हें ईश्वर से दूर रखती है और तुम्हें असावधानी में रखती है, वह है चीज़ों और हिस्सों को अलग-अलग देखना और उन्हें संयोग का परिणाम मानना। और कारण। हालाँकि, जो व्यक्ति समग्र और सार्वभौमिक को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखता है, वह सबसे छोटी चीज़ को भी सबसे बड़े कारण के लिए जिम्मेदार नहीं ठहरा सकता है। उदाहरण के लिए, आप भोजन को कुछ कारणों से जोड़ते हैं। लेकिन जब आप सर्दियों में पृथ्वी की वीरानगी और घोर अभाव को देखते हैं, उसके बाद उसका सजना और भर जाना देखते हैं। दैवीय शक्ति द्वारा विभिन्न प्रकार के भोजन से आपको यह विश्वास हो जाएगा कि जो आपकी ज़रूरतें पूरी करता है, वह कोई और नहीं बल्कि वह है जो आपकी ज़रूरतें पूरी करता है पृथ्वी की मृत्यु के बाद उसे पुनर्जीवित करके सभी जीवित चीजों के लिए।

उदाहरण के लिए, आप अपने घर की रोशनी और अपने (बौद्धिक और आध्यात्मिक) ज्ञान को कुछ स्पष्ट कारणों से जोड़ते हैं और कहते हैं:

जो कुछ मुझे मिला है, वह उस निश्चित ज्ञान के कारण है जो मुझे प्राप्त है (28:78)। हालाँकि, जब आप देखते हैं कि आपका प्रकाश दिन के उजाले से आता है और कि आपका ज्ञान सभी प्रकाशों के स्रोत पर निर्भर करता है, आप होंगे इस बात पर विश्वास है कि केवल वही है जो सौर मंडल को चलाकर दिन और रात बदलता है वह जो गुमराह लोगों को वैसा ही रहने देता है, और जिसे चाहता है, शास्त्रों को उतारकर मार्ग दिखाता है, वह आपके शरीर को प्रकाशित कर सकता है और आपके मन और हृदय को प्रकाशित कर सकता है।

हे मानवता, जान लो कि कुछ भयानक मुद्दे हर सचेत प्राणी को उन पर ध्यान देने के लिए मजबूर करते हैं। उनमें मृत्यु, अपने सभी प्रिय लोगों और दुनिया से अलग होना, भयानक परिस्थितियों से होकर अनंत काल की यात्रा करना और यहाँ और परलोक में तुम्हारी पूरी नपुंसकता और गरीबी शामिल है। तुम ऐसे मुद्दों से अनजान और अंधे कैसे हो सकते हो? तुम एक शुतुरमुर्ग की तरह हो जो शिकारी को न देखने के लिए अपना सिर रेत में छिपा लेता है। तुम कब तक क्षणभंगुर, नाशवान बूंदों में डूबे रहोगे और भयानक महासागरों पर ध्यान नहीं दोगे?

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर एक भाषाई नियम द्वारा सबसे बड़ी तार्किक समस्याओं को हल करना संभव बनाता है: अक्षर से संबंधित अर्थ और नाम से संबंधित अर्थ।86 यह ब्रह्मांड एक पुस्तक है; इसमें मौजूद प्राणी इसके शब्द हैं। इन शब्दों को केवल उनके लेखक की ओर से ही देखा जाना चाहिए, क्योंकि उनका एकमात्र कार्य भगवान के संदेश के रूप में उनके सभी सुंदर नामों को प्रकट करना है। प्राणियों को स्वयं की ओर से विचार करना अज्ञानता, कृतघ्नता और गलत दर्शन का कारण बनता है, जबकि उन्हें उनके लेखक की ओर से विचार करना ज्ञान, विश्वास और बुद्धि की उत्पत्ति है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर ने तर्क के एक नियम के माध्यम से दिव्य प्रभुत्व से संबंधित एक बहुत बड़े मामले को हल करना संभव बना दिया है: एक सार्वभौमिक के बीच का अंतर जिसमें विशेष या व्यक्ति होते हैं और भागों से बना एक संपूर्ण।87 उनकी कृपा और एकता की अभिव्यक्ति - एक ही चीज़ पर उनके नाम को प्रकट करना - की तुलना विशेष या व्यक्तियों वाले सार्वभौमिक से की जा सकती है।88 उनकी महिमा और एकता की अभिव्यक्ति - एक समूह या पूरे पर एक नाम को प्रकट करना - की तुलना भागों से बने पूरे से की जा सकती है। पूर्णता और भव्यता की अभिव्यक्तियाँ दोनों को समाहित करती हैं। अर्थात्, महिमा की दृष्टि में पूर्णता, संपूर्ण की दृष्टि में सार्वभौमिक और भाग की दृष्टि में विशेष की तरह है।

ऐ दोस्त, जान लो कि दुनिया आख़िरत की “सामग्री” है, और इसका उससे जुड़े सबसे महत्वपूर्ण मामलों पर असर पड़ता है। उदाहरण के लिए,

---

[86] एक अक्षर का कोई अंतर्निहित अर्थ नहीं होता और इसलिए यह किसी और चीज़ की ओर संकेत करता है, जैसे कि वह किस काम का हिस्सा है और उसका लेखक। हालाँकि, एक शब्द अपने आप में एक पूर्ण अर्थ रखता है और इसलिए मुख्य रूप से खुद की ओर संकेत करता है। (ट्र.)

[87] मानवता में सार्वभौमिकता है, और एक व्यक्तिगत मानव उस सार्वभौमिक इकाई का एक विशिष्ट या "विशेष" सदस्य है और साथ ही भागों से बनी एक संपूर्ण इकाई भी है। एक "विशेष" या व्यक्ति में प्रजाति के सभी गुण होते हैं, जबकि एक भाग में संपूर्ण के सभी गुण नहीं होते हैं। (ट्र.)

88 ईश्वर की अभिव्यक्ति के दो सामान्य प्रकार हैं: उसकी कृपा (दया, क्षमा, प्रावधान, और इसी तरह की उत्पत्ति) और उसकी महिमा (महिमा, भय, क्रोध, दंड, और इसी तरह की उत्पत्ति)। (ट्र.)

खाने-पीने में तुम्हें जो आनंद मिलता है, उस पर विचार करो। जिसने इस क्षणभंगुर निवास में, जो कोई सच्चा आनंद नहीं देता, तुम्हें इन भौतिक उपहारों का स्वाद लेने और अपने भौतिक अस्तित्व से संबंधित चीजों पर उसके नाम के प्रकटीकरण को महसूस करने के लिए इंद्रियाँ और भावनाएँ, प्रणालियाँ और अंग, भाग और यंत्र दिए हैं - वह बुद्धिमान जिसने तुम्हें विभिन्न इंद्रियाँ प्रदान की हैं - उसने अपने मेहमानों के लिए उन महलों में अनन्त दावतें तैयार की हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, और जहाँ वे हमेशा के लिए रहेंगी (5:119)।

हे भयभीत, असहाय ! जब आप सृजित वस्तु से डरते या प्यार करते हैं, तो डर पीड़ा बन जाता है और प्यार पीड़ा। जिससे आप डरते हैं, वह आप पर दया नहीं करता या आपकी प्रार्थनाएँ नहीं सुनता। जिससे आप प्यार करते हैं, वह आपको पहचानता नहीं, आपके प्यार के कारण आपको तुच्छ समझता है, आपसे दूर रहता है और आपकी इच्छा के बावजूद आपको त्याग देता है। बल्कि, अपने सर्व-उदार और दयालु सृष्टिकर्ता से डरो और प्यार करो ताकि तुम्हारा प्यार दर्द या अपमान के बिना एक निर्दोष, शाश्वत खुशी बन जाए और तुम्हारा डर दया की गोद में शरण लेकर एक सुखद विनम्रता बन जाए, जैसे एक शिशु का अपनी माँ से डरना उसे उसकी गर्म बाहों में खुद को फेंकने के लिए मजबूर करता है, जहाँ उसे खुशी मिलती है।

हे मित्र, यह जान लो कि तुम सृष्टि के वृक्ष के फल या बीज हो।
शारीरिक रूप से कमज़ोर, शक्तिहीन और छोटे व्यक्ति होने के बावजूद, सर्वशक्तिमान निर्माता ने आपको एक सार्वभौमिक स्वभाव प्रदान किया है। आपको जीवन देकर, उसने आपको एक तुच्छ, व्यक्तिगत अस्तित्व की सीमाओं से मुक्त कर दिया है और आपको दृश्यमान दुनिया में यात्रा करने के लिए सक्षम बनाया है ताकि आपकी बहुत विकसित, जिज्ञासु इंद्रियाँ अपना विशेष पोषण प्राप्त कर सकें। आपको इंसान बनाकर, उसने आपको एक बीज से उगने वाले पेड़ की तरह फलने-फूलने की क्षमता प्रदान की है। उसने आपको ईमान और इस्लाम प्रदान किया है, और इस प्रकार आपको एक सार्वभौमिक अस्तित्व प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। आपको ज्ञान और अपने प्रेम से अनुग्रहित करके, उसने आपको एक व्यापक प्रकाश की तरह बनाया है।

अब आपको चुनना होगा। अगर आप खुद को दुनिया और शारीरिक इच्छाओं से जोड़ते हैं, तो आप एक कमज़ोर, अपमानित व्यक्ति बन जाएँगे। लेकिन अगर आप अपने जीवन के साधनों, इंद्रियों और क्षमताओं का इस्तेमाल सबसे बड़ी मानवता (इस्लाम) के लिए करते हैं, तो आप एक सार्वभौमिक अस्तित्व प्राप्त करेंगे और एक केंद्रीय, प्रकाशमान दीपक बन जाएँगे।

हे ईश्वर, तू सांसारिक वस्तुओं से उतना ही प्रेम करता है जितना तेरा सीमित भौतिक अस्तित्व अनुमति देता है। चूँकि तू अपना प्रेम उसके उचित स्थान (ईश्वर) से दूर करता है, इसलिए तू व्यथित है। लेकिन यदि तू एकता के परमेश्वर और अन्य वस्तुओं से उसकी ओर से और उसकी अनुमति से प्रेम करता है, तो तू वियोग (जिससे तू प्रेम करता है) के कष्ट और पीड़ा से बच जाएगा। तू उस व्यक्ति के समान होगा जो अपने देश के सभी लोगों से सम्बन्ध रखते हुए शासक की सेवा करता है, और उसकी सुनता है।

अपने स्वामी के कानों से सुनता है और अपने स्वामी की आँखों से सब कुछ देखता है जैसे कि वह वहाँ मौजूद हो। शासक की संचार प्रणालियों का उपयोग करके, वह सभी सुखद संगीत सुनता है और देश के सभी सुंदर दृश्य देखता है।

हे वह जो चाँद और दूसरे ग्रहों के बारे में बहुत उत्सुकता दिखाता है , उसे जानो । अगर तुम्हें बताया जाए कि कोई चाँद से तुम्हें इसके बारे में बताने आया है, या तुम्हारा भविष्य बताने आया है, तो तुम उसकी बातें सुनने के लिए कुछ भी देने को तैयार हो जाओगे। हालाँकि, एक आदमी तुम्हें उसके बारे में बताता है जिसके राज्य में चाँद एक पतंगे से भी छोटा है जो रोशनी के इर्द-गिर्द उड़ता है: वह उस घर की छत से लटकी असंख्य मोमबत्तियों के बीच रोशनी के इर्द-गिर्द उड़ता है जिसे उसने अपने मेहमानों के लिए तैयार किया है। वह आदमी तुम्हें अनंत काल और शाश्वत जीवन, और बुनियादी सच्चाइयों और भयानक मामलों के बारे में भी बताता है, जिनमें से सबसे कम महत्वपूर्ण पृथ्वी और चाँद के विनाश से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

जो किताब वह लेकर आया है, उसकी उन आयतों को सुनिए जो इस प्रकार शुरू होती हैं: जब सूर्य मुड़ जाएगा (81:1), जब आकाश फट जाएगा (82:1), और इसी प्रकार की अन्य आयतें। वह तुम्हें एकता की ओर ले जाने वाला सीधा, समतल मार्ग दिखाता है, और तुम्हें पथभ्रष्टता के टेढ़े-मेढ़े मार्गों में उलझन से बचाता है।

वह “दृढ़ संभाल” को बढ़ाता है, जो आरोहण की एक श्रृंखला है, जो उन लोगों को रखती है जो इसे चीज़ों की भ्रामक बहुलता के अंधेरे में डूबने से बचाते हैं। वह आपको विश्वास के शुद्ध स्रोत से जीवन का जल (अनंत जीवन) प्रदान करता है ताकि आप जिससे प्यार करते हैं उससे अलगाव की आग से बच सकें। वह आपको बताता है कि आपके निर्माता को क्या पसंद है - जिसकी आज्ञा के अधीन सूर्य, चंद्रमा और सितारे हैं और जिसकी अनुमति से पृथ्वी को स्थिर और स्थिर किया गया था - और वह आपको क्या करने का आदेश देता है। वह आपको, एक असीम रूप से कमजोर और गरीब रचना को, अनंत काल के राजा के संचार और वार्तालाप के बारे में समझाता है, जिसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं है।

जब यह सत्य है, तो क्यों न तुम अपने आप को त्यागकर क़ुरआन के मार्गदर्शन को समझो, दयालु अल्लाह के रसूल की बात सुनो, और ईमान और समर्पण के साथ उसका स्वागत करो। जो शांति और मुक्ति के साथ आया है, उससे सच्चा प्रेम करो। उससे सीखो कि हमारा दयालु मालिक, दयालु मालिक हमसे क्या चाहता है।

हे मित्र, जान लो कि हम सर्वज्ञ निर्माता की संपूर्ण बुद्धि को देखते हैं, और साक्षी हैं कि उसके कार्य व्यर्थता और निरर्थकता से मुक्त हैं। वह तुच्छ और बहुत छोटी चीज़ों से विस्तृत, टिकाऊ और कीमती "वस्त्र" बुनता है। उसके कार्य उद्देश्यपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, वह प्रत्येक शारीरिक अंग या भाग (विशेष रूप से सिर में) को बहुत महत्वपूर्ण कर्तव्यों का दायित्व सौंपता है। यदि एक छोटा सा अंग भी

यदि तुम्हें अपने सिर के अंगों को सौंपे गए प्रत्येक कर्तव्य को पूरा करना होगा, तो तुम्हारा सिर माउंट सिनाई जितना बड़ा होगा।

जीभ को देखिए। इसके कई महत्वपूर्ण कार्यों में से एक यह है कि यह दयालु भगवान के खजाने में संग्रहीत उपहारों का निरीक्षण करती है, साथ ही उनकी शक्ति की रसोई में तैयार किए गए सभी खाद्य और पेय पदार्थों का भी निरीक्षण करती है। इसके कार्य सभी खाद्य पदार्थों के स्वादों जितने ही हैं। क्या यह उद्देश्यपूर्ण गतिविधि यह नहीं दिखाती है कि निर्माता दिन और रात बनाने और ऋतुओं को बदलने के लिए दिन के "शटल" को चलाकर अदृश्य और परलोक के लिए "वस्त्र" बुनता है?

वह मानवता में भी यही बुनाई करता है, जो ब्रह्मांड का सूचकांक है। वह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के मिनटों को "वस्त्रों" या स्मृति के "शीट" पर रिकॉर्ड करता है और स्थायी रूप से सुरक्षित रखता है, और मृत्यु का उपयोग करके जीवित प्राणियों को इस दृश्यमान, संकीर्ण दुनिया से पवित्रता और स्थायित्व की अदृश्य दुनिया में ले जाता है। हम रहस्योद्घाटन के स्रोतों से सुनते हैं कि ये मिनट प्रत्येक व्यक्ति के पास या तो लापरवाही और पाप या भ्रम से अंधकारमय होकर लौटते हैं।

उनके सिरों पर अच्छे कर्मों के दीप लटक रहे थे।

हे मित्र, जान लो कि सर्व-सुन्दर, सर्व-बुद्धिमान निर्माता पशु प्रजातियों के सदस्यों को, विशेष रूप से पंख वाले और मछलियों को, विभिन्न आकारों में बनाता है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वर्गदूतों और अन्य सभी प्राणियों के लिए करता है। वह छोटे को बड़े का एक नमूना बनाता है ताकि लोग सत्य की ओर निर्देशित हो सकें, उसकी रचना पर आसानी से विचार कर सकें, और उसकी शक्ति के संदेशों को पढ़ और समझ सकें। वह ऐसा उस शक्ति की पूर्णता को प्रदर्शित करने और अपनी दो तरह की कलाओं को प्रदर्शित करने के लिए भी करता है, एक उसकी कृपा से उत्पन्न होती है और दूसरी उसकी महिमा से।

छोटी-छोटी चीजें जिन्हें केवल कठिनाई से ही पहचाना जा सकता है, वे आमतौर पर अज्ञात रहती हैं, और उन्हें केवल तभी जाना जा सकता है जब उन्हें "बड़े अक्षरों" में "लिखा" जाए। बड़ी चीजें जो देखने और समझने के लिए बहुत बड़ी होती हैं, वे भी तब तक अज्ञात रहती हैं जब तक कि उन्हें अपेक्षाकृत "छोटे अक्षरों" में "लिखा" न जाए। इसके बावजूद, शैतान द्वारा सिखाया गया शारीरिक बुराई-आदेश देने वाला स्व, सोचता है कि छोटापन कला में कमजोरी या दोष के कारण होता है, और इसलिए उन्हें बहरे और अंधे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराता है। यह इसी तरह दावा करता है कि बड़ी चीजें बुद्धि और उद्देश्य की कमी दिखाती हैं, और इस प्रकार संयोग के कारण होती हैं।89

---

89 अपनी पूरी किताब में, सैद नूरसी ने मानवीय शारीरिक आत्म और शैतान की कई साज़िशों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनका मतलब यह नहीं है कि हर कोई इन सभी साज़िशों से अवगत है।
बल्कि, शारीरिक स्वार्थ कुछ लोगों को कुछ के साथ धोखा देता है, और दूसरों को दूसरों के साथ। शैतान और शारीरिक स्वार्थ के सभी भ्रामक तरीकों की ओर ध्यान आकर्षित करके, लेखक लोगों को जागने और जागते रहने के लिए कहता है। (ट्र.)

हे मित्र, जान लो कि वस्तुओं की लगभग अनंत बहुलता और प्रावधानों की पूर्ण प्रचुरता का अर्थ व्यर्थता नहीं है और यह बुद्धि के विपरीत नहीं है। यदि किसी वस्तु, विशेषकर किसी जीवित प्राणी का केवल एक ही उद्देश्य होता, तो यह आरोप सत्य हो सकता था। लेकिन प्रत्येक विद्यमान वस्तु के असंख्य उद्देश्य, कार्य और फल होते हैं। तुम्हारी जीभ के कार्य उतने ही हैं जितने तुम्हारे सिर पर बाल हैं।

उस प्रचुरता के लिए अनंत उद्देश्य हैं और प्रत्येक चीज़ के सौंपे गए कार्यों के संबंध में, बुद्धि के साथ कोई विरोधाभास नहीं है। हालाँकि सेना को मुख्य रूप से सीमाओं की रक्षा या बचाव का काम सौंपा जाता है, हमारे पास कई सैनिक हैं, क्योंकि एक सेना सरकार के अधिकार का भी प्रतिनिधित्व करती है, आंतरिक संघर्ष से रक्षा करती है, और अन्य सेवाएँ करती है।

हे मित्र, जान लो कि एक मानव कलाकार को उसकी कलाकृतियों के साथ देखा जा सकता है, लेकिन ईश्वर और उसकी कलाकृतियों के बीच 70,000 परदे हैं। यदि तुम ईश्वर के सभी प्राणियों को एक ही समय में एक साथ देख सको, तो अंधकार के परदे हट सकते हैं, और केवल प्रकाश के परदे ही रह सकते हैं, जो कि बहुत कठिन है।

हालाँकि, उस स्तर के दर्शन तक पहुँचने का सबसे सीधा और छोटा रास्ता आपके भीतर है; इसे बाहरी दुनिया में केवल गहन प्रेम से ही पाया जा सकता है।

हे मित्र, जान लो कि अधिकांश प्रजननशील पौधे और पशु प्रजातियों का प्रत्येक सदस्य पृथ्वी पर जितना संभव हो सके उतना फैलने का प्रयास करता है ताकि वह अपने निर्माता के नामों को प्रकट करके पृथ्वी को पूजा स्थल के रूप में उपयोग कर सके। प्रत्येक अपने निर्माता की पूजा करता है, जो अकेले पूजा के योग्य है, अपने तरीके से। एक तरबूज और उसके बीज, फल देने वाले पेड़ और उनके बीज, और मछली और पक्षी और उनके अंडे को देखो। चूँकि दुनिया इतनी छोटी है कि वे सभी अपने “इरादे” को पूरी तरह से महसूस नहीं कर सकते, इसलिए दृश्य और अदृश्य के ज्ञाता का सर्वव्यापी ज्ञान, जो सब कुछ जानता है, चाहे वह कब भी हो, उनसे उनकी इच्छित पूजा को स्वीकार करने की अपेक्षा की जाती है।

जान लो, ऐ दोस्त, चीज़ों के अस्तित्व के उद्देश्यों में से, कुरान कभी-कभी मानवता से संबंधित उद्देश्यों का उल्लेख करता है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि मानवता को केवल उल्लिखित उद्देश्यों के लिए बनाया गया था। बल्कि, यह हमारा ध्यान उनके लाभों, उनके द्वारा प्रदर्शित व्यवस्था और सामंजस्य और इस प्रकार उनके निर्माता के नामों की ओर आकर्षित करता है। हम केवल उसी पर ध्यान देते हैं और उसे तरजीह देते हैं जो हमसे संबंधित है, भले ही वह सूक्ष्म हो, उस "सूर्य" को तरजीह देते हैं जिससे हमारा कोई संबंध नहीं है। उदाहरण के लिए: और चंद्रमा: हमने इसके लिए स्थान (चरण) निर्धारित किए हैं (36:39), ताकि तुम वर्षों की संख्या और हिसाब जान सको (10:5)। यह चंद्रमा के हजारों उद्देश्यों में से केवल एक है, और इसका उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि यह मानवता के लिए सबसे स्पष्ट है।

हे मित्र, जान लो कि यह उनके लिए अद्वितीय मुहरों और विशेष चिह्नों में से एक है, तथा असीम एकता के सबसे स्पष्ट चिह्नों में से एक है।
अस्तित्व पर पूर्ण अधिकार में जो शक्ति और अनंत ज्ञान है, साथ ही इसकी रचना और रखरखाव में जो पूर्ण दृढ़ता और सहजता है, वह यह है कि एक साधारण एकल वस्तु से असंख्य भिन्न-भिन्न वस्तुओं का निर्माण होता है।
चीज़। उदाहरण के लिए, मिट्टी सभी प्रकार के पौधों के लिए मुख्य तत्व है
अस्तित्व में आना और बनाए रखना। इसके अलावा, सभी पशु और मानव अंग,
साथ ही उनके मांस और हड्डियां, रक्त और ऊतक, सरल से बने होते हैं
भोजन। उसकी महिमा हो जिसके पास सभी चीजों को बनाने की पूर्ण शक्ति है
एकमात्र चीज़ और सभी चीज़ों में से एकमात्र चीज़।

ऐ दोस्त! जान लो कि " क्या हम ही बीज बोने वाले हैं?" (56:64) में बहुत गहरा अर्थ छिपा है। जिस प्रकार तुम बाद में बोने के लिए बीज इकट्ठा करते हो, उसी प्रकार वारिस भी बीज इकट्ठा करता है।
सभी चीजों के लिए, पुनर्जीवित करने वाला, संरक्षक, जो मिट्टी को उसके नष्ट हो जाने के बाद पुनर्जीवित करता है
मृत्यु के पश्चात, वह सभी पौधों के "कर्मों" के परिणामों को रिकॉर्ड करता है, तथा उन्हें कुछ निश्चित मापों के अनुसार कई क्षेत्रों में बाद में बोने के लिए सुरक्षित रखता है। फिर, वह पौधों को जन्म देता है, तथा उन्हें जन्म देता है।
उन्हें पत्ते और फूल पैदा करने के लिए, जैसे कि प्रत्येक ने कहा: जब रिकॉर्ड हैं
खुला रखा गया (81:10).

इस बात पर विचार करें कि आप जो बीज बोएंगे उसे सुरक्षित रखने में आप कितने सावधान हैं, और यह समझने का प्रयास करें कि पूर्ण संरक्षक, भाग्य द्वारा निर्धारित, अपने माता-पिता के अनुक्रमों वाले असंख्य नाजुक बक्सों को कितनी पूर्णता से सुरक्षित रखता है,
परिवर्तन और भ्रष्टाचार से बचाता है, और उन्हें बिना किसी भ्रम के एक दूसरे से अलग करता है। इस तरह के संरक्षण का मतलब यह नहीं है कि आप जो चाहें कर सकते हैं
आप चाहते हैं और फिर अनंत विश्राम के लिए मर जाते हैं। क्या मानवता सोचती है कि उसे छोड़ दिया जाएगा
(75:36) कदापि नहीं! (वह तुम्हारे कर्मों को सुरक्षित रखता है, अर्थात् तुम्हारे अनन्त जीवन के बीज को) और जो कुछ तुम करोगे, उसका लेखा तुमसे लिया जाएगा।

हे मित्र, जान लो कि मानवता को विशेष गुण और आवश्यक गुण इसलिए दिए गए हैं ताकि मनुष्य सृष्टिकर्ता के आवश्यक स्वरूप को समझ सके।
गुण और विशेषताएँ। उनके विनाश और पुनर्निर्माण को समझने के लिए
ब्रह्मांड, और दूसरी दुनिया में अपने सभी अन्य निपटान के साथ मर चुकी हर चीज को पुनर्जीवित करना, वसंत में मिट्टी के पुनरुद्धार और उसकी मृत्यु पर विचार करें
शरद ऋतु और सर्दियों में। इससे आपको सर्वोच्च पुनरुत्थान का अंदाजा हो जाएगा
और ऐसी आयतों की व्याख्या जैसे: जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा (81:1)।

ऐ दोस्त, जान लो कि इस्लाम की मूल बातें हर चीज़ को शामिल करती हैं,
स्वामी के महानतम नाम और गुण तथा सर्वोच्च की रचना
सिंहासन, आकाश और पृथ्वी अपने स्वर्गदूतों के साथ, नीचे तक-

वे तुम्हारे हृदय में व्याप्त हैं। वे आकाश और पृथ्वी के बीच की सभी चीज़ों को भी अपने में समाहित करते हैं।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

संसार की ज़िन्दगी तुम्हें धोखा न दे, और न धोखा देनेवाला तुम्हें परमेश्वर के विषय में धोखा दे। (35:5)

ऐ अल्लाह, तूने मुसलमानों को दुनियावी ज़िंदगी की तरफ़ बुलाया है, यह नींद और खेल का खिलौना है, जो उन्हें हलाल चीज़ों को छोड़ कर अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए हराम चीज़ों के साथ-साथ इस्लाम के कुछ सार्वजनिक प्रतीकों या यहाँ तक कि धर्म के लिए भी प्रेरित करता है। तू एक शराबी की तरह है जो जंगली, भूखे शेर को एक शांत घोड़े से, जल्लाद के फंदे को एक बच्चे की रस्सी से, एक खुले घाव को एक खुले गुलाब से अलग नहीं कर सकता। तू शेर को घोड़ा समझता है, फंदे को रस्सी समझता है और खुले घाव को लाल गुलाब। इसके बावजूद, तू सोचता है कि तू चीज़ों को सही कर रहा है।

आप ऐसे व्यक्ति की तरह हैं जो किसी व्यक्ति को भयानक स्थिति में देखता है - उसके पीछे एक शेर हमला करने के लिए इंतजार कर रहा है, उसके सामने एक फांसी का फंदा है, और उसके शरीर के दोनों तरफ दो गंभीर घाव हैं। उसके पास दो तरह की दवा है जो घावों को दो लाल गुलाबों में बदल देगी; दो ताबीज (एक उसकी जीभ में, दूसरा उसके दिल में) जो शेर को एक घोड़े में बदल देंगे जो उसे उसके उदार स्वामी की उपस्थिति में ले जाएगा, जो उसे शांति के निवास पर दावत के लिए आमंत्रित करता है। क्षय और नश्वरता के पेड़ से लटकता हुआ जल्लाद का फंदा, ईश्वर की कृपा से, उसे लगातार बदलते दृश्यों के माध्यम से ले जाएगा ताकि दिनों और मौसमों, वर्षों और सदियों के माध्यम से उनकी सुंदरता, रूपों और एहसानों के नवीनीकरण में लिया जाने वाला आनंद बढ़े।

आप कहते हैं: "उन ताबीजों और दवाइयों को छोड़ो, और चलो अपना मनोरंजन करें।" व्यक्ति जवाब देता है: "ताबीज और दवाइयां मेरे लिए पर्याप्त हैं, क्योंकि केवल वे ही आनंद और खुशी लाते हैं। क्या आप मृत्यु के शेर को मार सकते हैं जो केवल स्वर्ग में मरेगा; क्षय और नश्वरता को दूर करें और इस तरह पृथ्वी को खुद से अलग कुछ में बदल दें; मेरे घाव (नपुंसकता के) को ठीक करें और इस तरह मेरे क्षणभंगुर, नाशवान जीवन को स्थायी, चिरस्थायी जीवन में बदल दें; और गरीबी और अभाव के मेरे दूसरे घाव को हमेशा के लिए समृद्धि में बदल दें?

[90] एक परंपरा कहती है कि क़यामत के दिन मौत एक मेढ़े के रूप में प्रकट होगी और जन्नत और जहन्नम के बीच कट जाएगी। इस प्रकार, जन्नत या जहन्नम में कोई मौत नहीं होगी। सहीह अल-मुस्लिम, हदीस संख्या 2849. सहीह अल-बुखारी में भी दर्ज है । (त्र.)

अगर तुम कर सको तो मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे। वरना मुझे अकेला छोड़ दो! तुम धोखा दे सकते हो केवल अन्य शराबी जो हँसने और रोने, स्थायित्व और क्षणभंगुरता, उपचार और बीमारी, और विचलन और मार्गदर्शन के बीच अंतर नहीं कर सकते हैं।
मेरे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है। वह कितना अच्छा रक्षक है, और कितना अच्छा सहायक है।

हे मित्र, जान लो कि भ्रष्ट, गुमराह सभ्यताओं के छात्र और दर्शन लालच और विभिन्न भावनाओं से प्रेरित होते हैं। वे मुसलमानों को आमंत्रित करते हैं विदेशी परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करना, अपने सार्वजनिक प्रतीकों को त्यागना इस्लाम की रोशनी से जगमगाता हुआ। कुरान के छात्र जवाब देते हैं: "यदि आप कर सकते हैं संसार से क्षय और मृत्यु को दूर करो, और संसार से नपुंसकता और दरिद्रता को दूर करो यदि आप मानवता के प्रति उदासीन हैं, तो आप धर्म और उसके सार्वजनिक प्रतीकों के प्रति उदासीन हो सकते हैं। अन्यथा चुप रहो, क्योंकि तुम्हारे शब्द ऊपर बताई गई चार बातों की गड़गड़ाहट जैसी चीख की तुलना में मक्खी की भिनभिनाहट से अधिक कुछ नहीं हैं।
सृष्टि और जीवन के, [साथ ही मानव मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के] भी धर्म की आवश्यकता और उसके सार्वजनिक प्रतीकों का अनुसरण करने की वकालत करते हैं।" जब क़ुरआन पढ़ा जाता है, इसे कान से सुनो और ध्यान दो, शायद तुम पाओगे, और पाओगे दया से व्यवहार किया जाना (7:204)।

मृत्यु की नियत घड़ी का शेर हमारे पीछे, प्रतीक्षा कर रहा है। यदि आप कुरान पर विश्वास करो, कि शेर एक घोड़े में बदल जाएगा, और अलगाव (से) जिनसे हम प्रेम करते हैं) एक बुराक (अदृश्य दुनिया का एक पर्वत) बन जाएगा जो तुम्हें दयालु, दयावान, परम कृपालु की दया की ओर ले जाएगा हमारे स्वामी, परम स्नेही, सर्व-दयालु के। अन्यथा, वह शेर हमें चीर कर अलग कर देते हैं और हमेशा के लिए हमें उससे अलग कर देते हैं जिससे हम प्यार करते हैं। क्षय और क्षणभंगुरता भी दिन और रात के रूप में हमारे सामने हैं, और नाश और अलगाव ऋतुओं और वर्षों के रूप में।

ये चीजें - मृत्यु और अलगाव, क्षय और क्षणभंगुरता - हमारे सभी प्रियजनों के साथ हमें फांसी पर लटकाने के लिए स्थापित की गई हैं। अगर हम नियमों का पालन करें कुरान, ये सभी धारा पर एक सुखद यात्रा के लिए एक पर्वत बन जाते हैं समय और संसार के महासागर में दिव्य शक्ति के संचालन का निरीक्षण करने के लिए सूर्य के चक्र द्वारा एक के बाद एक आने वाले क्रमिक मौसमों के माध्यम से पृथ्वी का घूर्णन उसके सिर के चारों ओर दिन और रात की पगड़ी लपेटता है और गर्मी और सर्दी के कपड़े एक दूसरे के ऊपर पहनना।
इस यात्रा में हम दिव्य नामों के निरंतर नवीनीकरण का अवलोकन कर सकते हैं।
चलती वस्तुओं में, बदलते दर्पणों में और बदलती पट्टियों पर (दिनों और ऋतुओं के परिवर्तन के साथ-साथ बदलती हुई कोई भी वस्तु) दिन और रात के परिवर्तन के माध्यम से।

इसके अलावा, हमारे दाहिनी ओर अनंत गरीबी का घाव है।
अन्य सभी सजीव प्राणियों की तुलना में हम गरीब हैं, जबकि हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने की शक्ति हमारे पास है।
भौतिक और आध्यात्मिक ज़रूरतें गौरैया से भी कम हैं। अगर हम अपनी ज़रूरतों को ठीक कर लें
कुरान से मिले घावों के कारण, हमारी पीड़ादायक, जन्मजात गरीबी, दया के भोज में बैठने की खुशी देने वाली उत्सुकता में बदल जाती है, और दया के भोज के लिए सुखद भूख में बदल जाती है।
सर्व दयालु, सर्व दयावान की दया का फल। सर्वशक्तिमान के समक्ष अपनी गरीबी और नपुंसकता को महसूस करने का सुख बहुत अधिक है
जाहिरा तौर पर अमीर और शक्तिशाली होने की तुलना में अधिक है। अन्यथा, हम
ज़रूरत का दर्द और भीख मांगने और झुकने का अपमान सहना
हम जिससे भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की अपेक्षा करते हैं, उसके सामने खड़े होते हैं।

हमारे बाएं हिस्से में अनंत शत्रुता और खतरे के बावजूद अनंत नपुंसकता का गहरा घाव है। भय का दर्द सांसारिक जीवन के आनंद को नष्ट कर देता है।
लेकिन अगर हम कुरान के आह्वान के आगे झुक जाते हैं, तो हमारी नपुंसकता हमें उस पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करती है।
वह परम शक्तिशाली है और हमें सभी शत्रुता से सुरक्षित रखता है। अन्यथा, हम
अपनी असीम नपुंसकता के कारण हमें शत्रुता और खतरे का सामना करना पड़ता रहेगा।

इसके अलावा, हमारी यात्रा कब्र और पुनरुत्थान तक फैली हुई है
अनंत काल तक। न तो दुनिया और न ही मानवीय तर्क इसके पर्दों को रोशन कर सकते हैं
रास्ते में अंधेरा नहीं छाता, न ही वे ज़रूरी भोजन मुहैया कराते हैं।
हमारा रास्ता सिर्फ़ क़ुरआन की रोशनी और रहम करने वाले के ख़ज़ाने से रोशन है। अगर तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ है जो हमारी यात्रा में रुकावट बनती है, बशर्ते कि वह गुमराही न हो, तो उसे ज़ाहिर कर दो। वरना चुप रहो

और कुरान जो कहता है, वही कहने दो। जब हम सृष्टि की पुस्तक में इन पाँच आयतों को पढ़ रहे हैं - यानी दुनिया का क्षय और क्षणभंगुरता,
साथ ही प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु, नपुंसकता और गरीबी, और लंबी यात्रा -
हे अभिमानी, धोखेबाज, हम तुम्हारा अनुसरण कैसे कर सकते हैं, खासकर तब जब हम सुनते हैं
कविता: न तो संसार का जीवन तुम्हें धोखा दे, न ही धोखेबाज तुम्हें धोखा दे
ईश्वर का सम्मान करें (35:5)। केवल वे लोग जो राजनीति या वासना की शराब के नशे में हैं
प्रसिद्धि, प्रशंसा की महत्वाकांक्षा, जातीय या जनजातीय प्राथमिकताएं, नास्तिकता, या आधुनिक अपव्यय आपका पीछा करते हैं।

हमें जो मार पड़ती है, उससे हमें होश में आना चाहिए। जानवरों के विपरीत, जो
केवल वर्तमान का दर्द सहते हुए, हम वर्तमान का दर्द, भविष्य की चिंता और दु:ख, तथा अतीत का भी दर्द सहते हैं।

यदि तुम सभी प्राणियों में सबसे अधिक अभागे, मूर्ख और पथभ्रष्ट नहीं बने रहना चाहते तो चुप रहो और कुरान सुनो:

> निश्चय ही, परमेश्वर के मित्रों पर कोई भय नहीं आएगा, न ही कोई दु:ख आएगा।
> वे शोक करते हैं। वे विश्वास करते हैं और परमेश्वर के भय से पापों से बचते हैं।

उनके लिए सांसारिक जीवन और आख़िरत की शुभ सूचना है। ईश्वर के वचन में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, यही सर्वोच्च विजय है। (10:62-64)

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

अंजीर और जैतून और सीनै पर्वत और इस सुरक्षित नगर की शपथ।
हमने मनुष्य को उत्तम आकार का बनाया, ताकि वह सृष्टि का आदर्श नमूना हो। फिर हमने उसे सबसे नीच बना दिया, परन्तु जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, तो उनके लिए अप्रतिम प्रतिफल है।
फिर (ऐ मनुष्य!) फिर तुम्हें आख़िरत के निर्णय से इनकार करने का क्या कारण है?

क्या परमेश्वर सर्वोत्तम न्यायकर्ता और सर्वशक्तिमान सम्राट नहीं है? (95:1-8)

हे मित्र, जान लो कि हर चीज़ में दृढ़ और परिपूर्ण कलात्मकता यह दर्शाती है कि सभी चीज़ों का निर्माता मौजूद है और सभी चीज़ों के निकट है, भले ही वह एक ही समय में अंतरिक्ष द्वारा सीमित न हो। चूँकि लोगों को सभी चीज़ों की ज़रूरत है, इसलिए उन्हें उसके अलावा किसी और चीज़ या किसी की पूजा करना उचित नहीं है, जिसके हाथ में प्रभुत्व है, और जिसके पास सभी चीज़ों का खजाना है। अस्तित्व, आविष्कार और अच्छाई के संबंध में, हम चींटी या मधुमक्खी से ज़्यादा नपुंसक और शक्तिहीन हैं, और मकड़ी या मच्छर से भी कमज़ोर हैं। विनाश और बुराई के मामले में, हमारी क्षमता स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों से भी ज़्यादा है। उदाहरण के लिए, हमारी अच्छाई केवल वहीं तक सीमित है जहाँ तक हमारे हाथ पहुँच सकते हैं, जबकि हमारी बुराई का प्रभाव बहुत दूर तक हो सकता है।

सर्वशक्तिमान को नकारने से ब्रह्मांड या सभी जीव भगवान के संदेश और दिव्यता के दर्पण से बदलकर परिवर्तन और क्षय के अधीन पदार्थ बन जाते हैं, लक्ष्यहीन संयोग के खिलौने बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण मानव को ईश्वरीय नामों को प्रकट करने वाली अच्छी तरह से रचित, सामंजस्यपूर्ण कविता के टुकड़ों से कम कर देता है; एक स्थायी, शाश्वत वृक्ष का बीज; और सर्वोच्च विश्वास को धारण करने के कारण सभी प्राणियों से श्रेष्ठ ईश्वर का प्रतिनिधि, सबसे निम्न और सबसे पतित, शक्तिहीन और निराश्रित नश्वर चेतन प्राणी बना देता है। हमारे अहंकार को स्वतंत्र इच्छा दी गई है, लेकिन यह एक बाल की तरह कमजोर है, कम क्षमता वाला, दूर की रोशनी की चमक की तरह मंद और अल्पकालिक है। हालाँकि, हमारी नपुंसकता और गरीबी इतनी बड़ी है कि हम असीम रूप से शक्तिशाली और शाश्वत रूप से धनवान की अभिव्यक्तियों के लिए एक विशाल दर्पण हो सकते हैं।

हमारा सांसारिक जीवन, असंख्य भागों से युक्त एक बीज के समान होते हुए भी, जो अंतरिक्ष में फैलकर एक वृक्ष बन जाता है, कुछ तुच्छ पदार्थों को प्राप्त करने के लिए, मिट्टी को कुरेदने वाली मुर्गी के समान, प्रयत्न करने तक ही सीमित रह जाता है, जिसके बाद वह कुछ प्राप्त कर लेता है।

हम मिट्टी में घुल जाते हैं। लेकिन हमारे अमूर्त जीवन में, हम एक शाश्वत की तरह हैं
वह वृक्ष जिसकी इच्छा की शाखाएं अनंत काल तक फैली हुई हैं।

हमारा काम और प्रयास यह दर्शाता है कि हम कमज़ोर और शक्तिहीन से अधिक कुछ नहीं हैं
ऐसे जानवर जो केवल हमारे हाथों की पहुँच तक ही काम कर सकते हैं। हालाँकि, हमारी प्रार्थना और माँग हमें सर्व-दयालु के एक महान अतिथि बनाती है, जिसने हमें अपने हाथों से बनाया है।
हमारे लिए अपनी दया के भण्डार खोल दिए, अपनी कला के सभी चमत्कार हमें सौंप दिए,
और हमें एक ऐसे क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति देता है जो हमारी क्षमता से कहीं अधिक विशाल है
देखना या कल्पना करना।

हमारे जीवन के आनंद और पूर्णता, तथा इसकी शांति और स्थिरता के संबंध में, हम गौरैया से भी कम हैं, क्योंकि हमारा आनंद अंधकार से घिरा हुआ है।
अतीत के लिए दुःख और भविष्य के लिए चिंता। हमारे अंग, इंद्रियाँ और भावनाएँ,
साथ ही हमारी क्षमता का विकास, हमें इस जीवन में एक कार्य के लिए मार्गदर्शन करें:
सभी प्राणियों का निरीक्षण, तुलना और चिंतन करना तथा उनके द्वारा ईश्वर की महिमा का साक्षी होना। हमें अपनी आवश्यकताओं के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, तथा उनकी आराधना करनी चाहिए
हमारी नपुंसकता, गरीबी और शौच की उचित धारणा और स्वीकृति
सक्रियता.

हमारा स्वभाव इतना व्यापक है कि हम सृष्टिकर्ता की आराधना कर सकते हैं
कई मायनों में। यह हमें अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है।
थोड़ी सी भी बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुँचेगी कि हमारे सभी अंग हमें दे दिए गए हैं
हमें अनंत जीवन के लिए। यदि एक स्वामी अपने नौकर को किसी खास कपड़े से बने वस्त्र खरीदने के लिए कुछ पैसे देता है और दूसरे नौकर को वस्त्र खरीदने के लिए बहुत सारा पैसा देता है, तो हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि स्वामी उनसे यह अपेक्षा करता था कि वे ऐसा करें।
अलग-अलग क्वालिटी के कपड़ों से बने कपड़े खरीदें।
दूसरा नौकर पहले नौकर द्वारा चुने गए नौकर से कहीं अधिक मूल्यवान होना चाहिए।
यदि दोनों नौकरों ने एक ही गुणवत्ता का कपड़ा खरीदा, तो निश्चित रूप से दूसरा नौकर भी एक ही गुणवत्ता का कपड़ा खरीदेगा।
दण्डित किया जाएगा।

अपनी शक्ति और ताकत की कमी के बावजूद (या बल्कि उसके कारण) हम बहुत दूर हैं
अन्य सजीव प्राणियों की तुलना में अधिक शक्तिशाली और अधिक मजबूत। हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से
और सहायता मांगते हुए, जो हमें प्राप्त नहीं हो सकता, वह हमें उसके द्वारा प्रदान किया जाता है
शक्ति। एक शिशु की तरह, हमारे आँसू हमें वह चीज़ देते हैं जो हम तक पहुँच भी नहीं सकते।
हमारी शक्ति हमसे हज़ारों गुना ज़्यादा है। चूँकि हम श्रेष्ठ हैं
अन्य सभी चेतन प्राणियों के लिए क्योंकि वे हमारे अधीन हैं (उसके द्वारा), न कि
अपनी स्वयं की बिना किसी सहायता के ग्रहण करने, विजय पाने और आकर्षण की शक्ति के माध्यम से,
हमें अपनी नपुंसकता और कमजोरी, गरीबी और अभाव को स्वीकार करना चाहिए, और
प्रार्थना और आराधना के माध्यम से परमेश्वर से मदद की याचना करें।

ईश्वरीय प्रभुता के सुन्दर और सम्पूर्ण वैभव का अवलोकन करके, उनके पवित्र नामों के अद्भुत प्रकटीकरणों की घोषणा करके, उनकी दया के भण्डार की सामग्री को समझकर, प्रकट नामों के भण्डार में संग्रहीत रत्नों को जानकर, शक्ति के संदेशों की लेखनी का अध्ययन और मनन करके, तथा उनकी रचनाओं की सूक्ष्मताओं को देखने की आशा करके, मानवता पृथ्वी की सबसे उत्कृष्ट रचना और शासक है।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

ऐ लोगो! तुम अल्लाह के नज़दीक दीन हो और उसके मोहताज हो। (35:15)

परमेश्वर की ओर भागो। (51:50)

हे असफल, असहाय, बेचारे ! अपने आत्म-सम्मान के संबंध में, आप निरंतर अपूर्ण हैं और आपके पास असीम असहायता और गरीबी, आवश्यकता और इच्छा है। जैसा कि आपको सर्वशक्तिमान की कृपाओं के आनंद को जानने और अनुभव करने के लिए भूख और प्यास दी गई है, आप असफलता और गरीबी, नपुंसकता और ज़रूरत से लदे हुए हैं ताकि आप अपनी असफलता के माध्यम से सर्व-महिमावान की पूर्णता के महान कार्यों को देख सकें। अपनी गरीबी का उपयोग उसकी संपत्ति और दया, अपनी नपुंसकता, उसकी शक्ति और भव्यता, अपनी ज़रूरत और उसकी कृपाओं और अनुग्रहों की विविधता को मापने के लिए करें।

तुम उसकी सेवा करने के लिए पैदा हुए हो, जिसका मतलब है कि तुम उसकी दया के द्वार पर अपनी असफलता को इस तरह से घोषित करो: "मैं ईश्वर से क्षमा मांगता हूं" और "ईश्वर की महिमा हो"; अपनी गरीबी को इस तरह से घोषित करो: "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है" और "ईश्वर की प्रशंसा हो" और उससे भीख मांगो; और अपनी नपुंसकता को इस तरह से घोषित करो: "उसके अलावा कोई शक्ति और ताकत नहीं है" और "ईश्वर सबसे महान है" और उससे मदद मांगो। इस तरह से उसकी प्रभुता की सुंदरता और कृपा तुम्हारी दासता के दर्पण में दिखाई देती है।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

निश्चय ही धर्मपरायण लोग सुख में रहेंगे, और दुष्ट लोग प्रज्वलित अग्नि में रहेंगे। (82:13-14)

हे असावधान ! जान लो ! जीवन से कब्र तक की हमारी यात्रा में केवल दो रास्ते हैं। वे बराबर लंबाई के हैं। एक हानिरहित है, और वे सभी जो हानिरहित हैं।

अंतर्दृष्टि और विवेक वाले कहते हैं कि इसमें बहुत लाभ है। इस पर चलने वाले 90 प्रतिशत लोग उस लाभ को प्राप्त करेंगे। दूसरे मार्ग में कोई लाभ नहीं है। वास्तव में, विवेक और धार्मिक विद्वत्ता वाले कहते हैं कि इसमें बहुत नुकसान है। यह 99 प्रतिशत हानिकारक है, लेकिन इसका पालन करने वालों को कोई हथियार और भोजन नहीं ले जाना पड़ता (पहले मार्ग का पालन करने वालों को ले जाना पड़ता है)।

ऐसा लगता है कि वे कोई बोझ नहीं उठा रहे हैं, लेकिन आप उनके दिलों को नहीं देखते, जो सौ गुना भारी बोझ उठाते हैं, या उनकी आत्माएँ भय और आतंक का बोझ उठाती हैं। निम्नलिखित दृष्टांत इसे स्पष्ट करता है:

आप इस्तांबुल जाने का फैसला करते हैं। बराबर लंबाई की दो सड़कें हैं: एक दाईं ओर और एक बाईं ओर। विवेक, अवलोकन और पर्याप्त अनुभव वाले लोग कहते हैं कि सही रास्ते में बहुत से लाभ हैं और कोई नुकसान नहीं है। इसके यात्री हथियार और भोजन ले जाते हैं, लेकिन उन्हें दूसरों पर (अपनी ज़रूरत को पूरा करने के लिए) उपकृत होने की चिंता या डर नहीं होता, जो एक बहुत बड़ा बोझ है। जहाँ तक दूसरे रास्ते की बात है, लाखों अनुभवी और धार्मिक विद्वानों का कहना है कि इसमें कोई लाभ नहीं है, हालाँकि जो लोग इसका अनुसरण करते हैं, वे कोई बोझ नहीं उठाते और कोई हथियार या भोजन नहीं ले जाते। लेकिन उनकी आत्माएँ भय से बोझिल हैं, और उनके दिल बोझिल हैं क्योंकि उन्हें अपनी ज़रूरत को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। (ऐसे बोझ हथियार और भोजन ले जाने से हज़ार गुना भारी हैं।)

जो लोग अपनी यात्रा लगभग पूरी कर चुके हैं या जिन्होंने देखा है कि यात्रियों को यात्रा के दौरान और उसके बाद क्या-क्या सहना पड़ता है, वे हमें बताते हैं कि जो लोग सही रास्ते पर चलते हैं वे सुरक्षित यात्रा करते हैं और अपने गंतव्य पर पहुंचने पर उनमें से दस में से नौ का बड़े सत्कार के साथ स्वागत किया जाता है। जो लोग बाएं (खतरनाक) रास्ते पर चलते हैं वे भय और भूख से पीड़ित होते हैं और अपने भय और आवश्यकता के कारण उन्हें हर चीज या हर किसी के सामने खुद को झुकाना पड़ता है। जब वे अपने गंतव्य पर पहुंचते हैं, तो उन्हें या तो अपनी यात्रा के लिए जवाबदेह ठहराया जाता है या मार दिया जाता है, और दस में से केवल एक, या अधिक से अधिक दो ही बचते हैं। थोड़ी सी भी बुद्धि वाला व्यक्ति बोझ न उठाने के लिए हानिकारक चीज का चुनाव नहीं करता। 99 प्रतिशत हानिकारक चीज 99 प्रतिशत लाभदायक चीज के मुकाबले कैसे पसंद की जा सकती है?

तुम यात्री हो, और इस्तांबुल कब्र और परलोक का मध्यवर्ती संसार है। सही मार्ग कुरान का है, जिसके लिए ईमान और पाँचों समय की नमाज़ अदा करना ज़रूरी है। बायाँ मार्ग पाप और विद्रोही शेर का है। विवेक और अनुभव वाले लोग संत हैं जो इस्लामी सत्यों में आनंद का अनुभव करते हैं। एक संत वह अनुभव करता है जो एक साधारण व्यक्ति विश्वास करता है।

हथियार और भोजन धार्मिक दायित्व हैं। इनमें पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ शामिल हैं, ईश्वरीय एकता की पुष्टि करना, ईश्वर पर भरोसा करना और उनसे प्रार्थना करना

मदद करना, और सर्वशक्तिमान, संरक्षक और जानने वाले के साथ-साथ सर्वशक्तिमान, उदार और दयालु पर भरोसा करना। सही मार्ग पर चलने वाले लोग खुद को उस व्यक्ति के सामने दीन होने से बचाते हैं जो उन्हें लाभ या हानि पहुँचा सकता है, क्योंकि यह विश्वास करना कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, इसका मतलब है कि केवल वही हानि या लाभ पहुँचा सकता है।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सांसारिक जीवन तो बस मनोरंजन और खेल है, और आख़िरत का घर तो जीवन ही है, यदि वे जानें। (29:64)

हे सैद! जान लो ! तुम बुढ़ापे, कब्र और अनंत काल की ओर यात्रा कर रहे हो। तुम्हारे मालिक ने तुम्हें यह जीवन इस जीवन और परलोक के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए दिया है। लेकिन तुमने इस क्षणभंगुर जीवन में सब कुछ खर्च कर दिया है, जो सागर की तुलना में केवल एक काल्पनिक बूंद के समान है। तुम्हें इसका कम से कम आधा या एक तिहाई हिस्सा अनंत जीवन की तैयारी में खर्च करना चाहिए। यह कितनी अजीब बात है कि तुम जैसे लोगों को बुद्धिमान और विद्वान कहा जाता है।

एक व्यक्ति के बारे में सोचिए जिसे बुरदुर से अंताल्या (दक्षिणी तुर्की के प्रांत) और फिर दमिश्क, मदीना और यमन की यात्रा के लिए खाद्य सामग्री खरीदने के लिए 24 सोने के सिक्के दिए गए हैं। इस यात्री से कहा जाता है कि वह अंताल्या तक परिवहन की व्यवस्था करे, लेकिन उसके बाद एक वाहन खरीदे। फिर वह जहाज या ट्रेन या विमान से आसानी से यात्रा कर सकता है और एक दिन में प्रत्येक शहर में पहुँच सकता है। अगर ऐसा नहीं किया जाता है, तो यात्री को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इसलिए, यह व्यक्ति निकल पड़ता है और 2 दिनों में 23 सिक्के खर्च कर देता है। जब उसे कहा जाता है कि बाकी पैसे खाद्य सामग्री खरीदने में खर्च करें, जिससे पैसे देने वाले को खुशी होगी, तो यात्री जवाब देता है: “मैं इसे किसी ऐसी चीज़ पर खर्च नहीं करूँगा जिससे शायद कोई लाभ न हो।” क्या इससे ज़्यादा मूर्ख कोई हो सकता है?

यात्री से कहा जाता है: "तुम कितने मूर्ख हो! तुम अपनी आधी रकम एक लॉटरी के लिए अलग रख देते हो जिसमें 1,000 लोग भाग लेते हैं, और इस तरह 1:1,000 के मौके के लिए एक बड़ा जोखिम उठाते हो। फिर भी तुम अपनी संपत्ति के 24 भागों में से एक को 999:1,000 के मौके के लिए अलग रखने से इनकार करते हो, जिसे प्रमाणित ज्ञान वाले लाखों लोगों ने प्रमाणित किया है। अगर कोई तुम्हें संभावित भौतिक लाभ के बारे में बताता है, तो तुम उसे स्वीकार कर लेते हो। तुम मानवता के सूर्य और सितारों द्वारा तुम्हें दी गई ख़बरों को क्यों अस्वीकार करते हो? इसके अलावा, दो लोगों की गवाही जो किसी चीज़ की पुष्टि करते हैं, उन हज़ारों लोगों की गवाही से बेहतर है जो उसे नकारते या अस्वीकार करते हैं। उदाहरण के लिए, दो लोगों की गवाही जो दावा करते हैं कि उन्होंने अर्धचंद्र देखा है

जो रमजान की शुरुआत का प्रतीक है, उसे उन हजारों लोगों की तुलना में अधिक पसंद किया जाता है जो इसके आने से इनकार करते हैं।

आप यात्री हैं। बुरदुर आपकी दुनिया है। अंताल्या कब्र है। दमिश्क इस दुनिया और अगली दुनिया के बीच की मध्यवर्ती दुनिया है। यमन पुनरुत्थान के बाद का क्षेत्र है। 24 सिक्के दिन के 24 घंटों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आप उनमें से 23 घंटे इस क्षणभंगुर जीवन में बिता देते हैं, और जब पांच दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक घंटा निकालने की बात आती है, तो आप आलसी हो जाते हैं, जो लंबी यात्रा के दौरान आपका सबसे आवश्यक भोजन है।

यह दृष्टांत इस बात का गहरा अर्थ समझाता है: ईश्वर से डरने वाले धर्मपरायण लोगों के लिए स्वर्ग लाया जाएगा, और दुष्टों के लिए नरक (26:90-91)।

हे अविवेकी, तूने सांसारिक लाभ के लिए धार्मिक जीवन का त्याग कर दिया है। मैं तुझसे एक दृष्टान्त कहूँगा, जिसमें संसार और धार्मिक जीवन दोनों से संबंधित सत्य हैं।

दो भाई, एक बहुत अनुशासित और शिष्ट तथा दूसरा बहुत बुरा व्यवहार करने वाला, यात्रा पर निकले। सड़क के एक दोराहे पर पहुँचकर उन्होंने देखा कि दायाँ दोराहा उस सड़क पर लागू कानून का अनिवार्य रूप से पालन करने की माँग करता है, जबकि बायाँ दोराहा बिना किसी बाध्यता के एक निश्चित प्रकार की स्वतंत्रता का वादा करता है। पहले भाई ने कानून और व्यवस्था पर निर्भरता स्वीकार करते हुए दायाँ दोराहा लिया।

दूसरे ने बायाँ रास्ता लिया और बिना किसी दायित्व के उत्तर की ओर चल पड़ा। रेगिस्तान में पहुँचने पर उसने एक भयानक आवाज़ सुनी और देखा कि एक शेर उस पर हमला करने के लिए तैयार है। वह भाग गया और 60 मीटर गहरे सूखे कुएँ के पास पहुँचकर उसमें कूद गया। आधे रास्ते में उसने दीवार से बाहर उगने वाले एक पेड़ को पकड़ लिया। पेड़ की दो जड़ें थीं जिन पर दो चूहे, एक काला और दूसरा सफ़ेद, कुतर रहे थे। उसने देखा कि शेर ऊपर उसका इंतज़ार कर रहा था और नीचे देखा तो एक भयानक अजगर उसके पैरों के पास खड़ा था, उसका मुँह उसे लेने के लिए खुला था। जब उसने चारों ओर देखा तो उसने हर जगह हानिकारक कीड़े-मकौड़े देखे। पेड़ की ओर फिर से देखने पर उसने पाया कि यह वास्तव में एक अंजीर का पेड़ था जिस पर बहुत सारे फल थे।

वह बहुत डरा हुआ था। हालाँकि वह अंदर से परेशान था और शिकायतों से भरा हुआ था, क्योंकि वह अपने बुरे स्वभाव के प्रभाव में था, उसने दिखावा किया कि वह एक बगीचे में है और फल खाने लगा। जैसा कि हदीस कुदसी में कहा गया है: "मैं अपने सेवक के साथ वैसा ही व्यवहार करता हूँ जैसा वह मेरे बारे में सोचता है।"91 और इसलिए यह अभागा आदमी

91 मुस्लिम, हदीस संख्या 2675; तिर्मिज़ी, हदीस संख्या 3538. बुखारी में भी दर्ज है। हदीस कुदसी पैगंबर की एक कहावत है, जिसके शब्द पैगंबर के हैं लेकिन अर्थ ईश्वर के हैं। (ट्र.)

वह न तो अच्छी तरह मरा और न ही अच्छी तरह जीया। उसकी समझ की कमी-
वह इस तथ्य से अंधा हो गया कि उसकी स्थिति संयोग का परिणाम नहीं थी।

पहला भाई एक शिष्ट व्यक्ति था और हमेशा भगवान के बारे में सोचता रहता था।
अच्छा, एक बगीचे में प्रवेश किया और सुंदर फूल और आकर्षक फल देखे
कुछ बर्बाद या बदसूरत चीजों के साथ। वह खुद को इस बात से चिंतित करता था कि क्या था
वह अच्छा और सुंदर था, और इसलिए उसे सहजता मिली और वह आमतौर पर हर चीज से खुश था।

अपने रास्ते पर चलते हुए, उसके भाई पर जो कुछ बीता था, वह सब जल्द ही घटित हो गया।
लेकिन उसमें कुछ अंतर थे। शेर के दहाड़ने पर वह इतना भयभीत नहीं हुआ,
क्योंकि उसे लगा कि यह रेगिस्तान के शासक की सेवा कर रहा होगा। कुएँ में कूदना,
उसका भी वही हश्र हुआ जो उसके भाई का हुआ था। इन अजीब घटनाओं के कारण ऐसा नहीं हुआ
उसे बहुत डर लगा, क्योंकि उसने सोचा कि ये किसी के द्वारा आयोजित किया गया था और
उसे इस बात के संकेत मिले कि उसकी परीक्षा ली जा रही है। इसलिए उसका डर जिज्ञासा में बदल गया कि वह कौन है
जिसने ऐसी बातों से अपने आपको ज्ञात किया। तब उसके मन में जिज्ञासा जागृत हुई
चिन्हों के मालिक के प्रति प्रेम।

जब उसने अंजीर के पेड़ पर तरह-तरह के फल देखे तो उसका डर गायब हो गया।
क्योंकि वह समझ गया था कि हर चीज़ के पीछे एक उद्देश्य होता है। अगर नहीं, तो कैसे
क्या अंजीर का पेड़ दूसरे पेड़ों के फल भी पैदा कर सकता था? वे ज़रूर किसी और पेड़ का प्रतिनिधित्व करते होंगे
शासक द्वारा अपने मेहमानों के लिए तैयार किए गए विभिन्न व्यंजन। शासक के प्रति उसका प्रेम
उसे यह जानने की इच्छा हुई कि इन चिह्नों का क्या अर्थ है। इस समझ की कुंजी उसे प्रेरित की गई, और उसने कहा: “मैं तेरे लिए सब कुछ त्यागता हूँ
और तुम पर भरोसा करते हैं।" इस पर, दीवार अलग हो गई और एक दरवाजा एक अद्भुत, सुखद बगीचे में खुल गया।
उसने देखा कि अजगर और शेर दो सेवकों में बदल गए हैं
उसे अंदर आने के लिए कहा।

इन दोनों भाइयों की स्थिति की तुलना करें। एक भाई गिरने वाला है।
ड्रैगन के मुंह में; दूसरे को एक शानदार बगीचे में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया जाता है
फूल और फल। पहला व्यक्ति बहुत चिंतित और भयभीत है; दूसरा व्यक्ति जो कुछ देखता है उसका अध्ययन करता है
और महसूस करता है कि उसका डर प्रेम, सम्मान और ज्ञान को जन्म देता है। पहला व्यक्ति अकेला है, निराशा और उदासी से भरा है; दूसरा व्यक्ति खुद को देखता है
एक दोस्ताना स्थिति में और आशा और उम्मीद से भरा हुआ। पहले वाले को भयानक दुश्मनों द्वारा हमले के लिए लक्षित किया जाता है; दूसरे वाले का स्वागत किया जाता है और उसे एक साथी के रूप में पेश किया जाता है।
एक अतिथि। पूर्व स्पष्ट रूप से स्वादिष्ट (लेकिन
वास्तव में जहरीले) फल जो केवल नमूने के तौर पर प्रस्तुत किए जाते हैं, उनका उद्देश्य विषाक्त पदार्थों को निकालना नहीं है।
उनका उद्देश्य अपने लिए उपभोग करना नहीं है, बल्कि उपभोक्ताओं को उनके लाभ के लिए प्रेरित करना है।

मूल चीजें खरीदते हैं और उनके ग्राहक बन जाते हैं; बाद में वे खाना टाल देते हैं और
प्रत्याशा का आनंद लेता है.

अब हम इस दृष्टांत की व्याख्या कर सकते हैं: पहला भाई आत्मा और हृदय है
एक नेक मोमिन का दूसरा भाई विद्रोही, पापी अविश्वासी की आत्मा और हृदय है। सही मार्ग कुरान और ईमान का है।
बायाँ रास्ता अविश्वास और विद्रोह का है। रेगिस्तान दुनिया है, शेर
मृत्यु है, कुआं एक व्यक्ति का जीवन है, और कुएं की गहराई (60 मीटर) हमारी है
औसत जीवन अवधि (60 वर्ष)। पेड़ जीवन है, दो चूहे दिन और रात हैं, और
ड्रैगन परलोक का द्वार है। कीड़े वे परेशानियाँ हैं जिनका हम जीवन में सामना करते हैं, और फल इस दुनिया की सौगात हैं जो हमें उपहार के रूप में दी जाती हैं।
आख़िरत की नेमतों के नमूने, हमें जन्नत के फलों की ओर आमंत्रित करते हैं।
ज़हरीले फल वो हैं जो वर्जित हैं। इसका संकेत है ज्ञान जो कि
सृष्टि की कुंजी ईश्वर है: उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह सर्वव्यापी, स्वयंभू है। अर्थात्: "हे ईश्वर। आप ही मेरी पूजा का उद्देश्य और (प्राप्ति) हैं।
आपकी खुशी ही मेरे जीवन का लक्ष्य है।"

ड्रैगन के मुंह को बगीचे के दरवाजे में बदलना दर्शाता है
क़ब्र वह दरवाज़ा है जिससे होकर ईमान वाले गुज़रते हैं और रहम करने वाले की रहमत तक पहुँचते हैं।
गुमराह और बग़ावत करने वालों के लिए क़ब्र एक दरवाज़ा है।
मध्यवर्ती दुनिया में अकेलेपन और आतंक के अंधेरे गड्ढों का द्वार है,
जो एक कालकोठरी की तरह है, अजगर का पेट।

भूखा शेर एक अनुशासित और प्रशिक्षित घोड़े में बदल जाता है।
गुमराह, मृत्यु प्रियजनों से एक शाश्वत अलगाव और निष्कासन है
अपने झूठे, सांसारिक स्वर्ग से कब्र की कालकोठरी में चले जाते हैं। इसके विपरीत, सही मार्गदर्शित लोगों के लिए मृत्यु मित्रों और साथियों के साथ पुनर्मिलन का साधन है, घर लौटने का, दुनिया की कालकोठरी से अनन्त उद्यानों की ओर प्रस्थान का, और इस दुनिया में किए गए कार्यों का पुरस्कार है। यह प्रदान किया जाएगा

अत्यन्त स्नेही, दयालु, भलाई करने वाले की कृपा से
और वह अत्यन्त दुष्ट है, और वह अत्यन्त दयावान है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।

हे अभिमानी , तू जानता है कि तू जो कुछ भी करता है, उसके लिए भी तू प्रशंसा चाहता है ।
नहीं किया है। आपको घमंडी और गर्वित होने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि आप ही हैं
बुराई और अपूर्णता की उत्पत्ति। यदि आपके अंदर अच्छाई है, तो यह केवल
आपकी आंशिक स्वतंत्र इच्छा के अनुपात में, जबकि आपकी स्वतंत्र इच्छा महान बुराई का कारण बनती है।
चूँकि आपकी अपूर्णता के कारण आपके लिए नियत फल गिर जाते हैं और सड़ जाते हैं,
आप बहुत बड़ी क्षति और शर्म के पात्र हैं।

आप एक मूर्ख, अभिमानी व्यक्ति की तरह हैं जो एक व्यापारिक सौदे में प्रवेश करता है
जहाज पर लोगों के साथ। जबकि हर कोई अपना काम करता है, वह अपना काम अनदेखा करता है, जो

जहाज को चलाना है। और इसलिए जहाज डूब जाता है और वे बहुत सारा पैसा खो देते हैं। वे उससे कहते हैं कि उन्हें मुआवजा दे, लेकिन वह जवाब देता है: "नहीं! बल्कि, हमें इसे आपस में बाँट लेना चाहिए।" बाद में, वे दूसरी यात्रा पर निकल पड़ते हैं और अच्छा मुनाफा कमाते हैं। वे उससे कहते हैं कि उन्हें प्रत्येक की पूंजी के अनुसार लाभ बाँटना चाहिए। लेकिन मूर्ख व्यक्ति जवाब देता है: "नहीं! मुझे यह सब मिल जाना चाहिए, क्योंकि क्या आपने सारा नुकसान मेरे ऊपर नहीं डाला? अब, सारा लाभ मेरा है।"

वे पूछते हैं: "क्या आप इतने अज्ञानी हैं कि आपको यह एहसास नहीं है कि किसी चीज़ का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व और उसके अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी स्थितियों की उपस्थिति पर निर्भर करता है?"

यही कारण है कि अस्तित्व के फल उसके घटकों के बीच साझा किये जाते हैं।
लाभ का एक सकारात्मक, संवेदी अस्तित्व होता है; हानि का अर्थ है "अस्तित्वहीनता।" जो अस्तित्व में है, उसका अस्तित्व समाप्त हो सकता है यदि उसका एक भी भाग नष्ट हो जाए या उसके रखरखाव के लिए आवश्यक एक भी शर्त समाप्त हो जाए।

ऐ वह जिसका नाम समृद्ध है, लेकिन वास्तव में वह अभागा है। जो किसी चीज़ को नष्ट कर देता है, वही उसके परिणामों का ज़िम्मेदार है। अतः, तुम्हें अहंकार करने का कोई अधिकार नहीं है। पहली बात: बुराई तुम्हारी ओर से है और भलाई तुम्हारे रब की ओर से है।

दूसरा: आपकी बुराई बड़ी और व्यापक है, जबकि आपकी अच्छाई छोटी और सीमित है।

तीसरा: आपके अच्छे कर्मों का फल आपको पहले ही मिल चुका है। चूँकि आपके अच्छे कर्म एक मुस्लिम व्यक्ति के रूप में आपकी धन्य स्थिति के एक अरबवें हिस्से की भी भरपाई नहीं कर सकते, इसलिए समझें कि स्वर्ग पूरी तरह से ईश्वर की कृपा से है और नरक पूरी तरह से न्याय है, क्योंकि सबसे छोटा बुरा काम भी वैश्विक विनाश का कारण बन सकता है।

चौथा: कोई काम भगवान के लिए किया जाए तो वह अच्छा हो जाता है, क्योंकि भगवान ही अपने लिए किए गए काम को पूरा करवाते हैं। इसलिए, जब हर कोई अपने अच्छे कामों के लिए उनका ऋणी है, तो बिना घमंड या दिखावे के उनका धन्यवाद करो, जो अच्छाई को बुराई में बदल देता है। इस बात से अनजान होकर तुम अहंकार से भरे हुए हो।

तुम लोगों के अच्छे कामों का श्रेय खुद को देते हो, और इस तरह हर एक को फिरौन बना देते हो। तुम उन लोगों में जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, परमेश्वर का हिस्सा बाँटते हो।

आप अपनी बुराई के लिए किस्मत को जिम्मेदार ठहराकर जिम्मेदारी से बचना चाहते हैं, हालाँकि यह आप में ही है। आप अपने निर्माता द्वारा अपनी कृपा से आप में से जो अच्छाई उत्पन्न की जाती है, उसे अपने ऊपर आरोपित करते हैं और जो आपने नहीं किया उसके लिए प्रशंसा चाहते हैं। कुरान के निर्देश के अनुसार खुद को अनुशासित करें: जो भी अच्छाई आपके पास आती है, वह ईश्वर की ओर से है और जो भी बुराई आपके पास आती है, वह ईश्वर की ओर से है

अपने आप से (4:79)। जो तुम्हारा है उसे ले लो और जो तुम्हारा नहीं है उसे मत छीनो। याद रखो कि कुरान कहता है कि बुराई का बदला उसी हद तक मिलता है, जबकि भलाई का दस गुना। इसलिए, जो लोग तुम्हारे साथ गलत करते हैं, उनके प्रति अपनी दुश्मनी में अति न करो, उनके रिश्तेदारों के प्रति भी यही भावना बढ़ाओ और उनके अच्छे गुणों को नज़रअंदाज़ करो। इसी तरह, अगर तुम अच्छे, नेक लोगों से प्यार करते हो, तो उनके रिश्तेदारों से भी प्यार करो और उनकी बुराइयों को नज़रअंदाज़ करो।

ऐ बेख़बर ! तू अपना कर्तव्य छोड़कर अपने रब के काम में लग गया, क्योंकि तू अन्यायी और अज्ञानी है। तू अपनी इबादत का कर्तव्य छोड़ देता है, हालाँकि उसे निभाना तेरे लिए आसान है, और तू प्रभुता का काम अपने कंधों पर लेने की कोशिश करता है, जो सिर्फ़ वही कर सकता है जिसने तुझे बनाया, बनाया, आकार दिया और जैसा उसने चाहा वैसा बनाया (82:7-8)। अपना काम देख और उसका काम उसी को सौंप दे, ताकि तू चैन और आराम से रहे।

अन्यथा, तुम अभागे, विद्रोही और विश्वासघाती बन जाओगे।

तुम्हारी स्थिति एक ऐसे सैनिक जैसी है जिसका मुख्य कर्तव्य प्रशिक्षण लेना और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध करना है। शासक उसे आवश्यक उपकरण, भोजन और कपड़े, हथियार और दवा उपलब्ध कराने के उसके कर्तव्य को पहचान कर उस कर्तव्य को पूरा करने में मदद करता है। लोग सैनिक को खाना बनाते हुए देखते हैं और उससे पूछते हैं कि वह क्या कर रहा है। वह जवाब देता है: “राज्य के लिए काम करना”; वह यह नहीं कहता: “अपना भोजन तैयार करना”, क्योंकि वह जानता है कि खाना बनाना उसका कर्तव्य नहीं है, बल्कि राज्य का कर्तव्य है, जिसे उसका भोजन तैयार करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो उसे खिलाना चाहिए। इस प्रकार व्यापार के माध्यम से अपनी आजीविका कमाने की कोशिश करने वाला एक सैनिक अज्ञानी, विद्रोही और विश्वासघाती है, और इसलिए दंड का पात्र है। यदि वह अपने प्रशिक्षण की उपेक्षा करता है और युद्ध के दौरान भाग जाता है, तो वह देशद्रोही है और कड़ी सजा का पात्र है।

हे अभागे ! तुम वही निजी हो, और पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ तुम्हारा प्रशिक्षण हैं। तुम्हारा धर्मपरायण होना, बड़े पापों से बचना, और शारीरिक स्वार्थ और शैतान से संघर्ष करना तुम्हारी लड़ाई है। इसी कारण से तुम्हें बनाया गया है, और ईश्वर ही सहायक है जो तुम्हें सफल बनाता है। तुम्हारा रचयिता तुम्हें भोजन और वह सब कुछ प्रदान करता है जो तुम्हारे जीवन और भरण-पोषण के साथ-साथ तुम्हारे परिवार के लिए भी आवश्यक है। लेकिन तुम्हें उसकी दया के खज़ाने के दरवाज़े खटखटाने चाहिए ताकि तुम उससे वाणी और कर्मों से माँग सको। तुम्हें उन रसोईयों के रास्ते पर चलना चाहिए जहाँ उसकी नेमतें पकाई जाती हैं और उससे अपनी क्षमता या ज़रूरत, या काम या वाणी की भाषा में माँगना चाहिए, जो उसने तुम्हें सौंपा है।

आप अपनी आजीविका के बारे में उस पर आरोप कैसे लगा सकते हैं, जबकि उसने आपको तब सबसे अच्छा भोजन दिया जब आप एक शिशु थे और आपके पास कोई शक्ति और इच्छा नहीं थी? केवल वही, जो सब कुछ सुनता है, सब कुछ जानता है, सर्वशक्तिमान है, सर्वधनवान है, जो गर्मियों में धरती को अपने मेहमानों के लिए रसोई बनाता है ताकि वे अपना आशीर्वाद बरसा सकें

बागों के किनारों से पानी की बाढ़ लाएँ और पेड़ों के खंभों को सबसे स्वादिष्ट भोजन से भर दें, सभी प्राणियों की ज़रूरतें पूरी करें। अपने ज़रूरी काम को करने के अलावा, उसके लिए और उसके नाम पर काम करें और जो काम उसने आपको सौंपा है, उसे पूरा करें। उस पर भरोसा करें और कहें: "मेरे लिए भगवान ही काफी है। वह कितना अच्छा संरक्षक, रक्षक मित्र और सहायक है।"

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे विषय में पूछें तो कह दो कि मैं निकट हूँ, पुकारनेवाले की पुकार जब वह मुझे पुकारता है तो मैं स्वीकार करता हूँ। (2:186)

मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूंगा (40:60)

यदि तुम प्रार्थना न करते तो मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता। (25:77)

हे मनुष्य, जो यह दावा करता है कि उसकी प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं की गयीं, उसे जान ले । प्रार्थना (ईश्वर को पुकारना, प्रार्थना करना) एक प्रकार की उपासना है, तथा उपासना का फल परलोक में मिलता है। उपासना से अपेक्षित सांसारिक परिणाम ही इसके लिए अवसर हैं। सूर्यास्त संध्या की प्रार्थना का अवसर है, तथा सूर्यग्रहण (उसका अंत नहीं) ग्रहण की प्रार्थना का कारण है। सूखा ईश्वर से वर्षा की प्रार्थना करने का अवसर है, जिसका आदेश इसलिए नहीं दिया गया था कि वर्षा हो। यह एक अन्य प्रकार की उपासना है जो केवल ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए की जाती है, यद्यपि इसे तब तक जारी रखना आवश्यक है जब तक वर्षा न हो जाए।

जब बारिश आती है तो उसका नियत समय समाप्त हो जाता है।

जब मुसलमानों पर अन्याय और दुर्भाग्य का हमला होता है, तो उन्हें दूसरी तरह की प्रार्थना करनी चाहिए जब तक कि ये हालात खत्म न हो जाएं। अगर ऐसा संभव है, तो यह प्रकाश पर प्रकाश है। अगर नहीं, तो यह मत कहो कि प्रार्थना अनुत्तरित रह गई; बल्कि यह कहो कि इसका समय अभी समाप्त नहीं हुआ है। ईश्वर प्रार्थना का उत्तर देने का वादा इस तरह करता है: मुझे पुकारो और मैं तुम्हें उत्तर दूंगा (40:60), लेकिन उत्तर देने का मतलब इसे स्वीकार करना और जो मांगा गया है उसे देना नहीं है। हर प्रार्थना का उत्तर मिलता है, लेकिन जो मांगा गया है उसे देना ईश्वरीय ज्ञान पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिए, आप अपने डॉक्टर से कोई दवा माँगते हैं। वह आपको वह देता है जो आप चाहते हैं, कुछ बेहतर, या कुछ भी नहीं, क्योंकि यह आपको नुकसान पहुँचा सकता है। चूँकि प्रार्थना सांसारिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कही जाती है, इसलिए जब हम जो प्रार्थना करते हैं वह नहीं होती है तो हम सोचते हैं कि यह स्वीकार नहीं की गई है। उदाहरण के लिए, हम सोचते हैं कि बारिश के लिए प्रार्थना इसलिए की जाती है ताकि बारिश आए। लेकिन अगर हम इसे उसी उद्देश्य से करते हैं (भगवान के लिए नहीं), तो यह स्वीकार नहीं की जाती है।

हे मित्र, जान लो कि क्रांतियाँ दो पक्षों (संघर्ष में) के बीच गहरी दरार पैदा करती हैं। एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए पुल की आवश्यकता होती है। क्रांतियों और दरारों की प्रकृति के आधार पर ऐसे पुल खोले जाते हैं। नींद इस दुनिया और प्रतीकों या अमूर्त रूपों की दुनिया के बीच एक तरह का पुल है। मध्यवर्ती दुनिया दुनिया और परलोक के बीच एक पुल है। वसंत सर्दी और गर्मी के बीच एक पुल है। पुनरुत्थान के बाद, चूँकि कई शक्तिशाली क्रांतियाँ होंगी, इसलिए पुल बेहद अजीब, घुमावदार और अद्भुत होंगे।

हे मित्र, जान लो कि ऐसी बार-बार उल्लिखित आयतों में जैसे: उसी की ओर तुम्हारा लौटना है (6:60); उसी की ओर तुम लौट रहे हो (2:28); उसी की ओर घर वापसी है (5:18), और उसी की ओर लौटना है (13:36), विद्रोहियों के लिए धमकी के अलावा, अच्छी खबर और सांत्वना है। वे मानवता को बताते हैं कि मृत्यु और क्षय, साथ ही क्षणभंगुरता और दुनिया से अलगाव, अनंत काल के राजा की उपस्थिति की ओर खुलने वाले द्वार हैं। यह अच्छी खबर दिल को उस भयानक दर्द से बचाती है, जो उससे प्यार करने वाले से अनंत अलगाव के बारे में सोचने से होता है। उस नारकीय स्थिति पर विचार करें जो अविश्वास पैदा करता है: सर्वशक्तिमान के आदेश के अनुसार: "मैं अपने सेवक के साथ वैसा ही व्यवहार करता हूँ जैसा वह मेरे बारे में सोचता है।" चूँकि अविश्वासी मृत्यु को एक अनंत विलुप्ति और अलगाव मानते हैं, इसलिए उनका अनुमान उनके लिए एक दर्दनाक यातना बन जाता है।

ईश्वर से मिलने के विश्वास से उत्पन्न होने वाला सुख स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। लेकिन उससे भी बढ़कर वह सुख है जो ईश्वर की शाश्वत स्वीकृति और उन्हें किसी भी मात्रात्मक और गुणात्मक आयाम से मुक्त स्वर्ग में देखने से प्राप्त होता है। दुनिया में एक पापी आस्तिक की शारीरिक रूप से नारकीय स्थिति, एक अविश्वासी की आध्यात्मिक रूप से नारकीय स्थिति की तुलना में स्वर्ग के सुख के समान है जो निर्माता को नहीं पहचानता।

यदि शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए कोई प्रमाण या साधन न भी हो, तो भी शाश्वत, प्रियतम के प्रियतम की प्रार्थना, जिसके पीछे सभी पैगंबर, संत और विश्वासी उस सर्वोच्च प्रार्थना में पंक्तियों में खड़े हैं, प्रमाण और साधन के रूप में पर्याप्त होगी। क्या सबसे महान, सबसे असाधारण और पूर्ण सुंदरता सबसे बड़ी कुरूपता और सबसे विचित्र दोष से ख़राब हो सकती है - कि जो अपने सबसे गुप्त प्राणियों की सबसे गुप्त विनती सुनता और पूरा करता है, वह धरती से भगवान के सर्वोच्च सिंहासन तक उठने वाली सबसे ऊंची आवाज, सबसे सुखद विनती, सबसे बड़ी और सबसे जरूरी जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे व्यापक प्रार्थना को नहीं सुनता और स्वीकार नहीं करता? नहीं, क्योंकि वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। सर्वशक्तिमान द्वारा अपने रसूल की विनती को स्वीकार करना रसूल की मध्यस्थता का सबसे व्यापक, सबसे समावेशी आयाम है, और उसका सृष्टि के लिए दया होना है।

हे मित्र, जान लो कि असावधान लोग भाग्य की चर्चा करते हैं और मानव की स्वतंत्र इच्छा तथा मानव कर्मों के निर्माण में व्यस्त रहते हैं। परन्तु वे इनकार करते हैं।
भाग्य और चीजों और घटनाओं को संयोग मानते हुए, स्वयं को भाग्य मानते हैं
स्वतंत्र एजेंट और ईश्वर और उनके कार्यों से संबंधित चीजों को आपस में साझा करना
अन्य लोगों और भौतिक कारणों से। अविश्वासी या असावधान स्वयं इनकार करता है
कि ईश्वर चीजों और घटनाओं का सृजन और प्रबंधन करता है, भले ही वे स्पष्ट रूप से
उसकी पुष्टि करें। एक विश्वासी आत्मा जो ईश्वर को जानती है, सभी चीजों को और
घटनाओं को उसके पास ले आओ।

ईश्वर के विषय में पर्याप्त ज्ञान रखने वाले तथा ईश्वर के प्रति सचेत लोगों के अनुसार
उनका निरंतर पर्यवेक्षण, इन दो धार्मिक मुद्दों - भाग्य और मानव
स्वतंत्र इच्छा - ईश्वर में विश्वास और उस पर निर्भरता का अंतिम बिंदु, ईश्वर की एकता और एक अच्छे मुसलमान होने में विश्वास की उच्चतम डिग्री। वे सेवा करते हैं
जो लोग जागरूक हैं और जो अपनी असावधानी के कारण सत्य से दूर हैं, उनके बीच एक पर्दा है। जो विश्वासी नम्रता और सेवाभाव में आगे बढ़ते हैं, जो स्वतंत्र इच्छा को नकारते हैं और सब कुछ ईश्वर को मानते हैं, वे हानिरहित हैं, क्योंकि वे ईश्वरीय प्रेम और एकता में खोये हुए हैं या उसके नशे में हैं। इस प्रकार

मामला, इनकार (मानव स्वतंत्र इच्छा का) या इसके निषेध और पुष्टि के मुद्दे
अब वे धर्मशास्त्र से संबंधित नहीं रह गए हैं; बल्कि, वे एक से संबंधित मुद्दे बन गए हैं
आस्तिक की वह अवस्था जो उसके प्रेम और विश्वास से उत्पन्न होती है।

हे मित्र, जान लो कि विनम्रता कभी-कभी व्यक्ति के अपने ऊपर ईश्वर के आशीर्वाद की घोषणा के विपरीत होती है, क्योंकि ऐसा करने से कभी-कभी अभिमान उत्पन्न होता है।
और अहंकार। इसलिए, अतिशयोक्ति और अत्यधिक वर्णन से बचें।
किसी व्यक्ति द्वारा अपने ऊपर ईश्वर के आशीर्वाद की घोषणा करने का मध्य मार्ग इस प्रकार है:
हर आशीर्वाद के दो पहलू होते हैं। पहला उस व्यक्ति से संबंधित है जिस पर भगवान की कृपा है।
यह आशीर्वाद व्यक्ति को अलग पहचान दिलाता है, जो उसे घमंड और
और जिसने दिया है उसे भूल जाते हैं। ऐसे लोग उसे अपने पास रख लेते हैं।
इसे अपनी योग्यता या योग्यता का परिणाम मानते हैं, और घमंडी बन जाते हैं।

दूसरा आशीर्वाद देने वाले से संबंधित है। आशीर्वाद प्रदर्शित करता है
उसकी उदारता और दया, और उसके नामों की गवाही देता है। आशीर्वाद प्रदान करके, वह अपने प्रकटीकरण के "छंद" का उच्चारण करता है। विनम्रता होनी चाहिए
पहले मामले में दिखाया गया, जबकि दूसरे में दिखाया गया तो यह कृतघ्नता बन जाता है
एक. यदि कोई ईश्वर को दी गई सभी कृपाओं का श्रेय देता है और
उनकी उदारता, और कोई आत्म-गर्व महसूस नहीं करता है, एक भगवान के आशीर्वाद की घोषणा कर रहा है
स्वयं के प्रति आभार व्यक्त करना प्रशंसनीय कृतज्ञता बन जाता है।

ऐ यूसुफ़ किशरी! 92 जब तुम सुन्दर वस्त्र पहनोगे तो सईद तुमसे कहेगा:
“आप कितनी सुंदर हैं।” आप कहते हैं: “सुंदरता कपड़ों की है, मेरी नहीं।”
यह नम्रता भी है और आशीर्वाद की घोषणा भी।

हे मित्र, जान लो कि जब लोगों को भुगतान किया जाता है और वे पुरस्कार साझा करते हैं, तो काम करते समय शांत रहने वाली प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या की भावनाएं जागृत होने लगती हैं।
काम और जिम्मेदारी बांटने से उनका बोझ हल्का हो जाता है और तनाव कम होता है।
कठिनाई, कमज़ोर लोग ताकतवर की सराहना करते हैं और आलसी लोग मेहनती लोगों से प्यार करते हैं। यह दुनिया आख़िरत के लिए काम करने, आख़िरत में इनाम पाने के लिए धार्मिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की जगह है। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं होना चाहिए जो आख़िरत के लिए काम करे।
प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या, क्योंकि ऐसी चीजें कपट और अशुद्ध इरादे की ओर इशारा करती हैं। ऐसे लोग प्रशंसा और प्रशंसा जैसे सांसारिक पुरस्कारों की तलाश में रहते हैं
प्रशंसा करते हैं, अपने अच्छे कामों को अमान्य ठहराते हैं, दूसरों को पुरस्कार देने में परमेश्वर के साथ साझीदार बनाते हैं, और दूसरों द्वारा निन्दा की जाती है।

हे मित्र, जान लो कि परमेश्वर अपने सेवक को चमत्कार करने के लिए उपयोग करता है
(कर्म) दूसरे सेवक को धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जाने से भिन्न है
उसे असाधारण चीजें (इस्तिदराज) करने में सक्षम बनाना। कर्म एक ऐसा कार्य है
भगवान का। जिनके द्वारा यह किया जाता है वे जानते हैं कि यह भगवान से उत्पन्न होता है
सर्वशक्तिमान ईश्वर उनकी देखरेख करता है, उनकी रक्षा करता है और उनके लिए मंगल कामना करता है। इससे उनके मन में ईश्वर के प्रति निश्चय और भरोसा बढ़ता है।
हालाँकि वे कभी-कभी कर्म के प्रति सचेत होते हैं और यह कैसे होता है
यह उनके लिए और उनके विश्वास के लिए सुरक्षित है कि वे इस बात से अनजान रहें कि ईश्वर
उनके माध्यम से ऐसा करता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर उन्हें अनजाने में ही यह कहने के लिए प्रेरित कर सकता है कि दूसरे व्यक्ति के दिल या दिमाग में क्या चल रहा है, या फिर वह दृश्य प्रकट कर सकता है जो दूसरे व्यक्ति के दिल या दिमाग में चल रहा है।
अदृश्य ताकि दूसरों को सीधे मार्ग पर निर्देशित किया जा सके। ये प्यारे
सेवक इस बात से अनभिज्ञ हैं कि परमेश्वर उनके द्वारा अपने सेवकों के लिए क्या करता है।

उदाहरण के लिए , इस्तिदराज के लिए, अदृश्य से कुछ चीजें प्रतीत हो सकती हैं
असावधान या गुमराह लोग। वे चमत्कार भी कर सकते हैं।
वे अपनी शक्ति या योग्यता के बल पर अहंकार, घमंड और ईश्वर से दूरी में बढ़ते हैं। वे कहते हैं: "मुझे यह केवल ज्ञान के कारण दिया गया है
मेरे पास है (28:78), और यह मेरी पवित्रता और मेरे दिल की पवित्रता के कारण हुआ है।
प्रबोधन।"

जो लोग अपनी आध्यात्मिक यात्रा के आधे रास्ते में हैं वे कर्म और कर्म को भ्रमित करते हैं।
इस्तिद्रज। जो लोग सर्वोच्च पद प्राप्त कर चुके हैं और आत्म-विनाश का एहसास कर चुके हैं, वे अपने बाह्य ज्ञान से अदृश्य की चीजों को जानते हैं।

92 यूसुफ किशरी सईद नर्सी के शिष्य थे। (ट्र.)

क्योंकि उनका आंतरिक जगत पूर्ण रूप से प्रकाशित है और उनके बाह्य जगत को भी प्रकाशित करता है, इसलिए वे कर्म और इस्तिद्रज में स्पष्ट अंतर कर लेते हैं ।

* * *

हर चीज़ उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा करती है। (17:44)

हे मित्र, जान लो कि प्रत्येक प्राणी की महिमा और पूजा के असंख्य पहलू हैं। प्राणी को उन सभी के बारे में सचेत रहने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, जहाज पर काम करने वाले लोगों को उसके कुछ खूंटे और कीलें छूनी पड़ती हैं। उन्हें नहीं पता कि मालिक उनसे ऐसा क्यों करवा रहा है, केवल इतना पता है कि ऐसा करने से उन्हें पैसे मिलेंगे और उन्हें कमाई का आनंद मिलेगा। वे यह भी सोचते हैं कि यह काम केवल उनके आनंद के लिए ही किया गया है। एक जानवर को इस बात का पता नहीं होता कि वह संभोग क्यों करता है, और वह ऐसा केवल अपनी यौन इच्छा को संतुष्ट करने के लिए करता है। लेकिन यह अज्ञानता उसकी संतान और प्रजाति के प्रजनन और रखरखाव को नहीं रोकती है।

उदाहरण के लिए, अपने लालच को संतुष्ट करते हुए, चींटियाँ अनजाने में सूक्ष्म जीवों की लाशों से ज़मीन साफ कर देती हैं। एक घड़ी आपको बताती है कि आपका जीवन कितना बीत चुका है, लेकिन वह सिर्फ़ अपने ही समय के दर्द को “जानती” है। एक मधुमक्खी जो कुछ भी करती है, वह ईश्वरीय प्रेरणा की मिठास से करती है, जिसमें वह विशेष आनंद भी शामिल होता है। पौधे, जानवर और यहाँ तक कि मानव माताएँ भी स्नेह के आनंद के कारण काम करती हैं, उनके द्वारा साकार किए गए उच्च उद्देश्यों से अनजान जो ब्रह्मांड के घर को सुशोभित करते हैं। ऐसा लगता है जैसे उनका स्नेह उन उद्देश्यों के लिए बीज या माप के रूप में कार्य करता है।

जो लोग अल्लाह की स्तुति और उपासना करते हैं, उनके लिए यह जानना ही काफी है कि उन्हें अपना काम कैसे करना है। सर्वशक्तिमान घोषणा करता है: क्या तुम नहीं देखते कि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह अल्लाह की स्तुति करता है, और पक्षी भी अपने पंख फैलाते हैं। प्रत्येक अपनी प्रार्थना और स्तुति करना जानता है; और अल्लाह जानता है कि वे क्या करते हैं (24:41)।
उन्हें यह जानने की ज़रूरत नहीं है कि उनके कार्य ईश्वर की महिमा करते हैं, या उन्हें अपनी विशिष्ट प्रार्थना की प्रकृति के बारे में सचेत होने की ज़रूरत नहीं है। यह पर्याप्त है कि हम, सचेत प्राणी, जानते हैं कि सभी प्राणी ईश्वर की पूजा करते हैं और उनकी महिमा करते हैं। वास्तव में, यह पर्याप्त है कि परम पूज्य ईश्वर यह जानते हैं। चूँकि गैर-मानव प्राणियों को सचेत रूप से ईश्वर की पूजा करने की ज़रूरत नहीं है, इसलिए उन्हें ईश्वर की पूजा करने का इरादा नहीं रखना पड़ता है।

---

[93] जैसा कि सहिह अल-बुखारी में दर्ज एक हदीस कुदसी में घोषित किया गया है: "जब मैं अपने किसी सेवक से प्रेम करती हूँ, तो मैं उसके कान बन जाती हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी आँखें बन जाती हूँ जिससे वह देखता है, उसके हाथ बन जाती हूँ जिससे वह पकड़ता है, और उसके पैर बन जाती हूँ जिस पर वह चलता है।

प्रार्थना करने या महिमा करने या यहाँ तक कि वे जो करते हैं उसके प्रति सचेत होने का अधिकार नहीं रखते। वास्तव में, वे महिमा के मूर्त शब्द हैं और अपने जीवन से, एक अन्य प्रकार की महिमा करते हैं। वे (अपने निर्माता और पालनहार) की महिमा उतने ही तरीकों से करते हैं, जितनी महिमावान, सर्व-शुद्ध की इच्छा होती है। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

हे मित्र, जान लो कि तुम्हारे लिए भेजी गई विभिन्न प्रकार की नेमतें और आशीर्वाद विभिन्न पर्दों से गुजर कर तथा एक विशिष्ट क्रम में विभिन्न "जालों" से छन कर तुम्हारे पास पहुंचते हैं।

हे मित्र, जान लो कि आत्म-तत्व में एक बहुत ही सूक्ष्म बिंदु है। मुझे लगता है कि यह एक खिड़की की तरह काम करता है जिसके माध्यम से अनंत काल को देखा जा सकता है, क्योंकि यह जो कुछ भी सामना करता है उसे शाश्वत बना देता है। यदि सांसारिक इच्छा इसका उपयोग करती है, तो यह परलोक की निर्माण-अवधारणाओं को दुनिया की ओर आकर्षित करती है, उनसे एक सांसारिक महल बनाने का प्रयास करती है, और इस क्षणभंगुर दुनिया में परलोक के फलों को पकने से पहले ही खा जाती है।

हे मित्र, जान लो कि आत्म-स्वरूप एक बहुत ही विचित्र वस्तु है। यदि इसे शुद्ध और विकसित किया जाए, तो यह दिव्य सर्व-सुंदर नामों के भण्डारों की अभिव्यक्तियों को देखने के लिए असंख्य उपकरणों और छंदों का भण्डार बन जाता है। यदि इसे बहकाया जाए और अवरुद्ध किया जाए, तो यह साँपों, बिच्छुओं और कीड़ों की गुफा बन जाता है। आत्म-स्वरूप को नष्ट करने की अपेक्षा इसे बनाए रखना बेहतर है। इसे शुद्ध रूप में बनाए रखना, जैसा कि पैगंबर के साथियों ने किया था, इसे नष्ट करने या नष्ट करने की अपेक्षा अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है, जैसा कि महान संतों ने किया था।

स्वार्थ में बहुत भूख, बहुत ज़रूरत और अजीबोगरीब स्वाद होते हैं। जब इसे प्रशिक्षित और शुद्ध किया जाता है, तो इसका दोषी लालच एक ऐसे उत्साह में बदल जाता है जिसे संतुष्ट करना मुश्किल होता है, इसका दुष्ट अभिमान किसी को ईश्वर के साथ किसी भी भागीदार को जोड़ने से रोकता है, और इसका तीव्र आत्म प्रेम अपने प्रभु के प्रेम में बदल जाता है, और इसी तरह। इसकी बुराई पुण्य में बदल जाती है।

हे मित्र, जान लो कि विश्वासियों का मूल्य उनके अंदर प्रकट हुए दिव्य नामों की कलात्मकता, विशिष्ट रंग और कढ़ाई से प्राप्त होता है। अविश्वासियों और असावधान लोगों का केवल भौतिक मूल्य होता है। जब संसार को सर्व-महिमावान की ओर से और उस स्थान के रूप में देखा जाता है जहाँ दिव्य नाम प्रकट होते हैं, तो वह असीम रूप से मूल्यवान हो जाता है। यदि इसे स्वयं की ओर से और प्राकृतिक कारणों के दृष्टिकोण से देखा जाए, जैसा कि दर्शनशास्त्र द्वारा सिखाया गया है, तो इसका मूल्य इसके परिवर्तनशील और बेजान भौतिक उप-भाग तक कम हो जाता है।

रुख.

कुरान से प्राप्त ब्रह्मांड का ज्ञान आधुनिक विज्ञान और दर्शन द्वारा सिखाए गए ज्ञान से कहीं बेहतर है। उदाहरण के लिए,

कुरान कहता है: उसने सूर्य को दीपक बनाया (71:16)। यह कितना व्यापक, गहरा अर्थ है।
कुरान आपको ईश्वरीय नामों के मानवीकरण की श्रृंखला को देखने का अवसर देता है। अपने विशाल आकार के बावजूद, सूर्य आपके जीवन को रोशन करने के लिए एक प्रकाश के रूप में कार्य करता है।
घर में आग जलाओ और अपना खाना पकाओ, उस की आज्ञा से जो तुम्हें पालता है। तुम्हारा मालिक इतना शक्तिशाली और दयालु है कि सूरज भी तुम्हारे लिए उतना ही अच्छा है।
और उसके जैसे असंख्य दीपक उसके अतिथिगृह के दीपक हैं।

विज्ञान या दर्शन आपको बताता है कि सूर्य अग्नि का एक विशाल पिंड है जो अपने आप गतिमान है। हमारी पृथ्वी और अन्य ग्रह उससे अलग हो गए और गतिमान हो गए
उनकी कक्षाएँ सूर्य के प्रति उनके आकर्षण और गुरुत्वाकर्षण द्वारा निर्धारित होती हैं।
जानकारी आपको या तो भय या आश्चर्य का एहसास कराती है।

हे मित्र! जान लो कि तुम सत्य से कोई अधिकार नहीं मांग सकते।
बल्कि, तुम्हें निरंतर उसका धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि राज्य और परमेश्वर उसी के हैं।
सृष्टि का निर्माता है, और सारी प्रशंसा उसी के लिए है।

हे ईश्वर, दयालु, दयावान, दयालु, दयालु! इसे ऐसा बनाओ
मेरी मृत्यु के बाद आपके समक्ष गवाही देने के लिए मेरे स्थान पर एक पुस्तक रखिए, जो इस प्रकार है:

हे ईश्वर, चुने हुए मुहम्मद के रब, हे जन्नत और स्वर्ग के रब,
नबियों और नेक लोगों का नरक। हे सच्चे और नेक लोगों के रब!
हे युवा और वृद्धों के स्वामी। हे बीजों और फलों के स्वामी, प्रकाश और फूलों के स्वामी। हे नदियों और वृक्षों के स्वामी, जो प्रकट है और जो गुप्त है।
हे दिन और रात के स्वामी, आप हमारे साक्षी हैं।
इसमें आपके सर्वोच्च सिंहासन को धारण करने वाले, आपके सभी स्वर्गदूत भी शामिल हैं
और प्राणी, तेरे सभी पैगम्बर और संत, तेरी सृष्टि के सभी चिन्ह
और वाणी के छंद, और ब्रह्मांड के सभी कण और यौगिक।

जैसा कि आपके प्रियतम ने प्रमाणित किया है, उस पर उत्तम कृपा हो, उसकी गवाही में अन्य सभी गवाह हैं, और आपका कुरआन भी।
हम सब गवाही देते हैं कि आप ईश्वर हैं, अनिवार्य रूप से विद्यमान हैं, एक हैं
और एकल, सभी का प्रार्थित और प्रकट सत्य, सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर, सर्वज्ञ और सर्व-बुद्धिमान, सर्वशक्तिमान और सर्व-इच्छुक,
सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला और सब कुछ बोलने वाला। आप ही सर्वसुन्दर हैं
नाम। हम गवाही देते हैं कि आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, आप एक हैं, कोई साथी नहीं। हर चीज़ पर आपका ही आधिपत्य और स्वामित्व है, और
सारी प्रशंसा आपकी है।

हम तुझसे क्षमा मांगते हैं और तेरी ही ओर तौबा करते हैं।
हम गवाही देते हैं कि मुहम्मद आपके सेवक और पैगंबर हैं, आपके
हे प्रिय और रसूल, जिसे तूने सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा।
उन पर, उनके परिवार पर, तथा उनके साथियों पर शांति और आशीर्वाद बरसाएँ
अनंत काल तक। आमीन। आमीन। आमीन।

यह ख़ज़ाने के एक रत्न की व्याख्या करता है: मैंने जिन्न और मनुष्य को केवल अपनी उपासना करने के लिए पैदा किया है (51:56)।

हे सैद! तुम अपने आप को और अपने महत्वपूर्ण कर्तव्य को भूल गए हो, और मानवता के निर्माण में बुद्धि से अनजान हो, इस बात से अनभिज्ञ हो कि सर्वज्ञ निर्माता ने उन सुशोभित प्राणियों में क्या रखा है। इस ब्रह्मांड के निर्माण और इसके भीतर मानव दुनिया को शामिल करने को निम्नलिखित दृष्टांत के माध्यम से समझाया जा सकता है: एक राजा के पास विभिन्न रत्नों और गड़े हुए खजानों का खजाना है।

वह कुशलता से नई और शानदार चीजें बनाता है, और लगभग सभी विज्ञानों और शिल्पों में माहिर है। वह अपने राज्य की भव्यता, अपनी संपत्ति की भव्यता, अपनी कलात्मकता के चमत्कार और अपने कौशल के चमत्कारों को भी प्रदर्शित करना चाहता है। संक्षेप में, वह चाहता है कि वह और बाकी सभी लोग उसकी भव्यता, पूर्णता और शालीनता को देखें।

इसलिए वह एक विशाल, बहुमंजिली महल बनाता है, और प्रत्येक मंजिल को अलग-अलग प्रदर्शन कक्षों में विभाजित करता है। वह अपने गहनों और सूक्ष्म कलात्मकता से महल को सजाता है, और अपने चमत्कारी कौशल, ज्ञान और शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए प्रत्येक चीज़ पर एक निशान या मुहर लगाता है। अपनी उदारता को प्रदर्शित करने के लिए वह मेजों पर असंख्य प्रकार के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ रखता है। हालाँकि, कुछ खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ उसके कुछ विषयों के लिए कुछ उद्देश्यों के लिए वर्जित हैं। वह अपनी छिपी हुई पूर्णता को दिखाने के लिए कई अन्य चीजें भी करता है।

फिर वह अपने लोगों को मौज-मस्ती करने के लिए आमंत्रित करता है। उसने जो बेमिसाल दावत तैयार की है, उसका हर निवाला सैकड़ों नाज़ुक कौशल और कलाओं का उत्पाद लगता है। इसके बाद, वह प्रदर्शन और महल की सजावट और अलंकरणों को समझाने के लिए एक शिक्षक नियुक्त करता है। शिक्षक यह भी बताता है कि कैसे फर्नीचर, गहने और अलंकरण मालिक की पूर्णता की ओर इशारा करते हैं, और लोगों को सिखाता है कि महल में कैसे प्रवेश किया जाए और इसके निर्माता के साथ कैसा व्यवहार किया जाए।

वह कहता है: "मेरे स्वामी इस महल में जो कुछ भी है उसके माध्यम से खुद को तुम्हारे सामने प्रकट करना चाहते हैं, इसलिए उन्हें जानो। वह इन अलंकरणों और उपहारों के माध्यम से खुद को तुम्हारे द्वारा प्रिय बनाना चाहते हैं, इसलिए उनसे प्रेम करो और उनकी सराहना करके अपना प्रेम प्रदर्शित करो। वह तुम पर अपनी दया दिखाते हैं, इसलिए उनका धन्यवाद करो। वह खुद को तुम्हारे सामने प्रकट करते हैं, इसलिए उनकी उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए उत्साह दिखाओ।"

शिक्षक ने ऐसी ही कई बातें कहीं। लोग महल में प्रवेश करते हैं और दो समूहों में विभाजित हो जाते हैं। एक समूह हर चीज़ और घटना को देखता है। यह सोचकर कि यह सब कुछ बहुत महत्वपूर्ण संकेत देता होगा, वे शिक्षक से कहते हैं: "आप पर शांति हो। सब कुछ वैसा ही होना चाहिए जैसा आप हमें बताते हैं, इसलिए हमें वही सिखाएँ जो आपके गुरु ने आपको सिखाया है।" वह ऐसा करता है, और वे राजा को खुश करने के लिए एक तरह से कार्य करते हैं।

बदले में राजा उन्हें अपने निजी, अवर्णनीय रूप से सुंदर महल में बुलाता है
और, अपने अनुरूप, सभी प्रकार के भोजन और पेय प्रदान करता है जो दूसरे महल के समान होते हैं, लेकिन जो असीम रूप से अधिक स्वादिष्ट होते हैं।

दूसरे समूह की आँखें केवल भोजन पर ही टिकी हैं, तथा वे सब चीजों के प्रति अंधे और बहरे हैं।
अन्य सुन्दरताएँ और विशिष्टताएँ। वे ऐसे खाते हैं जैसे वे जानवर हों और फिर
वे निषिद्ध पेय पदार्थ पीते हैं और नशे में धुत होकर गाली-गलौज करते हैं और
बहुत नुकसान पहुँचाया। परिणामस्वरूप, राजा के सैनिकों ने उन्हें कालकोठरी में डाल दिया।

आप जानते हैं कि राजा ने उक्त उद्देश्यों के लिए महल का निर्माण कराया था।
उनकी प्राप्ति शिक्षकों के अस्तित्व और लोगों पर निर्भर थी
उसकी आज्ञा का पालन करना। इस प्रकार कोई यह कह सकता है कि यदि कोई शिक्षक न होता तो राजा
महल का निर्माण नहीं होगा, और अगर लोगों ने शिक्षक की बातों को नजरअंदाज कर दिया,
महल को नष्ट कर दिया जाएगा और अन्य प्रयोजनों के लिए एक नया महल बनाया जाएगा।

यदि आप इस दृष्टांत को समझ लें, तो आप सच्चाई को देख सकते हैं।
वह दुनिया है, जिसकी छत जगमगाते दीपों से सजी है और
मुस्कुराते हुए फूलों से सजी फर्श। राजा अनंत काल का सम्राट है। सात
आकाश और पृथ्वी और उनमें जो कुछ है, उसकी स्तुति करो (17:44)। परमेश्वर ने सृष्टि की
6 दिनों में स्वर्ग और पृथ्वी पर विजय प्राप्त की, फिर स्वयं सर्वोच्च सिंहासन पर बैठे, दिन को रात से ढक दिया
जिसका वह तत्काल पीछा करता है, और सूर्य, चंद्रमा और
तारे उसकी आज्ञा के अधीन हैं (7:54)

फर्श दुनिया के भीतर की दुनियाएँ हैं, और रत्न और अलंकरण उनकी शक्ति के चमत्कार हैं। भोजन के प्रकार उनकी दया के अद्भुत फल हैं। रत्नों के खजाने और छिपे हुए खजाने पवित्र हैं

दिव्य नाम और उनकी अभिव्यक्तियाँ। सभी सुन्दरताएँ, डिज़ाइन और सजावट उन नामों की ओर इशारा करती हैं।
गुरु हमारे गुरु मुहम्मद हैं। अन्य
पैगम्बर उसके मित्र हैं, और सभी संत उसके शिष्य हैं। महल में कई आज्ञाकारी सेवक हैं, जो फ़रिश्ते हैं।

महल में मनुष्य और अन्य सजीव प्राणी हैं। दो समूह आस्था रखने वाले लोग और कुरान हैं, जो किताब की सभी आयतों की व्याख्या करता है।
सृष्टि, और अविश्वास और विद्रोही लोग अपनी शारीरिक इच्छाओं का अनुसरण करते हैं
स्वयं और शैतान। दूसरे समूह के लोग बहरे, अंधे और गूंगे हैं, और अधिक
वे तो भटके हुए पशुओं से भी अधिक भटके हुए हैं (25:44) और वे तो बस इतना ही जानते हैं कि
सांसारिक जीवन का.

समृद्ध, धर्मपरायण लोगों ने उस शिक्षक की बात सुनी जिसने अपने भगवान को
अल-जौशन अल-कबीर जैसे लोगों को उनकी प्रार्थनाओं के लिए जाना जाता था, और उन्होंने कुरान का संचार किया।
उन्होंने कुरान को सुना और ईश्वर की सुंदरता को देखा
प्रभुता की संप्रभुता। उन्होंने परमेश्वर का महिमामंडन और महिमा की, और घोषणा की

पवित्र नामों के प्रकटीकरण के चमत्कार। उन्होंने ईश्वर की महिमा की और उनकी स्तुति की, उनकी दया के खजाने की सामग्री को अपनी इंद्रियों से पहचाना और उनका धन्यवाद किया। वे नामों के खजाने में मौजूद रत्नों को जानते थे, जो उन्हें ग्रहण करने की उनकी क्षमता के अनुसार निश्चित मात्रा में मानव द्वारा प्रकट किए गए थे, और ईश्वर को सर्व-पवित्र घोषित किया और उनकी प्रशंसा की। उन्होंने शक्ति की कलम के संदेशों का अध्ययन किया, उनकी सराहना की और उन पर चिंतन किया। उन्होंने सृष्टि की सुंदरता को देखने में बहुत आध्यात्मिक आनंद लिया और, निर्माता के प्रति प्रेम से भरकर, उनकी उपस्थिति में प्रवेश करने की प्रतीक्षा की।

उन्होंने निर्माता की इच्छा का जवाब दिया कि वह अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से खुद को ज्ञात करे, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करके, और विस्मय में कहा: "आपकी महिमा हो। हम आपको उस तरह से नहीं जान सकते हैं जैसा कि आपको, हे ज्ञात, आपके सभी चमत्कारी प्राणियों के माध्यम से जानने की आवश्यकता है।" उन्होंने दया के फलों के श्रृंगार के माध्यम से उसे प्यार करके उसकी प्रेम करने की इच्छा का जवाब दिया।

उन्होंने उसकी कृपा की खुशी के साथ उनकी ओर मुड़ने का जवाब उसकी प्रशंसा और धन्यवाद करके दिया, और कहा: "आपकी महिमा हो। हम आपको धन्यवाद नहीं दे सकते हैं, हे धन्यवादी, सृष्टि पर आपके उपकारों की प्रशंसा के माध्यम से, ब्रह्मांड के बाजार में आपके वरदानों और उनके स्वादों के प्रदर्शनों और आपकी दया और अनुग्रह के फलों की धुनों की गवाही के माध्यम से।"

उन्होंने पूरे ब्रह्मांड में अपनी भव्यता और पूर्णता, सौंदर्य और अनुग्रह, और महिमा के उनके प्रदर्शन के प्रति प्रेम, विस्मय और विनम्रता से साष्टांग प्रणाम करके जवाब दिया, दुनिया में आने और जाने वाले प्राणियों के दर्पणों में। उनकी सर्वव्यापी दया और अनंत धन के उनके प्रदर्शन ने उन्हें अपनी विपन्नता को स्वीकार करने और उनसे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उनकी कलाओं की सूक्ष्मताओं को प्रशंसा और अवलोकन के साथ और उनके लिए गवाही देकर प्रदर्शित किया। पूरे ब्रह्मांड में उनके प्रभुत्व की संप्रभुता की घोषणा के लिए, उन्होंने उनकी एकता, आज्ञाकारिता और उनकी असहायता, कमजोरी और गरीबी की स्वीकृति में पूजा में विश्वास के साथ जवाब दिया।

संक्षेप में, उन्होंने यहाँ अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों को पूरा किया और सभी प्राणियों की तुलना में अधिक परिपूर्ण हो गए, उन्होंने उस सर्वोच्च विश्वास को निभाया जो उन्होंने भरोसेमंद प्रतिनिधि के रूप में किया था। फिर उनके भगवान ने उन्हें शाश्वत सुख के लिए शांति के घर में आमंत्रित किया और उन्हें वर्णन से परे उपहार और आशीर्वाद प्रदान किए।

दूसरा समूह, जो सृष्टिकर्ता पर विश्वास नहीं करता था, अपने अविश्वास के कारण प्राणियों के मूल्य को उनके भौतिक पदार्थ तक सीमित कर देता था, सभी चीजों को नकार देता था

नामों की अभिव्यक्तियाँ, और एक असीम रूप से महान अपराध किया। इस प्रकार,
इसके सदस्य अनंत दण्ड के पात्र हैं।

हे अभागे ने कहा, क्या तुम सोचते हो कि यहाँ तुम्हारा कर्तव्य बनाए रखना है
क्या आप अपनी शारीरिक इच्छाओं, अपने पेट और इच्छाओं को संतुष्ट करके अपना जीवन जीते हैं?
मान लीजिए कि आपकी सभी इंद्रियां और भावनाएं, प्रणालियां और संकाय, अंग और
क्या इस क्षणभंगुर जीवन में आपके अंगों का उपयोग आपके शारीरिक स्व द्वारा किया जाना चाहिए? ऐसा नहीं है, क्योंकि
वे तुम्हें इसलिए दिए गए थे ताकि तुम सर्वशक्तिमान की सभी कृपाओं और उसके नामों की अभिव्यक्तियों को समझ सको। अपनी इंद्रियों और क्षमताओं का उपयोग उसकी दया के खजाने की सामग्री की सराहना करने, खोजने और खोलने के लिए करें
उनके नाम की अभिव्यक्तियों के छिपे हुए खजाने।

आपका महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि आप उनके नाम के अद्भुत प्रकटीकरण को प्रदर्शित करें, उनके द्वार पर अपनी दासता का दावा करें (मौखिक और सक्रिय रूप से), और
फिर उसके नामों के प्रकटीकरण के रत्नों से अपने आप को सजाओ और दिखाओ
अपने आप को शाश्वत साक्षी के पास ले जाओ। आपको जीवनदाता के लिए जीवित प्राणियों की श्रद्धापूर्ण महिमा को समझना चाहिए, उनकी गवाही देनी चाहिए, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए कहना चाहिए। तुलना करने और दूसरों के साथ तुलना करने के लिए अपने गुणों, गुणों और कार्यों का उपयोग करें।
अपने निर्माता के गुणों और पवित्र आवश्यक गुणों को समझें।
अपनी गरीबी और नपुंसकता से, आपको उसकी शक्ति की सीमा को समझना चाहिए
और धन की अभिव्यक्तियाँ।

जीवन इंद्रियों और क्षमताओं के खजाने, एक मानचित्र और एक नमूने के रूप में कार्य करता है,
नामों की अद्भुत अभिव्यक्तियों को जानने के लिए सूचकांक और एक उपाय
मृत्यु और जीवन के रचयिता का। आपका जीवन एक अंकित, श्रव्य और अनुभव किया जाने वाला जीवन है
दिव्य सुंदर नामों से बना शब्द। यह प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण है
दिव्य एकता। इसकी पूर्णता और खुशी इस बात में निहित है कि हम इस बात के प्रति सचेत हैं कि हम क्या हैं।
यह जिसकी सेवा करता है उसके प्रति प्रेम और लालसा का प्रतीक है।
इनमें से कुछ उद्देश्यों में अन्य जीवित प्राणियों की भी हिस्सेदारी होती है, लेकिन उतनी नहीं
जैसा आप करते हैं, क्योंकि आप एक व्यापक दर्पण हैं। कहा जाता है कि सृष्टिकर्ता स्वयं
घोषणा करना: "न तो आकाश और न ही पृथ्वी मुझे समाहित कर सकती है, परन्तु परमेश्वर मुझे समाहित कर सकता है।"
मेरे विश्वासी सेवक का हृदय ऐसा कर सकता है।"94

* * *

94 अल-फतवा अल-हदीथिया में , इब्न हजर हयातमी टिप्पणी करते हैं: "यह सूफियों द्वारा वर्णित है।
हालाँकि, इसे एकता (ईश्वर के साथ) और अवतार-राष्ट्र को जोड़ने के तरीके से शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए" (जैसा कि ईसाई धर्म और अन्य धर्मों में कहा जाता है)। इस कथन का अर्थ है कि
विश्वासी का हृदय इतना गुणकारी होता है कि वह परमेश्वर को उसके सभी गुणों, नामों,
और उसके प्रति उमड़ता हुआ प्रेम अनुभव करता है। (ट्र.)

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हे ईश्वर, दयालु और दयावान, अद्वितीय, सर्वजीवित!
और स्वयं-निर्भर, सब कुछ का न्याय करने वाला, सब कुछ का न्याय करने वाला, और सब कुछ का शुद्धि करने वाला।
तेरे महानतम नाम और तेरी बुद्धिमानी भरी कसौटी (कुरान) की खातिर,
हमारे स्वामी मुहम्मद पर अनगिनत आशीर्वाद प्रदान करें, आपके सबसे महान
हे रसूल! हम पर, इस पुस्तक के प्रकाशकों पर, तथा अन्य सभी सच्चे ईमान वालों पर, निश्चिंतता, शांति तथा दृढ़ विश्वास की शांति उतार, जैसा तूने अपने चुने हुए नबी के साथियों तथा परिवार पर उतारा था।
उस पर शांति और आशीर्वाद हो। हम पर और दूसरों पर भी कृपा बरसाओ
आपके धर्म के विश्वासी सेवकों को निश्चिंतता की शांति और निष्कपट विश्वास, पूर्ण निश्चय और शुद्ध इरादा, और पूर्ण दृढ़ता
कुरान और ईमान की सेवा में।

सभी धर्म-विरोधी तत्वों को हटाकर हमें हमारे भय से सुरक्षित करें
इस्लाम के सिद्धांतों और सार्वजनिक प्रतीकों में पाया जाता है, और हमें राहत देता है
इस्लाम के मूल तत्वों को पूरी दुनिया में घोषित करके
संभव है। हमें इस पवित्र सेवा में लगाओ। हमें, हमारे धर्म को सुरक्षित करो और
अपने ईमानदार सेवकों और सभी सच्चे विश्वासियों को विधर्मियों के हमलों के खिलाफ़ लड़ने के लिए प्रेरित किया।
हमें और अपने धर्म के सभी सच्चे सेवकों को सुरक्षा और सुरक्षा प्रदान करें
धर्म में सुरक्षा और इस और दूसरी दुनिया में सुरक्षा। हमारी बीमारियों का इलाज करो और कुरान को हमारी और उनकी सभी बीमारियों का इलाज बनाओ।
अच्छा। हमें और उन्हें उन लोगों में शामिल करें जो हमेशा प्रशंसा करते हैं और धन्यवाद देते हैं
आप।

आमीन। ईश्वर की स्तुति हो। ईश्वर हम सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें।
हजरत मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर। आमीन।

समाप्त करने के लिए:

• किसी को भी निर्माता के बारे में शिकायत करने और आपत्ति करने का अधिकार नहीं है
ब्रह्मांड।

• जो शरीर की कोशिका में काम करता है, वह पूरे शरीर में काम करता है। • वह आपके कर्मों को रिकॉर्ड करता है और उन्हें सुरक्षित रखता है। ये उन पेड़ों के बीज हैं जो
वे अपना फल आख़िरत में देंगे, क्योंकि तुम उनके भरोसे पर खड़े थे और
पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधि.

• किसी चीज़ का भौतिक अर्थ बदल सकता है और मिट सकता है, लेकिन उसका अर्थ वही रहता है।
इस प्रकार आपकी आत्मा नहीं मरेगी और अपने हुक से मुक्त हो जाएगी और नंगी हो जाएगी
अपने शरीर की अनंत यात्रा जारी रखेगा।
भौतिक वस्तुओं (क्षय के अधीन) का बने रहना और जीवित रहना दर्शाता है कि
अर्थ, प्रकाश और आत्मा (स्थायित्व की ओर प्रवृत्त) जैसी सरल चीजें
अनंत काल तक बना
रहेगा। • ईश्वर की दिव्यता की भव्यता के लिए यह आवश्यक है कि सब कुछ उसकी अधीनता में रहे।
ट्रोल.

• जैसे-जैसे भौतिक, ठोस चीजें बड़ी होती जाती हैं, वे नाजुक, सतही सतहों के प्रति अपनी संवेदनशीलता खो देती हैं।

सूक्ष्म चीजें। हालाँकि, जब प्रकाश फैलता है और फैलता है, तो यह अधिक सूक्ष्म हो जाता है।

व्यापक है और छिपी हुई और सूक्ष्म चीजों में गहराई तक प्रवेश करती है। • कुरान, आम लोगों को संबोधित करते हुए, देश में अवतरित हुआ था-

उनकी समझ के स्तर के लिए सबसे उपयुक्त गेज का चयन करें।

• गुमराही का एक मुख्य कारण यह है कि हम सोचते हैं कि हम परिचित और सामान्य चीजों को "जानते" हैं, और

इसलिए भूल जाते हैं कि वे वास्तव में ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार हैं। • जो आपके खाने के लिए भोजन तैयार करता है, वह आपकी ज़रूरत के बारे में अधिक जानता है

जो आपके विवेक को अच्छा लगे, उसे खाएँ और जो आपके विवेक को अच्छा लगे, उसे खाएँ। • मानव अहंकार ही सृष्टि की कुंजी है। जब आप इसकी प्रकृति को पूरी तरह समझ जाते हैं,

सृष्टि आपके लिए खुली है।

• अच्छे कर्म सच्चे इरादे से जीवन शक्ति प्राप्त करते हैं, और भ्रष्ट हो जाते हैं

दिखावा, आडंबर और पाखंड के माध्यम से। अच्छाई के प्रति भावनाएँ और (स्वाभाविक) प्रवृत्तियाँ मानव विवेक में समाहित हैं, लेकिन वे अपना अस्तित्व खो देती हैं

सचेत या उद्देश्यपूर्ण इरादे के माध्यम से पवित्रता।

• ब्रह्मांड एक वृक्ष है: पृथ्वी और जल, वायु और अग्नि जैसे मूल तत्व

इसकी शाखाएँ हैं; पौधे इसके पत्ते हैं; पशु इसके फूल हैं; और मानवता इसके फल हैं।

• इसका अर्थ है: हमने उन्हें शैतानों के लिए मिसाइल बनाया है। • चीज़ें उनके भौतिक अस्तित्व से पहले और उसके दौरान दर्ज की जाती हैं। • ईश्वर नियति बनाता है और आदेश देता है, अपने आदेशों को लागू करता है, क्षमा करता है और अपने आदेशों के निष्पादन को वापस ले लेता है।

• कुरान की कई आयतें ईश्वरीय नामों से क्यों समाप्त होती हैं? • ईश्वर के समक्ष अपनी जन्मजात असहायता को स्वीकार करना,

चार चरणों का मार्ग, प्रेम की तुलना में अधिक सीधे और सुरक्षित रूप से ईश्वर की ओर ले जाता है। • उपासना मानवता को पहले से जो कुछ दिया गया है उसका परिणाम और मूल्य है,

भविष्य में अपेक्षित पुरस्कार का कारण नहीं।

• पूर्णतः निर्मित और व्यवस्थित जीवों की अनंत संख्या, विशेष रूप से छोटे जीव

यह दर्शाता है कि निर्माता की अभिव्यक्तियों की कोई सीमा नहीं है, कि वह

बिल्कुल अलग है, और उसके संबंध में सभी चीजें एक जैसी हैं

शक्ति और आवश्यक अस्तित्व। • सर्वसुंदर नामों वाला स्वयं को विभागों में प्रकट करता है

उसकी प्रभुता का उसके नामों से वर्णन किया गया है। केवल एक नाम या कुछ नाम ही ऐसे हैं जो प्रभुता के प्रतीक हैं।

एक विभाग में प्रभुत्वशाली, जबकि अन्य अधीनस्थ हैं। • सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने हमारी आदिम प्रकृति में असंख्य मीटरों को शामिल किया है

उसकी दया में क्या संग्रहित है, यह मापने की क्षमता, तथा उसके सुन्दर नामों के भण्डार में क्या समाहित है, यह समझने की असंख्य क्षमताएँ।

• प्राणियों के बीच अंतर उद्देश्य को दर्शाता है और संयोग को अस्वीकार करता है।

• ईश्वर अविश्वासियों को राहत देता है ताकि वे अनजाने में ही प्रकट हो सकें
उनके कुछ आशीर्वाद और अनजाने में दिव्य कला की सुंदरता प्रदर्शित करते हैं और
मानवता के लिए उत्कृष्टता.

• कुरान और पैगंबर आधुनिक विज्ञान और दर्शन की तरह ब्रह्मांड को नहीं देखते हैं। • दुर्भाग्य से पीड़ित लोगों को मुसीबतों का सामना करके अपना धैर्य
कमजोर नहीं करना चाहिए ।
अतीत और वर्तमान की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं तथा भविष्य में आने वाली दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं।

• जिन परम्पराओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है, उनमें भी मूल्यवान सत्य छिपा होता है। • जो लोग अपने आप में
आसक्त रहते हैं और अपने भौतिक अस्तित्व पर भरोसा करते हैं, वे भी अपने आप में आसक्त रहते हैं।
वास्तविकता की कमजोर छाया से संतुष्ट।

• हर सचेत प्राणी को कुछ भयानक मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए। • एक "अक्षर" और एक "नाम" का अर्थ, और
एक ब्रह्मांड जिसमें विशेष या व्यक्ति होते हैं और भागों से बने एक पूरे के बीच का अंतर। • जब आप निर्मित से डरते हैं या
प्यार करते हैं, तो डर एक दर्द बन जाता है और प्यार एक पीड़ा बन जाता है।

tion.

• यद्यपि मानवता, जो सृष्टि के वृक्ष का फल या बीज है, शारीरिक रूप से कमजोर, नपुंसक और छोटी है, फिर भी सर्वज्ञ
निर्माता ने इसे अनुग्रह प्रदान किया है।
सार्वभौमिक स्वभाव.

• ईश्वर से प्रेम और उसके अलावा बाकी सभी से प्रेम।

• मनुष्य, जो चंद्रमा के बारे में जानने के लिए कुछ भी देने को तैयार हैं
और अन्य ग्रहों को भी इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि पैगंबर उनके भविष्य के बारे में क्या कहते हैं। • सर्वज्ञ निर्माता
के कार्यों में कोई बर्बादी या निरर्थकता नहीं है। जो कुछ भी मौजूद है वह सब कुछ है
इसका एक कार्य और एक उद्देश्य है.

• सर्वज्ञ निर्माता एक ही पशु प्रजाति के सदस्यों को अलग-अलग क्यों बनाता है
आकार में बहुत बड़ा.

• अधिकांश पौधे और पशु प्रजातियाँ जितना संभव हो उतना अधिक भूमि को कवर करने का प्रयास करती हैं
अपने निर्माता के नामों का उच्चारण करके इसे पूजा स्थल के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। • कुरान में कभी-कभी
उल्लेख किया गया है कि किसी चीज़ का अस्तित्व क्यों है
मानवता। हालाँकि, इसे सिर्फ़ इन उद्देश्यों के अलावा और भी कई उद्देश्यों के लिए बनाया गया था
उल्लिखित।

• उसकी महिमा हो जिसके पास एक चीज़ से सभी चीज़ें बनाने की पूर्ण शक्ति है
और सभी चीजों से एक चीज।

• संक्षेप में व्याख्या: क्या हम ही बीज बोने वाले हैं? (56:64) • हमारा एक कार्य यह है कि
हम अपनी विशेषताओं और आवश्यक गुणों का उपयोग करके ज्ञान प्राप्त करें।
सृष्टिकर्ता के आवश्यक गुण और विशेषताएँ।

• यह उन लोगों के लिए संबोधन है जो मुसलमानों को सांसारिक जीवन में आने तथा इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों और
अपनी परंपराओं को त्यागने का निमंत्रण देते हैं।

• चूँकि मनुष्य को सभी चीज़ों की ज़रूरत होती है, इसलिए उन्हें केवल ईश्वर की ही पूजा करनी चाहिए, क्योंकि वह सब कुछ का स्वामी है और उसे नियंत्रित करता है।

• जीवन के दो रास्ते.

• लोग अपना जीवन कैसे बिताते हैं, इस पर एक दृष्टांत। • दुनिया और धार्मिक जीवन से संबंधित सत्यों पर एक दृष्टांत। • अहंकार और गर्व के परिणाम। • जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह केवल इसलिए है क्योंकि उसके सभी भाग और आवश्यक परिस्थितियाँ भी मौजूद हैं। यदि कोई भाग या परिस्थिति अब मौजूद नहीं है, तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

• स्वर्ग पूरी तरह से उसकी कृपा से है, और नरक पूरी तरह से उसके न्याय से है। • उन लोगों के लिए एक उत्तर जो दावा करते हैं कि उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं की गईं, और जो लोग दावा करते हैं कि उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं की गईं, उनके लिए एक उत्तर है।

उत्तर देने का अर्थ। • ऐसी आयतें जैसे: उसी की ओर घर वापसी है (5:18) और उसी की ओर लौटना है (13.36) वे अवज्ञाकारियों को धमकाते हैं और ईमान वालों को शुभ समाचार तथा बड़ी सांत्वना प्रदान करते हैं।

• ईश्वरीय नियति और मानव की स्वतंत्र इच्छा। • विनम्रता कभी-कभी लोगों द्वारा ईश्वर के आशीर्वाद की घोषणा के विपरीत होती है ।

खुद को। ऐसा करने का सही तरीका क्या है? • धार्मिक सेवा में प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या निष्ठाहीनता, अशुद्ध इरादे को दर्शाती है-सांसारिक पुरस्कारों की इच्छा।

• चमत्कार (कर्म) और असाधारण चीजों (इष्टद्रज) के बीच का अंतर । • प्रत्येक प्राणी की महिमा और पूजा, सचेत या अन्यथा, असंख्य पहलू हैं।

दसवां ग्रंथ

दसवाँ ग्रंथ

क़ुरआन के सूर्य की एक चमक

जान लो कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने तुम्हें वे इंद्रियाँ, भावनाएँ और प्रणालियाँ दी हैं, जिनसे तुम उसकी कृपाओं को समझ सको और उसके नामों के प्रकटीकरण का अनुभव कर सको। तुम्हें उसके नामों के प्रकटीकरण और उनके चमत्कारों को प्रदर्शित करने के लिए बनाया गया है। तुम्हारी मानवता इस कर्तव्य के प्रति तुम्हारी चेतना में निहित है, और तुम्हारा मुसलमान होना इस बात पर निर्भर करता है कि तुम्हें जो सम्मान दिया गया है, उसके प्रति तुम्हारा दृढ़ विश्वास क्या है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

स्तुति परमेश्वर की ओर से है और परमेश्वर के लिए है, क्योंकि परमेश्वर इसके योग्य है। परमेश्वर की स्तुति हो क्योंकि "स्तुति परमेश्वर के लिए है।"

हे ईश्वर। सभी नेमतों और दया के कामों, सभी कृपा और ज्ञान, जीवन और मृत्यु; सभी जानवरों और पौधों, फूलों और फलों और (आपकी) कला और फैशन के कामों; सार्वभौमिक व्यवस्था और सामंजस्य; और सभी कणों और यौगिकों में सभी गति और ठहराव की उपस्थिति में, हम गवाही देते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है। वह एक है जिसका कोई साझी नहीं है। सभी अस्तित्व का साम्राज्य उसी का है और सारी प्रशंसा उसी की है। वह जीवन और मृत्यु देता है। सारी भलाई उसके हाथ में है, और वह सभी चीजों पर शक्तिशाली है। हम गवाही देते हैं कि मुहम्मद उसके सेवक और पैगंबर, प्रिय और संदेशवाहक हैं, जिन्हें उसने सभी दुनियाओं के लिए दया के रूप में भेजा।

हे ईश्वर! मुहम्मद पर कृपा करें, जो आपके प्रकाशों का सागर है, आपके रहस्यों की खान है, आपके मार्गदर्शन का सूर्य है, आपकी कृपा का स्रोत है, आपके प्रमाण की जीभ है। वह आपकी शक्ति और प्रेम के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, आपकी दया का अवतार है, और आपकी सबसे प्रिय रचना है। अन्य सभी रसूलों और पैगंबरों पर कृपा करें।

नबियों, उनके परिजनों और साथियों पर और तेरे निकटवर्ती फ़रिश्तों पर। अपने नेक बन्दों को आकाशों और धरती में अपनी दया के कारण आशीर्वाद प्रदान कर, हे अत्यन्त दयावान दयावान।

आपकी जय हो, हे वह जिसे ब्रह्मांड मुहम्मद की जुबान से महिमामंडित और प्रशंसा करता है, उस पर आपकी सबसे अच्छी दुआएं और शांति हो। आपकी जय हो, हे वह जिसे दुनिया मुहम्मद के कार्यों से महिमामंडित करती है, उस पर आपकी सबसे अधिक नेमतें हों। आपकी जय हो, हे वह जिसके सामने धरती आपके वैभव के सिंहासन के नीचे सजदा करती है और अपने मुहम्मद की जुबान से आपकी प्रशंसा करती है, उस पर आपकी सबसे शुद्ध दुआएं हों। आपकी जय हो, हे वह जिसे सभी मोमिन अपने मुहम्मद की जुबान से महिमामंडित करते हैं, उस पर आपकी सदाशयतापूर्ण दुआएं हों।

आपकी महिमा हो। मैं आपके प्रिय मुहम्मद की ज़बान से आपकी महिमा करता हूँ, उन पर आपकी संपूर्ण कृपा और उज्ज्वल शांति हो। अपनी दया के लिए मुझसे इसे स्वीकार करें, जैसा कि आपने उनसे स्वीकार किया था।

K अब हे मित्र! इसका अत्यन्त व्यापक अर्थ है: सातों आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, सब उसकी स्तुति करते हैं।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा न करे (17:44), स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। मैंने इस पर गौर करने की कोशिश की और स्पष्टीकरण के कुछ शब्द मेरे दिल में उतर गए। यदि आप इस श्लोक के सागर से टपकते या इसके बहुत ऊंचे आकाश से उतरते उन शब्दों को आत्मसात करना चाहते हैं, तो आगे जो कहा गया है उसे सुनें:

आपकी जय हो। हम, मानवता के समुदाय, आपको आपके ज्ञान की आवश्यकता के अनुसार नहीं जान सकते, हे आपके कार्यों के चमत्कारों, आपके प्राणियों के वर्णनों और सभी अस्तित्व की परिभाषाओं के माध्यम से जाने जाने वाले। आपका अधिकार कितना विशाल है। आपका प्रमाण कितना स्पष्ट है।

आपकी जय हो। हम आपका उल्लेख उस तरह से नहीं कर सकते जैसा कि आपका उल्लेख करना आवश्यक है, हे आपके सभी प्राणियों और कार्यों की भाषाओं के साथ और आपकी रचना की पुस्तक के सभी शब्दों की सांसों के साथ उल्लेख किया गया।

आपका उल्लेख कितना राजसी है।

आपकी जय हो। हम आपकी प्रशंसा उस तरह से नहीं कर सकते जिस तरह से आपकी प्रशंसा की आवश्यकता है। आपकी दयालुता के सभी उदाहरणों के माध्यम से आपकी प्रशंसा की जाती है जो सभी की आँखों के सामने प्रदर्शित की जाती है, और ब्रह्मांड के बाजार में आपके उपहारों को उन सभी के सामने प्रदर्शित करने के माध्यम से जो उन्हें देखते हैं। आपकी दया के सभी फलों की हर्षित गवाही के माध्यम से आपकी प्रशंसा की जाती है, जो उन्हें सार्वभौमिक व्यवस्था और संतुलन के साँचे में ढालते हैं।

आपकी जय हो। आपकी दया कितनी विशाल है।

आपकी जय हो। हे आपकी, जिसकी पूजा सभी देवदूतों और अन्य प्राणियों द्वारा अनंत प्रकार की पूजा और स्तुति से की जाती है, हम आपकी पूजा उस प्रकार नहीं कर सकते जिस प्रकार आपकी पूजा की आवश्यकता है।

आपकी जय हो। हम आपकी महिमा के अनुसार आपकी महिमा नहीं कर सकते
हे वह जिसे सातों आकाश और पृथ्वी और जो कोई भी इसमें है, मांगता है
उनकी महिमा करो। ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करे।
हे तेरी जय हो, जिसकी महिमा सब प्रकार के स्वर्गदूत भिन्न-भिन्न भाषाओं में, भिन्न-भिन्न तरीकों से करते हैं।

हे आपकी जय हो, हे वह जिसकी महिमा ब्रह्मांड करता है
इसके संसारों के मुख, इसके मुख्य भागों के अंग, इसके अंगों की कोशिकाएँ,
और इसकी कोशिकाओं के कण, इसके उद्देश्यपूर्ण जीभों के माध्यम से
व्यवस्था, शानदार संतुलन, सुव्यवस्थित कार्य और सुसंगठित निर्माण। आपकी जय हो, हे वह जिसकी जन्नत महिमा करती है
उसके बगीचों के मुखों से, उसकी हूरों के गीतों से, उसके महलों की प्रशंसा से, उसके वृक्षों के स्तुति-गीतों से, और उसके फलों के भजनों से एक-दूसरे के सदृश होते हैं, जैसे इस संसार में उनकी समानताएं उसकी महिमा करती हैं।

हे दिन और रात को बदलने वाले और सूर्य और चंद्रमा को वश में रखने वाले, आपकी जय हो। आप ही वह हैं, जिन्हें स्वर्ग ने वश में कर रखा है।
अपनी प्रणालियों और अपने सूर्यों या तारों के मुखों से महिमामंडित करें
उनके आदेश और सद्भाव की जीभ, अच्छी तरह से डिजाइन अलंकरण
और राजसी चमक, उनकी पूर्ण आज्ञाकारिता और शांति, और
उनके उद्देश्यपूर्ण आंदोलनों.

हे आपकी जय हो, हे वह जिसकी महिमा वातावरण से होती है
उसके वज्र और बिजली के मुंह, हवाएं और बादल, शूटिंग
सितारों और बारिश, कई के साथ अपने संतुलित क्रम के शब्दों के माध्यम से
महान उद्देश्य। आपकी महिमा हो, हे वह जिसकी धरती महिमा करती है, उसकी शक्ति की विशालता के समक्ष उसके मुहम्मद और
क़ुरआन, अपने समुद्रों, पहाड़ों, नदियों और वृक्षों के मुखों सहित,
और ध्वनियाँ और कंपन (इसके पौधों की आवाज़ें और हलचलें)
यह अपने प्रकाश फैलाने वाले शब्दों और प्रकाशमान अक्षरों (पैगंबरों और संतों) और अपने आदेश की जीभ के माध्यम से आपकी महिमा करता है
और संतुलन, जीवन और मृत्यु, गरीबी और सूखापन, समृद्ध श्रंगार और
बुद्धिमान कला.

हे आपकी जय हो, समुद्र जिनकी स्तुति अपने शब्दों से करते हैं
अजीब जानवरों की, और उनके गीतों और उनकी जीभ के माध्यम से
व्यवस्था, संतुलन, और उनके द्वारा पूरे किए जाने वाले अनेक उद्देश्य। आपकी जय हो,
हे परमेश्वर, जिसने पृथ्वी को पालना और पर्वतों को खूंटियाँ बनायी हैं।
पहाड़ अपने झरनों, नदियों और वृक्षों के मुखों से तेरी महिमा करते हैं,
और उनके संतुलन, व्यवस्था, उद्देश्यों की भाषा के माध्यम से
सेवा, और उनके खजाने।

तेरी जय हो, हे परमेश्वर, जिसने हर जीवित वस्तु को बनाया है।
“जल,” और जिसकी महिमा सजीव प्राणी अपने मुख से करते हैं
इंद्रियाँ और भावनाएँ, प्रणालियाँ और अंग, कलात्मक संरचनाएँ और बुद्धि, और हृदय। वे अपनी सुविचारित रचना की भाषा के माध्यम से महिमामंडित करते हैं, और वे अपनी क्षमता और भाषा के माध्यम से पूछते हैं

उनकी ज़रूरतों, प्रार्थनाओं, उनकी देखभाल, उनके द्वारा किए गए बदलावों और उनके जीवन और मृत्यु के बारे में।

हे आपकी जय हो, हे वह, जिसकी स्तुति में उड़ने वाले कीड़े-मकोड़े अपने धन्यवाद के गीतों के साथ आपकी स्तुति करते हैं। पक्षी और उनके बच्चे अपने घोंसलों में कृतज्ञता के गीतों के साथ, अपनी रचना और चाल में व्यवस्था और संतुलन की जीभ के माध्यम से, और अपनी डिजाइन और सजावट के माध्यम से महिमा करते हैं। वे उन पर आपकी कृपा की घोषणा करते हैं और इस तरह आपकी दयालुता के फलों को चखने और आपकी दया के कार्यों से तृप्त होने पर अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। कीड़े-मकोड़े और जंगली जानवर भी अपनी संरचनाओं और रूपों में उत्कृष्ट अनुपात और संतुलन की जीभ के माध्यम से और उदारतापूर्वक खिलाए जाने पर आपकी महिमा करते हैं।

आपकी जय हो। आपकी कला कितनी उत्कृष्ट और सूक्ष्म है। आपका शासन और अधिकार कितना भेदक है।

हे आपकी जय हो, हे वह, जिसकी महिमा वृक्ष तब करते हैं जब वे फूलते हैं और पत्ते तथा फल देते हैं। वे अपने सुडौल आकार और डिजाइन, अपने स्वाद और सुंदर फूलों, बढ़िया खुशबू और समृद्ध श्रृंगार की भाषा के माध्यम से आपकी महिमा करते हैं। वे आपकी महिमा करते हैं और आपकी देखभाल की पूर्णता की घोषणा करते हैं, आपके गुणों और नामों की अभिव्यक्तियों का वर्णन करते हैं, और आपके द्वारा अपने प्राणियों को प्रिय बनाए जाने की व्याख्या करते हैं। वे ऐसा अपने फलों की शाखाओं से निकलने वाली चमक के साथ करते हैं जो आपके द्वारा अपने प्राणियों को प्रिय बनाए जाने और उनके प्रावधान करने की चमक से संबंधित है। आपकी जय हो। आपकी दयालुता में आपकी उत्पत्ति का प्रमाण कितना सूक्ष्म है। अपने आप को प्रिय बनाने में आपकी कृपा कितनी समृद्ध है।

हे आपकी जय हो, वह जिसकी महिमा पौधे पूर्ण स्पष्टता के साथ करते हैं जब वे खिलते हैं और अंकुर और दाने उत्पन्न करते हैं, अपने फूलों और अंकुरों के मुखों से तथा अपने बीजों और दानों के शब्दों से, तथा अपने सूक्ष्म अनुपात वाले रूपों और संरचनाओं की जीभ के माध्यम से।

वे आपको बड़ा करके जानते हैं, आपका “चेहरा” दिखाते हैं जो आपको प्यार करता है, आपके गुणों का वर्णन करते हैं और आपके नामों का उल्लेख करते हैं, और आपके द्वारा खुद को प्यार किए जाने और अपने सेवकों को खुद को जानने की व्याख्या करते हैं। आपकी जय हो। आपका प्रमाण कितना सूक्ष्म और विविध है। यह कितना उज्ज्वल और समृद्ध है।

हे आपकी जय हो, हे वह जिसने लोहा उतारा जिसमें मानवता के लिए महान शक्ति और उपयोग है; खनिज अपनी सभी किस्मों और आकारों, गुणों और उपयोगों और अलंकरणों के साथ अपनी सुस्थापित व्यवस्था और विशेष संतुलन की भाषा के माध्यम से महिमामंडित करते हैं। हे आपकी जय हो, हे वह जिसकी महिमामंडित तत्व आपकी आज्ञा और शक्ति द्वारा यौगिक बनाने के लिए एक साथ आकर करते हैं।

हे परमेश्वर, आपकी जय हो, जिनकी महिमा कण-कण अपने कर्तव्यों और उनके द्वारा प्रदर्शित व्यवस्था और संतुलन की भाषा के माध्यम से करते हैं। वे आपकी महिमा इस बात से करते हैं कि अपनी पूर्ण शक्तिहीनता के बावजूद, वे आपकी शक्ति द्वारा महान कर्तव्यों का पालन करते हैं। उनमें से प्रत्येक आपके अस्तित्व की आवश्यकता की गवाही देता है।

सृष्टि के सूक्ष्म क्रम में महान कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अपनी आवश्यक नपुंसकता की भाषा के माध्यम से। उदाहरण के लिए, एक छोटा सा बीज अपने आप में एक विशाल वृक्ष को जन्म देता है। प्रत्येक कण अपने कर्तव्यों के संबंध में आपकी एकता को इंगित करता है, और इसकी गतिविधियाँ सार्वभौमिक व्यवस्था में योगदान करती हैं। संक्षेप में, एक कण आपके आवश्यक अस्तित्व और एकता दोनों की गवाही देता है, और हर घटना इंगित करती है कि आप एक हैं और सभी के लिए शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले हैं। बल्कि, प्रत्येक चीज़ इंगित करती है और गवाही देती है कि आप अनिवार्य रूप से अस्तित्व में हैं, एक और एकल हैं, और सभी के लिए शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले हैं। आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, एक, जिसका कोई साथी नहीं है।

हे मित्र! जान लो कि तुम्हारे शरीर के अंग, इन्द्रियाँ और इन्द्रियाँ उसके रचयिता के हैं, जो इसका पालन-पोषण और संचालन करता है। इसमें तुम्हारा हिस्सा केवल तुम्हारा कर्तव्य है (उसका पालन-पोषण और उसके आदेशों के अनुसार उसका उपयोग करना)। यदि तुम इसका उचित उपयोग करोगे, तो तुम अपने शरीर की वास्तविक स्थिति के बारे में जागरूकता की एक किरण प्राप्त कर सकते हो, क्योंकि यह दर्शाता है कि इसके रचयिता को इसके बारे में पूर्ण ज्ञान है और उसके नाम और गुण इस पर प्रकट होते हैं।

अगर आपका शरीर सिर्फ़ इस समय किसी तरह से आपकी सेवा करता है, तो ऐसा इसलिए करता है क्योंकि यह हर समय अपने निर्माता की सेवा करता है। यह अपने सर्वज्ञ निर्माता के कई अद्भुत कार्यों को प्रदर्शित करता है और अपने "प्राकृतिक" कार्यों को पूर्ण क्रम और एक अद्भुत पारस्परिक सहायता के साथ पूरा करके, यह सर्वशक्तिमान की दया की सूक्ष्मता और उसकी बुद्धि के "तंतुओं" को प्रदर्शित करता है।

आपके शरीर में आपकी हिस्सेदारी और इसे नियंत्रित करने का अधिकार इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसके बारे में कितना जानते हैं और इसे बनाए रखने में आपकी क्या हिस्सेदारी है। इसके सभी कण, यौगिक, जीवन और गुण यह दर्शाते हैं कि यह अपने निर्माता का है और उसके पूर्ण नियंत्रण में है। इसलिए अपनी सीमाओं का उल्लंघन न करें।

आपके अस्तित्व का सर्वशक्तिमान सत्य और सृष्टि से संबंध है। सत्य के संबंध में, आप कला का एक सूक्ष्म कार्य हैं, आकाश और पृथ्वी के निर्माता का एक शुद्ध, स्वच्छ कार्य। आपके अस्तित्व और उसके मूल्य और पूर्णता में आपके हिस्से के आधार पर, आपके लिए यह जानना पर्याप्त है कि आप निर्माता की कला का एक कार्य हैं जिसने आकाश को सितारों से सजाया है, और आप ब्रह्मांड के एक प्यारे, सम्माननीय भाई (या बहन) बन गए हैं जो आपकी सेवा करता है। जहाँ तक सृष्टि के साथ आपके संबंध की बात है, आप उन तत्वों से बने हैं जो एक साथ आए हैं और जल्द ही अलग हो जाएंगे।

अपने शरीर का अन्यायपूर्वक उपयोग करके तथा सत्य से उसका संबंध तोड़कर उसके साथ अन्याय मत करो, क्योंकि ऐसा करने से वह बेकार हो जाएगा। चाहे वह लाखों वर्ष तक क्यों न रहे, एक निष्फल अस्तित्व एक फलदायी अस्तित्व के एक क्षण के बराबर भी नहीं हो सकता [जो एक निरपेक्ष, शाश्वत अस्तित्व की अभिव्यक्ति प्राप्त करता है]। आपके रचयिता ने भौतिक तत्वों को लिया और उन्हें एक परिपूर्ण, सबसे उत्तम तत्त्व से गूंथा।

सृष्टि का मूल्यवान हिस्सा, आपको एक विशेष, निश्चित अस्तित्व प्रदान करना अस्तित्व के महासागर में। वे कैसे एक साथ आकर आपको बनाते हैं? बनने और विलीन होने के बाजार में, क्या वहां आंखें बेचने वाली कोई दुकान है, दिमाग और जीभ बेचने वाली कोई दुकान है, या दिल बनाने वाली और खालें बुनने वाली कोई मशीन है? नहीं। बल्कि, आपके सृजक ने आपको एक उत्कृष्ट, व्यापक रूप में बनाया है ऐसी चीज़ जो किसी चीज़ से मिलती-जुलती न हो - या हर चीज़ से मिलती-जुलती हो - इसलिए सबसे बड़ी चीज़ भी सबसे छोटी चीज़ नहीं बना सकती। जो स्वर्ग नहीं बना सकता, वह मच्छर बनाने का दावा नहीं कर सकता।

हे मित्र, जान लो कि सर्व-कुशल निर्माता पदार्थ को नियंत्रित करता है और उससे अद्भुत कलाकृतियाँ बनाता है। पदार्थ का मूल्य तो भगवान के बराबर भी नहीं हो सकता। कला का सौवाँ हिस्सा। कला का एक प्राचीन कार्य लाखों डॉलर में बिक सकता है; लेकिन इसकी सामग्री कुछ सेंट के बराबर भी नहीं है। अगर इसे प्राचीन वस्तुओं के संग्रह में ले जाया जाए बाजार में, यह अपनी कला और नाम के कारण अपने वास्तविक मूल्य पर बेचा जा सकता है जिस कलाकार ने इसे बनाया है; लोहारों के बाजार में, इसे केवल के लिए बेचा जा सकता है इसकी सामग्री (लोहा) की कीमत.[95]

सभी प्राणी कला के मूर्त रूप हैं। जीवित प्राणी, खास तौर पर छोटे पदार्थ के घनत्व के बावजूद, वे उत्तम कला प्रदर्शित करते हैं। इसलिए, हर चीज़ के दो पहलू होते हैं इसके भौतिक पहलू और सांसारिक जीवन के संबंध में, इसका प्रावधान बना रहता है यह जीवंत है और एक विशेष, क्षणभंगुर आनंद देता है; इसके पहलू के संबंध में निर्माता की अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करते हुए, यह एक अद्भुत खजाना है, एक शुद्ध और अद्भुत खजाना। यह निर्माता की सभी खूबियों को चखने और जानने की अनुमति देता है, सर्व-उदार प्रदाता के नामों को अनुभव करने योग्य बनाता है, और उन नामों को पहचानकर चेतन प्राणियों को प्रबुद्ध बना देता है।

अपनी जीभ पर विचार करें, जो हजारों उपकरणों में से मात्र एक है जो प्रावधान को मान्यता देना। अपने छोटे आकार के बावजूद, इसमें कई उपकरण शामिल हैं जैसे कि अलग-अलग तरह के खाने-पीने की चीजें। अगर उसके मालिक को पता चल जाए कि वह क्या खा रहा है इसके महत्व को समझते हुए, वह प्रत्येक सूक्ष्म साधन के साथ इसके लिए धन्यवाद देगा सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे अपनी ओर से सभी उपहार प्रदान करता है, दया। उपहारों के लिए आभारी होना, जो वास्तविक उपहारों से कहीं अधिक सुखद है, यह दर्शाता है कि आप प्रदान किए जाने के प्रति सचेत हैं। उन्हें देखो और वरदान देने वाले की कृपा या दयालुता का अनुभव करो।

हे मित्र, जान लो कि सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज़ व्यवस्थित है और संतुलित। ओरिजिनेटर ने इसे सुदृढ़ और सुव्यवस्थित बनाया है।

---

[95] प्राचीन वस्तुओं के बाजार में जहां इसकी कला को पहचान मिलती है, इसे इसकी कला और इसके मूल्य के हिसाब से बेचा जाता है कलाकार का नाम या प्रतिष्ठा। हालाँकि, लोहार के बाज़ार में, इसकी कला का मूल्य पहचाना नहीं जा सकता है और इसलिए वे इसे इसकी सामग्री की कीमत देते हैं।

इस क्षणभंगुर दुनिया में जो कुछ भी देखा जाता है, वह सटीक गणना, नाजुक संतुलन और सावधानीपूर्वक संतुलन के अनुसार व्यवस्थित होता है। यह संतुलन और व्यवस्था पुनरुत्थान और गणना की अद्भुतता और परलोक में सर्वोच्च संतुलन [जिसके द्वारा हमारे कर्मों का वजन किया जाएगा] को इंगित करता है। हम यहाँ जो कुछ भी बीज या नींव के रूप में देखते हैं, वह संकेत, साक्ष्य और संकेत के रूप में कार्य करता है कि परलोक में क्या फलेगा-फूलेगा।

इस दुनिया में हम जो कुछ भी देखते हैं वह सब बनाया या सृजित है। हर चीज़ इतनी कमज़ोर और शक्तिहीन है कि वह किसी भी चीज़ का असली निर्माता नहीं हो सकती, यहाँ तक कि खुद का भी नहीं, क्योंकि किसी भी चीज़ को बनाने के लिए औज़ार, उपकरण और तराजू की ज़रूरत होती है, जैसे कि दवा बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले औज़ार। चूँकि किसी भी आकस्मिक चीज़ में इनमें से कुछ भी नहीं होता, इसलिए वह इनका इस्तेमाल करना नहीं जानती और इसलिए कुछ भी नहीं बना सकती। किसी चीज़ के अस्तित्व और रखरखाव के लिए जो भी नज़दीकी चीज़ ज़रूरी है, वह सिर्फ़ उस शक्ति की चमक या अभिव्यक्ति है जिसके ख़ज़ाने कफ़ और के बीच हैं

96 नन.

कुछ दिव्य नाम, जैसे कि सर्व-भाषण करने वाला, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-अनुदान देने वाला, स्पष्ट साधनों को पर्दे के पीछे से और दीवारों के पीछे से प्रकट होने की अनुमति देता है। अन्य, जैसे कि निर्माता, आविष्कारक, जीवनदाता, ऐसा नहीं करते हैं। जो लोग साधनों को स्वीकार करते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनकी गरिमा और भव्यता के लिए उन्हें पर्दे और साधनों के पीछे प्रकट होना पड़ता है, न कि इसलिए कि उन्हें अक्षमता के कारण साधनों की आवश्यकता है।

हे मित्र, जान लो कि मैंने रेगिस्तान में एक वृक्ष देखा जिस पर दो प्रकार के फल लगे थे।
एक हरे दाने जैसा था, जबकि दूसरा उंगली के आकार का मटर या सेम जैसा था।
वे घुमावदार और खोखले थे, मानो "मेहमानों" का इंतज़ार कर रहे हों। मैंने एक खोला, और बहुत सारे कीड़े कतारों में उड़ गए। सूर्यास्त होने वाला था, और वे सर्वशक्तिमान ईश्वर का उल्लेख करते हुए आनंदित होकर नाचने लगे - वे खेल नहीं रहे थे; बल्कि, वे उस दयालु ईश्वर का उत्साहपूर्वक उल्लेख कर रहे थे जो उन्हें हवा में रखता है। ये फलियाँ उनके घोंसले के रूप में काम करती थीं, जैसे कि एक माँ का गर्म और मज़बूत गर्भ जिसमें उन्हें स्वादिष्ट भोजन मिलता था।

न तो उन अचेतन फलियों ने और न ही कीटों ने इन कीटों को बनाने और विकसित करने के लिए ऐसा घोंसला बनाया था, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से उनकी क्षमता से परे था। इसलिए किसी और ने यह काम किया होगा, किसी ऐसे व्यक्ति ने जिसे सभी फलियों और कीटों के बारे में पूरी जानकारी हो, जो उनकी सभी ज़रूरतों और संबंधों को जानता हो। ऐसे

---

96 कफ और नून मिलकर कुन (होना) बनाते हैं , और ईश्वर द्वारा किसी भी चीज़ को करने या बनाने के आदेश को दर्शाते हैं: जब वह किसी चीज़ को चाहता है, तो उसका आदेश बस इतना है कि उससे कह दे "हो जाओ," और वह हो जाती है" (36:82)।

केवल एक ही हो सकता है जिसके पास सभी चीज़ों का पूर्ण ज्ञान और उन पर शक्ति हो।

मैं आपमें से उन लोगों से पूछता हूँ जो ईश्वर के राज्य में ईश्वर के अलावा दूसरों को नियंत्रण का श्रेय देते हैं, जो ईश्वर के सूक्ष्म कार्यों के अस्तित्व में संयोग की भूमिका को स्वीकार करते हैं: वह वृक्ष उन कीटों की भाषा कैसे सुन सकता है, समझ सकता है या जान सकता है जो अपनी शाखाओं पर अपने अंडे देते हैं, और उन्हें अपने संरक्षण का जिम्मा सौंपते हैं? फिर भी वह वृक्ष उनके लिए एक गर्म घर प्रदान करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ का गर्भ और एक झूलता हुआ पालना। वृक्ष ईश्वरीय दया के खजाने से स्वादिष्ट, पर्याप्त भोजन प्राप्त करता है, उसे अपनी शाखाओं पर घोंसलों में संग्रहीत करता है, और उसे अन्य प्रजातियों को देता है - वे अतिथि जिन्हें ईश्वर अपनी सुरक्षा के लिए सौंपता है। इस तरह की पारस्परिक सहायता एक स्पष्ट संकेत है कि सब कुछ एक ही प्रभु, एक ही प्रशिक्षक, जो सभी का चाहने वाला है, द्वारा सेवा और निर्देशित और निर्देशित किया जाता है।

हे मित्र, उन कीड़ों को ध्यान से देखो , और तुम देखोगे कि वे अपने व्यवहार और स्वभाव, सुव्यवस्थित सजावट और सुसंगठित संरचनाओं के माध्यम से अपने निर्माता का उल्लेख कर रहे हैं - भले ही आप इन विशेष भाषाओं को न समझ पाएँ। ऐसा लगता है मानो प्रत्येक कीट एक स्पष्ट शब्द हो।

उन कीड़ों की तरह, मिट्टी में रहने वाले सभी कीड़े-मकौड़े अपने निर्माता की महिमा शक्ति की कलम द्वारा बनाई गई अपनी डिजाइनों और सजावटों के माध्यम से करते हैं, क्योंकि वे अपनी विशेष भाषाओं में उसकी महिमा करते हैं। यह वास्तविकता आपको चार लाभ प्रदान करेगी: पहला: यह विश्वास कि आप खुद को नए जन्मों

और शिशुओं द्वारा बनाए गए गढ़ में देखते हैं, जो सर्वज्ञ की देखभाल, सर्वज्ञ के निर्देश, सर्व-दयालु की कृपा और सर्व-दयालु की करुणा द्वारा पाले और सजाए गए हैं। आप हमेशा उस सर्वज्ञ और सर्व-बुद्धिमान, सर्व-दयालु और सर्व-दयालु के संरक्षण और ध्यान में रहते हैं।

दूसरा: यह विश्वास कि आपको अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी करने के लिए नहीं छोड़ा गया है या आप अपनी आत्मा की दया पर छोड़ दिए गए हैं, आपकी छोटी सी ज़रूरत को भी पूरा करने में असमर्थ हैं, इसलिए आप अपनी पूर्ण नपुंसकता और असीमित ज़रूरत से भयभीत होकर, धिक्कार और नंगा होकर बैठे हैं। छोटे जीवों के जीवन में आप जो उत्तम व्यवस्था और नाजुक संतुलन देखते हैं, वह पूरी व्यवस्था में व्याप्त है। क्या वे नाजुक "शिलालेख", बड़े "अक्षरों" में डाली गई बढ़िया "पुस्तकें" आपको यह नहीं बताती हैं कि आप उसी व्यवस्था पर निर्भर हैं? जागें और ध्यान से व्यवस्था या संतुलन का निरीक्षण करें। आप क्यों खेलते हैं और खुद को खुश करते हैं जैसे कि संतुलन को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हों?

तीसरा: यह विश्वास कि जिससे आप अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए प्रार्थना करते हैं और जिसके प्रति आप श्रद्धा रखते हैं, वह आपके बहुत निकट है, हालाँकि आप उससे बहुत दूर हैं। वह आपमें और आपके आस-पास की हर चीज़ को नियंत्रित करता है।

वह अपनी शक्ति के माध्यम से सभी चीज़ों को एक समान मानता है। उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है और उसके कार्यों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह अपनी बनाई हुई चीज़ों के सीधे संपर्क में रहे।

क्या इसका मतलब यह है कि आपको भय महसूस नहीं करना चाहिए? आप जहां कहीं भी हों, उसका नियम लागू होता है; आप जहां कहीं भी मुड़ें, वहां उसका "चेहरा" है। आप घर पर हैं, भले ही मिट्टी के अंदर हों। वह आपको "अस्तित्वहीनता" के पेट में भी देखता है। करुणा, उदारता और ज्ञान के हाथ आपको, उसकी आज्ञा से, एक अवस्था और चरण से दूसरे में ले जाते हैं। इससे पहले कि एक हाथ आपको छोड़े, दूसरा आपको व्यवस्थित क्रम में प्राप्त करने के लिए बढ़ा दिया जाता है। आपकी यात्रा के दौरान संयोग हस्तक्षेप नहीं कर सकता। गैर-अस्तित्व से आप पर कोई अन्याय नहीं होता है, और नश्वरता आपको शाश्वत विलुप्ति से अन्याय नहीं करती है। आप अपने जीवन में जहां कहीं भी हों, गैर-अस्तित्व का एक उदाहरण है। लेकिन, इसके पीछे या नीचे या भीतर दया का एक खजाना भी है

चौथा: उन छोटे जीवों द्वारा दिया गया प्रमाण, कि एक निर्माता ही सब कुछ बनाता है। यह प्रमाण उनके छोटेपन के अनुपात में मजबूत होता है, और उनकी अदृश्यता के अनुपात में स्पष्ट होता जाता है, क्योंकि जो कुछ भी शामिल है उसे निर्माता के नियंत्रण से बाहर नहीं रखा जा सकता है। बड़े जीवों की तुलना में छोटे जीवों में बनाए जाने का संकेत अधिक स्पष्ट है।

हे मित्र, जान लो कि सृष्टिकर्ता के प्रति तुम्हारी असावधानी चार बातों से आती है: पहली: तुम अपने बारे में इतने बेखबर हो कि तुम्हारा बाल

जैसा अहंकार एक "मोटी रस्सी" बन जाता है। जब तुम्हारी कल्पनाएँ और इच्छाएँ तुम्हें ईश्वर को भूलने पर मजबूर करती हैं, तो वह तुम्हें तुम्हारा अपना स्वरूप भूलने पर मजबूर कर देता है, और इस तरह तुम्हारा अहंकार और भी मोटा होता जाता है और धीरे-धीरे तुम्हें निगल जाता है।

दूसरा: आप सभी जीवित प्राणियों की तुलना खुद से करते हैं। जब आप किसी जानवर को देखते हैं, चाहे वह मासूम, सुरक्षित और अपने जीवन में खुश क्यों न हो, तो आप उसे एक दुखी व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो विचारों और उलझन भरी यादों में खोया हुआ है। आप मानते हैं कि उसका आनंदमय नृत्य दुख से कराहने से ज़्यादा कुछ नहीं है।

तीसरा: आप स्वयं को दिव्य नाम "बाह्य" की अभिव्यक्तियों तक सीमित रखते हैं, और सोचते हैं कि जो कुछ भी इस नाम के क्षेत्र [प्राधिकार और नियंत्रण] से "बहिष्कृत" है, वह उससे संबंधित नहीं है जिसे इसके द्वारा बुलाया गया है।

यह झूठ है, क्योंकि जिसे इस नाम से पुकारा जाता है, उसके और भी कई सुन्दर नाम हैं।
चूँकि वह सभी ऊपर की वस्तुओं से ऊपर है, इसलिए वह अन्तर्यामी में भी सबसे अन्तर्यामी है।
वह प्रथम और अंतिम है, वह बाह्य और आंतरिक है।

चौथा: एकता की दिव्य अभिव्यक्ति [एकाग्रता]
एक ही वस्तु पर लगभग सभी या अनेक नामों का होना] सर्वोच्च अभिव्यक्ति है,
और सबसे दूर और सबसे छिपा हुआ भी। हालाँकि, आप इसे देखना चाहते हैं
सभी चीज़ों पर स्पष्ट रूप से। जब आप किसी जानवर की तुलना खुद से करते हैं, तो आप सोचते हैं
वह इसलिए पीड़ित है क्योंकि वह अपने प्रियजनों या घर से अलग है, और चिंतित है
इसके भविष्य और प्रावधान के बारे में आप पर इसका असर पड़ता है। हालाँकि, अगर आप इसे यथार्थवादी रूप से देखते हैं, तो आप पाते हैं कि आपकी धारणा गलत है।

तब आप एक बड़ी गलती करते हैं। जब आप एक मधुमक्खी को देखते हैं, तो आप अनजाने में उसके निर्माता, एक, सर्वज्ञ और अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान की तुलना करते हैं।
जिसे अपने प्राणियों से सीधे संपर्क की आवश्यकता नहीं है तथा वह सृष्टि करता है और शासन करता है
भौतिक और प्रतिबंधित आकस्मिक प्राणियों के लिए आसानी से। चूँकि उन्हें करना ही पड़ता है
उनके कार्यों के निकट और संपर्क में रहना, तथा कठिनाई से काम करना, यह मिथ्या है
तुलना आपको इस मधुमक्खी को देखने के लिए प्रेरित करती है, जिस पर निर्माता की कलम है
जैसा कि वह सदैव करता है, सर्व-पवित्र, सर्वोत्कृष्ट निर्माता के निकट कार्य करता है।

वह, उसके आवश्यक गुणों की महिमा हो, निकट है। वह आपके और भी करीब है
और हर दूसरी चीज़ जो तुम्हारे सबसे करीब है, तुम्हारी गर्दन से भी ज्यादा करीब है
शिरा, जबकि आप और वह प्राणी उससे असीम दूरी पर हैं। ग्लास
सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिम्ब से चमकता है, और सुंदर और सुशोभित हो जाता है
सूर्य के प्रकाश के सात अपवर्तक रंगों के साथ। इसकी पारदर्शिता, "इसके हृदय की पवित्रता" के कारण, उस शीशे से सूर्य की ओर एक खिड़की या रास्ता खुल जाता है, और
इसमें सूर्य दिखाई देता है। हालाँकि, यदि आप अपना हाथ बढ़ाते हैं (छूने के लिए)
सूर्य को छू नहीं सकते। जो व्यक्ति अपने हृदय में सूर्य के प्रति प्रेम रखता है, उसे ही सूर्य का स्पर्श मिलता है।
दिल में अच्छी समझ की कमी है और वह सूरज की किरणों के ज़रिए उस तक पहुँचने की इच्छा रखता है।
लोग मूल सूर्य के सभी गुणों और कार्यों को भी देखना चाहते हैं
यदि यह असंभव है, तो वे सूर्य के अस्तित्व को उसके प्रतिबिंब में या यहां तक कि सूर्य के अस्तित्व से भी इनकार करते हैं।

मानव हृदय उस एक का दर्पण है, जो सदा से सभी का मांगा हुआ है।
हालाँकि, जैसा कि इमाम रब्बानी बताते हैं, अन्य दर्पणों के विपरीत यह सचेत है
और जो कुछ उसमें प्रकट होता है उसके साथ गहरा संबंध महसूस करता है। इस प्रकार हृदय
खुशी के अनगिनत उदाहरण महसूस कर सकते हैं।

यदि आप पूछें कि किसी जीवित प्राणी की अद्भुत गतिविधि को उसके चारों ओर की शांति के साथ कैसे सामंजस्य बिठाया जा सकता है, जैसे कि कुछ भी घटित नहीं होता या गतिविधि प्रदर्शित नहीं होती, तो मेरा उत्तर इस प्रकार है:

यदि क्रिया भौतिक या प्राकृतिक कारणों या स्वयं जीवित प्राणी से संबंधित होती, तो प्रत्येक पशु को सर्वव्यापी ज्ञान वाला एक स्वतंत्र एजेंट होना पड़ता, और प्रत्येक फल एक शक्तिशाली निर्माता होता जो सृजन कर सकता था-

पृथ्वी और उसके अंदर की चीज़ों को आसानी से खा लिया। तब कोई भी व्यक्ति बाहर से गतिविधि को सुन और देख सकता था। फिर भी, अंतरिक्ष में देखी जाने वाली सुरक्षा और संरक्षा पर विचार करें; मानवीय क्षेत्र को छोड़कर हर जगह देखी जाने वाली शांति और स्थिरता; और ब्रह्मांड में व्याप्त आज्ञाकारिता, शांति और आराम।

यह सब उसी का काम और कानून है जो जब किसी चीज़ को चाहता है तो उसे बस इतना आदेश देता है कि उससे कहे "हो जा!" और वह हो जाती है (36:21)। वह कहता है: कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा में ही उतारते हैं (15:21)। तुम्हारे हाथ से किए गए कामों और तुम्हारी कल्पना की गति से किए गए कामों के बीच के संबंध की तुलना तुम्हारी कल्पना की गई हरकतों और निर्माता की शक्ति के कामों के बीच के संबंध से की जा सकती है।

हे अभागे, अभिमानी ने कहा! तुम अपनी कुछ ही आवश्यकताएं पूरी कर सकते हो।

बाकी सब तुम्हारे रचयिता की देखभाल में हैं, जिसने तुम्हें पहले आटे के लोंदे के समान बनाया और फिर अपनी चमत्कारी कला से तुम्हें तरल पदार्थ के रूप में आकार दिया, ताकि तुम उसके नामों को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण बन सको। उसने अपनी दया से तुम्हारे कान और आंखें खोल दीं ताकि तुम सत्य सुन सको और निर्मित को देखकर रचयिता को जान सको। उसने अपनी कृपा से तुम्हारे मुंह में एक जीभ दी ताकि तुम उसका उल्लेख कर सको। उसने तुम्हारी बुद्धि को तुम्हारे सिर में रखा ताकि तुम उसे जान सको, और तुम्हारे सीने में उसे प्रेम करने के लिए एक हृदय सौंपा। उसने उजाड़ (गर्भ) के अंधेरे में तुम्हारे साथ दयालुता से व्यवहार किया और अपनी प्रभुता के माध्यम से तुम्हें नियंत्रित किया, जैसा वह चाहता था। उसने अपनी बुद्धि के माध्यम से तुम्हारे शरीर में सभी इंद्रियों और अंगों का निर्माण किया ताकि तुम उसकी नेमतों को महसूस कर सको और उसके नामों की अभिव्यक्तियों को पहचान सको।

जब उसने तुम्हें इतनी नेमतें दी हैं, तो तुम क्यों उसे दोष देते रहते हो और अपनी तुच्छ, आंशिक शक्ति पर भरोसा करते हो? तुम कब तक अपने मामलों को अपने स्वार्थ के हवाले करोगे और खुद को एक ऐसे बोझ से परेशान करोगे जिसे तुम उठा नहीं सकते? तुम उस पर भरोसा करने से क्यों इनकार करते हो जो तुम्हें माथे से थामे हुए है और तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करता है? उस पर भरोसा करो। घटनाओं की बाढ़ में उसके जहाज़ पर चढ़ो और कहो: अल्लाह के नाम पर इसका मार्ग और इसका लंगर है (11:41) ताकि तुम इस्लाम की न्याय और मुक्ति के तट पर आराम कर सको।[97] तुम्हारे जीवन का सूर्य अस्त होने वाला है, तुम्हारे शरीर का चाँद बुढ़ापे की वजह से ढँक गया है और तुम्हारा सिर सफ़ेद बालों से भरा हुआ है। केवल सर्वशक्तिमान ही तुम्हें लाभ पहुँचा सकता है, क्योंकि जो कुछ भी उसकी अनुमति के बाहर है वह तुम्हें नुकसान पहुँचाता है। उसके बिना, सब कुछ हानिकारक और शत्रुतापूर्ण है, जबकि उसके साथ तुम्हें किसी और की ज़रूरत नहीं है। इसलिए, जो कुछ भी या जो कोई भी उसके अलावा है उसे त्याग दो।

97 पैगम्बर नूह की नाव का संदर्भ, जो जल प्रलय के बाद अल-जूदी पर बस गई थी, जो संभवतः माउंट अरारत की एक पहाड़ी है। (ट्र.)

उसके बिना, हर सुख में निहित दर्द, दुख से भी अधिक तीव्र है।
सुख; नहीं, सुख उसके बिना शुद्ध दुःख है। इसलिए, परमेश्वर की ओर भागो
(51:50) निश्चय ही उसके पास हर चीज़ स्थिर है, और जो कुछ नाश होनेवाला है, वह उसी के पास है।
यह यहाँ नष्ट हो जाता है, जबकि यह वहाँ उसके साथ रहता है। इसके अलावा, समय बहुत ही महत्वपूर्ण है
सीमित। तुम मृत्यु के नशे में ग्रस्त होगे,98 क्योंकि तुम्हारा जीवन नशे में बीतता है। अपने आप को दुनिया से मुक्त करने के लिए अपना सिर उठाओ ताकि तुम देख सको
आपके सृजक की अनन्त उदारता, अनन्त दया और अनन्त प्रेम।

हे सत्य की खोज करने वाले भ्रमित विचारक! जब तुम्हारा ज्ञान
जब आप किसी चीज़ में शाश्वतता का संकेत देखते हैं, तो उसकी प्रशंसा के साथ सर्वशक्तिमान की महिमा करें, क्योंकि आप सत्य के करीब पहुँच चुके हैं।
अज्ञेय और शाश्वतता उसके पूर्ण प्रभुत्व के नियंत्रण की उपाधियाँ या संकेत हैं।

हे संदेह में पड़े व्यक्ति! जब संदेह तुम पर आक्रमण करे, तो दाईं ओर देखो और देखो
उनकी रचनात्मकता के नियंत्रण के क्षेत्र, सौर मंडल के क्षेत्र से
और ग्रहों से लेकर परमाणुओं और कणों तक, स्वर्ग के निर्माण से
फलों से लेकर धरती के निर्माण तक, पेड़ों को खाने वाले कीड़ों के आविष्कार तक। यह सब इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि उन्हें "चित्रित" करने वाला पेन एक है,
और उन पर लगी मोहर भी एक है। आप शंक्वाकार ब्रह्मांड के बीच में हैं, सर्वोच्च ट्रस्ट को धारण करते हुए और प्रतिपालन करते हुए - ईश्वर के नियमों के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने और उसे बेहतर बनाने की जिम्मेदारी।
फिर बाईं ओर देखें और देखें कि सार्वभौमिक व्यवस्था न्याय के साथ निर्णय और शासन कर रही है, साथ ही विचलन को रोकने वाला पूर्ण संतुलन भी है। सृजन की वास्तविकता आपके संदेह को दूर कर देगी, और सार्वभौमिक व्यवस्था और संतुलन आपके संदेह को दूर कर देगा।
अपनी उलझन और घबराहट दूर करें।

इसके बाद खुद को देखें। अपने आप को और शरीर को बना हुआ या बनाया हुआ देखें
सिर से लेकर पैर तक, छोटी से छोटी कोशिका से लेकर पूरा शरीर, जो कि
एक विशाल कोशिका। अपने दिल की ओर देखें और फिर ऊपर की ओर। आपको रोशनी दिखाई देगी
ज्योतियों का प्रकाश, जिसने प्रकाश को बनाया, प्रकाशित किया और बनाया है।
उनके प्रकटीकरण का प्रकाश हर चीज़ में व्याप्त है।

हे मित्र, जान लो कि कुछ शब्दों में तुलनात्मक या अतिशयोक्तिपूर्ण रूप का प्रयोग करना
दिव्य नाम (जैसे, दयालुओं में सबसे दयालु, रचनाकारों में सर्वश्रेष्ठ,
ईश्वर महानतम है) ईश्वरीय एकता का खंडन नहीं करता। बल्कि, यह किसी भी अन्य चीज़ पर सर्वशक्तिमान की पूर्ण, अतुलनीय श्रेष्ठता को व्यक्त करता है

98 मृत्यु के दौरान व्यक्ति जो अवस्था महसूस करता है, वह संभवतः इसलिए होती है क्योंकि वह चेतना खो रहा होता है, नशे की ओर ले जाता है और इसे "मृत्यु का नशा" कहा जाता है। (ट्र.)

किसी व्यक्ति या व्यक्ति ने दावा किया है कि उसके पास दैवीय गुण हैं। न ही यह एक, सर्वव्यापी की गरिमा का खंडन करता है, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान की तुलना नहीं करता है
महिमावान के संबंध में, सृजित की विशेषताओं या कृत्यों के साथ
एक व्यक्ति की पूर्णता, बाकी सब केवल एक प्रतिबिंबित छाया है।

सृजित की गई समस्त पूर्णता की तुलना किसी से करने का कोई अधिकार नहीं है।
सर्वशक्तिमान का। यह प्रयोग ईश्वरीय शक्ति के विशेष प्रभाव की तुलना करता है
वस्तुओं पर नामों की अभिव्यक्तियाँ तथा दिव्य नामों से वस्तुओं के प्रभावित होने की सीमा, तथा उन्हीं वस्तुओं पर प्रत्यक्ष साधनों का प्रभाव
और प्रभावित होने वाली चीज़ों की डिग्री। उदाहरण के लिए: एक निजी व्यक्ति अपने
कॉर्पोरल को सबसे महान व्यक्ति मानता है, और उसके प्रति आदर और आभार व्यक्त करता है।
उसे बताया जाता है कि राजा कॉर्पोरल से अधिक महान और दयालु है।
इसका मतलब राजा की तुलना कॉर्पोरल से करना नहीं है। बल्कि, यह बताता है कि
निजी तौर पर यह माना जाता है कि राजा सम्मान और धन्यवाद के अधिक योग्य हैं, और यह केवल
राजा की अनुमति से और कॉर्पोरल की उसके प्रति वफादारी की सीमा तक
कि कॉर्पोरल सम्मान और धन्यवाद का पात्र है।

उदाहरण के लिए, हम सर्वशक्तिमान के बारे में कहते हैं, स्नेहियों में सबसे अधिक स्नेही, दानियों में सबसे अधिक उदार, या सबसे अधिक प्रतिष्ठित।
गरिमापूर्ण। यह इस तथ्य को व्यक्त करता है कि किसी से भी आपको प्राप्त स्नेह ईश्वर के अनंत सागर से प्राप्त देखभाल के बराबर नहीं हो सकता है
दया।

जिसे श्रेष्ठ घोषित किया गया है वह वास्तविक, एक, पूर्णतः और अतुलनीय है
श्रेष्ठ। उसके लिए यह नाम या गुण आवश्यक है।
निम्नतर नाममात्र या कल्पित होते हैं, और जो कुछ बनाया गया है उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पास संयोग से प्रश्नगत विशेषता या नाम होता है, और वे इस प्रकार दिखाई देते हैं
सर्वशक्तिमान के पास मौजूद मूल की धुंधली छाया या अभिव्यक्तियाँ।
सब कुछ मिलाकर, जो कुछ भी निर्मित है वह उसकी वास्तविक चमक नहीं है
अपने आप में मूल, जैसा कि ईश्वर घोषित करता है: जिन्हें वे ईश्वर के अलावा पुकारते हैं,
यदि वे दोनों मिलकर भी इसी उद्देश्य से मिलें तो भी वे कभी एक मक्खी भी उत्पन्न नहीं करेंगे (22:73)।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर नाम में सभी अर्थ समाहित हैं।
दिव्य सुंदर नाम और पूर्णता के सभी गुण, जबकि अन्य सभी प्राणियों के उचित नाम केवल उन प्राणियों के व्यक्तियों की ओर संकेत करते हैं जिन्हें दिव्य कहा जाता है
उनके द्वारा। इसमें उनकी विशेषताएँ शामिल नहीं हैं, क्योंकि ये उनके लिए अपरिहार्य नहीं हैं, और इस प्रकार उनके उचित नाम उनकी विशेषताओं की ओर संकेत नहीं करते हैं
या गुण। हालाँकि, परम पावन के नाम और गुण उनका वर्णन करते समय अपरिहार्य हैं, और दिव्यता को विशेष रूप से उनकी आवश्यकता है। इसलिए

नाम (एक) "ईश्वर", दिव्य सत्ता का "उचित" नाम, आवश्यक रूप से अन्य सभी दिव्य नामों और गुणों का अर्थ समाहित करता है,
उन की ओर संकेत करता है, तथा अन्य सभी को अस्वीकार करता है जिन्हें देवत्व प्रदान किया गया है, जैसे:
कोई भगवान नहीं है भगवान के सिवा।

यदि आप इसे समझ गए, तो आप समझ सकते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।
पूर्ण दिव्य एकता की घोषणा करता है और दिव्य सुंदर नामों की संख्या के लिए एकता की सभी आवश्यकताओं या निष्कर्षों को शामिल करता है। यह वाक्यांश
इसमें हजारों वाक्यांश शामिल हैं, क्योंकि ऐसा वाक्यांश पुष्टि का प्रतीक है और
नकार या अस्वीकृति। चूँकि ईश्वर में अनिवार्य रूप से अन्य सभी दिव्य नाम शामिल हैं,
ईश्वर नहीं है, लेकिन ईश्वर का अर्थ यह भी है कि कोई निर्माता, प्रदाता, आत्मनिर्भर, स्वामी, प्रवर्तक, प्रभुतावान नहीं है...
लेकिन ईश्वर है। इसलिए, एक ईश्वर है।
जिसने आध्यात्मिक रूप से प्रगति की है, उसका यह सब कहने का मतलब है: कोई ईश्वर नहीं है
लेकिन भगवान। यह वाक्यांश ऐसे व्यक्ति की आध्यात्मिक रैंक और अवस्थाओं को दर्शाता है, और
इसके दोहराव से विश्वास बढ़ता है और उसमें सुधार होता है।

हे मित्र, जान लो कि यदि तुम आश्वस्त हो कि सभी चीजें और कार्य सत्य हैं,
ईश्वर की ओर से, तुम्हें इस बात पर सहमत होना चाहिए कि क्या अच्छा है और क्या बुरा।
यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ऐसे स्पष्ट कारणों का आदेश दिया है जो सत्य की ओर से आँखें मूंद लेते हैं। अप्रिय चीजें और घटनाएँ सुखद चीजों और घटनाओं से अधिक हैं, क्योंकि ब्रह्मांड का निर्माण नियमों के अनुसार नहीं किया गया है।
इच्छाधारी की योजनाएँ और इच्छाएँ। यदि लोग कारणों के निर्माता से संबंधित स्पष्ट कारणों की भूमिका के प्रति लापरवाह हैं, तो वे अनुचित और अन्यायपूर्ण आपत्तियाँ और विरोध, घृणा और क्रोध, और दुर्भावनाएँ निर्देशित करेंगे

वह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, सर्व-दयालु स्वामी है। ऐसे लोग या तो लक्ष्य रखते हैं
भाग्य या शैतान पर प्रहार करते हैं, लेकिन आमतौर पर अपने ही सिर या आत्मा पर प्रहार करते हैं।

हे मित्र, जान लो कि जब तुम उचित, सावधानीपूर्वक विचार करते हो (
अस्तित्व), आप समझेंगे कि कोई भी आकस्मिक चीज़ या प्राणी उतना ही दूर है
किसी भी चीज़ के सृजन के लिए आवश्यक शक्ति की अनन्तता के रूप में सृजन से।

हे मित्र, जान लो कि प्रार्थना तीन प्रकार की होती है: पहली: मौखिक रूप से की जाने वाली

प्रार्थना। इसमें जानवरों की चीखें भी शामिल हैं, जो मुंह से बोली जाती हैं ।
वे अपनी भाषा का प्रयोग उन आवश्यकताओं के लिए करते हैं जिनके बारे में वे जानते हैं।

दूसरा: ज़रूरत की भाषा में किया गया काम। इसमें सभी की प्रार्थनाएँ शामिल हैं
पौधे और पेड़, विशेष रूप से वसंत ऋतु में, और जानवरों की प्रार्थनाएँ
उनकी वे ज़रूरतें जिनके प्रति वे सचेत नहीं हैं।

तीसरा: जो क्षमता की भाषा में किया जाता है। इसमें प्रार्थनाएँ शामिल हैं
जिनमें बढ़ने, बदलने और परिपूर्ण होने की क्षमता है।

९९ हे मित्र , जान लो कि एक बीज वृक्ष बनता है, एक शुक्राणु (और अंडा) एक व्यक्ति बनता है, एक अंडा एक पक्षी बनता है, और एक बीज एक पौधे बनता है केवल एक पूर्ण, भेदक ज्ञान के निर्देश,

आदेश और नियंत्रण से। यह ज्ञान केवल अदृश्य के ज्ञाता को है, जो गर्भ में अपनी इच्छानुसार निर्माण करता है और भूत, वर्तमान और भविष्य को जानता है। एक बीज, शुक्राणु या अंडा एक प्रोटोटाइप या मैनिफेस्ट बुक (भाग्य की एक पुस्तक) से कॉपी की गई रूपरेखा की तरह है; मैनिफेस्ट रिकॉर्ड (शाश्वत ज्ञान का एक रिकॉर्ड) से निकाली गई सामग्री की एक तालिका; मदर बुक (शाश्वत भाग्य की एक पुस्तक) से निकाले गए सिद्धांतों का एक सेट या मूर्त रूप, विशेष रूप से उस पुस्तक के संतुलन और व्यवस्था के "अध्यायों" से; सभी चीजों के सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ भगवान द्वारा निर्मित सारांश या सार।

हे मित्र, जान लो कि एक आस्तिक प्राणी को एक अक्षर के रूप में देखता है जिसका अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन वह उस शब्द का पूरक भाग होता है जिससे वह संबंधित है। एक अविश्वासी प्राणी के बारे में अपने दृष्टिकोण को केवल प्राणी तक सीमित करके उसे अपने लिए ही देखता है।

हर प्राणी के दो पहलू होते हैं: एक खुद से और उसके गुणों से संबंधित, और दूसरा उसके रचयिता और उस पर प्रकट उसके नामों की ओर इशारा करता है। दूसरा पहलू ज़्यादा व्यापक है। किताब में हर अक्षर सिर्फ़ एक अक्षर के रूप में खुद की ओर इशारा करता है, जबकि किताब में वह कई तरह से अपने रचयिता की ओर इशारा करता है और उसका वर्णन करता है। इसी तरह, हर प्राणी, जो ईश्वरीय शक्ति की किताब का एक अक्षर है, अपने आकार की सीमा तक खुद और अपने स्पष्ट अस्तित्व की ओर इशारा करता है, जबकि कई मामलों में अपने शाश्वत रचयिता की ओर इशारा करता है, और उस पर प्रकट उसके नामों की स्तुति गाता है।

पत्र के आधार पर कोई निर्णय नहीं दिया जा सकता और पत्र किसी निष्कर्ष की पुष्टि या खंडन नहीं कर सकता। इसी कारण से मन इस बारे में नहीं सोचता। यदि मन किसी पत्र से संबंधित होता तो वह पत्र उस पत्र के बारे में नहीं सोचता।

---

99 सईद नूरसी ने पहली तरह की प्रार्थना को दो श्रेणियों में विभाजित किया है: पहली श्रेणी में निराशा या प्राकृतिक जरूरतों के संबंध में की गई प्रार्थनाएँ शामिल हैं। ऐसी ज़्यादातर प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं। दूसरी श्रेणी में वे प्रार्थनाएँ शामिल हैं जो हम हर दिन करते हैं।

ये भी दो प्रकार के होते हैं: एक सक्रिय और स्वभाव से; दूसरा मौखिक और हृदय से। उदाहरण के लिए, ज़मीन जोतना एक सक्रिय प्रार्थना है और इसका मतलब है ईश्वर की दया और उदारता के खजाने के दरवाज़े पर दस्तक देना, न कि धरती से प्रावधान माँगना।

पूरे ब्रह्मांड से जो ईश्वर के दरबार में पहुंचता है वह एक तरह की प्रार्थना है। कारण ईश्वर से वांछित परिणाम बनाने के लिए की गई प्रार्थनाएँ हैं। देखें सईद नूरसी, द लेटर्स, खंड 2, कायनाक, इज़मिर: 1998. (अनुवाद)

"एक शब्द बन जाना"। यही कारण है कि ब्रह्मांड के बारे में लिखी गई स्पष्ट रूप से ठोस और सार्थक वैज्ञानिक या दार्शनिक पुस्तकें सृष्टिकर्ता के बारे में बहुत कम महत्व रखती हैं। इसके विपरीत, धर्मशास्त्री सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता के लिए तर्क के रूप में दार्शनिक और वैज्ञानिक मामलों का उपयोग करते हैं। उनके लिए यह पर्याप्त है कि, उदाहरण के लिए, सूर्य एक दीपक है, पृथ्वी एक पालना है, रात एक आवरण है, दिन काम करने का समय है, और चंद्रमा एक चमकदार चीज़ है। उनके लिए यह पर्याप्त है कि पहाड़ पृथ्वी की स्थिरता के लिए खूंटे के रूप में हैं और हवा को ताज़ा करते हैं, पानी और खनिजों को संग्रहीत करते हैं, मिट्टी की रक्षा करते हैं, और कांपती हुई पृथ्वी के क्रोध को शांत करके उसे सांस लेने में सक्षम बनाते हैं।

हालाँकि, विज्ञान सूर्य को अपनी प्रणाली के केंद्र के रूप में देखता है, एक विशाल अग्नि जो इतनी तीव्र है कि उसके सभी ग्रह बिखरे हुए पतंगों की तरह उसके चारों ओर उड़ते हैं। ब्रह्मांड के बारे में धर्मशास्त्रियों का दृष्टिकोण कभी-कभी वास्तविकता के विपरीत हो सकता है; हालाँकि, चूँकि वे आमतौर पर जो स्पष्ट है और सामान्य दृष्टिकोण के अनुरूप होते हैं, इसलिए उनका खंडन नहीं किया जाना चाहिए। इस कारण से, भले ही उनके दार्शनिक या वैज्ञानिक विचारों को कमजोर और महत्वहीन माना जा सकता है, धर्मशास्त्र के मूल सिद्धांतों के बारे में उनके विचार लोहे से भी मजबूत हैं।

परिणामस्वरूप, पहले तो ऐसा लग सकता है कि इस दुनिया में असावधान और गुमराह लोगों का दबदबा है, क्योंकि वे अपनी पूरी क्षमता और योग्यता के साथ इस ओर झुकते हैं और कहते हैं: (जीवन) बस हमारी सांसारिक जीवन है (6:29)। हालाँकि, अंत तो नेक और ईश्वर-भक्त लोगों के लिए है, जिनके लिए और जिनके नेता के लिए क़ुरआन घोषणा करता है: जो कुछ तुम्हारे लिए आगे है वह उससे बेहतर है जो पहले है, और जिस तरह आख़िरत दुनिया से बेहतर है (93:4); सांसारिक जीवन कुछ और नहीं बल्कि मनोरंजन और खेल है। लेकिन आख़िरत का घर उन लोगों के लिए सबसे अच्छा है जो ईश्वर से डरते हुए अपना कर्तव्य निभाते हैं। फिर भी, क्या तुम नहीं समझते? (6:32); और आख़िरत का घर, यदि वे जानते तो जीवन ही है (29:64)। ईश्वर हमारे लिए काफ़ी है। वह कितना अच्छा संरक्षक, संरक्षक मित्र और सहायक है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर की क्षमा एक अतिरिक्त कृपा है, जबकि उसकी सज़ा शुद्ध न्याय है। यदि लोग ज़हर निगलते हैं, तो वे ईश्वर के स्थापित नियम के अनुसार बीमार होने के पात्र हैं। यदि वे बीमार नहीं होते हैं, तो यह ईश्वर की अतिरिक्त कृपा और असाधारण कृपा के कारण है।

पाप और पीड़ा के बीच का संबंध इतना मजबूत है कि इसने मुताज़िलियों को गलती से सर्वशक्तिमान के अलावा किसी और चीज़ को बुराई का दोषी ठहराने के लिए प्रेरित किया, और यह निष्कर्ष निकाला कि हर बुरे काम की सज़ा दी जाएगी। लेकिन [भले ही यह नहीं कहा जा सकता है कि सर्वशक्तिमान को हर बुराई या पाप को दंडित करना चाहिए], इसकी सज़ा का हकदार होना ईश्वरीय दया की पूर्णता का खंडन नहीं करता है। बुराई का नुकसान, भले ही आंशिक और छोटा हो, ब्रह्मांड को बनाने वाले सभी धागों को प्रभावित करता है-

साल आदेश, जो सभी के लिए पूर्ण, महान भलाई है। ऐसी भलाई को त्यागना थोड़ी सी बुराई या नुकसान से दूर रहने से बहुत बड़ी बुराई या नुकसान होता है। यह इसके विपरीत है सर्व-न्यायी, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-उदारवादी के न्याय में ज्ञान।

हे पापी और अज्ञानी! जितना हो सके बुराई से दूर रहो, अन्यथा आपको अच्छाई को त्यागने और परिणाम प्राप्त करने के लिए आवश्यक शर्तों को पूरा न करने के लिए दंडित किया जाएगा। बुराई का परिणाम अस्तित्वहीनता है। किसी चीज के आवश्यक हिस्से का अस्तित्व न होने से उसका पूर्ण अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है, जिसका अर्थ है अन्य सभी भागों को शून्य करना, क्योंकि किसी चीज़ का अस्तित्व निर्भर करता है सभी शर्तों पर। इसलिए, परमेश्वर द्वारा किसी बुराई को क्षमा करना विशुद्ध रूप से अनुग्रह का कार्य है और यह उसकी संपूर्ण दयालुता को दर्शाता है। इसके अलावा, वह बुराई को उसके समान दण्ड देता है लेकिन अच्छे कामों का फल दस गुना मिलता है, जबकि उनका असली फल कुछ और ही होता है। इससे पता चलता है हमारे अन्याय की सीमा, क्योंकि हम दूसरे तरीके से निर्णय करते हैं।

हे मित्र, जान लो कि हम भूल जाते हैं, और सबसे बुरी भूल है अपने आप को भूल जाना। सभी मामलों में, ऐसी भूल ही गुमराही है। लेकिन ऐसा करना गलत है। इसलिए जब भुगतान और पुरस्कार मिलना पूर्णता का संकेत है। गुमराह और निर्देशित लोग भूलने और याद रखने में भिन्न होते हैं।

गुमराह लोग काम करते समय और अपना कार्य करते समय स्वयं को भूल जाते हैं वे अपने कर्तव्य का पालन करते हैं और अपने अडिग अहंकार और अहंकार की कोई सीमा नहीं समझते। फिर भी जब फल पाने का समय आता है, तब वे स्वयं को याद करते हैं। मार्गदर्शित लोग अपनी आत्मा को शुद्ध करते हैं और अपना कर्तव्य करते हुए स्वयं को याद करते हैं, मानो वे जानते हैं कि उन्हें दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना चाहिए और एक कार्य को पूरा करने के लिए वे जिम्मेदार हैं। फिर भी जब इकट्ठा होने का समय आता है तो वे खुद को भूल जाते हैं पुरस्कार और फल, इतने अधिक कि ऐसा लगता है मानो वे दास हैं जो पाप-ईमानदारी से और खुशी से अपने स्वामी के लिए काम कर रहे हैं (खुद के लिए नहीं), परिणाम उनका अधिकांश कार्य उनके स्वामी से संबंधित था।

हे मित्र, जान लो कि विश्वासियों की एकजुटता और एकता उनके सामूहिक आराधना और प्रार्थनाओं का गहरा अर्थ है। प्रत्येक आस्तिक एक ईंट (एक मजबूत इमारत में) जैसा है जो गुणा की गई शक्ति से लाभ उठाता है असंख्य साथी विश्वासियों की आराधना और प्रार्थना में। विश्वास उन्हें एक साथ लाता है, प्रत्येक पूरे के लिए काम करता है, उनके लिए एक मध्यस्थ और प्रार्थी बन जाता है, और अपनी घोषणा करते हुए उनके लिए दया की माँग करता है मासूमियत। साथ में, वे अपने नेता, पैगंबर की प्रशंसा करते हैं। हर आस्तिक दूसरों की खुशी में आनंद लेता है, जैसे एक माँ भूखी होने पर भी आनंद लेती है अपने बच्चों को संतुष्ट करने में खुशी महसूस करती है, या एक दयालु भाई की तरह जो अपने भाई की खुशी से खुश होता है। परिणामस्वरूप, लोग सृष्टिकर्ता की आराधना कर सकते हैं ब्रह्मांड का व्यापक रूप से अन्वेषण करें और शाश्वत सुख अर्जित करें।

पैगम्बर को देखिए। जब वह पुकारते हैं: “हे दयालुतम दयालु” तो उनका पूरा समुदाय जवाब देता है:
“हे ईश्वर, आशीर्वाद और शांति प्रदान करो
तेरे बन्दे और प्यारे मुहम्मद पर, तेरे नूरों का सागर,
तेरे रहस्यों की खान, तेरा स्मरण और आभार एक फैला हुआ,
और खुलेआम आपके आधिपत्य की सुन्दरता की घोषणा कर रहे हैं।” वे
अपने रब के सामने उसकी बेगुनाही का बयान करो, उसे उसके द्वारा प्रिय बनाओ जिसने भेजा
उसे उनके लिए दया के रूप में, और उसके अधिकार और मध्यस्थता के अधिकार की पुष्टि करें
[उनके लिए सर्वशक्तिमान के साथ]।

वे अपनी नपुंसकता और गरीबी की भाषा में घोषणा करते हैं,
अपनी संपूर्ण, परिपूर्ण स्वतंत्रता में अपने धन की महिमा करते हैं। वे उसकी राजसी गरिमा में उसकी उदारता
और जीभ में उसके प्रभुत्व का दावा करते हैं
उनकी सेवा भावना का। ऐसी महान एकजुटता और आपसी मदद के माध्यम से,
एक आस्तिक पूर्णतया महत्वहीनता और असहायता से उठकर एक आस्तिक बन जाता है।
पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि, सर्वोच्च विश्वास रखने वाला, तथा सृष्टि का सम्मानित, आदरणीय भाग जिसके
अधीन स्वर्ग और पृथ्वी थे।

हे मित्र, जान लो कि जो लोग किसी चीज़ से दूर होते हैं, वे उसे उतनी अच्छी तरह नहीं समझ पाते, जितनी अच्छी तरह वे लोग समझ पाते हैं, जो उसके करीब होते हैं, भले ही वे ज़्यादा बुद्धिमान क्यों न हों। जब वे असहमत होते हैं, तो नज़दीकी व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती है। यूरोपीय दार्शनिक
और भौतिकवादी विषयों में लिप्त वैज्ञानिक इस्लाम से बहुत दूर हैं,
विश्वास और कुरान। उनमें से सबसे महान भी एक ही विचारधारा पर नहीं हो सकते
मैं एक साधारण मुसलमान के समान हूँ जो कुरान को सतही तौर पर समझता है।

यह अवलोकन वास्तविकता से मेल खाता है। यह मत पूछिए: "वे लोग कैसे हो सकते हैं जो
बिजली और भाप के गुणों जैसी वैज्ञानिक वास्तविकताओं की खोज नहीं की
वे उन्हें समझ नहीं सकते क्योंकि उनका दिमाग उनकी आँखों तक ही सीमित है, और आँखें वह नहीं देख
सकतीं जो दिल और आत्मा देखती हैं, खासकर तब जब दिल मृत्यु के कारण मर चुका हो।

प्रकृतिवाद में लापरवाही से डूबे रहने के लिए। भगवान ने उनके दिल, कान और
आँखें (16:108).

हे मित्र, जान लो कि वरदानों के प्रति सबसे बड़ी कृतघ्नता, उन वरदानों के लिए सर्वशक्तिमान को
धन्यवाद न देना है जो सभी के लिए समान हैं (जैसे सुनना और सुनना)।
दृष्टि), निरंतर (प्रकाश और आग की तरह), और प्रचुर और व्यापक (जैसे
हवा और पानी)। कोई भी व्यक्ति अपने वरदानों के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर को धन्यवाद दे सकता है,
उन लोगों के लिए जिन्हें विशेष आवश्यकता के समय नवीनीकृत या दिया जाता है, जबकि
बिना रुके और प्रचुर मात्रा में दिया गया दान अधिक महत्वपूर्ण है

और अधिक। उनकी प्रचुरता और व्यापक प्रकृति, उनका सर्वोच्च महत्व और उनकी स्थिरता उनके अधिक मूल्य को इंगित करती है।

हे मित्र, जान लो कि: वह सभी चीज़ों की गिनती रखता है (72:28) इसका तात्पर्य व्यवस्था और सामंजस्य, समानता और निकटवर्ती समान चीज़ों के बीच अनुपात से है, जैसे कि मानव की उंगलियाँ, बालियों में दाने, फलों के बीज और फूलों की पंखुड़ियाँ।
पवित्र है वह जो हर चीज़ का हिसाब रखता है और जिसका ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।

हे मित्र, जान लो कि गर्भाधान और जन्म, साथ ही करुणामय पालन-पोषण, ये दो कार्य सभी में समान हैं। इनके बदले में एक तत्काल पुरस्कार या मजदूरी दी जाती है: वे जो आनंद प्रदान करते हैं। सर्व-कल्याणकारी, सर्व-उदारवादी की व्यापक उदारता और इन दो कार्यों को पूरा करने के लिए सभी प्रजनन करने वाली चीजों का तीव्र उत्साह दर्शाता है कि प्रत्येक कार्य को पूरा करने से एक विशेष आनंद मिलता है।

पुरस्कार, दया और न्याय की डिग्री, साथ ही ईश्वरीय घोषणा: मेरी दया सभी चीजों को शामिल करती है (7:156) और कई पैगंबरी परंपराएं, पुष्टि करती हैं कि जानवरों को न्याय के दिन पुरस्कृत और दंडित किया जाएगा, और उनकी आत्माओं को ईश्वरीय नियमों के प्रति उनकी पूर्ण आज्ञाकारिता के लिए उनका अंतिम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए संरक्षित किया जाता है।100 आपसी अधिकारों को तय करने के बाद, उनके शरीर धूल में मिल जाएंगे। हालाँकि, एक पूरी प्रजाति को एक धन्य सदस्य द्वारा सन्निहित और प्रतिनिधित्व किया जा सकता है, जैसे कि ऊँट और मेढ़ा, कुत्ता और हुपु, और कुरान में वर्णित चींटी।

हे अभागे ! तुम इस क्षणभंगुर, क्षयशील संसार में अपना भौतिक अस्तित्व बनाये रखना चाहते हो, जिसे केवल सर्व-स्थायी परमेश्वर ही बनाये रख सकता है।
तुम सिर्फ़ उस सर्वशक्तिमान की ओर मुड़ कर और उसके मार्ग में अपना जीवन बिता कर ही स्थायित्व प्राप्त कर सकते हो। तो फिर तुम यहाँ स्थायित्व की तलाश क्यों करते हो? बल्कि यह कहो:

> जहाँ तक स्थायित्व का प्रश्न है, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि ईश्वर, स्वामी, सर्व-स्थायी हैं। जहाँ तक स्थायित्व के आनंद का प्रश्न है, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं उन्हें सर्व-स्थायी, पूज्य के रूप में जानूँ। जहाँ तक स्थायित्व की खोज के उद्देश्य का प्रश्न है, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं उन्हें अपने सर्व-स्थायी प्रभु के रूप में जानूँ। जहाँ तक स्थायित्व से अपेक्षित पूर्णता का प्रश्न है, उनके सर्व-स्थायी आविष्कारक होने में मेरा विश्वास ही पर्याप्त है। जहाँ तक अस्तित्व का प्रश्न है, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता का एक कार्य हूँ। जहाँ तक अस्तित्व के मूल्य का प्रश्न है, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं एक कार्य हूँ

---

100 अबू हुरायरा कहते हैं कि ईश्वर के रसूल ने घोषणा की: "परस्पर अधिकारों का निर्णय प्रलय के दिन किया जाएगा, इस हद तक कि एक सींग रहित भेड़ सींग वाली दूसरी भेड़ से अपना अधिकार प्राप्त करेगी।" मुस्लिम, हदीस संख्या 2585.

आकाश और पृथ्वी के निर्माता की कला का।

अस्तित्व के लिए, यह जानना पर्याप्त है कि मैं उसकी तस्वीर हूँ जिसने आकाश को तारों से और पृथ्वी को फूलों से सजाया है।

अस्तित्व के आनंद के संबंध में, यह जानना पर्याप्त है कि मैं उसका प्राणी हूँ और वह मेरा स्वामी और आविष्कारक है। जीवन के संबंध में, यह पर्याप्त है कि मैं एक ऐसी वस्तु हूँ जो मृत्यु और जीवन के निर्माता के नामों को प्रकट करती है। जहाँ तक जीवन और उसके अधिकारों और उद्देश्यों का प्रश्न है, यह पर्याप्त है कि, अपने व्यापक अस्तित्व के आधार पर, मैं ब्रह्मांड में समझदार लोगों के बीच प्रदर्शन करूँ और दुनिया के बाज़ार में आकाश और पृथ्वी के निर्माता के नामों के कार्यों के चमत्कारों की घोषणा करूँ।

जीवन के उद्देश्य के लिए यह पर्याप्त है कि मैं उनके सुंदर नामों की अभिव्यक्तियों के कार्यों का एक नमूना और मूर्त रूप हूँ। जीवन और उसकी पूर्णता के लिए यह पर्याप्त है कि, मेरे स्वभाव और व्यवहार की भाषा में, मैं उनके नामों की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करता हूँ जिनके आदेश से आकाश ऊँचा उठा और जिनकी अनुमति से पृथ्वी ने स्थिरता प्राप्त की। जीवन के आनंद के लिए यह पर्याप्त है कि मैं जानता हूँ कि मैं उनका दास, प्राणी और ज़रूरतमंद सेवक हूँ, और वे मेरे निर्माता और ईश्वर, प्रभु और सृजक, स्वामी और दयालु हैं, और वही हैं जो मुझे सहारा देते हैं। पूर्णता के संबंध में, ईश्वर में विश्वास ही पर्याप्त है, और ईश्वर मेरे लिए हर चीज़ के विरुद्ध पर्याप्त है।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वरीय एकता में विश्वास और चीजों को ईश्वर के नाम से जोड़ना सत्य है। एक ईश्वर के फलस्वरूप इतनी सहजता प्राप्त होती है कि अस्तित्व लगभग आवश्यक हो जाता है।

निबंध। ईश्वर के साथ भागीदार जोड़ना और जीवों को कई रचनाकारों के लिए जिम्मेदार ठहराना इतनी कठिनाई पैदा करेगा कि अस्तित्व असंभव हो जाएगा। जबकि अस्तित्व को एक ईश्वर के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने से अनंत मूल्य प्राप्त होता है, यह कई छद्म रचनाकारों - स्वयं या प्रकृति, पदार्थ या संयोग, और इसी तरह के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने से सभी मूल्य खो देता है। सैनिक जो कुछ भी ले जाता है उसे राजा के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने से महान और मूल्यवान माना जाता है, राजा के बारे में सैनिक का भाषण ध्यान आकर्षित करता है और उसे बहुत महत्व दिया जाता है, और राजा के खजाने से जीवन की सभी ज़रूरतें हासिल करना आसान है। हालाँकि, सैनिक के पास जो कुछ भी है या जो कुछ भी बोलता है वह सभी मूल्य और महत्व खो देगा यदि वह राजा के खिलाफ विद्रोह करता है।

हे मित्र, यह जान लो कि सर्वशक्तिमान से जो कुछ भी आता है वह एक ही है, चाहे वह हानि लाए या लाभ, अच्छाई लाए या बुराई, या उसकी शक्ति और नियति द्वारा जीवन लाए या मृत्यु, क्योंकि मृत्यु एक अन्य जीवन का प्रारंभ है, और बुराई और हानि का अंत क्रमशः भलाई और लाभ में होता है।

हे मित्र, जान लो कि मानव आत्मा अपनी व्यापक प्रकृति और असंख्य क्षमताओं के कारण असीम सुख और दु:ख का अनुभव कर सकती है।

अपने बच्चों, भाई-बहनों और अन्य प्राणियों के सुखों में आनंद लेते हैं, और उनके दुख के कारण दु:ख उठाते हैं।

हे मित्र, जान लो कि यदि तुम चीजों को स्वयं की परवाह किए बिना देखते हो, तो वास्तविकताएं बदल जाती हैं, जैसे तालाब या झील के किनारे की चीजें उल्टी दिखाई देती हैं।
आपकी अज्ञानता आपको स्वयं को ज्ञानी मानने पर मजबूर करती है।

ऐ दोस्त, जान लो कि जिस चीज़ के लिए क़ुरआन के कुछ हिस्सों को दोहराना ज़रूरी है, उसके लिए (धार्मिक) पाठ और प्रार्थनाओं को दोहराना भी ज़रूरी है। क़ुरआन सच्चाई और कानून की किताब होने के साथ-साथ ईश्वरीय ज्ञान और बुद्धि की किताब होने के साथ-साथ पाठ, प्रार्थना और आह्वान की भी किताब है। पाठ के लिए दोहराव की ज़रूरत होती है, प्रार्थना के लिए दोहराव की ज़रूरत होती है और आह्वान के लिए फिर से पुष्टि की ज़रूरत होती है।

ऐ दोस्त, जान लो कि क़ुरआन की एक खूबी यह है कि वह अनेकता के क्षेत्र का ज़िक्र करने के बाद ईश्वरीय एकता पर पहुँचती है, इस तरह व्याख्या करने के बाद सारांश प्रस्तुत करती है। कुछ ख़ास बातों का ज़िक्र करने के बाद, यह पूर्ण प्रभुता के सिद्धांतों और पूर्णता के व्यापक ईश्वरीय गुणों के नियमों के साथ समाप्त होती है। ऐसे निष्कर्ष आयतों के मुख्य भागों या उनमें वर्णित कारणों के प्रभावों के परिणाम हैं। इस प्रकार श्रोता का

या वाचक का मन अस्तित्व के विवरणों में खोया हुआ नहीं है और दिव्यता की भव्यता को भूला हुआ नहीं है। यह भव्यता, विस्मय और महानता के एक के लिए "बौद्धिक" सेवकाई के तरीके को भी दर्शाता है। यह आपके दिमाग को उन विवरणों से लेकर उनकी समानताओं तक विस्तृत करता है, और आपको सिखाता है कि सबसे छोटी चीज़ में भी शाश्वत राजा को जानने और उस एक, शाश्वत रूप से सभी के लिए मांगे जाने वाले नामों की अभिव्यक्तियों को देखने का एक स्पष्ट, सीधा रास्ता निहित है।

इस शैली के माध्यम से, कुरान एक “पानी की बूंद” में “सूर्य” को या एक “फूल” पर “सूर्य के प्रकाश में प्रकट होने वाले रंगों” को दिखाता है। यह दोपहर के समय सूर्य को अपनी पूरी चमक के साथ चमकता हुआ दिखाता है, और इस तरह आपके सिर को सूर्य की ओर उठाता है ताकि आप चीजों की बहुलता के बीच भ्रमित न हों और सूर्य को तुच्छ न समझें।

उदाहरण के लिए, एक विशिष्ट छोटी घटना का उल्लेख करने के बाद - पैगंबर यूसुफ की अपने भाई को बनाए रखने की योजना - कुरान निष्कर्ष निकालता है: हर ज्ञानी व्यक्ति पर एक ऐसा व्यक्ति है जो (बेहतर) जानता है (12:76)। इस शैली के अन्य उदाहरण हैं: वे ईश्वर को उसके उचित माप का सम्मान नहीं करते (22:74); जब तुम्हारे बीच के बच्चे वयस्क हो जाते हैं... ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है (24:59); और निश्चित रूप से सबसे कमज़ोर घर... यदि वे जानते (29:41)।

हे मित्र, यह जान लो कि संतों का आशीर्वाद और सहायता तथा उनके द्वारा फैलाया गया ज्ञान एक प्रकार की प्रार्थना है जो या तो स्वभाव से या सक्रिय रूप से की जाती है, क्योंकि जो वास्तव में मार्गदर्शन करता है और सहायता करता है, वह ईश्वर है। प्रत्येक व्यक्ति

उसके पास एक अंतरतम भावना या क्षमता है कि, यदि वह इसके माध्यम से प्रार्थना करता है, तो प्रार्थना
आध्यात्मिक स्थिति की परवाह किए बिना उत्तर दिया जाएगा। अगर वे ईश्वर की कसम खाते हैं
यदि [कुछ घटित होगा], तो परमेश्वर उन्हें असत्य सिद्ध नहीं करता।

हे भूतकाल की घटनाओं के विषय में आश्वस्त किन्तु संदिग्ध
भविष्य! अपने मन में, समय में पीछे जाएँ और कल्पना करें कि आप अपने में से एक हैं
पूर्वजों को देखो और फिर अपने वंशजों को देखो। क्या इन दोनों पंखों में कोई अंतर है? तुम संयोग या भाग्य का हाथ नहीं देख सकते
उनमें कुछ और है, क्योंकि पिछली और आने वाली पीढ़ियाँ ईश्वर की रचनाएँ हैं
और निर्माता के ज्ञान और दृष्टि में शामिल है। अपने पूर्वजों को पुनर्जीवित करना अपने वंशजों को बनाने से अजीब नहीं है; बल्कि, यह आसान होगा,
जैसा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कहा है: यह उसके लिए आसान है (30:27)। यदि आप सारी सृष्टि और घटनाओं की तुलना इस विशेष, छोटी घटना से करें, तो आप पाएंगे कि
देखें कि सभी भूतकाल की घटनाएँ चमत्कार हैं जो यह प्रमाणित करती हैं कि उनका सृजनकर्ता उन्हें पूरा करता है
सभी घटनाओं और प्राणियों के विषय में उसे पूर्ण ज्ञान है, तथा
उनको अपनी दृष्टि से घेरे हुए है।

ब्रह्माण्ड के बगीचे में सभी प्राणी और स्वर्गीय वस्तुएँ
चमत्कारों से यह स्पष्ट होता है कि उनका सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान है और
सब कुछ जानता है। इसी तरह, सभी फूलदार पौधे और सजे हुए जानवर भी
पृथ्वी के बगीचे उसकी कला के चमत्कार हैं, और यह प्रमाणित करते हैं कि उनका निर्माता शक्तिशाली है और सब कुछ जानता है। उसकी शक्ति के संबंध में, कण और तारे बनाना, पेड़ों को फल देना और मृतकों को पुनर्जीवित करना, ये सभी चीजें हैं।
वही। सड़ी हुई हड्डियों से मनुष्यों का पुनर्निर्माण करना उसके लिए उतना ही आसान है
क्योंकि हर साल पेड़ों की पतली शाखाओं पर फूल खिलने लगते हैं।

हे मित्र! यह जान लो कि वृक्षों के फलों के समान जल की बूंदें भी अपने रूप में हैं।
परिपूर्ण, नाजुक व्यवस्था और संतुलन दिखाना, ईश्वर की अनगिनत नेमतों में से हैं। जो पानी की एक बूँद को अनंत लक्ष्य देता है, वही है जो पानी की एक बूँद को धारण करता है
सृष्टि उसी के अधिकार में है और जिसके ख़ज़ाने कफ़ और नून के बीच हैं।
पानी की एक बूँद उस की कृपा है जिसने कुन (बनना) को बनाया जो कावन (सृष्टि) का मूल है। सारा धन्यवाद और कृतज्ञता उसी के लिए है,
सर्व-महिमावान.

हे मित्र, जान लो कि कुरान में पृथ्वी का बार-बार उल्लेख किया गया है।
पुनरुद्धार और मिट्टी की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने से मुझमें ऐसे विचार प्रेरित हुए
पृथ्वी ब्रह्माण्ड का हृदय है और वह मिट्टी भी पृथ्वी का हृदय है। सबसे तेज़ तरीका
लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता "मिट्टी" से होकर जाता है, विनम्रता और आत्म-विनाश के द्वार से। मिट्टी स्वर्ग के रचयिता के सबसे करीब है, यहाँ तक कि सबसे ऊँचे स्वर्ग से भी, क्योंकि ईश्वरीय अभिव्यक्ति प्राप्त करने में मिट्टी के बराबर कुछ भी नहीं है।

आधिपत्य और नाम सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर हैं, जो दिव्य रचनात्मकता को प्रदर्शित करते हैं, और दिव्य शक्ति की गतिविधियों का उद्देश्य हैं।

जैसे दया का सिंहासन जल पर है, वैसे ही जीवन और पुनर्जीवन का सिंहासन मिट्टी पर है, जो सबसे व्यापक दर्पण है (जीवन की अभिव्यक्तियों को दर्शाता है)। घनी वस्तु का दर्पण कितना भी पारदर्शी क्यों न हो, वह उस वस्तु को अधिक स्पष्ट रूप से दिखाता है। चमकदार वस्तु का दर्पण कितना भी सघन क्यों न हो, उसमें नामों का प्रतिबिंब अधिक पूर्ण होता है। हवा को सूर्य की चमक से केवल एक मंद प्रकाश प्राप्त होता है, और पानी सूर्य के रंगों को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है, हालांकि यह अपने प्रकाश से आपको सूर्य को दिखाता है। अपने फूलों के माध्यम से, मिट्टी सूर्य के प्रकाश में जो कुछ भी है उसे दिखाती है। शाश्वत सूर्य के प्रकाश की तुलना में, सूर्य केवल एक घनी, चमकती हुई बूंद है। मिट्टी का श्रृंगार और उसके वसंत के श्रृंगार का प्रदर्शन - विभिन्न रूपों और रंगों के उसके फूल, और उसके सुंदर जानवर दिव्य प्रभुत्व की पूर्णता की गवाही देते हैं - निर्माता के साक्षी हैं। एक बैंगनी को देखो, और देखो कि सर्वज्ञ निर्माता का हाथ कैसे इसे व्यवस्थित करता है, रंगता है, और सजाता है।

उसकी जय हो जो अपनी सूक्ष्म कला के माध्यम से हमें अपना ज्ञान कराता है, और अपने नियंत्रण के चमत्कारों के माध्यम से अपनी शक्ति को अपने प्राणियों के लिए ज्ञात कराता है।

मिट्टी। यह रिवायत का अर्थ स्पष्ट करता है: "एक सेवक अपने भगवान के सबसे निकट होता है जब वह उसके सामने सजदा करता है।"101 यह सत्य है, इसलिए मिट्टी से और उसमें प्रवेश करने से मत डरो, और न ही कब्र से और उसमें लेटने से डरो।

हे मित्र, जान लो कि मेरी बुद्धि मेरे हृदय की यात्रा में साथ देती है, और हृदय अपने निष्कर्ष बुद्धि को देता है, जो उन्हें दृष्टांतों के रूप में प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता अनंत रूप से निकट है, फिर भी अनंत रूप से दूर है (अपने प्राणियों से), सबसे भीतरी (उससे अधिक मर्मज्ञ कोई नहीं है), सबसे बाहरी (उसको घेरने वाला कोई नहीं है), और न तो किसी के भीतर है और न ही बाहर।

धरती के चेहरे पर उसकी दया के कामों और धरती पर अस्तित्व के क्षेत्रों में उसकी शक्ति के छापों या गतिविधियों को देखें, ताकि आप उस मानवीय वास्तविकता को देख सकें। दो कणों, फूलों, फलों या मधुमक्खियों पर विचार करें जो बिल्कुल एक ही प्रकार या पहचान के हैं लेकिन बहुत दूरी से अलग हैं। स्पष्ट भौतिक स्थितियों के संबंध में, एक ही समय में इन दो चीजों को बनाने वाला निर्माता उनसे दूर होना चाहिए। सृष्टि की सहजता और गति और जीवों की अनंत बहुतायत के दृष्टिकोण से, उनकी पूर्ण दृढ़ता के साथ, निर्माता प्रत्येक के असीम रूप से निकट है। यह ऐसा नहीं है जैसे कि

101 मुस्लिम, हदीस नं. 482; अबू दाऊद, हदीस नं. 875.

एक संकेन्द्रित केन्द्र के केन्द्र और बिन्दुओं के बीच देखी गई निकटता, जिनमें से सभी
केंद्र से निकटता की विभिन्न डिग्री हैं; बल्कि, सभी चीजें उस निर्माता से समान रूप से दूर हैं जो हर चीज को असीम रूप से दृढ़ और सुंदर बनाता है।

यह आवश्यकता के क्षेत्र (दिव्य) के गुणों, आंतरिक से उत्पन्न होता है
अस्तित्व की अमूर्तता और अमूर्तता का आयाम, और दिव्य
गुणों और कार्यों का बिना शर्त चरित्र। यह भी चरित्र के कारण है-
प्रत्येक प्राणी पर दिव्य नामों का एक साथ प्रकटीकरण करने वाला
और समस्त अस्तित्व, और मूल एजेंट के बीच पूर्ण अंतर
और वस्तु। उदाहरण के लिए, पारदर्शी वस्तुओं के दर्पणों में अपनी छवियों और फूलों पर प्रतिबिंबों के माध्यम से, सूर्य उनसे भी अधिक निकट है
वे स्वयं सूर्य से बहुत दूर हैं। आपके दर्पण में सूर्य की छवि के बीच की दूरी को पार करना लगभग असंभव है

और इसका मूल.

महिमा हो उसकी जिसका सार और गुण पूर्णतः मुक्त हैं
पसंद करने से। वह प्रथम और अंतिम है, बाहरी और आंतरिक है, और उसके पास पूर्ण,
सभी चीज़ों का पूर्ण ज्ञान।

हे ईश्वर, हे न्यायकारी, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ। जो कुछ भी विद्यमान है, वह प्रमाणित करता है कि आप अनिवार्यतः विद्यमान हैं, एक और अद्वितीय हैं, सभी के द्वारा मांगे जाने वाले हैं, और आप ही (एक) ईश्वर हैं, अदृश्य के ज्ञाता, सर्वज्ञ ...
वह जो अन्न पैदा करता है और हृदयों को वश में करता है। सब कुछ वही है
आपकी शक्ति के अधीन। उनके दिल आपकी मुट्ठी में हैं, उनके माथे के बाल
आपके हाथ में, और उनकी चाबियाँ आपके पास। आपके बिना कुछ भी नहीं चलता
अनुमति।

हे उन लोगों के परमेश्वर जो चले गए और जो आने वाले हैं। हे उन लोगों के प्रभु जो चले गए और जो आने वाले हैं।
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो), और इब्राहीम, गेब्रियल
और माइकल, उन पर शांति हो। मैं आपसे आपकी खातिर पूछता हूं
महानतम नाम, आपके महान “चेहरे” का प्रकाश, आपका सही धर्म,
तेरा सीधा मार्ग, सात बार दोहराई गई सूरत अल-फातिहा, और महान कुरान; अनगिनत के लिए "कहो: 'वह

ईश्वर एक है','' के प्रारंभिक अध्याय के अनंत (पाठ)
किताब (सूरत अल-फातिहा); आपके सुन्दर नामों के लिए,
महानतम नाम, पवित्र काला पत्थर, और आपका सम्मानित घर
(काबा); शक्ति की रात और सम्मानित रमजान के लिए;
और आपके सम्मानित पैगंबरों और आपके सबसे महान, प्रिय लोगों के लिए
एक, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, मैं आपसे दया करने के लिए कहता हूं
मुहम्मद के समुदाय के लिए हम अपने दिलों को आस्था और इस्लाम के लिए खोलकर रखें।
हमें विधर्मियों से सुरक्षित रखें, हमारे धर्म की रक्षा करें, सबूतों को उज्ज्वल करें

कुरान की आयतों का सम्मान करो और इस्लाम के शरीयत की शान में इज़्ज़त करो। आमीन, हे दयालु दयालु का.

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

ईश्वर की स्तुति हो और उसके पैगम्बर पर आशीर्वाद हो।

हे मित्र, यह जान लो कि शुद्ध, सर्वव्यापी प्रकाश से अथवा असीम शक्ति के क्षेत्र से बाहर कुछ भी छिपा नहीं रह सकता, क्योंकि जो असीम है, वह असीम है। सीमित नहीं किया जा सकता.

शाश्वत, दिव्य ज्ञान हर चीज को उसके इच्छानुसार आशीर्वाद प्रदान करता है अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करें। छोटी-छोटी इकाइयाँ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान को नहीं रोक सकतीं वह, जो प्रत्येक वस्तु को एक निश्चित माप से, चिंतित होकर बनाता है बड़े निकायों के साथ, जिस प्रकार बड़े निकाय सर्वव्यापी को बाधित नहीं कर सकते और अभौतिक, बाह्य और आंतरिक एक छोटी में रुचि रखने से अस्तित्व। किसी छोटी सी चीज में महान कला होती है, और बड़े जीवों की तुलना में छोटे जीव अधिक होते हैं। पूर्ण भव्यता कभी भी साझेदारों को स्वीकार नहीं करती। एक असीम रूप से प्रचुर रचना, जिसे पूर्ण सहजता, गति और दृढ़ता के साथ बनाया गया है, दिखाती है कि एक सर्वसुन्दर व्यक्ति जाना जाना चाहता है और उसकी पूर्ण सुन्दरता पाना चाहता है और पूर्णता देखी गई। इस सृष्टि के साथ, परम दया और ब्रह्मांड में जो कुछ भी मौजूद है और घटित होता है, उसके द्वारा प्रमाणित धन, और लगभग अनंत संख्या में परावर्तक पर्यवेक्षकों का अस्तित्व - सभी की आवश्यकता है असंख्य सूक्ष्म जीवों और छोटे, उड़ने वाले जीवों का अस्तित्व तथ्य.

हे मित्र, जान लो कि यदि तुम अपने आप को किसी भी चीज़ से अधिक प्यार करते हो क्योंकि यह तुम्हारे सबसे निकट की चीज़ है, तुम्हें अपने प्रभु से और भी अधिक प्रेम करना चाहिए, क्योंकि वह तुम्हारे आत्म-स्वरूप से भी अधिक निकट है। क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हारी इन्द्रियाँ और क्षमताएं, जो आपकी शक्ति और कल्पना से परे हैं, आपके अधीन काम करती हैं क्या तुम अपने प्रभु के मार्गदर्शन के बारे में जानते हो?

हे मित्र, जान लो कि इस ब्रह्माण्ड में संयोग का कोई स्थान नहीं है। बगीचे में अनंत मिश्रण में अनंत व्यवस्था और पूर्ण मिश्रण के बीच पूर्ण अंतर-भेद देखने को मिलता है। यह निर्माता की बुद्धि की ओर इशारा करता है सर्वव्यापी ज्ञान के साथ.

हे मित्र, यह जान लो कि यदि तुम सब वस्तुओं का श्रेय उस एक को नहीं देते, आपको ब्रह्मांड में ईश्वर की अभिव्यक्तियों की संख्या के अनुसार उतने ही देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। यह ऐसा होगा जैसे आप अपनी आँखें बंद करके सूर्य को अनदेखा कर दें, लेकिन फिर भी उसकी छवि को बूंदों में प्रतिबिंबित होते हुए देखें

पानी की। अगर आप सोचते हैं कि वे स्वतंत्र रूप से मौजूद हैं, तो आपको उन बूंदों के बराबर सूर्यों के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। लेकिन एक बूंद में सबसे छोटा तारा भी नहीं समा सकता, दुनिया का दीपक तो दूर की बात है।

हे मित्र, जान लो कि सभी प्राणी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्साहपूर्वक प्रतिस्पर्धा करते हैं।
उनके अलंकरण और सुंदरता की सूक्ष्मताएं राजसी पर्यवेक्षक के लिए जो
लगातार उन पर नज़र रखता है, क्योंकि वे सभी दृढ़, अद्भुत कला की सूक्ष्मताएँ धारण करते हैं
सभी देखने वालों को आकर्षित करते हैं। वे अपनी सुंदरता और श्रृंगार को शाश्वत साक्षी के सामने प्रस्तुत करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, क्योंकि उसने प्रत्येक प्राणी को देखने के लिए बनाया है
उनके दर्पण में उनकी सुन्दरता और कृपा के प्रकाश की अभिव्यक्तियाँ हैं,
महिमा और पूर्णता। फिर वह सभी अन्य सचेत गवाहों को देखने के लिए बुलाता है
ताकि वे उसे जान सकें और उस गुप्त ख़जाने को पहचान सकें।

किसी वस्तु का सर्वोच्च उद्देश्य, उसके जीवन का सर्वोच्च अधिकार, स्वयं को दूसरों के सामने प्रस्तुत करना है।
यह उसके रचयिता के दृष्टिकोण से होना चाहिए तथा उसके द्वारा देखा जाना चाहिए, क्योंकि यह उसके नाम का कार्य है।
किसी भी जीव के लिए सबसे बड़ा सुख यह है कि उसे इस बात का अहसास हो कि कोई उसे देख रहा है।
उसके अस्तित्व का दूसरा उद्देश्य यह है कि उसे उसके साथी प्राणियों द्वारा देखा जाए। हालाँकि, पहला उद्देश्य असीम रूप से बड़ा है।

जीवन को संरक्षित और बनाए रखने का अधिकार है। जीवन के असंख्य अधिकारों में से, ये सबसे छोटे और सबसे कम महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि जीवन उन अधिकारों में से एक है जो जीवन के सभी पहलुओं को सुरक्षित रखते हैं।
शक्ति के सर्वोच्च और सबसे उन्नत, अद्भुत और महानतम चमत्कार
सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर, एक और सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रार्थनीय। जीवन को बनाए रखने से इस चमत्कार को पहचाना जा सकता है और इसके कार्यों को पूरा किया जा सकता है। चूँकि यह केवल एक साधन के रूप में मूल्यवान है, इसलिए इसे अंत या उद्देश्य तक नहीं बढ़ाया जा सकता है।
एक उद्देश्य। क्या आपको लगता है कि एक अनार, ईश्वरीय कला का एक अद्भुत काम है,
क्या यह केवल जल्दी से खाने के लिए है? यह एक ऐसा शब्द है जो सर्व-महिमावान को प्रदर्शित करता है जो
इसे बनाता है, [और इसलिए इसके निर्माता को जानने और उससे प्यार करने के लिए इस पर चिंतन की आवश्यकता है।]

जिसके पास सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य है, वह अपने सौन्दर्य को देखने और अपने प्राणियों को दिखाने में सच्चा आनन्द लेता है।102 सापेक्ष सौन्दर्य का आनन्द
श्रेष्ठता को उसी ताकत से महसूस नहीं किया जा सकता।

---

102 सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी आवश्यकताओं से मुक्त है। जैसे माता-पिता अपने बच्चों को देखकर प्रसन्न होते हैं खुश और समृद्ध, सर्वशक्तिमान असीम रूप से अधिक पवित्र आनंद लेता है, जो उसके लिए अद्वितीय है पवित्रता, उसकी रचनाओं को परिपूर्ण, सुंदर और सुशोभित देखने में है। यही कारण है कि सुंदरता, प्राणियों द्वारा प्रतिबिंबित पूर्णता और अलंकरण उनकी अभिव्यक्तियों के परिणाम हैं संपूर्ण, सर्वसुंदर नाम और गुण। सभी प्राणियों में जो अपूर्णता दिखाई देती है, वह उनके कारण है स्वयं के लिए और क्योंकि उन्हें तुलना की एक इकाई के रूप में काम करना चाहिए ताकि निर्माता का परम पूर्णता का अनुभव किया जा सकता है। यह प्राणियों के भले के लिए भी है, उनके इनकार के लिए भी सृष्टिकर्ता की कृपा से उनका अनंत नाश होता है। जितने अधिक प्राणी ईश्वरीय कृपा प्रदर्शित करते हैं उन पर जितनी अधिक अभिव्यक्तियाँ होंगी, वे उतनी ही अधिक पूर्णता प्राप्त करेंगे। हालाँकि, उनकी "पूर्णता" उतनी ही अधिक होगी सृष्टिकर्ता परमेश्वर की पूर्ण पूर्णता की तुलना में यह सदैव सापेक्ष है। (ट्र.)

पूर्णता और शाश्वत, सत्य, शुद्ध सौंदर्य स्वयं के कारण प्रिय है, जिसका सबसे बड़ी उपमा है, और उसी ने हमें अपने रसूल के द्वारा सूचना दी कि उसने सृष्टि को जानने के लिए बनाया। अर्थात्, उसने दर्पण बनाए ताकि उसकी सुन्दरता, जिसे स्वयं के कारण प्यार किया जाता है, के मानवीय चित्रण देखे जा सकें।

हे नश्वर! अपनी मृत्यु के बाद भी तुम उसी में विद्यमान रहोगे। ज्ञान और उसकी आँखों के सामने। सभी चीज़ों को उनके सच्चे मालिक को दे दो, और संतुष्टि पाने के लिए उन्हें उसी के नाम पर आरोपित करो। अन्यथा, तुम्हें ऐसा करना पड़ेगा ब्रह्मांड में ईश्वर की अभिव्यक्ति या कणों के रूप में जितने भी देवता हैं, उन्हें स्वीकार करें या मिट्टी, क्योंकि कई जीवित चीजें मिट्टी के माध्यम से अस्तित्व में आती हैं।

महिमा है उसकी, जिसके सार और गुणों में कोई समान नहीं, उसकी सृष्टि एकता की गवाही देती है, उसकी निशानियाँ उसकी प्रभुता की गवाही देती हैं, और जिसका ज्ञान और शक्ति सभी चीजों को समाहित करती है। महामहिम महान हो। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

समाप्त करने के लिए:

• व्याख्या: सात आकाश और पृथ्वी तथा उनमें रहने वाले सभी लोग उसकी महिमा करें। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा न करे (17:44) •

तुम्हारा शरीर, उसके और उसके रचयिता के प्रति सम्मान के साथ।

• हम यहाँ जो बीज या नींव के रूप में देखते हैं, वह इंगित करता है कि आगे क्या फलेगा-फूलेगा परलोक।

• चार चीजें जो हमें सृष्टिकर्ता के प्रति लापरवाह बनाती हैं। • उसके बिना, प्रत्येक सुख में होने वाला दर्द सुख से भी अधिक तीव्र होता है सुख अपने आप में ही है और सुख शुद्ध दुख बन जाता है। इसलिए भगवान के पास भागो, जहाँ सब कुछ है स्थायी।

• कुछ दिव्य नामों में तुलनात्मक या अतिशयोक्तिपूर्ण रूप का उपयोग। • "भगवान" नाम में सभी दिव्य सुंदर नामों का अर्थ समाहित है और पूर्णता के सभी गुण.

• यदि आप आश्वस्त हैं कि सभी चीजें और घटनाएँ ईश्वर से आती हैं, तो आपको सब कुछ स्वीकार करें, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

• तीन तरह की प्रार्थनाएँ। • विश्वासी प्राणी को एक अक्षर के रूप में देखते हैं, जिसका अपने आप में कोई मतलब नहीं होता, लेकिन वह शब्द जिससे वह संबंधित है, उसका पूरक है। अविश्वासी लोग एक प्राणी को देखते हैं

• ईश्वर की क्षमा एक अतिरिक्त कृपा का कार्य है, जबकि उसकी सजा शुद्ध न्याय है। • गुमराह और निर्देशित लोग काम, कर्तव्य और पुरस्कार के समय (खुद को) भूलने और याद रखने में भिन्न होते हैं।

• सामूहिक रूप से प्रार्थना करने का गुण।

• भौतिकवादी विषयों में लिप्त यूरोपीय दार्शनिक और वैज्ञानिक
आम मुसलमानों की समझ (भले ही सतही हो) के बराबर नहीं हो सकती
इस्लाम और कुरान की सच्चाइयाँ। • इस (अस्थायी)
दुनिया में स्थायित्व की तलाश करने पर जोर क्यों दिया जाए? • कुरान ने अपनी आयतों को जिस तरह से समाप्त किया है, उसमें उच्च गुण हैं। • ब्रह्मांड के बगीचे में सभी प्राणी और स्वर्गीय वस्तुएँ चमत्कार हैं जो इस बात की गवाही देते हैं और स्पष्ट करते हैं कि उनका निर्माता उन सभी पर और उन सभी पर शक्तिशाली है।

सब कुछ जानता है। • पृथ्वी
ब्रह्मांड का हृदय है, और मिट्टी पृथ्वी का हृदय है।
लक्ष्य विनम्रता और आत्म-विनाश के द्वार से होकर "मिट्टी" से होकर जाता है, क्योंकि मिट्टी स्वर्ग के निर्माता के लिए सबसे ऊंची चीज से भी ज्यादा करीब है।
स्वर्ग। दया का सिंहासन पानी पर है, जबकि जीवन और स्वर्ग का सिंहासन पानी पर है।
पुनर्जीवन धरती पर है। • सर्वज्ञ
सृष्टिकर्ता असीम रूप से निकट है और असीम रूप से दूर (अपने प्राणियों से)। वह भीतर से भी सबसे भीतरी है, बाहर से भी सबसे बाहर वाला है, और न तो किसी चीज़ के भीतर है और न ही बाहर।

• छोटी-छोटी सत्ताएं सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान को सर्वज्ञ होने से नहीं रोक सकतीं
बड़ी सत्ताओं से संबंधित; बड़ी सत्ताएं सर्वव्यापी और अमूर्त, बाह्य और आंतरिक को रुचि लेने से नहीं रोक सकतीं

छोटी संस्थाएं.

• यदि आप सभी चीजों को एक सत्ता के लिए जिम्मेदार नहीं मानते हैं, तो आपको स्वीकार करना होगा
सभी स्थानों पर ईश्वर के प्रकटीकरण की संख्या के बराबर देवताओं का अस्तित्व
ब्रह्माण्ड में व्यक्तिगत अस्तित्व.

• जीवन में किसी चीज़ का सर्वोच्च उद्देश्य स्वयं को उसके निर्माता के सामने प्रस्तुत करना है और
जीवन का सबसे बड़ा सुख यह है कि जीवात्मा को इस बात का अहसास रहता है कि वह उस पर नजर रख रहा है।

ग्यारहवाँ ग्रंथ

ग्यारहवाँ ग्रंथ

ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश से एक बिंदु, उनकी महिमा का गुणगान हो

जब मैं किसी बगीचे में जाता हूँ, तो मैं उसका सबसे सुंदर फूल या फल चुनता हूँ। अगर मेरे लिए उसे चुनना मुश्किल होता है, तो मैं उसे देखने में आनंद लेता हूँ। अगर मुझे कोई सड़ा हुआ फूल मिलता है, तो मैं इस नियम के अनुसार उसे नज़रअंदाज़ करने का नाटक करता हूँ: जो अच्छा लगे उसे ले लो और जो अच्छा न लगे उसे छोड़ दो। यह मेरी शैली है, और मैं अपने पाठकों से भी इसी तरह व्यवहार करने का अनुरोध करता हूँ।

लोग कहते हैं कि मैं जो लिखता हूँ, वह समझ में नहीं आता। मैं इस बात से सहमत हूँ। जो भी मेरे दिल में आता है, मैं उसे वैसे ही लिखता हूँ जैसे वो आता है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कभी मीनार के ऊपर से बोलता हूँ तो कभी कुएँ की तलहटी से।

इस ग्रंथ को पढ़ते समय निम्नलिखित बातों पर विचार करें:

जो बोलता है वह मेरा दुखी हृदय है।
मैं जिस पर बात कर रहा हूं वह मेरा विद्रोही व्यक्तित्व है।
जो सचमुच सुनता है, वह सत्य की खोज में है।

मैं ईश्वर, उसके फ़रिश्तों, किताबों, पैग़म्बरों और अंतिम दिन पर विश्वास करता हूँ; और भाग्य, अच्छाई और बुराई, सर्वशक्तिमान ईश्वर से होने पर भी। मृत्यु के बाद पुनर्जन्म सत्य है। मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और मुहम्मद उनके पैग़म्बर हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारे संसार के पालनहार ईश्वर की स्तुति हो, तथा पैगम्बरों के प्रतीक मुहम्मद साहब और उनके समस्त परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद हो।

हमारा लक्ष्य और लक्ष्य ईश्वर है। उसके सिवा कोई नहीं, वह सर्वज्ञ, स्वयंभू है (2:255)। उसके अनगिनत प्रमाणों में से हम यहाँ केवल चार प्रमाण देते हैं।

- पहला प्रमाण मुहम्मद है। हमने इस प्रमाण को पैगंबर के ज्ञान से झलकियाँ नामक ग्रंथ में स्पष्ट किया है [और इस पुस्तक के दूसरे ग्रंथ में भी: पैगंबर के ज्ञान के सागर से बूंदें]।

- दूसरा प्रमाण ब्रह्माण्ड, स्थूल-ब्रह्माण्ड या स्थूल-ब्रह्माण्ड है।
  मानव, सृष्टि की देखी हुई, महान पुस्तक।
- तीसरा प्रमाण कुरान है, वह किताब जिसमें कोई संदेह नहीं है और जो पवित्र शब्द है। • चौथा प्रमाण मानव विवेक या चेतना है, अदृश्य और भौतिक, दृश्यमान दुनिया का

संगम। मनुष्य की चेतना या विवेक बुद्धि को प्रभावित करता है, जिससे ईश्वरीय एकता में विश्वास की किरण निकलती है।

पहला प्रमाण: मुहम्मदी सत्य 103

यह प्रमाण पैगम्बरी और इस्लाम से मिलता है। पैगम्बरी में सभी पैगम्बरों की सबसे बड़ी सहमति और सबसे व्यापक सहमति की गवाही निहित है, और इस्लाम में ईश्वरीय रूप से अवतरित धर्मों की आत्मा और उनकी पुष्टि है जो कि ईश्वरीय प्रकाशना पर आधारित है।

महान् पैगम्बर मानवता को ईश्वर के अस्तित्व और उसकी एकता के बारे में समझाते हैं। उनके सत्य वचनों की पुष्टि उनके प्रत्यक्ष चमत्कारों, पैगम्बरों की गवाही और सभी ईश्वरीय धर्मों की पुष्टि से होती है।

पैगम्बर उस प्रकाश (ईश्वरीय एकता) को उन पवित्र, श्रेष्ठ पुरुषों और महिलाओं के नाम पर प्रकट करते हैं जो इस आह्वान पर सहमत हैं। इस शुद्ध, स्पष्ट, प्रत्यक्ष सत्य में मिथ्यात्व का हाथ नहीं हो सकता, जो इतना प्रबल रूप से प्रमाणित है और जिसे सभी सत्यों को भेदने वाली आँखों द्वारा पहचाना जाता है।

दूसरा प्रमाण: सृष्टि की पुस्तक

इस पुस्तक के सभी अक्षर और बिन्दु, व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से तथा अपनी विशेष भाषा में, कहते हैं: ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा न करे (17:44), और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता की घोषणा न करे।

---

103 मुहम्मदी सत्य वह सत्य है जिसका प्रतिनिधित्व पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवक और दूत के रूप में करते हैं, साथ ही वह सत्य भी है जिसका वे अद्वितीय अवतार हैं। (ट्र.)

कण सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता के आवश्यक अस्तित्व की सच्चाई से गवाही देता है।
अनंत संभावित गंतव्यों के बीच झिझकते हुए, यदि वे किसी अस्तित्व के निर्माण खंड बनेंगे और उन्हें किस प्रकार के अस्तित्व में रखा जाएगा, तो प्रत्येक कण एक विशेष मार्ग अपनाता है और विशेष गुण ग्रहण करता है। यह कुछ निश्चित स्थापित नियमों के अनुसार एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर निर्देशित होता है और कई आश्चर्यजनक, उद्देश्यपूर्ण परिणामों में समाप्त होता है। यह ईश्वर में विश्वास को मजबूत करता है, जिसे ईश्वर ने हमारी आंतरिक क्षमता में प्रत्यारोपित किया है ताकि हम उसे पा सकें, और जो हमारे लिए अदृश्य दुनिया का एक नमूना है।

क्या कोई कण अपनी विशेष भाषा में अपने सर्व-महान निर्माता और उसकी प्रकट बुद्धि के उद्देश्य की घोषणा करता है? अपने व्यक्तिगत अस्तित्व, विशेष गुणों और निश्चित प्रकृति के माध्यम से, प्रत्येक कण सर्व-बुद्धिमान निर्माता की ओर संकेत करता है और उसकी गवाही देता है। यह यौगिक बनाने में एक निर्माण खंड के रूप में कार्य करता है; अनगिनत संभावनाओं के बीच एक मार्ग लेते हुए, यह एक यौगिक में अपनी उचित स्थिति ग्रहण करता है। इस स्थिति का अन्य सभी स्थितियों के साथ संबंध है, और कण उन संबंधों से उत्पन्न होने वाले कई कार्यों को पूरा करता है। चूंकि स्थितियों के बीच एक सख्त संतुलन और पूर्ण सामंजस्य है, इसलिए कण द्वारा पूरा किया गया प्रत्येक कार्य कई, बुद्धिमान फल देता है।

चूंकि यह सब कण के सृष्टिकर्ता की गवाही की पुष्टि करता है, कण अपने सर्व-महान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व के प्रमाणों की घोषणा करता है और अपने कार्यों और अपने द्वारा पूरे किए जाने वाले कार्य की भाषा में अपने सर्व-बुद्धिमान सृष्टिकर्ता के उद्देश्य को प्रदर्शित करता है। यह ऐसा है मानो यह ईश्वरीय एकता की घोषणा करने वाली आयतों का पाठ करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक सैनिक को विशेष कर्तव्य सौंपे जाते हैं और उन कर्तव्यों के संबंध में वह सभी सेना डिवीजनों के साथ संबंध रखता है।

तो फिर, क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर (अस्तित्व और एकता) के प्रमाण सृष्टि के सभी कणों से अधिक नहीं हैं? परंपरा "ईश्वर तक जाने वाले मार्ग उतने ही हैं जितनी उसकी सृष्टि की साँसें हैं" एक शुद्ध सत्य व्यक्त करती है।

प्रश्न: हम अपनी बुद्धि से सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को क्यों नहीं खोज पाते?

उत्तर: क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति पूर्ण है और उनका कोई विपरीत नहीं है।104

ब्रह्माण्ड की रेखाओं पर चिंतन करें, क्योंकि वे
परमधाम से आपके लिए संदेश हैं।

सृष्टि की पुस्तक में स्पष्ट रूप से दोपहर के सूर्य की तरह व्यवस्थितता प्रदर्शित होती है और प्रत्येक शब्द या अक्षर में शक्ति का चमत्कार प्रदर्शित होता है। इसकी रचना इतनी चमत्कारी है-

104 प्रत्येक वस्तु अपने विपरीत से जानी जाती है। केवल सर्वशक्तिमान के पास कोई समान या विपरीत नहीं है। (ट्र.)

यह अविश्वसनीय है कि, यह मानकर भी कि प्रत्येक प्राकृतिक कारण एक स्वतंत्र कारक है, प्रत्येक कारण इस चमत्कारिकता के समक्ष विनम्रतापूर्वक नतमस्तक होगा, यह स्वीकार करते हुए: "आपकी महिमा हो। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। निस्संदेह, आप सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ हैं।"

इस पुस्तक का क्रम इतना सूक्ष्म और नाजुक है कि इसके सटीक स्थान पर एक नया बिंदु डालने के लिए एक पूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है जो सब कुछ बना सकती है, क्योंकि प्रत्येक अक्षर - विशेष रूप से जीवित अक्षर - वाक्यों के साथ आंतरिक संबंध रखता है और अन्य सभी शब्दों के साथ एक मजबूत संबंध रखता है। इस प्रकार, जिसने एक मच्छर की आंखें बनाईं, उसने सूर्य बनाया, और जिसने पिस्सू के पेट का आदेश दिया, उसने सौर प्रणाली का आदेश दिया। देखें: आपकी रचना और पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है (31:28), और देखें कि एक मधुमक्खी की जीभ से कितनी सच्ची गवाही आती है, जो कि शक्ति के चमत्कारों में से केवल एक है या इस पुस्तक में एक छोटे से शब्द का प्रतिनिधित्व करती है।

एक सूक्ष्म जीव पर विचार करें जो नंगी आँखों से अदृश्य होते हुए भी सृष्टि का एक नमूना है। जिसने इसे चमत्कारी ढंग से “लिखा” उसने ब्रह्मांड को भी “लिखा”। यदि आप इसका अध्ययन करते हैं और इसके सूक्ष्म तंत्र और अद्भुत प्रणालियों को समझते हैं, तो आप आश्वस्त हो जाएँगे कि इसका अस्तित्व और जीवन निर्जीव, सरल, प्राकृतिक कारणों से नहीं जोड़ा जा सकता है जो संभावनाओं के बीच अंतर नहीं कर सकते। अन्यथा आपको यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक कण में ऋषियों की चेतना, वैज्ञानिकों का ज्ञान और राजनेताओं या प्रशासकों की प्रतिभा समाहित है, और वे एक दूसरे से सीधे संवाद करते हैं। अंधविश्वासी लोग भी इस तरह के दावे से शर्मिंदा हैं।

इसके अलावा कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि इसे ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार माना जाए, यह उसी का आविष्कार है जिसने ब्रह्मांड का आविष्कार और व्यवस्था की है।
यदि ऐसा न होता, तो दो सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक कारणों या नियमों, गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण, का एक परमाणु में एक साथ आना असंभव होता। गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण, गति और इसी तरह की घटनाएँ, ईश्वरीय सिद्धांतों या संचालन के तरीकों के नाम हैं जिन्हें नियमों के रूप में दर्शाया गया है। उन्हें नियमों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, बशर्ते कि उन्हें किसी एजेंट प्रकृति की नींव के रूप में प्रचारित न किया जाए।

केवल नाम या उपाधि या नाममात्र अस्तित्व होने के कारण, उन्हें वास्तविक, बाह्य अस्तित्व नहीं दिया जाना चाहिए।

प्रश्न: लोग पदार्थ की शाश्वतता में विश्वास क्यों करते हैं और सभी को पदार्थ के शाश्वत होने का श्रेय क्यों देते हैं?
क्या प्रजातियों के निर्माण का कारण कणों या इसी प्रकार की चीजों की यादृच्छिक गति है?

उत्तर: तर्क या तर्कसंगत निर्णय हमेशा विश्वास की ओर नहीं ले जाता, क्योंकि तर्कसंगत रूप से आश्वस्त होने का मतलब ईश्वर में विश्वास करना नहीं है। वे अपनी गलती को समझ नहीं पाते, क्योंकि उनका तर्क सतही दृष्टिकोण और नकल पर आधारित होता है। अगर वे इस तर्क को अपनाते, तो वे देख पाते कि ऐसा विश्वास कितना अतार्किक और तर्कहीन है। अगर, इसके बावजूद, वे अभी भी उस पर कायम हैं

ऐसा विश्वास, वे सृष्टिकर्ता के प्रति असावधान हैं। कितना अजीब विचलन है!

जो लोग महिमावान ईश्वर की शाश्वतता को स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करते हैं और सृष्टि का श्रेय उन्हें देते हैं - यद्यपि शाश्वतता और सृजनशीलता ईश्वरीय सार के अपरिहार्य गुणों में से हैं - वे असंख्य कणों और असहाय वस्तुओं को शाश्वतता और सृजनशीलता का श्रेय कैसे दे सकते हैं?

इस प्रसिद्ध घटना को याद करें: एक बार, लोग रमज़ान की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए नए अर्धचंद्राकार चाँद को देखने के लिए आकाश को स्कैन कर रहे थे। एक बूढ़े व्यक्ति ने दावा किया कि उसने इसे देखा है, जबकि वास्तव में उसने जो देखा था वह उसकी भौंह से नीचे की ओर मुड़ा हुआ एक सफ़ेद बाल था। यह बाल जैसी चीज़ है जो लोगों को सच्चाई से अंधा कर देती है।

मानवता का चरित्र उत्तम है। सत्य की खोज करते समय लोग कभी-कभी झूठ का सामना करते हैं और उसे अपने हृदय में रखते हैं। कभी-कभी सत्य की खोज करते समय उन्हें गुमराही का सामना करना पड़ता है और वे उसे सत्य मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न: “प्रकृति”, “कानून” और “शक्तियाँ” कहलाने वाली वे चीज़ें क्या हैं, और लोग इनसे कैसे धोखा खाते हैं?

उत्तर: प्रकृति एक व्यापक ईश्वरीय शरिया है जिसे दृश्यमान, भौतिक दुनिया में निहित हर चीज़ के बीच व्यवस्था और सामंजस्य के लिए स्थापित किया गया है। सृष्टि के इस नियम को "ईश्वर का मार्ग" भी कहा जाता है। प्रकृति सृष्टि में सभी नाममात्र के नियमों का परिणाम है। शक्तियाँ इस शरिया के सिद्धांत हैं, और कानून उसी शरिया के तत्व हैं। इसके सिद्धांतों और तत्वों की नियमितता लोगों को इसे एक वास्तविक, बाहरी अस्तित्व वाली "प्रकृति" के रूप में और उसके बाद एक एजेंट के रूप में देखने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि मानव हृदय या मन को यह विश्वास नहीं दिलाया जा सकता है कि प्रकृति एक सच्ची एजेंट है, जो लोग सर्व-महान निर्माता को नकारते हैं और ईश्वरीय शक्ति के चमत्कारी कार्यों को समझने से इनकार करते हैं, वे इस अंधे, अज्ञानी प्रकृति को चीजों की उत्पत्ति के रूप में देखना शुरू कर सकते हैं।

प्रकृति एक छपी हुई चीज़ है, प्रिंटर नहीं; एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं; एक वस्तु जिस पर काम किया जाता है, एजेंट नहीं; एक नियम या उपाय, कोई मूल नहीं; एक आदेश, कोई आदेश देने वाला नहीं। यह शक्ति के बिना एक सिद्धांत है, वास्तविक या बाहरी अस्तित्व के बिना कानूनों का एक समूह है जो इच्छा और शक्ति के दिव्य गुणों से निकलता है।

मान लीजिए कि एक युवा व्यक्ति किसी दूसरी दुनिया से इस खूबसूरत दुनिया में आता है और एक खूबसूरत, समृद्ध रूप से सुसज्जित महल में प्रवेश करता है। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई देता है, जिसके कारण इस इमारत और सजावट का श्रेय दिया जा सके। इसलिए यह व्यक्ति, एक विस्तृत पुस्तक को देखने के बाद, जिसमें महल के निर्माण और साज-सज्जा के बारे में विस्तृत जानकारी और जानकारी है, और अपनी अज्ञानता और निर्माता के प्रति जुनून के कारण, यह सोचता है कि पुस्तक ने महल का निर्माण किया है। इसी तरह, कुछ लोग सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के बारे में असावधानी करते हैं

उन्हें प्राकृतिक दुनिया को अपने रूप में स्वीकार करने में खुद को धोखा देने की अनुमति देता है स्वयं प्रवर्तक.

ईश्वर के पास दो तरह की शरिया हैं। एक ईश्वरीय गुण से निकलती है भाषण और अपने स्वतंत्र क्षेत्र से निकलने वाले सेवकों के कार्यों को नियंत्रित या आदेश देता है इच्छाशक्ति। इच्छाशक्ति और शक्ति के दिव्य गुण से उत्पन्न अन्य मुद्दे, सृष्टि के दिव्य आदेशों को शामिल करते हैं, और दिव्य मार्ग का परिणाम हैं अभिनय का। पहले में समझने योग्य कानून शामिल हैं, जबकि दूसरे में नाममात्र के नियम हैं, जिन्हें गलत तरीके से "प्रकृति के नियम" कहा जाता है। अस्तित्व में उनका कोई रचनात्मक या आविष्कारशील हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह दिव्य शक्ति के लिए अद्वितीय है।

जो कुछ भी अस्तित्व में है वह सभी अन्य चीजों से जुड़ा हुआ है; कुछ भी अस्तित्व में नहीं हो सकता या फिर खुद से जीवित रह सकते हैं। जिसने एक चीज़ बनाई, उसने सभी चीज़ें बनाईं, और केवल एक ही हो सकता है, जो हमेशा सभी के लिए चाहा जाता है। इसके विपरीत, प्राकृतिक कारण, जिनके लिए गुमराह लोग रचनात्मकता का श्रेय देते हैं, असंख्य हैं, वे नहीं जानते एक दूसरे से दूर हैं और अंधे हैं। उन्हें रचनात्मकता का श्रेय देना स्वीकार करने का मतलब है कि असंख्य अंधी, बेजान चीजें संयोग से एक साथ आ गई हैं और उस विशाल, व्यवस्थित ब्रह्मांड का निर्माण किया, [अस्तित्व, व्यवस्था और सामंजस्य जिसके लिए स्पष्टतः पूर्ण ज्ञान और इच्छा, शक्ति और बुद्धि की आवश्यकता होती है]। फिर उन्हें डुबकी लगाने और खेलने के लिए छोड़ दें (6:91)।

संक्षेप में: ब्रह्मांड की पुस्तक में देखी गई व्यवस्था और नियमितता, और इसकी रचना में प्रकट चमत्कारिकता, ईश्वरीय शक्ति के दो प्रमाण हैं एकता यह दर्शाती है कि ब्रह्माण्ड और इसकी सामग्री परम सत्ता के कार्य हैं ईश्वर की शक्ति, अनंत ज्ञान और शाश्वत इच्छा।

प्रश्न: व्यवस्था, सामंजस्य और नियमितता कैसे स्थापित की जा सकती है?

उत्तर: विज्ञान ऐसे काम करता है मानो मानवता की इंद्रियों ने इसकी खोज कर ली हो। निगमन और आगमन द्वारा क्रम। विज्ञान की प्रत्येक शाखा या तो पर आधारित है या अस्तित्व के एक पहलू का अध्ययन करता है। विज्ञान के सार्वभौमिक सिद्धांत कहाँ से उत्पन्न होते हैं यह व्यवस्था, सामंजस्य और नियमितता है। प्रत्येक शाखा में उस प्रजाति में प्रचलित सार्वभौमिक सिद्धांत और नियम शामिल होते हैं जिसका वह अध्ययन करती है। उन सिद्धांतों की सार्वभौमिकता और एकरूपता व्यवस्था की भव्यता की ओर इशारा करती है, क्योंकि इसके बिना सार्वभौमिक नियमों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वैज्ञानिक विज्ञान के माध्यम से उस व्यवस्था की खोज करते हैं, और इसके द्वारा देखते हैं कि वृहद मानव (ब्रह्मांड) उनके समान ही व्यवस्थित है। हर चीज में बुद्धि है, क्योंकि कुछ भी उद्देश्यहीन या उद्देश्यहीन नहीं है

उसे अपने हाल पर छोड़ दिया गया।

सृष्टि की पुस्तक, इसकी सभी प्रणालियों, जीवित प्राणियों की दुनियाओं के साथ और कण, दिव्य एकता की घोषणा करते हैं। कुल मिलाकर वे घोषणा करते हैं: कोई नहीं है भगवान लेकिन भगवान.

तीसरा प्रमाण: कुरान

जब आप इस स्पष्ट प्रमाण को सुनेंगे, तो आप इसे दोहराते हुए सुनेंगे: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है। यह प्रमाण एक विशाल वृक्ष की तरह है जिसकी शाखाओं पर सत्य के असंख्य, शानदार फल लटके हुए हैं। चूँकि ऐसा वृक्ष सड़े हुए बीज से नहीं उग सकता, इसलिए सभी देख सकते हैं कि इसका बीज (ईश्वरीय एकता) स्वस्थ और जीवंत है।

इस वृक्ष की शाखा जो दृश्यमान भौतिक जगत में फैली हुई है, वह सर्वाधिक सुदृढ़ और यथार्थपूर्ण आदेशों और नियमों के फल उत्पन्न करती है, जबकि इसकी दूसरी बड़ी शाखा जो अदृश्य जगत में फैली हुई है, ईश्वरीय एकता और अदृश्य में विश्वास से उत्पन्न पके फलों से लदी हुई है।

यदि इस व्यापक प्रमाण का बारीकी से अध्ययन किया जाए, तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जिसने इसे संप्रेषित किया था, वह इसके परिणाम (ईश्वरीय एकता) के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त था, और इसकी सत्यता के बारे में उसे कोई संदेह नहीं था। उसने अपने अन्य दावों को इस दृढ़ परिणाम पर आधारित किया, और जो कुछ भी मौजूद है, उसे परखने के लिए इसे एक मानदंड बनाया। ऐसा आधार, जो इतनी दृढ़ता से स्थापित है और चमत्कारी होने की स्पष्ट मुहर लगाता है, उसे दिखावे और दिखावे की आवश्यकता नहीं है, और दूसरों द्वारा सत्य घोषित किए जाने से स्वतंत्र है। यह जो कुछ भी कहता है और घोषित करता है, और इसकी सभी खबरें, सत्य हैं।

इस प्रकाशमान प्रमाण के सभी छह पक्ष पारदर्शी और स्पष्ट हैं। इस पर प्रत्यक्ष चमत्कार की मुहर है, इसके नीचे तर्क और प्रमाण हैं, इसके दाहिनी ओर बुद्धि की स्वीकृति है, इसके बाईं ओर विवेक की गवाही है, इसके सामने दोनों दुनियाओं में अच्छाई और खुशी है, और यह शुद्ध रहस्योद्घाटन पर आधारित है।

ऐसे दुर्जेय गढ़ में संदेह कैसे प्रवेश कर सकता है?

पूर्णता के सिंहासन तक पहुंचने के लिए चार मार्ग हैं, जो ईश्वर का ज्ञान है: पहला: सूफियों का मार्ग, जो शारीरिक आत्म को शुद्ध करने और

आध्यात्मिक प्रकाश पर आधारित है।

दूसरा: धर्मशास्त्रियों का मार्ग, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान-अस्तित्व के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए इस तर्क पर निर्भर करता है कि हर चीज़ समय और स्थान में आकस्मिक रूप से अस्तित्व में आती है। इस प्रकार इसका अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है, जिसका अर्थ है कि एक शाश्वत है जो उनके अस्तित्व को पसंद करता है और अपनी इच्छा से उन्हें अस्तित्व में लाता है।

यद्यपि दोनों ही मार्ग कुरान से लिए गए हैं, फिर भी उनके अनुयायियों में

उन्हें जटिल बना दिया और इस प्रकार संदेह पैदा हो गया।

तीसरा: दार्शनिकों का मार्ग संदेह, संकोच, भ्रम और भ्रम से दूषित है।

और कल्पनाएँ.

चौथा (और सबसे अच्छा): कुरान का मार्ग, जो अपनी चमत्कारी वाक्पटुता, सुंदर शैली, प्रत्यक्षता और अतुलनीय व्यापकता के साथ पूर्णता के सिंहासन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सीधा और समावेशी, साथ ही सबसे छोटा मार्ग है।

उस सिंहासन तक पहुंचने के चार साधन हैं: प्रेरणा, सीखना या अध्ययन, शुद्धि, और चिंतन।

कुरान ईश्वर के ज्ञान के लिए दो रास्ते बताता है, उसकी महिमा हो,
और परमेश्वर की एकता को सिद्ध करना।

पहला तर्क पक्षपात और उद्देश्यपूर्णता का है

कुरान की सभी आयतें जो चीज़ों के फ़ायदे या उपयोगों और उनके अस्तित्व के लिए बुद्धिमत्ता या उद्देश्य का उल्लेख करती हैं, इस तर्क को “बुनती” हैं और दर्पण के रूप में काम करती हैं जिसमें यह प्रतिबिंबित होता है। इस तर्क को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है: हर चीज़ मज़बूती और कलात्मक रूप से बनाई गई है। सृष्टि में पूर्ण क्रम, जो कुछ उद्देश्यों और उपयोगों के लिए है और हर चीज़ के अस्तित्व में स्पष्ट है, यह दर्शाता है कि सर्वज्ञ निर्माता ने उन्हें एक उद्देश्य के लिए बनाया है।

ऐसी स्पष्ट इच्छा और इरादे में संयोग और संयोग के लिए कोई जगह नहीं बचती।

सृष्टि से संबंधित कोई भी विज्ञान इस सुव्यवस्था की गवाही देता है, अस्तित्व की शाखाओं से लटकते हुए उपयोगों और फलों की ओर इशारा करता है, तथा दैनिक, मासिक और मौसमी परिवर्तनों के पीछे छिपी बुद्धिमत्ता और लाभकारी परिणामों को प्रकट करता है।

प्राणीशास्त्र और वनस्पति विज्ञान को ही लें। दुनिया में सैकड़ों हज़ारों (यहाँ तक कि लाखों) पौधे और पशु प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक का एक पहला, मूल पूर्वज था। मानवता के लिए, यह आदम था। इन प्रजातियों का प्रत्येक सदस्य एक उत्कृष्ट, अद्भुत तंत्र की तरह है। कोई यह कैसे दावा कर सकता है कि नाममात्र अस्तित्व के तथाकथित नियम और अज्ञानी, अंधे प्राकृतिक कारण प्राणियों की इन असंख्य शृंखलाओं का निर्माण कर सकते हैं? प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक सदस्य यह घोषणा करते हैं कि वे बुद्धिमान, दिव्य शक्ति के हाथ से निकले हैं।

कुरान हमें यह तर्क सिखाता है: अपनी निगाहें फिराओ; क्या तुम्हें कोई दरार नज़र आती है? (67:3)। हमें जीवों पर चिंतन करने का आदेश देकर और उनके उपयोगों या लाभों को ईश्वरीय उपहार के रूप में उल्लेख करके, कुरान मानव मन में इस तर्क को स्थापित करना चाहता है, और फिर आयतों के निष्कर्ष और विभाजन में उन पर विचार करने के लिए तर्क का आह्वान करता है। यह जीवों की भूमिका को स्पष्ट करता है।

तर्क करता है और विवेक को इस प्रकार के निष्कर्षों से जगाता है: क्या वे नहीं जानते?
क्या वे चिंतन नहीं करेंगे और सबक नहीं सीखेंगे?

दूसरा है आविष्कार का तर्क

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक सदस्य को एक अस्तित्व दिया है, जो उन कार्यों को पूरा करेगा और उन पूर्णता को प्राप्त करेगा जो वह प्राप्त करेगा। कोई भी प्रजाति
अनंत काल से आता है, क्योंकि हर प्रजाति की एक शुरुआत होती है और उसका अस्तित्व होता है
बिल्कुल ज़रूरी नहीं है। हर चीज़ ज़रूरी रूप से मौजूद है
किसी की इच्छा और पसंद, जबकि इसका अस्तित्व में होना या न होना समान रूप से संभव है।
इस सत्य को बदला नहीं जा सकता.

विकास भी असंभव है, क्योंकि उत्परिवर्तन केवल एक प्रजाति के भीतर ही होते हैं,
और कोई मध्यवर्ती प्रजाति नहीं है। अगर ईश्वर ने किसी प्रजाति को दण्ड देने के लिए उसे दूसरी प्रजाति में बदल दिया, तो वह प्रजाति जीवित नहीं रह सकती। चूँकि पदार्थ परिवर्तनशील है और
समय और स्थान से स्वतंत्र न होकर, इसकी एक शुरुआत है। बल और रूप हैं
आकस्मिक है और किसी प्रजाति के विविध सार या पदार्थ का मूल नहीं हो सकता है, क्योंकि कोई आकस्मिक चीज किसी चीज का सार या पदार्थ नहीं हो सकती है।
इस प्रकार सभी प्रजातियों के पदार्थ, उनकी विविधता और विशिष्टता के साथ
गुण, गैर-अस्तित्व से बनाए गए थे। पीढ़ी या प्रजनन है
केवल बाद में उनकी निरंतरता के लिए एक शर्त।

यह कितनी विचित्र बात है कि जो लोग सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की शाश्वतता को नकारते हैं - यद्यपि शाश्वतता उसके अपरिहार्य गुणों में से एक है - वे उसे ईश्वर पर आरोपित करते हैं।
पदार्थ, जो समय और स्थान में समाहित है। सबसे छोटा पदार्थ कहाँ हो सकता है
अंधे, अज्ञानी और असहाय कण को शक्ति, स्थिरता और दृढ़ता मिलती है
जिसके आगे ब्रह्मांड समर्पण और श्रद्धा से झुकता है?
क्या ईश्वरीय शक्ति के गुणों, सृजन और उत्पत्ति को, सबसे अधिक शक्तिहीन और कमजोर चीजों, प्राकृतिक कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?

कुरान सृष्टि और सृष्टि का उल्लेख करते हुए इस तर्क को स्थापित करता है।
आविष्कार, और पुष्टि करता है कि केवल ईश्वर, एक, के पास रचनात्मक शक्ति है।
ये तो ईश्वरीय शक्ति और उसकी महानता के सामने मन को भटकने से रोकने के लिए मात्र परदे हैं।
सांसारिक कार्यों में उनकी शक्ति का हाथ होने को सतही दृष्टि से देखकर सर्व-पवित्र दिव्य सत्ता के बारे में गलत निष्कर्ष निकालने से बचें।
मामले.

हर चीज़ के दो पहलू होते हैं। एक उसका प्रत्यक्ष पहलू, जो एक वस्तु की तरह होता है।
दर्पण का घना, काला चेहरा जिसमें विपरीत - छोटे और महान, अच्छे और
बुराई, सुन्दरता और कुरूपता - एक साथ मौजूद हैं। यहाँ, कारण सर्वशक्तिमान की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं
भव्यता और गरिमा। दूसरा आंतरिक, अमूर्त पहलू है, जो
दर्पण के पॉलिश या पारदर्शी चेहरे की तरह। यह पहलू शुद्ध और बिल्कुल सुंदर है और, जैसा कि दिव्य एकता द्वारा अपेक्षित है, इसमें कारणों के लिए कोई जगह नहीं है। चूँकि
जीवन और आत्मा, साथ ही प्रकाश और अस्तित्व जैसी चीजें भी भगवान द्वारा बनाई गई थीं।

कारणों की “सहायता” के बिना शक्ति के हाथ से संचालित, उनके बाह्य और आंतरिक दोनों पहलू सुंदर हैं।

चौथा प्रमाण: मानव विवेक (चेतन प्रकृति)

पहला: चीज़ों के प्राकृतिक या जन्मजात गुण झूठ नहीं बोलते। बीज में बढ़ने की प्रवृत्ति होती है, मानो कह रहा हो: “अगर मुझे बोया जाए, तो मैं बढ़ूँगा और फल दूँगा।”

यह सच कहता है। एक अंडे में जीवन के प्रति झुकाव होता है जैसे कि वह कह रहा हो: "मैं चूजा बनूंगा," और वह चूजा बन जाता है। जब एक मुट्ठी पानी जमने और फिर फैलने की प्रवृत्ति रखता है, तो वह कहता है: "मैं एक व्यापक स्थान को कवर करूंगा" और लोहे को भी तोड़ देता है, भले ही वह कठोर और दृढ़ क्यों न हो। इस तरह की प्रवृत्तियाँ ईश्वरीय इच्छा से जारी सृष्टि के आदेशों को प्रकट करती हैं।

दूसरा: मानव इंद्रियाँ केवल पाँच ज्ञात इंद्रियों तक सीमित नहीं हैं।

व्यक्ति के पास अदृश्य की ओर खुलने वाली कई “खिड़कियाँ” हैं, और कई अन्य इंद्रियाँ हैं जिनकी प्रकृति के बारे में वह जानता है या नहीं जानता। उदाहरण के लिए, ड्राइव और ऊर्जा दो अन्य इंद्रियाँ हैं जो झूठ नहीं बोलतीं।

तीसरा: कोई काल्पनिक और नाममात्र का अस्तित्व बाहरी, दृश्यमान अस्तित्व का मूल नहीं हो सकता। निर्भरता (या समर्थन) का बिंदु और सहायता मांगने का बिंदु, दोनों ही लोग अनिवार्य रूप से अपने भीतर महसूस करते हैं, उनके विवेक या सचेत प्रकृति के दो आवश्यक पहलू हैं।

इन दो बिन्दुओं का अभाव, जो सृष्टि में विद्यमान बुद्धि, व्यवस्था और पूर्णता के साथ असंगत है, का अर्थ होगा कि मानव प्राणी, जो मूलतः शुद्ध आत्मा वाला महान प्राणी है, निम्नतम स्तर पर पहुंच जाएगा।

चौथा: भले ही तर्क ठीक से काम न करे और सत्य को न देख पाए, लेकिन मानव विवेक सृष्टिकर्ता को नहीं भूलता। भले ही किसी का आत्म-स्वरूप उसे नकार दे, लेकिन विवेक उसे देखता है, उस पर चिंतन करता है, और उसकी ओर मुड़ता है। सहज बोध उसे जगाता है, और प्रेरणा उसे प्रकाशित करती है।

परमेश्वर का प्रेम विवेक को सर्वशक्तिमान का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

यह प्रेम, उसके प्रति तीव्र लालसा जो एक प्रबल इच्छा पर आधारित प्रबल प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है, मानव अंतःकरण में जन्मजात होती है। इस अंतःकरण में (उसके प्रति) जो आकर्षण निहित है, वह उस एक के अस्तित्व के कारण है जो वास्तव में आकर्षित करता है।

इन प्रारंभिक नोट्स के बाद, अंतःकरण पर गौर करें और देखें कि यह किस प्रकार एक प्रमाण है, जो प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को सौंपा गया है, तथा दिव्य एकता की घोषणा करता है।

जिस प्रकार हृदय पूरे शरीर में प्राण प्रवाहित करता है, उसी प्रकार ईश्वर का ज्ञान, जो उसके (आध्यात्मिक) जीवन का स्रोत है, समस्त मानवीय महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं को ऊर्जा प्रदान करता है और उन्हें जीवंत बनाता है।

यह उनमें आनंद और खुशी भी भर देता है, उनका मूल्य बढ़ाता है,
यह उन्हें विस्तृत या विकसित करता है, तथा उन्हें तीक्ष्ण बनाता है। यही सहायता मांगने का उद्देश्य है।

ईश्वर का ज्ञान एक सहारा और भरोसा है जिस पर लोग अपना जीवन आधारित करते हैं। यदि लोग उस सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता पर विश्वास नहीं करते, जिसका
हर कार्य में व्यवस्था और बुद्धिमत्ता होती है, लेकिन चीजों और घटनाओं को
अंधे संयोग (जो दुर्भाग्य का विरोध नहीं कर सकता), वे नरक जैसी स्थिति में रहेंगे। इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती, क्योंकि मानवता एक महान रचना है और इसमें सबसे बड़ी शक्ति है
पूर्णता प्राप्त करने की क्षमता। यह ब्रह्मांड की पूर्व-निर्धारित, दृढ़ व्यवस्था के भी विरुद्ध है। ये दो बिंदु किसी की आत्मा के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता अपने ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए उनका उपयोग करता है
हर व्यक्ति के विवेक में। भले ही तर्क की आंखें अंधी हों,
अंतरात्मा की आंखें हमेशा खुली रहती हैं।

इन चार व्यापक तर्कों की गवाही से पता चलता है कि
सर्व-महान सृष्टिकर्ता अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता है और शाश्वत, एक और
एकल, अद्वितीय और सभी का सदा-प्रार्थनाशील, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान,
सर्व-इच्छुक और सर्व-श्रवण, सर्व-देखने वाला और सर्व-बोलने वाला, सर्व-जीवित और
वह स्वयंभू है। वह महिमा और अनुग्रह के सभी गुणों से भी युक्त है।
पूर्णता के नाम पर जो कुछ भी प्राणी के पास है वह राजसी सृष्टिकर्ता की पूर्णता की छाया-रूपी अभिव्यक्ति से आता है। सौंदर्य, अनुग्रह और
पूर्णता, सृष्टि द्वारा साझा की गई सुंदरता, अनुग्रह और पूर्णता के योग से अनंत गुना अधिक है। इसके अलावा, सर्व-महिमावान सृष्टिकर्ता में कोई दोष नहीं है, क्योंकि
दोष भौतिक प्राणियों की अपूर्ण जन्मजात क्षमताओं से उत्पन्न होता है।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर भौतिकता से मुक्त है, तथा सृष्टि की प्रकृति के लिए आवश्यक गुणों से मुक्त है।

> उसके समान कोई नहीं है; वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है।
> (42:11)
>
> महिमा है उसकी जो अपनी प्रबलता के कारण छिपाए रखता है।
> उनका प्रकटीकरण, जो अपने विपरीत के अभाव के कारण छिपे हुए हैं, और जो अपनी गरिमा के कारण प्राकृतिक कारणों से ढके हुए हैं।

प्रश्न: अस्तित्व की एकता (वहदत अल-वुजूद) के बारे में आपका क्या कहना है?

उत्तर: ईश्वरीय एकता में लीन होने से ही अस्तित्व की एकता आती है।
इसे आंतरिक रूप से और गहराई से अनुभव किया जाता है तथा यह सिद्धांत और विचार तक सीमित नहीं है।
ईश्वरीय एकता में गहन तल्लीनता (ईश्वर की एकता में विश्वास के बाद)
भगवान और देवता) शक्ति की एकता में विश्वास पैदा करता है (केवल भगवान ही सृजन करता है)।
शक्ति की एकता में विश्वास, प्रभुत्व और अखंडता की एकता में विश्वास को जन्म देता है।

शासन, जो बदले में, जो देखा जाता है उसे एकजुट (एकता) के रूप में देखने में समाप्त होता है
साक्षी) और अंत में अस्तित्व की एकता में। इससे अस्तित्व को एक या एकजुट रूप में देखने की ओर अग्रसर होता है, और फिर जो मौजूद है उसे एकजुट रूप में देखने की ओर अग्रसर होता है।

कुछ सूफियों की उन्मादपूर्ण बातें जो वास्तव में कही गई बातों से परे जाती हैं, उन्हें इस मार्ग की सच्चाई के प्रमाण के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।
कारण और प्रभाव के क्षेत्र से खुद को बचा लिया, जिन्होंने अपने
जो लोग कार्य-कारण के नियम पर विचार करते हैं, अस्तित्व की एकता (सृजित संस्थाओं सहित) के बारे में बोलते हैं, वे अपनी सीमाओं को पार कर जाते हैं। जो लोग वास्तव में महसूस करते हैं
और इस एकता के बारे में बात करते हुए खुद को अनिवार्य रूप से विद्यमान तक ही सीमित रखते हैं
सृष्टि से अलग रहना और ईश्वर को एकमात्र सच्चा अस्तित्ववान देखना
प्राणी।

परिणाम को साक्ष्य के साथ या उसमें निहित देखना
अर्थात्, सर्वशक्तिमान निर्माता को एकमात्र सच्चे अस्तित्व वाले प्राणी के रूप में देखना,
दिव्य सत्ता के अस्तित्व के दृश्य और अनुभव को आत्मसात करने से आता है। यह ईश्वरीय अभिव्यक्तियों को देखने या समझने का परिणाम है
अस्तित्व के चैनल और चीजों के आंतरिक आयाम में दिव्य तेजोमय प्रवाह, और दिव्य नामों और गुणों की अभिव्यक्ति
प्राणियों के दर्पण.

मेरा व्यक्तिगत विचार इस प्रकार है: यह धारणा आंतरिक अनुभव और संवेदन से संबंधित है। हालाँकि, इस तरह के विश्वास या आंतरिक अनुभव को मान्यता नहीं दी जा सकती है।
जो लोग एकता की भावना को मानते हैं, वे इसे दिव्यता के रूप में व्याख्या करते हैं जो प्राणियों में व्याप्त है। दार्शनिक या वे जो
जो लोग अपनी बुद्धि या इन्द्रियजनित छापों से सत्य को खोजने का प्रयास करते हैं,
इस तरह यह एक दार्शनिक या बौद्धिक विषय है और इस प्रकार झूठे विचारों का स्रोत है
और अवधारणाएँ.

कुछ भौतिकवादी, सर्वेश्वरवादी दार्शनिक भी ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं।
हालाँकि, दोनों समूह इस वाक्यांश को परस्पर अनन्य रूप से समझते हैं
उनके बीच पाँच महत्वपूर्ण अंतर हैं:

प्रथम: सूफी विद्वान अपने दृष्टिकोण को अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता तक सीमित रखते हैं
और उस पर इतनी दृढ़ता से चिंतन करते हैं कि वे ब्रह्मांड के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, क्योंकि, उनके शब्दों में, केवल अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता ही वास्तव में विद्यमान है;
बाकी सब कुछ भ्रम है। भौतिकवादी दार्शनिक और कमज़ोर विश्वास वाले लोग
पदार्थ पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और ईश्वरत्व को समझने से दूर रहते हैं। वे पदार्थ को प्राथमिकता देते हैं और कहते हैं कि केवल पदार्थ या भौतिक चीजें ही अस्तित्व में हैं।
अपने अविश्वास के कारण, वे ईश्वरत्व को पदार्थ में निहित या मूर्त रूप में देखते हैं, या

वे अपने दृष्टिकोण को केवल ईश्वर तक ही सीमित रखकर ईश्वरत्व के प्रति उदासीन रहना पसंद करते हैं।
कविता.

दूसरा: जो सूफी लोग अस्तित्व की एकता में विश्वास करते हैं, वे ब्रह्मांड को एक रूप में देखते हैं। कुछ ऐसा जो देखा या महसूस किया जा सकता है। हालाँकि, अन्य लोग ब्रह्मांड को वास्तव में अस्तित्व में मानते हैं और भौतिक रूप से मौजूद चीज़ों की एकता में विश्वास करते हैं।

तीसरा: सूफी संतों का मार्ग आंतरिक अनुभव से संबंधित है, जबकि अन्य संतों का मार्ग आंतरिक अनुभव से संबंधित है। अन्य लोग विशुद्धतः तर्कवादी मार्ग का अनुसरण करते हैं।

चौथा: सूफी संत सत्य, सर्वशक्तिमान में खोए रहते हैं, और मानते हैं ब्रह्मांड को दिव्यता के दृष्टिकोण से देखते हैं। अन्य लोग प्राणियों में लीन रहते हैं और उनके हित के लिए तथा उस लीनता के भीतर से उन पर चिंतन करते हैं।

पांचवां: सूफी संत ईश्वर की पूजा करते हैं और उनसे गहरा प्रेम करते हैं, जबकि अन्य वे स्वयं को बहुत पसंद करते हैं और अपनी कल्पनाओं का अनुसरण करते हैं।

ये दोनों रास्ते सर्वोच्च स्वर्ग और पृथ्वी की तरह अलग-अलग हैं, उज्ज्वल प्रकाश और घना अंधकार.

आगे की जानकारी के लिए एक नोट

यदि पृथ्वी अलग-अलग रंग के कांच के टुकड़ों से बनी होती, तो प्रत्येक टुकड़ा अलग-अलग रंग का होता। सूर्य का प्रकाश प्राप्त करें और उसे उसी के अनुसार परावर्तित करें। हालाँकि एक टुकड़ा सूर्य का प्रकाश प्राप्त नहीं करेगा या सूर्य या उसके प्रकाश को प्रतिबिंबित करें, यदि प्रत्येक टुकड़ा बोल सकता, तो यह कहेगा: "मैं एक सूरज हूँ।" इसी तरह, अगर उन मुस्कुराते, चमकीले फूलों के रंग कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि वे सूर्य के प्रकाश के सात रंगों की अभिव्यक्तियाँ हैं, फिर भी प्रत्येक कहेगा: “सूर्य मुझसे मिलता जुलता है” या “सूर्य विशेष रूप से मेरा है।”

वे भ्रम संतों के लिए जाल हैं,
जबकि वास्तविकता में वे प्रतिबिंब हैं
ईश्वर के बगीचे में चमकता हुआ चेहरा।105

जो लोग नाम में साक्षी की एकता (या अनुभूति) में विश्वास करते हैं अस्तित्व की एकता के लिए संयम, जागृति और विवेक का पालन करना चाहिए। आध्यात्मिक नशे का एक रास्ता है, साक्षी की एकता एक सुरक्षित रास्ता है।

भगवान की कृपा और आशीर्वाद के बारे में सोचो।
क्योंकि तुम ऐसा करने में असमर्थ हो।106

मानवता की वास्तविकता:
जबकि मानवता इसे समझ नहीं सकती,

105 मौलाना जलाल अल-दीन अल-रूमी, अल-मथनावी अल-कबीर, 1:3।

106 एक भविष्यवाणी परंपरा. तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, 6456।

मानवता कैसे समझ सकती है
वह शाश्वत सर्व-सम्मोहक कौन है?
वही है जिसने चीज़ों को पैदा किया और उनका निर्माण किया।
जो स्वयं एक श्वास है, वह उसे कैसे अनुभव कर सकता है?

समाप्त करने के लिए:

• सर्वशक्तिमान ईश्वर के चार प्रमाण हैं पैगम्बर मुहम्मद, पवित्र पुस्तक (ब्रह्मांड का), कुरान, और मानव विवेक या चेतना, जो अदृश्य और भौतिक, दृश्य जगत का मिलन बिंदु है।

• क्या लोग अपनी बुद्धि से सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को खोज सकते हैं? • सृष्टि की पुस्तक का क्रम इतना सूक्ष्म और नाजुक है कि उसमें एक बिंदु रखना मुश्किल है।

इसके सटीक स्थान के लिए एक परम शक्ति की आवश्यकता होती है जो सब कुछ बना सकती है। • गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण, साथ ही गति और इसी तरह की घटनाएँ, नाम हैं

ईश्वरीय सिद्धांतों या संचालन के तरीकों को कानूनों के रूप में दर्शाया गया है। • कुछ लोग पदार्थ की शाश्वतता में विश्वास क्यों करते हैं और सभी का निर्माण ईश्वरीय सिद्धांत या ईश्वरीय सिद्धांत के अनुसार क्यों होता है?

क्या मनुष्य जाति कणों या इसी तरह की चीज़ों की यादृच्छिक गति से प्रभावित होती है? • मानवता एक महान रचना है। सत्य की खोज करते समय, लोग कभी-कभी

झूठ ढूँढ़ते हैं और उसे अपने दिल में रखते हैं; कभी-कभी वे गुमराही ढूँढ़ लेते हैं और इसे अपनाएं.

• ईश्वर के पास दो प्रकार के शरीयत हैं: एक जो किए गए कार्यों को नियंत्रित करता है या आदेश देता है एक में स्वतंत्र इच्छा है, और दूसरे में सृष्टि के दिव्य आदेश शामिल हैं और यह ईश्वरीय कार्य करने के तरीके का परिणाम है। • सृष्टि में देखी जाने वाली व्यवस्था, सामंजस्य और नियमितता कैसे स्थापित की जा सकती है?

क्या आपने कभी सोचा है?

• कुरान एक विशाल फल-लदे वृक्ष के समान है जिसकी दो बड़ी शाखाएँ हैं: एक इस दुनिया में और दूसरा अदृश्य में।

• पूर्णता के सिंहासन तक पहुँचने के चार रास्ते हैं: सूफियों, धर्मशास्त्रियों, दार्शनिकों और कुरान के बीच अंतर। • पक्षधरता, उद्देश्य और आविष्कार के कुरानिक तर्क। • हर चीज का एक स्पष्ट और एक आंतरिक आध्यात्मिक पहलू होता है।

• चीजों के प्राकृतिक या जन्मजात गुण झूठ नहीं बोलते। • भरोसा (या समर्थन) और मदद मांगने का बिंदु दो बिंदु हैं

मानव विवेक या चेतन प्रकृति के आवश्यक पहलू। • लोगों के पास कई अन्य इंद्रियाँ होती हैं, जिनकी प्रकृति के बारे में वे जानते हैं या समझते हैं।
अनजान.

• ईश्वर का ज्ञान लोगों के लिए सहारा और भरोसा का विषय है। • अस्तित्व की एकता (वहदत अल-वुजूद) की सच्चाई और इसका ईश्वर से अंतर
सर्वेश्वरवाद.

बारहवाँ ग्रंथ

बारहवाँ ग्रंथ

कुरान की आयतों की रोशनी से एक रोशनी

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

... और हम उसी से सहायता चाहते हैं।

प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने हमें इस मार्ग की ओर मार्ग दिखाया। यदि अल्लाह हमें मार्ग न दिखाता तो हम मार्ग न पाते। निस्संदेह हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए। (7:43)

शांति और आशीर्वाद सत्य के तर्क पर सृष्टि के लिए, पैगम्बरों के राजा, शुद्ध विद्वानों के प्रमाण और संसार के पालनहार के प्रिय, और उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर हो।

K अब, हे मित्र, पृथ्वी की सभी विशेषताओं पर उस एक, जो सदा-सर्वदा-प्रार्थित है, की विभिन्न छापें हैं। एक पर्वत यह दर्शाता है कि वह सर्व-महिमावान की संपत्ति है, इस पर रहने वाले अनेक जानवर और वृक्ष, जो सर्व-महिमावान की संपत्ति हैं।

यह सर्वशक्तिमान का प्राणी है, जैसा कि इस पर लगे पौधों और पक्षियों की शानदार मुहरों से प्रमाणित होता है। यह उनके संदेशों में से एक है, जैसा कि इसके कोनों पर लगी मुहरों से प्रमाणित होता है, जैसे कि सजे हुए फूल और सुंदर फल। जब आप जानते हैं कि ताड़ का पेड़ और मधुमक्खी सर्वशक्तिमान की संपत्ति और प्राणी हैं, तो आप समझेंगे कि सभी ताड़ के पेड़ और मधुमक्खियाँ भी उनकी संपत्ति हैं।

सभी टिकटें और मुहरें एक सम्राट और स्वामी, सदा-से-सभी-के-लिए-प्रार्थित, की हैं, क्योंकि सभी चीजें लगभग दुनिया भर में एक ही स्थान पर पाई जाती हैं।

एक ही क्षण। अस्तित्व और आविष्कार, रूप और निर्माण, साथ ही समय में पहचान, यह दर्शाती है कि उनका निर्माता एक और एकल है, जो एक ही समय में कई काम कर सकता है या कह सकता है और बिना भ्रमित हुए कई ज़रूरतों को सुन और पूरा कर सकता है।

हे मित्र, जान लो कि यदि तुम कुरान के चमत्कारिकता के बारे में सुनना चाहते हो, क्योंकि यह कुरान के सागर से मुझमें प्रवाहित होता है, तो निम्नलिखित को सुनो, जो मैं खुद को संबोधित करता हूं: हे सईद! अपने आप और अपनी असावधानी से बेपरवाह! असावधानी,

कृतघ्नता और अविश्वास निराधार धारणाओं या धारणाओं से उत्पन्न होते हैं। यदि आप किसी चीज को - विशेष रूप से किसी जीवित चीज को - सर्वशक्तिमान को नहीं देते हैं, तो आपको मिट्टी, हवा और पानी के सभी कणों और यौगिकों को दिव्यता प्रदान करनी चाहिए, और भगवान की अभिव्यक्तियों के रूप में कई देवताओं को स्वीकार करना चाहिए। प्रत्येक मिट्टी का कण पौधों और पेड़ों, फूलों और फलों के विकास के लिए काम आता है। एक गमले में थोड़ी मिट्टी डालें। यदि आप इसमें अंजीर, अनार या सेब के बीज डालते हैं, तो आपको क्रमशः एक अंजीर, अनार या सेब का पेड़ मिलेगा। अगर अंजीर के बीज में काम करने वाली नियति की प्रणाली चीनी कारखाने की तरह है, तो अनार के बीज में काम करने वाली शक्ति की मशीन कपड़ा कारखाने की तरह हो सकती है। अगर आप एक ही गमले में फूलों के बीज डालेंगे, तो आपको फूल मिलेंगे।

हे बर्तन के स्वामी, जान लो कि यदि तुम्हारी असावधानी तुम्हें भौतिकवादियों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करती है, तो तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि तुम्हारे बर्तन में उतने ही कारखाने हैं जितने फल देने वाले वृक्ष हैं, ताकि अनंत रूप से विभिन्न वृक्षों के सभी भाग बनाए जा सकें, तथा जितने फूल हैं, उतनी ही क्रियाविधि भी हैं। मिट्टी के कणों में भी प्रत्येक वृक्ष और फूल को उगाने के लिए उतना ही ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए, तथा उन्हें अलग-अलग पहचानने की आवश्यक क्षमता होनी चाहिए।

यदि आप पेड़ों और फूलों के अस्तित्व का श्रेय प्रकृति को देते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा कि प्रकृति के पास प्रत्येक मिट्टी के कण में असंख्य मुद्रण मशीनें हैं। बीज लगभग एक ही संरचना और सामग्री की भौतिक चीजें हैं, और निर्माण और आकार में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। इसलिए, उनका विभिन्न पेड़ों या फूलों में विकसित होना कुछ ग्राम कपास को रेशम या साटन, ब्रॉडक्लोथ या ऊन के रोल में बुनने जैसा है। इस तरह की आयतें जैसे: उसने तुम्हें एक ही आत्मा से बनाया (4:1) और भगवान ने पानी के हर चलने वाले जीव को बनाया (24:45) इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि जिस साधारण पदार्थ से तुम बने हो, जो तुम्हारे जैसा मिश्रित या मिश्रित नहीं है, वह तुम्हारा मूल नहीं हो सकता। बीज, जिसमें उस पेड़ या फूल का पूरा विवरण शामिल है जो उससे उगेगा, सरल और छोटा है। हालाँकि, हर एक नियति द्वारा बनाई गई योजना की तरह है, एक मूल

या नाभिक जिसमें उसके वृक्ष या फूल के अस्तित्व के सभी सिद्धांत समाहित हैं। परिणामस्वरूप, वे इस बात के सबसे स्पष्ट प्रमाण हैं कि उनका निर्माता केवल वही हो सकता है जिसने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया है, और जिसकी शक्ति के संबंध में सब कुछ, बिना किसी अपवाद के, एक समान है।

यदि तुम्हारी असावधानी भौतिकवाद से उत्पन्न हुई है, तो तुम्हें स्वीकार करना चाहिए कि तुम्हारे बर्तन में एक अद्भुत, बुद्धिमान शक्ति है जो सभी फल देने वाले पेड़ों और फूलों को बना और आकार दे सकती है; ज्ञान जो उनकी सभी विशेषताओं और गुणों को समाहित करता है; उनके अस्तित्व के सभी सिद्धांतों और आवश्यकताओं के ज्ञान के साथ एक इच्छाशक्ति; और दूसरे के कार्यों को करने की क्षमता। उस एक के नाम जो आकाश को लपेट लेगा जैसे पुस्तकों के लिए लपेटा हुआ स्क्रॉल (21:104), जो पृथ्वी को अपने हाथ में रखता है और उसे अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करता है, जो मानव हृदय को अपनी दो उंगलियों के बीच रखता है और उसे अपनी इच्छानुसार घुमाता है, और जो किसी बड़ी या महत्वपूर्ण चीज से बाधित नहीं होता जब बात छोटी या तुच्छ चीज़ की आती है।

वह अपनी शक्ति के प्रकाश को सर्वोच्च सिंहासन, सूर्य और कणों पर उसी सहजता से प्रकट करता है, जैसे सूर्य एक ही समय में समुद्र की सतह, दर्पण और पानी की बूंदों या बुलबुलों में समान सहजता और समान चमक के साथ प्रतिबिम्बित होता है। एकमात्र अपवाद यह है कि वस्तुओं की ग्रहण करने की क्षमता में भिन्नता के कारण वे अपनी अभिव्यक्तियाँ ग्रहण करने में भिन्न होती हैं। यह विशेष रूप से वसंत ऋतु में देखा जाता है, जब असंख्य प्रकार के फूल और पौधे, पेड़ और जानवर लगभग एक ही समय में प्रचुर मात्रा में और पूर्ण सहजता और दृढ़ता के साथ उग आते हैं।

प्रत्येक फूल और फल, जानवर और सूक्ष्म जीव, अस्तित्व के सभी भागों से सटीक और सूक्ष्म माप और सटीक गणना के अनुसार लिए गए घटकों से बनी एक बूंद की तरह है। केवल वही जो अस्तित्व को अपनी मुट्ठी में रखता है, उसे अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करता है और इस बूंद को ऐसे उपायों और ऐसी गणनाओं के अनुसार अस्तित्व से निकालता है, वह प्रत्येक फूल, फल या जानवर को अस्तित्व का लघु रूप बना सकता है जब वह उस बूंद को अस्तित्वहीनता से बनाना चाहता है।

जिस तरह से जब आसमान में सूरज की छवियाँ न हों तो यह मानना ज़रूरी है कि जितने पारदर्शी पदार्थ हैं उतने ही सूरज हैं, उसी तरह से काफ़िरों को भी उतने ही देवता मानने होंगे जितने अस्तित्व के कण हैं, या जितने ईश्वर के रूप हैं। अगर आप यह समझ गए हैं तो आपने क़ुरआन की चमत्कारी व्याख्याओं की असंख्य रोशनी में से सिर्फ़ एक को ही अर्थ की दृष्टि से समझा है।

हे मित्र, जान लो कि कुछ मानव कलाकृतियाँ हजारों की कीमत की हो सकती हैं
अपनी कला के कारण डॉलर कमाते हैं, जबकि उनकी भौतिक लागत लगभग शून्य है। इसी तरह, विश्वास एक अमृत है जो मानवता के क्षयकारी, कोयले जैसे पदार्थ को उसके सदस्यों को जोड़कर एक स्थायी, रत्नजड़ित हीरे में बदल देता है।
सर्व-स्थायी निर्माता। इसके विपरीत, अविश्वास मानवता को एक गांठ में बदल देता है
कोयले का वह भाग जो ज़मीन में सड़ जाता है।

मानवता उस सनातन निर्माता की सबसे अद्भुत कलाकृति है जिसने 6 दिनों में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया (7:54), और आकाश को तारों से सजाया
और धरती फूलों से भरी हुई है। मिट्टी से निर्मित और तेजी से विघटित होने वाली,
मनुष्य के भौतिक घटकों का मूल्य बहुत कम है। लेकिन जब कला
उनमें निहित गुणों पर विचार किया जाए तो उनका मूल्य मानव के लिए अनंत गुना बढ़ जाता है
दिव्य सुन्दरता की सूक्ष्मताओं से रचित कविता के अंश हैं
नामों की अभिव्यक्तियाँ, शाश्वत सूर्य की किरणों को प्रतिबिंबित करने वाले पॉलिश दर्पण।

विश्वास मनुष्य को उसके स्वामी से जोड़ता है और ईश्वरीय सत्ता को प्रकट करता है
मानवता में कला। यह दर्शाता है कि मानवता ईश्वर की एक कलाकृति है, जो मनुष्य के मूल्य को इस हद तक बढ़ाती है कि वह स्वर्ग बन जाएगा
इसकी कीमत। विश्वास के माध्यम से, मानवता ईश्वर के प्रतिनिधि की भूमिका ग्रहण करती है
पृथ्वी और सर्वोच्च विश्वास को वहन करती है। अविश्वास इस संबंध को तोड़ता है, इसका कारण बनता है
दिव्य कला को छिपा दिया गया है, तथा मानवता को उसके भौतिक पदार्थ तक सीमित कर दिया गया है।
दूसरे शब्दों में, अविश्वास मानवता को इतना मूल्यहीन बना देता है कि अविश्वासी लोग
इच्छा है कि अस्तित्व में न रहूं या धूल में मिल जाऊं।

संक्षेप में: मनुष्य लाखों शक्तियों से सुसज्जित मशीनों की तरह हैं।
दिव्य दया की सामग्री का वजन और अनुभव करने के लिए मापने के उपकरण
107 ताकि वे सत्य के सभी प्रकार के उपहारों का स्वाद ले सकें, स्वाद के जितने साधन हैं, उतने ही खाद्य पदार्थ हैं।

उनकी जुबान में स्थापित थे। जब इस मशीन का उपयोग विश्वास की आवश्यकताओं के अनुसार और उसके द्वारा निर्देशित किया जाता है, तो यह उस व्यक्ति द्वारा संरक्षित फल उत्पन्न करता है जिसने
कभी गलती नहीं करता या भूलता नहीं। अगर यह मशीन अविश्वासियों के हाथ में पड़ जाए, तो यह वैसा ही है
यह एक अमूल्य, बेजोड़ मशीन है, उन लोगों के हाथों में जो इसे पहचान नहीं पाते और इसलिए इसका उपयोग आग जलाने या उसे और अधिक तेज जलाने के लिए करते हैं।

> हे वह जिसके हाथ में सभी चीजों का प्रभुत्व और कुंजियाँ हैं, जो
> वह सब कुछ पकड़ लेता है और जिसके पास धन के भण्डार हैं
> हमें अपने हाल पर न छोड़। हम पर रहम कर और हमारे दिलों को ईमान और कुरान की रौशनी से रोशन कर।

---

107 हदीस कुदसी का हवाला देते हुए : "मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना था। मैंने जाना जाना चाहा और इसलिए ब्रह्मांड का निर्माण किया।" (ट्र.)

> परमेश्वर का वादा सच्चा है, इसलिए संसार की ज़िंदगी से धोखा न खाओ, न ही...
> धोखा देनेवाला तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखा दे। (31:33)

ऐ गुमराहों! तुम दुनिया के दलदल में डूब गए हो
और उस दलदल को प्रदूषण के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करके लोगों को गुमराह करने की इच्छा रखते हैं
अपने आप को सांत्वना देने के लिए खुशी का अनुभव करें। यदि आप निम्नलिखित चार वास्तविकताओं की प्रकृति को बदल सकते हैं, तो आप जो चाहें करें:

पहला: मृत्यु, जिसे आप बदल नहीं सकते या जीवन से हटा नहीं सकते। विश्वासी
इसे निवासों के परिवर्तन के रूप में देखें। लेकिन आप इसे शाश्वत विलुप्ति के रूप में देखते हैं।

दूसरा: आपकी जन्मजात लाचारी, असीमित आवश्यकता और शत्रुता आपको आमंत्रित करती है
तुम उस पूर्णतया शक्तिशाली पर भरोसा करो। लेकिन तुम अपनी जन्मजात असहायता को पूर्ण बना देते हो [अविश्वास के द्वारा], क्योंकि तुम उसे भरोसे और सहारे से वंचित कर देते हो।

तीसरा: आपकी जन्मजात गरीबी, जो कि परम धनवान के खजाने की ओर आकर्षित करने और आमंत्रण का एक साधन है। लेकिन आप इसे दर्दनाक बना देते हैं।
आधुनिक सभ्यता की गलत आदतों के कारण दरिद्रता बढ़ती जा रही है।

चौथा: क्षय या लुप्त होना, जो आनंद के मामले में लाता है
स्थायी दर्द। गायब होना या क्षय होना वास्तव में हमेशा के लिए सुख पाने का एक साधन है, लेकिन आप इसे एक दर्दनाक क्षय बना देते हैं और पीछे केवल पाप ही छोड़ जाते हैं
और पश्चाताप.

आप कभी भी मर सकते हैं, लाचारी से घिरे हुए हैं, और गरीबी से घिरे हुए हैं। आप निरंतर यात्रा पर हैं, और अपने रास्ते में धोखा खा सकते हैं।
नशे में रहते हुए ही कुतर्क करते हैं (इस अस्थायी जीवन के साथ)। लेकिन यह नशा कुछ समय तक ही रहता है। इस जीवन का सुख दुख है और हो सकता है
यह केवल मृत्यु को मारने या पूरी तरह से अनदेखा करने, असहायता को दूर करने से ही संभव है,
अत्यधिक घमंड का पीछा करना, गरीबी को खत्म करना, पूर्ण पागलपन, प्राप्त करना
अनन्त जीवन, या अस्तित्व के चक्र को रोकना।

ईश्वर हमें ग़फलत की नींद से जगाए, जिसे आप स्वीकार करें
जागृति के रूप में (हालाँकि यह सबसे गहरी नींद है), और हमें होश में लाती है
हमें हमारे तथाकथित बौद्धिक ज्ञान से मुक्त करके।

हे मित्र , देखो , सर्वशक्तिमान निर्माता ने किस प्रकार लाखों संसार फैलाये हैं।
पृथ्वी पर पौधों और जानवरों की संख्या। हर दुनिया एक समुद्र की तरह है जिसकी बूँदें
सफाई का काम चींटियों को सौंपा गया है। उदाहरण के लिए, चींटियों को सफाई का काम सौंपा गया है
पृथ्वी का चेहरा विभिन्न लाशों से भरा हुआ है।

इसी तरह, पानी और हवा, प्रकाश और पृथ्वी, विशेष रूप से बर्फ, महासागरों की तरह हैं
जिनकी बूंदों का विशेष कर्तव्य है। वह सर्वज्ञ रचयिता है, जिसने इन्हें रखा है
वह एक दूसरे के भीतर एक दुनिया को समाहित करता है, प्रत्येक को विशेष गुणों और कर्तव्यों से अलग करता है।
वह अनंत मिश्रण के बीच अनंत भेद प्रदर्शित करता है।

उदाहरण के लिए, वह चींटियों या मक्खियों की दुनिया को अन्य जीवित प्राणियों की दुनिया में रखता है। जीवों को एक खास तरीके से बनाकर और उन्हें मरवाकर। ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी का चेहरा ही उनका घर है। उनके अस्तित्व में आने और मरने में कोई उलझन नहीं देखी जाती। जैसे हर दुनिया दूसरी दुनियाओं के बीच रहती है, वैसे ही हर प्रजाति का हर व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के बीच पलता-बढ़ता है।

एक संसार को बनाए रखना सृष्टिकर्ता को अन्यों को बनाए रखने से नहीं रोकता, न ही एक व्यक्ति का पालन-पोषण करना उसे अन्यों का पालन-पोषण करने से रोकता है।

हे, जिसकी आंखें प्रकृतिवाद के कारण अंधी हैं और जिसका हृदय सील कर दिया गया है। यदि आप प्रकृति को एक प्रिंटर और निर्माता के रूप में सोचते हैं, भले ही यह कुछ मुद्रित और बनाया गया है, आपको यह स्वीकार करना होगा कि मिट्टी का प्रत्येक टुकड़ा इसमें उत्कृष्ट मुद्रण मशीनें हैं, जिनकी संख्या विश्व की सभी मुद्रण मशीनों से अधिक है।

हे पशुओ! गर्व मत करो कि तुम पेड़-पौधों से बड़े हो, क्योंकि वे पेड़-पौधों से बड़े हैं। पौधों में कला आपकी कला से कम नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि मांसल पौधों में भी सभी पशु प्रजातियों के अंग लगभग एक समान संरचना और गुणवत्ता के होते हैं, फलों के गूदे वाले भाग एक दूसरे से भिन्न होते हैं? इससे पता चलता है कि ईश्वरीय शक्ति की कलम उनमें अधिक गहराई से और सूक्ष्मता से काम करती है। साथ ही, जानवरों और मनुष्यों में औसतन अपने जीवनकाल में सात संतानें होती हैं जीवन भर जीवित रहना। मछलियाँ, अपनी कमज़ोर पशु इंद्रियों के कारण अपवाद हैं, क्योंकि वे प्रचुर मात्रा में प्रजनन करती हैं। हालाँकि, पौधे आमतौर पर 70, 700 या 7,000 तक प्रजनन करते हैं। इस तरह का प्रचुर प्रजनन इस बात को दर्शाता है कि इसे कितना महत्व दिया गया है पौधे।

हे प्राणी! पेड़-पौधे केवल ईश्वर पर निर्भर रहते हैं, इसलिए उनका भोजन उन्हें और उनकी संतानों को मिलता है। यह ऐसा है मानो हर एक की जड़ें पौधे और पेड़ सीधे मर्सी के खजाने से जुड़े थे। मर्सी शेयर प्रत्येक वृक्ष के प्रत्येक भाग की आवश्यकता के अनुसार उसके भागों में भोजन वितरित करता है। "माता-पिता" को शुद्ध "दूध" देते हुए, यह बेटियों (फलों) को शुद्ध शरबत देता है, और पुत्रों (जैतून) ने तेल को आशीर्वाद दिया।

* * *

मनुष्य (और स्त्री) को कमज़ोर बनाया गया था। (4:28)

हे मानवता! इस बात पर गर्व मत करो कि तुम जानवरों से श्रेष्ठ हो, क्योंकि हमारे श्रेष्ठता हमारी कमजोरी और नपुंसकता पर आधारित है, ठीक वैसे ही जैसे एक शिशु अपनी नपुंसकता और कमजोरी से अपने बड़ों को आदेश देता है। कौन सा जानवर इससे अधिक असमर्थ है अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आप से ज़्यादा कौन है? एक जानवर अपने जीवन को बनाए रखने के लिए जो कुछ भी चाहिए उसे जन्म के 20 दिन, 20 घंटे या 20 मिनट बाद हासिल कर सकता है, जबकि उसे जन्म के 20 दिन, 20 घंटे या 20 मिनट बाद ही पूरा करना पड़ता है।

आपके पास 20 साल का अध्ययन और अनुभव है। यदि आप एक समुदाय बनाते हैं और मदद करते हैं एक दूसरे से, आप केवल उतना ही प्राप्त कर सकते हैं जितना एक जानवर को प्राप्त करने के लिए चाहिए लेकिन ईश्वर की सेवा करके आप पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, आप, एक व्यक्ति, जानवरों की एक प्रजाति के बराबर हो सकते हैं।

हमारे पास दो विकल्प हैं: या तो हम सबसे नीचे होंगे या सबसे ऊंचे प्रजाति। आप जो चाहें चुन लें। अपनी नपुंसकता और कमज़ोरी से अवगत रहें, और जानें कि आपकी शक्ति और ताकत प्रार्थना और रोने में निहित है आपका स्वामी। आप जिस चीज पर गर्व करते हैं वह उनकी प्रेरणा का काम है और उसने तुम्हें सभी जातियों में से एक नमूना बनाया है, ताकि वह दिखा सके उसकी अद्भुत सुंदरता और रचनात्मकता को आपके माध्यम से अनुभव करें और आपको उसका स्वाद चखने का मौका दें उसके उपहार.

हे नबी! तुम जो पैगम्बरों की परम्पराओं की प्रामाणिकता पर संदेह करते हो, उन्हें जान लो। महदी के बारे में,108 अंतिम घड़ी के निकट आने और महान कोलाहल के बारे में पैगंबर के बाद होने की भविष्यवाणी की गई है। क्या आप सभी मामलों में दृढ़ विश्वास चाहते हैं, यहाँ तक कि माध्यमिक स्तर के लोग भी विश्वास के मूल सिद्धांतों से बेपरवाह हैं? मुद्दों को दृढ़ विश्वास की आवश्यकता नहीं है, इसलिए आपको स्पष्ट प्रमाण की आवश्यकता है, क्योंकि वे हैं सीधे तौर पर विश्वास से संबंधित नहीं है। सरल स्वीकृति या अस्वीकृति नहीं है पर्याप्त।

जिस तरह कुरान के गहरे, रूपकात्मक कथनों को व्याख्या की आवश्यकता होती है, उसी तरह अस्पष्ट, दृष्टांत-शैली की परंपराओं को भी व्याख्या और टिप्पणी की आवश्यकता होती है। जब आपको कोई स्पष्ट रूप से अतार्किक कथन मिलता है पैगम्बर को जिम्मेदार ठहराते हुए, निम्नलिखित पर विचार करें: हो सकता है कि इसे उधार लिया गया हो टोरा पर टिप्पणियों से या यहूदी धर्मांतरित लोगों द्वारा संबंधित जिनके वर्णन को गलती से पैगंबर का माना जाता था।

व्याख्यात्मक जोड़ को बाद में संबंधित माना जा सकता था परंपरा ही। हो सकता है कि कथावाचकों ने परंपरा से यह निष्कर्ष निकाला हो, एक प्रेरित परंपरावादी की यह कहावत गलती से पैगंबर को जिम्मेदार ठहरा दी गई हो, या कोई कहावत जो मूल रूप से पैगम्बर ने किसी खास अवसर और उद्देश्य के लिए कही हो। खड़ा करना।

ऐसे आख्यानों को उनके प्रत्यक्ष अर्थ तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। बल्कि, लोगों को उन पर विचार करना चाहिए और उन्हें कहावतों के रूप में स्वीकार करना चाहिए जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं, या सोचते हैं कि उनके सूक्ष्म अर्थ हो सकते हैं जिनकी व्याख्या की आवश्यकता है। तुम्हारी असावधानीपूर्ण व्याख्या एक सोए हुए व्यक्ति की तरह होगी जो किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा देखी गई बातों की व्याख्या करता है जो सोया नहीं है। हे जागो,

---

108 महदी, जिसका शाब्दिक अर्थ है "मार्गदर्शन करने वाला", वह मुस्लिम मसीहा है जिसकी अपेक्षा की जाती है समय के अंत में उत्पीड़ितों को मुक्ति दिलाने के लिए आना। (ट्र.)

तुम सोते हुए व्यक्ति की देखी हुई बातों की व्याख्या कर सकते हो। इसी प्रकार, इस जीवन की असावधानी में सोते हुए, तुम उस व्यक्ति की देखी हुई बातों की व्याख्या नहीं कर सकते जो हमेशा जागता रहता था, जिसका दिल कभी नहीं सोया, और जिसके बारे में ईश्वर कहता है: उसकी आंख न तो इधर-उधर हुई और न ही वह डगमगाया (51:17)।

हर व्यक्ति का नियत समय इसलिए छिपा हुआ है ताकि वह हमेशा उसके लिए जागता रहे और परलोक के लिए प्रयास करता रहे। अंतिम समय, इस दुनिया का नियत समय, इसी कारण से छिपा हुआ है। यही कारण है कि सुख के युग से लेकर आज तक हर सदी में लोगों ने इसका इंतजार किया है। इस प्रकार हम सतर्कता के साथ इसका इंतजार करते हैं, एक ऐसी स्थिति जो हमारी असावधानी को दूर करती है।

महदी से जुड़ी कहानियाँ इतनी अस्पष्ट हैं कि हर युग में लोग उनसे उम्मीद करेंगे। यह विश्वासियों के प्रतिरोध और मनोबल को मजबूत करता है, और जब गुमराही फैलती है और ताकत हासिल करती है तो उनकी निराशा दूर होती है। यह उन मुस्लिम विद्वानों को भी प्रोत्साहित करता है जो इस्लामी सिद्धांतों को पुनर्जीवित करने और लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करने का प्रयास करते हैं, जिस तरह से उनके शानदार नेता महदी से उम्मीद की जाती है।

ऐ मुसलमानों , जान लो कि वे लोग केवल नाम और सूरत से मुसलमान हैं।
काफ़िरों की नकल करना और इस्लामी हुक्मों का विरोध करना आपको उन कबीले के सदस्यों जैसा बनाता है जो अपने कबीले को दोष देते हैं, अपने मुखिया को तुच्छ समझते हैं और उनके रीति-रिवाजों का तिरस्कार करते हैं क्योंकि वे किसी दूसरे और शत्रुतापूर्ण कबीले के व्यक्ति को देखते हैं जो उसके गुणों पर गर्व करता है। ऐसे लोग सोचते हैं कि इस तरह के गुमराह करने वाले काम उन्हें दूसरे कबीले के सदस्यों जैसा बना देंगे। उन्हें यह एहसास नहीं है कि इस तरह की अस्वीकृति और धर्मत्याग उन्हें अपमानित करता है और उन्हें सभी समर्थन खो देता है।

पैगम्बर मुहम्मद को अस्वीकार करने वाले पश्चिमी लोग ईसाई धर्म और पश्चिमी सभ्यता से खुद को सांत्वना देते हैं, जिसमें उनके देश के रीति-रिवाजों के तत्व शामिल हैं। वे अपनी आत्मा में कुछ प्रशंसनीय गुणों को बचा सकते हैं और अपने सांसारिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए सराहनीय प्रयास कर सकते हैं। यह सांत्वना उन्हें अपनी आत्मा में अंधेरे के परदे और अकेलेपन को देखने से रोकती है जिसे वे अन्यथा महसूस करते हैं।

हे धर्मत्यागियों, जान लो कि जो लोग पैगम्बर मुहम्मद और उनकी उपलब्धियों को नकारते हैं, वे किसी दूसरे पैगम्बर, अपने प्रभु या किसी वास्तविक पूर्णता को स्वीकार नहीं कर सकते। उनकी आत्माओं में भयानक विनाश को देखो। उनके विवेक में गहन अंधकार और उनके हृदय में उदासी और निराशा को देखो। उनकी आंतरिक दुनिया की कुरूपता जल्द ही प्रकट हो जाएगी, और यह स्पष्ट हो जाएगा कि धर्मत्याग का सतही आकर्षण एक अ-स्वभाव से भी अधिक कुरूप है।

वे ज़हर के वाहक की तरह होंगे, जो उनके लिए हानिकारक होगा
और समुदाय के लिए.

ऐ तुम जो क़ुरआन की कुछ आयतों को समझने में कठिनाई महसूस करते हो , जान लो कि
विस्मयकारी सत्य, जैसे: उसने आकाश और पृथ्वी को 6 दिनों में बनाया (10:3);
क़ियामत का मामला तो बस आँख की झपकी के समान है (16:77), तुम्हारा पैदा करना और उठकर आना एक ही प्राणी के समान है (31:28), फिर उसमें दूसरी बार फूँका जाएगा, तो सब खड़े होकर देखेंगे (39:68), और उस दिन हम अवश्य ही उस पर आक्रमण करेंगे।
जैसे पुस्तकों की पुस्तक लपेटी जाती है वैसे ही आकाश को भी लपेट दो (21:104)।

सृष्टि की पुस्तक इन कुरान की आयतों की स्पष्ट व्याख्या करती है और
आपको कई तुलनीय भौतिक वास्तविकताओं को दिखाकर उन्हें आपकी समझ के लिए प्रदान करता है जिन्हें आप नियमित रूप से देखते हैं [जैसे, उदाहरण के लिए,] वैकल्पिक रूप से
दिन और रात तथा ऋतुओं और शताब्दियों के परिवर्तन। यदि आप दृढ़ विश्वास चाहते हैं, तो इस खजाने को खोलें: ईश्वर की दया के निशानों को देखें, कि वह कैसे दया करता है।
धरती को उसके मरने के बाद जिलाता है। निश्चय ही वही मुर्दों को जिलाने वाला है।
रास्ता) (30:50), ताकि आप अद्भुत के असंख्य उदाहरण देख सकें
ऐसी वास्तविकताएँ जिन्हें आप असंभव मानते हैं।

उदाहरण के लिए, हर बसंत में आप हजारों लोगों के पुनरुत्थान को देखते हैं।
सर्दियों के दौरान मरने वाले पौधे और पशु जगत। सभी को वापस लाया जाता है
कुछ ही दिनों में, एक निश्चित क्रम में, और नियुक्त विशेष रूप से जीवन के लिए
इनमें से अधिकांश पृथ्वी के लगभग सभी क्षेत्रों में पाए जाते हैं और उनका श्रृंगार करते हैं।
ऐसे अनगिनत अन्य उदाहरण हैं।

पेड़ों की दुनिया पर विचार करें, जिसमें कई प्रकार के सेब के पेड़ हैं,
और प्रत्येक प्रकार के प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्य। आप तीन घटनाएँ देखेंगे
पुनरुत्थान: पेड़ पर सुंदर फूल खिलते हैं, सुडौल पत्तियाँ उगती हैं, और सुंदर, स्वादिष्ट फल लगते हैं। एकमात्र सृष्टिकर्ता ऐसा करता है
पृथ्वी के चेहरे पर ये सारी चीज़ें हैं और सर्दियों की चादर को पलटते हुए, हज़ारों चादरों (प्रत्येक पृथ्वी की चादर के आकार की) को अद्भुत "शब्दों" से भर देता है। वह
अपना परिचय इस प्रकार देता है कि उसने छः दिनों में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया,
जो उपरोक्त आयतों में वर्णित सभी कार्य करता है।

हे मित्र, जान लो कि प्रत्येक व्यक्ति अपने सगे-संबंधियों, कुल के सदस्यों, अपने राष्ट्र, जाति और प्रजाति (मानवता) के सदस्यों तथा अस्तित्व के सभी भागों और कणों के प्रति प्रेम और स्नेह महसूस करता है। भले ही अनजाने में ही सही, वे ऐसा करते हैं।
जब दूसरे दुखी होते हैं तो वे दुखी होते हैं और जब दूसरे खुश होते हैं तो वे खुश होते हैं।
कि वे पैगम्बरों, संतों और धर्मपरायण लोगों की जमात के साथ हैं क्योंकि
उनकी पूर्णता की। उदाहरण के लिए, एक माँ अपने आराम और शांति को भंग करती है
कोई रिश्तेदार या प्रिय व्यक्ति।

हालाँकि, आस-पास की दुनिया जो कुछ भी उन्हें पेश करती है, उसके कारण वे खुद को संकट से मुक्त नहीं कर पाते। वे आध्यात्मिक पीड़ा और आंतरिक अशांति से कुचले जाते हैं। अगर उन्हें स्वर्ग में भी रखा जाए, तो वे जुगनू की तरह होंगे जो थोड़ी देर के लिए रोशनी की मंद चमक देता है और फिर अंधेरे में डूब जाता है। यह क्षणभंगुर प्रकाश भी उनके आस-पास के कष्टदायक दृश्यों को रोशन करके उन्हें नुकसान पहुँचाता है।

लेकिन अगर वे इस असावधानी से छुटकारा पा लें और सभी चीजों और घटनाओं पर उस अस्तित्व के स्वामी पर विश्वास के प्रकाश में विचार करें, जिसका प्रत्येक कार्य अपने आप में या अपने परिणामों के कारण अच्छा है, तो उनके दिलों में अनन्त सूर्य की रोशनी की ओर एक खिड़की खुल जाएगी जो अतीत और भविष्य को प्रकाशित करती है।

वे समझेंगे कि अन्य चीज़ों के लिए उनका प्यार वास्तव में उस एक के लिए प्यार है जो सभी चीज़ों के लिए पर्याप्त है और उनकी जगह लेता है, और उन्हें बाकी सभी चीज़ों को भूलने के लिए मजबूर करता है। कोई भी चीज़ उसके लिए या उसके प्यार की एक अभिव्यक्ति के लिए विकल्प नहीं बन सकती।
यदि इस बात पर विश्वास करने वाले विश्वासियों को नर्क में भी डाल दिया जाए, तो भी उन्हें स्वर्ग की कुछ अनुभूति होगी, क्योंकि उन्हें पता होगा कि उनके सभी प्रियजन अनन्त विनाश और अलगाव से बच गए हैं तथा उन्हें शाश्वत खुशी का आशीर्वाद मिला है।

हे असावधान ! यह विचार त्याग दो कि तुम स्वयं के स्वामी हो। अपने प्रियजनों को उनके दयालु और कृपालु स्वामी को सौंप दो, और उनकी मुक्ति और खुशी सुनिश्चित करो।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर सब कुछ रचता है। हालाँकि, बुराई और दोष, साथ ही दोष और दुर्गुण, रची गई चीज़ की प्रकृति और अपूर्ण क्षमताओं का परिणाम हैं। सर्व-उदार निर्माता वह सब रचता है जो रची गई चीज़ें अपनी क्षमता और स्वभाव की भाषा में उससे माँगती हैं। अच्छाई और सुंदरता उसी से हैं, क्योंकि वही उन्हें रचता है और उनकी आवश्यकता रखता है। वह कुरूपता और दोष भी रचता है, लेकिन उनकी आवश्यकता नहीं रखता। सारी प्रशंसा उसी की है, क्योंकि उससे सुंदरता और अच्छाई माँगना उसी और उसके नामों की ओर से उत्तर देने के समान है। सारी महिमा उसी की है, और उसमें कोई दोष और कुरूपता नहीं है। प्राणी दुर्गुण और कुरूपता की तलाश करते हैं और उसमें लिप्त होते हैं, और सर्वशक्तिमान उन्हें रचता है। हालाँकि, वह कुरूप लगने वाली चीज़ों के साथ कई सुंदर परिणाम जोड़ देता है। जो कुछ भी अच्छाई तुम्हारे पास आती है वह ईश्वर की ओर से है, और जो कुछ भी बुराई तुम्हारे पास आती है वह तुम्हारे स्वभाव से है (4:79)।

हे मित्र, जान लो कि सभी प्रजातियाँ, खास तौर पर पौधे और जानवर, कढ़ाई के धागों की तरह हैं जो धरती के चेहरे पर कपड़ों की तरह फैले हुए हैं। कुछ पतले, छोटे या ज़्यादा ढीले बुने हुए हैं, जबकि अन्य सर्दियों में फट जाते हैं और वसंत में नए हो जाते हैं। हालाँकि, सभी को सही क्रम और व्यवस्था के साथ बुना जाता है।

सभी प्रजातियाँ एक दूसरे को गले लगाती हैं और एक दूसरे की मदद करती हैं। उनके सदस्य अच्छे संबंधों के साथ एक साथ आते हैं और अलग होते हैं।

जो कुछ भी अस्तित्व में है वह एक ही बुनकर का कपड़ा है और एक ही स्वामी का सेवक है। सब कुछ खास तौर पर अपने लिए बुना गया है और उसके रेशों को अपने लिए फिट किया गया है, और बिना किसी भ्रम या दोष के। यह अवलोकन पर आधारित एक निश्चितता के साथ गवाही देता है कि यह उस एक की कला का काम है जिसकी शक्ति और बुद्धि की कोई सीमा नहीं है।

सभी प्राणियों का उद्देश्यपूर्ण, विशिष्ट श्रृंगार और साज-सज्जा यह दर्शाता है कि जिसने दुनिया के महल को इतनी अलग-अलग प्रजातियों से सजाया और सुसज्जित किया है, वही वह है जिसने महल को बनाए रखने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसे बनाया है। इसके समृद्ध श्रृंगार का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य इसके निर्माता को ज्ञात करना है, और यह श्रृंगार सबसे अधिक पॉलिश किए गए दर्पणों में से एक है जो इस सत्य को दर्शाता है कि निर्माता खुद को ज्ञात और प्यार करना चाहता है।

एक पीले सूरजमुखी को देखिए जो रात में बंद हो जाता है और दिन में खुल जाता है।
इसका निर्माता इसे छोटे जीवों या जानवरों के लिए एक सुखद घर बनाता है जो अपने निर्माता की महिमा करते हैं। उनमें से एक समूह सूरजमुखी में रहता है, और यह उनके लिए एक बगीचे, एक महल या एक गाँव की तरह बन जाता है।

उसकी जय हो जो सभी चीज़ों में अपनी कृपा प्रकट करता है, अपनी शक्ति को अपने प्राणियों द्वारा प्रकट करता है, और अपनी कलाकृतियों के समृद्ध श्रृंगार के माध्यम से अपने सेवकों द्वारा खुद को प्रिय बनाता है। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

उसका वचन सत्य है, और सारी सृष्टि उसी की है, और उन पर उसका अधिकार है (6:73) और जो कुछ वह करता है, उसके विषय में उससे कोई प्रश्न नहीं किया जाता (21:23)।

हे मित्र, जान लो कि किसी को भी उससे प्रश्न करने का अधिकार या बहाना नहीं है।
अपने राज्य में, वह अपनी इच्छानुसार नियंत्रण करता है। वह सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है, और वह जानता है जो हम नहीं जानते। किसी घटना या प्राणी की बुद्धि के बारे में हमारी अज्ञानता का अर्थ यह नहीं है कि उसमें कोई बुद्धि नहीं है, क्योंकि अधिकांश चीजों में देखी गई बुद्धि सभी चीजों और घटनाओं में उसके अस्तित्व की गवाही देती है।

उदाहरण के लिए, जब जीवित प्राणी मरते हैं तो हम शोक मनाते हैं। हम कुछ अच्छे प्राणियों के छोटे जीवन में कोई सुंदरता या अच्छाई नहीं देख सकते हैं, या शरद ऋतु या सर्दियों में जीवित प्राणियों के क्षय में कोई दया नहीं देख सकते हैं। हालाँकि, इस तरह की आपत्तियाँ या दुःख इस वास्तविकता के बारे में हमारी अज्ञानता से उत्पन्न होते हैं कि एक जीवित प्राणी एक सैनिक या सेवक की तरह है जिसे जीवन और मृत्यु के निर्माता की महिमा और प्रशंसा करने के लिए कई कार्य सौंपे गए हैं। उनके जीवन के उद्देश्य उसी से संबंधित हैं।

इसलिए, उनका छोटा अस्तित्व या अपने कार्यों को पूरा करने की उनकी जन्मजात मंशा - जैसे बीजों का पौधों या पेड़ों के रूप में विकसित होने का इरादा - उनसे अपेक्षित कार्य करने के लिए पर्याप्त हो सकता है।

मृत्यु केवल निवासों का परिवर्तन, कर्तव्यों से मुक्ति और सृष्टिकर्ता की उपस्थिति के लिए एक आह्वान है, जैसा कि सृष्टिकर्ता स्वयं आदेश देता है: फिर, वे पुनर्जीवित होते हैं और अपने प्रभु की उपस्थिति में एकत्र होते हैं (6:38)। यह उसकी दया की पूर्णता का संकेत है कि वह आमतौर पर अपने प्राणियों को बुढ़ापे की असहनीय अवधि तक जीने और जीवन की सबसे कठिन, कष्टदायक कठिनाइयों में रहने की अनुमति नहीं देता है। वह फूलों के प्रेमियों और वनस्पतियों से आनंद लेने वालों को उनके कर्तव्यों से मुक्त करता है। उन प्राणियों का निर्माता, उनका स्वामी, उनके जीवन के दौरान उन्हें उनके कार्यों को पूरा करने की सहजता के अनुसार नियोजित करता है। जब बुढ़ापे या सर्दी के कारण जीवन की असहनीय परिस्थितियों की उदासी उन्हें खा जाती है और उनमें कोई उत्साह नहीं रहता है, तो दयालु की दया उन्हें मुक्त कर देती है। उनके स्थान पर, वह उनके जैसे लोगों को उनके उदाहरण के अनुसार बुना जाता है, ताकि वे अपने मालिक की महिमा करें। ये नए लोग अपना काम वहीं से शुरू करते हैं जहाँ उनके पहले के लोग अपना काम पूरा करते थे।

हे असावधान, अभिमानी लोगों, जो यह सोचते हैं कि तुम अपने और अपने जीवन के मालिक हो, और यह मानते हो कि सुख निरंतर, सहज जीवन में है - तुम गलत हो। तुम अपने आत्म-विस्मृति की तुलना एक ऐसे पशु से करते हो जो अपने जीवन से संतुष्ट है। हालाँकि, वह अपना कार्य पूरा करता है। सार्वभौमिक दया के प्रकटीकरण से उत्पन्न खुशी की चीखें तुम्हें विलाप जैसी लगती हैं। उनके लिए शोक मत करो, क्योंकि शोक करुणा और दया से उत्पन्न होता है। बल्कि, अपने लिए दया करो और शोक करो। कुछ जानवरों को दूसरों पर हमला करने की अनुमति इसलिए दी जाती है ताकि बाद वाले अपनी चपलता और आत्मरक्षा की क्षमता या क्षमता विकसित कर सकें, और अपनी क्षमताओं को जानना सीख सकें। जब आप एक ही प्रजाति के पालतू और जंगली सदस्यों की तुलना करते हैं तो आपको यह स्पष्ट ज्ञान दिखाई देता है।

हे मित्र, संत प्रेरणा और आध्यात्मिक अनावरण के माध्यम से जो निष्कर्ष निकालते हैं, उसमें वे भिन्न क्यों हैं, जबकि धर्म के मूल सिद्धांतों पर वे एकमत हैं? अंतिम व्यक्ति (पैगंबर मुहम्मद) से पहले के संतों और पैगंबरों ने केवल ईश्वरीय एकता पर ही विस्तार से क्यों बात की, जबकि कुरान और पैगंबर मुहम्मद ने धर्म के सभी स्तंभों को इतनी स्पष्टता से समझाया कि उन्हें और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है? इसका कारण उन स्तंभों, संतों और पिछले पैगंबरों के बीच कुछ पर्दों का हस्तक्षेप है। दूसरा कारण प्रत्येक व्यक्ति की ईश्वरीय नामों की विभिन्न अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने की क्षमता है।

उदाहरण के लिए, सूर्य की सभी फूलों पर सार्वभौमिक अभिव्यक्ति होती है, साथ ही प्रत्येक प्रजाति और व्यक्तिगत फूल पर भी इसकी विशेष अभिव्यक्ति होती है।
एक प्रसिद्ध सिद्धांत के अनुसार, हर फूल को अपना रंग सूर्य के प्रकाश के अपवर्तन से मिलता है। सूर्य की रोशनी ग्रहों और चंद्रमा पर सार्वभौमिक रूप से दिखाई देती है, जो समुद्र और उसके बुलबुलों पर सूर्य की रोशनी को परावर्तित करती है और

बूँदों पर, ज़मीन पर और उस पर मौजूद पारदर्शी चीज़ों पर, तथा हवा और उसके कणों पर।
सूर्य का वायुमंडल के "दर्पणों" और समुद्र की सतह में शुद्ध, सार्वभौमिक प्रतिबिंब भी होता है, और समुद्र की सतह पर मौजूद बुलबुलों, पानी की बूंदों, वायु के अणुओं और बर्फ के कणों में विशेष प्रतिबिंब या छवियां भी होती हैं।

इन सभी चीज़ों पर सूर्य की अभिव्यक्ति दो रूपों में होती है: प्रत्यक्ष (भविष्यवक्ता) और अप्रत्यक्ष (संतत्व), जिसमें परदे और माध्यमों का हस्तक्षेप होता है। इस तरह, इसकी अभिव्यक्तियाँ "दर्पणों" (संतों) की क्षमता और प्रकृति के अनुसार प्राप्त होती हैं।

पहले तरीके के संबंध में, प्रत्येक वस्तु कह सकती है: "मैं दुनिया के सूर्य का दर्पण हूँ", जबकि दूसरे के संबंध में, वे केवल यह कह सकते हैं: "मैं अपने विशेष सूर्य या अपनी प्रजाति के सूर्य का दर्पण हूँ।" दूसरे तरीके में, "सूर्य" खुद को पर्दों के पीछे प्रकट करता है या उनके द्वारा अवरुद्ध होता है। इस प्रकार यह अभिव्यक्ति दुनिया के सूर्य के गुणों को धारण नहीं कर सकती है, जो ग्रहों को अपने चारों ओर घूमने, पृथ्वी को गर्म करने और रोशन करने और पौधों और अन्य चीजों के जीवन के पहियों को घुमाने का कारण बनता है।

हे मित्र, आइए हम खुद को उनकी जगह पर कल्पना करें। यह सघन शारीरिक आत्मा वह फूल बन जाएगी जो सूर्य की किरण द्वारा उत्पन्न प्रभाव के रूप में रंग ग्रहण करती है। प्राकृतिक कारणों में डूबा यह दार्शनिक वह बूंद होगी जो चंद्रमा से सूर्य के प्रकाश की छाया प्राप्त करती है। रंगहीन ओस की बूंद, "अपनी आँखों की पुतलियों" में सूर्य की छवि को धारण करेगी।

जो अपनी कृपा से हमें प्रकाशित और सुशोभित करता है, उसका प्रेम हमें उसके पास आने और उसे देखने के लिए प्रेरित करता है। तुम, फूल, सभी फूलों का प्रतिनिधित्व करते हो। लेकिन जैसे फूल एक घना दर्पण है जो प्रकाश को अपवर्तित करता है और उसके सात रंगों को विलीन कर देता है, यह सूर्य के प्रतिबिंब को ढक लेता है। और इसलिए तुम अलगाव से बच नहीं सकते, रंगों के गुणों के बीच भ्रमित हो जाते हो, और बीच में आने वाली बाधाओं के कारण होने वाले अलगाव से पीड़ित होते हो। तुम मुक्त हो सकते हो यदि तुम अपने स्वार्थ के प्रति प्रेम को त्याग दो, अपने स्वार्थ के लिए जो गुण और सौंदर्य तुम देते हो उसे देखना बंद करो, और सूर्य को देखो। और अपना चेहरा भी, जो तुम्हारा पोषण आकर्षित करने के लिए मिट्टी पर टिका हुआ है, यद्यपि वास्तव में वह तुम्हारे पास जल्दी से आ रहा है, सूर्य की ओर मोड़ो। तुम उसका दर्पण हो, क्योंकि वह एक बूंद जैसा दर्पण है जो प्रकाश, सत्य की रोशनी से चमकते हुए आकाश में चमक रहा है।109 तुम नहीं कर सकते

---

109 फूल को मिट्टी से पोषण मिलता है, इसलिए वह अपना चेहरा मिट्टी की ओर मोड़ लेता है। लेकिन उसका पोषण मिट्टी के ज़रिए ही उसे मिलता है। इसलिए, चूँकि उसके पोषण का असली स्रोत मिट्टी नहीं है, इसलिए उसे अपना चेहरा सूरज की ओर मोड़ लेना चाहिए। फूल सूरज का दर्पण है, जैसे सूरज खुद एक छोटा दर्पण है (आकाश की विशालता की तुलना में छोटा, प्रकाश-ईश्वर की रोशनी की चमक के लिए।)

इसे उसकी वास्तविक पहचान में देखें, लेकिन केवल अपने गुणों के रंगों में रंगे हुए और अपनी सीमित क्षमता द्वारा प्रतिबंधित।

हे बूंद, तू विज्ञान और दर्शनशास्त्र के द्वारा चाँद तक पहुँच गई है, और उसे घना और अंधकारमय पाया है, जिसमें प्रकाश या जीवन नहीं है। तेरा प्रयास व्यर्थ रहा है, और तेरा ज्ञान निष्फल साबित हुआ है। तू निराशा के अंधकार, अकेलेपन की वीरानी और उस भयावह एकांत के आतंक से तभी बच सकती है जब तू प्रकृतिवाद की रात को त्यागकर सत्य के सूर्य की ओर मुड़ जाए। निश्चयपूर्वक विश्वास कर कि उस रात की रोशनी दिन के सूर्य की रोशनी का केवल छायादार प्रतिबिंब है।

हालाँकि, आप सूर्य को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, बल्कि केवल अपने ज्ञान और दर्शन द्वारा बुने गए पर्दों के पार से, और अपनी क्षमता से उत्पन्न रंग में ही देख सकते हैं।

जहाँ तक तुम्हारी बात है, हे कमज़ोर और बेचारी ओस की बूंद, तुम भाप बनकर हवा में ऊपर उठती हो। तुम्हारी संरचना में मौजूद सघन पदार्थ जलकर प्रकाश में बदल जाता है, जिसके बाद तुम प्रकाश की अभिव्यक्तियों की एक किरण को थामे रहती हो। तुम जिस भी स्थिति में पहुँचती हो, सूरज के लिए एक खिड़की खुल जाती है। तुम निश्चितता के साथ देखती हो कि यह अपने गुणों के योग्य है, और कोई भी पर्दा या अवरोध, सीमित क्षमता या दर्पणों का छोटा होना तुम्हें इसकी आवश्यक संप्रभुता के सभी कार्यों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराने से नहीं रोक सकता। तुम समझ चुकी हो कि वस्तुओं में जो दिखाई देता है और दर्पणों में देखा जाता है, वह स्वयं सूर्य नहीं है, बल्कि इसकी अभिव्यक्तियाँ या रंगीन प्रतिबिंब हैं।

फूल, पानी की बूंद और ओस की बूंद द्वारा दर्शाए गए तीन समूह अपनी पूर्णता के गुणों और निश्चितता के स्तर में भिन्न हैं। लेकिन वे सभी सत्य की पुष्टि करने पर सहमत हैं।

हे मानवता, जान लो कि तुम पाँच तरीकों से तुलना की इकाई के रूप में काम करते हो: पहला: तुम दिव्य सुंदर नामों की

अभिव्यक्तियों के अद्भुत कार्यों की एक व्यापक सूची हो। अपने गुणों और अपने क्षेत्र में कथित प्रभुत्व के साथ, तुम ईश्वर के सर्वव्यापी गुणों को जानने के लिए एक मापक यंत्र हो।

दूसरा: आप उसके साथ किसी भी तरह के साझीदार को अस्वीकार करने का एक पैमाना हैं। जब आपको यकीन हो जाता है कि आप सिर्फ़ उसके हैं और उसकी संपत्ति हैं, तो आप मानते हैं कि उसका कोई साझीदार नहीं है। अगर आप अपने अस्तित्व का एक तिहाई हिस्सा उसे, दूसरा तिहाई हिस्सा प्राकृतिक कारणों को और आखिरी तिहाई हिस्सा अपने स्वयं के अस्तित्व को देते हैं, तो यह साझेदारी पूरे ब्रह्मांड में होती है। जब आप उसकी संपत्ति का सबसे छोटा हिस्सा भी अपने अहंकार को देते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा

हर प्राणी और प्राकृतिक कारण का एक ही आकार होता है। इस प्रकार आप ईश्वर की संपत्ति को दूसरों के साथ साझा करते हैं।

तीसरा: जब आपका अहंकार आपके सामने खुल जाता है, तो "प्राकृतिक" विज्ञान और बाहरी दुनिया के ज्ञान का सच्चा नक्शा आपके सामने खुल जाता है। जब आप अपने आप को भूल जाते हैं, तो यह ज्ञान बंद हो जाता है या अज्ञानता और कुतर्क में बदल जाता है।

चौथा: आपके पास दिव्य नामों के छिपे हुए खज़ानों की कुंजियाँ हैं। यदि आप अपनी असीम शक्तिहीनता को समझते हैं, तो आप पाएँगे कि आपके निर्माता के पास असीम शक्ति है; यदि आप अपनी असीम गरीबी को समझते हैं, तो आप पाएँगे कि आपके प्रदाता के पास असीम धन है। इस तरह, उनके नामों की अभिव्यक्तियाँ आपके अस्तित्व के अंधकार में अंकित चमकदार अक्षर बन जाती हैं। अंधकार जितना अधिक गहरा होता है, वे उतने ही अधिक चमकदार होते हैं।

इन चार तरीकों के संबंध में, आप केवल प्राप्त कर सकते हैं - आपके पास स्वयं कुछ भी (अच्छा) नहीं है। आप "हो!" की भाषा में लिखी गई एक स्तुति हैं और यह है।

पाँचवाँ: आप एक एजेंट हैं, एक प्रभावी कारण हैं, जो क्षमता और आवश्यकता, क्रिया और शब्द की भाषा में पूछते हैं। इस पहलू के संबंध में, आप सभी बुराइयों, दोषों और पापों की उत्पत्ति हैं; आपका निर्माता सभी अच्छाई और सुंदरता, पूर्णता और प्रकाश का स्रोत है।

पहले चार तरीके आपके सृष्टिकर्ता और उसके साथ आपके संबंध के संबंध में हर चीज का सार प्रकट करते हैं, जबकि पांचवां तरीका उसके नामों की अभिव्यक्ति की डिग्री को दर्शाता है।

* * *

निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों से उनकी जानें ही खरीद लीं जन्नत के बदले में। (9:111)

ऐ दोस्त! जान लो कि जो चीज़ तुम्हें तुम्हारे अत्यन्त दयावान रब के सम्बन्ध में धोखा देती है, उसका अर्थ यह है कि वह उस माल को, जो उसने तुम्हें सौंपा है, तुम्हारे लाभ के लिए और ऊँची कीमत पर खरीद लेता है।[110] वह उसे इस दशा में खरीदता है कि तुम उसे अपने हाथ में लिए रहो और उससे लाभ उठाओ, ताकि वह नष्ट न हो जाए और ताकि उसका मूल्य बढ़ता रहे। लाभ ही लाभ!

लेकिन आप इस सौदे को अस्वीकार करते हैं और आप पर उसका भरोसा तोड़ते हैं। आप इसकी कीमत को उच्चतम ऊंचाई से निम्नतम गहराई तक घटाते हैं, और फिर यह व्यर्थ हो जाता है। आप उस महान मूल्य से वंचित हो जाते हैं जो वह प्रदान करता है, और पीड़ा और पीड़ा सहते हैं।

---

110 आपका आत्म-स्वरूप, शरीर और जीवन, जो वास्तव में उसकी संपत्ति हैं। (ट्र.)

बहुत कम समय के लिए इसे बनाए रखने के लिए आपको कठिनाई, दर्द और तकलीफ़ उठानी पड़ती है। इसके साथ ही आप अपने द्वारा किए गए पापों को भी सहते हैं। नुकसान पर नुकसान!

आप एक पहाड़ की चोटी पर खड़े व्यक्ति की तरह हैं। एक भूकंप आता है, जिससे आप दरार में गिर जाते हैं और आपके हाथ में जो कुछ भी है वह खो जाता है।

आप ऐसे व्यक्ति की तरह हैं जो "आग के गड्ढे में गिरने वाला है या ढहती हुई खाई के किनारे से बर्बाद होने वाला है।" फिर भी आप अभी भी उस अद्भुत उपकरण को पकड़े हुए हैं जो आपको सौंपा गया है जो असीमित फल और लाभ पैदा कर सकता है। इस समय, उपकरण का असली मालिक, पूरी तरह से दया से, आपसे इसे खरीदने की पेशकश करता है:

> इसे सुरक्षित रखने और तुम्हारे बचने के बाद इसे लौटाने के लिए, मैं अपनी संपत्ति का यह टुकड़ा इस तरह खरीदूंगा जैसे कि यह तुम्हारा हो। इसे मेरे असीम विशाल बगीचों में इस्तेमाल करो ताकि मेरे भरपूर खजाने की सामग्री को पहचानो और मापो ताकि इसका मूल्य बढ़ सके। बदले में, तुम्हें बहुत अधिक मजदूरी मिलेगी। अन्यथा, यह तुम्हारे पेट की संकीर्ण गुहाओं में इस्तेमाल होने वाली एक तुच्छ, साधारण डिवाइस बन जाएगी, जो मेरे बगीचों और खजाने की तुलना में बेकार है। उन गुहाओं में वह डिवाइस कैसे समा सकती है जो तुम्हें सौंपी गई है, जिसे दुनिया भी नहीं समा सकती? मैं तुम्हें इसके लिए बहुत अधिक कीमत दूंगा।
>
> जब तक तुम इस पहाड़ पर हो, मैं इस पर कब्ज़ा नहीं करूँगा, बल्कि सिर्फ़ इसकी सुरक्षा और प्रबंधन करूँगा ताकि तुम इसे आसानी से संभाल सको। अगर तुम स्वीकार करते हो, तो इसे मेरे नाम पर और मेरी ओर से इस्तेमाल करो, एक सैनिक की तरह जो राजा के नाम पर या उसकी ओर से अपने हाथ में जो कुछ भी रखता है उसे नियंत्रित करता है, बिना इस डर के कि क्या होगा या जो कुछ हुआ है उसके लिए दुखी हुए बिना। अगर तुम सहमत नहीं हो, तो तुम्हें बहुत नुकसान होगा और तुम्हें विश्वासघाती माना जाएगा जो इसके नाश के लिए जिम्मेदार है।111

कुरान इस लेन-देन का वर्णन करता है और चेतावनी देता है: इसे खरीदो और बहुत बड़ा लाभ पाओ: आख़िरत की वापसी, जो कि जीवन है, यदि वे जानते (29:64)। आधुनिक सभ्यता और भौतिकवादी दर्शन कहते हैं: उचित

---

[111] कुछ लोगों को यहाँ खतरा नज़र आ सकता है। हालाँकि, यहाँ मानव अस्तित्व मानवीय इच्छा से बनी एक वास्तविकता है। इसलिए यह एक सौदे से कहीं बढ़कर है, क्योंकि ईश्वर द्वारा हमें बनाया जाना एक शुद्ध आशीर्वाद है।
दुनिया में होने की शिकायत कितने लोग करते हैं? क्या कोई ऐसा है जो जीवन से प्यार नहीं करता? केवल वे लोग जो अपनी इच्छाशक्ति का दुरुपयोग करते हैं और भोग-विलास में डूबे रहते हैं, वे ही जीवन के बारे में शिकायत करते हैं।
कोई भी सच्चा आस्तिक शिकायत नहीं करता। जीवन और दुनिया में जो कुछ भी हमें पसंद नहीं है, वह इस तथ्य के कारण है कि हम सबसे सम्मानित प्राणियों के रूप में अपनी जिम्मेदारियों की उपेक्षा करते हैं। ईश्वर द्वारा हमें जीवन में कैसे कार्य करना है, इस बारे में सूचित करना और फिर हमें अनंत खुशी से पुरस्कृत करना अनंत काल जितना ही महान और अनंत आशीर्वाद है। यदि कुछ लोग अभी भी एक खतरा देखते हैं, तो वह खतरा भी शुद्ध आशीर्वाद है, क्योंकि यह हमें सीधा रास्ता खोजने और दोनों दुनियाओं में खुशी प्राप्त करने के लिए मजबूर करता है, जहां कमजोर इरादों वाले, आध्यात्मिक रूप से भ्रष्ट, जिद्दी लोगों के लिए अपने तरीके बदलने के लिए एक वादा पर्याप्त नहीं है। (ट्र।)

यह तो हमारी सांसारिक जिन्दगी है (6:29)।
दिव्य मार्गदर्शन को प्रकाशित करना और मानव प्रतिभा को गुमराह करना।

ऐ दोस्त, जान लो कि ख़ुदा नज़दीक है और तुम उससे दूर हो। वह तुम्हारे भी उतना ही नज़दीक है जितना कि सभी लोगों के, और वह तुम्हारे भी उतना ही नज़दीक है जितना कि सभी लोगों के।
वह सभी लोगों के लिए वैसा ही है जैसा वह सभी जीवित प्राणियों और सभी प्राणियों के लिए है, सबसे छोटे कण से लेकर आकाश और आत्मा प्राणियों तक और उन लोगों के लिए जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

यदि आप उसके निकट होना चाहते हैं, तो विकसित हों और विस्तार करें ताकि आप
मानवता का प्रतिनिधित्व करें, और फिर प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सार्वभौमिक अस्तित्व प्राप्त करें
सृष्टि के 70,000 पर्दों से आगे बढ़ो। यदि वह तुम्हारे और हर चीज़ के निकट है
अन्यथा आपको हर चीज़ के करीब रहना होगा।
आकस्मिकता (सृष्टि के क्षेत्र) के बीच एक अनंत स्थान का सामना करें
और आवश्यकता (ईश्वरत्व का क्षेत्र)। आप उस एक तक कैसे पहुँच सकते हैं जो अनंत दूरी पर है और उसकी निकटता में है? यदि आप उसके निकट होना चाहते हैं, तो त्याग करें और
बीच की दूरी को मिटाने के लिए अपनी आत्म-पहचान को नष्ट कर दो, उसके साथ स्थायित्व प्राप्त करो, और उसकी निकटता प्राप्त करो।

हे मित्र, जान लो कि ईश्वर हमसे भी अधिक निकट है, जबकि हम
उससे असीम दूरी पर है। उसकी निकटता के प्रमाणों में से एक है उसका
हम पर नियंत्रण है। अगर हम उसे उसके नियंत्रण के पास खोजें, तो हम उसे पा लेंगे
सभी चीज़ों के निकट। अगर हम सृष्टि का प्रतिनिधित्व करके उस तक पहुँच सकते, तो हम पाएँगे
वह प्रकाश के पर्दे से परे "दुनिया" से बने आवश्यकता के क्षेत्र में है
उनकी गरिमा, भव्यता, और आवश्यक गुणों के नाम, गुण और विशेषताएँ
और भव्यता। लेकिन अगर हम अपने आत्म-स्वरूप को त्यागकर और नष्ट करके उसकी निकटता के माध्यम से उसे खोजते हैं, तो उसे पाना आसान है, अगर वह चाहे।
उसके बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

ऐ तुम जो जानना चाहते हो , क़ुरआन और हदीसों के बीच का अंतर जान लो।
ज्ञान और दर्शन के दृष्टिकोण। कल्पना कीजिए कि इसकी एक प्रति है
कुरान को विभिन्न कीमती रत्नों - सोने और चांदी, हीरे और पन्ने, गोमेद और अन्य - से लिखा गया है। दो लोग इसे देखने और इसकी प्रशंसा करने के बाद, इसके गुणों पर एक किताब लिखने का फैसला करते हैं। एक विदेशी है जो इसे नहीं जानता
अरबी भाषा नहीं समझ पाते और इसलिए पाठ का अर्थ नहीं समझ पाते। विदेशी एक विशेषज्ञ जौहरी और इंजीनियरिंग, ज्यामिति और गणित में विशेषज्ञ है।
पेंटिंग, और इसलिए उनकी किताब कुरान के आभूषणों से सजे अक्षरों की दृश्यमान सुंदरता पर चर्चा करती है।
दूसरे को पता है कि कुरान क्या है, और इसलिए वह इसकी अनदेखी करता है
भौतिक रत्नों पर ध्यान केन्द्रित करता है और अपने अर्थ के रत्नों, प्रकाशों पर ध्यान केन्द्रित करता है
इसके रहस्यों और इसके श्लोकों की सच्चाइयों को, जो असीम रूप से उच्चतर हैं।

हे अल्प बुद्धि वाले! कौन सी पुस्तक पढ़ने लायक है?

क्या कुरान की कुछ बुद्धिमत्ता को कुरान में शामिल माना जाता है? यदि आप इस सादृश्य को समझते हैं, तो आप महसूस करेंगे कि कुरान की प्रतिलिपि ब्रह्मांड है, पहला व्यक्ति दार्शनिकों और वैज्ञानिकों का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरा व्यक्ति कुरान के छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है।

* * *

जो कोई अल्लाह पर भरोसा रखे, उसके लिए वह काफ़ी है। (65:3)

हे सईद! ख़ुशी भगवान पर भरोसा करने में है, इसलिए उस पर भरोसा करो ताकि तुम
इस संसार में शांति और विश्राम पाओ और अगले संसार में महान पुरस्कार पाओ।

जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और जो नहीं करते, वे दो ऐसे लोगों की तरह हैं जो भारी बोझ ढो रहे हैं और जहाज़ पर चढ़ते हैं। एक अपना बोझ नीचे रखता है और उस पर बैठ जाता है, उसका मन शांत रहता है। दूसरा नहीं रखता, और जब उसे बोझ नीचे रखने के लिए कहा जाता है, तो वह कहता है: "मैं इसे उठाने के लिए काफ़ी मज़बूत हूँ।" वे उसे समझाते हैं:

> यह जहाज़ ज़्यादा मज़बूत है और इसे ढोने में ज़्यादा सक्षम है। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ेगी, आपका भार भारी होता जाएगा, इसलिए इसे नीचे रख दें और अपने बोझ से मुक्त हो जाएँ। अगर जहाज़ का मालिक आपको देखेगा, तो वह या तो सोचेगा कि आप पागल हो गए हैं और आपको जाने का आदेश देगा, या फिर यह सोचेगा कि आप उसके जहाज़ का मज़ाक उड़ा रहे हैं और उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं। इसके साथ ही, वह आपको जेल में डाल देगा। आप सबके लिए हंसी का पात्र बन जाएँगे। और जब आप अपना भार नहीं उठा पाएँगे, तो आपको मज़बूत होने का दिखावा करना होगा (दिखावा या झूठा दिखावा) या अहंकार या दंभ दिखाना होगा (कमज़ोरी और नपुंसकता)।

अंत में, वह व्यक्ति उनकी बात से सहमत होता है, अपना बोझ डेक पर रखता है और उस पर बैठ जाता है। राहत महसूस करते हुए वह कहता है: "ईश्वर तुम्हें इनाम दे, क्योंकि तुमने मुझे उस राह पर ले जाने में मदद की है जिस पर मेरा आराम, मुक्ति और सम्मान टिका हुआ है।"

हे मित्र, जान लो कि कुरान की आयतें अक्सर ईश्वरीय सुंदर नामों का उल्लेख करके या उन्हें इंगित करने वाले वाक्यांशों के साथ समाप्त होती हैं, जो चिंतन और मनन का आदेश देती हैं या किसी के तर्क को बुलाती हैं। कभी-कभी वे कुरान के उद्देश्य को शामिल करने वाली एक सामान्य अभिव्यक्ति के साथ समाप्त होती हैं - जैसे कि उच्च ज्ञान के प्रकाश से किरणें या ईश्वरीय मार्गदर्शन के शुद्ध जल से छींटे। यानी, अपने चमत्कारी अभिव्यक्तियों के साथ, कुरान निर्माता के कार्यों और कृत्यों की व्याख्या करता है और फिर प्रासंगिक ईश्वरीय नामों, पुनरुत्थान या ईश्वरीय एकता की पुष्टि, या विश्वास के किसी अन्य स्तंभ के साथ समाप्त होता है।

उदाहरण के लिए:

उसने तुम्हारे लिए धरती में जो कुछ है, उसे पैदा किया, फिर आकाश की ओर रुख किया और उससे सात आकाश बनाए, और वह हर चीज़ का जाननेवाला है। (2:29)

क्या हमने धरती को पालना और पहाड़ों को खूंटियाँ नहीं बनाया? और हमने तुमको जोड़े में पैदा किया है। हमने तुम्हारी नींद को आराम का साधन बनाया है।
हमने रात को एक चादर बनाया और दिन को रोज़ी का ज़रिया बनाया। हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए और उनमें एक चिराग़ बनाया जो रौशनी से जगमगाता है। हमने घने बादलों से पानी बरसाया, ताकि अनाज और पौधे और घने बाग़ उगाएँ। बेशक क़यामत का दिन एक तय वक़्त है। (78:6-17)

कुरान हमारी आँखों के सामने उसकी कला के वस्त्रों को फैलाता है और फिर उनसे संबंधित होता है। दिव्य नामों के साथ या तर्क के संदर्भ के साथ:

कहो, "वह कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता है, सुनने और देखने वाला है, जीवित को मुर्दों से और मुर्दों को जीवितों से निकालता है और सारे कामों का संचालन करता है?" वे अवश्य कहेंगे, "अल्लाह।" फिर कहो, "तो क्या तुम उससे डरते हुए अपने कामों को सुधार नहीं लेते? वही अल्लाह है, तुम्हारा सच्चा रब।" (10:31-32)

आकाशों और धरती की रचना में, रात और दिन के आने-जाने में, और मनुष्यों के लाभ के लिए समुद्र में चलने वाले जहाजों में, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से बरसाया, और जिसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाया, और उस पर हर प्रकार के जन्तुओं को फैलाया, और धरती और आकाश के बीच हवाओं और बादलों के शासन में, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (2:164)

यह परमेश्वर के कार्यों की व्याख्या करता है और फिर उसके नामों या गुणों के साथ समाप्त होता है:

इस प्रकार तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा और तुम्हें चीज़ों और घटनाओं का अर्थ बताना सिखाएगा, यहाँ तक कि स्वप्नों का भी। और वह तुम पर और याकूब के घराने पर अपनी कृपा पूरी करेगा, जिस प्रकार उसने तुमसे पहले तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम और इसहाक पर पूरी की थी। निस्संदेह तुम्हारा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (12:6)

कह दो, "ऐ अल्लाह! प्रभुता के स्वामी! तू जिसे चाहता है प्रभुता प्रदान करता है और जिससे चाहता है छीन लेता है। तू जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है अपमानित करता है। तेरे ही हाथ में हर भलाई है। निस्संदेह तू हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।" (3:26)

कुरान में प्राणियों का उल्लेख किया गया है और फिर उनके अस्तित्व के क्रम, सामंजस्य, अनुपात और फलों को दर्पण के रूप में इस्तेमाल किया गया है ताकि वे वास्तविकता को प्रतिबिंबित कर सकें।
नाम उन पर इस प्रकार प्रकट हुए मानो वे शब्द हों, और मानो वे नाम उनके अर्थ हों या जीवन का जल, बीज या सार हों:

> हमने लोगों को मिट्टी के रस से पैदा किया, फिर उसे एक बूँद की तरह सुरक्षित जगह पर रखा, फिर हमने बूँद को एक थक्के के रूप में बनाया, फिर थक्के को एक बेजान पिंड बनाया, फिर पिंड को हड्डियों के रूप में बनाया, फिर हमने हड्डियों को मांस से ढक दिया, फिर हमने उसे एक और रचना के रूप में बनाया। अतः बरकत वाला है अल्लाह, जो सबसे अच्छा रचयिता है! (23:12-14)

> निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ, रात को दिन से ढाँप दिया, जो उसके पीछे जल्दी करता है, और उसने सूर्य और चाँद और तारों को अपने आदेश से वश में किया। सावधान रहो, सृष्टि और आदेश उसी का है। बरकतवाला अल्लाह, सारे संसार का रब। (7:54)

कुरान विशेष, परिवर्तनशील घटनाओं और चीजों का उल्लेख करता है और फिर सार्वभौमिक, प्रकाशमान, स्थापित नामों या वाक्यांशों के साथ चिंतन या सीखने का आग्रह करता है:

> उसने आदम को नाम सिखाए और फिर फ़रिश्तों के सामने पेश किया: "अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ।" उन्होंने कहा, "पवित्र है तू"; "हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है।
>
> निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:31-32)
>
> और तुम्हारे लिए चौपायों में भी शिक्षा है। हम तुम्हें उनके पेटों में से, आँतों और ख़ून के बीच से, शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है। और खजूर और अंगूर के फलों से, जिनसे तुम मदिरा और उत्तम आहार प्राप्त करते हो। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो बुद्धि से काम लें। और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पहाड़ों और वृक्षों में और जो कुछ वे बनाते हैं, उसमें अपने घर बनाओ। फिर हर प्रकार के फल खाओ और अपने रब के बनाए हुए मार्गों पर चलो। उनके पेटों से अनेक रंगों का द्रव निकलता है, जिसमें मनुष्यों के लिए शिफ़ा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सोच-विचार करें। (16:66-69)

कुरान विशाल चीज़ों या बहुतायत में पाई जाने वाली चीज़ों का उल्लेख करता है, उन पर ईश्वरीय एकता के संकेत रखता है, और उन्हें एक सामान्य नियम के साथ समाप्त करता है:

उसका सिंहासन आकाशों और धरती को अपने में समेटे हुए है, और उन दोनों को थामे रखना उसके लिए थकावट नहीं है। वह सर्वोच्च, अत्यन्त प्रभुत्वशाली है। (2:255)

अल्लाह ने आकाश और धरती को पैदा किया और आकाश से वर्षा बरसाई, जिससे वह तुम्हारे लिए फल पैदा करता है। वह नावों को तुम्हारे काम में लगाता है, ताकि वे उसके आदेश पर समुद्र में चलें। और उसने नदियों को तुम्हारे काम में लगाया है। वह सूर्य और चंद्रमा को, जो अपनी-अपनी दिशा में स्थिर रहते हैं, तुम्हारे काम में लगाता है। और उसने रात और दिन को तुम्हारे काम में लगाया है। और वह तुम्हें वह सब देता है, जो तुम उससे मांगते हो। और यदि तुम अल्लाह के उपकारों का हिसाब लगाओ, तो भी तुम उन्हें गिन नहीं पाओगे।

निश्चय ही मनुष्य जाति अन्यायी और कृतघ्न है। (14:32-34)

इसमें वस्तुओं के निर्माण के लिए प्रत्यक्ष कारणों का उल्लेख किया गया है और फिर उस वास्तविक कर्ता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है जो उन्हें और उनके फलों को बनाता है, इस प्रकार यह इंगित किया गया है कि निर्जीव कारण उन फलों और उद्देश्यपूर्ण परिणामों को नहीं जान सकते। भले ही कारण प्रभावों के निकट प्रतीत होते हों, लेकिन उनके बीच बहुत बड़ी दूरी होती है। यहीं पर दिव्य नाम अपनी महिमा में प्रकट होते हैं। सबसे बड़ा कारण भी सबसे छोटा प्रभाव नहीं बना सकता, जैसे क्षितिज, जो पहाड़ों को छूता हुआ प्रतीत होता है, वास्तव में उनसे एक विशाल दूरी से अलग है - वह दूरी जिसमें तारे रहते हैं:

मनुष्य अपने भोजन पर विचार करे कि हम किस प्रकार वर्षा करते हैं, फिर धरती को चीरते हैं, फिर उसमें अनाज उगाते हैं, अंगूर और हरी सब्ज़ियाँ, जैतून और खजूर के पेड़ और ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से भरे बाग़, फल और चारा उगाते हैं, ताकि तुम और तुम्हारे चौपायों के लिए रोज़ी बन सको। (80:24-32)

प्रावधान (ईश्वर की ओर से) वाक्यांश और पौधों और वृक्षों का उल्लेख, जिनमें से प्रत्येक अनेक उपयोगों के साथ कला का उत्कृष्ट कार्य है, यह दर्शाता है कि प्रत्यक्ष कारण किसी भी चीज का सृजन नहीं कर सकते।

क्या तुमने नहीं देखा कि कैसे परमेश्वर बादलों को हल्के से आगे बढ़ाता है, उन्हें इकट्ठा करता है, उन्हें ढेरों में इकट्ठा करता है, और उनके बीच से बारिश करवाता है? वह ओलों से लदे पहाड़ जैसे बादलों को आकाश से नीचे उतारता है, और जिस पर चाहता है उन पर ओलों को गिराता है (या नहीं गिराता)। उसकी बिजली की चमक तुम्हारी दृष्टि को लगभग छीन लेती है।

अल्लाह रात और दिन बदलता रहता है, और इसमें अक़्लमंद लोगों के लिए एक नसीहत है। उसने हर एक जलचर को पैदा किया। कोई पेट के बल चलता है, कोई दो पैरों पर, कोई चार पैरों पर। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (24:43-45)

कुरान ईश्वर के असाधारण कार्यों का उल्लेख करता है ताकि हमारे मन को परलोक में उसके अद्भुत कार्यों को स्वीकार करने के लिए तैयार किया जा सके, या परलोक में उसके भावी कार्यों का उल्लेख करता है ताकि इस दुनिया में उनके जैसे कार्यों की ओर संकेत किया जा सके:

> क्या मनुष्य ने यह नहीं देखा कि हमने उसे बीज के एक कतरे से पैदा किया है? फिर भी मनुष्य तो हमारा खुला विरोधी है, उसने हमारे लिए एक उदाहरण गढ़ा है और अपनी रचना के तथ्य को भूल गया है, और कह रहा है, "इन हड्डियों को फिर से जीवित कौन करेगा, जब ये सड़ चुकी होंगी?" कह दो, "वही उन्हें जीवित करेगा, जिसने उन्हें पहले बनाया था। वह सारी सृष्टि को जानने वाला है। उसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बनाई है, फिर तुम उससे जलते हो।" क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, उन जैसी चीज़ें पैदा करने में समर्थ नहीं है? निस्संदेह वह ऐसा कर सकता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता है। (36:77-81)

> जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा ... (81:1)

> जब आकाश फट जायेगा... (82:1)

> जब आकाश फट जायेगा... (84:1)

वसंत के दौरान [अनेक जानवरों और पौधों की प्रजातियों का] पुनरुत्थान पुनरुत्थान के लिए कई समानताएँ प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, आप इस तरह के उदाहरण देख सकते हैं: जब बीजों के अंकुरण और वृद्धि में पन्ने (हमारे कर्मों के अभिलेख) खोले जाते हैं (81:10) तो उनकी “माताओं” के कर्मों और उनके जीवन-इतिहास के अभिलेख खुल जाते हैं।

कुरान विशेष उद्देश्यों या घटनाओं का उल्लेख करता है, और फिर पुष्टि करता है
और उन्हें नामों से पुष्ट करता है मानो वे सार्वभौमिक नियम हों:

> अल्लाह ने उस स्त्री की बातें सुन ली हैं जिसने अपने पति के विषय में तुमसे झगड़ा किया और अल्लाह से शिकायत की। अल्लाह ने तुम दोनों की दलीलें सुन ली हैं। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (58:1)

> पवित्र है वह, जिसने अपने बन्दे को रातों-रात मस्जिदुल हराम से दूर की मस्जिदुल अक़्सा तक पहुँचाया, जिसके आस-पास के क्षेत्र को हमने बरकत दी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है। (17:1)

> प्रशंसा है उस अल्लाह की जो आकाशों और धरती का रचयिता है, जिसने फ़रिश्तों को दो, तीन और चार पंखों वाला रसूल नियुक्त किया है। वह जिस तरह चाहता है, सृष्टि में वृद्धि करता है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है। (35:1)

कुरान में कृतघ्न लोगों के कार्यों का उल्लेख किया गया है और उन कार्यों के लिए विनाश की धमकी दी गई है। इसके बाद, यह उन्हें नामों से सांत्वना देता है
दया के लिए:

> कह दो, "यदि उसके अतिरिक्त कोई और पूज्य होते, जैसा कि वे कहते हैं, तो वे सिंहासन वाले की ओर जाने का मार्ग अवश्य खोजते।" पवित्र है वह और जो कुछ वे कहते हैं उससे उच्च है।
>
> सातों आकाश और धरती और उनमें रहनेवाले सब उसी की तस्बीह करते हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी तस्बीह न करती हो, फिर भी तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझ सकते। निस्संदेह वह अत्यन्त तरस खानेवाला, अत्यन्त क्षमाशील है। (17:42-44)

एक महत्वपूर्ण विषय

कुरान कहता है:

> कह दो, "यदि सागर मेरे रब की बातों के लिए स्याही होता, तो भी सागर मेरे रब की बातें पूरी होने से पहले ही समाप्त हो जाता, चाहे हम उसकी सहायता के लिए उसके जैसा दूसरा सागर भी ले आएं।" (18:109)

अगर आप पूछें कि कुरान किस तरह से सभी भाषणों से श्रेष्ठ है, चाहे वे बोले गए हों या लिखे गए, तो जवाब होगा: यह ईश्वर का वचन है क्योंकि वह दुनिया का स्वामी है, जिसका शीर्षक "दुनिया का देवता" है, और उसका नाम "आकाश और पृथ्वी का स्वामी" है, और उसकी पूर्ण प्रभुता और सार्वभौमिक संप्रभुता के संबंध में है। यह ईश्वर का वचन है क्योंकि इसमें सर्वव्यापी दया है, क्योंकि इसमें ईश्वरत्व की भव्यता और महानता है, और क्योंकि यह महानतम नाम के सर्वव्यापी क्षेत्र से निकलता है और सर्वोच्च सिंहासन द्वारा घेरे गए घेरे को संबोधित करता है।

ईश्वर के अन्य शब्द ईश्वर के शब्द हैं क्योंकि वे विशेष नामों और उपाधियों के साथ उनके प्रभुत्व और दिव्यता के विशेष प्रकटीकरण के कारण हैं, और विशेष संप्रभुता और दया के भाग के रूप में हैं। वे अधिकांश दिव्य प्रेरणाओं की तरह हैं। इस कारण से, एक संत कह सकता है: "मेरा दिल मुझे मेरे भगवान से सूचित करता है," लेकिन यह नहीं: "मेरा दिल मुझे दुनिया के भगवान से सूचित करता है।"

एक पैगम्बर को सर्वोच्च सिंहासन, सिंहासनों की "माँ" के दर्पण में अपने महानतम नाम के साथ दुनिया के प्रभु से चमक और ज्ञान प्राप्त होता है। इसकी तुलना में, एक संत का विशेष ज्ञान और चमक, जो उसके हृदय के दर्पण में प्रभु के प्रकटीकरण से प्राप्त होता है, हृदय की क्षमता तक ही सीमित होता है। अपने छोटे, मंद दर्पण में परावर्तित सूर्य के प्रकाश और सूर्य द्वारा सौर मंडल को प्रदान किए जाने वाले प्रकाश के बीच अंतर पर विचार करें। एक और उदाहरण अंतर है-

किसी विषय पर राजा द्वारा किसी विषय को संबोधित करने और उसके दूतों द्वारा सभी विषयों के लिए जारी किए गए शाही आदेश के बीच का अंतर,
उसकी सर्वोच्च सत्ता और उसकी पूर्ण महिमा के कारण।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों अधिकांश दिव्य रहस्योद्घाटन महानतम स्वर्गदूतों के माध्यम से आते हैं, जबकि प्रेरणाएँ मध्यस्थता के बिना आती हैं, और यहाँ तक कि क्यों ईश्वरीय प्रेरणाएँ भी मध्यस्थता के बिना आती हैं।
सबसे महान संत पैगंबर के पद तक नहीं पहुंच सकते। यह कुरान की व्याख्या भी करता है
सर्वोच्चता और अतुलनीय गरिमा और पवित्रता, साथ ही इसकी चमत्कारिक संक्षिप्तता की उदात्तता और सुंदरता। कई अन्य रहस्यों के अलावा, यह बताता है कि क्यों भविष्यवक्ताओं की मुहर को स्वर्ग में सबसे दूर के लोटे वृक्ष तक चढ़ना पड़ा, क्यों वह स्वर्ग की निकटता तक चढ़ गया

"दो धनुष की लंबाई" उससे प्रार्थना करने के लिए जो उसके गले की नस से भी अधिक निकट है, और फिर पलक झपकते ही दुनिया में वापस लौट गया।

ज्ञान और इच्छा की तरह, परमेश्वर का स्वयं से बात करना भी उसकी एक विशेषता है।
शाश्वत गुण। इसका अस्तित्व ज्ञात है और इसकी प्रकृति अज्ञात है।
शब्द अंतहीन हैं.

तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हम उससे सहायता मांगते हैं।
भगवान के नाम पर।

हे मित्र, जान लो कि सब कुछ कहता है, चाहे मौखिक रूप से या जीभ के माध्यम से
स्वभाव या क्षमता का: भगवान के नाम पर और उसके साथ। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि,
अपनी अनिवार्य नपुंसकता के बावजूद, हर चीज़ जो अस्तित्व में है, बिना किसी अपवाद के,
वह ऐसे आश्चर्यजनक कार्य करता है, जिन्हें वह अकेले नहीं कर सकता था।
सबसे छोटा हिस्सा। इससे पता चलता है कि यह उन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान की शक्ति से करता है, और यह उन कार्यों को अपने भीतर और अपने साथ लेता है
सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ का नाम।

अपनी पूरी अज्ञानता के बावजूद, यह उन कार्यों को इतनी समझदारी और व्यवस्थित तरीके से और इतने लाभकारी और फलदायी तरीके से करता है। हालाँकि, यह अपने आप में ऐसा नहीं कर सकता
किसी भी कार्य का सबसे छोटा हिस्सा भी न करें। इससे पता चलता है कि यह उन लोगों को मानता है
एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी के नाम में और उसके साथ उद्देश्यपूर्ण कार्य।
प्रत्येक वस्तु ईश्वर के नाम से तथा उसके साथ जीवित प्राणियों के उपयोग के लिए कार्य करती है।

जो अत्यन्त दयालु, दयावान है, तथा जो सर्वज्ञ, अत्यन्त उदार है, उसकी ओर से।

देखें कि कैसे हर बीज से पेड़ या पौधा निकलता है। पेड़ों और उनके फलों, सूक्ष्म जीवों और दूसरे जानवरों और उनके कामों को देखें। जब आप किसी व्यक्ति को किसी खास जगह पर लोगों को इकट्ठा करते और उन्हें अलग-अलग जगहों पर कुछ खास काम करने के लिए भेजते देखते हैं, तो आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वह राजा या सरकार की ओर से काम कर रहा है और उसके अधिकार का आनंद ले रहा है।

इसी प्रकार ज्ञानी व्यक्ति समझता है कि वे अज्ञानी, शक्तिहीन प्राणी केवल सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ के नाम पर ही अपने कार्य इतनी बुद्धिमत्ता, व्यवस्थित और फलदायी ढंग से कर सकते हैं। वे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ के नाम पर कार्य करते हैं, अपने कार्यों का फल एक दयालु, सर्वकरुणामय के नाम पर अर्पित करते हैं। प्राणी जो भी कार्य करता है और उसके फल उत्पन्न करता है, उसके बदले में सार्वभौमिक ईश्वरीय दया उसे विशेष आनंद देती है। यह वैसा ही है जैसा कि एक माँ को अपने बच्चों के प्रति करुणा में आनंद मिलता है, मधुमक्खी को ईश्वरीय प्रेरणा का पालन करने में आनंद मिलता है, या संभोग में आनंद मिलता है। यह वैसा ही है जैसा कि प्रत्येक जीवित प्राणी को खाने, पीने और आराम करने में आनंद मिलता है, या वह आनंद जो एक प्राणी को अपनी क्षमता को प्रभावी बनाने में मिलता है, जैसे कि पौधों के अंकुरण और विकास में। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, सर्व-उदार स्वामी, ऐसे सुखों को प्रदान करता है जो प्रदान की गई सेवाओं के लिए मजदूरी के रूप में और उनके कार्यों को प्रेरित करने वाली भूख के रूप में होता है।

अब, हे परम विश्वास के धारक ! आप सर्वोच्च सिंहासन से लेकर सबसे छोटे प्राणी तक सभी चीज़ों को शामिल करने वाले कानून का पालन क्यों नहीं करते?

तुम उस परमेश्वर के सिद्धांत के विरुद्ध विद्रोह क्यों करते हो जिसने सूर्य और चंद्रमा को अपने अधीन कर लिया है तथा तारों और कणों को अपनी सेवा में लगा रखा है?

हे मित्र, जान लो कि ईश्वरीय एकता में विश्वास और नास्तिकता और विधर्म के बीच का अंतर स्वर्ग और नर्क के बीच के अंतर जैसा है, जो बिल्कुल आवश्यक है और जो अकल्पनीय है [या होना चाहिए] के बीच का अंतर। निम्नलिखित पर विचार करें: ईश्वरीय एकता में विश्वास सभी चीजों को एक सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराता है, जिससे हर चीज के निर्माण की कठिनाई और खर्च कम हो जाता है, क्योंकि उस सत्ता की शक्ति के संबंध में, एक चीज और दूसरी चीज के बीच कोई अंतर नहीं है।

इसके अलावा, ईश्वरीय एकता में विश्वास उन्हें बनाने में उनके निर्माता के कई उद्देश्यों को उजागर करता है। एक उद्देश्य यह है कि कोई चीज़ निर्माता के नामों को प्रकट करती है जैसे कि यह एक व्यापक शब्द है जो अर्थ रखता है और नामों की ओर इशारा करता है। लेकिन लापरवाह और गुमराह लोग किसी चीज़ के अस्तित्व को बताते हैं

अन्य चीजों के प्रति, नपुंसक और बेजान तत्वों के प्रति, तथा बहरी और अंधी शक्तियों और कानूनों के प्रति। वे चीजों के अस्तित्व को इतना कठिन बना देते हैं कि एक या सभी चीजों का निर्माण करना भी उतना ही कठिन हो जाता है। वे चीजों पर केवल लोगों के लिए उनके लाभों के संबंध में विचार करते हैं, जो उनके उद्देश्यों में से केवल एक है।

एक नास्तिक और एक आस्तिक ऐसे दो व्यक्ति हैं जो एक खजूर के बीज को देखते हैं।
आस्तिक कहता है: “यह असंख्य अन्य सूचकांकों का सूचकांक है जिन्हें बीज कहा जाता है।
यह उस पेड़ का अर्थ और सार प्रकट करता है जो इससे उगने वाला है, और उस पेड़ के जीवन-इतिहास का वर्णन करता है जिसने इसे उत्पन्न किया। यह पेड़ की क्षमताओं की प्रकृति को दर्शाने वाला एक नक्शा है और खजूर के पेड़ को बुनने वाली एक तरह की मशीन के रूप में कार्य करता है।" नास्तिक कहता है: "खजूर के सभी भाग और पत्ते इस बीज को बनाने और उसे उसकी ज़रूरतों से लैस करने के लिए एक साथ इकट्ठे हुए हैं। लेकिन यह किसी काम का नहीं है, क्योंकि पेड़ का एकमात्र उद्देश्य इस बीज को पैदा करना है, जिसे अंततः कोई जानवर खा जाएगा या मिट्टी में सड़ जाएगा।"

सभी चीजें बहुत आसानी से होती हैं, भले ही वे बहुत ज़्यादा हों। आपस में मिलने-जुलने के बावजूद, हर चीज़ को आसानी से पहचाना जा सकता है, और ब्रह्मांड में एक सर्वव्यापी व्यवस्था कायम है। ऐसा होने पर, आप एक भी चीज़ को बेजान कारणों से कैसे जोड़ सकते हैं? ज़्यादातर चीज़ें जो मौजूद हैं, उस एक चीज़ के अस्तित्व के लिए सहयोग करती हैं, जो सभी चीज़ों का एक नमूना है। क्या अनार सिर्फ़ खाने के लिए बनाया गया था?

सार्वभौमिक ज्ञान ने एक व्यक्ति के सिर और उसमें निहित इंद्रियों को कई कार्य सौंपे हैं। यदि प्रत्येक सौंपे गए कार्य के लिए अलग-अलग सरसों के दाने के आकार के उपकरण की आवश्यकता होती, तो आपका सिर माउंट सिनाई जितना बड़ा होता। अपनी जीभ और उसके कार्यों पर विचार करें। ईश्वरीय दया के सभी खजानों की सामग्री को चखना और मापना इसका केवल एक कार्य है। क्या इस सार्वभौमिक ज्ञान ने (जो किसी भी छोटी चीज को, कई कर्तव्यों के साथ सौंपता है) उस अनार को, कला के एक चमत्कारी कार्य को केवल एक उद्देश्य दिया है - आपका उसे असावधानी के एक पल में खा लेना? क्या आपके सिर के आकार की कोई चीज पहाड़ जितना बड़ा फल दे सकती है, या पहाड़ जितना बड़ा कोई चीज आपके सिर जैसा फल दे सकती है? यदि आप "हाँ" में उत्तर देते हैं, तो इसका मतलब है कि आप ज्ञान और व्यर्थता और मूर्खता के बीच कोई अंतर नहीं देखते हैं, कि आप अनंत ज्ञान को अनंत व्यर्थता और मूर्खता के समान देखते हैं। वास्तव में, सभी फलों की तरह, उस अनार में दिव्य सुंदर नामों पर एक लंबी कविता है, जो उनके अर्थों को समझाती है। उसकी महिमा हो जिसके कार्य से मन चकित हो जाते हैं।

यह आयत इस वृक्ष का एक फूल है: सातों आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है, सब उसकी स्तुति करते हैं। कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी स्तुति न करती हो (17:44)। इस आयत का अर्थ मुझे तब समझ में आया जब

वसंत में पेड़ खिलते हैं। मैं आनंद में डूब गया और उनके महिमामंडन पर विचार करने लगा। मेरे मन में ये पंक्तियाँ उभरीं:

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

परमेश्वर की स्तुति हो, जिसकी महिमा सभी चीज़ें अपने दृश्यमान और बोधगम्य शब्दों से करती हैं। उदाहरण के लिए, ज्योतियाँ, नदियाँ और वर्षा के बादल क्रमशः प्रकाश, जल और वायु के स्रोत के शब्द हैं।

उसकी महिमा हो जिसकी स्तुति हो: प्रकाश का स्रोत
ज्योतियों से; जल और वायु नदियों और बादलों से...
पृथ्वी और पौधे चट्टानों और फूलों से... वातावरण और वृक्ष
पक्षियों और फलों से... बादल और आकाश वर्षा और चन्द्रमाओं से...

उसके प्रकाशित करने और प्रदर्शित करने से प्रकाश चमकता है।
वायु को नियंत्रित करने और उसे कार्य सौंपने से वह तरंगें
उत्पन्न करती है।
उसके अधीन होने और उसे जमा करने से जल फूट पड़ता है और बहता है, जो उसकी स्तुति है, जो सभी
चीजों को निर्धारित करता है और प्रत्येक चीज के लिए एक विशेष प्रकृति नियुक्त करता है।

पत्थरों को उनके द्वारा आकार देने और व्यवस्थित करने से वे सुशोभित होते हैं।
फूलों को सुशोभित और सुन्दर बनाकर वे मुस्कुराते हैं।
फल उसकी कृपा और अनुग्रह से समृद्ध रूप से सुशोभित दिखाई देते हैं, जो उस एक के लिए एक स्पष्ट,
मनोहर स्तुति है जिसने प्रत्येक वस्तु को एक विशेष प्रकृति के साथ बनाया है।

पक्षी उसके द्वारा गाते हैं, क्योंकि वह उन्हें बोलने में सक्षम बनाता है और
उन्हें सुन्दर बनाता है।
वर्षा उसे भेजकर और प्राणियों के लिए उसे आवश्यक बनाकर मधुर संगीत उत्पन्न करती है।
चन्द्रमा उसके निर्धारण और निर्देशन से चलते हैं, जो कि सर्व-निर्धारक के
लिए एक भावपूर्ण महिमा है, तथा सर्व-प्रभु के लिए एक प्रकाशमान संकेत है।

उसकी महिमा हो जिसकी स्तुति हो: आकाश
जिसमें तारामंडल और प्रकाश देने वाली वस्तुएं हों... ग्रह-मंडल जिसमें सूर्य, तारे और चंद्रमा
हों... वायुमंडल जिसमें वज्र, बिजली और वर्षा हो...

पृथ्वी, पशुओं, पौधों और पेड़ों से भरी हुई...
वृक्ष पत्तों और फूलों से, फिर सुडौल फलों से उसकी स्तुति करते
हैं।
जब फूल प्रशंसा करना बंद कर देते हैं, तो फल वाक्पटु, प्रकाश फैलाने वाली
प्रशंसा के साथ बोलना शुरू कर देते हैं।
एक बीज मन ही मन रहस्यों से भरा हुआ, चुपचाप भजन गाता है;

इसमें एक पुस्तक अंकित है - इसके वृक्ष के जीवन-इतिहास का अभिलेख।
यह अन्न को विभाजित करने वाले, उत्पत्तिकर्ता की स्तुति करता है।
सभी पौधे सर्व-निर्धारक की स्तुति और पूजा करते हैं, महिमा करते हैं
और उसके आगे झुकते हैं।
पौधों की अपने फूलों के माध्यम से मुस्कुराहट, उनकी प्रशंसा के रूप में
प्रकट होती है, जिसे समझने में वे सक्षम हैं।
उनके अंकुर और कांटे उनके मुख हैं, बीज और दाने उनके द्वारा पढ़ी जाने वाली कविता के
शब्द हैं...
उनके अनुपात और व्यवस्था एक अलग भाषा है, और उनका डिज़ाइन सर्वशक्तिमान की योजना से है।

प्रत्येक कलाकृति सर्वदीप्तिमान ईश्वर द्वारा सुशोभित कला का एक नमूना है।
अपने जीविका, रंग और गंध से वे उत्पत्तिकर्ता का वर्णन और स्तुति करते हैं।

वे उसके गुणों का वर्णन करते हैं, उसके नामों को बताते हैं, तथा स्वयं को ज्ञात करने और प्रेम करने की उसकी इच्छा की
व्याख्या करते हैं।
बालियों में दाने और आँखों जैसे फूल मूलकर्ता के प्रकटीकरण की "बूंदें" हैं...

ताकि उसके सेवक उससे प्रेम करें और उसकी सृष्टि उसे जान सके।
फूलों से लदा हुआ पेड़ कविता में प्रशंसा की अभिव्यक्ति है, जिसमें कई “आँखें” खुल गई
हैं।
उसने अपने उत्सव के दिन के लिए अपने हरे भागों को सजाया है, ताकि उसका
पालनहार अपने महान कार्यों को देख सके।
यह अपने में समाहित रत्नों को देखने वालों के समक्ष प्रदर्शित करता है; तथा फलों के स्वामी की उदारता
से इसमें संचित खजाना मानवता के समक्ष प्रस्तुत करता है।

पवित्र है वह जो भलाई करता है, जो कुछ वह करता है। कैसी महिमामयी है उसकी गवाही
और कैसी स्पष्ट व्याख्याएँ!
वह कौन है जो सर्व-रूप देने वाला सृजक, सर्व-समर्थ रचयिता, सर्व-प्रकाशक रचयिता है, जो प्रत्येक
वस्तु को उसके विशिष्ट स्वभाव के साथ रचता है।

उसकी कला को देखने के लिए वसंत ऋतु में उसकी दया को देखें: वसंत ऋतु उसके सेवकों के
लिए उत्सव का दिन है... वह दिन जब उसकी रचना - पेड़ और पौधे - खुद को सजाते हैं...

प्रत्येक पौधा अपने स्तर पर अपने राजा की संप्रभुता और अपने स्वामी के
उपहारों को प्रकट करता है...
वह उसके आदेशों को प्राप्त करने और पूरा करने के लिए तत्पर है; उसके
नाम पर बहुत सेवा करता है...
यह उनकी अनुमति से ही खिलता है और फल देता है, यह उनके
मेहमानों के लिए एक साफ मेज के समान है...
प्रकाश और वायु, मिट्टी और जल उसके आदेशों के वाहक हैं और उसके सिंहासन के
वाहक हैं, उसकी कला का प्रचार करते हैं, उसकी बुद्धिमता का
चित्रण करते हैं।

ज्ञान और बुद्धि: प्रकाश उनका सिंहासन है।112 अनुग्रह और दया: जल उनका
सिंहासन है।
संरक्षण और पुनरुद्धार: मिट्टी उनका सिंहासन है।
आदेश और इच्छा: वायु उनका सिंहासन है।

हे मित्र, जान लो कि वे सभी तत्व वे वस्तुएँ हैं जिन पर उनके नाम प्रकट होते हैं; वे माध्यम हैं, स्रोत या मूल नहीं; उन पर कार्य किया जाता है, एजेंट नहीं। वे उसकी शक्ति द्वारा वाहक हैं और जो कुछ वे ले जाते हैं, उसे उसकी अनुमति से, उसके नाम से ले जाते हैं... वे जो कुछ करते हैं, उसे उसकी शक्ति से करते हैं।

यदि वस्तुओं के हिस्से में आने वाली चीजें केवल ऐसी वस्तुएं नहीं होतीं, जहां उनके नाम प्रकट होते हैं, केवल निष्क्रिय माध्यम होते हैं, तो मिट्टी और हवा, प्रकाश और पानी के लिए यह आवश्यक होता कि उनके प्रत्येक कण या परमाणु या अणु में अनंत ज्ञान, शक्ति और रचनात्मक क्षमता हो। उदाहरण के लिए, वायु वायुमंडल से होकर गुजरती है और बढ़ने के लिए नियत सभी पौधों के कणों का दौरा करती है। इसके गुजरने से अनगिनत चमत्कार होते हैं - जिसने आकाश को बनाया है उसकी कला के चमत्कार - प्रकट होते हैं।

यदि एक साधारण, निर्जीव, अज्ञानी कण के लिए उन पेड़ों को बनाना, उन पर उन फलों को लगाना, और उन फूलों को आकार देना - संक्षेप में, उन सभी चीजों का आविष्कार करना - और यदि वह इस पृथ्वी को धारण करने में सक्षम होता, तो आपको उस एकता पर संदेह करने का अधिकार होता जिसका कोई साझीदार नहीं है। अन्यथा, यह संदेह से परे है कि केवल वही जो अपनी शक्ति की मुट्ठी में, अपनी बुद्धि की मुट्ठी में सभी सृष्टि को धारण करता है, ही किसी भी चीज़ के स्वामित्व और प्रभुत्व का दावा कर सकता है।

हर दाना, बूंद या कण पौधों, फलों या फूलों की सेवा में काम करता है। अगर वे स्वर्ग के भगवान द्वारा नियोजित नहीं होते, तो हर दाने, बूंद या कण में इतनी कला, शक्ति और बुद्धि होती कि वे उन सभी प्राणियों का आविष्कार और निर्देशन कर सकें।

उसकी जय हो जिसकी स्तुति वृक्ष अपने पत्तों, फूलों और फलों से करते हैं...

फलों के विकास के लिए पत्तों की बहुतायत के बीच फूलों का खिलना, और फूलों
की गोद में फलों का उगना - जो वृक्षों की पुत्रियाँ हैं - हरी शाखाओं
के हाथों में नाचते हुए, सजीव हवाओं से हिलते हुए - यह सब एक वाक्पटु वाणी है जो
उसकी प्रशंसा करती है जिसने उन्हें बनाया है, जो

112 वे अस्तित्व में व्याप्त हैं या प्रकाश के माध्यम से स्वयं को प्रकट करते हैं (प्रकाश उन्हें संप्रेषित करता है)। आगे आने वाले सिंहासनों को इसी व्याख्या के प्रकाश में लिया जाना चाहिए। (ट्र.)

एक, अत्यधिक.
उनके मुख, अक्षर और शब्द... पत्ते, फूल और फल हैं।

सृष्टिकर्ता का उल्लेख करते ही पत्ते प्रसन्नता से नाचने लगते हैं...
फूल अपने श्रृंगार के लिए सर्व-सक्षम के प्रति कृतज्ञता से मुस्कुराते हैं...

फल, दया द्वारा प्रदान की गई चीजों से प्रसन्न होते हैं, मधुर धुन गाते हैं,
सुव्यवस्थित, सुसंतुलित, चमकदार रंगों
में... कलात्मक रूप से डिजाइन और कढ़ाई किए हुए, अद्भुत आकार के; समृद्ध रूप से
सजे और अद्भुत ढंग से चित्रित, खाने में स्वादिष्ट।

वे जो अद्भुत कला प्रदर्शित करते हैं, उनका बहुत अधिक विविधता में होना और विभिन्न खालों में होना - यह सब उत्पत्तिकर्ता की प्रशंसा है और सर्व-समर्थ का वर्णन है।

वे उसके गुणों का वर्णन करते हैं और उसके नामों को बताते हैं, तथा यह व्याख्या करते हैं कि वह प्रेम किया जाना चाहता है और अपना स्नेह प्रकट करता है।

सृष्टिकर्ता के प्रकटीकरण की बूंदें उन फलों के मुख से निकलती हैं जिन्हें वह चाहता है कि
उसके सेवक जानें और प्यार करें, तथा गरीबी में रहने वाले अपने प्राणियों के प्रति
अपनी करुणा प्रकट करें।

उसकी महिमा हो। उसका प्रमाण कितना स्पष्ट है, उसकी शक्ति कितनी विशाल है, उसकी दया कितनी स्पष्ट है।

वह सर्व-निर्माणकर्ता और सर्व-आकार देने वाला, सर्व-रचना करने वाला और सर्व-व्यवस्था करने वाला,
सर्व-प्रसार करने वाला और सर्व-आशावान है।
उसकी महिमा हो: उसकी महिमा कितनी दयालु है, उसकी कृपा कितनी भव्य
है, उसकी संप्रभुता कितनी महान है।

पृथ्वी को देखो और कहो: ईश्वर सबसे महान है। ब्रह्मांड को देखो और कहो: ईश्वर सबसे महान है, वह सब कुछ बनाने वाला और सब कुछ करने वाला, सब कुछ खोलने वाला और सब कुछ जानने वाला, सब कुछ देने वाला और सब कुछ फैलाने वाला, सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान, सर्व-उदार और सर्व-दयालु है।

ईश्वर महानतम है, इसका अर्थ जानने के लिए ब्रह्माण्ड को देखिए। यह उसके प्रकाश की छायाओं, उसके कार्यों के परिणामों, उसके आदेश और नियति की कलम की रेखाओं, उसके नामों की कढ़ाई और उसके गुणों के दर्पणों से बना है।

जानें और कहें: ईश्वर सबसे महान है। संसार को देखें। वे उसके ज्ञान और शक्ति, न्याय और बुद्धि की मुट्ठी में हैं, और सुव्यवस्थित, मापा हुआ, सामंजस्यपूर्ण हैं।

वह ब्रह्माण्ड को आदेश देता है और माप निर्धारित करता है, क्योंकि व्यवस्था और माप दयालु की दो मुट्ठी हैं, और प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक के दो अध्यायों के शीर्षक हैं। यह पुस्तक और वह अभिलेख

ये सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, न्यायप्रिय और सर्वज्ञ के ज्ञान और शक्ति की उपाधियाँ हैं। इस व्यवस्था और माप से बाहर कुछ भी नहीं है। इससे पता चलता है कि अंतरिक्ष और समय में कुछ भी दयालु के अधिकार से बाहर नहीं है।

देखो और कहो: ईश्वर सबसे महान है। वह सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-शासक है, सर्व-बुद्धिमान और सर्व-स्वतंत्र, एकल और एक है। वह न्याय करता है और बुद्धिमानी से काम करता है, क्योंकि उसने इच्छाशक्ति और आदेश देने वाली बुद्धि के नियम से माप करके ब्रह्मांड का निर्माण किया है। उसकी बुद्धि के सिद्धांत हर उस चीज़ को जोड़ते हैं जो मौजूद है।

उसने अपने आदेश के सिद्धांत और नियति के नियम (अपने निर्धारण) के द्वारा सभी चीज़ों और प्राणियों को अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में प्रतिष्ठित किया, जो सभी विशिष्ट रेखाओं को नियुक्त करते हैं। उसने अपने कार्य करने के तरीके के सिद्धांत और अपने अभ्यास के नियम के द्वारा ब्रह्मांड और उसके प्राणियों को आदेश दिया। वह जो चाहता है करता है, और स्वर्ग और पृथ्वी में दया की कृपा और अनुग्रह की दया के साथ जो चाहता है, वही करता है। उसने ब्रह्मांड को दया के नियमों और अनुग्रह के सिद्धांतों से सुशोभित किया, जिसमें प्राणियों में देखी जाने वाली सभी सुंदरता का स्रोत है। उसने अपने नामों और गुणों को प्रकट करके ब्रह्मांड को रोशन किया, जो स्वर्ग और पृथ्वी में प्राणियों के दीपक बनाते हैं।

इस बात को समझो और कहो: ईश्वर सबसे महान है। वह सर्वज्ञ रचयिता, सर्वज्ञ रचयिता है। संसार और यह सामान्य संसार (मानवता) उसकी शक्ति के कार्य हैं, उसके निर्धारण के शिलालेख हैं। उसने संसार को बनाया और उसे पूजा का स्थान बनाया; उसने पुरुषों और महिलाओं को बनाया और उन्हें पूजक बनाया। उसने पहले को (अपनी संपत्ति) बनाया और दूसरे को (अपने सेवकों) बनाया। पहले में उसकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई, और दूसरे में उसकी चित्रकारी भाषण के रूप में प्रकट हुई। पहले पर प्रकट उसकी शक्ति उसकी शक्ति और सम्मान को प्रदर्शित करती है, और दूसरे में उसकी दया उसके अनुदानों को व्यवस्थित करती है। पहले में उसकी छाप पूरे और हिस्सों पर दिखाई देती है, और दूसरे पर उसकी मुहर पूरे शरीर और उसके हिस्सों पर दिखाई देती है।

देखो और कहो: ईश्वर सबसे महान है। वह सर्व-सक्षम और स्थायी है, सृजक और सर्वज्ञ है, सर्व-सूक्ष्म और सर्व-दयालु है, सर्व-प्रेमी और सर्व-दयालु है, सर्व-सुंदर और प्रचंड है, और ब्रह्मांड का निर्माता है। ब्रह्मांड में भाग हैं, जिनमें से प्रत्येक पूरे का एक नमूना है। इसमें ऐसे संसार भी शामिल हैं, जो पूरे और पूरे का प्रतिनिधित्व करने वाले भागों के रूप में, उसके आदेश की रेखाएँ और शिलालेख हैं, उसके निर्धारण की तस्वीरें हैं।

फिर आयामों के अनुसार सीमाएं नियुक्त की जाती हैं, और शासक के साथ
और भाग्य के कम्पास, शक्ति प्रत्येक के अनुसार रूपों को वैयक्तिकृत करती है
हर चीज़ के उद्देश्य के अनुसार लाभ पर विचार करना इस बात की पुष्टि करता है कि
प्रत्येक वस्तु की विशिष्ट, विशिष्ट रेखाएँ एक सर्वज्ञ, सर्वज्ञ की कलम द्वारा खींची जाती हैं। वैयक्तिकरण के बाद, अनुग्रह रूपों को सुशोभित करता है
अपने चमकते हाथ से और सबसे बेहतरीन तरीके से। इससे पता चलता है कि
श्रृंगार और सौंदर्य उसकी कृपा के कार्य हैं, उसकी उदारता के लक्षण हैं।

अलंकरण के बाद, उनकी उदारता सुशोभित और सुंदर बनाती है
यह दर्शाता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर चाहता है कि उसके द्वारा रचित प्राणी उससे प्रेम करें।
मानवता और जिन्न द्वारा जाने जाने की उनकी इच्छा। सभी सुंदरता और दयालुता उनकी प्रेम और ज्ञात होने की इच्छा से उत्पन्न होती है, यही कारण है कि उन्होंने सभी को बनाया
उनके कार्य सुन्दर हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने कार्यों को अलंकृत करके अपनी पहचान बनाने की इच्छा प्रदर्शित करता है। प्रेम पाने की इच्छा के बाद उसकी दया आती है, जो प्रेम करने वालों को प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है।
वह अपनी सृष्टि का पालन-पोषण करता है। वह अपनी मेज़ें आनंद के लिए बिछाता है
सृष्टिकर्ता की दया उसके कार्यों में स्पष्ट है, और सर्व-प्रदाता उसके फलों में अपनी दया दिखाता है।

संक्षेप में: यह संसार उनकी रेखाओं और शिलालेखों से बना है
(भाग्य) का निर्धारण और उसकी कलम की कढ़ाई, उसकी अलंकरण
उदारता, और उसकी दया के फूल। विश्वासियों के लिए, इसमें शामिल हैं
उनकी दया के फल और उनकी सुन्दरता की झलक, उनकी महिमा की अभिव्यक्तियाँ
और उसकी पूर्णता के दर्पण। सुंदरता के नाम पर जो कुछ भी देखा जाता है
पूर्णता के नाम पर प्रदर्शित हैं गतिशील एवं परिवर्तनशील दर्पण,
ये उसके प्रकाश की छायाएँ हैं, उसकी पूर्णता के चिह्न हैं, तथा उसके कार्यों की पूर्णता की ओर संकेत करते हैं।

एक उत्तम कृति एक उत्तम कार्य की गवाही देती है, जो एक उत्तम शीर्षक की ओर संकेत करती है,
जो एक उत्तम विशेषता को इंगित करता है, जो एक उत्तम आवश्यक गुणवत्ता को दर्शाता है
या क्षमता, जो उस सत्ता की ओर इशारा करती है जो प्रकट सत्य है और
फिर वह डिग्री स्थापित करता है और उनके द्वारा ऊपर उठाता है - ब्रह्मांड का निर्माता। इससे पता चलता है कि चीजों पर दिखाई देने वाली सुंदरता उनका नहीं है।

दर्पण लुप्त हो जाते हैं और प्राणी नष्ट हो जाते हैं, परन्तु ईश्वरीय नाम और गुण लुप्त हो जाते हैं।
वे स्वयं को अभिव्यक्त करते रहते हैं और नए प्राणियों का सृजन करते रहते हैं। यह उनमें से एक है
परम सौंदर्य और सदैव नवीनीकृत होने का सबसे स्पष्ट, सबसे मुखर प्रमाण
अनिवार्यतः विद्यमान, सर्वस्थायी, सर्वप्रिय के उपहार।

जानें और कहें: ईश्वर सबसे महान है। वह सर्व-सृजन करने वाला, महान, सर्व-कार्य करने वाला और सर्वशक्तिमान है। सांसारिक वस्तुएं और सांसारिक श्रृंगार, स्वर्गीय शरीर और ब्रह्मांड के बगीचे में मोती जैसे सितारे ईश्वर के चमत्कार हैं।

उसकी शक्ति, उसकी बुद्धि के साक्षी, तथा एक और अद्वितीय के प्रमाण,
सर्व-समर्थ और सर्व-से-सदा-प्रार्थित।

उसकी महिमा हो जिसने पृथ्वी के बगीचे को अपनी कला का प्रदर्शन करने योग्य बनाया है।
खिलते हुए पौधे और फलदार वृक्ष, सजे हुए जानवर और सुंदर
पक्षी उसकी कला के चमत्कार हैं, उसके ज्ञान के साक्षी हैं, उसकी महिमा के प्रमाण हैं।
दयालुता। फूलों की मुस्कुराहट, इन बागों में फलों की सजावट, दयालु ईश्वर की प्रेम पाने की इच्छा, दयालु ईश्वर की प्रेम पाने की इच्छा को प्रदर्शित करती है।
जिन्न और मानवता, आत्माओं और जानवरों, और करुणा द्वारा जाना जाना
उन पर दया करने वाले परमेश्वर की ओर से।

फूल और फल, अनाज और बीज बुद्धि के चमत्कार हैं,
दया, एकता का सबूत। वे इस दुनिया में देने के लिए दिए गए उपहार हैं
यह शुभ समाचार कि अगले युग में उनके जैसे लोगों को दिया जाएगा। वे सच्चे गवाह हैं कि उनके निर्माता को सभी चीजों का पूरा ज्ञान है, वह शक्तिशाली है
सब वस्तुओं पर प्रभुता रखता है, और सब वस्तुओं को दया और ज्ञान से ग्रहण करता है,
दयालुता और पूर्व व्यवस्था (उनके जीवन के लिए सभी आवश्यकताओं की)। सूर्य या
एक छोटा कण, एक तारा या एक फूल, पृथ्वी या एक अंडा - कुछ भी उसके लिए मुश्किल नहीं है
उसे सृजन और रखरखाव, परिरक्षण और आकार, निर्माण और सुसज्जित करना है।

इसे समझो और कहो: ईश्वर महानतम है। वह शाश्वत है
प्रभु, अनंत काल के शासक, शाश्वत प्रभु। आकाश के चेहरे को देखो। तुम
मौन शांति और उद्देश्यपूर्ण गति, शानदार विकिरण और मुस्कुराते हुए आभूषण, और एक परिपूर्ण, अलंघनीय व्यवस्था देखेंगे। इसके सितारों की चमक
शाश्वत संप्रभुता की घोषणा करता है। ये चमकदार वस्तुएं और घूमती हुई
ग्रह उज्ज्वल साक्ष्य और प्रकाश-विसर्जन करने वाले गवाह हैं जो घोषणा करते हैं
दिव्य वैभव की शक्ति और गरिमा, भगवान के ऐश्वर्य का प्रदर्शन
प्रभुता, उसकी शक्ति की भव्यता और विशालता को प्रकट करती है, तथा उसकी सर्वव्यापक बुद्धि की ओर संकेत करती है।

ईमान लाओ और कहो: ईश्वर महान है। आकाश और धरती में उसकी महिमा है, और वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ है। हे एकमात्र, तेरी महिमा हो
जिसके अनिवार्य अस्तित्व और एकता के लिए हर वस्तु में दो साक्षी हैं, जिसकी एकता और सत्ता ही सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रार्थनीय है
हर चीज़ में दो निशानियाँ हैं, और जिनकी मुहर हर चीज़ में लगी है
प्राणियों को एक सच्चे गवाह और एक स्पष्ट सबूत के रूप में प्रस्तुत करना।

उसके कामों को देखो। तुम सुबह की तरह चमकते हुए, पूर्ण क्रम में एक पूर्ण बहुतायत-नृत्य देखोगे। सभी चीजों के निर्माण और प्रशासन में, तुम
पूर्ण सहजता के बावजूद पूर्ण व्यवस्था और संतुलन देखेंगे; पूर्ण गति के बावजूद पूर्ण सुंदर कला; पूर्ण प्रचुरता के बावजूद पूर्ण दृढ़ता;

पूर्ण मूल्य के बावजूद पूर्ण सहजता; पूर्ण भेद के बावजूद पूर्ण मिश्रण; पूर्ण दूरी के बावजूद पूर्ण सहमति; और पूर्ण बहुलता के बावजूद पूर्ण पूर्णता। यह आपको दिखाता है कि सत्य एक है, पूर्ण शक्ति, पूर्ण ज्ञान रखता है।

इस पर विचार करें और कहें: उसके अलावा कोई रचयिता नहीं है... कोई नहीं है उसके अलावा, जो प्रत्येक वस्तु को उसकी विशिष्ट प्रकृति के साथ उत्पन्न करता है।

* * *

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

> क्या तुम नहीं देखते कि जितने भी आकाश और धरती में हैं, सूर्य और चन्द्रमा और तारे और पहाड़ और वृक्ष और पशु और बहुत से मनुष्य, सब अल्लाह के सामने सजदा करते हैं और बहुत से लोग यातना के भागी हैं। जिस किसी को अल्लाह ने नीचा कर दिया, उसे कोई सम्मान देनेवाला नहीं। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, करता है। (22:18)

हे मित्र! जान लो कि कुरान में कहा गया है: प्रत्येक वस्तु ईश्वर की उपासना करती है, उसके समक्ष सजदा करती है, तथा अपने-अपने विशिष्ट तरीके से उसकी स्तुति और महिमा करती है।
हम केवल कुछ का ही उल्लेख करेंगे। उदाहरण के लिए, जब कोई महान राजा एक विशाल शहर और एक शानदार महल बनवाना चाहता है, तो वह चार प्रकार के कर्मचारियों को काम पर रखता है: पहला: दास जिन्हें वेतन नहीं दिया जाता। वे उसके आदेश पर जो कुछ भी करते हैं, उससे प्रसन्न होते हैं, हमेशा उसकी प्रशंसा करते हैं, और उसके साथ जुड़े रहने और उसकी ओर से काम करने के सम्मान से संतुष्ट रहते हैं।113 दूसरा: साधारण लोग जिन्हें उनके काम के अनुसार वेतन दिया जाता है। वे नहीं जानते कि महान उद्देश्य क्या हैं। कुछ लोग तो यह भी सोचते हैं कि उन्हें वेतन दिए जाने के अलावा कोई उद्देश्य नहीं है।

तीसरा: राजा के पशु। उन्हें चारे के रूप में भुगतान किया जाता है और उन्हें उपयुक्त कार्य करने में आनंद मिलता है और इस प्रकार वे अपनी क्षमता का उपयोग करते हैं, जिससे उन्हें भी खुशी मिलती है।

चौथा: ऐसे कर्मचारी जो समझते हैं कि वे और दूसरे क्या कर रहे हैं, यह क्यों किया जा रहा है, और राजा ऐसा क्यों कर रहा है। वे दूसरों की देखरेख करते हैं और उन्हें उनके पद के अनुसार भुगतान किया जाता है।

उसी तरह, स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक और निर्माता स्वर्गदूतों और जानवरों, निर्जीव वस्तुओं और पौधों और मनुष्यों को नियुक्त करता है और उन्हें पैदा करता है।

---

113 यह तो केवल तुलना है। लेकिन उदाहरण के लिए, किसी पैगम्बर या संत के सच्चे अनुयायी उनकी सेवा करने में बहुत प्रसन्न होते हैं, क्योंकि पैगम्बर या संत का उनसे प्रसन्न होना ही उनके लिए पर्याप्त पुरस्कार है।

वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह उनका और उनके कार्यों का निर्माता है, बल्कि इसलिए करता है क्योंकि यह उसकी गरिमा, महानता और उसके प्रभुत्व के आवश्यक गुणों के कारण आवश्यक है।

स्वर्गदूतों को उनके प्रयासों के कारण पदोन्नति नहीं मिलती। हर एक का एक निश्चित, निर्धारित पद होता है, और उसे अपने कार्य से एक विशिष्ट आनंद मिलता है और वह अपनी पूजा के कार्य के लिए उपयुक्त चमक प्राप्त करता है। उनका पुरस्कार सेवा में ही है। जिस तरह लोग हवा और पानी, प्रकाश और भोजन से पोषित होते हैं और उनसे आनंद प्राप्त करते हैं, उसी तरह स्वर्गदूतों को स्मरण और महिमा, स्तुति और पूजा, ज्ञान और ईश्वर के प्रेम की रोशनी से पोषित किया जाता है और उनसे आनंद प्राप्त होता है। चूँकि वे प्रकाश से बने हैं, इसलिए प्रकाश और उसके निकट की चीज़ें (जैसे, सुगंधित सुगंध) उन्हें बनाए रखती हैं। वे जिसकी पूजा करते हैं, उसके द्वारा दिए गए कार्यों को करने में, उसके लिए अपने कार्यों में, उसके नाम पर की जाने वाली सेवा में और उसकी दृष्टि से अपने पर्यवेक्षण में बहुत खुशी महसूस करते हैं। वे उसके साथ अपने संबंध के माध्यम से प्राप्त सम्मान में, उसके राज्य के भौतिक और अभौतिक आयामों का अध्ययन करने में मिलने वाली "ताज़गी" में और उसकी कृपा और महिमा के प्रकटीकरण को देखने में मिलने वाली संतुष्टि में बहुत आनंद पाते हैं।

पशु, जिनमें भूखी आत्मा और आंशिक इच्छा होती है, वे केवल ईश्वर के लिए काम नहीं करते। इसलिए, उनके उदार स्वामी उन्हें उनके काम के लिए भुगतान करते हैं। उदाहरण के लिए, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने पौधों और पशुओं के बीच के गहन संबंध की घोषणा करने के लिए बुलबुल को नियुक्त किया है, जो गुलाब के प्रति अपने प्रेम के लिए प्रसिद्ध है। बुलबुल पशुओं के बीच प्रभु की वक्ता है, जो सर्व-दयालु के मेहमान हैं, और उन्हें अपने प्रदाता के उपहारों की प्रशंसा करने और उसमें अपनी खुशी की घोषणा करने का काम सौंपा गया है। यह पौधों को उनके द्वारा पशुओं को दी जाने वाली सहायता के बदले में दिए जाने वाले स्वागत की घोषणा करता है, और सुंदर पौधों पर पशुओं की पौधों की तीव्र आवश्यकता की घोषणा करता है - प्रेम और जुनून की डिग्री में एक आवश्यकता। यह सभी राज्यों के सर्व-महान, दयालु और उदार प्रभु के प्रति सबसे सुंदर आभार व्यक्त करता है, सबसे सुखद तड़प के साथ और सबसे नाजुक रूप में।

114 पूर्वी साहित्य में, गुलाब एक प्यारी महिला का प्रतीक है और बुलबुल एक युवा पुरुष है जो उससे प्यार करता है। इसका गायन प्रेमी के लिए गाए जाने वाले हृदय विदारक गीतों का प्रतीक है, विशेष रूप से वियोग के विलाप। चौबीसवें वचन में, सैद नूरसी ने बुलबुल को उन जानवरों का प्रतिनिधि माना है जो अपनी ओर से भगवान को उनके द्वारा खाए जाने वाले फूलों और अन्य पौधों के लिए धन्यवाद देते हैं। हर प्रजाति में एक "बुलबुल" होती है जो अपनी प्रजाति की ओर से एक ही कार्य करती है। उनके अनुसार, पैगंबर मुहम्मद मानवता की बुलबुल हैं जो हमारी ओर से भगवान की स्तुति गाते हैं और भगवान के प्रति हमारी पूजा और धन्यवाद व्यक्त करते हैं। (अनुवाद)

एक कोकिला यह कार्य सर्व-महिमावान के लिए करती है।
यह अपनी भाषा में बोलता है; हम इससे इन अर्थों को समझते हैं, भले ही इसे अपनी धुनों का अर्थ न पता हो। बुलबुल के उन उद्देश्यों के बारे में अनभिज्ञ होने का मतलब यह नहीं है कि वह उनके लिए नियोजित नहीं है। यह एक घड़ी की तरह है जो आपको समय बताती है, भले ही उसे पता न हो कि वह क्या कर रही है। बुलबुल की मजदूरी वह आनंद है जो उसे मुस्कुराते हुए फूलों को देखने से मिलता है, वह आनंद जो उसे उनसे बात करने से मिलता है। उसके मार्मिक गीत पशु शोक से उत्पन्न शिकायतें नहीं हैं, बल्कि सर्व-दयालु के उपहारों के लिए धन्यवाद हैं।

बुलबुल की तुलना मधुमक्खी या मकड़ी, चींटी या कीटों में से “नाइटिंगेल” से करें। प्रत्येक को अपने कर्तव्यों में शामिल एक विशेष आनंद मिलता है, जो उसके भुगतान के रूप में होता है। एक शाही जहाज पर काम करने वाले एक निजी व्यक्ति की तरह, वे कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों और भगवान की कला की सेवा करते हैं। वे ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के भगवान के आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हैं, जिससे उनके नाम पर उनके निर्माण के उद्देश्यों को सबसे अच्छे तरीके से प्रदर्शित किया जाता है। वे अपने जीवन को सबसे अद्भुत तरीके से उनकी शक्ति द्वारा अपने कार्यों को पूरा करने में बिताते हैं। इस तरह, वे अपने निर्माता के प्रति अपनी पूजा और समर्पण के गुणों के उपहार प्रस्तुत करते हैं, जो कि जीवनदाता द्वारा उन्हें बनाने के सच्चे कारण हैं।

चूंकि पौधों और निर्जीव वस्तुओं में स्वतंत्र इच्छा नहीं होती, इसलिए उन्हें भुगतान नहीं किया जाता।
वे जो कुछ भी करते हैं, वह ईश्वर की शक्ति से और उनके नाम पर, पूरी तरह से ईश्वर के लिए और ईश्वरीय इच्छा की पूर्ति के लिए करते हैं। हम देख सकते हैं कि पौधे अपने कार्यों को पूरा करने से किसी प्रकार का आनंद प्राप्त करते हैं, लेकिन स्वतंत्र इच्छा वाले सजीव प्राणियों के विपरीत, उन्हें दर्द नहीं होता। पौधों और निर्जीव वस्तुओं के कार्यों के परिणाम जानवरों के कार्यों की तुलना में अधिक परिपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे सृष्टिकर्ता के प्रति पूर्ण समर्पण में होते हैं, जिसमें स्वतंत्र चुनाव का कोई हिस्सा नहीं होता। किसी प्रकार का चुनाव करने वाले जानवरों में, मधुमक्खियों और उनके जैसे अन्य लोगों का काम, जो एक प्रकार की प्रेरणा से लैस होते हैं, उन लोगों के काम से अधिक परिपूर्ण होता है जो अपनी आंशिक इच्छा और शक्ति पर निर्भर होते हैं।

मनुष्य अपनी पूजा की सार्वभौमिकता, अपने पर्यवेक्षण की सीमा, अपने ज्ञान की व्यापकता और ईश्वरीय प्रभुत्व के अग्रदूत के रूप में अपनी भूमिका में स्वर्गदूतों के समान हैं। वास्तव में, वे स्वर्गदूतों की तुलना में प्रकृति में अधिक व्यापक हैं। चूँकि उनकी प्रेरणाएँ सीमित नहीं हैं और उनकी भूखी आत्माएँ बुराई की ओर प्रवृत्त हैं, इसलिए उनमें लगभग असीम उन्नति और पतन की क्षमता है। अपने काम में आत्म-सुख और अपने लिए हिस्से की तलाश में, वे जानवरों के समान हैं। इसलिए, उन्हें दो तरह के लाभ मिलते हैं

मजदूरी: एक पशु (तुच्छ और तत्काल) और दूसरी देवदूतीय (सार्वभौमिक और स्थगित)।

कोकिला पर चर्चा के लिए एक पूरक नोट

बुलबुल ही एकमात्र प्राणी नहीं है जो गाता है और घोषणा करता है
सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति और महिमा। बल्कि, हर प्रजाति का अपना अलग-अलग महत्व होता है
"बुलबुल" अपनी बेहतरीन भावनाओं को बेहतरीन महिमा के साथ प्रस्तुत करने के लिए
बेहतरीन कविता। कीड़े-मकौड़ों की "बुलबुलें", जो अपनी महिमा का गुणगान बेहतरीन कविता में गाती हैं और
सुनने वालों को आनंद देती हैं, विशेष रूप से असंख्य और विविध हैं।

इनमें से कुछ बुलबुलें रात्रिचर हैं। मानो वे सभी किसी न किसी जाति के नेता हों।
भगवान के नामों का कंठस्थ उच्चारण करने वाली मंडली, सभी के कविता-पाठ करने वाले मित्र
छोटे जानवर रात के शांतिपूर्ण सन्नाटे में परमेश्वर की महिमा करते हैं और उसकी स्तुति गाते हैं।
उनका गीत एक आम भाषा की तरह है जिसे सुनने वाले सभी लोग समझते हैं
महसूस करें। दूसरा समूह दिनचर है। वसंत और गर्मियों में दिन के समय, मानो
प्रत्येक व्यक्ति भगवान के नामों का उच्च स्वर में उच्चारण करने वाले एक समूह का नेता था, वे घोषणा करते हैं
वृक्षों के “मंचों” से सभी जीवित प्राणियों के लिए सुंदर छंद में महिमा,
और सुनने वालों को आनंद से भर देते हैं।

पैगम्बर मुहम्मद सबसे पुण्यशाली और सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति हैं
और महान, शानदार और गहरा, सबसे महान और सबसे सम्माननीय
बुलबुल। उसकी आवाज़ सबसे ऊँची और सबसे काव्यात्मक है, उसके गुण सबसे ज़्यादा
शानदार, ईश्वर के नामों का उनका पाठ सबसे उत्तम और व्यापक है, और उनका आभार सबसे सार्वभौमिक है।
पैगम्बर मुहम्मद मानवता की कोकिला हैं - ब्रह्मांड के बगीचे में गाते हुए, जिन्होंने अपने माध्यम से

सबसे मधुर धुनों वाला, स्वर्ग और पृथ्वी के सभी प्राणियों का कोकिला बन गया है। उस पर, उसके परिवार पर, और
उसके साथियों पर - अन्य पैगंबरों पर -
सबसे अच्छा आशीर्वाद और शांति हो।

हे मित्र, यह जान लो कि जानवर जन्म से ही कौशल के साथ होते हैं।
और जीवित रहने के लिए उन्हें जिस व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता है, उससे पता चलता है कि उन्हें यहां भेजा गया है
केवल काम करने के लिए (या अपने जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए), पूर्ण बनने के लिए नहीं
सीखने के माध्यम से। हालाँकि, मनुष्य अज्ञानी और शक्तिहीन पैदा होते हैं, और उन्हें जीवन भर यह सीखने की
ज़रूरत होती है कि कैसे जीवित रहना है। इससे पता चलता है कि हम
उन्हें यहां केवल काम करने के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा और आराधना के माध्यम से पूर्ण होने के लिए भेजा गया है
इस जीवन के लिए। हमें पौधों और जानवरों की “क्रियाओं” को व्यवस्थित करना है, जो
ईश्वर ने हमें अपने अधीन कर लिया है, और दया के नियमों से लाभ उठाना हमारा वास्तविक कर्तव्य है
जिसने सृष्टि को अपने अधीन कर रखा है, उसकी आराधना, प्रार्थना और विनती करना

हमारी असीम कमज़ोरी और नपुंसकता, गरीबी और ज़रूरत के कारण हमें। हमें उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिसने हमें सृष्टि का सबसे सम्मानित सदस्य बनाया और हमें वह सब कुछ दिया जिसकी हमें पूजा करने की ज़रूरत है। हमें सृष्टि और उसमें मौजूद ज्ञान का अध्ययन करके खुशी पानी चाहिए ताकि हम सृष्टिकर्ता के बारे में उसके नाम और गुण, महिमा और अनुग्रह और पूर्णता के बारे में जान सकें। कोई भी अध्ययन जो इस ज्ञान को उत्पन्न नहीं करता है वह बेकार है और भटकाव का कारण बनता है।

> हे ईश्वर, हमें अपना ऐसा सेवक बनाओ जो जहाँ कहीं भी और जिस भी पद पर हो, सच्चे मन से आपकी आराधना करें। हमें अपना ईश्वर मानकर आपसे प्रार्थना करने और आपका ज्ञान प्राप्त करने में व्यस्त रहने दीजिए।

हे मित्र, जान लो कि चूँकि सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता किसी भी नपुंसकता से मुक्त है और पूरी तरह से उदार है, इसलिए वह एक कण बनाता है जैसे वह सूर्य बनाता है; वह एक कण को उसी तरह का अस्तित्व देता है जैसे वह सूर्य देता है। वह सबसे छोटे पौधे को बनाता है जैसे वह सबसे बड़ा पेड़ बनाता है। वह उस फ़रिश्ते को बनाता है जो सूर्य की गति की निगरानी और प्रबंधन करता है जैसे वह उस फ़रिश्ते को बनाता है जो एक बारिश की बूँद की निगरानी और प्रबंधन करता है। वह सबसे बड़े जानवर को बनाता है जैसे वह सबसे छोटे जानवर को बनाता है। सभी प्राणी, आकार और संख्या की परवाह किए बिना, उसकी पूजा करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, और उनके पास करने के लिए विशिष्ट कार्य हैं।

वे एक के द्वारा नियुक्त किये गये हैं: जब वह किसी चीज़ को चाहता है, तो उसका आदेश केवल यह है कि वह कहे कि "हो जा!" और वह हो जाती है। पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की हुकूमत है, और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे (36:82-83)।

ऐ मुसलमानों, जान लो कि इस्लामी शरीयत तुम्हें अपने रोज़मर्रा के कामों और कर्मों को अपने बाद की ज़िंदगी के लिए एक ख़ज़ाने में बदलने में सक्षम बनाती है। तुम्हारे सबसे आम काम भी इबादत बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर तुम खरीदारी करते या कोई व्यापार करते समय संबंधित शरीयत अध्यादेश द्वारा निर्धारित शब्द कहते हो, तो तुम्हें एक तरह की खुशी महसूस होगी क्योंकि यह इबादत का एक कार्य बन जाता है जिसके लिए तुम्हें एक (आध्यात्मिक) इनाम मिलेगा। जो लोग ऐसा करते हैं वे समृद्ध हैं, क्योंकि वे उस शरीयत के माध्यमिक अध्यादेशों का पालन करके भी अधिक प्रबुद्ध हो जाते हैं।

धन्य हैं वे लोग जिन्हें ईश्वर अपने सभी कर्मों में पैगम्बर का अनुसरण करने की शक्ति देता है, और इस प्रकार उनके क्षणभंगुर जीवन में असंख्य अनन्त फल उत्पन्न होते हैं। कितने दुर्भाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें ईश्वर इसलिए पतित कर देता है क्योंकि वे अपनी पाशविक इच्छाओं और सनक का अनुसरण करते हैं, और अपनी शारीरिक इच्छाओं और सनक को अपना ईश्वर मान लेते हैं। उनका जीवन व्यर्थ चला जाता है।

हे मित्र, जान लो कि मनुष्यों में चरवाहे हैं जो पशुओं के जीवन और कार्यों की देखरेख करते हैं, और किसान हैं जो पौधे उगाते हैं। इसी तरह, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पशुओं के जीवन और कार्यों की देखरेख करते हैं।

स्वर्गदूत पृथ्वी पर फैले जानवरों की देखरेख करते हैं और इसलिए उन्हें “चरवाहे” कहा जा सकता है। लेकिन उनकी देखरेख मानव चरवाहों की देखरेख से अलग है, क्योंकि वे यह काम पूरी तरह से परमेश्वर के नाम पर, उसके लिए, और उसकी आज्ञा और सामर्थ्य से करते हैं।
वे जानवरों पर ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रकटीकरण को देखते हैं, और उन पर शक्ति और दया के कार्यों का अध्ययन करते हैं। वे उनमें ईश्वरीय आदेशों को प्रेरित करते हैं ताकि वे अपना जीवन जी सकें।

कुछ स्वर्गदूत परमेश्वर की अनुमति, शक्ति और आदेश से तथा उसके नाम से पौधों के प्रसार की निगरानी करते हैं। वे सभी पौधों द्वारा अपने सृष्टिकर्ता की महिमा और उनके प्रति उनकी आज्ञाकारिता का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी घोषणा करते हैं, इसके अलावा उन्हें दी गई प्रणालियों के उपयोग की व्यवस्था और सुरक्षा भी करते हैं।

स्वर्गदूतों का जानवरों और पौधों पर कोई वास्तविक नियंत्रण नहीं है, क्योंकि हर चीज़ पर एक विशेष मुहर होती है जो दर्शाती है कि यह सभी चीज़ों का निर्माता है जिसने इसे बनाया है और नियंत्रित करता है; स्वर्गदूतों का पर्यवेक्षण ईश्वर की उनकी पूजा है। महादूत माइकल, जो ईश्वरीय प्रावधान के सिंहासन को धारण करने वालों में से हैं और अपनी इच्छा, शक्ति और अनुमति से और अपने नाम से प्राणियों को ईश्वरीय उपहार पहुँचाते हैं, पौधों की देखरेख करके अपनी पूजा का कर्तव्य निभाते हैं। कई अन्य स्वर्गदूत उनके आदेश के तहत एक विशेष प्रजाति की देखरेख करते हैं। अन्य स्वर्गदूत जानवरों की देखरेख करते हैं।

पृथ्वी को देखिए, कैसे सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने इसे पौधों और जानवरों के लिए एक विशाल क्षेत्र और विस्तृत चारागाह बनाया है। फिर पौधों की प्रजातियों को देखिए जो सर्वज्ञ, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की बुद्धि के अनुसार अपने बीजों को चारों ओर बिखेरकर आश्चर्यजनक क्रम में पृथ्वी पर वितरित हैं। जानवरों को देखिए जो एक अद्भुत, आश्चर्यजनक तरीके से वितरित हैं। वे अपने सर्वज्ञ, सर्व-उदार सृष्टिकर्ता की कृपा से व्यवस्थित तरीके से भूमि या पानी में रहते हैं। महामहिम की महिमा हो। उनके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हे ईश्वर, हे दयालु और दयावान, स्वतंत्र और जीवधारी, आत्मनिर्भर और विवेकशील, न्यायप्रिय और पवित्र। अपने महानतम नाम की खातिर, रिसाले-ए-नूर के छात्रों को, जो इस अल-मथनवी अल-नूरी को प्रकाशित करते हैं, जन्न अल-फ़िरदौस- स्वर्ग की सबसे ऊँची मंजिल- में स्थान दीजिए और उन्हें वहाँ शाश्वत सुख प्रदान कीजिए। उन्हें ईमान और कुरान की सेवा में हमेशा सफल बनाइए। इस पुस्तक के प्रत्येक अक्षर के लिए उनके कर्मों के रजिस्टर में कई (आध्यात्मिक) पुरस्कार दर्ज करें। आमीन। आमीन। आमीन, आपकी दया के लिए, हे दयालुओं में सबसे दयालु।

- नर्सी ने कहा

समाप्त करने के लिए:

• पृथ्वी की सभी आकृतियाँ उस एक, सदा-प्रार्थित-की विभिन्न छापें धारण करती हैं-
के सभी।

• असावधानी, कृतघ्नता और अविश्वास निराधार धारणाओं से उत्पन्न होते हैं
या धारणाएँ.

• मानवता की कुछ कलाकृतियाँ हज़ारों डॉलर की हो सकती हैं क्योंकि
उनकी कला, जबकि उनकी भौतिक लागत नगण्य है। विश्वास मानवता को सर्व-स्थायी निर्माता से जोड़ता है, जबकि
अविश्वास मानवता को सर्व-स्थायी निर्माता से जोड़ता है
कोयले का स्तर, जो ज़मीन में सड़ता है। • चार वास्तविकताएँ हैं जिन्हें
मानवता नहीं बदल सकती। • इस दुनिया में जिसे "ख़ुशी" कहा जाता है वह धोखा देने वाली,
अस्थायी है,
और अल्पकालिक.

• सर्वशक्तिमान निर्माता ने लाखों पौधों और जानवरों की दुनिया को फैलाया है
पृथ्वी का चेहरा। हर दुनिया एक समुद्र की तरह है जिसकी बूँदें सफाई के लिए भरी हुई हैं।

• महदी, अंतिम घड़ी के आने और होने वाले महान उपद्रवों से संबंधित पैगंबरी परंपराओं के बारे में क्या कहा गया है? • ईश्वर ने
सब कुछ बनाया है। बुराई और दोष, दोष और दुर्गुण ईश्वर के कर्मों के परिणाम हैं।

सृजित वस्तुओं की प्रकृति और अपूर्ण क्षमताएं, तथा उनकी इच्छाशक्ति का दुरुपयोग-
शक्ति।

• सभी प्रजातियाँ एक-दूसरे को गले लगाती हैं और एक-दूसरे की मदद करती हैं। उनके सदस्य एक साथ आते हैं
और अच्छे संबंधों के साथ अलग हो जाते हैं।

• भगवान के कार्य प्रश्न के लिए खुले नहीं हैं। • संत प्रेरणा और
आध्यात्मिक अनावरण के माध्यम से जो निष्कर्ष निकालते हैं, उसमें भिन्न होते हैं, लेकिन धर्म के मूल सिद्धांतों पर सहमत होते
हैं। संत और
पैगम्बर मुहम्मद से पहले के पैगम्बरों ने केवल ईश्वरीय सत्य पर ही विस्तार से प्रकाश डाला है।
एकता, जबकि कुरान और पैगंबर मुहम्मद ने सभी स्तंभों की व्याख्या की है
यह विश्वास इतना स्पष्ट है कि उन्हें और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।

• मानवता पाँच तरीकों से तुलना की इकाई के रूप में कार्य करती है। • तुम अपने दयालु प्रभु
को वह बेचने से क्यों कतराते हो जो तुम्हारे लिए उचित है?
क्या आप पहले से ही उसकी संपत्ति हैं - आपका अस्तित्व और जीवन? • एक
व्यक्ति जो इस सौदे को अस्वीकार करता है। • यदि आप उसके निकट
होना चाहते हैं, तो आपको विकसित होना चाहिए और विस्तार करना चाहिए ताकि आप उसके करीब हो सकें।
मानवता का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, और एक पूर्णतः सार्वभौमिक अस्तित्व प्राप्त कर सकते हैं,
जो लगभग असंभव है, या अपने आत्मत्व को त्याग दें और नष्ट कर दें
ताकि वह उसमें “देखा” जा सके।

• कुरान की बुद्धिमत्ता और उसके बीच के अंतर को समझने के लिए एक उदाहरण
दर्शनशास्त्र का दृष्टिकोण.

• जो लोग ईश्वर पर भरोसा करते हैं और जो नहीं करते। • कुरान की आयतें
खास तरीके से खत्म होती हैं। इन अंतों का क्या मतलब है? • हर चीज़ ईश्वर के नाम से या मौखिक रूप से या ईश्वर के नाम से कही जाती है।

स्वभाव या क्षमता की भाषा।

• ईश्वरीय एकता में विश्वास, नास्तिकता और विधर्म के बीच का अंतर। • पद्य के वृक्ष का एक फूल: सात स्वर्ग और पृथ्वी और वह सब

उनमें उसकी महिमा हो। • महिमा
का अर्थ है उसकी और परमेश्वर सबसे महान है। • सभी चीजें परमेश्वर की आराधना करती हैं, उसे दंडवत करती हैं, और उसकी स्तुति और महिमा करती हैं

अपने स्वयं के विशिष्ट तरीके.

• हर प्रजाति का एक "बुलबुल" होता है जो उसका प्रतिनिधित्व करता है। पैगम्बर मुहम्मद

सबसे सम्माननीय कोकिला। • एक जानवर अपने
जीवन के लिए आवश्यक कौशल और व्यावहारिक ज्ञान के साथ पैदा होता है ।

जीवित रहने के लिए। इससे पता चलता है कि इसे यहाँ सिर्फ़ काम करने के लिए भेजा गया है। मनुष्य को ज़रूरत है

ऐसा ज्ञान प्राप्त करें और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

यह दर्शाता है कि हमें यहाँ शिक्षा और उपासना के माध्यम से परिपूर्ण होने के लिए भेजा गया है। • चूँकि सर्व-उदार निर्माता किसी भी नपुंसकता से मुक्त है और पूरी तरह से उदार है, वह एक कण बनाता है जैसे वह सूर्य बनाता है और दोनों देता है

एक ही प्रकार का अस्तित्व.

• इस्लामी शरिया लोगों को अपने दैनिक कार्यों और कर्मों को बदलने में सक्षम बनाता है

उनके बाद के जीवन के लिए एक खजाने में बदल सकते हैं। हमारे सबसे साधारण कार्य भी बन सकते हैं

पूजा के कार्य। • स्वर्गदूतों
में वे लोग भी हैं जो मानव चरवाहों और किसानों जैसे दिखते हैं।

जानवरों और पौधों के फैलाव और वृद्धि की देखरेख करते हैं। हालाँकि, वे

एक महत्वपूर्ण पहलू में वे अपने मानव समकक्षों से भिन्न हैं: वे ऐसा करते हैं

पूर्णतया ईश्वर के नाम पर, उसके लिए, तथा उसकी आज्ञा और शक्ति से।

अनुक्रमणिका

और

एफ

जी

एच

मैं

जे

एल

एम

एन

पी

आर

एस